शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः

ŚUKLAYAJURVEDA MĀDHYANDINA GHANAPĀṬHAḤ

प्रथमो दशकः

प्रथमो भागः

VOLUME - I

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली

॥ शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः ॥

ŚUKLAYAJURVEDA MĀDHYANDINA GHANAPĀṬHAḤ

दुर्लभप्राच्यग्रन्थमालायाः प्रथमं पुष्पम्

शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनघनपाठः

प्रथमो दशकः

प्रथमो भागः

सम्पादकः एवं पाठगृहीता

प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा

भूतपूर्व वेदविभागाध्यक्षः
(श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

सहसम्पादकः

डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण : २०२२

© इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

सर्वाधिकार सुरक्षित – इस प्रकाशन का कोई भी अंश प्रकाशक की अनुमति के विना प्रकाशित करना निषिद्ध है।

भाग – १

ISBN 978 – 93 – 80935 – 72 –0

978 – 93 – 80935 – 73 –7 (Part- I)

मूल्य – 000 रुपये

अक्षर साधना – श्री कर्मवीर सिंह रोहिल्ला

मुद्रक – नई दिल्ली –

प्रकाशक -

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

जनपथ, नई दिल्ली – ११०००१

विषयानुक्रमणी

१. प्राक्कथन (Forword)	i
२. भूमिका (Introduction)	iii- ix
३. किञ्चिन्निवेदनम्	x-xii
४. आभार	xiii-xiv
५. प्रथमोध्यायः (First Chapter)	1 – 37
६. द्वितीयोध्यायः (Second Chapter)	38 – 73
७. तृतीयोध्यायः (Third Chapter)	74 – 114
८. चतुर्थोध्यायः (Forth Chapter)	115– 153
९. पञ्चमोध्यायः (Fifth Chapter)	154– 197
१०. षष्ठोध्यायः (Sixth Chapter)	198– 231
११. सप्तमोध्यायः (Seventh Chapter)	232– 274
१२. अष्टमोध्यायः (Earth Chapter)	275– 330
१३. नवमोध्यायः (Ninth Chapter)	331– 373
१४. दशमोध्यायः (Tenth Chapter)	374– 406

प्राक्कथन

वेदों के सस्वर अध्ययन - अध्यापन की आदि काल से चली आ रही श्रुति परम्परा आज भी अपने विशुद्ध स्वरूप में निरन्तर प्रवहमान है। गुरुमुख से श्रवण करके ही वेदों के अध्ययन की प्राचीन परम्परा रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति कहा जाता है। जब हम अपनी वैदिक संस्कृति की परम्परा के विषय में विचार या मनन करते हैं तथा पुरातन काल की ओर दृष्टि डालते हैं कि अर्वाचीन काल की बहुत सी ऐसी ही अनेक परम्पराएँ प्रायः लुप्तता को प्राप्त हो गईं। परन्तु वैदिक अध्ययन की सस्वर सनातन परम्परा आज भी यथापूर्वमकल्पयत् वैसी ही विद्यमान है। इसका मूल कारण है कि हमारे पूर्व जन्मा ऋषियों (जिन्होंने वेद मन्त्रों का साक्षात्कार किया) ने वेदों के पठन – पाठन के ऐसे ३ सामान्य प्रकृति पाठ (संहिता, पद और क्रम) तथा ८ विकृतिपाठ (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन) के प्रकार बनाये कि जिनके पठन-पाठन से मन्त्रों में एक भी मात्रा या वर्ण इधर से उधर नहीं हो सकता अर्थात् उन वेद के मन्त्रों में कोई भी विकार नहीं आ सके। विकृति नहीं आये इसीलिए उनका नाम भी विकृति पाठ ही रखा गया। वे इस प्रकार हैं –

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥

जिनमें से घन पाठ का सर्वाधिक महत्त्व है तथा श्रुति मधुर भी है। वेद पाठशालाओं में वैदिक ब्रह्मचारी वटुक जब घन पाठ करते हैं तो वह दृश्य अपने में एक अनन्त, अनन्य और आनन्दप्रद होता है। यह हमारे ऋषि – मुनियों की अपूर्व, अप्रतिम और अद्वितीय कृति है जो बहुत समय से सामान्य जनों के लिए दुर्लभ थी। अभी तक जटा पाठ को छोड़कर विकृति पाठों का कहीं से भी प्रकाशन नहीं हुआ है। जटा पाठ भी अभी श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति से प्रकाशित होना है। जो प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी के द्वारा ही सम्पादित है। विकृति पाठों के अन्तर्गत घनपाठ का पहली वार संपादन के पश्चात् प्रकाशन किया जा रहा है।

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली इस शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ का सर्व प्रथम प्रकाशक है। यह हमारी संस्था के लिए बड़े ही

सौभाग्य का अवसर है। इसके प्रकाशन से घनपाठ की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परम्परा के साधकों को सहायता होगी तथा वह परम्परा अनवरत रखना सहज सुलभ हो जायेगा। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का यह सदा उद्देश्य रहा है कि ऐसे ग्रन्थों अथवा शास्त्रीय पक्षों के सम्बन्ध में प्रकाशन प्रस्तुत किये जायें जो दुर्लभ तथा कठिन हैं।भारतीय संस्कृति की धारा को अनवरत प्रवाहमान रखने में केन्द्र अपनी विनम्र आहुति ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से अनवरत रखता है।

मैं इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से कामना करता हूँ कि यह शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम प्रकाशन वैदिक जगत् के विद्वानों, वेद के अध्येताओं, अनुसन्धाताओं और वैदिक जिज्ञासुओं के लिए बहुत ही उपयोगी एवं कल्याणकारक होगा। शुभमस्तु।

(डॉ० सच्चिदानन्द जोशी)
सदस्य सचिव

भूमिका

विश्व के प्राचीनतम वाङ्मय के रूप में वेद सर्वमान्य रूप से प्रतिष्ठित हैं। भारतीय जीवन पद्धति के मूल में वेद ही हैं क्योंकि स्मृतियाँ भी वेद विरुद्ध होने पर स्वीकार्य नहीं होती हैं। मीमांसकों का वेद के प्रति श्रद्धा का भाव उनके वेदापौरुषेयत्व सिद्धान्त से ही स्पष्ट है। मन्त्रों के भाष्यों में भाष्यकारों में दृष्टि की भिन्नता हो सकती है परन्तु मन्त्रों के विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता है। किसी भी मन्त्र के अक्षर अथवा स्वर के विषय में कोई दुविधा हमें नहीं होती है। इस दुविधा के अभाव का श्रेय वैदिकों को जाता है, जिन्होंने घोर परिश्रम कर सम्पूर्ण वेद को सुरक्षित रखा। निष्कारण अध्ययन ही वेद-रक्षा का मूल कारण है।

वेद की रक्षा का बहुत बड़ा श्रेय प्रकृति पाठ के अन्तर्गत आने वाले पद तथा क्रमपाठ साथ ही विकृतिपाठों को भी जाता है। इन पाठों ने मूल संहिता की रक्षा कुछ इस प्रकार की है कि कहीं न तो कुछ जोड़ा जा सकता है न हटाया जा सकता है। किसी प्रकार के आवाप तथा उद्वाप की कोई भी सम्भावना नहीं है। मन्त्रान्त में अथवा अवसानान्त में कुछ नया जोड़े जाने की सम्भावना को परिग्रह (इतिकरण) समाप्त कर देते हैं।

आठ विकृति पाठ कहे गये हैं-

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥

इनमें घनपाठ को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। घनपाठ के दो प्रकार हैं।

(१) आद्य प्रकार।

(२) द्वितीय प्रकार अथवा शिखामूलक घन।

प्रथम प्रकार के घन का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

अन्तात्क्रमं पठेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्।
आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः॥

द्वितीय प्रकार के घन का लक्षण इस प्रकार कहा गया है-

शिखामुक्त्वा विपर्यस्य तत्पदानि पुनः पठेत्।
अयं घन इति प्रोक्त इत्यष्टौ विकृतीः पठेत्॥

घन के द्वितीय प्रकार को जानने के लिये क्रम, जटा, तथा शिखा का लक्षण जानना आवश्यक होता है।

क्रमपाठ सभी विकृतिपाठों के लिये प्रकृति है।

जैसा कि कहा गया है-

जटामालादण्डरेखारथध्वजशिखाघनाः।
क्रममाश्रित्यनिर्वृत्ता विकारा अष्ट विश्रुताः॥

क्रमपाठ के स्वरूप के विषय में वा.प्रा. के चतुर्थ अध्याय में कहा गया है कि क्रमपाठ में अपृक्त पदों (आकार तथा उकार) को छोड़कर दो - दो पदों को मिलाया जाता है अर्थात् आनुपूर्वी के क्रम से प्रथम तथा द्वितीय पदों को मिलाया जाता है। तदनन्तर प्रथम क्रमवर्ग के द्वितीय पद के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को मिलाया जाता है। तदनन्तर उस उत्तरवर्ती पद के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को मिलाया जाता है। यह क्रम अवसान तक चलता है। मध्य में अपृक्त पद आने पर त्रिक्रम का विधान किया गया है। आकार के साथ उसके उत्तरवर्त्ती पद को पुनः मिलाया जाता है। उकार प्रगृह्य होने के कारण इसका स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। इसके अतिरिक्त **मो षू णः** (वा.सं.३.४५) (पद ३.४५) तथा **अभी षु णः** (वा.सं.२७.४१) (पद २७.४०) ये दोनों स्थल भी त्रिक्रम के उदाहरण हैं। **ऊर्ध्वऽ ऊ षु णः** (वा.सं ११.४१) (पद ११.३९) **एतादृक्षासऽ ऊ षु णः** (वा.सं १७.८४) (पद १७.७७) तथा **गोमदू षु णासत्या** (वा.सं २०.८१) (पद २०.७२) इन तीनों स्थलों में चार पदों का क्रम वर्ग बनाया जाता है। इन त्रिक्रम तथा चतुष्क्रम के स्थलों में **सु** पद के साथ उसके उत्तरवर्त्ती पद को दूसरी बार मिलाया जाता है। क्रमपाठ के अन्तर्गत यदि पूर्ववर्त्ती पद अवग्रह के योग्य है तो उत्तरवर्त्ती पद के साथ सन्धि करने के बाद पूर्ववर्ती पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। पद के मध्य में दीर्घ होने की स्थिति में भी परवर्ती पद के साथ सन्धि होने के अनन्तर उस दीर्घीभाव को प्राप्त पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। इसी प्रकार मूर्धन्यभाव के स्थल में भी स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। सभी पूर्ववर्ती प्रगृह्य संज्ञक पदों की उत्तरवर्ती पद के साथ सन्धि होने के बाद उस पूर्ववर्ती प्रगृह्य संज्ञक पद का स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। जिस रिफित पद का रेफ स्वरूप संहिता पाठ में ज्ञात नहीं होता है, उस पूर्ववर्ती पद का भी उत्तरवर्ती पद के साथ सन्धि होने के बाद

स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। अवसान में स्थित पद का भी स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है। क्रमसन्धान शिक्षा में तथा संहिता पाठ में जिन अवसान के स्थलों का सन्धान उपदिष्ट है, उन स्थलों में अवसान में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं किया जाता है। जैसे - **ह्वार्षीच्छतधारम्** (वा.सं.१.२) (पद १.२) कहने के बाद **ह्वार्षीत्** पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता। इसी प्रकार भूयास्तमस्कन्नम् (वा.सं.२.७) (पद २.७) कहने के बाद भूयास्तम् पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं किया जाता है। पदपाठ में अवसानान्त में जो स्थितोपस्थित पाठ हैं, उनका स्थितोपस्थित पाठ होता है।

वा.प्रा. के सप्तम अध्याय में क्रमपाठ करते समय अवसान में स्थित वर्णों के परिग्रह का विधान किया गया है। यही परिग्रह का विधान सभी विकृति-पाठों में भी माना जाता है।

प्लुत से भिन्न कण्ठ्य स्वर (अ तथा आ) का एकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे- **रक्षेति रक्ष** (वा.सं.१.४) (पद १.४) **पाणिनेति पाणिना** (वा.सं.१.१६) (पद१.१६)।

इवर्ण (इ तथा ई) का ईकार के रुप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **असीत्यसि** (वा.सं.१.२०) (पद १.२०) **हिरण्ययीति हिरण्ययी** (वा.सं.८.२९) (पद ८.२४)।

उवर्ण का वकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **सदन्त्विति सदन्तु** (वा.सं.२.५) (पद २.५)।

औकार का भी वकार के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **अद्रावित्यद्रौ** (वा.सं.४.३१) (पद ४.३१)।

अकार है पूर्व में जिसके ऐसे अरिफित विसर्जनीयान्त पदों का विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **वरूथ्यऽ इति वरूथ्यः** (वा.सं.३.२५) (पद ३.२५)।

आकार है पूर्ववर्ती वर्ण जिनका ऐसे विसर्जनीयान्त पदों का, विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **देवाऽ इति देवाः** (वा.सं.२.१८) (पद २.१८)। एकारान्त पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **दधऽ इति दधे** (वा.सं.३.५) (पद ३.५) ऐकारान्त पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **मादयध्याऽ इति मादयध्यै** (वा.सं.३.१३) (पद ३.१३) प्लुत पदों का भी विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **विवेशा३ऽ इति विवेशा३** (वा.सं.२३.४९) (पद २३.४४) प्रगृह्य पदों का भी

विवृत्ति के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **जन्मनीऽ इति जन्मनी** (वा.सं.८.३) (पद ८.२)।

भाव्युपध विसर्जनीयान्त का रेफ के रूप में परिग्रह किया जाता है। जैसे - **अग्निरित्यग्निः** (वा.सं.७.१४) (पद ७.१३) **गीरिति गीः** (वा.सं.३.४६) (पद ३.४५), **पशुरिति पशुः** (वा.सं.३.५७) (पद ३.५६), **अग्नेरित्यग्नेः** (वा.सं.७.४२) (पद ७.४०), **सदस्यैरिति सदस्यैः** (वा.सं.७.४५) (पद ७.४१), **विष्णोरिति विष्णोः** (वा.सं.१९.५६) (पद १९.५४), **द्यौरिति द्यौः** (वा.सं.३३.४२) (पद ३३.३८)।

प्रथमान्त स्पर्श में समाप्त होने वाले पदों का तृतीय स्पर्श के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **भिषगिति भिषक्** (वा.सं.१६.५) (पद १६.५), **वाडिति वाट्** (वा.सं.२.१८) (पद २.१८), **अस्मादित्यस्मात्** (वा.सं.२.३०) (पद २.२९)।

पञ्चम स्पर्श में समाप्त होने वाले पदों का पञ्चम स्पर्श के रूप में परिग्रह करना चाहिये। जैसे - **अर्वाङित्यर्वाङ्** (वा.सं.३४.२६) (पद ३४.२६),**पुष्यन्निति पुष्यन्** (वा.सं.४.२) (पद ४.२), **पितॄनिति पितॄन्** (वा.सं.२.३४) (पद २.३३), **तप्यद्ध्मिति तप्यद्ध्म्** (वा.सं.१.१८) (पद १.१८)।

जटा पाठ का लक्षण इस प्रकार है-

क्रमं यथोक्तं प्रब्रूयाद्व्युत्क्रमेण क्रमेण च।
सलक्षणं सर्वसन्धौ जटा सा प्रोच्यते बुधैः॥

अर्थात् क्रम पाठ के नियमानुसार यथास्थान द्विक्रम, त्रिक्रम अथवा चतुष्क्रम का पाठ करके उसका विलोम पाठ करके पुनः अनुलोम पाठ किया जाता है। इस प्रकार के लक्षणयुक्त पाठ को जटा पाठ कहा जाता है। इस जटा पाठ में पाँच क्रम होते हैं-

अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्क्रमोभिक्रमस्तथा।
सङ्क्रमश्चेति पञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः॥

जैसे-	**इषे त्वा** –	अनुक्रम
	त्वा त्वा -	उत्क्रम
	त्वेषे -	व्युत्क्रम
	इषऽ इषे -	अभिक्रम

इषे त्वा – सङ्क्रम

इन्हीं पाँचों क्रमों को पञ्चसन्धि पाठ के रूप में वैदिकों द्वारा पाठ किया जाता है।

स्वपूर्वांश पदद्वन्द्वं स्वागर्भे त्रिचतुष्क्रमे।

पुनरुक्तमसन्देहार्थं जटात्वं न चार्हति॥

सु तथा आ ये दो पद आने पर जहाँ त्रिक्रम का विधान है, वहाँ पर तथा गोमदू षु णासत्या आदि में जहाँ चतुष्क्रम का विधान है, उन स्थलों में सु तथा आ ये दो पद जटा पाठ के पश्चात् पुनः उच्चरित होते हैं। ये दो पद जटाभाव को प्राप्त नहीं होते हैं। इसी प्रकार **उदु त्यम्** इत्यादि में **उँऽ इत्यूँ** इस प्रकार से मध्य के पद का वेष्टन किया जाता है। इस उ पद के साथ भी जटा पाठ पृथक् नहीं किया जाता है।

शिखा पाठ का लक्षण इस प्रकार किया गया है-

पदोत्तरां जटामेव शिखामार्याः प्रचक्षते।

पूर्वोक्त जटा पाठ के पश्चात् अग्रिम एक पद को जोड़कर जो पाठ किया जाता है, उसे शिखा पाठ कहा जाता है।

इसी शिखा पाठ के पश्चात् इस शिखा पाठ में पठित पदों का विपर्यास तथा पुनः अनुलोम क्रम से उन तीन पदों के पाठ को घन पाठ कहा गया है। इस घन पाठ में सन्धि के प्रारम्भ से अवसान तक तेरह पद कहे जाते हैं। अवसान में अन्तिम दो पदों का जटा पाठ किया जाता है, जिसमें छः पद कहे जाते हैं। क्रम पाठ, जटा पाठ तथा शिखा पाठ के नियमानुसार ही घनपाठ में भी अन्तिम पद का परिग्रह (इतिकरण) किया जाता है।

यहाँ इसी शिखामूलक घन पाठ को प्रस्तुत किया गया है। सम्बन्धित टिप्पणी को सामान्यतया सन्धि के अन्त में संख्या निर्देश कर पाद-टिप्पणी के रूप में लिखा गया है। पठन सौविध्य की दृष्टि से यथा सम्भव पदों को पृथक्-पृथक् कर लिखा गया है। उपस्थित पदों के मध्य में पृथक्करण हेतु स्थान (स्पेस) छोड़ा गया है। इस सम्बन्ध में दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं, प्रथम पद्धति में स्थान छोड़ा जाता है, जैसे - **उपस्थऽ इत्युप स्थे** (वा.सं.१.११) (प१.११) द्वितीय पद्धति में पूर्णविराम का चिह्न दिखाया जाता है। जैसे - **उपस्थऽ इत्युप। स्थे।** यहाँ प्रथम पद्धति का ही अनुसरण किया गया है। दोनों ही पद्धतियों में अवग्रह के पश्चात् स्थान (स्पेस) नहीं छोड़ा जाता है, यहाँ पठन सौविध्य की दृष्टि से स्थान छोड़ा गया

है। दोनों ही पद्धतियों में **इति** पद के बाद भी स्थान नहीं छोड़ा जाता है। यहाँ पद स्वरूप की स्पष्टता के लिये स्थान छोडा गया है। संहिता धर्म से पाठ करते समय यथा शक्ति अवसान तक एक श्वास में पाठ करना चाहिये। **वर्णानामेकप्राणयोगः संहिता** (वा.प्रा.१.१५८) यदि अवसान तक एक प्राणयोग (एक श्वास) से पाठ अशक्य हो तो यथा सम्भव पदों के अन्त तक एक प्राणयोग होना चाहिये।

पदों के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए उन्हें पृथक् लिखा गया है। बहुप्रकृति पद जैसे - **सङ्सम्** (वा.सं.६.२०) (पद ६.१८), **सुप्रजाः** (वा.सं.३.३७) (पद ३.३७) इत्यादि पदों को एक साथ स्थान न छोड़कर लिखा गया है। इस प्रथम भाग में वा.सं. का प्रथम दशक (१-१० अध्याय) प्रस्तुत किया गया है। पुनरुक्त मन्त्र आ जाने से संहिता की अपेक्षा पद, क्रम सहित सभी विकृति-पाठों के मन्त्रों की संख्या में अन्तर आ जाता है। यहाँ प्रत्येक शतम् (१०० मन्त्र) को संहिता पाठानुसार न दिखा कर पद पाठ के मन्त्रों के आधार पर दिखाया गया है। अतः स्वाभाविक रूप से संहिता पाठ की अपेक्षा यहाँ मन्त्रों की संख्या में न्यूनता है। संहिता पाठ में १९७५ मन्त्र हैं। जबकि पद, क्रम, जटा, शिखा घनादि पाठों में १८१४ मन्त्र ही हैं।

आत्म-निवेदन

मेरा जन्म पुण्यभूमि वाराणसी में हुआ। प्रातःस्मरणीय पूज्य पिताजी स्व० डॉ० मणिलाल शर्मोपाध्याय जी की प्रेरणा से मैं वेदाध्ययन में प्रवृत्त हुआ। आरम्भ में पूज्य पिताजी से ही वेदाध्ययन किया। तदनन्तर श्री वल्लभ शुक्लयजुर्वेद स्वाध्याय केन्द्र चौखम्भा वाराणसी में प्रातःस्मरणीय पूज्य गुरुजी स्व. मनोहर देवीदास जोशी जी घनपाठी के चरणों में बैठकर अपनी शाखा का तथा श्रीमद्भागवतादि का अध्ययन किया।

गुरवो बहवः सन्ति शिष्यवित्तापहारकाः।
गुरवो दुर्लभा लोके शिष्यसन्तापहारकाः॥

मेरे गुरुजी शिष्यसन्तापहारक थे। उनके द्वारा अध्यापन के बिना प्रस्तुत लेखन-कार्य असम्भव था। इस पुस्तक में जो अच्छाई है वह उनकी है। जो त्रुटियाँ हैं, वे मेरी हैं। गुरुजी ने बड़े वात्सल्य भाव से वेदाध्ययन के क्रम में शिक्षा-प्रातिशाख्यादि का सन्दर्भ देते

हुए मुझे पढ़ाया, जिससे मेरा सन्देह रहित वेदाध्ययन हो सका। मैं उनके प्रति हार्दिक प्रणामाञ्जलि निवेदित करता हूँ।

इस प्रकाशन-कार्य से घनपाठ के अध्ययन में सुविधा होगी, मैं ऐसी आशा करता हूँ। पारम्परिक अध्ययन पद-पाठ की पुस्तक से होता आया है, मैंने भी घनपाठ का अध्ययन पद पाठ की पुस्तक से ही किया है।

इस लेखन कार्य के क्रम में पूज्य गुरुद्वय प्रो० युगल किशोर मिश्र जी तथा प्रो० श्रीकिशोर मिश्र जी का निर्देशन बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। मैं आप दोनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानन्द जोशी जी के प्रति मैं हृदय से आभार अभिव्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार कर प्रकाशन की सहर्ष अनुमति प्रदान की। हमारा साभार सादर निवेदन है कि आगामि माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड और रथ पाठ के सम्पादन हेतु आपका अनुग्रह इसी प्रकार बना रहेगा।

घनपाठ का अधिकांश लेखन कार्य दिल्ली में किया गया है। मेरे अन्तेवासी श्री आशुतोषमणि त्रिपाठी ने मुझे सभी गृह-कार्य से मुक्त रखा, जिससे मैं सावधानी से लेखन कार्य कर सका, एतदर्थ श्री त्रिपाठी को अनेकशः आशीर्वाद देता हूँ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

गोपाल प्रसाद शर्मा

राम नवमी
विक्रमी २०७९

किञ्चिन्निवेदन

वेद भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति के मूल आधार हैं। जिन्हें विश्व के सभी विद्वानों ने विश्व धरोहर के रूप में स्वीकार किया है। विशेष रूप से ऋग्वेद को विश्व का आदि ग्रन्थ माना गया है। इनके संरक्षण के लिए यूनेस्को चेयर और फोर्ड फाउन्डेशन आदि विदेशी संस्थाएँ भी परिपूर्ण प्रयास और सहयोग कर रही हैं। हमारा उन सभी से अधिक दायित्त्व है कि अपनी इस मूल वेदविद्या की संरक्षा तन - मन - धन से करें।

कुछ शाखाओं को छोड़कर प्रायः मूल वेद संहिताएँ तो प्रकाशित हैं। परन्तु उन सभी शाखाओं के कुछ प्रकृति एवं सभी विकृतिपाठ अभी तक प्रकाशित नहीं हैं। मूल वेदों की संरक्षा के लिए ही ऋषियों के द्वारा प्रकृति एवं विकृतिपाठों का विधान किया गया था। इनके संरक्षण के लिए आज भी हस्तलेखों के माध्यम से ही प्रकृति एवं विकृतिपाठों का पठन-पाठन हो रहा है। परन्तु छात्रों के द्वारा हस्तलेखों की हाथ से पुनः प्रतिलिपि कर पढ़ना बहुपरिश्रमसाध्य हो जाता है। इसलिए इन दुर्लभ और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रकृति – विकृतिपाठों का सम्पादन एवं प्रकाशन करना परमावश्यक है।

इस सम्बन्ध में श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्व-विद्यालय) नई दिल्ली के आचार्य **डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा** (जो शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाखा के पारम्परिक एवं आधिकारिक विद्वान् हैं जिन्हें शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाखा के संहिता, पद-क्रम के साथ विकृतिपाठ भी कण्ठस्थ हैं) जी के द्वारा घनपाठ के सम्पादन का प्रस्ताव माननीय सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानन्द जोशी जी को भेजा गया। मा० सदस्य सचिव जी ने आगे की कार्यवाही करने के लिए प्रो० प्रतापानन्द झा जी (निदेशक, कल्चरल इन्फोर्मेटिक्स) को सौंप दिया। प्रो० झा जी ने चर्चा के पश्चात् आवश्यक कार्यवाही हेतु मुझे प्रेषित किया है। मैंने डॉ० शर्मा से प्रकृति – विकृतिपाठों के सम्पादन के सम्बन्ध में दूरवाणी से चर्चा की तो डॉ० शर्मा ने कहा कि प्रकृति पाठों का तो कुत्रचित् प्रकाशन हुआ भी है। किन्तु विकृतिपाठों का नहीं। विकृति पाठों में केवल जटा पाठ का सम्पादन कर मैंने वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय को प्रकाशनार्थ दे दिया है। वर्तमान में माला, शिखा, रेखा,

ध्वज, दण्ड, रथ और घन ये सप्त विकृतिपाठ शेष हैं जिनका कोई सम्पादन कार्य नहीं हुआ है। इसलिए इन शेष विकृतिपाठों के सम्पादन – प्रकाशन का विचार करना चाहिए।

इसीलिए वेदों की रक्षा के इस मूल उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इन शेष सप्त विकृतिपाठों में सर्वप्रथम घनपाठ के समीक्षात्मक सम्पादन का विचार किया गया। तुरन्त ही मैंने शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन शाखीय घनपाठ के सम्पादन की पंजिका सुसज्जित कर अपने विभागाध्यक्ष के माध्यम से माननीय सदस्य सचिव जी को भिजवा दी। उनकी सहर्ष सहज रूप से स्वीकृति प्राप्त हो गयी। स्वीकृति के पश्चात् डॉ० शर्मा के साथ अनुबन्ध कर यह कार्यभार उनको सौंप दिया गया। डॉ० शर्मा ने भी एक वर्ष के अन्तर्गत इसकी पाण्डुलिपि तैयार कर हमें समर्पित कर दी। तदनन्तर यह कार्य टंकण के लिए वेद-वेदांगों में अनुसन्धान करने वाले विद्यापीठ के वेदविद् (वरिष्ठ छात्रों) को ही दिया गया। जिससे शुद्ध टंकण कार्य हो सके। लगभग छः मास के अन्तर्गत टंकण कार्य भी पूर्ण हो गया। परन्तु टंकण कार्य के अन्तर्गत फॉण्ट में स्वर चिह्न एवं संयुक्ताक्षरों से सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न हो गयीं।

इन समस्याओं के विषय में मैंने विभागाध्यक्ष (कलानिधि) से चर्चा की तो उन्होंने किसी फॉण्ट विशेषज्ञ से सम्पर्क कर इसका समाधान करने का निर्देश दिया। तन्निर्देशानुसार मैंने फॉण्ट निर्माण विशेषज्ञ श्री कर्मवीर सिंह रोहिल्ला जी से सम्पर्क किया तथा फॉण्ट संस्कृत 2003 में सुधार करने के लिए निवेदन किया। श्री रोहिल्ला जी ने भी वरीयता पूर्वक बड़े मनोयोग से स्वर चिह्न और संयुक्ताक्षर की समस्याओं का समाधान करते हुए सर्वश्रेष्ठ एवं सुन्दर अक्षरों में प्रकाशन के लिए प्रख्यात निर्णय सागर प्रैस, मुम्बई के समान बहुत ही सुन्दर अक्षर शैली में नया फॉण्ट ही निर्माण करना आरम्भ कर दिया। प्रूफ रीडिंग करते समय जो जो समस्याएँ समक्ष उपस्थित होती रहीं उनका सुधार होता रहा। इस प्रकार फॉण्ट की समस्याओं के समाधान में भी लगभग दो वर्ष का समय लग गया। परन्तु लगभग नब्बे प्रतिशत फॉण्ट भी तैयार हो गया। श्री रोहिल्ला जी ने इस फॉण्ट का नाम वेदाक्षर रखा। इस वेदाक्षर फॉण्ट की कृपा से शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का समुद्धार हो गया। यह उस परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा अपार

दया तथा महती कृपादृष्टि का परिणाम है। जो इसका प्रथम दशक (प्रथम भाग) आपके करकमलों की सुशोभा अभिवर्द्धन कर रहा है।

अभी तक इस शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का मुद्रित संस्करण कहीं भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए यह शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन घनपाठ वेद अध्येताओं तथा वैदिक पोर्टल के दर्शकों, अन्वेषकों तथा अनुसन्धाताओं लिए बहुत उपयोगी होगा। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के सहस्रों वेद विद्यालयों में पाठ्यक्रम में निर्धारित है। परन्तु उपलब्ध न होने से हस्तलेख अथवा उनकी छायाप्रति से ही निर्वाह करना पड़ता है। अब इसके प्रकाशित होने से वे सभी लाभान्वित हो जायेंगे। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और श्रेयस्कर कार्य है। शेष छः विकृतिपाठों तथा अन्य वेद शाखाओ के भी ग्रन्थों का क्रमशः सम्पादन और प्रकाशन करने के लिए हमारा पूर्ण प्रयास रहेगा।

इस दुर्लभ एवं प्रथम प्रकाशित ग्रन्थ के अनेक वार परिशोधन करने पर भी प्रमादवश अशुद्धियाँ रह जाना सम्भव है। एतदर्थ आप सभी अध्येताओं से विनम्र प्रार्थना है कि उन अशुद्धियों से हमें अवगत कराते रहेंगे। जिससे आगामि संस्करणों में सुधार किया जा सकेगा।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

कीर्तिकान्त शर्मा

मेष संक्रान्ति
विक्रमी २०७९

आभार

वेद भारतीय संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान के प्रमुख आधार ग्रन्थ माने जाते हैं। इसलिए वेदों का ज्ञान सभी को आवश्यक बताया गया है। विश्व के शिक्षा शास्त्री भी वेदों को ज्ञान विज्ञान का अखण्ड भण्डार मानते हैं। विज्ञान वेत्ता भी वेदों पर अनुसन्धान कार्य कर नई - नई खोज कर रहे हैं। इसलिए वेदों के अध्ययन – अध्यापन, अनुसंधान और उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इसी उद्देश्य से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कला एवं संस्कृति से सम्बन्धित अनेक कार्यकलापों (अध्ययन, अनुसन्धान, व्याख्यान, प्रदर्शनी, कार्यशाला, बुक रीडिंग और ग्रन्थ सम्पादन व प्रकाशन) का आयोजन कर रहा है। अध्ययन के अन्तर्गत विविध डिप्लोमा एवं अल्पकालीन अन्तर्जालीय पाठ्यक्रमों का भी संचालन करता है। पुस्तकालय विज्ञान और पाण्डुलिपि एवं लिपि विज्ञान के दो डिप्लोमा पाठ्यक्रम के साथ-साथ बुक रीडिंग और ग्रन्थ सम्पादन व प्रकाशन के कार्य भी कलानिधि विभाग से सम्पादित किये जा रहे हैं।

उपर्युक्त कार्यकलापों के साथ-साथ ग्रन्थ सम्पादन और प्रकाशन के क्रम में वेदों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा श्रुति मधुर शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ का सम्पादन किया जा रहा है। इसके सम्पादन और प्रकाशन में कितनी समस्याएँ आयीं उनके विषय में हमारे सहकर्मी डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा ने अपने निवेदन में स्पष्ट कर दिया है। इसलिए जिन विद्वानों और सहयोगियों के सहयोग से यह महत्त्वपूर्ण सम्पादन एवं प्रकाशन सम्भव व सुसम्पन्न हुआ है। उनके लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

इस शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखीय घनपाठ को आप सभी अध्येताओं के समक्ष उपलब्ध कराने का सर्वप्रथम श्रेय विशेष रूप से प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी को जाता है जिन्होंने यथाशीघ्र घनपाठ की स्वहस्त लिखित पाण्डुलिपि तैयार कर उपलब्ध करायी। इसलिए हम इनके हृदय से बहुत – बहुत आभारी हैं।

तत्पश्चात् डॉ० कीर्तिकान्त शर्मा, इकाई प्रमुख, पाण्डुलिपि इकाई (कलानिधि) का मैं हृदय से आभार अभिव्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं प्रकाशन में बड़े ही मनोयोग और परिश्रम से अपनी देख रेख में इसे तैयार कराया।

इसके साथ ही शोधाध्येता एवं अक्षरांकन साधक (Fontographer) फॉण्ट विशेषज्ञ श्री कर्मवीर रोहिल्ला जी ने फॉण्ट की कठिनतम समस्याओं के समाधान में बडे ही मनोयोग से हमारा साथ दिया। फॉण्ट की समस्याओं का समाधान करते - करते चारों वेदों के प्रकाशन के लिए एक सुन्दर और सर्वांगपूर्ण वैदिक (वेदाक्षर) फॉण्ट भी तैयार हो गया इसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

तदनन्तर श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के शोध अध्येता एवं प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा जी के विद्यार्थी रहे डॉ० इन्द्रेश कुमार शुक्ल, श्री वेणुगोपाल शर्मा, श्री हितेश शर्मा तथा श्री प्रियङ्कर मिश्र का भी हृदय से आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने ग्रन्थ का विशुद्ध टङ्कण कार्य बड़े मनोयोग से किया है। वास्तव में वेद के स्वर और संयुक्त वर्णों का शुद्ध टंकण करना बहुत ही दुष्कर एवं समय साध्य कार्य था जिसे इन वैदिक एवं शोधाध्येताओं ने बड़े परिश्रम से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

प्रो० रमेश चन्द्र गौड़

डीन एवं विभागाध्यक्ष (कलानिधि)

॥पूर्वविंशतिः॥

॥प्रथमो दशकः॥

॥अथ माध्यन्दिनीयघनपाठे प्रथमोध्यायः॥

हरिंः ॐ[1]॥ इ॒षे त्वा॑ त्वे॒षऽ इ॒षे त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वे॒षऽ इ॒षे त्वो॒र्ज्जे[2]। त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जे त्वा॑। ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ व्वा॒यवो॑ व्वा॒यव॑स्त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ व्वा॒यवं॑ः। त्वा॒ व्वा॒यवो॑ व्वा॒यव॑स्त्वा त्वा व्वा॒यव॑ स्त्थ स्त्थ व्वा॒यव॑स्त्वा त्वा व्वा॒यव॑ स्त्थ। व्वा॒यव॑ स्त्थ स्त्थ व्वा॒यवो॑ व्वा॒यव॑ स्त्थ दे॒वो दे॒व स्त्थ॑ व्वा॒यवो॑ व्वा॒यव॑ स्त्थ दे॒वश्॥। स्त्थ॒ दे॒वो दे॒व स्त्थ॑ स्त्थ दे॒वो वो॑ वो दे॒व स्त्थ॑ स्त्थ दे॒वो वंः। दे॒वो वो॑ वो दे॒वो दे॒वो वंः सवि॒ता सवि॒ता वो॑ दे॒वो दे॒वो वंः सवि॒ता। व्व॒ह्ः स॒वि॒ता सवि॒ता वो॑ वह्ः सवि॒ता प्प्र प्प्र सवि॒ता वो॑ वह्ः सवि॒ता प्प्र। स॒वि॒ता प्प्र प्प्र सवि॒ता सवि॒ता प्प्राप्प॑यत्त्वर्प्पयतु॒ प्प्र सवि॒ता सवि॒ता प्प्राप्प॑यतु। प्राप्प॑यत्त्वर्प्पयतु॒ प्प्र प्प्राप्प॑यतु॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ श्रेष्ठ॑तमायार्प्पयतु प्प्र प्प्राप्प॑यतु॒ श्रेष्ठ॑तमाय। अ॒र्प्प॒य॒तु॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ श्रेष्ठ॑तमायार्प्पयत्त्वर्प्पयतु॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ श्रेष्ठ॑तमायार्प्पयत्त्वर्प्पयतु॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म्म॑णे। श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म्म॑ण॒ऽ आ प्प्या॑यद्ध्वम्प्यायद्ध्॒मा कर्म्म॑णे॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म्म॑ण॒ऽ आ प्प्या॑यद्ध्वम्। श्रेष्ठ॑तमा॒येति॒ श्रेष्ठ॑ तमाय। कर्म्म॑ण॒ऽ आ प्प्या॑यद्ध्वम्प्यायद्ध्॒मा कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ऽ आ प्प्या॑यद्ध्वम-गद्ध्याऽ अगद्ध्याः प्प्यायद्ध्॒मा कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑ण॒ऽ आ प्प्या॑यद्ध्वमगद्ध्याः। आ प्प्या॑-यद्ध्वम्। प्प्या॒य॒द्ध्व॒म॒गद्ध्या॒ऽ अ॒गद्ध्याः प्प्या॒य॒द्ध्व॒म्प्या॒य॒द्ध्व॒म॒गद्ध्या॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑यागद्ध्याः

---

1. वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ। आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते। - महाभारत माहात्म्य का अन्तिम श्लोक
प्रश्नानुवाकाद्यारम्भे सविसर्गोष्ठको हरिः। न तस्य प्रणवे सन्धिर्विरामे स्वरितो भवेत्। - भारद्वाजी शिक्षा
फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा १५ संवत् १९५० में महल्ला दशाश्वमेध, बंगाली टोला गणेश महाल भैरो प्रसाद वाजपेयी जी गौरीश यन्त्रालय, बनारस से प्रकाशित पद पाठ की पुस्तक के प्रारम्भ में शिवंः ॥ॐ ३॥ ऐसा मुद्रण है।

2. इषे त्वा यहाँ स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा.प्रा.४.१०१) से तकार का द्विरुच्चारण प्राप्त है।

प्प्यायद्धम्प्यायद्धमग्घ्याऽ इन्द्राय। अग्घ्याऽ इन्द्रायेन्द्रायाग्घ्याऽ अग्घ्याऽ इन्द्राय भागम्भागमिन्द्रायाग्घ्याऽ अग्घ्याऽ इन्द्राय भागम्। इन्द्राय भागम्भागमिन्द्रायेन्द्राय भागम्प्रजावतीः प्प्रजावतीर्ब्भागमिन्द्रायेन्द्राय भागम्प्रजावतीः। भागम्प्रजावतीः प्प्रजावतीर्ब्भागम्भागम्प्रजावतीरनमीवाऽ अनमीवाः प्प्रजावतीर्ब्भागम्भागम्प्रजावतीरनमीवाः। प्रजावतीरनमीवाऽ अनमीवाः प्प्रजावतीः प्प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अनमीवाः प्प्रजावतीः प्प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्माः[1]। प्रजावतीरिति प्प्रजा ववतीः। अनमीवाऽ अयक्ष्माऽ अयक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनमीवाऽ अयक्ष्मा मा मायक्ष्माऽ अनमीवाऽ अनमीवाऽ अयक्ष्मा मा। अयक्ष्मा मा मायक्ष्माऽ अयक्ष्मा मा वो वो मायक्ष्माऽ अयक्ष्मा मा वः। मा वो वो मा मा व स्तेन स्तेनो वो मा मा व स्तेनः। व्व स्तेन स्तेनो वो व स्तेनऽ ईशतेशत स्तेनो वो व स्तेनऽ ईशत। स्तेनऽ ईशतेशत स्तेन स्तेनऽ ईशत मा मेशत स्तेन स्तेनऽ ईशत मा। ईशत मा मेशतेशत माघशंꣳसोघशंꣳसो मेशतेशत माघशंꣳसः। माघशंꣳसोघशंꣳसो मा माघशंꣳसो ध्रुवा ध्रुवाऽ अघशंꣳसो मा माघशंꣳसो ध्रुवाः। अघशंꣳसो ध्रुवा ध्रुवाऽ अघशंꣳसोघशंꣳसो ध्रुवाऽ अस्स्मिन्नस्स्मिन्ध्रुवाऽ अघशंꣳसोघशंꣳसो ध्रुवाऽ अस्स्मिन्। अघशंꣳसऽ इत्यघ शंꣳसः। ध्रुवाऽ अस्स्मिन्नस्स्मिन्ध्रुवा ध्रुवाऽ अस्स्मिन्न्गोपतौ गोपतावस्स्मिन्ध्रुवा ध्रुवाऽ अस्स्मिन्न्गोपतौ। अस्स्मिन्न्गोपतौ गोपतावस्स्मिन्नस्स्मिन्न्गोपतौ स्यात स्यात गोपतावस्स्मिन्नस्स्मिन्न्गोपतौ स्यात। गोपतौ स्यात स्यात गोपतौ गोपतौ स्यात बह्वीर्ब्बह्वीः स्यात गोपतौ गोपतौ स्यात बह्वीः[2]। गोपताविति गो पतौ।

---

[1]. अयक्ष्माः यहाँ पर स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से ककार का द्विरुच्चारण प्रतीत होता है परन्तु " येस्तु परं तेर्न पूर्वम्" (वा.प्रा.४.१०५) इस सूत्र से द्विरुच्चारण नहीं होगा, यह ज्ञात होता है।

[2]. बह्वीः यहां "परं तु रेफहकाराभ्याम्" (वा.प्रा.४.१०२) इस सूत्र से हकार से परे वकार का द्वित्व होता है।

स्यात् बृद्धीर्बृद्धीः स्यात स्यात बृद्धीर्य्यजमानस्य् यजमानस्य बृद्धीः स्यात स्यात बृद्धीर्य्यजमानस्य। बृद्धीर्य्यजमानस्य् यजमानस्य बृद्धीर्बृद्धीर्य्यजमानस्य पृशून्पृशून्यजमानस्य बृद्धीर्बृद्धीर्य्यजमानस्य पृशून्। यजमानस्य पृशून्पृशून्यजमानस्य् यजमानस्य पृशून्पाहि पाहि पृशून्यजमानस्य् यजमानस्य पृशून्पाहि। पृशून्पाहि पाहि पृशून्पृशून्पाहि। पाहीतिं पाहि[1] ॥१॥

वसोः पवित्रम्पवित्रँव सोर्वसोः पवित्रमस्यसि पवित्रँव सोर्वसोः पवित्रमसि। पवित्रमस्यसि पवित्रम्पवित्रमसि द्यौर्द्यौरसि पवित्रम्पवित्रमसि द्यौः। असि द्यौर्द्यौरस्यसि द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौरस्यसि द्यौः पृथिवी। द्यौः पृथिवी पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी मातरिश्वनो मातरिश्वनः पृथिवी द्यौर्द्यौः पृथिवी मातरिश्वनः। पृथिवी मातरिश्वनो मातरिश्वनः पृथिवी पृथिवी मातरिश्वनो घर्म्मो घर्म्मो मातरिश्वनः पृथिवी पृथिवी मातरिश्वनो घर्म्मः। मातरिश्वनो घर्म्मो घर्म्मो मातरिश्वनो मातरिश्वनो घर्म्मो विश्वधा विश्वधा घर्म्मो मातरिश्वनो मातरिश्वनो घर्म्मो विश्वधाः। घर्म्मो विश्वधा विश्वधा घर्म्मो घर्म्मो विश्वधाः परमेण परमेण विश्वधा घर्म्मो घर्म्मो विश्वधाः परमेण। विश्वधाः परमेण परमेण विश्वधा विश्वधाः परमेण धाम्ना धाम्ना परमेण विश्वधा विश्वधाः परमेण धाम्ना। विश्वधाऽ इतिं विश्व धाः॥ परमेण धाम्ना धाम्ना परमेण परमेण धाम्ना दृꣳहस्व दृꣳहस्व धाम्ना परमेण परमेण धाम्ना दृꣳहस्व। धाम्ना दृꣳहस्व दृꣳहस्व धाम्ना धाम्ना दृꣳहस्व मा मा दृꣳहस्व धाम्ना धाम्ना दृꣳहस्व मा। दृꣳहस्व मा मा दृꣳहस्व दृꣳहस्व मा ह्वार्ह्वाम्र्मा दृꣳहस्व दृꣳहस्व मा ह्वाः। मा ह्वार्ह्वाम्र्मा मा ह्वाम्र्मा मा ह्वाम्र्मा मा ह्वाम्र्मा। ह्वाम्र्मा मा ह्वार्ह्वाम्र्मा

1. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान में स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये।

तें त॒ मा ह्वा॑र्ह्वा॒र्म्मा तें[1]। मा तें त॒ मा मा तें य॒ज्ञप॑तिर्य्य॒ज्ञप॑तिस्त॒ मा मा तें य॒ज्ञप॑तिः। त॒ य॒ज्ञप॑तिर्य्य॒ज्ञप॑तिस्ते ते य॒ज्ञप॑तिर्ह्वा॑षीद्ध्वा॑र्षीद्य॒ज्ञप॑तिस्ते ते य॒ज्ञप॑तिर्ह्वा॑र्षीत्। य॒ज्ञप॑तिर्ह्वा॑र्षीद्ध्वा॑र्षीद्य॒ ज्ञप॑तिर्य्य॒ज्ञप॑तिर्ह्वा॑र्षीच्छ॒तधा॑रꣳ श॒तधा॑रꣳ ह्वा॑र्षीद्य॒ज्ञप॑तिर्य्य॒ज्ञप॑तिर्ह्वा॑र्षी च्छ॒तधा॑रम्। य॒ज्ञप॑ति॒रिति॑ य॒ज्ञ प॑तिः। ह्वा॒र्षी॒च्छ॒तधा॑रꣳ श॒तधा॑रꣳ ह्वा॑र्षीद्धा र्षीच्छ॒तधा॑रꣳ स॒हस्र॑धारꣳ स॒हस्र॑धारꣳ श॒तधा॑रꣳ ह्वा॑र्षीद्ध्वा॑र्षीच्छ॒तधा॑रꣳ स॒हस्र॑ धारम्॥२॥

श॒तधा॑रꣳ स॒हस्र॑धारꣳ स॒हस्र॑धारꣳ श॒तधा॑रꣳ श॒तधा॑रꣳ स॒हस्र॑धारन्दे॒वो दे॒वः स॒हस्र॑धारꣳ श॒तधा॑रꣳ श॒तधा॑रꣳ स॒हस्र॑धारन्दे॒वः। श॒तधा॑र॒मिति॑ श॒त धा॑रम्। स॒हस्र॑धारन्दे॒वो दे॒वः स॒हस्र॑धारꣳ स॒हस्र॑धारन्दे॒वस्त्वा॑ त्वा दे॒वः स॒हस्र धारꣳ स॒हस्र॑धारन्दे॒वस्त्वा॑। स॒हस्र॑धार॒मिति॑ स॒हस्र॑ धारम्॥ दे॒वस्त्वा॑ त्वा दे॒वो दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ दे॒वो दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता। त्वा॒ स॒वि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ त्वा सवि॒ता पु॑नातु पुनातु सवि॒ता त्वा॑ त्वा सवि॒ता पु॑नातु। स॒वि॒ता पु॑नातु पुनातु सवि॒ता स॑वि॒ता पु॑नातु॒ व्वसो॒र्व्वसो॑ः पुनातु सवि॒ता स॑वि॒ता पु॑नातु॒ व्वसो॑ः। पु॒ना॒तु॒ व्वसो॒र्व्वसो॑ः पुनातु पुनातु॒ व्वसो॑ः प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण॒ व्वसो॑ः पुनातु पुनातु॒ व्वसो॑ः प॒वित्त्रे॑ण[2]। व्वसो॑ः प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण॒ व्वसो॒र्व्वसो॑ः प॒वित्त्रे॑ण श॒तधा॑रेण श॒तधा॑रेण प॒वित्त्रे॑ण॒ व्वसो॒र्व्वसो॑ः प॒वित्त्रे॑ण श॒तधा॑रेण। प॒वित्त्रे॑ण श॒तधा॑रेण श॒तधा॑रेण प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण श॒तधा॑रेण सु॒प्प्वा॒ सु॒प्प्वा॒ श॒तधा॑रेण प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण श॒तधा॑रेण सु॒प्प्वा॒। श॒तधा॑रेण सु॒प्प्वा॒ सु॒प्प्वा॒ श॒तधा॑रेण श॒तधा॑रेण सु॒प्प्वा॒ काङ्क्षाꣳ सु॒प्प्वा॒ श॒तधा॑रेण

1. ह्वार्म्मा यहाँ सन्धि के प्रारम्भ में अस्वरपूर्व होने से वकार का द्वित्व अनपेक्षित है।

2. स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) स्वर से परे संयोगादि सर्वत्र द्वित्व होता है। पवित्त्रेण यहाँ तकार का द्वित्व होगा। विसर्जनीयः(वा.प्रा.४.११६) इस सूत्र के अनुसार व्वसोः पवित्त्रेण यहाँ विसर्जनीय का द्वित्व नहीं होगा। वा.प्रा.८.७ के अधिकार में आये हुये अः इति विसर्जनीयः(वा.प्रा.८.२२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय की गणना व्यञ्जनों में है। यहाँ वा.प्रा.४.१०१. से प्राप्त विसर्जनीय के द्वित्व का निषेध ४.११६. से होगा।

शतधारेण सुप्प्वा काम्। शतधारेणेति शत धारेण। सुप्प्वा काङ्काᳪ सुप्प्वा सुप्प्वा कामधुक्क्षोधुक्षः काᳪ सुप्प्वा सुप्प्वा कामधुक्षः। सुप्प्वेति सु प्वा। कामधुक्क्षोधुक्षः काङ्कामधुक्षः सा साधुक्षः काङ्कामधुक्षः सा। अधुक्षः सा साधुक्क्षोधुक्षः सा व्विश्वायुर्व्विश्वायुः साधुक्क्षोधुक्षः सा व्विश्वायुः ॥३॥

सा व्विश्वायुर्व्विश्वायुः सा सा व्विश्वायुर्व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा व्विश्वायुः सा सा व्विश्वायुर्व्विश्वकर्म्मा। व्विश्वायुर्व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा व्विश्वायुर्व्विश्वायुर्व्विश्व-कर्म्मा व्विश्वधाया व्विश्वधाया व्विश्वकर्म्मा व्विश्वायुर्व्विश्वायुर्व्विश्वकर्म्मा व्विश्वधायाः। व्विश्वायुरिति व्विश्व आयुः। व्विश्वकर्म्मा व्विश्वधाया व्विश्वधाया व्विश्वकर्म्मा व्विश्व कर्म्मा व्विश्वधायाऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य व्विश्वधाया व्विश्वकर्म्मा व्विश्वकर्म्मा व्विश्वधायाऽ इन्द्रस्य। व्विश्वकर्म्मेति व्विश्व कर्म्मा। व्विश्वधायाऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य व्विश्वधाया व्विश्वधायाऽ इन्द्रस्य त्वा त्वेन्द्रस्य व्विश्वधाया व्विश्वधायाऽ इन्द्रस्य त्वा। व्विश्व धायाऽ इति व्विश्व धायाः॥ इन्द्रस्य त्वा त्वेन्द्रस्येन्द्रस्य त्वा भागम्भागन्त्वेन्द्र स्येन्द्रस्य त्वा भागम्। त्वा भागम्भागन्त्वा त्वा भागᳪ सोमेन सोमेन भागन्त्वा त्वा भागᳪ सोमेन[1]। भागᳪ सोमेन सोमेन भागम्भागᳪ सोमेना तनच्मि तनच्म्या सोमेन भागम्भागᳪ सोमेना तनच्मि। सोमेना तनच्मि तनच्म्या सोमेन सोमेना तनच्मि व्विष्णणो व्विष्णणो तनच्म्या सोमेन सोमेना तनच्मि व्विष्णणो। आ तनच्मि। तनच्मि व्विष्णणो व्विष्णणो तनच्मि तनच्मि व्विष्णणो हुव्यᳪ हुव्यँव्विष्णणो तनच्मि तनच्मि व्विष्णणो हुव्यम्। व्विष्णणो हुव्यᳪ हुव्यँ व्विष्णणो व्विष्णणो हुव्यᳪ रक्क्ष रक्क्ष हुव्यँव्विष्णणो व्विष्णणो हुव्यᳪ रक्क्ष।

---

1. भागम् सोमेन यहाँ पर अनुस्वारं शेष्मसु मकारः(वा.प्रा.४.१) इस सूत्र से मकार का अनुस्वार होता है तथा प्र.सू.३.१ के अनुसार अनुस्वार का ᳪ आदेश होता है।

व्विष्ण॒णो॒ऽ इति॒ विष्ण॑णो॑। ह॒व्यꣳ र॑क्ष रक्ष ह॒व्यꣳ ह॒व्यꣳ र॑क्ष। र॒क्षेति॑ रक्ष॥४॥

अग्ग्ने॑ व्व्रतपते व्व्रतप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्व्रतपते व्व्र॒तँव्व्र॒तँव्व्र॑तप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्व्रतपते व्व्र॒तम्। व्व्र॒त॒प॒ते॒ व्व्र॒तँव्व्र॒तँव्व्र॑तपते व्व्रतपते व्व्रतञ्च॑रिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि व्व्र॒तँव्व्र॑तपते व्व्रतपते व्व्रत-ञ्च॑रिष्ष्यामि। व्व्र॒त॒प॒त॒ऽ इति॑ व्व्रत पते। व्व्रतञ्च॑रिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि व्व्र॒तँव्व्र॒तञ्च॑रि-ष्ष्यामि॒ तत्तच्च॑रिष्ष्यामि व्व्र॒तँव्व्र॒तञ्च॑रिष्ष्यामि॒ तत्। च॒रि॒ष्ष्या॒मि॒ तत्तच्च॑रिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि॒ तच्छ॑केयꣳ शके॒यन्तच्च॑रिष्ष्यामि चरिष्ष्यामि॒ तच्छ॑केयम्। तच्छ॑-केयꣳ शके॒यन्तत्तच्छ॑के॒यन्तत्तच्छ॑के॒यन्तत्तच्छ॑के॒यन्तत्। श॒के॒य॒न्तत्तच्छ॑केयꣳ शके॒यन्तन्न्मे॑ मे॒ तच्छ॑केयꣳ शके॒यन्तन्न्मे॑। तन्न्मे॑ मे॒ तत्तन्न्मे॑ राद्ध्यताꣳ राद्ध्यता-म्मे॒ तत्तन्न्मे॑ राद्ध्यताम्। मे॒ रा॒द्ध्य॒ता॒ꣳ रा॒द्ध्य॒ता॒म्मे॒ मे॒ रा॒द्ध्य॒ता॒मि॒दमि॒दꣳ रा॑द्ध्य ताम्मे मे राद्ध्यतामि॒दम्। रा॒द्ध्य॒ता॒मि॒दमि॒दꣳ रा॑द्ध्यताꣳ राद्ध्यतामि॒दम॒हम॒ह मि॒दꣳ रा॑द्ध्यताꣳ राद्ध्यतामि॒दम॒हम्॥ इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हमनृ॑ता॒दनृ॑ताद॒हमि॒ दमि॒दम॒हमनृ॑तात्। अ॒हमनृ॑ता॒दनृ॑ताद॒हम॒हमनृ॑तात्स॒त्त्यꣳ स॒त्त्यमनृ॑ताद॒हम॒हमनृ॑ तात्स॒त्त्यम्। अनृ॑तात्स॒त्त्यꣳ स॒त्त्यमनृ॑ता॒दनृ॑तात्स॒त्त्यमुपोप॑ स॒त्त्यमनृ॑ता॒दनृ॑तात्स॒ त्त्यमुप॑। स॒त्त्यमुपोप॑ स॒त्त्यꣳ स॒त्त्यमुपैम्म्ये॒म्म्युप॑ स॒त्त्यꣳ स॒त्त्यमुपैमि। उपैम्म्ये॒ म्म्युपोपैमि॒ कः॒ कऽ ए॒म्म्युपोपैमि॒ कः॒। ए॒मि॒ कः॒ कऽ ए॑म्म्येमि॒ कस्त्त्वा॑ त्त्वा॒ कऽ ए॑म्म्येमि॒ कस्त्त्वा॑॥५॥

कस्त्त्वा॑ त्त्वा॒ कः॒ कस्त्त्वा॑ युनक्ति युनक्ति त्त्वा॒ कः॒ कस्त्त्वा॑ युनक्ति। त्त्वा॒ यु॒न॒क्ति॒ यु॒न॒क्ति॒ त्त्वा॒ त्त्वा॒ यु॒न॒क्ति॒ स स यु॑नक्ति त्त्वा त्त्वा युनक्ति॒ सः॒। यु॒न॒क्ति॒ स स यु॑नक्ति युनक्ति॒ स कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ स यु॑नक्ति युनक्ति॒ स कस्म्मै॑[1]। स कस्म्मै॒

---

[1]. पुनरुक्तानि लुप्यन्ते पदानीत्याह शाकलः। अलोप इति गार्ग्यस्य काण्वस्यार्थवशादिति। वा. प्रा. ४.१७७. के भाष्य में उव्वट द्वारा उद्धृत। यहाँ त्वा, युनक्ति इन पुनरुक्त पदों का लोप हुआ है। कस्म्मै यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से मकार का द्वित्व होता है।

कस्म्मै॒ स स कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ स स कस्म्मै॒ तस्म्मै॑। कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कर्म्म॑णे। तस्म्मै॒ कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कर्म्म॑णे वाँव्वा॒ङ्कर्म्म॑णे॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कर्म्म॑णे वाम्॥ कर्म्म॑णे वाँव्वा॒ङ्कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे वाँ॒व्वेषा॑य॒ व्वेषा॑य वा॒ङ्कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे वाँ॒व्वेषा॑य। व्वाँ॒व्वेषा॑य॒ व्वेषा॑य वाँव्वाँ॒व्वेषा॑य वाँव्वाँ॒व्वेषा॑य वाँव्वाँ॒व्वेषा॑य वाम्। व्वेषा॑य वाँव्वाँ॒व्वेषा॑य॒ व्वेषा॑य वा॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒म्प्रत्त्यु॑ष्टँव्वाँ॒व्वेषा॑य॒ व्वेषा॑य वा॒म्प्रत्त्यु॑ष्टम्। व्वा॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒म्प्रत्त्यु॑ष्टँव्वाँव्वा॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्षो॒ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टँव्वाँव्वा॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्ष॑ः ॥६॥

प्रत्त्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्षो॒ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्ट॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्ट॒म्प्रत्त्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टाः। प्रत्त्यु॑ष्ट॒मिति॒ प्प्रति॑ उष्टम्। रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ रक्षो॒ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ अरा॑त॒योरा॑तय॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ रक्षो॒ रक्ष॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ अरा॑तयः। प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ अरा॑त॒योरा॑तय॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ अरा॑तयो॒ निष्ट॑प्त॒न्निस्त्त॑प्त॒मरा॑तय॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ः प्प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ अरा॑तयो॒ निष्ट॑प्तम्। प्रत्त्यु॑ष्टा॒ऽ इति॒ प्प्रति॑ उष्टाः। अरा॑तयो॒ निष्ट॑प्त॒न्निस्त्त॑प्त॒मरा॑त॒योरा॑तयो॒ निष्ट॑प्त॒ꣳ रक्षो॒ रक्षो॒ निस्त्त॑प्त॒मरा॑त॒योरा॑तयो॒ निष्ट॑प्त॒ꣳ रक्ष॑ः। निष्ट॑प्त॒ꣳ रक्षो॒ रक्षो॒ निस्त्त॑प्त॒न्निष्ट॑प्त॒ꣳ रक्षो॒ निष्ट॑प्ता॒ निस्त्त॑प्ता॒ रक्षो॒ निस्त्त॑प्त॒न्निष्ट॑प्त॒ꣳ रक्षो॒ निष्ट॑प्ताः। निस्त्त॑प्त॒मिति॒ निः त॑प्तम्। रक्षो॒ निष्ट॑प्ता॒ निस्त्त॑प्ता॒ रक्षो॒ रक्षो॒ निष्ट॑प्ता॒ऽ अरा॑त॒योरा॑तयो॒ निस्त्त॑प्ता॒ रक्षो॒ रक्षो॒ निष्ट॑प्ता॒ऽ अरा॑तयः। निष्ट॑प्ता॒ऽ अरा॑त॒योरा॑तयो॒ निस्त्त॑प्ता॒ निष्ट॑प्ता॒ऽ अरा॑तयऽ उ॒रूर्व्वरा॑तयो॒ निस्त्त॑प्ता॒ निष्ट॑प्ता॒ऽ अरा॑तयऽ उ॒रु। निस्त्त॑प्ता॒ऽ इति॒ निः त॑प्ताः। अरा॑तयऽ उ॒रूर्व्वरा॑त॒योरा॑तयऽ उ॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒र्व्वरा॑त॒योरा॑तयऽ उ॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम्॥ उ॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒रूर्व्व॒न्तरि॑क्ष॒मन्न्वन्न्व॒न्तरि॑क्षमु॒रूर्व्व॒न्तरि॑क्ष॒मनु॑। अ॒न्तरि॑क्ष॒मन्न्वन्न्व॒न्तरि॑

क्षमन्तरिक्षमन्त्वेम्म्येम्म्यन्त्वन्तरिक्षमन्तरिक्षमन्त्वेमि। अन्त्वेम्म्येम्म्यन्त्व-न्त्वेमि धूर्द्धूरेम्म्यन्त्वन्त्वेमि धूः। एमि धूर्द्धूरेम्म्येमि धूरस्यसि धूरेम्म्येमि धूरसि॥७॥

धूरस्यसि धूर्द्धूरसि धूर्व्व धूर्व्वासि धूर्द्धूरसि धूर्व्व[1]। असि धूर्व्व धूर्व्वास्यसि धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्वास्यसि धूर्व्व धूर्व्वन्तम्। धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धू-र्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्व। धूर्व्वन्तन्धूर्व्व धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व तन्त-न्धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्वन्तन्धूर्व्व तम्। धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व धूर्व्व तँय्यो यस्तन्धूर्व्व धूर्व्व तँय्यः। तँय्यो यस्तन्तँय्योस्म्मानस्म्मान्न्यस्तन्तँय्योस्म्मान्। योस्म्मानस्म्मान्न्यो यो-स्म्मान्धूर्व्वति धूर्व्वत्त्यस्म्मान्न्यो योस्म्मान्धूर्व्वति। अस्म्मान्धूर्व्वति धूर्व्वत्त्यस्म्मान-स्म्मान्धूर्व्वति तन्तन्धूर्व्वत्त्यस्म्मानस्म्मान्धूर्व्वति तम्। धूर्व्वति तन्तन्धूर्व्वति धूर्व्वति तन्धूर्व्व धूर्व्व तन्धूर्व्वति धूर्व्वति तन्धूर्व्व। तन्धूर्व्व धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व यँय्यन्धूर्व्व तन्तन्धूर्व्व यम्। धूर्व्व यँय्यन्धूर्व्व धूर्व्व यँव्वयँव्वयँय्यन्धूर्व्व धूर्व्व यँव्वयम्। यँव्वयँव्वयँय्यँय्यँव्वयन्धूर्व्वा-मो धूर्व्वामो व्वयँय्यँय्यँव्वयन्धूर्व्वामः। व्वयन्धूर्व्वामो धूर्व्वामो व्वयँव्वयन्धूर्व्वामो देवाना-न्देवानान्धूर्व्वामो व्वयँव्वयन्धूर्व्वामो देवानाम्। धूर्व्वामो देवानान्देवानान्धूर्व्वामो धूर्व्वा-मो देवानामस्यसि देवानान्धूर्व्वामो धूर्व्वामो देवानामसि॥ देवानामस्यसि देवाना-न्देवानामसि व्वह्नितमँव्वह्नितममसि देवानान्देवानामसि व्वह्नितमम्। असि व्वह्नित-मँव्वह्नितममस्यसि व्वह्नितमꣳ सस्न्नितमꣳ सस्न्नितमँव्वह्नितममस्यसि व्वह्नितमꣳ सस्न्नितमम्[2]। व्वह्नितमꣳ सस्न्नितमꣳ सस्न्नितमँव्वह्नितमँव्वह्नितमꣳ सस्न्नितम-म्पप्प्रितमम्पप्प्रितमꣳ सस्न्नितमँव्वह्नितमँव्वह्नितमꣳ सस्न्नितमम्पप्प्रितमम्। व्वह्नि

---

[1]. परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) रेफ एवं हकार से परे व्यञ्जन का द्वित्व होता है। धूर्व्व यहाँ रेफ तथा दो वकार संयुक्त व्यञ्जन हैं। रेफ तथा हकार का द्वित्व नहीं होता है। ज्यो. वृ. पृ.१२९ में भी कहा है- रेफहकारयोः प्रत्यक्षश्रुतिनिमित्तत्वेन सामान्यप्राप्तकार्यबाधः, तेन रहभिन्नव्यञ्जनस्यैवानेन द्वित्वम्। अतिह्रस्वम्।(पद.३०।२० सं.३०।२२)

[2]. ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) ऊष्म एवं अन्तस्थ से परे स्पर्श का द्वित्व होता है। यहाँ सस्न्नितमम् में नकार का द्वित्व होगा।

त॒म॒मिति॒ वह्नि॑ तमम्[1]। सस्नि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒ꣳ सस्नि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तममम्। सस्नि॑तम॒मिति॒ सस्नि॑ तमम्। पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒म्पप्रि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तमन्दे॒वहू॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒म्पप्रि॑तम॒म्पप्रि॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तममम्। पप्रि॑तम॒मिति॒ पप्रि॑ तमम्। जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तमन्दे॒वहू॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तम॒मह्रु॑त॒मह्रु॑तन्दे॒वहू॑तम॒ञ्जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमन्दे॒वहू॑तम॒मह्रु॑तम्। जुष्ट॑तम॒मिति॒ जुष्ट॑तमम्। दे॒व॒हू॑तम॒मह्रु॑त॒मह्रु॑तन्दे॒वहू॑तमन्दे॒वहू॑तम॒मह्रु॑तमस्य॒स्यह्रु॑तन्दे॒वहू॑तमन्दे॒वहू॑तम॒मह्रु॑तमसि। दे॒व॒हू॑तम॒मिति॑ दे॒व हू॑तमम्॥८॥

अह्रु॑तमस्य॒स्यह्रु॑त॒मह्रु॑तमसि ह॒वि॒र्द्धान॑ꣳ ह॒वि॒र्द्धान॑म॒स्यह्रु॑त॒मह्रु॑तमसि ह॒वि॒र्द्धान॑म्। अ॒सि॒ ह॒वि॒र्द्धान॑ꣳ ह॒वि॒र्द्धान॑मस्यसि ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्णु॒र्व्विष्णु॑र्हवि॒र्द्धान॑मस्यसि ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्णु॑ः। ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्णु॒र्व्विष्णु॑र्हवि॒र्द्धान॑ꣳ ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्णु॑स्त्वा त्वा॒ व्विष्णु॑र्हवि॒र्द्धान॑ꣳ ह॒वि॒र्द्धानँ॒व्विष्णु॑स्त्वा। ह॒वि॒र्द्धान॒मिति॑ ह॒विः॒ धान॑म् ॥ व्विष्णु॑स्त्वा त्वा॒ व्विष्णु॒र्व्विष्णु॑स्त्वा क्क्रमताङ्क्रमतान्त्वा॒ व्विष्णु॒र्व्विष्णु॑स्त्वा क्क्रमताम्। त्वा॒ क्र॒म॒ता॒ङ्क्र॒म॒ता॒न्त्वा॒ त्वा॒ क्र॒म॒ता॒मु॒रूरु क्क्र॑मतान्त्वा त्वा क्क्रमताम॒रु[2]। क्र॒म॒ता॒मु॒रूरु क्क्र॑मताङ्क्रमताम॒रु व्वाता॑य॒ व्वाता॑यो॒रु क्क्र॑मताङ्क्रमताम॒रु व्वाता॑य। उ॒रु व्वाता॑य॒ व्वाता॑यो॒रूरु व्वाता॒याप॑हत॒मप॑हत॒ꣳव्वाता॑यो॒रूरु व्वाता॒याप॑हतम्। व्वाता॒याप॑हत॒मप॑हत॒ꣳव्वाता॑य॒ व्वाता॒याप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ रक्क्षोप॑हत॒ꣳव्वाता॑य॒ व्वाता॒याप॑हत॒ꣳ रक्क्ष॑ः। अप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ रक्क्षोप॑हत॒मप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ यच्छ॑न्ता॒ꣳयच्छ॑न्ता॒ꣳ रक्क्षोप॑हत॒मप॑हत॒ꣳ रक्क्षो॒ यच्छ॑न्ताम्। अप॑हत॒मित्यप॑ हतम्। रक्क्षो॒ यच्छ॑न्ता॒ꣳ-

---

[1]. समासेऽवग्रहो ह्रस्वसमकालः(वा.प्रा.५.१) सामासिक पदों में एकमात्राकाल का अवग्रह होता है।

[2]. उरु उरु यहाँ सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) के अनुसार उ सिं संज्ञक स्वर है।

ऽयच्छंन्ताꣳ रक्षो रक्षो यच्छंन्ताम्पञ्च पञ्च यच्छंन्ताꣳ रक्षो रक्षो यच्छं-
न्ताम्पञ्च। यच्छंन्ताम्पञ्च पञ्च यच्छंन्ताँऽयच्छंन्ताम्पञ्च। पञ्चेति पञ्च॥९॥

देवस्य त्वा त्वा देवस्य देवस्य त्वा सवितुः सवितुस्त्वा देवस्य देवस्य त्वा सवितुः। त्वा सवितुः सवितुस्त्वा त्वा सवितुः प्प्रसवे प्प्रसवे सवितुस्त्वा त्वा सवितुः प्प्रसवे। सवितुः प्प्रसवे प्प्रसवे सवितुः सवितुः प्प्रसवेश्विनोरश्विनोः प्प्रसवे सवितुः सवितुः प्प्रसवेश्विनोः। प्रसवेश्विनोरश्विनोः प्प्रसवे प्प्रसवे-श्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्यामश्विनोः प्प्रसवे प्प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्[1]। प्रसवऽइति प्प्र सवे। अश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्यामश्विनोरश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्ण्णः पूष्ण्णो बाहुब्भ्यामश्विनोरश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्ण्णः। बाहुब्भ्याम्पूष्ण्णः पूष्ण्णो बाहु-ब्भ्याम्बाहुब्भ्याम्पूष्ण्णो हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्याम्पूष्ण्णो बाहुब्भ्याम्बाहुब्भ्या-म्पूष्ण्णो हस्ताब्भ्याम्। बाहुब्भ्यामिति बाहु भ्याम्। पूष्ण्णो हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्याम्पूष्ण्णः पूष्ण्णो हस्ताब्भ्यामग्ग्नयेग्ग्नये हस्ताब्भ्याम्पूष्ण्णः पूष्ण्णो हस्ताब्भ्यामग्ग्नये। हस्ताब्भ्यामग्ग्नयेग्ग्नये हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्यामग्ग्नये जुष्टं-ञ्जुष्टमग्ग्नये हस्ताब्भ्याꣳ हस्ताब्भ्यामग्ग्नये जुष्टम्॥ अग्ग्नये जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नयेग्ग्नये जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टमग्ग्नयेग्ग्नये जुष्टङ्गृह्णामि। जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टं-ञ्जुष्टङ्गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमा-ब्भ्याम्[2]। गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमा-ब्भ्याञ्जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नीषोमाब्भ्याङ्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टम्। अग्ग्नीषो-माब्भ्याञ्जुष्टञ्जुष्टमग्ग्नीषोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टमग्ग्नी-षोमाब्भ्यामग्ग्नीषोमाब्भ्याञ्जुष्टङ्गृह्णामि। जुष्टङ्गृह्णामि गृह्णामि जुष्टञ्जुष्टङ्गृह्णामि

---

[1]. अवसान में मकार आने पर मुष्टिकाकृति का प्रदर्शन विहित है। - या. शि. ५६।

[2]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार आमन्त्रित न होने से यहाँ अग्नीषोमाभ्याम् यह पद द्विरुदात्त है।

भू॒ताय॑ भू॒ताय॑ गृह्णामि॒ जुष्टं॒जुष्टं॑गृह्णामि भू॒ताय॑। गृ॒ह्णा॒मि॒ भू॒ताय॑ भू॒ताय॑ गृह्णामि गृह्णामि भू॒ताय॑ त्वा त्वा भू॒ताय॑ गृह्णामि गृह्णामि भू॒ताय॑ त्वा॥१०॥

भू॒ताय॑ त्वा त्वा भू॒ताय॑ भू॒ताय॑ त्वा॒ न न त्वा॑ भू॒ताय॑ भू॒ताय॑ त्वा॒ न। त्वा॒ न न त्वा॑ त्वा॒ नारा॑तु॒येरा॑तये॒ न त्वा॑ त्वा॒ नारा॑तये। नारा॑तु॒येरा॑तये॒ न नारा॑तये॒ स्व॒॑ स्व॒रर॑ातये॒ न नारा॑तये॒ स्व॒॑। अरा॑तये॒ स्व॒॑ स्व॒ररा॑तु॒येरा॑तये॒ स्व॒रभि॒वि-क्ख्यै॑षमभि॒विक्ख्यै॑षु॒ꣳ स्व॒ररा॑तु॒येरा॑तये॒ स्व॒रभि॒विक्ख्यै॑षम्। स्व॑रभि॒विक्ख्यै॑षम-भि॒विक्ख्यै॑षु॒ꣳ स्व॒॑ स्व॑रभि॒विक्ख्यै॑षु॒न्दृꣳह॑न्ता॒न्दृꣳह॑न्तामभि॒विक्ख्यै॑षु॒ꣳ स्व॒॑ स्व॑रभि॒विक्ख्यै॑षु॒न्दृꣳह॑न्ताम्[1]। अ॒भि॒विक्ख्यै॑षु॒न्दृꣳह॑न्ता॒न्दृꣳह॑न्तामभि॒विक्ख्यै॑षमभि॒विक्ख्यै॑षु॒न्दृꣳह॑न्ता॒न्दुर्य्या॒ दुर्य्या॒ दृꣳह॑न्तामभि॒विक्ख्यै॑षमभि॒विक्ख्यै॑-षु॒न्दृꣳह॑न्ता॒न्दुर्य्या॑ꣳ। अ॒भि॒विक्ख्यै॑षु॒मित्य॑भि॒ वि॒क्ख्यै॑षम्। दृꣳह॑न्ता॒न्दुर्य्या॒ दुर्य्या॒ दृꣳह॑न्ता॒न्दृꣳह॑न्ता॒न्दुर्य्या॑ꣳ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यान्दुर्य्या॒ दृꣳह॑न्ता॒न्दृꣳ-ह॑न्ता॒न्दुर्य्या॑ꣳ पृथि॒व्याम्। दुर्य्या॑ꣳ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यान्दुर्य्या॒ दुर्य्या॑ꣳ पृथि॒व्यामु॒रूरु पृ॑थि॒व्यान्दुर्य्या॒ दुर्य्या॑ꣳ पृथि॒व्यामु॒रु। पृ॒थि॒व्यामु॒रूरु पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यामु॒र्व्वन्तरि॑-क्षमु॒न्तरि॑क्षमु॒रु पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यामु॒र्व्वन्तरि॑क्षम्। उ॒र्व्वन्तरि॑क्षमु॒न्तरि॑क्षमु॒रू-र्व्व॒न्तरि॑क्ष॒मन्वन्व॒न्तरि॑क्षमु॒रूर्व्व॒न्तरि॑क्ष॒मनु॑। अ॒न्तरि॑क्ष॒मन्वन्व॒न्तरि॑क्षम॒-न्तरि॑क्ष॒मन्वे॑म्म्ये॒म्म्यन्व॒न्तरि॑क्षमु॒न्तरि॑क्ष॒मन्वे॑मि। अन्वे॑म्म्ये॒म्म्यन्वे॑मि पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्याऽ ए॒म्म्यन्वन्वे॑मि पृथि॒व्याः। ए॒मि॒ पृ॒थि॒व्याः पृ॑थि॒व्याऽ ए॑म्म्येमि पृथि॒व्यास्त्वा॑ त्वा पृथि॒व्याऽ ए॑म्म्येमि पृथि॒व्यास्त्वा॑। पृ॒थि॒व्यास्त्वा॑ त्वा पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्यास्त्वा॒ नाभौ॒ नाभौ॑ त्वा पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्यास्त्वा॒ नाभौ॑। त्वा॒ नाभौ॒ नाभौ॑ त्वा त्वा॒ नाभौ॑ सादयामि सादयामि॒ नाभौ॑ त्वा त्वा॒ नाभौ॑ सादयामि। नाभौ॑ सादयामि सादयामि॒ नाभौ॒ नाभौ॑ सादया॒म्म्यदि॑त्याऽ

[1]. वा.प्रा.१.१११. के भाष्यकारों ने अनुदात्तपूर्व स्व॑: इस पद को भी जात्य स्वरित माना है।

अदि॑त्याः सादयामि॒ नाभौ॒ नाभौ॑ साद॒याम्म्यदि॑त्याः। सा॒द॒या॒म्म्यदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्याः सादयामि साद॒याम्म्यदि॑त्याऽ उ॒पस्त्थे॑ऽ उ॒पस्त्थेदि॑त्याः सादयामि साद॒याम्म्यदि॑त्याऽ उ॒पस्त्थे॑। अदि॑त्याऽ उ॒पस्त्थे॑ऽ उ॒पस्त्थेदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्याऽ उ॒पस्त्थेग्ग्नेग्ग्ने॑ऽ उ॒पस्त्थेदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्याऽ उ॒पस्त्थेग्ग्ने॑। उ॒पस्त्थेग्ग्नेग्ग्ने॑ऽ उ॒पस्त्थे॑ऽ उ॒पस्त्थेग्ग्ने॑ ह॒व्यꣳ ह॒व्यमग्ग्ने॑ऽ उ॒पस्त्थे॑ऽ उ॒पस्त्थेग्ग्ने॑ ह॒व्यम्[1]। उ॒पस्त्थ॒ऽ इत्यु॒प स्थे॑। अग्ग्ने॑ ह॒व्यꣳ ह॒व्यमग्ग्नेग्ग्ने॑ ह॒व्यꣳ र॑क्ष रक्ष ह॒व्यमग्ग्नेग्ग्ने॑ ह॒व्यꣳ र॑क्ष। ह॒व्यꣳ र॑क्ष रक्ष ह॒व्यꣳ ह॒व्यꣳ र॑क्ष। र॒क्षेति॑ रक्ष॥११॥

प॒वित्त्रे॑ स्त्थ स्त्थः प॒वित्त्रे॑ प॒वित्त्रे॑ स्त्थो व्वैष्णव्य्यौ॒ व्वैष्णव्य्यौ॒ स्त्थः प॒वित्त्रे॑ प॒वित्त्रे॑ स्त्थो व्वैष्णव्य्यौ॒[2]। प॒वित्त्रे॒ऽ इति॑ प॒वित्त्रे॑। स्त्थो॒ व्वै॒ष्ण॒व्य्यौ॒ व्वैष्णव्य्यौ॒ स्त्थ स्त्थो व्वैष्ण॒व्य्यौ सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ स्त्थ स्त्थो व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ सवि॒तुः। व्वै॒ष्ण॒व्य्यौ॒ सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ सवि॒तुर्व्वो॑ वः सवि॒तुर्व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ व्वैष्ण॒व्य्यौ॒ सवि॒तुर्व्वः॑। स॒वि॒तुर्व्वो॑ वः सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वः॑ प्प्रस॒वे प्प्र॑स॒वे व॑ः सवि॒तुः स॑वि॒तुर्व्वः॑ प्प्रस॒वे। व्व॒ः प्प्र॒स॒वे प्प्र॑स॒वे वो॑ वः प्प्रस॒वऽ उदुत्प्र॑स॒वे वो॑ वः प्प्रस॒वऽ उत्। प्र॒स॒वऽ उदुत्प्र॑स॒वे प्प्र॑स॒वऽ उत्पु॑नामि पुना॒म्म्युत्प्र॑स॒वे प्प्र॑स॒वऽ उत्पु॑नामि। प्र॒स॒वऽ इति॑ प्प्र स॒वे। उत्पु॑नामि पुना॒म्म्युदुत्पु॑ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेणाच्छि॑द्द्रेण पुना॒म्म्युदुत्पु॑ना॒म्म्य-च्छि॑द्द्रेण। पु॒ना॒म्म्यच्छि॑द्द्रे॒णाच्छि॑द्द्रेण पुनामि पुना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॒णा-च्छि॑द्द्रेण पुनामि पुना॒म्म्यच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण। अच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॒णाच्छि॑-द्द्रे॒णाच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण॒ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य प॒वित्त्रे॒णाच्छि॑द्द्रे॒णाच्छि॑द्द्रेण प॒वित्त्रे॑ण॒ सू-र्य्य॑स्य। प॒वित्त्रे॑ण॒ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण॒ सूर्य्य॑स्य र॒श्श्मिभी॑ र॒श्श्मि-भिः सूर्य्य॑स्य प॒वित्त्रे॑ण प॒वित्त्रे॑ण॒ सूर्य्य॑स्य र॒श्श्मिभिः॑। सूर्य्य॑स्य र॒श्श्मिभी॑

[1]. उदात्त के अनन्तर स्वरित हो (प्रचय न हो) तो मृदु निपातन का निर्देश है। जैसे उ॒पस्त्थेग्ग्ने॑। याज्ञ० शि० - ११०।

[2]. व्वै॒ष्ण॒व्य्यौ॒ यहाँ औ का जात्य स्वरित स्वर है। एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्यः(वा.प्रा.१.१११)।

र॒श्मिभि॑ः सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॒र्दे॑वी॒र्दे॑वीं र॒श्मिभि॑ः सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॒र्दे॑वीं॑ः। र॒श्मिभि॒र्दे॑वी॒र्दे॑वीं र॒श्मिभीं र॒श्मिभी॒र्दे॑वीं॑राप॑ आपो॒ देवीं र॒श्मिभीं र॒श्मिभि॒र्दे॑वीं॑राप॑ः। र॒श्मिभि॒रिति॑ र॒श्मि भिं॑ः॥ देवीं॑राप॑ आपो॒ देवी॒र्दे॑वीं॑रापो॑ अग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुव॑ आपो॒ देवी॒र्दे॑वीं॑रापो॑ अग्ग्रेगुव॑ः[1]। आ॒पो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ग्ग्रे॒गु॒व॒ऽ आ॒प॒ऽ आ॒पो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒पु॒वो॒ग्ग्रे॒पु॒वो॒ग्ग्रे॒गु॒व॒ऽ आ॒प॒ऽ आ॒पो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒पु॒व॒ः[2]। अ॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒पु॒वो॒ग्ग्रे॒पु॒वो॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ग्ग्रे॒गु॒वो॒ऽ अ॒ग्ग्रे॒पु॒वो-ग्ग्रेग्ग्रें॑ग्ग्रेपुवोग्ग्रेगुवोग्ग्रेगुवो॑ अग्ग्रेपुवोग्ग्रें। अ॒ग्ग्रे॒गु॒व॒ऽ इत्य॑ग्ग्रे गुव॑ः। अ॒ग्ग्रे॒पु॒वो-ग्ग्रेग्ग्रें॑ग्ग्रेपुवोग्ग्रेपु॒वोग्ग्रं॑ इ॒मम॒मि॒मग्ग्रें॑ग्ग्रेपुवोग्ग्रेपु॒वोग्ग्रं॑ इ॒मम्। अ॒ग्ग्रे॒पु॒व॒ऽ इत्य॑-ग्ग्रे पुव॑ः। अग्ग्रं॑ इ॒मम॒मि॒मग्ग्रेग्ग्रं॑ इ॒मम॒द्याद्येमम॒ग्ग्रेग्ग्रं॑ इ॒मम॒द्य। इ॒मम॒द्याद्ये-मम॒मि॒मम॒द्य य॒ज्ञँ॑य॒ज्ञम॒द्येमम॒मि॒मम॒द्य य॒ज्ञम्। अ॒द्य य॒ज्ञँ॑य॒ज्ञम॒द्याद्य य॒ज्ञ-न्नं॑यत नयत य॒ज्ञम॒द्याद्य य॒ज्ञन्नं॑यत। य॒ज्ञन्नं॑यत नयत य॒ज्ञँ॑य॒ज्ञन्नं॑य॒ताग्ग्रे-ग्ग्रें नयत य॒ज्ञँ॑य॒ज्ञन्नं॑य॒ताग्ग्रें। न॒य॒ताग्ग्रेग्ग्रें नयत नय॒ताग्ग्रें य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञ-प॑ति॒मग्ग्रें नयत नय॒ताग्ग्रें य॒ज्ञप॑तिम्। अग्ग्रें य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑ति॒मग्ग्रेग्ग्रें य॒ज्ञप॑तिꣳ सुधातुं॑ꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑ति॒मग्ग्रेग्ग्रें य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुं॑म्। य॒ज्ञप॑-तिꣳ सु॒धातुं॑ꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिम्। य॒ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुं॑ꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिन्देव॒युव॑न्देव॒-युवँ॑य॒ज्ञप॑तिꣳ सु॒धातुं॑ꣳ सु॒धातुँ॑य॒ज्ञप॑तिन्देव॒युव॑म्। सु॒धातु॒मिति॑ सु॒ धातुं॑म्। य॒ज्ञप॑तिन्देव॒युव॑न्देव॒युवँ॑य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिन्देव॒युवँ॑सु॒ष्म्मा सु॒ष्म्मा दे॑व॒युवँ॑-य॒ज्ञप॑तिँ॑य॒ज्ञप॑तिन्देव॒युवँ॑सु॒ष्म्मा॑ः। य॒ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। दे॒व॒युवँ॑-

[1]. आपोऽ अग्ग्रेगुवः यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।— वा. प्रा. ४.८५।

[2]. अग्ग्रेगुवोऽअग्ग्रेपुवः यहाँ ओकार प्रकृति भाव से रहता है। - वा.प्रा.४.८५.

ऽय़ु॒ष्म्मा य़ु॒ष्म्मा दे॑व॒युव॑न्देव॒युवँ॑ऽय़ु॒ष्म्माऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ य़ु॒ष्म्मा दे॑व॒युव॑न्देव॒युवँ॑-
ऽय़ु॒ष्म्माऽ इन्द्र॑÷ । दे॒व॒युव॒मिति॑ देव॒ य़ुव॑म्॥१२॥

य़ु॒ष्म्माऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ य़ु॒ष्म्मा य़ु॒ष्म्माऽ इन्द्रो॑वृणीतावृणी॒तेन्द्रो॑ य़ु॒ष्म्मा य़ु॒ष्म्माऽ इन्द्रो॑वृणीत। इन्द्रो॑वृणीतावृणी॒तेन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑वृणीत व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृ-णी॒तेन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑वृणीत व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑[1]। अ॒वृ॒णी॒त॒ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृणीतावृणीत व्वृ॒त्र॒तू-र्य्ये॑ य़ू॒यँ॑ऽय़ू॒यँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृणीतावृणीत व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ य़ू॒यम्। व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ य़ू॒यँ॑ऽय़ू॒यँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ य़ू॒यमिन्द्र॒मिन्द्रँ॑ऽय़ू॒यँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ य़ू॒यमिन्द्र॑म्। व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ऽ इति॑ वृ॒त्र॒ तूर्य्ये॑। य़ू॒यमिन्द्र॒मिन्द्रँ॑ऽय़ू॒यँ॑ऽय़ू॒यमिन्द्र॑मवृणीध्वमवृणीध्व॒मिन्द्रँ॑ऽय़ू॒यँ॑ऽय़ू॒यमिन्द्र॑मवृ-णीध्वम्। इन्द्र॑मवृणीध्वमवृणीध्व॒मिन्द्र॒मिन्द्र॑मवृणीध्वँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृणीध्व॒मिन्द्र॒-मिन्द्र॑मवृणीध्वँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑। अ॒वृ॒णी॒ध्वँ॒व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृणीध्वमवृणीध्वँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रो-क्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑वृणीध्वमवृणीध्वँ॑व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ताः। व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रो-क्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॑ व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ। व्वृ॒त्र॒तूर्य्ये॒ऽ इति॑ वृ॒त्र॒ तूर्य्ये॑। प्रोक्क्षि॑ता स्त्थ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्था॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ स्त्थ॒ प्प्रोक्क्षि॑ता॒ः प्प्रोक्क्षि॑ता स्त्था॒ग्ग्नये॑। प्रोक्क्षि॑ता॒ऽ इति॒ प्प्र उ॑क्क्षिताः। स्त्था॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ स्त्थ स्त्था॒ग्ग्नये॑ त्त्वा त्त्वा॒ग्ग्नये॑ स्त्थ स्त्था॒ग्ग्नये॑ त्त्वा॥ अ॒ग्ग्नये॑ त्त्वा त्त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑न्त्त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्त्वा॒ जुष्ट॑म्। त्त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑न्त्त्वा त्त्वा॒ जुष्ट॒म्प्र प्प्र जुष्ट॑न्त्त्वा त्त्वा॒ जुष्ट॒म्प्र। जुष्ट॒म्प्र प्प्र जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒म्प्रोक्क्षा॑म्म्युक्क्षामि॒ प्प्र जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒म्प्रोक्क्षा॑मि। प्रोक्क्षा॑म्म्युक्क्षामि॒ प्प्र प्प्रोक्क्षा॑म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्याम॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्यामुक्क्षामि॒ प्प्र प्प्रोक्क्षा॑म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑-ब्भ्याम्[2]। उ॒क्क्षा॒म्म्य॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्याम॒ग्ग्नीषोमा॑ब्भ्यामुक्क्षाम्म्युक्क्षाम्म्य॒ग्ग्नीषो-

---

1. व्वृत्रतूर्य्ये यहाँ वा.प्रा.४.१०१. से प्राप्त त्र अक्षर में तकार की द्विरुक्ति का निषेध वा.प्रा.६.२७. से है।

2. अग्ग्नीषोमाब्भ्याम् यहां भकार की द्विरुक्ति बकार के साथ होती है। -पा. शि. १०६।

मा॑भ्या॒न्दैव्या॑य॒ दैव्या॑या॒ग्नीषोमा॑भ्यामुक्षाम्म्युक्षाम्म्य॒ग्नीषोमा॑भ्या॒न्दै-
व्या॑य। अ॒ग्नीषोमा॑भ्या॒न्दैव्या॑य॒ दैव्या॑या॒ग्नीषोमा॑भ्याम॒ग्नीषोमा॑भ्या॒न्दैव्या॑य॒
कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ दैव्या॑या॒ग्नीषोमा॑भ्याम॒ग्नीषोमा॑भ्या॒न्दैव्या॑य॒ कर्म्म॑णे॥
दैव्या॑य॒ कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे॒ दैव्या॑य॒ दैव्या॑य॒ कर्म्म॑णे शुन्धध्वꣳ शुन्धध्व॒ङ्कर्म्म॑णे॒
दैव्या॑य॒ दैव्या॑य॒ कर्म्म॑णे शुन्धध्वम्। कर्म्म॑णे शुन्धध्वꣳ शुन्धध्व॒ङ्कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे
शुन्धध्वन्देवय॒ज्ज्यायै॑ देवय॒ज्ज्यायै॑ शुन्धध्व॒ङ्कर्म्म॑णे॒ कर्म्म॑णे शुन्धध्वन्देवय॒ज्ज्यायै॑।
शु॒न्ध॒ध्व॒न्दे॒व॒य॒ज्ज्यायै॑ देवय॒ज्ज्यायै॑ शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वन्देवय॒ज्ज्यायै॒ यद्यद्दे॑वय॒ज्ज्यायै॑
शुन्धध्वꣳ शुन्धध्वन्देवय॒ज्ज्यायै॒ यत्। दे॒व॒य॒ज्ज्यायै॒ यद्यद्दे॑वय॒ज्ज्यायै॑ देवय॒ज्ज्यायै॒
यद्वो॑ वो॒ यद्दे॑वय॒ज्ज्यायै॑ देवय॒ज्ज्यायै॒ यद्वः॑[1]। दे॒व॒य॒ज्ज्याया॒ऽ इति॑ देव य॒ज्ज्यायै॑।
यद्वो॑ वो॒ यद्यद्वोशु॑द्धा॒ऽ अशु॑द्धा वो॒ यद्यद्वोशु॑द्धाः। वोशु॑द्धा॒ऽ अशु॑द्धा वो॒ वोशु॑द्धाः
परा॒जघ्नुः॒ प॑रा॒जघ्नुरशु॑द्धा वो॒ वोशु॑द्धाः परा॒जघ्नुः। अशु॑द्धाः परा॒जघ्नुः प॑रा-
ज॒घ्नुरशु॑द्धा॒ऽ अशु॑द्धाः परा॒जघ्नुरि॒दमि॒दम्प॑रा॒जघ्नुरशु॑द्धा॒ऽ अशु॑द्धाः परा॒जघ्नुरि॒-
दम्। प॒रा॒ज॒घ्नुरि॒दमि॒दम्प॑रा॒जघ्नुः प॑रा॒जघ्नुरि॒दँव्वो॑ वऽ इ॒दम्प॑रा॒जघ्नुः प॑रा॒जघ्नु-
रि॒दँव्वः॑। प॒रा॒ज॒घ्नुरिति॑ परा ज॒घ्नुः। इ॒दँव्वो॑ वऽ इ॒दमि॒दँव्व॒स्तत्तद्वः॑ऽ इ॒दमि॒दँव्व॒स्तत्।
व्व॒स्तत्तद्वो॑ व॒स्तच्छु॑न्धामि शुन्धामि॒ तद्वो॑ व॒स्तच्छु॑न्धामि। तच्छु॑न्धामि शुन्धामि॒
तत्तच्छु॑न्धामि। शु॒न्धा॒मीति॑ शुन्धामि॥१३॥

शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॒स्यव॑धूत॒मव॑धूतमसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॒स्यव॑धूतम्।
अ॒स्यव॑धूत॒मव॑धूतमस्य॒स्यव॑धूत॒ꣳ रक्षो॒ रक्षोव॑धूतमस्य॒स्यव॑धूत॒ꣳ रक्षः॑।
अव॑धूत॒ꣳ रक्षो॒ रक्षोव॑धूत॒मव॑धूत॒ꣳ रक्षोव॑धूता॒ऽ अव॑धूता॒ रक्षोव॑धूत॒-
मव॑धूत॒ꣳ रक्षोव॑धूताः। अव॑धूत॒मित्यव॑ धूतम्। रक्षोव॑धूता॒ऽ अव॑धूता॒ रक्षो॒
रक्षोव॑धूता॒ऽ अरा॑त॒योरा॑त॒योव॑धूता॒ रक्षो॒ रक्षोव॑धूता॒ऽ अरा॑तयः। अव॑धूता॒ऽ

[1]. वो वान्ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वः पद अनुदात्त है।

अरा॑त॒योरा॑त॒योव॑धूता॒ऽ अव॑धूता॒ऽ अरा॑त॒योदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या॒ऽ अरा॑त॒योव॑धूता॒ऽ अव॑धूता॒ऽ अरा॑त॒योदि॑त्याः। अव॑धूता॒ऽ इत्यव॑ धूताः। अरा॑त॒योदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या॒ऽ अरा॑त॒योरा॑त॒योदि॑त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्या॒ऽ अरा॑त॒योरा॑त॒योदि॑त्या॒स्त्वक्। अदि॑त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या॒स्त्वग॑स्यसि॒ त्वगदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या॒स्त्वग॑सि। त्वग॑स्यसि॒ त्वक्क्वग॑सि॒ प्प्रति॒ प्प्रत्य॑सि॒ त्वक्क्वग॑सि॒ प्प्रति॑। अ॒सि॒ प्प्रति॒ प्प्रत्य॑स्यसि॒ प्प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रत्य॑स्यसि॒ प्प्रति॑ त्वा। प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑ति॒रदि॑तिस्त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑तिः। त्वादि॑ति॒रदि॑तिस्त्वा॒ त्वादि॑तिर्व्वेत्तु व्वे॒त्त्वदि॑तिस्त्वा॒ त्वादि॑तिर्व्वेत्तु। अदि॑तिर्व्वेत्तु व्वे॒त्त्वदि॑ति॒रदि॑तिर्व्वे॒त्त्वद्रि॒रद्रि॑र्व्वे॒त्त्वदि॑ति॒रदि॑तिर्व्वे॒त्त्वद्रि॑÷[1]। व्वे॒त्त्वद्रि॒रद्रि॑र्व्वेत्तु व्वे॒त्त्वद्रि॑रस्य॒स्यद्रि॑र्व्वेत्तु व्वे॒त्त्वद्रि॑रसि॥ अद्रि॑रस्य॒स्यद्रि॒रद्रि॑रसि व्वानस्प्प॒त्त्यो व्वा॑नस्प्प॒त्त्यो॒स्यद्रि॒रद्रि॑रसि व्वानस्प्प॒त्त्यः। अ॒सि॒ व्वा॒न॒स्प्प॒त्त्यो व्वा॑नस्प्प॒त्त्यो॒स्यसि व्वानस्प्प॒त्त्यो ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑ व्वानस्प्प॒त्त्यो॒स्यसि व्वानस्प्प॒त्त्यो ग्ग्रावा॑। व्वा॒न॒स्प्प॒त्त्यो ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑ व्वानस्प्प॒त्त्यो व्वा॑नस्प्प॒त्त्यो ग्ग्रावा॑स्यसि॒ ग्ग्रावा॑ व्वानस्प्प॒त्त्यो व्वा॑नस्प्प॒त्त्यो ग्ग्रावा॑सि। ग्रावा॑स्यसि॒ ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑सि पृ॒थुबु॑द्ध्नः पृ॒थुबु॑द्ध्नोसि॒ ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑सि पृ॒थुबु॑द्ध्नः[2]। अ॒सि॒ पृ॒थुबु॑द्ध्नः पृ॒थुबु॑द्ध्नोस्यसि पृ॒थुबु॑द्ध्नः प्प्रति॒ प्प्रति॑ पृ॒थुबु॑द्ध्नोस्यसि पृ॒थुबु॑द्ध्नः प्प्रति॑। पृ॒थुबु॑द्ध्नः प्प्रति॒ प्प्रति॑ पृ॒थुबु॑द्ध्नः पृ॒थुबु॑द्ध्नः प्प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॑ पृ॒थुबु॑द्ध्नः पृ॒थुबु॑द्ध्नः प्प्रति॑ त्वा। पृ॒थुबु॑द्ध्न॒ऽ इति॑ पृ॒थु बु॑द्ध्नः। प्रति॑ त्वा त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑त्या॒ऽ अदि॑त्यास्त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ त्वादि॑त्याः। त्वादि॑त्या॒ऽ अदि॑त्यास्त्वा॒ त्वादि॑त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्यास्त्वा॒ त्वादि॑त्या॒स्त्वक्। अदि॑त्या॒स्त्वक्क्वगदि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या॒स्त्वग्ग्वे॑तु व्वेतु॒ त्वगदि॑त्या॒ऽ

[1]. व्वेतु यहाँ वकार का उच्चारण गुरुवृत्ति से निर्दिष्ट है (या. शि. १५५) भाष्यकार अमरनाथ शास्त्री के अनुसार पादादि वकार का गुरुवृत्ति से सुस्पृष्ट उच्चारण होता है, सुस्पृष्टत्वेन उच्चारण में कालविलम्ब के प्रदर्शन हेतु सम्प्रदायविद् दो वकार लिखते हैं।

[2]. पृथुबुद्ध्नः यहाँ पर धकार की द्विरुक्ति दकार के साथ होगी। - पा. शि. १०७।

अदि॑त्या॒स्त्वग्ग्वे॑तु। त्वग्ग्वे॑तु ब्वे॒तु त्वक्क्वग्ग्वे॑त्त्व॒ग्ग्ने॒र॒ग्ग्नेर्ब्वे॑तु त्वक्क्वग्ग्वे॑त्त्व॒ग्ग्नेः॑।
ब्वेत्त्व॒ग्ग्ने॒र॒ग्ग्नेर्ब्वे॑तु ब्वेत्त्व॒ग्ग्नेस्त॒नूस्त॒नूर॒ग्ग्नेर्ब्वे॑तु ब्वेत्त्व॒ग्ग्नेस्त॒नूः॑ ॥१४॥

अ॒ग्ग्नेस्त॒नूस्त॒नूर॒ग्ग्ने॒र॒ग्ग्नेस्त॒नूर॑स्यसि त॒नूर॒ग्ग्ने॒र॒ग्ग्नेस्त॒नूर॑सि। त॒नूर॑स्यसि त॒नूस्त॒नूर॑सि ब्वा॒चो ब्वा॒चो॒सि त॒नूस्त॒नूर॑सि ब्वा॒चः॑। अ॒सि॒ ब्वा॒चो ब्वा॒चो॒स्यसि ब्वा॒चो ब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वा॒चो॒स्यसि ब्वा॒चो ब्वि॒सर्ज्ज॑नम्[1]। ब्वा॒चो ब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वा॒-चो ब्वा॒चो ब्वि॒सर्ज्ज॑नन्दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये ब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वा॒चो ब्वा॒चो ब्वि॒सर्ज्ज॑नन्दे॒ववी॑तये । ब्वि॒सर्ज्ज॑नन्दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये ब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वि॒सर्ज्ज॑नन्दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये ब्वि॒सर्ज्ज॑नँब्वि॒सर्ज्ज॑नन्दे॒ववी॑तये त्वा। ब्वि॒सर्ज्ज॑न॒मिति॑ वि॒ सर्ज्ज॑नम्। दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये त्वा गृह्णामि गृह्णामि त्वा दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये त्वा गृह्णामि[2]। दे॒ववी॑तय॒ऽ इति॑ दे॒व ब्वी॑तये। त्वा॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ त्वा॒ त्वा॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ बृ॒हद्ग्रा॑वा बृ॒हद्ग्रा॑वा गृह्णामि त्वा त्वा गृह्णामि बृ॒हद्ग्रा॑वा। गृ॒ह्णा॒मि॒ बृ॒हद्ग्रा॑वा बृ॒हद्ग्रा॑वा गृह्णामि गृह्णामि बृ॒हद्ग्रा॑वास्यसि बृ॒हद्ग्रा॑वा गृह्णामि गृह्णामि बृ॒हद्ग्रा॑वासि। बृ॒हद्ग्रा॑वा-स्यसि बृ॒हद्ग्रा॑वा बृ॒हद्ग्रा॑वासि ब्वानस्प॒त्त्यो ब्वा॑नस्प॒त्त्यो॒सि बृ॒हद्ग्रा॑वा बृ॒हद्ग्रा॑वासि ब्वानस्प॒त्त्यः॑। बृ॒हद्ग्रा॒वेति॑ बृ॒हत् ग्रा॑वा। अ॒सि॒ ब्वा॒न॒स्प॒त्त्यो ब्वा॑नस्प॒त्त्यो॒स्यसि ब्वानस्प॒त्त्यः॑ स स ब्वा॑नस्प॒त्त्यो॒स्यसि ब्वानस्प॒त्त्यः॑ सः॑[3]। ब्वा॒न॒स्प॒त्त्यः॑ स स ब्वा॑नस्प॒त्त्यो ब्वा॑नस्प॒त्त्यः॑ सऽ इ॒दमि॒दꣳ स ब्वा॑नस्प॒त्त्यो ब्वा॑नस्प॒त्त्यः॑ सऽ इ॒दम्। सऽ इ॒दमि॒दꣳ स सऽ इ॒दन्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ऽ इ॒दꣳ स सऽ इ॒दन्दे॒वेब्भ्यः॑। इ॒दन्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ऽ इ॒दमि॒दन्दे॒वेब्भ्यो॑ ह॒विर्ह॒विर्द्दे॒वेब्भ्य॑ऽ इ॒दमि॒दन्दे॒वेब्भ्यो॑ ह॒विः॑। दे॒वेब्भ्यो॑ ह॒विर्ह॒विर्द्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ ह॒विः॑ शं॑मीष्ष्व शमिष्ष्व ह॒विर्द्दे॒वेब्भ्यो॑

---

1. ऋकाररेफारुदयश्च(वा.प्रा.३.८२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनम् पद में सकार अविकृत रहता है।

2. गृह्णामि यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से णकार का द्वित्व होता है। गृण्ण्हामि अथवा गृण्ण्हाँमि ऐसा उच्चारण उचित नहीं है। संयोग-पिण्ड मानने पर भी किसी न किसी वर्ण का उच्चारण पहले या बाद में करना होगा।

3. सः सः यहाँ पर (वा.प्रा.३.१६) के अनुसार व्यञ्जन परे होने पर सः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

दे॒वेभ्यो॑ ह॒विः॒ श॑मीष्व। ह॒विः॒ श॑मीष्व शमिष्व ह॒विर्ह॒विः॒ श॑मीष्व सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमिष्व ह॒विर्ह॒विः॒ श॑मीष्व सु॒शमि॑। श॒मी॒ष्व॒ सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमिष्व शमीष्व सु॒शमि॑ शमीष्व शमिष्व सु॒शमि॑ शमिष्व शमीष्व सु॒शमि॑ शमीष्व। श॒मि॒ष्वेति॑ शमिष्व। सु॒शमि॑ शमीष्व शमिष्व सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमीष्व॒ ह॒वि॑ष्कृद्धवि॑ष्कृच्छमिष्व सु॒शमि॑ सु॒शमि॑ शमीष्व॒ ह॒वि॑ष्कृत्। सु॒शमीति॑ सु॒ शमि॑। श॒मी॒ष्व॒ ह॒वि॑ष्कृद्धवि॑ष्कृच्छमिष्व शमीष्व॒ ह॒वि॑ष्कृ॒देहि॒ह्या ह॒वि॑ष्कृ॒च्छमिष्व शमीष्व॒ ह॒वि॑ष्कृ॒देहि॑। श॒मि॒ष्वेति॑ शमिष्व॥ ह॒वि॑ष्कृ॒देहि॒ह्या ह॒वि॑ष्कृद्धवि॑ष्कृ॒देहि॑ कु॒क्कु॒टः॒ कु॑क्कु॒ट॒ इ॒ह्या ह॒वि॑ष्कृद्धवि॑ष्कृ॒देहि॑ कु॒क्कु॒टः॒। ह॒वि॑ष्कृ॒दिति॒ ह॒वि॑ष्कृत्। एहि॑। इ॒हि॒ कु॒क्कु॒टः॒ कु॑क्कु॒ट॒ ई॑हीहि कु॒क्कु॒टो॒स्यसि कु॒क्कु॒ट॒ ई॑हीहि कु॒क्कु॒टो॒सि[1] ॥१५॥

कु॒क्कु॒टो॒स्यसि कु॒क्कु॒टः॒ कु॑क्कु॒टो॒सि॒ मधु॑जिह्वो॒ मधु॑जिह्वोसि कु॒क्कु॒टः॒ कु॑क्कु॒टो॒सि॒ मधु॑जिह्वः। अ॒सि॒ मधु॑जिह्वो॒ मधु॑जिह्वोस्यसि॒ मधु॑जिह्व॒ इष॒मिष॒म्मधु॑जिह्वोस्यसि॒ मधु॑जिह्व॒ इष॑म्। मधु॑जिह्व॒ इष॒मिष॒म्मधु॑जिह्वो॒ मधु॑जिह्व॒ इष॒मूर्ज॒मूर्ज॒मिष॒म्मधु॑जिह्वो॒ मधु॑जिह्व॒ इष॒मूर्ज॑म्। मधु॑जिह्व॒ इति॒ मधु॑ जिह्वः। इष॒मूर्ज॒मूर्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज॒मा व॑द ब्र॒दोर्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज॒मा व॑द। ऊर्ज॒मा व॑द ब्र॒दोर्ज॒मूर्ज॒मा व॑द॒ त्वया॒ त्वया॑ ब्र॒दोर्ज॒मूर्ज॒मा व॑द॒ त्वया॑। आ व॑द। ब्र॒द॒ त्वया॒ त्वया॑ ब्रद ब्रद॒ त्वया॑ ब्र॒यँब्र॒यन्त्वया॑ ब्रद ब्रद॒ त्वया॑ ब्र॒यम्। त्वया॑ ब्र॒यँब्र॒यन्त्वया॒ त्वया॑ ब्र॒यꣳ स॑ङ्घातꣳसङ्घातꣳ सङ्घातꣳसङ्घातँब्र॒यन्त्वया॒ त्वया॑ ब्र॒यꣳ स॑ङ्घातꣳसङ्घातम्। ब्र॒यꣳ स॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ सङ्घा॒तꣳसङ्घातँब्र॒यँब्र॒यꣳ स॑ङ्घातꣳसङ्घातञ्जेष्म्म जेष्म्म सङ्घा॒तꣳसङ्घातँब्र॒यँब्र॒यꣳ स॑ङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म। स॒ङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म जेष्म्म सङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ सङ्घा॒तꣳसङ्घातञ्जेष्म्म ब्र॒र्षवृ॑द्धँब्र॒र्षवृ॑द्धञ्जेष्म्म सङ्घा॒तꣳसङ्घातꣳ

[1]. कुक्कुटः कामलुब्धोऽपि ककारद्वयमुच्चरेत्। एवं वर्णाः प्रयोक्तव्याः कुक्कुटोऽसि निदर्शनम्॥ - या. शि. १८५।

सङ्घातꣳसंङ्घातञ्जेष्म्म ब्वर्षवृंद्धम्[1]। सङ्घातꣳसंङ्घातमितिं सङ्घातम् संङ्घातम्। जेष्म्म् ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धञ्जेष्म्म जेष्म्म ब्वर्षवृंद्धमस्यसि ब्वर्षवृंद्धञ्जेष्म्म जेष्म्म ब्वर्षवृंद्धमसि। ब्वर्षवृंद्धमस्यसि ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धमसि प्प्रति प्प्रत्त्यंसि ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धमसि प्प्रतिं। ब्वर्षवृंद्धमितिं वर्ष ब्वृंद्धम्। असि प्प्रति प्प्रत्त्यंस्यसि प्प्रतिं त्वा त्वा प्प्रत्त्यंस्यसि प्प्रतिं त्वा। प्रतिं त्वा त्वा प्प्रति प्प्रतिं त्वा ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धन्त्वा प्प्रति प्प्रतिं त्वा ब्वर्षवृंद्धम्। त्वा ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धन्त्वा त्वा ब्वर्षवृंद्धँब्वेतु ब्वेतु ब्वर्षवृंद्धन्त्वा त्वा ब्वर्षवृंद्धँब्वेतु[2]। ब्वर्षवृंद्धँब्वेतु ब्वेतु ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धँब्वेतु परांपूतम्परांपूतँब्वेतु ब्वर्षवृंद्धँब्वर्षवृंद्धँब्वेतत्तु परांपूतम्। ब्वर्षवृंद्धमितिं वर्ष ब्वृंद्धम्। ब्वेतु परांपूतम्परांपूतँब्वेतु ब्वेतु परांपूतꣳ रक्क्षो रक्क्षꣳ परांपूतँब्वेतु ब्वेतु परांपूतꣳ रक्क्षं÷। परांपूतꣳ रक्क्षो रक्क्षꣳ परांपूतम्परांपूतꣳ रक्क्षꣳ परांपूताꣳ परांपूता रक्क्षꣳ परांपूतम्परांपूतꣳ रक्क्षꣳ परांपूताꣳ। परांपूतमिति परां पूतम्। रक्क्षꣳ परांपूताꣳ परांपूता रक्क्षो रक्क्षꣳ परांपूताऽ अरांतयोरांतयꣳ परांपूता रक्क्षो रक्क्षꣳ परांपूताऽ अरांतयꣳ। परांपूताऽ अरांतयोरांतयꣳ परांपूताꣳ परांपूताऽ अरांतयोपंहतमपंहतमरांतयꣳ परांपूताꣳ परांपूताऽ अरांतयोपंहतम्। परांपूताऽ इति परां पूताꣳ। अरांतयोपंहतमपंहतमरांतयोरांतयोपंहतꣳ रक्क्षो रक्क्षोपंहतमरांतयोरांतयोपंहतꣳ रक्क्षं÷। अपंहतꣳ रक्क्षो रक्क्षोपंहतमपंहतꣳ रक्क्षों ब्वायुर्ब्वायू रक्क्षोपंहतमपंहतꣳ रक्क्षों ब्वायुः[3]।अपंहतमित्त्यपं हतम्। रक्क्षों ब्वायुर्ब्वायू रक्क्षो रक्क्षों ब्वायुर्ब्वो वो ब्वायू रक्क्षो रक्क्षों ब्वायुर्ब्वं÷। ब्वायुर्ब्वो वो ब्वायुर्ब्वायुर्ब्वो ब्वि वि वों ब्वायुर्ब्वायुर्ब्वो ब्वि। ब्वो ब्वि वि वों वो ब्वि विंनक्क्तु ब्विनक्क्तु ब्वि वों वो ब्वि विंनक्क्तु। ब्वि विंनक्क्तु ब्विनक्क्तु ब्वि वि विंनक्क्तु देवो देवो ब्विंनक्क्तु ब्वि वि विंनक्क्तु

---

1. रलावृलृवर्णाभ्यामूष्मणि स्वरोदये सर्वत्र (वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र के अनुसार वर्षवृद्धम् यहाँ रेफ ऋ के सदृश उच्चरित होता है (एकारघटित पाठ होता है)।

2. द्विस्पर्शम्(वा.प्रा.६.२५) इस अधिकार-सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र ६.२६. के अनुसार वेत्तु इस पद में दो स्पर्श त हैं।

3. विष्णुर्वायुस्तथा वह्निर्वरुणस्य विषूचिका। वसोर्विभाति विश्वस्य ह्यष्टौ दन्त्याः प्रकीर्तिताः॥– अ. शि. १६।

दे॒वः॑। बि॒न॒क्तु॒ दे॒वो दे॒वो बि॑नक्तु बिनक्तु दे॒वो वो॑ वो दे॒वो बि॑नक्तु बिनक्तु दे॒वो वः॑॥ दे॒वो वो॑ वो दे॒वो दे॒वो वः॑ सवि॒ता स॑वि॒ता वो॑ दे॒वो दे॒वो वः॑ सवि॒ता। व॒ऽ स॒वि॒ता स॑वि॒ता वो॑ वऽ सवि॒ता हिर॑ण्ण्यपाणि॒र्हिर॑ण्ण्यपाणिः सवि॒ता वो॑ वः सवि॒ता हिर॑-ण्ण्यपाणिः। स॒वि॒ता हिर॑ण्ण्यपाणि॒र्हिर॑ण्ण्यपाणिः सवि॒ता स॑वि॒ता हिर॑ण्ण्यपा-णि॒ः प्प्रति॒ प्प्रति॒ हिर॑ण्ण्यपाणिः सवि॒ता स॑वि॒ता हिर॑ण्ण्यपाणि॒ः प्प्रति॑। हिर॑-ण्ण्यपाणि॒ः प्प्रति॒ प्प्रति॒ हिर॑ण्ण्यपाणि॒र्हिर॑ण्ण्यपाणि॒ः प्प्रति॑ गृभ्ण्णातु गृभ्ण्णातु॒ प्प्रति॒ हिर॑ण्ण्यपाणि॒र्हिर॑ण्ण्यपाणि॒ः प्प्रति॑ गृभ्ण्णातु। हिर॑ण्ण्यपाणि॒रिति॒ हिर॑ण्ण्य पाणिः। प्रति॑ गृभ्ण्णातु गृभ्ण्णातु॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ गृभ्ण्णा॒त्त्वच्छिं॑द्रे॒णाच्छिं॑द्रेण गृभ्ण्णातु॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ गृभ्ण्णा॒त्त्वच्छिं॑द्रेण। गृभ्ण्णा॒त्त्वच्छिं॑द्रे॒णाच्छिं॑द्रेण गृभ्ण्णातु गृभ्ण्णा॒त्त्वच्छिं॑द्रेण पा॒णिना॑ पा॒णिनाच्छिं॑द्रेण गृभ्ण्णातु गृभ्ण्णा॒त्त्वच्छिं॑द्रेण पा॒णिना॑। अच्छिं॑द्रेण पा॒णिना॑ पा॒णिनाच्छिं॑द्रे॒णाच्छिं॑द्रेण पा॒णिना॑। पा॒णिनेति॑ पा॒णिना॑॥१६॥

धृष्टि॑रस्यसि॒ धृष्टि॒र्धृष्टि॑र॒स्यपापा॑सि॒ धृष्टि॒र्धृष्टि॑र॒स्यप॑। अ॒स्यपापा॑स्य॒स्यपा॑-ग्ग्ने॒ग्ग्नेपा॑स्य॒स्यपा॑ग्ग्ने। अपा॑ग्ग्ने॒ग्ग्नेपापा॑ग्ग्नेऽ अ॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम॒ग्ग्नेपापा॑ग्ग्नेऽ अ॒ग्ग्निम्[1]। अ॒ग्ग्नेऽ अ॒ग्ग्निम॒ग्ग्निम॑ग्ग्ने॒ग्ग्नेऽ अ॒ग्ग्निमा॒माद॑मा॒माद॑म॒ग्ग्निम॑ग्ग्ने॒ग्ग्नेऽ अ॒ग्ग्निमा॒माद॑म्। अ॒ग्ग्निमा॒माद॑मा॒माद॑म॒ग्ग्निम॒ग्ग्निमा॒माद॑ञ्जहि जह्य्या॒माद॑म॒ग्ग्निम॒ग्ग्निमा॒माद॑ञ्जहि। आ॒माद॑ञ्जहि जह्य्या॒माद॑मा॒माद॑ञ्जहि॒ निर्न्नि॒र्ज्जँह्य्या॒माद॑मा॒माद॑ञ्जहि॒ निः॑। आ॒माद॒-मित्त्या॑म॒ अद॑म्। ज॒हि॒ निर्न्नि॒र्ज्जँहि जहि॒ निष्क्क्र॒व्ष्यादं॒क्क्रव्याद॒न्निर्ज्जँहि जहि॒ निष्क्क्र-व्याद॑म्[2]। निष्क्क्र॒व्ष्यादं॒क्क्रव्याद॒न्निर्न्निष्क्क्र॒व्ष्याद॑ꣳ सेध सेध क्क्र॒व्ष्याद॒न्निर्न्निष्क्क्र॒व्ष्याद॑ꣳ सेध। क्र॒व्याद॑ꣳ सेध सेध क्क्र॒व्याद॑ङ्क्र॒व्याद॑ꣳ से॒धा दे॑व॒यज॑न्देव॒यज॒मा से॑ध क्क्र॒व्ष्या-

---

[1]. अग्ग्नेऽ अग्ग्निम् यहाँ पर अकार परे रहते एकार का प्रकृति भाव हुआ है। वा. प्रा. ४.८५।

[2]. क तथा प के संयोग में क्ष का उच्चारण होता है, विपरीत(ष,क) के संयोग में ऐसा उच्चारण नहीं होगा।

दं॑ङ्क्ष्याद॑ढ॒ सेधा दे॑व॒यज॑म्। क्र॒व्यादमिति॑ क्रव्य॒ अद॑म्। से॒धा दे॑व॒यज॑न्देव॒यज॒-
मा से॑ध से॒धा दे॑व॒यजँ॑व्वह व्वह देव॒यज॒मा से॑ध से॒धा दे॑व॒यजँ॑व्वह। आ दे॑व॒यज॑म्।
दे॒व॒यजँ॑व्वह व्वह देव॒यज॑न्देव॒यजँ॑व्वह ध्रुव॒न्ध्रुवँ॑व्वह देव॒यज॑न्देव॒यजँ॑व्वह ध्रुव॒म्। दे॒व॒य-
ज॒मिति॑ देव॒ यज॑म्। व्व॒ह॒ ध्रु॒वन्ध्रु॒वँ॑व्वह व्वह ध्रुव॒म॑स्यसि ध्रु॒वँ॑व्वह व्वह ध्रु॒वम॑सि[1] ॥
ध्रु॒वम॑स्यसि ध्रुव॒न्ध्रुव॒म॑सि पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑सि ध्रुव॒न्ध्रुवम॑सि पृथि॒वीम्। अ॒सि॒
पृ॒थि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑स्यसि पृथि॒वीन्दृ॑ꣳह दृꣳह पृथि॒वीम॑स्यसि पृथि॒वीन्दृ॑ꣳह। पृ॒थि॒-
वीन्दृ॑ꣳह दृꣳह पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीन्दृ॑ꣳह ब्रह्म॒वनि॑ ब्रह्म॒वनि॑ दृꣳह पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वी-
न्दृ॑ꣳह ब्रह्म॒वनि॑। दृ॒ꣳह॒ ब्र॒ह्म॒वनि॑ ब्रह्म॒वनि॑ दृꣳह दृꣳह ब्रह्म॒वनि॑ त्वा त्वा ब्रह्म॒वनि॑
दृꣳह दृꣳह ब्रह्म॒वनि॑ त्वा। ब्र॒ह्म॒वनि॑ त्वा त्वा ब्रह्म॒वनि॑ ब्रह्म॒वनि॑ त्वा क्षत्र॒वनि॑
क्षत्र॒वनि॑ त्वा ब्रह्म॒वनि॑ ब्रह्म॒वनि॑ त्वा क्षत्र॒वनि॑। ब्र॒ह्म॒वनीति॑ ब्रह्म॒ व्वनि॑। त्वा॒
क्ष॒त्र॒वनि॑ क्षत्र॒वनि॑ त्वा त्वा क्षत्र॒वनि॑ सजात॒वनि॑ सजात॒वनि॑ क्षत्र॒वनि॑ त्वा
त्वा क्षत्र॒वनि॑ सजात॒वनि॑। क्ष॒त्र॒वनि॑ सजात॒वनि॑ सजात॒वनि॑ क्षत्र॒वनि॑ क्षत्र॒व-
नि॑ सजात॒वन्न्युपोप॑ सजात॒वनि॑ क्षत्र॒वनि॑ क्षत्र॒वनि॑ सजात॒वन्न्युप॑। क्ष॒त्र॒वनीति॑
क्षत्र॒ व्वनि॑। स॒जा॒त॒वन्न्युपोप॑ सजात॒वनि॑ सजात॒वन्न्युप॑ दधामि दधा॒म्म्युप॑
सजात॒वनि॑ सजात॒वन्न्युप॑ दधामि। स॒जा॒त॒वनीति॑ सजात॒ व्वनि॑। उप॑ दधामि
दधा॒म्म्युपोप॑ दधामि॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य दधा॒म्म्युपोप॑ दधामि॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य
। द॒धा॒मि॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य दधामि दधामि॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य व्व॒धाय॑ व्व॒धाय॒
ब्भ्रातृ॑व्यस्य दधामि दधामि॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य व्व॒धाय॑। भ्रातृ॑व्यस्य व्व॒धाय॑ व्व॒धाय॒
ब्भ्रातृ॑व्यस्य॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य व्व॒धायाग्ग्नेग्ग्ने॑ व्व॒धाय॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य॒ ब्भ्रातृ॑व्यस्य व्व॒धाया-
ग्ग्ने॑। व्व॒धायाग्ग्नेग्ग्ने॑ व्व॒धाय॑ व्व॒धायाग्ग्ने॒ ब्रह्म॒ ब्रह्माग्ग्ने॑ व्व॒धाय॑ व्व॒धायाग्ग्ने॒ ब्रह्म॑ ॥१७॥

[1]. वा.प्रा.२.८ के अनुसार यहाँ असि पद अनुदात्त है।

अग्ग्ने॒ ब्रह्म॒ ब्रह्माग्ग्नेग्ग्ने॒ ब्रह्म॑ गृब्भ्णीष्ष्व गृब्भ्णीष्ष्व॒ ब्रह्माग्ग्नेग्ग्ने॒ ब्रह्म॑ गृब्भ्णीष्ष्व[1]। ब्रह्म॑ गृब्भ्णीष्ष्व गृब्भ्णीष्ष्व॒ ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ गृब्भ्णीष्ष्व ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑ङ्गृब्भ्णीष्ष्व॒ ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ गृब्भ्णीष्ष्व ध॒रुण॑म्। गृब्भ्णी॒ष्ष्व॒ ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑ङ्गृब्भ्णीष्ष्व गृब्भ्णीष्ष्व ध॒रुण॑म॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒रुण॑ङ्गृब्भ्णीष्ष्व गृब्भ्णीष्ष्व ध॒रुण॑म॒न्तरि॑क्क्षम्। ध॒रुण॑म॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑म॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒र्त्रन्ध॒र्त्रम॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑म॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒र्त्रम्। अ॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒र्त्रन्ध॒र्त्रम॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒र्त्रन्दि॒वन्दि॑वन्ध॒र्त्रम॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षन्ध॒र्त्रन्दि॑वम्॥ ध॒र्त्रन्दि॒वन्दि॑वन्ध॒र्त्रन्ध॒र्त्रन्दि॒वँ॒व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ दि॑वन्ध॒र्त्रन्ध॒र्त्रन्दि॒वँ॒व्विश्श्वा॑ब्भ्यः। दि॒वँ॒व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ दि॒वन्दि॒वँ॒व्विश्श्वा॑ब्भ्यस्त्वा त्वा॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ दि॒वन्दि॒वँ॒व्विश्श्वा॑ब्भ्यस्त्वा॥ व्विश्श्वा॑ब्भ्यस्त्वा त्वा॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्य॒स्त्वाशा॑ब्भ्य॒ऽ आशा॑ब्भ्यस्त्वा॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्यो॒ व्विश्श्वा॑ब्भ्य॒स्त्वाशा॑ब्भ्यः। त्वाशा॑ब्भ्य॒ऽ आशा॑ब्भ्यस्त्वा॒ त्वाशा॑ब्भ्य॒ऽ उपोपाशा॑ब्भ्यस्त्वा॒ त्वाशा॑ब्भ्य॒ऽ उप॑। आशा॑ब्भ्य॒ऽ उपोपाशा॑ब्भ्य॒ऽ आशा॑ब्भ्य॒ऽ उप॑ दधामि दधा॒म्म्युपाशा॑ब्भ्य॒ऽ आशा॑ब्भ्य॒ऽ उप॑ दधामि । उप॑ दधामि दधा॒म्म्युपोप॑ दधामि॒ चित॒श्चितो॑ दधा॒म्म्युपोप॑ दधामि॒ चित॑ः। द॒धा॒मि॒ चित॒श्चितो॑ दधामि दधामि॒ चित॑ स्त्थ स्त्थ॒ चितो॑ दधामि दधामि॒ चित॑ स्त्थ। चित॑ स्त्थ स्त्थ॒ चित॒श्चित॑ स्त्थोर्द्ध॒चित॑ऽ ऊर्द्ध॒चित॑ स्त्थ॒ चित॒श्चित॑ स्त्थोर्द्ध॒चित॑ः। स्थो॒र्द्ध॒चित॑ऽ ऊर्द्ध॒चित॑ स्त्थ स्त्थोर्द्ध॒चितो॒ भृगू॑णा॒म्भृगू॑णामू॒र्द्ध॒चित॑ स्त्थ स्त्थोर्द्ध॒चितो॒ भृगू॑णाम् । ऊ॒र्द्ध॒चितो॒ भृगू॑णा॒म्भृगू॑णामू॒र्द्ध॒चित॑ऽ ऊर्द्ध॒चितो॒ भृगू॑णा॒मङ्गि॑रसा॒मङ्गि॑रसा॒म्भृगू॑णामू॒र्द्ध॒चित॑ऽ ऊर्द्ध॒चितो॒ भृगू॑णा॒मङ्गि॑रसाम्। ऊ॒र्द्ध॒चित॒ऽ इत्त्यू॒र्द्ध॒ चित॑ः। भृगू॑णा॒मङ्गि॑रसा॒मङ्गि॑रसा॒म्भृगू॑णा॒म्भृगू॑णा॒-

[1]. वा.प्रा.२.२४. के अनुसार यहाँ अग्ने पद आद्युदात्त है।

मङ्गिरसान्तपसा तपसाङ्गिरसाम्भृगूणाम्भृगूणामङ्गिरसान्तपसा[1]। अङ्गिरसान्तपसा तपसाङ्गिरसामङ्गिरसान्तपसा तप्प्यद्ध्वन्तप्प्यद्ध्वन्तपसाङ्गिरसामङ्गिरसान्तपसा तप्प्यद्ध्वम्। तपसा तप्प्यद्ध्वन्तप्प्यद्ध्वन्तपसा तपसा तप्प्यद्ध्वम्। तप्प्यद्ध्वमिति तप्प्यद्ध्वम्॥१८॥

धिषणास्यसि धिषणा धिषणासि पर्व्वती पर्व्वत्त्यसि धिषणा धिषणासि पर्व्वती। असि पर्व्वती पर्व्वत्त्यस्यसि पर्व्वती प्प्रति प्प्रति पर्व्वत्त्यस्यसि[2] पर्व्वती प्प्रति। पर्व्वती प्प्रति प्प्रति पर्व्वती पर्व्वती प्प्रति त्वा त्वा प्प्रति पर्व्वती पर्व्वती प्प्रति त्वा। प्रति त्वा त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादित्त्याऽ अदित्त्यास्त्वा प्प्रति प्प्रति त्वादित्त्याः। त्वादित्त्याऽ अदित्त्यास्त्वा त्वादित्त्यास्त्वक्क्वगदित्त्यास्त्वा त्वादित्त्यास्त्वक्। अदित्त्यास्त्वक्क्वगदित्त्याऽ अदित्त्यास्त्वग्ग्वेत्तु व्वेत्तु त्वगदित्त्याऽ अदित्त्यास्त्वग्ग्वेत्तु। त्वग्ग्वेत्तु व्वेत्तु त्वक्क्वग्ग्वेत्तु दिवो दिवो व्वेत्तु त्वक्क्वग्ग्वेत्तु दिवः। व्वेत्तु दिवो दिवो व्वेत्तु व्वेत्तु दिव स्कम्भनी स्कम्भनीर्द्दिवो व्वेत्तु व्वेत्तु दिव स्कम्भनीः। दिव स्कम्भनी स्कम्भनीर्द्दिवो दिव स्कम्भनीरस्यसि स्कम्भनीर्द्दिवो दिव स्कम्भनीरसि। स्कम्भनीरस्यसि स्कम्भनी स्कम्भनीरसि धिषणा धिषणासि स्कम्भनी स्कम्भनीरसि धिषणा। असि धिषणा धिषणास्यसि धिषणास्यसि धिषणास्यसि धिषणासि । धिषणास्यसि धिषणा धिषणासि पार्व्वतेयी पार्व्वतेय्यसि धिषणा धिषणासि पार्व्वतेयी। असि पार्व्वतेयी पार्व्वतेय्यस्यसि पार्व्वतेयी प्प्रति प्प्रति पार्व्वतेय्यस्यसि पार्व्वतेयी प्प्रति। पार्व्वतेयी प्प्रति प्प्रति पार्व्वतेयी पार्व्वतेयी प्प्रति त्वा त्वा प्प्रति पार्व्वतेयी पार्व्वतेयी प्प्रति त्वा। प्रति त्वा त्वा प्प्रति

---

1. अङ्गिरसाम् तपसा यहाँ स्पर्शे परपञ्चमम् (वा.प्रा.४.१२) इस सूत्र से स्पर्श-वर्ण बाद में होने पर मकार परवर्ती-स्पर्श का पञ्चम-वर्ण होता है।

2. पर्व्वती असि यहाँ वा. प्रा. १.११५. के अनुसार पर्व्वत्त्यसि ऐसा क्षेप्र स्वर निर्दिष्ट है।

प्प्रति॑ त्वा पर्व्व॒ती प॑र्व्व॒ती त्वा॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ त्वा पर्व्व॒ती। त्वा॒ प॒र्व्व॒ती प॑र्व्व॒ती त्वा॑ त्वा पर्व्व॒ती ब्वे॑तु ब्वे॒तु पर्व्व॒ती त्वा॑ त्वा पर्व्व॒ती ब्वे॑तु। प॒र्व्व॒ती ब्वे॑तु ब्वे॒तु पर्व्व॒ती प॑र्व्व॒ती ब्वे॑तु धा॒न्न्य॒न्धा॒न्न्यँ॒ब्वे॑तु पर्व्व॒ती प॑र्व्व॒ती ब्वे॑तु धा॒न्न्य॒म्[1]। ब्वे॒तु॒ धा॒न्न्य॒न्धा॒न्न्यँ॒ब्वे॑तु ब्वे॒तु धा॒न्न्य॒मस्य॒सि धा॒न्न्यँ॒ब्वे॑तु ब्वे॒तु धा॒न्न्य॒मसि॥१९॥

धा॒न्न्य॒मस्य॒सि धा॒न्न्य॒न्धा॒न्न्य॒मसि धि॒नु॒हि धि॑नु॒ह्ह्य॒सि धा॒न्न्य॒न्धा॒न्न्य॒मसि धि॒नु॒हि। अ॒सि॒ धि॒नु॒हि धि॑नु॒ह्ह्य॒स्य॒सि धि॒नु॒हि दे॒वान्दे॒वान्धि॑नु॒ह्ह्य॒स्य॒सि धि॒नु॒हि दे॒वान्। धि॒नु॒हि दे॒वान्दे॒वान्धि॑नु॒हि धि॑नु॒हि दे॒वान्प्प्रा॒णाय॑ प्प्रा॒णाय॑ दे॒वान्धि॑नु॒हि धि॑नु॒हि दे॒वान्प्प्रा॒णाय॑। दे॒वान्प्प्रा॒णाय॑ प्प्रा॒णाय॑ दे॒वान्दे॒वान्प्प्रा॒णाय॑ त्वा त्वा प्प्रा॒णाय॑ दे॒वान्दे॒वान्प्प्रा॒णाय॑ त्वा। प्रा॒णाय॑ त्वा त्वा प्प्रा॒णाय॑ प्प्रा॒णाय॑ त्वोदा॒नायो॑दा॒नाय॑ त्वा प्प्रा॒णाय॑ प्प्रा॒णाय॑ त्वोदा॒नाय॑। त्वो॒दा॒नायो॑दा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ ब्ब्या॒नायो॑दा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑। उ॒दा॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ ब्ब्या॒नायो॑दा॒नायो॑-दा॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ दी॒र्ग्घान्दी॒र्ग्घाँ॑ब्ब्या॒नायो॑दा॒नायो॑दा॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ दी॒र्ग्घाम्। उ॒दा॒नायेत्त्यु॑त् आ॒नाय॑। ब्ब्या॒नाय॑ दी॒र्ग्घान्दी॒र्ग्घाँ॑ब्ब्या॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ दी॒र्ग्घामन्न्वनु॑ दी॒र्ग्घाँ॑ब्ब्या॒नाय॑ ब्ब्या॒नाय॑ दी॒र्ग्घामनु॑। ब्ब्या॒नायेति॑ वि आ॒नाय॑॥ दी॒र्ग्घामन्न्वनु॑ दी॒र्ग्घान्दी॒र्ग्घामनु॒ प्प्रसि॑तिम्प्रसि॑ति॒मनु॑ दी॒र्ग्घान्दी॒र्ग्घामनु॒ प्प्रसि॑तिम्[2]। अनु॒ प्प्रसि॑ति॒म्प्रसि॑ति॒मन्न्वनु॒ प्प्रसि॑ति॒मायु॑ष॒ऽ आयु॑षे॒ प्प्रसि॑ति॒मन्न्वनु॒ प्प्रसि॑ति॒मायु॑षे। प्रसि॑ति॒मायु॑ष॒ऽ आयु॑षे॒ प्प्रसि॑ति॒म्प्रसि॑ति॒मायु॑षे धान्धा॒मायु॑षे॒ प्प्रसि॑ति॒म्प्रसि॑ति॒-मायु॑षे धाम्। प्रसि॑ति॒मिति॒ प्प्र सि॑तिम्। आयु॑षे धान्धा॒मायु॑ष॒ऽ आयु॑षे धा॒ञ्चक्क्षु॑षे॒ चक्क्षु॑षे धा॒मायु॑ष॒ऽ आयु॑षे धा॒ञ्चक्क्षु॑षे। धा॒ञ्चक्क्षु॑षे॒ चक्क्षु॑षे धान्धा॒ञ्चक्क्षु॑षे त्वा त्वा॒ चक्क्षु॑षे धान्धा॒ञ्चक्क्षु॑षे त्वा। चक्क्षु॑षे त्वा त्वा॒ चक्क्षु॑षे॒ चक्क्षु॑षे त्वा म॒हीना॑-

---

1. धा॒न्न्य॒म् इस पद में अनुदात्तपूर्व एवं यकार से युक्त स्वर जात्य-संज्ञक स्वरित है। वा. प्रा. १.१११

2. वा.प्रा.६.८. के अनुसार प्रसितिम् पद बाद में होने पर अनु पद अनुदात नहीं होता है।

म्म॒हीना॑न्त्वा॒ चक्षु॑षे॒ चक्षु॑षे त्वा म॒हीना॑म्। त्वा॒ म॒हीना॑म्म॒हीना॑न्त्वा त्वा म॒हीना॒म्पय॒ः पयो॑ म॒हीना॑न्त्वा त्वा म॒हीना॒म्पय॑ः। म॒हीना॒म्पय॒ः पयो॑ म॒हीना॑-म्म॒हीना॒म्पयो॑स्यसि॒ पयो॑ म॒हीना॑म्म॒हीना॒म्पयो॑सि[1]। पयो॑स्यसि॒ पय॒ः पयो॑सि। अ॒सीत्य॑सि॥२०॥

सँव्व॑पामि व्वपामि॒ सꣳ सँव्व॑पा॒म्म्याप॒ऽ आपो॑ व्वपामि॒ सꣳ सँव्व॑पा॒म्म्याप॑ः। व्व॒पा॒म्म्याप॒ऽ आपो॑ व्वपामि व्वपा॒म्म्याप॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धीभि॒रापो॑ व्वपामि व्वपा॒-म्म्याप॒ऽ ओष॑धीभिः। आप॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धीभि॒राप॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धय॒ऽ ओष॑धय॒ऽ ओष॑धीभि॒राप॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धयः। ओष॑धीभि॒रोष॑धय॒ऽ ओष॑-धय॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धीभि॒रोष॑धयो॒ रसे॑न॒ रसे॒नौष॑धय॒ऽ ओष॑धीभि॒रोष॑धीभि॒रोष॑-धयो॒ रसे॑न। ओष॑धयो॒ रसे॑न॒ रसे॒नौष॑धय॒ऽ ओष॑धयो॒ रसे॑न रे॒वती॑ रे॒वती॒ रसे॒नौष॑धय॒ऽ ओष॑धयो॒ रसे॑न रे॒वती॑ः। रसे॑न रे॒वती॑ रे॒वती॒ रसे॑न॒ रसे॑न रे॒वती॒र्ज्जग॑तीभि॒र्ज्जग॑तीभी रे॒वती॒ रसे॑न॒ रसे॑न रे॒वती॒र्ज्जग॑तीभिः॥ रे॒वती॒र्ज्जग॑ती-भि॒र्ज्जग॑तीभी रे॒वती॑ रे॒वती॒र्ज्जग॑तीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ता॒ञ्जग॑तीभी रे॒वती॑ रे॒वती॒र्ज्जग॑तीभिः पृच्यन्ताम्। जग॑तीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ता॒ञ्जग॑तीभि॒र्ज्जग॑-तीभिः पृच्यन्ता॒म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीः पृच्यन्ता॒ञ्जग॑तीभि॒र्ज्जग॑तीभिः पृच्यन्ता॒-म्मधु॑मतीः। पृच्य॒न्ता॒म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ता॒म्मधु॑मती॒र्म्म-धु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मतीः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ता॒म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीभिः। मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीभिः पृच्यन्ताम्पृ-च्यन्ता॒म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीभिः पृच्यन्ताम्। मधु॑मती॒रिति॒ मधु॑ मतीः[2]। मधु॑मतीभिः पृच्यन्ताम्पृच्यन्ता॒म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मतीभिः पृच्यन्ता॒ञ्जन॑यत्यै॒ जन॑यत्यै पृच्यन्ता॒म्मधु॑मतीभि॒र्म्मधु॑मतीभिः पृच्यन्ता॒ञ्ज-

[1]. पयः असि यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

न॑यत्त्यै। मधु॑मतीभि॒रिति॒ मधु॑ मतीभिः। पृ॒च्च्य॒न्ता॒ञ्जन॑यत्त्यै॒ जन॑यत्त्यै पृच्च्यन्ता-म्पृच्च्यन्ता॒ञ्जन॑यत्त्यै त्वा त्वा॒ जन॑यत्त्यै पृच्च्यन्ताम्पृच्च्यन्ता॒ञ्जन॑यत्त्यै त्वा॥२१॥

जन॑यत्त्यै त्वा त्वा॒ जन॑यत्त्यै॒ जन॑यत्त्यै त्वा॒ सꣳ सन्त्वा॒ जन॑यत्त्यै॒ जन॑य-त्त्यै त्वा॒ सम्। त्वा॒ सꣳ सन्त्वा॑ त्वा॒ सँय्यौ॑मि य्यौमि॒ सन्त्वा॑ त्वा॒ सँय्यौ॑मि[1]। सँय्यौ॑मि य्यौमि॒ सꣳ सँय्यौ॑मी॒दमि॒दँय्यौ॑मि॒ सꣳ सँय्यौ॑मी॒दम्। य्यौ॒मी॒दमि॒दँय्यौ॑मि य्यौमी॒दम॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेरि॒दँय्यौ॑मि य्यौमी॒दम॒ग्ग्नेः। इ॒दम॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेरि॒दमि॒दम॒ग्ग्नेरि॒दमि॒दम॒ग्ग्ने-रि॒दमि॒दम॒ग्ग्नेरि॒दम्। अ॒ग्ग्नेरि॒दमि॒दम॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेरि॒दम॒ग्ग्नीषोम॑योर॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒दम॒ग्ग्ने-र॒ग्ग्नेरि॒दम॒ग्ग्नीषोम॑योः। इ॒दम॒ग्ग्नीषोम॑योर॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒दमि॒दम॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒षऽ इ॒षेऽग्ग्नीषोम॑योरि॒दमि॒दम॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒षे। अ॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒षऽ इ॒षेऽग्ग्नीषोम॑योर॒ग्ग्नी-षोम॑योरि॒षे त्वा॑ त्वे॒षेऽग्ग्नीषोम॑योर॒ग्ग्नीषोम॑योरि॒षे त्वा॑। इ॒षे त्वा॑ त्वे॒षऽ इ॒षे त्वा॑ घ॒र्म्मो घ॒र्म्मस्त्वे॒षऽ इ॒षे त्वा॑ घ॒र्म्मः। त्वा॒ घ॒र्म्मो घ॒र्म्मस्त्वा॑ त्वा घ॒र्म्मो॑स्यसि घ॒र्म्मस्त्वा॑ त्वा घ॒र्म्मो॑सि। घ॒र्म्मो॑स्यसि घ॒र्म्मो घ॒र्म्मो॑सि वि॒श्श्वायु॑र्वि॒श्श्वायु॑रसि घ॒र्म्मो घ॒र्म्मो॑सि वि॒श्श्वायुः। अ॒सि॒ वि॒श्श्वायु॑र्वि॒श्श्वायु॑रस्यसि वि॒श्श्वायु॑रु॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रुप्प्र॑था वि॒श्श्वायु॑रस्यसि वि॒श्श्वायु॑रु॒रुप्प्र॑थाः। वि॒श्श्वायु॑रु॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रुप्प्र॑था वि॒श्श्वायु॑र्वि॒श्श्वायु॑रु॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रूरुप्प्र॑था वि॒श्श्वायु॑र्वि॒श्श्वायु॑रु॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रु। वि॒श्श्वा-यु॒रिति॑ वि॒श्श्व आयुः। उ॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रूरुप्प्र॑थाऽ उ॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रु प्प्र॑थस्व प्प्रथस्वो॒रूरुप्प्र॑थाऽ उ॒रुप्प्र॑थाऽ उ॒रु प्प्र॑थस्व। उ॒रुप्प्र॑था॒ऽ इत्त्युरु प्र॑थाः। उ॒रु प्प्र॑थस्व प्प्रथस्वो॒रूरु प्प्र॑थस्वो॒रूरु प्प्र॑थस्वो॒रूरु प्प्र॑थस्वो॒रु। प्र॒थ॒स्वो॒रूरु प्प्र॑थस्व

---

[2]. संहितावदवग्रहः स्वरविधौ परं च सर्वं चेदनुदात्तम् (वा. प्रा. १.१४८) सावग्रह पद का पूर्वपद संहिता के समान स्वर प्राप्त करता है एवं उत्तर पद भी संहिता के समान स्वर प्राप्त करता है., यदि उत्तर पद सर्वानुदात्त हो जैसे मधु॑मतीः यहाँ मतीः सर्वानुदात्त है।

[1]. सम् यौमि यहाँ वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक यकार होता है। सवर्णे(वा.प्रा.४.११२) के द्वारा जो द्वित्व का निषेध है, वह तृतीय यकार के लिये है। परसवर्णेषत्प्रकृत्या चान्यत्र (प्र.प्र.३.३) इस सूत्र से अनुस्वार परसवर्णभाव से रहता है यहा कहा गया है। अनुनासिक होना यकार का धर्म है अनुनासिक पृथक् वर्ण नहीं है। अतः दो यकार होने की स्थिति में षकारोच्चारण होगा।

प्प्रथस्वोरु तें तऽ उरु प्प्रथस्व प्प्रथस्वोरु तें। उरु तें तऽ उरूरु तें यज्ज्ञपतिर्य्यज्ज्ञपतिस्तऽ उरूरु तें यज्ज्ञपतिः। ते यज्ज्ञपतिर्य्यज्ज्ञपतिस्ते ते यज्ज्ञपतिः प्प्रथताम्प्रथताँय्यज्ज्ञपतिस्ते ते यज्ज्ञपतिः प्प्रथताम्। यज्ज्ञपतिः प्प्रथताम्प्रथताँय्यज्ज्ञपतिर्य्यज्ज्ञपतिः प्प्रथतामग्ग्निरग्ग्निः प्प्रथताँय्यज्ज्ञपति-र्य्यज्ज्ञपतिः प्प्रथतामग्ग्निः। यज्ज्ञपतिरिति यज्ज्ञ पतिः। प्प्रथतामग्ग्निरग्ग्निः प्प्रथताम्प्रथतामग्ग्निष्टे तेग्ग्निः प्प्रथताम्प्रथतामग्ग्निष्टे[1]। अग्ग्निष्टे तेग्ग्निरग्ग्निष्टे त्वचन्त्वचन्तेग्ग्निरग्ग्निष्टे त्वचम्। ते त्वचन्त्वचन्ते ते त्वचम्मा मा त्वचन्ते ते त्वचम्मा। त्वचम्मा मा त्वचन्त्वचम्मा हिंꣳसीद्धिꣳसीन्मा त्वचन्त्वचम्मा हिंꣳसीत्। मा हिंꣳसीद्धिꣳसीन्मा मा हिंꣳसीद्देवो देवो हिंꣳसीन्मा मा हिंꣳसीद्देवः। हिꣳसीद्देवो देवो हिंꣳसीद्धिꣳसीद्देवस्त्वा त्वा देवो हिंꣳसीद्धिꣳ-सीद्देवस्त्वा। देवस्त्वा त्वा देवो देवस्त्वा सविता संविता त्वा देवो देवस्त्वा सविता[2]। त्वा सविता संविता त्वा त्वा सविता श्श्रपयतु श्श्रपयतु सविता त्वा त्वा सविता श्श्रपयतु। सविता श्श्रपयतु श्श्रपयतु सविता संविता श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठे श्श्रपयतु सविता संविता श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठे। श्रपयतु व्वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठे श्श्रपयतु श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठेद्ध्यधि वर्षिष्ठे श्श्रपयतु श्श्रपयतु व्वर्षिष्ठेधि। व्वर्षिष्ठेद्ध्यधि वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठेधि नाके नाकेधि वर्षिष्ठे व्वर्षिष्ठेधि नाके। अधि नाके नाकेद्ध्यधि नाके। नाकऽ इति नाके ॥२२॥

---

1. अग्निः ते यहाँ वायुरग्निरग्नेरेकाक्षरे(वा.प्रा.३.७६) इस सूत्र से अग्निः पद से बाद में एकाक्षर पद होने से विसर्जनीय सकार षकार होता है।

2. त्वा च (वा. प्रा. २.६) इस सूत्र के अनुसार त्वा पद अनुदात्त होता है।

मा भे॑र्भे॒र्म्मा मा भे॒र्म्मा मा भे॒र्म्मा मा भे॒र्म्मा।[1] भे॒र्म्मा मा भे॑र्भे॒र्म्मा सꣳ सम्मा भे॑र्भे॒र्म्मा सम्। मा सꣳ सम्मा मा सँव्वि॑क्था व्वि॑क्था॒ः सम्मा मा सँव्वि॑क्थाः। सँव्वि॑क्था व्वि॑क्था॒ः सꣳ सँव्वि॑क्था॒ऽ अत॑मेरु॒रत॑मेरुर्व्वि॑क्था॒ः सꣳ सँव्वि॑क्था॒ऽ अत॑मेरुः। व्वि॒क्था॒ऽ अत॑मेरु॒रत॑मेरुर्व्वि॑क्था व्वि॑क्था॒ऽ अत॑मेरुर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञोत॑मेरुर्व्वि॑क्था व्वि॑क्था॒ऽ अत॑मेरुर्य्य॒ज्ज्ञः। अत॑मेरुर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञोत॑मेरु॒रत॑ मेरुर्य्य॒ज्ज्ञोत॑ मेरु॒रत॑ मेरुर्य्य॒ज्ज्ञोत॑मेरु॒रत॑ मेरुर्य्य॒ज्ज्ञोत॑मेरुः। य॒ज्ज्ञोत॑मेरु॒रत॑ मेरुर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञोत॑मेरु॒र्य्यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्यात॑ मेरुर्य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञोत॑ मेरु॒र्य्यज॑मानस्य। अत॑मेरु॒र्य्यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्यात॑मेरु॒रत॑मेरु॒र्य्यज॑मानस्य प्प्र॒जा प्प्र॒जा यज॑मान॒स्यात॑मेरु॒रत॑मेरु॒र्य्यज॑मानस्य प्प्र॒जा। यज॑मानस्य प्प्र॒जा प्प्र॒जा यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य प्प्र॒जा भू॑याद्भूयात्प्र॒जा यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य प्प्र॒जा भू॑यात्। प्र॒जा भू॑याद् भूयात्प्र॒जा प्प्र॒जा भू॑यात्त्रि॒ताय॑ त्रि॒ताय॑ भूयात्प्र॒जा प्प्र॒जा भू॑यात्त्रि॒ताय॑। प्र॒जेति॑ प्प्र॒ जा। भू॒या॒त्त्रि॒ताय॑ त्रि॒ताय॑ भूयाद् भूयात्त्रि॒ताय॑ त्त्वा त्त्वा त्रि॒ताय॑ भूयाद् भूयात्त्रि॒ताय॑ त्त्वा। त्रि॒ताय॑ त्त्वा त्त्वा त्रि॒ताय॑ त्रि॒ताय॑ त्त्वा द्वि॒ताय॑ द्वि॒ताय॑ त्त्वा त्रि॒ताय॑ त्रि॒ताय॑ त्त्वा द्वि॒ताय॑। त्त्वा॒ द्वि॒ताय॑ द्वि॒ताय॑ त्त्वा त्त्वा द्वि॒तायै॑क॒तायै॑क॒ताय॑ द्वि॒ताय॑ त्त्वा त्त्वा द्वि॒तायै॑क॒ताय॑। द्वि॒तायै॑क॒तायै॑क॒ताय॑ द्वि॒ताय॑ द्वि॒तायै॑क॒ताय॑। ए॒क॒तायेत्त्यै॑क॒ताय॑॥२३॥

आ द॑दे दद॒ऽ आ द॑देद्ध्वर॒कृत॑मद्ध्वर॒कृत॑न्दद॒ऽ आ द॑देद्ध्वर॒कृत॑म्। द॒दे॒द्ध्व॒र॒कृत॑मद्ध्वर॒कृत॑न्ददे ददेद्ध्वर॒कृत॑न्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑द्ध्वर॒कृत॑न्ददे ददेद्ध्वर॒कृत॑न्दे॒वेब्भ्य॑ः। अ॒द्ध्व॒र॒कृत॑न्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑द्ध्वर॒कृत॑मद्ध्वर॒कृत॑न्दे॒वेब्भ्य॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य दे॒वेब्भ्यो॑द्ध्वर॒कृत॑मद्ध्वर॒कृत॑न्दे॒वेब्भ्य॒ऽ इन्द्र॑स्य। अ॒द्ध्व॒र॒कृ॒तमित्त्य॑द्ध्वर॒ कृत॑म्। दे॒वेब्भ्य॒ऽ इन्द्र॒-

---

[1]. वा.प्रा.२.२. के अधिकार में आये मा च (वा.प्रा.२.४) इस सूत्र के अनुसार उत्तमपुरुष के अर्थ में ही मा पद अनुदात्त होता है। यहाँ निषेधार्थक होने से यह पद अनुदात्त नहीं होगा।

स्येन्द्रस्य देवेभ्यो देवेभ्य इन्द्रस्य बाहुर्बाहुरिन्द्रस्य देवेभ्यो देवेभ्य इन्द्रस्य बाहुः। इन्द्रस्य बाहुर्बाहुरिन्द्रस्येन्द्रस्य बाहुरस्यसि बाहुरिन्द्रस्येन्द्रस्य बाहुरसि। बाहुरस्यसि बाहुर्बाहुरसि दक्षिणो दक्षिणोसि बाहुर्बाहुरसि दक्षिणः। असि दक्षिणो दक्षिणोस्यसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणोस्यसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः। दक्षिणः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणो दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजाः शततेजाः सहस्रभृष्टिर्दक्षिणो दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजाः[1]। सहस्रभृष्टिः शततेजाः शततेजाः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः शततेजा व्वायुर्व्वायुः शततेजाः सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः शततेजा व्वायुः[2]। सहस्रभृष्टिरिति सहस्र भृष्टिः। शततेजा व्वायुर्व्वायुः शततेजाः शततेजा व्वायुरस्यसि व्वायुः शततेजाः शततेजा व्वायुरसि। शततेजाऽ इति शत तेजाः। व्वायुरस्यसि व्वायुर्व्वायुरसि तिग्ग्मतेजास्तिग्ग्मतेजाऽ असि व्वायुर्व्वायुरसि तिग्ग्मतेजाः। असि तिग्ग्मतेजास्तिग्ग्मतेजाऽ अस्यसि तिग्ग्मतेजा द्विषतो द्विषतस्तिग्ग्मतेजाऽ अस्यसि तिग्ग्मतेजा द्विषतः। तिग्ग्मतेजा द्विषतो द्विषतस्तिग्ग्मतेजास्तिग्ग्मतेजा द्विषतो ब्वधो ब्वधो द्विषतस्तिग्ग्मतेजास्तिग्ग्मतेजा द्विषतो ब्वधः। तिग्ग्मतेजाऽ इति तिग्ग्म तेजाः। द्विषतो ब्वधो ब्वधो द्विषतो द्विषतो ब्वधः पृथिवि पृथिवि ब्वधो द्विषतो द्विषतो ब्वधः पृथिवि। ब्वधः पृथिवि पृथिवि ब्वधो ब्वधः पृथिवि देवयजनि देवयजनि पृथिवि ब्वधो ब्वधः पृथिवि देवयजनि॥२४॥

---

[1]. सहस्रभृष्टिः सहस्रभृष्टिः तथा सहस्रभृष्टिः शततेजाः यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र से विसर्ग का विकार नहीं होता है।

[2]. सन्धिश्चतुर्विधो भवति लोपागमविकाराः प्रकृतिभावश्चेति। तत्र लोपो यथा अयक्ष्माः मा अयक्ष्मा मा, शततेजाः व्वायुः शततेजा व्वायुः – या. शि. ९३.

पृथि॑वि देवयजनि देवयजनि॒ पृथि॑वि॒ पृथि॑वि देवयज॒न्योष॑द्ध्या॒ऽ ओष॑द्ध्या देवयजनि॒ पृथि॑वि॒ पृथि॑वि देवयज॒न्योष॑द्ध्याः[1]। दे॒व॒य॒ज॒न्योष॑द्ध्या॒ऽ ओष॑द्ध्या देवयजनि देवयज॒न्योष॑द्ध्यास्त्ते त॒ऽ ओष॑द्ध्या देवयजनि देवयज॒न्योष॑द्ध्यास्त्ते। दे॒व॒य॒ज॒नीति॑ देव यजनि। ओष॑द्ध्यास्त्ते त॒ऽ ओष॑द्ध्या॒ऽ ओष॑द्ध्यास्त्ते॒ मूल॒म्मूल॑न्त॒ऽ ओष॑द्ध्या॒ऽ ओष॑द्ध्यास्त्ते॒ मूल॑म्। ते॒ मूल॒म्मूल॑न्ते ते॒ मूल॒म्मा मा मूल॑न्ते ते॒ मूल॒म्मा। मूल॒म्मा मा मूल॒म्मूल॒म्मा हिं॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिष॒म्मा मूल॒म्मूल॒म्मा हिं॑ꣳसिषम्। मा हिं॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिष॒म्मा मा हिं॑ꣳसिषँ॑व्व्रजँ॑व्व्रजꣳ हिं॑ꣳसिष॒म्मा मा हिं॑ꣳसिषँ॑व्व्रजम्। हि॒ꣳसि॒षँ॒व्व्रजँ॑व्व्रजꣳ हिं॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिषँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गच्छ व्व्रजꣳ हिं॑ꣳसिषꣳ हिꣳसिषँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ। व्व्रजङ्ग॑च्छ गच्छ व्व्रजँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गो॒ष्ठान॑ङ्गो॒स्त्थान॑ङ्गच्छ व्व्रजँ॑व्व्रजङ्ग॑च्छ गो॒ष्ठान॑म्[2]। ग॒च्छ॒ गो॒ष्ठान॑ङ्गो॒स्त्थान॑ङ्गच्छ गच्छ गो॒ष्ठान॑ँ॒व्वर्ष॑तु व्वर्ष॑तु गो॒स्त्थान॑ङ्गच्छ गच्छ गो॒ष्ठान॑ँ॒व्वर्ष॑तु। गो॒ष्ठान॑ँ॒व्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु गो॒स्त्थान॑ङ्गो॒ष्ठान॑ँ॒व्वर्ष॑तु ते ते॒ व्वर्ष॑तु गो॒स्त्थान॑ङ्गो॒ष्ठान॑ँ॒व्वर्ष॑तु ते। गो॒स्त्थान॒मिति॑ गो॒ स्थान॑म्। व्वर्ष॑तु ते ते॒ व्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु ते॒ द्यौर्द्यौस्ते॒ व्वर्ष॑तु॒ व्वर्ष॑तु ते॒ द्यौः। ते॒ द्यौर्द्यौस्ते॑ ते॒ द्यौर्ब्ब॑धा॒न ब॑धा॒न द्यौस्ते॑ ते॒ द्यौर्ब्ब॑धा॒न। द्यौर्ब्ब॑धा॒न ब॑धा॒न द्यौर्द्यौर्ब्ब॑धा॒न दे॑व देव बधा॒न द्यौर्द्यौर्ब्ब॑धा॒न दे॑व। ब॒धा॒न दे॑व देव बधा॒न ब॑धा॒न दे॑व सवितः सवितर्द्देव बधा॒न ब॑धा॒न दे॑व सवितः। दे॒व॒ स॒वि॒त॒ः स॒वि॒त॒र्द्दे॒व॒ दे॒व॒ स॒वि॒त॒ः प॒र॒मस्यां॑म्पर॒मस्यां॑ꣳ सवितर्द्देव देव सवितः पर॒मस्यां॑म्। स॒वि॒त॒ः प॒र॒मस्यां॑म्पर॒मस्यां॑ꣳ सवितः सवितः पर॒मस्यां॑म्पृथि॒व्व्याम्पृ॑थि॒व्व्याम्प॑र॒मस्यां॑ꣳ सवितः सवितः पर॒मस्यां॑म्पृथि॒-

---

[1]. पृथिवि देवयजन्योषद्ध्याः यहाँ एक पद के समान स्वर नहीं है।– वा. प्रा. २.१९.

[2]. गोस्थानम् यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से सकार षकार होता है। षात्तथौ मूर्धन्यम् (वा.प्रा.३.७८) इस सूत्र से षकारोत्तरवर्ती थकार ठकार होता है।

ध्याम्। सुवितुरितिं सवितः।[1] पुरमस्यांम्पृथिुव्याम्पृंथिुव्याम्पंरुमस्यांम्परुम-
स्यांम्पृथिुव्याꣳ शुतेनं शुतेनं पृथिुव्याम्पंरमस्यांम्परुमस्यांम्पृथिुव्याꣳ शुतेनं।
पृथिुव्याꣳ शुतेनं शुतेनं पृथिुव्याम्पृंथिुव्याꣳ शुतेनु पाशैः पाशैः शुतेनं
पृथिुव्याम्पृंथिुव्याꣳ शुतेनु पाशैः। शुतेनु पाशैः पाशैः शुतेनं शुतेनु पाशैर्ब्यो
यः पाशैः शुतेनं शुतेनु पाशैर्ब्यः। पाशैर्ब्यो यः पाशैः पाशैर्ब्योस्म्मानु-
स्म्मान्न्यः पाशैः पाशैर्ब्योस्म्मान्। योस्म्मानुस्म्मान्न्यो योस्म्मान्द्वेष्टि द्वेष्ट्यु-
स्म्मान्न्यो योस्म्मान्द्वेष्टिं। अुस्म्मान्द्वेष्टि द्वेष्ट्युस्म्मानुस्म्मान्द्वेष्टि यँव्यन्द्वेष्ट्यु-
स्म्मानुस्म्मान्द्वेष्टि यम्। द्वेष्टि यँव्यन्द्वेष्टि द्वेष्टि यञ्चं चु यन्द्वेष्टि द्वेष्टि यञ्चं। यञ्चं चु
यँव्यञ्चं ब्बुयँब्बुयञ्च यँव्यञ्चं ब्बुयम्। चु ब्बुयँब्बुयञ्चं च ब्बुयन्द्विुष्म्मो द्विुष्म्मो ब्बुयञ्चं च
ब्बुयन्द्विुष्म्मः। ब्बुयन्द्विुष्म्मो द्विुष्म्मो ब्बुयँब्बुयन्द्विुष्म्मस्त्तन्तन्द्विुष्म्मो ब्बुयँब्बुयन्द्विु-
ष्म्मस्त्तम्। द्विुष्म्मस्त्तन्तन्द्विुष्म्मो द्विुष्म्मस्त्तमतोतुस्त्तन्द्विुष्म्मो द्विुष्म्मस्त्तमतं॑ः।
तमतोतुस्त्तन्तमतो मा मातुस्त्तन्तमतो मा। अतो मा मातोतो मा मौङ्क्ष मौङ्क्ष
मातोतो मा मौक्। मा मौङ्क्ष मौङ्क्ष मा मा मौगपापं मौङ्क्ष मा मा मौगपं। मौगपापं
मौङ्क्ष मौगपारुंमुररुमपं मौङ्क्ष मौगपारुंम्॥२५॥

अपारुंमुररुमपापारुंम्पृथिुव्यै पृंथिुव्याऽ अुररुमपापारुंम्पृथिुव्यै। अुर-
रुंम्पृथिुव्यै पृंथिुव्याऽ अुररुंमुररुंम्पृथिुव्यै देंवुयजंनाद्देवुयजंनात्पृथिुव्याऽ अुररुंमु-
ररुंम्पृथिुव्यै देंवुयजंनात्। पृथिुव्यै देंवुयजंनाद्देवुयजंनात्पृथिुव्यै पृंथिुव्यै देंवुय-
जंनाद्वद्ध्यासँव्वद्ध्यासंन्देवुयजंनात्पृथिुव्यै पृंथिुव्यै देंवुयजंनाद्वद्ध्यासम्। देवुयजं-
नाद्वद्ध्यासँव्वद्ध्यासन्देवुयजंनाद्देवुयजंनाद्वद्ध्यासुमरुरोरंरो ब्वद्ध्यासन्देवुयजंनाद्देवुय-
जंनाद्वद्ध्यासुमरंरो। देवुयजंनुादितिं देवु यजंनात्। ब्वुद्ध्यासुमरुरोरंरो ब्वद्ध्या-

[1]. वा.प्रा.१.१६८. के अनुसार सवितः इस पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है तथा वा.प्रा.४.१८. के अनुसार इस पद को इति के द्वारा व्यवहित किया जाता है।

सँव्वद्ध्यास॒मर॑रो॒ दिव॒न्दिव॒मर॑रो व्वद्ध्यासँव्वद्ध्यास॒मर॑रो॒ दिव॑म्॥ अर॑रो॒ दिव॒न्दिव॒-मर॒रोर॑रो॒ दिव॒म्मा मा दिव॒मर॒रोर॑रो॒ दिव॒म्मा। अर॑रो॒ऽ इत्यर॑रो[1]। दिव॒म्मा मा दिव॒न्दिव॒म्मा प॑प्तः प॒प्तो॒ मा दिव॒न्दिव॒म्मा प॑प्तः। मा प॑प्तः प॒प्तो॒ मा मा प॑प्तो द्र॒प्स्सो द्र॒प्स्सः प॑प्तो॒ मा मा प॑प्तो द्र॒प्स्सः। प॒प्तो॒ द्र॒प्स्सो द्र॒प्स्सः प॑प्तः पप्तो द्र॒प्स्सस्ते॑ ते द्र॒प्स्सः प॑प्तः पप्तो द्र॒प्स्सस्ते॑। द्र॒प्स्सस्ते॑ ते द्र॒प्स्सो द्र॒प्स्सस्ते॒ द्यान्द्यान्ते॑ द्र॒प्स्सो द्र॒प्स्सस्ते॒ द्याम्। ते॒ द्यान्द्यान्ते॑ ते॒ द्याम्मा मा द्यान्ते॑ ते॒ द्याम्मा। द्याम्मा मा द्यान्द्याम्मा स्क॑न्त्स्क॒न्न्मा द्यान्द्याम्मा स्क॑न्।[2] मा स्क॑न्त्स्क॒न्न्मा मा स्क॑न्न्गाय॒त्त्रेण॑ गाय॒त्त्रेण॑ स्क॒न्न्मा मा स्क॑न्न्गाय॒त्त्रेण॑। स्क॒न्न्गा॒य॒त्त्रेण॑ गाय॒त्त्रेण॑ स्कन्त्स्कन्न्गाय॒त्त्रेण॑ त्वा त्वा गाय॒त्त्रेण॑ स्कन्त्स्कन्न्गाय॒त्त्रेण॑ त्वा॥२६॥

गा॒य॒त्त्रेण॑ त्वा त्वा गाय॒त्त्रेण॑ गाय॒त्त्रेण॑ त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा त्वा गाय॒-त्त्रेण॑ गाय॒त्त्रेण॑ त्वा॒ च्छन्द॑सा। त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा त्वा त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॒ परि॒ च्छन्द॑सा त्वा त्वा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑। छन्द॑सा॒ परि॒ परि॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॒ च्छन्द॑सा॒ च्छन्द॑सा॒ परि॑ गृह्णामि। परि॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॒ परि॑ गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि॒ परि॒ परि॑ गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन। गृ॒ह्णा॒मि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन॒ जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन गृह्णामि गृह्णामि॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन। त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन॒ जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा सु॒क्ष्मा जाग॑तेन॒ त्रैस्तु॑भेन॒ त्रैष्टु॑भेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा। त्रैस्तु॑भे॒नेति॒ त्रैस्तु॑भेन।[3] जाग॑तेन सु॒क्ष्मा सु॒क्ष्मा जाग॑तेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा च॑ च सु॒क्ष्मा

---

1. अररो यह ओकारान्त पद इति बाद में रहने पर प्रगृह्य होता है। अतः अररोऽ इत्यररो ऐसा स्थितोपस्थित पाठ होता है।

2. स्कन् स्कन् यहाँ ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र से न के बाद तकार का आगम होता है। स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) के अनुसार तकार बाद में होने से नकार का द्वित्व नहीं होगा। द्वितीय ककार का भी द्वित्व नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) से नहीं होगा अतः स्कन्त्स्कन् ऐसी सन्धि होगी।

3. तद्धिते चैकाक्षरवृद्धावनिहिते(वा.प्रा.५.२८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अवग्रह नहीं है।

जाग॑तेन॒ जाग॑तेन सु॒क्ष्मा च॑॥ सु॒क्ष्मा च॑ च सु॒क्ष्मा सु॒क्ष्मा चास्यसि॑ च सु॒क्ष्मा
सु॒क्ष्मा चासि॑। चास्यसि॑ च॒ चासि॑ शि॒वा शि॒वासि॑ च॒ चासि॑ शि॒वा। असि॑ शि॒वा
शि॒वास्यसि॑ शि॒वा च॑ च शि॒वास्यसि॑ शि॒वा च॑[1]। शि॒वा च॑ च शि॒वा शि॒वा चा᳚स्य-
सि च शि॒वा शि॒वा चा᳚सि। चा॒स्य॒सि॒ च॒ चा॒सि॒ स्यो॒ना स्यो॒नासि॑ च चासि स्यो॒ना
। अ॒सि॒ स्यो॒ना स्यो॒नास्य॑सि स्यो॒ना सु॒षदा॑ सु॒सदा॑ स्यो॒नास्य॑सि स्यो॒ना सु॒षदा॑।
स्यो॒ना सु॒षदा॑ सु॒सदा॑ स्यो॒ना स्यो॒ना सु॒षदोर्ज्ज॑स्व॒त्यूर्ज्ज॑स्वती सु॒सदा॑ स्यो॒ना
स्यो॒ना सु॒षदोर्ज्ज॑स्वती। सु॒षदोर्ज्ज॑स्व॒त्यूर्ज्ज॑स्वती सु॒सदा॑ सु॒षदोर्ज्ज॑स्वती॒ पय॑स्वती॒
पय॑स्व॒त्यूर्ज्ज॑स्वती सु॒सदा॑ सु॒षदोर्ज्ज॑स्वती॒ पय॑स्वती। सु॒सदेति॑ सु॒ सदा॑। ऊर्ज्ज॑स्व-
ती॒ पय॑स्वती॒ पय॑स्व॒त्यूर्ज्ज॑स्व॒त्यूर्ज्ज॑स्वती॒ पय॑स्वती। पय॑स्व॒तीति॒ पय॑स्वती॥२७॥

पु॒रा क्रू॒रस्य॑ क्रू॒रस्य॑ पु॒रा पु॒रा क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑ वि॒सृप॑ः क्रू॒रस्य॑ पु॒रा पु॒रा
क्रू॒रस्य॑ वि॒सृप॑ः। क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑ वि॒सृप॑ः क्रू॒रस्य॑ क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑
विरप्प्शिन्विरप्प्शिन्वि॒सृप॑ः क्रू॒रस्य॑ क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑ विरप्प्शिन्। वि॒सृपो॑
विरप्प्शिन्विरप्प्शिन्वि॒सृपो॑ वि॒सृपो॑ विरप्प्शिन्नुदा॒दायो॑दा॒दाय॑ विरप्प्शिन्वि॒सृपो॑
वि॒सृपो॑ विरप्प्शिन्नुदा॒दाय॑। वि॒सृप॒ऽ इति॑ वि॒ सृप॑ः। वि॒र॒प्प्शि॒न्नु॒दा॒दायो॑दा॒दाय॑
विरप्प्शिन्विरप्प्शिन्नुदा॒दाय॑ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीमु॑दा॒दाय॑ विरप्प्शिन्विरप्प्शिन्नुदा॒दाय॑
पृथि॒वीम्। वि॒र॒प्प्शि॒न्निति॑ वि रप्प्शिन्। उ॒दा॒दाय॑ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीमु॑दा॒दायो॑दा॒दाय॑
पृथि॒वीञ्जी॒वदा॑नुञ्जी॒वदा॑नुम्पृथि॒वीमु॑दा॒दायो॑दा॒दाय॑ पृथि॒वीञ्जी॒वदा॑नुम्। उ॒दा॒दाये-
त्युं॑त् आ॒दाय॑। पृ॒थि॒वीञ्जी॒वदा॑नुञ्जी॒वदा॑नुम्पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीञ्जी॒वदा॑नुम्। जी॒वदा॑नु॒-
मिति॑ जी॒व दा॑नुम्॥ यामैर॑य॒न्नैर॑य॒न्याँऽयामैर॑यँश्च॒न्द्रम॑सि च॒न्द्रम॒स्यैर॑य॒न्याँऽया-
मैर॑यँश्च॒न्द्रम॑सि। ऐर॑यँश्च॒न्द्रम॑सि च॒न्द्रम॒स्यैर॑य॒न्नैर॑यँश्च॒न्द्रम॑सि स्व॒धाभि॑ः
स्व॒धाभि॑श्च॒न्द्रम॒स्यैर॑य॒न्नैर॑यँश्च॒न्द्रम॑सि स्व॒धाभि॑ः। च॒न्द्रम॑सि स्व॒धाभि॑ः

[1]. असि॑ शि॒वा यहाँ पर वा. प्रा. २.४०. के अनुसार असि॑ पद आद्युदात्त है।

स्वधाभिंश्चन्द्रमसि चन्द्रमसि स्वधाभिस्तान्ताꣳ स्वधाभिंश्चन्द्रमसि चन्द्रमसि स्वधाभिस्ताम्। स्वधाभिस्तान्ताꣳ स्वधाभिः स्वधाभिस्तामु धीरासो धीरासऽ उ ताꣳ स्वधाभिः स्वधाभिस्तामु धीरासः। तामु धीरासो धीरासऽ उ तान्तामु धीरासोऽ अनुदिश्श्यानुदिश्श्य धीरासऽ उ तान्तामु धीरासोऽ अनुदिश्श्य। ऊँऽ इत्यूँ[1]। धीरासोऽ अनुदिश्श्यानुदिश्श्य धीरासो धीरासोऽ अनुदिश्श्य यजन्ते यजन्तेनुदिश्श्य धीरासो धीरासोऽ अनुदिश्श्य यजन्ते। अनुदिश्श्य यजन्ते यजन्तेनुदिश्श्यानुदिश्श्य यजन्ते। अनुदिश्श्येत्यनु दिश्श्य। यजन्तऽ इति यजन्ते॥ प्रोक्क्षणीरा सादय सादया प्प्रोक्क्षणीः प्प्रोक्क्षणीरा सादय द्विषतो द्विषतः सादया प्प्रोक्क्षणीः प्प्रोक्क्षणीरा सादय द्विषतः। प्रोक्क्षणीरिति प्प्र उक्क्षणीः। आ सादय। सादय द्विषतो द्विषतः सादय सादय द्विषतो ब्बधो ब्बधो द्विषतः सादय सादय द्विषतो ब्बधः। द्विषतो ब्बधो ब्बधो द्विषतो द्विषतो ब्बधोस्यसि ब्बधो द्विषतो द्विषतो ब्बधोसि। ब्बधोस्यसि ब्बधो ब्बधोसि। असीत्यसि॥२८॥

अनिंशितोस्यस्यनिंशितोनिंशितोसि सपत्नक्क्षित्त्सपत्नक्क्षिदस्यनिंशितोनिंशितोसि सपत्नक्क्षित्[2]। अनिंशितऽ इत्यनिं शितः। असि सपत्नक्क्षित्त्सपत्नक्क्षिदस्यसि सपत्नक्क्षिद्द्वाजिनँव्वाजिनꣳ सपत्नक्क्षिदस्यसि सपत्नक्क्षिद्द्वाजिनम्। सपत्नक्क्षिद्द्वाजिनँव्वाजिनꣳ सपत्नक्क्षित्त्सपत्नक्क्षिद्द्वाजिनन्त्वा त्वा व्वाजिनꣳ सपत्नक्क्षित्त्सपत्नक्क्षिद्द्वाजिनन्त्वा। सपत्नक्क्षिदिति सपत्न क्षित्। व्वाजिनन्त्वा त्वा व्वाजिनँव्वाजिनन्त्वा व्वाजेद्ध्यायै व्वाजेद्ध्यायै त्वा व्वाजिनँव्वाजिनन्त्वा व्वाजेद्ध्यायै। त्वा व्वाजेद्ध्यायै व्वाजेद्ध्यायै त्वा त्वा व्वाजेद्ध्यायै सꣳ

1. वा.प्रा.४.९४. के अनुसार अपृक्त उकार इति परे होने पर दीर्घ तथा अनुनासिक होता है। वा.प्रा.१.९२. के सातत्य में पढ़े गये उकारोऽपृक्तः(वा.प्रा.१.९५) के अनुसार यहाँ उकार अपृक्तसंज्ञक है।

2. प्रतिषेधे नावग्रहः(वा.प्रा.५.२४) इस सूत्र के अनुसार निषेधार्थक नञ् के साथ समास होने पर पृथक्करण नहीं होता है। प्रकृत उदाहरण अनिशितः में पर्युदास है, अतः पृथक्करण होगा।

सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्। व्वा॒जे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑ज्जिर्म माज्जिर्म॒ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑ज्जिर्म[1]। व्वा॒जे॒द्ध्याया॒ऽ इति॑ वाज इ॒द्ध्यायै॑। सम्मा॑ज्जिर्म माज्जिर्म॒ सꣳ सम्मा॒ज्ज्म्र्यनि॑शि॒तानि॑शिता माज्जिर्म॒ सꣳ सम्मा॒ज्ज्म्र्यनि॑शिता। मा॒ज्ज्म्र्यनि॑शि॒तानि॑शिता माज्जिर्म मा॒ज्ज्म्र्यनि॑शि- तास्यु॒स्यनि॑शिता माज्जिर्म मा॒ज्ज्म्र्यनि॑शितासि॥ अनि॑शितास्यु॒स्यनि॑शि॒तानि॑- शितासि सपत्न॒क्षित्स॑पत्न॒क्षिद॒स्यनि॑शि॒तानि॑शितासि सपत्न॒क्षित् । अनि॑- शि॒तेत्यनि॑ शिता। अ॒सि॒ स॒प॒त्न॒क्षित्स॑पत्न॒क्षिद॑स्यसि सपत्न॒क्षिद्वा॒जिनीँ॑व्वा॒- जिनीँ॑ꣳ सपत्न॒क्षिद॑स्यसि सपत्न॒क्षिद्वा॒जिनी॑म्। स॒प॒त्न॒क्षिद्वा॒जिनीँ॑व्वा॒जि- नीँ॑ꣳ सपत्न॒क्षित्स॑पत्न॒क्षिद्वा॒जिनी॑न्त्वा त्वा व्वा॒जिनीँ॑ꣳ सपत्न॒क्षित्स॑पत्न॒- क्षिद्वा॒जिनी॑न्त्वा। स॒प॒त्न॒क्षिदिति॑ सपत्न॒ क्षित्। व्वा॒जिनी॑न्त्वा त्वा व्वा॒जिनीँ॑- व्वा॒जिनी॑न्त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॑ त्वा व्वाजिनीँ॑व्वा॒जिनी॑न्त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॑। त्वा॒ व्वा॒जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ त्वा त्वा व्वाजे॒द्ध्या- यै॒ सम्। व्वा॒जे॒द्ध्यायै॒ सꣳ सँव्वा॑जे॒द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑ज्जिर्म माज्जिर्म॒ सँव्वा॑जे॒- द्ध्यायै॑ व्वाजे॒द्ध्यायै॒ सम्मा॑ज्जिर्म। व्वा॒जे॒द्ध्याया॒ऽ इति॑ वाज इ॒द्ध्यायै॑। सम्मा॑ज्जिर्म माज्जिर्म॒ सꣳ सम्मा॒ज्ज्म्र्यदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै माज्जिर्म॒ सꣳ सम्मा॒ज्ज्म्र्यदि॑त्त्यै। मा॒ज्ज्म्र्यदि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै माज्जिर्म मा॒ज्ज्म्र्यदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना रास्न्नादि॑त्त्यै माज्जिर्म मा॒ज्ज्म्र्यदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑॥२९॥

अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॒ रास्न्नादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑स्यसि॒ रास्न्नादि॑त्त्या॒ऽ अदि॑त्त्यै॒ रास्न्ना॑सि। रास्न्ना॑स्यसि॒ रास्न्ना॒ रास्न्ना॑सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रसि॒ रास्न्ना॒ रास्न्ना॑सि॒ व्विष्ण्णो॑ꣳ। अ॒सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ण्णो॑र्व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒

---

[1]. जकारौ द्वौ मकारश्च रेफस्तदुपरि स्थितः। अशरीरं यमं विद्यात्सम्माज्र्मीति निदर्शनम्॥ - पा. शि. ५८.

व्विष्ष्णो॑र्व्वे॒ष्प्पः॒।[1] व्विष्ष्णो॑र्व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो व्विष्ष्णो॒र्व्विष्ष्णो॑र्व्वे॒ष्प्पो॒स्यसि व्वे॒ष्प्पो व्विष्ष्णो॒र्व्विष्ष्णो॑र्व्वे॒ष्प्पो॒सि। व्वे॒ष्प्पो॒स्यसि व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो॒स्यू॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जो॒सि व्वे॒ष्प्पो व्वे॒ष्प्पो॒स्यू॒र्ज्जे। अ॒स्यू॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जो॒स्यस्यू॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जो॒स्यस्यू॒र्ज्जे त्वा॑। ऊ॒र्ज्जे त्वा॑ त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वाद॑ब्धे॒नाद॑ब्धेन त्वो॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे त्वाद॑ब्धेन[2]। त्वाद॑ब्धे॒नाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धेन त्वा। अद॑ब्धेन त्वा॒ त्वाद॑ब्धे॒ना-द॑ब्धेन त्वा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा॒ त्वाद॑ब्धे॒नाद॑ब्धेन त्वा॒ चक्षु॑षा। त्वा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा त्वा त्वा॒ चक्षु॒षावाव॒ चक्षु॑षा त्वा त्वा॒ चक्षु॒षाव॑। चक्षु॒षावाव॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॒षाव॑ पश्श्यामि पश्श्या॒म्म्यव॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॒षाव॑ पश्श्यामि। अव॑ पश्श्यामि पश्श्या॒म्म्यवाव॑ पश्श्याम्म्य॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेः॒ प॑श्श्या॒म्म्यवाव॑ पश्श्याम्म्य॒ग्ग्नेः॒ । प॒श्श्या॒म्म्य॒ग्ग्नेर॒ग्ग्नेः॒ प॑श्श्यामि पश्श्याम्म्य॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा जि॒ह्वाग्ग्नेः॒ प॑श्श्यामि पश्श्याम्म्य॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा॥ अ॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वा जि॒ह्वाग्ग्नेर॒ग्ग्नेर्ज्जि॒ह्वास्य॑सि जि॒ह्वाग्ग्नेर॒ग्ग्नेर्ज्जि॒-ह्वासि॑। जि॒ह्वास्य॑सि जि॒ह्वा जि॒ह्वासि॑ सु॒हूः॒ सु॒हूर॑सि जि॒ह्वा जि॒ह्वासि॑ सु॒हूः॒। अ॒सि॒ सु॒हूः॒ सु॒हूर॑स्यसि सु॒हूर्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूर॑स्यसि सु॒हूर्दे॒वेब्भ्य॑÷। सु॒हूर्दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूः॒ सु॒हूर्दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्य॑÷ सु॒हूः॒ सु॒हूर्दे॒वे-ब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने। सु॒हूरिति॑ सु॒ हूः॒। दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे। धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने मे भव भव मे॒ धाम्म्ने॑धाम्म्ने॒ धाम्म्ने॑-धाम्म्ने मे भव। धाम्म्ने॑धाम्म्न॒ऽ इति॒ धाम्म्ने॑ धाम्म्ने। मे॒ भ॒व॒ भ॒व॒ मे॒ मे॒ भ॒व॒ सजु॑षे-

---

1. वेष्पः के स्थान पर भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने वेष्यः पाठ माना है। माध्यन्दिनसंहिता के पदपाठ के परिशिष्ट में सम्पादक ने वेष्पः पाठ स्वीकार किया है। यकार तथा पकार की लिपि का सादृश्य होने से यकार की स्वीकृति मान ली गयी होगी उभयया अर्थसङ्गति होने पर भी सम्प्रदाय में वेष्पः पाठ प्रचलित है।

2. **अदब्धेन** यहाँ बकार ही है।– मा. शि. - १

यजु॑षे॒ ऽयजुं॑षेयजुषे भव मे मे भव॒ ऽयजुं॑षेयजुषे।[1] भ॒व॒ ऽयजुं॑षेयजुषे॒ ऽयजुं॑षेयजुषे भव भव॒ ऽयजुं॑षेयजुषे सवि॒तुः स॑वि॒तुर्ऽयजुं॑षेयजुषे भव भव॒ ऽयजुं॑षेयजुषे सवि॒तुः। ऽयजुं॑षेयजुषे सवि॒तुः स॑वि॒तुर्ऽयजुं॑षेयजुषे॒ ऽयजुं॑षेयजुषे सवि॒तुस्त्वा॑ त्वा सवि॒तु-र्ऽयजुं॑षेयजुषे॒ ऽयजुं॑षेयजुषे सवि॒तुस्त्वा॑। ऽयजुं॑षेयजुष॒ऽ इति॒ यजुं॑षे ऽयजुषे॥३०॥

स॒वि॒तुस्त्वा॑ त्वा सवि॒तुः स॑वि॒तुस्त्वा॒ तेज॒स्तेजं॑स्त्वा सवि॒तुः स॑वि॒तुस्त्वा॒ तेजं॑÷। त्वा॒ तेज॒स्तेजं॑स्त्वा त्वा॒ तेजो॑ऽस्यसि॒ तेजं॑स्त्वा त्वा॒ तेजो॑ऽसि॥ तेजो॑ऽस्यसि॒ तेज॒स्तेजो॑ऽसि शु॒क्रꣳ शु॒क्रमं॑सि॒ तेज॒स्तेजो॑ऽसि शु॒क्रम्। अ॒सि॒ शु॒क्रꣳ शु॒क्रमं॑स्यसि शु॒क्रम॒मृतं॑म॒मृतꣳ॑ शु॒क्रमं॑स्यसि शु॒क्रम॒मृतं॑म्। शु॒क्रम॒मृतं॑म॒मृतꣳ॑ शु॒क्रꣳ शु॒क्रम॒-मृत॒न्धाम॒ धाम॒मृतꣳ॑ शु॒क्रꣳ शु॒क्रम॒मृत॒न्धाम॑। अ॒मृत॒न्धाम॒ धाम॒मृतं॑म॒मृत॒न्धाम॒ नाम॒ नाम॒ धाम॒मृतं॑म॒मृत॒न्धाम॒ नाम॑। धाम॒ नाम॒ नाम॒ धाम॒ धाम॒ नाम॑ प्प्रि॒य-म्प्रि॒यन्नाम॒ धाम॒ धाम॒ नाम॑ प्प्रि॒यम्। नाम॑ प्प्रि॒यम्प्रि॒यन्नाम॒ नाम॑ प्प्रि॒यन्दे॒वाना॑-न्दे॒वाना॑म्प्रि॒यन्नाम॒ नाम॑ प्प्रि॒यन्दे॒वाना॑म्। प्रि॒यन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑म्प्रि॒यम्प्रि॒यन्दे॒वा-ना॒मना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टन्दे॒वाना॑म्प्रि॒यम्प्रि॒यन्दे॒वाना॒मना॑धृष्टम्। दे॒वाना॒मना॑धृष्ट॒मना॑-धृष्टन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मना॑धृष्टन्दे॒वयजं॑नन्दे॒वयजं॑न॒मना॑धृष्टन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मना॑धृ-ष्टन्दे॒वयजं॑नम्[2]। अना॑धृष्टन्दे॒वयजं॑नन्दे॒वयजं॑न॒मना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टन्दे॒वयजं॑नम-स्यसि दे॒वयजं॑न॒मना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टन्दे॒वयजं॑नमसि। दे॒व॒यजं॑नमस्यसि दे॒वयजं॑न-न्दे॒वयजं॑नमसि। दे॒व॒यजं॑न॒मिति॑ दे॒व॒ ऽयजं॑नम्। अ॒सीत्यं॑सि॥३१॥

॥ इति माध्यन्दिनीयघनपाठे प्रथमोध्यायः॥

---

[1]. वा.प्रा.१.८७. के अनुसार मे पद उदात्त होने पर प्रगृह्य होता है, यहाँ उक्त स्थिति न होने से प्रगृह्य संज्ञक नहीं होगा।

[2]. अनाधृष्टम् देवयजनम् यहाँ सन्धि की दशा में व. शि. १४६ के अनुसार पदान्त मकार का नकार उपदिष्ट है।

॥द्वितीयोध्यायः॥

हरिः ॐ॥ कृष्णोस्यसि कृष्णः कृष्णोस्याखरेष्ठऽ आखरेस्त्थोसि कृष्णः कृष्णोस्याखरेष्ठः[1]। अस्याखरेष्ठऽ आखरेस्त्थोस्यस्याखरेष्ठोग्ग्नये-ग्ग्नयऽ आखरेस्त्थोस्यस्याखरेष्ठोग्ग्नये। आखरेष्ठोग्ग्नयेग्ग्नयऽ आखरेस्त्थऽ आखरे-ष्ठोग्ग्नये त्वा त्वाग्ग्नयऽ आखरेस्त्थऽ आखरेष्ठोग्ग्नये त्वा। आखरेस्त्थऽ इत्याखरे स्थः। अग्ग्नये त्वा त्वाग्ग्नयेग्ग्नये त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वाग्ग्नयेग्ग्नये त्वा जुष्टम्। त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र प्प्र जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र। जुष्टम्प्र प्प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रो-क्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रोक्क्षामि। प्रोक्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र प्प्रोक्क्षामि व्वेदिर्व्वेदिरुक्क्षामि प्प्र प्प्रोक्क्षामि व्वेदिः। उक्क्षामि व्वेदिर्व्वेदिरुक्क्षाम्म्युक्क्षामि व्वेदिरस्यसि व्वेदिरुक्क्षाम्म्युक्क्षामि व्वेदिरसि। व्वेदिरस्यसि व्वेदिर्व्वेदिरसि बर्हिषे बर्हिषेसि व्वेदिर्व्वेदिरसि बर्हिषे। असि बर्हिषे बर्हिषेस्यसि बर्हिषे त्वा त्वा बर्हिषेस्य-सि बर्हिषे त्वा। बर्हिषे त्वा त्वा बर्हिषे बर्हिषे त्वा जुष्टाञ्जुष्टान्त्वा बर्हिषे बर्हिषे त्वा जुष्टाम्। त्वा जुष्टाञ्जुष्टान्त्वा त्वा जुष्टाम्प्र प्प्र जुष्टान्त्वा त्वा जुष्टाम्प्र। जुष्टाम्प्र प्प्र जुष्टाञ्जुष्टाम्प्रोक्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र जुष्टाञ्जुष्टाम्प्रोक्क्षामि। प्रोक्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र प्प्रोक्क्षामि बर्हिर्ब्बर्हिरुक्क्षामि प्प्र प्प्रोक्क्षामि बर्हिः। उक्क्षामि बर्हिर्ब्बर्हिरु-क्क्षाम्म्युक्क्षामि बर्हिरस्यसि बर्हिरुक्क्षाम्म्युक्क्षामि बर्हिरसि। बर्हिरस्यसि बर्हि-र्ब्बर्हिरसि स्रुग्ग्भ्यः स्रुग्ग्भ्योसि बर्हिर्ब्बर्हिरसि स्रुग्ग्भ्यः। असि स्रुग्ग्भ्यः स्रुग्ग्भ्यो-स्यसि स्रुग्ग्भ्यस्त्वा त्वा स्रुग्ग्भ्योस्यसि स्रुग्ग्भ्यस्त्वा। स्रुग्ग्भ्यस्त्वा त्वा स्रुग्ग्भ्यः स्रुग्ग्भ्यस्त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा स्रुग्ग्भ्यः स्रुग्ग्भ्यस्त्वा जुष्टम्। स्रुग्ग्भ्यऽ इति स्रुक् भ्यः। त्वा जुष्टञ्जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र प्प्र जुष्टन्त्वा त्वा जुष्टम्प्र। जुष्टम्प्र प्प्र जुष्ट-ञ्जुष्टम्प्रोक्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र जुष्टञ्जुष्टम्प्रोक्क्षामि। प्रोक्क्षाम्म्युक्क्षामि प्प्र प्प्रो-

[1]. कृष्ण शब्द मृग का वाचक होने पर आद्युदात्त होता है। - वा. प्रा. २.२५।

क्षाम्म्यदित्त्याऽ अदित्त्याऽ उक्षामि प्प्र प्प्रोक्षाम्म्यदित्त्यै। उक्षाम्म्यदित्त्याऽ अदित्त्याऽ उक्षाम्म्युक्षाम्म्यदित्त्यै ध्युन्दनँध्युन्दनमदित्त्याऽ उक्षाम्म्युक्षाम्म्यदित्त्यै ध्युन्दनम्॥१॥

अदित्त्यै ध्युन्दनँध्युन्दनमदित्त्याऽ अदित्त्यै ध्युन्दनमस्यसि ध्युन्दनमदित्त्याऽ अदित्त्यै ध्युन्दनमसि। ध्युन्दनमस्यसि ध्युन्दनँध्युन्दनमसि व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णोरसि ध्युन्दनँध्युन्दनमसि व्विष्ण्णोः। ध्युन्दनमिति वि उन्दनम्। असि व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णोरस्यसि व्विष्ण्णो स्तुप स्तुपो व्विष्ण्णोरस्यसि व्विष्ण्णो स्तुपः[1]। व्विष्ण्णो स्तुप स्तुपो व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णो स्तुपोस्यसि स्तुपो व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णो स्तुपोसि। स्तुपोस्यसि स्तुप स्तुपोस्यूर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसमसि स्तुप स्तुपोस्यूर्ण्णम्म्रदसम्। अस्यूर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसमस्यस्यूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा त्वोर्ण्णम्म्रदसमस्यस्यूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा। ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा त्वोर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वोर्ण्णम्म्रदसमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि। ऊर्ण्णम्म्रदसमित्त्यूर्ण्ण म्रदसम्। त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्त्थाँ स्वासस्त्थाँ स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्त्थाम्। स्तृणामि स्वासस्त्थाँ स्वासस्त्थाँ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्त्थान्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्त्थाँ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्त्थान्देवेब्भ्यः। स्वासस्त्थान्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्त्थाँ स्वासस्त्थान्देवेब्भ्यो भुवपतये भुवपतये देवेब्भ्यः स्वासस्त्थाँ स्वासस्त्थान्देवेब्भ्यो भुवपतये। स्वासस्त्थामिति सु आसस्त्थाम्। देवेब्भ्यो भुवपतये भुवपतये देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो भुवपतये स्वाहा स्वाहा भुवपतये देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो भुवपतये स्वाहा[2]। भुवपतये स्वाहा स्वाहा भुवपतये भुवपतये स्वाहा भुवनपतये

---

[1]. विष्णोः स्तुपः यहाँ वा.प्रा.३.१३. के अनुसार विसर्जनीय का लोप होता है।

[2].वा.प्रा.२.३९. के अनुसार स्वाहा पद आद्युदात होता है।

भुव॑नपतये॒ स्वाहा॒ भुव॑पतये॒ भुव॑पतये॒ स्वाहा॒ भुव॑नपतये। भुव॑पतय॒ऽ इति॒ भुव॑ पतये। स्वाहा॒ भुव॑नपतये॒ भुव॑नपतये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ भुव॑नपतये भू॒ताना॑म्भू॒ताना॒-म्भुव॑नपतये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ भुव॑नपतये भू॒ताना॑म्। भुव॑नपतये भू॒ताना॑म्भू॒ताना॒-म्भुव॑नपतये॒ भुव॑नपतये भू॒ताना॒म्पत॑ये॒ पत॑ये भू॒ताना॒म्भुव॑नपतये॒ भुव॑नपतये भू॒ताना॒म्पत॑ये। भुव॑नपतय॒ऽ इति॒ भुव॑न पतये। भू॒ताना॒म्पत॑ये॒ पत॑ये भू॒ताना॑म्भू॒-ताना॒म्पत॑ये गन्ध॒र्व्वो ग॑न्ध॒र्व्वः पत॑ये भू॒ताना॑म्भू॒ताना॒म्पत॑ये गन्ध॒र्व्वः। पत॑ये गन्ध॒र्व्वो ग॑न्ध॒र्व्वः पत॑ये॒ पत॑ये गन्ध॒र्व्वस्त्वा॑ त्वा गन्ध॒र्व्वः पत॑ये॒ पत॑ये गन्ध॒र्व्वस्त्वा॑॥२॥

ग॒न्ध॒र्व्वस्त्वा॑ त्वा गन्ध॒र्व्वो ग॑न्ध॒र्व्वस्त्वा॑ व्वि॒श्वाव॑सुर्व्वि॒श्वव॑सुस्त्वा गन्ध॒र्व्वो ग॑न्ध॒र्व्वस्त्वा॑ व्वि॒श्वाव॑सुः[1]। त्वा॒ व्वि॒श्वाव॑सुर्व्वि॒श्वव॑सुस्त्वा त्वा व्वि॒श्वाव॑सु॒ः परि॒ परि॑ वि॒श्वव॑सुस्त्वा त्वा व्वि॒श्वाव॑सु॒ः परि॑। व्वि॒श्वाव॑सु॒ः परि॒ परि॑ वि॒श्वव॑सुर्व्वि॒श्वाव॑सु॒ः परि॑ दधातु दधातु॒ परि॑ वि॒श्वव॑सुर्व्वि॒श्वाव॑सु॒ः परि॑ दधातु। व्वि॒श्वव॑सुरिति॑ वि॒श्व व्व॑सुः। परि॑ दधातु दधातु॒ परि॒ परि॑ दधातु॒ व्विश्व॑स्य॒ व्विश्व॑स्य दधातु॒ परि॒ परि॑ दधातु॒ व्विश्व॑-स्य। द॒धा॒तु॒ व्विश्व॑स्य॒ व्विश्व॑स्य दधातु दधातु॒ व्विश्व॒स्यारि॑ष्ट्या॒ऽ अरि॑ष्ट्यै॒ व्विश्व॑स्य दधातु दधातु॒ व्विश्व॒स्यारि॑ष्ट्यै। व्विश्व॒स्यारि॑ष्ट्या॒ऽ अरि॑ष्ट्यै॒ व्विश्व॑स्य॒ व्विश्व॒स्यारि॑ष्ट्यै॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्यारि॑ष्ट्यै॒ व्विश्व॑स्य॒ व्विश्व॒स्यारि॑ष्ट्यै॒ यज॑मानस्य। अरि॑ष्ट्यै॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्यारि॑ष्ट्या॒ऽ अरि॑ष्ट्यै॒ यज॑मानस्य परि॒धिः प॑रि॒धिर्य्यज॑-मान॒स्यारि॑ष्ट्या॒ऽ अरि॑ष्ट्यै॒ यज॑मानस्य परि॒धिः। यज॑मानस्य परि॒धिः प॑रि॒धिर्य्य-ज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य परि॒धिर॑स्यसि परि॒धिर्य्यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य परि॒धि-र॑सि। प॒रि॒धिर॑स्यसि परि॒धिः प॑रि॒धिर॑स्य॒ग्निर॒ग्निर॑सि परि॒धिः प॑रि॒धिर॑स्य॒ग्निः। प॒रि॒धिरिति॑ परि॒ धिः। अ॒स्य॒ग्निर॒ग्निर॑स्यस्य॒ग्निरि॒डऽ इ॒डो॒ग्निर॑स्यस्य॒-

[1]. यहाँ वा. प्रा. ३.१०१. के अनुसार विश्व का अकार दीर्घ हो गया है।

ग्निरि॒डः[1]। अ॒ग्निरि॒डऽ इ॒डो॒ग्निर॒ग्निरि॒डऽ ईडि॑तऽ ईडि॑तऽ इ॒डो॒ग्निर॒ग्निरि॒डऽ ईडि॒तः। इ॒डऽ ईडि॑तऽ ईडि॑तऽ इ॒डऽ इ॒डऽ ईडि॑तऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येडि॒तऽ इ॒डऽ इ॒डऽ ईडि॑तऽ इन्द्र॑स्य। ई॒डि॒तऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येडि॒तऽ ईडि॑तऽ इन्द्र॑स्य बा॒हुर्बा॒हुरिन्द्र॑स्येडि॒तऽ ईडि॑तऽ इन्द्र॑स्य बा॒हुः॥ इन्द्र॑स्य बा॒हुर्बा॒हुरिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य बा॒हुर॑स्यसि बा॒हुरिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य बा॒हुर॑सि। बा॒हुर॑स्यसि बा॒हुर्बा॒हुर॑सि॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णोसि बा॒हुर्बा॒हुर॑सि॒ दक्षि॑णः[2]। अ॒सि॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णोस्यसि॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णोस्यसि॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ[3]। दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ त्वा त्वा मि॒त्रावरु॑णौ॒ दक्षि॑णो॒ दक्षि॑णो मि॒त्रावरु॑णौ त्वा॥ मि॒त्रावरु॑णौ त्वा त्वा मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ त्वोत्त॑र॒तऽ उत्त॑र॒तस्त्वा॑ मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ त्वोत्त॑र॒तः। त्वो॒त्त॒र॒तऽ उत्त॑र॒तस्त्वा॑ त्वोत्त॑र॒तः परि॒ पर्य्युत्त॑र॒तस्त्वा॑ त्वोत्त॑र॒तः परि॑। उ॒त्त॒र॒तः परि॒ पर्य्युत्त॑र॒तऽ उत्त॑र॒तः परि॑ धत्तान्धत्ता॒म्पर्य्युत्त॑र॒तऽ उत्त॑र॒तः परि॑ धत्ताम्। परि॑ धत्तान्धत्ता॒म्परि॒ परि॑ धत्तान्ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॑ धत्ता॒म्परि॒ परि॑ धत्तान्ध्रु॒वेण॑। ध॒त्ता॒न्ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॑ धत्तान्धत्तान्ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा॒ धर्म्म॑णा ध्रु॒वेण॑ धत्तान्धत्तान्ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा। ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा॒ धर्म्म॑णा ध्रु॒वेण॑ ध्रु॒वेण॒ धर्म्म॑णा। धर्म्म॒णेति॒ धर्म्म॑णा॥३॥

ब्री॒तिहो॑त्रन्त्वा त्वा ब्री॒तिहो॑त्रँब्री॒तिहो॑त्रन्त्वा कवे कवे त्वा ब्री॒तिहो॑त्रँब्री॒तिहो॑त्रन्त्वा कवे। ब्री॒तिहो॑त्र॒मिति॑ वी॒ति हो॑त्रम्। त्वा॒ क॒वे॒ क॒वे॒ त्वा॒ त्वा॒ क॒वे॒ द्यु॒मन्तं॑न्द्यु॒मन्तं॑ङ्कवे त्वा त्वा कवे द्यु॒मन्तं॑म्। क॒वे॒ द्यु॒मन्तं॑न्द्यु॒मन्तं॑ङ्कवे कवे द्यु॒मन्त॒ꣳ

1. इडः अग्निः यहाँ अकारे च(वा.प्रा.४.४४) इस सूत्र से अःकार ओकार होता है। एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) से ओकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त होता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) से ओकार स्वरित होता है तथा वा.प्रा.१.११४. से अभिनिहित संज्ञा होती है।

2. दक्षिणा च (वा.प्रा.२.२९) दक्षिणा पद भी आद्युदात्त होता है।

3. पूर्वौ द्वन्द्वेष्ववायुषु वा. प्रा. ३.१२७. इस सूत्र से द्वन्द्व समास का मित्र यह पूर्वपद दीर्घ हो गया है।

सꣳ सन्द्यु॒मन्त॑ङ्कवे कवे द्यु॒मन्त॒ꣳ सम्। द्यु॒मन्त॒ꣳ सꣳ सन्द्यु॒मन्त॑न्द्यु॒मन्त॒ꣳ समि॑धीमहीधीमहि॒ सन्द्यु॒मन्त॑न्द्यु॒मन्त॒ꣳ समि॑धीमहि। द्यु॒मन्त॒मिति॑ द्यु॒ मन्त॑म्। समि॑धीमहीधीमहि॒ सꣳ समि॑धीमहि। इ॒धी॒म॒ही॒ती॑धीमहि॥ अग्ने॑ बृ॒हन्त॑म्बृ॒हन्त॒मग्ने॒ग्ने॑ बृ॒हन्त॑मद्ध्व॒रे॒द्ध्व॒रे बृ॒हन्त॒मग्ने॒ग्ने॑ बृ॒हन्त॑मद्ध्व॒रे। बृ॒हन्त॑मद्ध्व॒रे॒द्ध्व॒रे बृ॒हन्त॑म्बृ॒हन्त॑मद्ध्व॒रे[1]। अ॒द्ध्व॒रऽ इत्य॑द्ध्व॒रे॥४॥

स॒मिद॑स्यसि स॒मित्स॒मिद॑सि॒ सूर्य्य॒ꣴ सूर्य्यो॑सि स॒मित्स॒मिद॑सि॒ सूर्य्यं॑÷। स॒मिदिति॑ स॒म् इत्। अ॒सि॒ सूर्य्य॒ꣴ सूर्य्यो॑स्यसि॒ सूर्य्यं॑स्त्वा त्वा॒ सूर्य्यो॑स्यसि॒ सूर्य्यं॑स्त्वा। सूर्य्यं॑स्त्वा त्वा॒ सूर्य्य॒ꣴ सूर्य्यं॑स्त्वा पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्त्वा॒ सूर्य्य॒ꣴ सूर्य्यं॑स्त्वा पु॒रस्ता॑त्। त्वा॒ पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्त्वा त्वा पु॒रस्ता॑त्पातु पातु पु॒रस्ता॑त्त्वा त्वा पु॒रस्ता॑त्पातु। पु॒रस्ता॑त्पातु पातु पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्पातु कस्या॒ꣴ कस्या॑ꣴ पातु पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्पातु कस्या॑ꣴ। पा॒तु कस्या॒ꣴ कस्या॑ꣴ पातु पातु कस्या॑श्चिच्चि॒त्कस्या॑ꣴ पातु पातु॒ कस्या॑श्चित्। कस्या॑श्चिच्चि॒त्कस्या॒ꣴ कस्या॑श्चिद॒भिश॑स्त्याऽ अ॒भिश॑स्त्यै चि॒त्कस्या॒ꣴ कस्या॑श्चिद॒भिश॑स्त्यै। चि॒द॒भिश॑स्त्याऽ अ॒भिश॑स्त्यै चिच्चिद॒भिश॑स्त्यै सवि॒तुः स॑वि॒तुर॒भिश॑स्त्यै चिच्चिद॒भिश॑स्त्यै सवि॒तुः। अ॒भिश॑स्त्यै सवि॒तुः स॑वि॒तुर॒भिश॑स्त्याऽ अ॒भिश॑स्त्यै सवि॒तुर्ब्बा॒हू बा॒हू स॑वि॒तुर॒भिश॑स्त्याऽ अ॒भिश॑स्त्यै सवि॒तुर्ब्बा॒हू। अ॒भिश॑स्त्या॒ऽ इत्य॒भि श॑स्त्यै॥ स॒वि॒तुर्ब्बा॒हू बा॒हू स॑वि॒तुः स॑वि॒तुर्ब्बा॒हू स्त्थ॑ स्त्थो बा॒हू स॑वि॒तुः स॑वि॒तुर्ब्बा॒हू स्त्थ॑÷[1]। बा॒हू स्त्थ॑ स्त्थो बा॒हू बा॒हू स्त्थ॒ऽ ऊण्ण॑म्म्रदस॒मूण्ण॑म्म्रदसꣳ स्थो बा॒हू बा॒हू स्त्थ॒ऽ ऊण्ण॑म्म्रदसम्। बा॒हूऽ इति॑ बा॒हू। स्थ॒ऽ ऊण्ण॑म्म्रदस॒मूण्ण॑म्म्रदसꣳ स्थ स्त्थ॒ऽ ऊण्ण॑म्म्रदसन्त्वा॒

[1]. मा. शि. (शि. सं. पृ. ६२) के अनुसार बृहन्तम् पद में बकार है।

[1]. स्थः बाहू यहां सर्वो अःकार ओकारम्(वा.प्रा.४.४३) के अनुसार सोपध विसर्जनीय ओकार होता है। वा.प्रा.१.३५. के अनुसार विसर्जनीय से पूर्ववर्ती अकार की उपधा संज्ञा है।

त्वोर्णम्म्रदसꣳ स्थ स्त्थ्ऽ ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा। ऊर्ण्णम्म्रदसन्त्वा त्वोर्ण्णम्म्रद-सुमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वोर्ण्णम्म्रदसुमूर्ण्णम्म्रदसन्त्वा स्तृणामि। ऊर्ण्णम्म्रदसमित्यूर्ण्णं म्रदसम्। त्वा स्तृणामि स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्त्थꣳ स्वासुस्त्थꣳ स्तृणामि त्वा त्वा स्तृणामि स्वासस्त्थम्। स्तृणामि स्वासस्त्थꣳ स्वासुस्त्थꣳ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्त्थन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्त्थꣳ स्तृणामि स्तृणामि स्वासस्त्थन्देवेब्भ्यः। स्वासस्त्थन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वासस्त्थꣳ स्वासुस्त्थन्देवेब्भ्य्ऽ आ त्वा त्वा देवेब्भ्यः स्वासस्त्थꣳ स्वासुस्त्थन्देवेब्भ्य्ऽ आ त्वा। स्वासस्त्थमिति सु आसस्त्थम्। देवेब्भ्य्ऽ आ त्वा त्वा देवेब्भ्यो देवेब्भ्य्ऽ आ त्वा व्वसवो व्वसवस्त्वा देवेब्भ्यो देवेब्भ्य्ऽ आ त्वा व्वसवः। आ त्वा। त्वा व्वसवो व्वसवस्त्वा त्वा व्वसवो रुद्रा रुद्रा व्वसवस्त्वा त्वा[1] व्वसवो रुद्राः। व्वसवो रुद्रा रुद्रा व्वसवो व्वसवो रुद्राऽ आदित्याऽ आदित्या रुद्रा व्वसवो व्वसवो रुद्राऽ आदित्याः। रुद्राऽ आदित्याऽ आदित्या रुद्रा रुद्राऽ आदित्याः सदन्तु सदन्त्वादित्या रुद्रा रुद्राऽ आदित्याः सदन्तु। आदित्याः सदन्तु सदन्त्वादित्याऽ आदित्याः सदन्तु। सदन्त्विति सदन्तु॥५॥

घृताच्यस्यसि घृताची घृताच्यसि जुहूर्ज्जुहूरसि घृताची घृताच्यसि जुहूः[2]। असि जुहूर्ज्जुहूरस्यसि जुहूर्न्नाम्म्ना नाम्म्ना जुहूरस्यसि जुहूर्न्नाम्म्ना। जुहूर्न्नाम्म्ना नाम्म्ना जुहूर्ज्जुहूर्न्नाम्म्ना सा सा नाम्म्ना जुहूर्ज्जुहूर्न्नाम्म्ना सा। नाम्म्ना सा सा नाम्म्ना नाम्म्ना सेदमिदꣳ सा नाम्म्ना नाम्म्ना सेदम्। सेदमिदꣳ सा सेदम्प्रियेण प्प्रियेणेदꣳ सा सेदम्प्रियेण। इदम्प्रियेण प्प्रियेणेदमिदम्प्रियेण धाम्म्ना धाम्म्ना प्प्रियेणेदमिदम्प्रियेण धाम्म्ना। प्रियेण धाम्म्ना धाम्म्ना प्प्रियेण प्प्रियेण

1. वा. प्रा. २.६ के अनुसार त्वा पद अनुदात होता है।

2. यहाँ घृताची पद द्विवचन में नहीं है। जुहू को घृताची कहा है, अतः इतिकरण नहीं होगा।

धाम्न्नां प्रि॒यम्प्रि॒यन्धाम्न्नां प्रि॒येणं प्रि॒येण॒ धाम्न्नां प्रि॒यम्। धाम्न्नां प्रि॒यम्प्रि॒य-न्धाम्न्ना॒ धाम्न्नां प्रि॒यᳬ सद॒ᳮ सदः प्रि॒यन्धाम्न्ना॒ धाम्न्नां प्रि॒यᳬ सदः। प्रि॒यᳬ सद॒ᳮ सदः प्रि॒यम्प्रि॒यᳬ सद॒ऽ आ सींद सी॒दा सदः प्रि॒यम्प्रि॒यᳬ सद॒ऽ आ सींद। सद॒ऽ आ सींद सी॒दा सद॒ᳮ सद॒ऽ आ सींदोप॒भृदु॑प॒भृत्सी॒दा सद॒ᳮ सद॒ऽ आ सींदोप॒भृत्। आ सींद। सी॒दो॒प॒भृदु॑प॒भृत्सींद सीदोप॒भृद्ध्रु॒वा ध्रु॒वोप॒भृत्सींद सीदोप॒-भृद्ध्रु॒वा। उ॒प॒भृद्ध्रु॒वा ध्रु॒वोप॒भृदु॑प॒भृद्ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वोप॒भृदु॑प॒भृद्ध्रु॒वा ध्रु॒वा। उ॒प॒भृ-दित्त्युंप॒ भृत्। ध्रुवा ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अंसदन्नसदन्ध्रुवा ध्रु॒वा ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अंसदन्[1]॥ ध्रु॒वाऽ अंसदन्नसदन्ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अंसदन्नृ॒तस्यंऽ ऋ॒तस्यांसदन्ध्रु॒वा ध्रु॒वाऽ अंसदन्नृ॒तस्यं। अ॒स॒द॒न्नृ॒तस्यंऽ ऋ॒तस्यांसदन्नसदन्नृ॒तस्य॒ योनौ॒ योनांवृ॒त-स्यांसदन्नसदन्नृ॒तस्य॒ योनौं। ऋ॒तस्य॒ योनौ॒ योनांवृ॒तस्यंऽ ऋ॒तस्य॒ योनौ॒ ता ता योनांवृ॒तस्यंऽ ऋ॒तस्य॒ योनौ॒ ता[2]। योनौ॒ ता ता योनौ॒ योनौ॒ ता व्विंष्ण्णो व्विष्ण्णो॒ ता योनौ॒ योनौ॒ ता व्विंष्ण्णो। ता व्विंष्ण्णो व्विष्ण्णो॒ ता ता व्विंष्ण्णो पाहि पाहि व्विष्ण्णो॒ ता ता व्विंष्ण्णो पाहि। व्वि॒ष्ण्णो॒ पा॒हि॒ पा॒हि॒ व्वि॒ष्ण्णो॒ व्वि॒ष्ण्णो॒ पा॒हि॒ पा॒हि पा॒हि पांहि व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो पाहि पा॒हि। व्वि॒ष्ण्णो॒ऽ इतिं विष्ण्णो। पा॒हि॒ पा॒हि पा॒हि पांहि पाहि पा॒हि य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्पा॒हि पांहि पाहि पा॒हि य॒ज्ञम्। पा॒हि य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञम्पा॒हि। य॒ज्ञम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्पा॒हि य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि य॒ज्ञँय्य॒ज्ञ-म्पा॒हि य॒ज्ञप॑तिम्। पा॒हि य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि। य॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि पा॒हि य॒ज्ञप॑तिं-

[1]. वा.प्रा.४.८७. के अनुसार ध्रुवा असदन् यहाँ ध्रुवा पद प्रकृतिभाव से रहता है। अतः सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) से दीर्घ नहीं होगा।

[2]. वा. प्रा. ४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

ऽय॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि माम्माम्पा॒हि य॒ज्ञप॑तिँऽय॒ज्ञप॑तिम्पा॒हि माम्। य॒ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। पा॒हि माम्माम्पा॒हि पा॒हि माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यँऽयज्ज्ञ॒न्युम्माम्पा॒हि पा॒हि माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यम्। माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यँऽयज्ज्ञ॒न्युम्माम्माँऽय॑ज्ज्ञ॒न्यम्। य॒ज्ज्ञ॒न्यु॒मिति॑ यज्ज्ञ॒ न्य॒म्॥६॥

अग्ग्ने॑ ब्वाजजिद्वाजजि॒दग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वाजजि॒द्वाजँ॑ब्वाजँ॑ब्वाजजि॒दग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वाजजि॒द्वाज॑म्। ब्वा॒ज॒जि॒द्वाजँ॑ब्वाजँ॑ब्वाजजिद्वाजजि॒द्वाज॑न्त्वा त्वा॒ ब्वाजँ॑ब्वाजजिद्वाजजि॒द्वाज॑न्त्वा। ब्वा॒ज॒जि॒दिति॑ वाज जित्। ब्वाज॑न्त्वा त्वा॒ ब्वाजँ॑ब्वाज॑न्त्वा सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑न्त्वा॒ ब्वाजँ॑ब्वाज॑न्त्वा सरि॒ष्ष्यन्त॑म्। त्वा॒ स॒रि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑न्त्वा त्वा सरि॒ष्ष्यन्तँ॑ब्वाज॒जित॑ँब्वाज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑न्त्वा त्वा सरि॒ष्ष्यन्तँ॑ ब्वाज॒जित॑म्। स॒रि॒ष्ष्यन्तँ॑ब्वाज॒जितँ॑ब्वाज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्तँ॑ ब्वाज॒जित॒ꣳ सꣳ सँ॑ब्वा॑ज॒जित॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्त॑ꣳ सरि॒ष्ष्यन्तँ॑ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्। ब्वा॒ज॒जित॒ꣳ सꣳ सँ॑ब्वा॑ज॒जितँ॑ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्मा॑ञ्ज्जिर्म माञ्ज्जि॒र्मु सँ॑ब्वा॑ज॒जितँ॑ ब्वाज॒जित॒ꣳ सम्मा॑ञ्ज्जिर्म । ब्वा॒ज॒जित॒मिति॑ वाज॒ जित॑म्। सम्मा॑ञ्ज्जिर्म माञ्ज्जि॒र्मु सꣳ सम्मा॑ञ्ज्जि॒र्मु नमो॒ नमो॑ माञ्ज्जि॒र्मु सꣳ सम्मा॑ञ्ज्जि॒र्मु नम॑÷[1]। मा॒ञ्ज्जि॒र्मु नमो॒ नमो॑ माञ्ज्जिर्म माञ्ज्जि॒र्मु नमो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॑ माञ्ज्जिर्म माञ्ज्जि॒र्मु नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷॥ नमो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॒ नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ स्व॒धा स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॒ नमो॒ नमो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ स्व॒धा। दे॒वेब्भ्य॑÷ स्व॒धा स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑÷ पि॒तृब्भ्य॑÷ स्व॒धा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑÷ स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑÷। स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑÷ पि॒तृब्भ्य॑÷ स्व॒धा स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑÷ सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ पि॒तृब्भ्य॑÷ स्व॒धा स्व॒धा पि॒तृब्भ्य॑÷ सु॒यमे॑। पि॒तृब्भ्य॑÷ सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ पि॒तृब्भ्य॑÷ पि॒तृब्भ्य॑÷ सु॒यमे॑ मे मे

---

[1]. वा.प्रा.२.३९. के अनुसार नमः पद आद्युदात्त होता है।

सु॒यमे॑ पि॒तृभ्य॑ः पि॒तृभ्य॑ः सु॒यमे॑ मे। पि॒तृभ्य॒ऽ इति॑ पि॒तृ भ्य॑ः[1]। सु॒यमे॑ मे मे सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ मे भूयास्तम्भूयास्तम्मे सु॒यमे॑ सु॒यमे॑ मे भूयास्तम्। सु॒यमे॒ऽ इति॑ सु॒ यमे॑। मे॒ भू॒या॒स्त॒म्भू॒या॒स्त॒म्मे॒ मे॒ भू॒या॒स्त॒मस्कं॑न्न॒मस्कं॑न्नम्भूयास्तम्मे मे भूया- स्त॒मस्कं॑न्नम्[2]। भू॒या॒स्त॒मस्कं॑न्न॒मस्कं॑न्नम्भूयास्तम्भूयास्त॒मस्कं॑न्नम॒द्याद्यास्कं॑न्न- म्भूयास्तम्भूयास्त॒मस्कं॑न्नम॒द्य॥७॥

अस्कं॑न्नम॒द्याद्यास्कं॑न्न॒मस्कं॑न्नम॒द्य दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒द्यास्कं॑न्न॒मस्कं॑न्नम॒द्य दे॒वेभ्य॑ः। अ॒द्य दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒द्याद्य दे॒वेभ्य॒ऽ आज्य॒माज्यं॑न्दे॒वेभ्यो॒द्याद्य दे॒वेभ्य॒ऽ आज्यं॑म्। दे॒वेभ्य॒ऽ आज्य॒माज्यं॑न्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ आज्य॒ꣳ सꣳ समाज्यं॑न्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ आज्य॒ꣳ सम्। आज्य॒ꣳ सꣳ समाज्य॒माज्य॒ꣳ सम्भ्रिं॑यासम्भ्रियास॒ꣳ समाज्य॒माज्य॒ꣳ सम्भ्रिं॑यासम्। सम्भ्रिं॑यासम्भ्रियास॒ꣳ सꣳ सम्भ्रिं॑यास॒मङ्ग्रि॒णाङ्गिं॑णा ब्भ्रियास॒ꣳ सꣳ सम्भ्रिं॑यास॒मङ्गिं॑णा। भ्रि॒या॒स॒मङ्ग्रि॒- णाङ्गिं॑णा ब्भ्रियासम्भ्रियास॒मङ्गिं॑णा व्विष्ण्णो व्वि॒ष्ण्णोङ्गिं॑णा ब्भ्रियासम्भ्रियास॒म- ङ्गिं॑णा व्विष्ण्णो। अङ्गिं॑णा व्विष्ण्णो व्वि॒ष्ण्णोङ्ग्रि॒णाङ्गिं॑णा व्विष्ण्णो॒ मा मा व्वि॒ष्ण्णोङ्ग्रि॒- णाङ्गिं॑णा व्विष्ण्णो॒ मा। व्वि॒ष्ण्णो॒ मा मा व्विं॑ष्ण्णो व्विष्ण्णो॒ मा त्वां॑ त्वा॒ मा व्विं॑ष्ण्णो व्विष्ण्णो॒ मा त्वां॑। व्वि॒ष्ण्णो॒ऽ इति॑ विष्ण्णो। मा त्वां॑ त्वा॒ मा मा त्वावावं॑ त्वा॒ मा मा त्वावं॑। त्वावावं॑ त्वा॒ त्वावं॑ क्क्रमिषक्क्रमिष॒मवं॑ त्वा॒ त्वावं॑ क्क्रमिषम्। अवं॑ क्क्रमि- षक्क्रमिष॒मवावं॑ क्क्रमिष॒ँव्वसुं॑मती॒व्वसुं॑मतीक्क्रमिष॒मवावं॑ क्क्रमिष॒ँव्वसुं॑मतीम्। क्र॒मि॒ष॒ँव्वसु॒- मती॒व्वसुं॑मतीक्क्रमिषक्क्रमिष॒ँव्वसुं॑मतीमग्ग्नेग्ग्ने॒ व्वसुं॑मतीक्क्रमिषक्क्रमिष॒ँव्वसुं॑मतीमग्ग्ने। व्वसुं॑मतीमग्ग्नेग्ग्ने॒ व्वसुं॑मती॒व्वसुं॑मतीमग्ग्ने ते तेग्ग्ने॒ व्वसुं॑मती॒व्वसुं॑मतीमग्ग्ने ते।[3] व्वसुं॑म-

---

[1]. वा.प्रा.१.८८. के अनुसार ऋकार सावग्रह पद के पूर्वपद के अन्त में आता है(समस्तपद के अन्त में नहीं आता है)।

[2]. वा. प्रा. २.३. के अनुसार यहाँ में पद अनुदात्त है।

[3]. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

तीमिति वसु मतीम्। अग्ने ते तेग्नेग्ने ते च्छायाञ्छायान्तेंग्नेग्ने ते च्छायाम्[1]। ते च्छायाञ्छायान्ते ते च्छायामुपोप च्छायान्ते ते च्छायामुप। छायामुपोप च्छायाञ्छायामुप स्त्थेषꣳ स्थेषमुप च्छायाञ्छायामुप स्त्थेषम्। उप स्त्थेषꣳ स्थेषमुपोप स्त्थेषँव्विष्णोर्व्विष्णो स्त्थेषमुपोप स्त्थेषँव्विष्णोः। स्थेषँव्विष्णोर्व्विष्णो स्त्थेषꣳ स्थेषँव्विष्णो स्त्थानꣳ स्थानँव्विष्णो स्त्थेषꣳ स्थेषँव्विष्णो स्त्थानम्। व्विष्णो स्त्थानꣳ स्थानँव्विष्णोर्व्विष्णो स्त्थानमस्यसि स्त्थानँव्विष्णोर्व्विष्णो स्त्थानमसि। स्थानमस्यसि स्त्थानꣳ स्थानमसीतऽ इतोसि स्त्थानꣳ स्थानमसीतः। असीतऽ इतोस्यसीतऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ इतोस्यसीतऽ इन्द्रः। इतऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ इतऽ इतऽ इन्द्रो व्वीर्य्यँव्वीर्य्यमिन्द्रऽ इतऽ इतऽ इन्द्रो व्वीर्य्यम्। इन्द्रो व्वीर्य्यँव्वीर्य्यमिन्द्रऽ इन्द्रो व्वीर्य्यमकृणोदकृणोद्वीर्य्यमिन्द्रऽ इन्द्रो व्वीर्य्यमकृणोत्। व्वीर्य्यमकृणोदकृणोद्वीर्य्यँव्वीर्य्यमकृणोदूर्द्ध्वऽ ऊर्द्ध्वोकृणोद्वीर्य्यँव्वीर्य्यमकृणोदूर्द्ध्वः। अकृणोदूर्द्ध्वऽ ऊर्द्ध्वोकृणोदकृणोदूर्द्ध्वोद्ध्वरोद्ध्वरऽ ऊर्द्ध्वोकृणोदकृणोदूर्द्ध्वोद्ध्वरः। ऊर्द्ध्वोद्ध्वरोद्ध्वरऽ ऊर्द्ध्वऽ ऊर्द्ध्वोद्ध्वरऽ आस्त्थादस्त्थादाद्ध्वरऽ ऊर्द्ध्वऽ ऊर्द्ध्वोद्ध्वरऽ आस्त्थात्। अद्ध्वरऽ आस्त्थादस्त्थादाद्ध्वरोद्ध्वरऽ आस्त्थात्। आस्त्थात्। अस्त्थादित्त्यस्त्थात्॥८॥

अग्ने व्वेर्व्वेरग्नेग्ने व्वेर्होत्रꣳ होत्रँव्वेरग्नेग्ने व्वेर्होत्रम्। व्वेर्होत्रꣳ होत्रँव्वेर्व्वेर्होत्रँव्वेर्व्वेर्होत्रँव्वेः। होत्रँव्वेर्व्वेर्होत्रꣳ होत्रँव्वेर्दूत्त्यन्दूत्त्यँव्वेरहऽओत्रꣳ होत्रँव्वेर्दूत्त्यम्। व्वेर्दूत्त्यन्दूत्त्यँव्वेर्व्वेर्दूत्त्यमवतामवतान्दूत्त्यँव्वेर्व्वेर्दूत्त्यमवताम्। दूत्त्यमवतामवतान्दूत्त्यन्दूत्त्यमवतान्त्वान्त्वामवतान्दूत्त्यन्दूत्त्यमवतान्त्वाम्। अवतान्त्वान्त्वामवतामवतान्त्वान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी त्वामवतामवतान्त्वान्द्यावापृथिवी। त्वान्द्या-

[1]. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र (वा. प्रा. ४.२५) इस सूत्र के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर सर्वत्र चकार से व्यवहित होता है।

वा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वान्त्वान्द्यावा॑पृथि॒वीऽ अवाव॒ द्यावा॑पृथि॒वी त्वान्त्वान्द्या-वा॑पृथि॒वीऽ अव॑। द्यावा॑पृथि॒वीऽ अवाव॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अव॒ त्वन्त्वमव॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अव॒ त्वम्। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। अव॒ त्वन्त्वमवाव॒ त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वमवाव॒ त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी। त्वन्द्या-वा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी त्वन्त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्टकृ॒त्स्वि॑ष्टकृ॒द्द्यावा॑पृथि॒वी त्व-न्त्वन्द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्टकृ॒त्। द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्टकृ॒त्स्वि॑ष्टकृ॒द्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑-पृथि॒वी स्वि॑ष्टकृ॒द्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः स्विष्टकृ॒द्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी स्वि॑ष्टकृ॒द्दे॒वे-भ्य॑ः। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। स्वि॒ष्टकृ॒द्दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः स्विष्टकृ॒-त्स्वि॑ष्टकृ॒द्दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ दे॒वेभ्य॑ः स्विष्टकृ॒त्स्वि॑ष्टकृ॒द्दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॑ः[1]। स्वि॒ष्टकृ॒दिति॑ स्वि॒ष्ट कृ॒त्। दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ये॒नाज्ये॒नेन्द्रो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ये॑न। इन्द्र॒ऽ आज्ये॒नाज्ये॒ने-न्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ये॑न ह॒विषा॑ ह॒विषाज्ये॒नेन्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आज्ये॑न ह॒विषा॑। आज्ये॑न ह॒विषा॑ ह॒विषाज्ये॒नाज्ये॑न ह॒विषा॑ भूद् भूद्ध॒विषाज्ये॒नाज्ये॑न ह॒विषा॑ भूत्।[2] ह॒विषा॑ भूद् भूद्ध॒विषा॑ ह॒विषा॑ भू॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ भूद्ध॒विषा॑ ह॒विषा॑ भू॒त्स्वाहा॑। भू॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ भूद् भू॒त्स्वाहा॒ सꣳ सꣳ स्वाहा॑ भूद् भू॒त्स्वाहा॒ सम्। स्वाहा॒ सꣳ सꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑षा॒ सꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सञ्ज्योति॑-षा। सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑षा॒ सꣳ सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑षा॒ सꣳ

[1]. देवेभ्यः इन्द्रः यहाँ पर कण्ठ्यपूर्वो यकारमरिफितः (वा. प्रा. ४.३८) इस सूत्र से देवेभ्यः का विसर्ग यकार हो गया। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः (वा. प्रा. ४.१२७) इस सूत्र से यकार का लोप हुआ। न परकालः पूर्वकाले पुनः (वा. प्रा. ३.४) इस सूत्र से यहाँ गुण सन्धि का निषेध हुआ।

[2]. भूत हविषा यहाँ ह्श्च तस्मात्पूर्वचतुर्थम्(वा.प्रा.४.१२४) के अनुसार हकार पूर्ववर्ती वर्ण का चतुर्थ होता है। वा.प्रा.४.१२०. के अनुसार तकार का दकार विहित है। वा.प्रा.३.३. के अनुसार सन्धिकार्य पदान्त तथा पदादि में होता है। ह्श्च तस्मात्पूर्वचतुर्थम् ज्यो.२११. में इसी सूत्र से दकार तथा धकार होना बताया गया है।

सञ्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑ः। ज्योति॑षा॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑षा॒ ज्योति॑ः। ज्योति॒रिति॒ ज्योति॑ः॥९॥

मयी॒दमि॒दम्मयि॒ मयी॒दमिन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इ॒दम्मयि॒ मयी॒दमिन्द्र॑ः। इ॒दमिन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इ॒दमि॒दमिन्द्र॑ऽ इन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमिन्द्र॑ऽ इ॒दमि॒दमिन्द्र॑ऽ इन्द्रि॒यम्। इन्द्र॑ऽ इन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमिन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इन्द्रि॒यन्द॑धातु दधात्विन्द्रि॒यमिन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ऽ इन्द्रि॒य-न्द॑धातु। इ॒न्द्रि॒यन्द॑धातु दधात्विन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्द॑धात्व॒स्म्मान॒स्म्मान्द॑धात्वि-न्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्द॑धात्व॒स्म्मान्। द॒धा॒त्व॒स्म्मान॒स्म्मान्द॑धातु दधात्व॒स्म्मान्रायो॒ रायो॒स्म्मान्द॑धातु दधात्व॒स्म्मान्राय॑ः।[1] अ॒स्म्मान्रायो॒ रायो॒स्म्मान॒स्म्मान्रायो॑ म॒घवा॑नो म॒घवा॑नो॒ रायो॒स्म्मान॒स्म्मान्रायो॑ म॒घवा॑नः। रायो॑ म॒घवा॑नो म॒घवा॑नो॒ रायो॒ रायो॑ म॒घवा॑नः सचन्ताꣳ सचन्ताम्म॒घवा॑नो॒ रायो॒ रायो॑ म॒घवा॑नः सच-न्ताम्।[2] म॒घवा॑नः सचन्ताꣳ सचन्ताम्म॒घवा॑नो म॒घवा॑नः सचन्ताम॒स्म्माक॑-म॒स्म्माक॑ꣳ सचन्ताम्म॒घवा॑नो म॒घवा॑नः सचन्ताम॒स्म्माक॑म्। म॒घवा॑न॒ऽ इति॑ म॒घ ब्वा॑नः। स॒च॒न्ता॒म॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑ꣳ सचन्ताꣳ सचन्ताम॒स्म्माक॑ꣳ सन्तु सन्त्व॒स्म्माक॑ꣳ सचन्ताꣳ सचन्ताम॒स्म्माक॑ꣳ सन्तु॥ अ॒स्म्माक॑ꣳ सन्तु सन्त्व॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑ꣳ सन्त्वा॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः सन्त्व॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑ꣳ सन्त्वा॒शिष॑ः। स॒न्त्वा॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः सन्तु सन्त्वा॒शिष॑ः स॒त्याः स॒त्याऽ आ॒शिष॑ः सन्तु सन्त्वा॒शिष॑ः स॒त्याः। आ॒शिष॑ः स॒त्याः स॒त्याऽ आ॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः स॒त्या नो॑ नः स॒त्याऽ आ॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः स॒त्या न॑ः।[3] आ॒शिष॒ऽ इत्या॒ शिष॑ः। स॒त्या नो॑ नः स॒त्याः स॒त्या न॑ः सन्तु सन्तु नः स॒त्याः स॒त्या

[1]. वा.प्रा.२.४२. के अनुसार यहाँ रायः पद आद्युदात्त है।

[2]. मघवानः सचन्ताम् यहाँ वा.प्रा.४.११६. के अनुसार विसर्जनीय के द्वित्व का निषेध है।

[3]. सत्याः नः यहाँ लोपं धौ(वा.प्रा.४.३९) इश सूत्र से धि संज्ञक व्यञ्जन परे होने पर अरिफित कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है। वा.प्रा.१.५३. के अनुसार नकार धिसंज्ञक है।

न॑ः सन्तु। न॒ः स॒न्तु॒ स॒न्तु॒ नो॒ न॒ः स॒न्त्वा॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः सन्तु नो नः सन्त्वा॒शिष॑ः। स॒न्त्वा॒शिष॑ऽ आ॒शिष॑ः सन्तु सन्त्वा॒शिष॒ऽ उप॑हू॒तोप॑हूता॒शिष॑ः सन्तु सन्त्वा॒शिष॒ऽ उप॑हूता। आ॒शिष॒ऽ उप॑हू॒तोप॑हूता॒शिष॑ऽ आ॒शिष॒ऽ उप॑हूता पृथि॒वी पृ॑थि॒व्युप॑हूता॒शिष॑ऽ आ॒शिष॒ऽ उप॑हूता पृथि॒वी। आ॒शिष॒ऽ इत्या॒ शिष॑ः। उप॑हूता पृथि॒वी पृ॑थि॒व्युप॑हू॒तोप॑हूता पृथि॒वी मा॒ता मा॒ता पृ॑थि॒व्युप॑हू॒तोप॑हूता पृथि॒वी मा॒ता। उप॑हू॒तेत्युप॑ हूता। पृ॒थि॒वी मा॒ता मा॒ता पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी मा॒तोपोप॑ मा॒ता पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी मा॒तोप॑। मा॒तोपोप॑ मा॒ता मा॒तोप॒ माम्मामुप॑ मा॒ता मा॒तोप॒ माम्। उप॒ माम्मामुपोप॒ माम्पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी मामुपोप॒ माम्पृ॑थि॒वी। माम्पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी माम्माम्पृ॑थि॒वी मा॒ता मा॒ता पृ॑थि॒वी माम्माम्पृ॑थि॒वी मा॒ता। पृ॒थि॒वी मा॒ता मा॒ता पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी मा॒ता ह्व॑यता॑ँ ह्वयताम्मा॒ता पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी मा॒ता ह्व॑यताम्। मा॒ता ह्व॑यता॑ँ ह्वयताम्मा॒ता मा॒ता ह्व॑यताम॒ग्निर॒ग्निर्ह्व॑यताम्मा॒ता मा॒ता ह्व॑यता-म॒ग्निः। ह्व॒य॒ता॒म॒ग्निर॒ग्निर्ह्व॑यता॑ँ ह्वयताम॒ग्निराग्नी॑ध्रा॒दाग्नी॑ध्राद॒ग्निर्ह्व॑यता॑ँ ह्वयताम॒ग्निराग्नी॑ध्रात्[1]। अ॒ग्निराग्नी॑ध्रा॒दाग्नी॑ध्राद॒ग्निर॒ग्निराग्नी॑ध्रा॒त्स्वाहा॒ स्वाहाग्नी॑ध्राद॒ग्निर॒ग्निराग्नी॑ध्रा॒त्स्वाहा॑। आग्नी॑ध्रा॒त्स्वाहा॒ स्वाहाग्नी॑ध्रा॒दाग्नी॑-ध्रा॒त्स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१०॥

उप॑हूतो॒ द्यौर्द्यौरुप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो॒ द्यौष्पि॒ता पि॒ता द्यौरुप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो॒ द्यौष्पि॒ता।[2] उप॑हूत॒ऽ इत्युप॑ हूतः। द्यौष्पि॒ता पि॒ता द्यौर्द्यौष्पि॒तोपोप॑ पि॒ता द्यौर्द्यौष्पि॒तोप॑। पि॒तोपोप॑ पि॒ता पि॒तोप॒ माम्मामुप॑ पि॒ता पि॒तोप॒ माम्। उप॒ माम्मामुपोप॒ मान्द्यौर्द्यौर्म्मामुपोप॒ मान्द्यौः। मान्द्यौर्द्यौर्म्माम्मान्द्यौष्पि॒ता पि॒ता

[1]. ह्वयता॑ँ ह्वयताम् यहाँ अनुस्वार से परे होने के कारण द्वितीय ह्वयताम् के वकार का द्वित्व नहीं होगा। परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होगी। इस सूत्र के भाष्यकार अनन्त ने स्वर परे रहने पर ही इस सूत्र से द्विरुक्ति होना बताया है। वा. प्रा. ८.२१.के अनुसार अनुस्वार स्वरों में परिगणित नहीं है। इसी प्रकार अग्निर्ह्वयताम् में भी वकार द्वित्व नहीं होगा।

[2]. द्यौः पिता यहाँ वा.प्रा.३.३४. के अनुसार विसर्जनीय षकार होता है।

द्यौर्म्मामान्द्यौष्प्पिता। द्यौष्प्पिता पिता द्यौर्द्यौष्प्पिता ह्वयताꣳ ह्वयताम्पिता द्यौर्द्यौष्प्पिता ह्वयताम्। पिता ह्वयताꣳ ह्वयताम्पिता पिता ह्वयताम्ग्निरग्निर्ह्वयताम्पिता पिता ह्वयताम्ग्निः। ह्वयताम्ग्निरग्निर्ह्वयताꣳ ह्वयताम्ग्निराग्नीध्राादाग्नीध्रादग्निर्ह्वयताꣳ ह्वयताम्ग्निराग्नीध्रात्। अग्निराग्नीध्रादाग्नीध्रादग्निरग्निराग्नीध्रात्स्वाहा स्वाहाग्नीध्रादग्निरग्निराग्नीध्रात्स्वाहा। आग्नीध्रात्स्वाहा स्वाहाग्नीध्रादाग्नीध्रात्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ प्रति गृह्णामि गृह्णामि प्प्रति प्प्रति गृह्णाम्म्यग्नेरग्नेर्गृह्णामि प्प्रति प्प्रति गृह्णाम्म्यग्नेः। गृह्णाम्म्यग्नेरग्नेर्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्नेष्ट्वा त्वाग्नेर्गृह्णामि गृह्णाम्म्यग्नेष्ट्वा। अग्नेष्ट्वा त्वाग्नेरग्नेष्ट्वास्स्येनास्स्येन त्वाग्नेरग्नेष्ट्वास्स्येन। त्वास्स्येनास्स्येन त्वा त्वास्स्येन प्प्र प्प्रास्स्येन त्वा त्वास्स्येन प्प्र। आस्स्येन प्प्र प्प्रास्स्येनास्स्येन प्प्राश्नाम्म्यश्नामि प्प्रास्स्येनास्स्येन प्प्राश्नामि। प्राश्नाम्म्यश्नामि प्प्र प्प्राश्नाम्म्येतमेतमश्नामि प्प्र प्प्राश्नाम्म्येतम्। अश्नाम्म्येतमेतमश्नाम्म्यश्नाम्म्येतन्ते तऽ एतमश्नाम्म्यश्नाम्म्येतन्ते॥११॥

एतन्ते तऽ एतमेतन्ते देव देव तऽ एतमेतन्ते देव। ते देव देव ते ते देव सवितः सवितर्द्देव ते ते देव सवितः। देव सवितः सवितर्द्देव देव सवितर्य्यज्ञँय्यज्ञꣳ सवितर्द्देव देव सवितर्य्यज्ञम्[1]। सवितर्य्यज्ञँय्यज्ञꣳ सवितः सवितर्य्यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञꣳ सवितः सवितर्य्यज्ञम्प्र। यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञँय्यज्ञम्प्राहुराहुः प्प्र यज्ञँय्यज्ञम्प्राहुः। प्राहुराहुः प्प्र प्प्राहुर्बृहस्पतये बृहस्पतयऽ आहुः प्प्र प्प्राहुर्बृहस्पतये।[2] आहुर्बृहस्पतये बृहस्पतयऽ आहुराहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ब्रह्मणे बृहस्पतयऽ आहुराहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। बृहस्पतये ब्रह्मणे ब्रह्मणे बृहस्पतये बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन तेन ब्रह्मणे बृहस्पतये बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन।

1. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार सवितः पद रिफित संज्ञक है।

ब्र॒ह्मणे॒ तेन॒ तेन॑ ब्र॒ह्मणे॑ ब्र॒ह्मणे॒ तेन॑ य॒ज्ञँऽय॒ज्ञन्तेन॑ ब्र॒ह्मणे॑ ब्र॒ह्मणे॒ तेन॑ य॒ज्ञम्॥
तेन॑ य॒ज्ञँऽय॒ज्ञन्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञम॑वाव य॒ज्ञन्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञम॑व। य॒ज्ञम॑वाव
य॒ज्ञँऽय॒ज्ञम॑व॒ तेन॒ तेना॑व य॒ज्ञँऽय॒ज्ञम॑व॒ तेन॑। अ॒व॒ तेन॒ तेना॑वाव॒ तेन॑ य॒ज्ञ-
प॑तिँऽय॒ज्ञप॑ति॒न्तेना॑वाव॒ तेन॑ य॒ज्ञप॑तिम्। तेन॑ य॒ज्ञप॑तिँऽय॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ तेन॑
य॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॑। य॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ तेन॑
य॒ज्ञप॑तिँऽय॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ माम्मान्तेन॑ य॒ज्ञप॑तिँऽय॒ज्ञप॑ति॒न्तेन॒ माम्। य॒ज्ञ-
प॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। तेन॒ माम्मान्तेन॒ तेन॒ माम॑वाव॒ मान्तेन॒ तेन॒ माम॑व।
माम॑वाव॒ माम्माम॑व। अ॒वेत्त्य॑व॥१२॥

मनो॑ जू॒तिर्ज्जू॒तिर्म्मनो॒ मनो॑ जू॒तिर्ज्जु॑षताञ्जुषताञ्जू॒तिर्म्मनो॒ मनो॑ जू॒तिर्ज्जु॑-
षताम्। जू॒तिर्ज्जु॑षताञ्जुषताञ्जू॒तिर्ज्जू॒तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॒स्याज्ज्य॑स्य जुषताञ्जू॒तिर्ज्जू॒-
तिर्ज्जु॑षता॒माज्ज्य॑स्य। जु॒ष॒ता॒माज्ज्य॒स्याज्ज्य॑स्य जुषताञ्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्प-
ति॒र्बृह॒स्प्पति॒राज्ज्य॑स्य जुषताञ्जुषता॒माज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्पति॑÷। आज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्प-
ति॒र्बृह॒स्प्पति॒राज्ज्य॒स्याज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ञँऽय॒ज्ञम्बृह॒स्प्पति॒राज्ज्य॒स्या-
ज्ज्य॑स्य॒ बृह॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ञम्। बृह॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ञँऽय॒ज्ञम्बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ऽर्य॒-
ज्ञमि॒मम्मि॒मँऽय॒ज्ञम्बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ञमि॒मम्। य॒ज्ञमि॒मम्मि॒मँऽय॒ज्ञँ-
ऽय॒ज्ञमि॒मन्त॑नोतु तनो॑त्त्वि॒मँऽय॒ज्ञँऽय॒ज्ञमि॒मन्त॑नोतु। इ॒मन्त॑नोतु तनो॑त्त्वि॒म-
मि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्ट॒मरि॑ष्टन्तनो॑त्त्वि॒ममि॒मन्त॑नो॒त्त्वरि॑ष्टम्। त॒नो॒त्त्वरि॑ष्ट॒मरि॑ष्टन्तनोतु
तनो॒त्त्वरि॑ष्टँऽय॒ज्ञँऽय॒ज्ञमरि॑ष्टन्तनोतु तनो॒त्त्वरि॑ष्टँऽय॒ज्ञम्। अरि॑ष्टँऽय॒ज्ञँऽय॒-
ज्ञमरि॑ष्ट॒मरि॑ष्टँऽय॒ज्ञꣳ सꣳ सँऽय॒ज्ञमरि॑ष्ट॒मरि॑ष्टँऽय॒ज्ञꣳ सम्। य॒ज्ञꣳ सꣳ
सँऽय॒ज्ञँऽय॒ज्ञꣳ समि॒मम्मि॒मꣳ सँऽय॒ज्ञँऽय॒ज्ञꣳ समि॒मम्। समि॒मम्मि॒मꣳ सꣳ

---

[2]. आहुः बृहस्पतये यहाँ रेफं स्वरधौ(वा.प्रा.४.३७) से विसर्जनीय रेफ होता है। परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से बकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से द्वित्व का निषेध है।

स॒मि॒मन्दं॑धातु दधात्त्वि॒मꣳ सꣳ स॒मि॒मन्दं॑धातु। इ॒मन्दं॑धातु दधात्त्वि॒मम्मि॒मन्दं॑-धातु। द॒धा॒त्त्विति॑ दधातु॥ व्विश्वे॑ दे॒वासो॑ दे॒वासो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ दे॒वास॑ऽ इ॒हेह दे॒वासो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह। दे॒वास॑ऽ इ॒हेह दे॒वासो॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह मा॑दयन्ताम्मादयन्ता-मि॒ह दे॒वासो॑ दे॒वास॑ऽ इ॒ह मा॑दयन्ताम्। इ॒ह मा॑दयन्ताम्मादयन्तामि॒हेह मा॑दय-न्ता॒मो३मो३म्मा॑दयन्तामि॒हेह मा॑दयन्ता॒मो३म्। मा॒द॒य॒न्ता॒मो३मो३म्मा॑दयन्ता-म्मादयन्ता॒मो३म्प्र प्प्रो३म्मा॑दयन्ताम्मादयन्ता॒मो३म्प्र[1]। ओ३म्प्र प्प्रो३मो३म्प्र तिं॑ष्ठ तिष्ठ॒ प्प्रो३मो३म्प्र तिं॑ष्ठ। प्र तिं॑ष्ठ तिष्ठ॒ प्प्र प्प्र तिं॑ष्ठ। ति॒ष्ठेति॑ तिष्ठ॥१३॥

ए॒षा ते॑ तऽ ए॒षैषा ते॑ऽ अग्ग्नेग्ग्ने तऽ ए॒षैषा ते॑ऽ अग्ग्ने। ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒ ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ सु॒मित्त्सु॒मिदं॑ग्ग्ने ते तेऽ अग्ग्ने सु॒मित्। अ॒ग्ग्ने॒ सु॒मित्त्सु॒मिदं॑ग्ग्नेग्ग्ने सु॒मित्तया॒ तया॑ सु॒मिदं॑ग्ग्नेग्ग्ने सु॒मित्तया॑। सु॒मित्तया॒ तया॑ सु॒मित्त्सु॒मित्तया॒ व्वर्द्धं॑स्व व्वर्द्धं॑स्व॒ तया॑ सु॒मित्त्सु॒मित्तया॒ व्वर्द्धं॑स्व। सु॒मिदिति॑ स॒म् इत्। तया॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ तया॒ तया॒ व्वर्द्धं॑स्व च च॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ तया॒ तया॒ व्वर्द्धं॑स्व च। व्वर्द्धं॑स्व च च॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ चा च॒ चा च॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ व्वर्द्धं॑स्व॒ चा च॑। चा च॒ चा च॒ चा च॑ प्प्यायस्व प्प्यायस्व॒ चा च॒ चा च॑ प्प्यायस्व। आ च॑। च॒ प्प्या॒य॒स्व॒ प्प्या॒य॒स्व॒ च॒ च॒ प्प्या॒य॒स्व॒। प्प्या॒य॒स्वेति॑ प्प्यायस्व॥ व्व॒र्द्धि॒षी॒महिं॑ च च व्वर्द्धि॒षी॒महिं॑ व्वर्द्धि॒षी॒महिं॑ च व्व॒यँव्व॒यञ्च॑ व्वर्द्धि॒षी॒महिं व्वर्द्धि॒षी॒महिं॑ च व्व॒यम्। च॒ व्व॒यँव्व॒यञ्च॑ च व्व॒यमा च॒ चा व॒यञ्च॑ च व्व॒यमा च॑। व्व॒यमा च॒ चा व॒यँव्व॒यमा च॑ प्प्यासिषीमहि प्प्यासिषीमहि॒ चा व॒यँव्व॒यमा च॑ प्प्यासिषीमहि। आ च॑। च॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒ च॒ च॒ प्प्या॒सि॒षी॒म॒हि॒। प्प्या॒सि॒षी॒म॒हीति॑

---

[1]. वा. प्रा. २.५१. के अनुसार प्रणव सर्वोदात्त एवं तीन मात्राओं का होता है। प्र ओ३म् की सन्धि में सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र से अ परवर्ती ओ३ के साथ औ नहीं होगा। इस सम्बन्ध में ज्यो. वृ. पृ.२२९ का विशेष वचन इस प्रकार है- सपूर्वाकार ओङ्कारः प्रयात्योम्भावमत्र हि॥८॥ पूर्वेण अकारेण सहित ॐ शब्दो जटायाम् ओम्भावं प्रयाति। यथा- ओम्प्रप्पोमोम्प्र०(पद २।१३ सं.२।१३ जटा) अत्र ओमाङोश्च(पा.६।१।९५) इत्यनेन पररूपत्वम्।

प्प्यासिषीमहि॥ ससुवाꣳसँव्वाजजितँव्वाजजितꣳ ससुवाꣳसꣳ ससुवाꣳसँव्वाज-
जितम्। ससुवाꣳसमिति ससु व्वाꣳसम्। व्वाजजितमिति वाज जितम्॥१४॥

अग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमुज्जितिमग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमन्न्वनूज्जि-
तिमग्ग्नीषोमयोरग्ग्नीषोमयोरुज्जितिमनु[1]। उज्जितिमन्न्वनूज्जितिमुज्जितिमनूदुद-
न्न्वनूज्जितिमुज्जितिमनूत्। उज्जितिमित्त्युत् जितिम्। अनूदुदन्न्वनूज्जेषञ्जेषमुद-
न्न्वनूज्जेषम्[2]। उज्जेषञ्जेषमुदुज्जेषँव्वाजस्य व्वाजस्य जेषमुदुज्जेषँव्वाजस्य। जेषँ-
व्वाजस्य व्वाजस्य जेषञ्जेषँव्वाजस्य मा मा व्वाजस्य जेषञ्जेषँव्वाजस्य मा। व्वाजस्य
मा मा व्वाजस्य व्वाजस्य मा प्प्रसवेन प्प्रसवेन मा व्वाजस्य व्वाजस्य मा प्प्रसवेन।
मा प्प्रसवेन प्प्रसवेन मा मा प्प्रसवेन प्प्र प्प्र प्प्रसवेन मा मा प्प्रसवेन प्प्र। प्रसवेन
प्प्र प्प्र प्प्रसवेन प्प्रसवेन प्प्रोहाम्म्यूहामि प्प्र प्प्रसवेन प्प्रसवेन प्प्रोहामि। प्रसवे-
नेति प्प्र सवेन। प्रोहाम्म्यूहामि प्प्र प्प्रोहाम्म्यग्ग्नीषोमाव्वग्ग्नीषोमाऽ ऊहामि प्प्र
प्प्रोहाम्म्यग्ग्नीषोमौ। ऊहाम्म्यग्ग्नीषोमाव्वग्ग्नीषोमाऽ ऊहाम्म्यूहाम्म्यग्ग्नीषोमौ
तन्तमग्ग्नीषोमाऽ ऊहाम्म्यूहाम्म्यग्ग्नीषोमौ तम्॥ अग्ग्नीषोमौ तन्तमग्ग्नीषोमा-
व्वग्ग्नीषोमौ तमपाप तमग्ग्नीषोमाव्वग्ग्नीषोमौ तमप। तमपाप तन्तमप नुदतान्नुद-
तामप तन्तमप नुदताम्। अप नुदतान्नुदतामपाप नुदताँव्वाजस्य व्वाजस्य नुदता-
मपाप नुदताँव्वाजस्य। नुदताँव्वाजस्य व्वाजस्य नुदतान्नुदताँव्वाजस्यैनमेनँव्वाजस्य
नुदतान्नुदताँव्वाजस्यैनम्। व्वाजस्यैनमेनँव्वाजस्य व्वाजस्यैनम्प्रसवेन प्प्रसवेनैनँ-
व्वाजस्य व्वाजस्यैनम्प्रसवेन। एनम्प्रसवेन प्प्रसवेनैनमेनम्प्रसवेनापाप प्प्रसवेनै-
नमेनम्प्रसवेनाप। प्रसवेनापाप प्प्रसवेन प्प्रसवेनापोहाम्म्यूहाम्म्यप प्प्रसवेन
प्प्रसवेनापोहामि। प्रसवेनेति प्प्र सवेन। अपोहाम्म्यूहाम्म्यपापोहामीन्द्राग्ग्न्यो-

---

1. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार आमन्त्रित न होने से अग्नीषोमयोः यह पद द्विरुदात्त है।

2. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार उज्जेषम् बाद में होने के कारण यहाँ अनु पद अनुदात्त नहीं है।

रिन्द्राग्न्योरूहाम्म्यपापोहामीन्द्राग्न्योः। ऊहामीन्द्राग्न्योरिन्द्राग्न्योरूहाम्म्यूहामीन्द्राग्न्योरिन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्न्योरूहाम्म्यूहामीन्द्राग्न्योरिन्द्राग्नी[1]॥ इन्द्राग्न्योरिन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्न्योरिन्द्राग्न्योरिन्द्राग्नी व्वसुब्भ्यो व्वसुब्भ्यऽ इन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्न्योरिन्द्राग्न्योरिन्द्राग्नी व्वसुब्भ्यः॥ इन्द्राग्नी व्वसुब्भ्यो व्वसुब्भ्यऽ इन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नी व्वसुब्भ्यस्त्वा त्वा व्वसुब्भ्यऽ इन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नी व्वसुब्भ्यस्त्वा। इन्द्राग्नीऽ इतीन्द्राग्नी॥१५॥

व्वसुब्भ्यस्त्वा त्वा व्वसुब्भ्यो व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यो रुद्रेब्भ्यस्त्वा व्वसुब्भ्यो व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यः। व्वसुब्भ्यऽ इति वसु भ्यः। त्वा रुद्रेब्भ्यो रुद्रेब्भ्यस्त्वा त्वा रुद्रेब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यो रुद्रेब्भ्यस्त्वा त्वा रुद्रेब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यः। रुद्रेब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यो रुद्रेब्भ्यो रुद्रेब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यः सꣳ समादित्येब्भ्यो रुद्रेब्भ्यो रुद्रेब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यः सम्। आदित्येब्भ्यः सꣳ समादित्येब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यः सञ्ज्ञानाथाञ्ज्ञानाथाꣳ समादित्येब्भ्यऽ आदित्येब्भ्यः सञ्ज्ञानाथाम्। सञ्ज्ञानाथाञ्ज्ञानाथाꣳ सꣳ संज्ञानाथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी जानाथाꣳ सꣳ सञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी। जानाथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी जानाथाञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ द्यावापृथिवी जानाथाञ्ज्ञानाथान्द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ[2]। द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा त्वा मित्रावरुणौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। मित्रावरुणौ त्वा त्वा मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ त्वा व्वृष्ट्या व्वृष्ट्या त्वा मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ त्वा

---

[1]. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार इन्द्राग्नी का नकार प्रकृति भाव से रहता है। वा.प्रा.२.५५. के अनुसार इन्द्राग्न्योः तथा इन्द्राग्नी पद अन्तोदात्त हैं।

[2]. वा.प्रा.२.४८. के अनुसार यहाँ मित्रावरुणौ पद द्विरुदात्त है।

ब्वृष्ट्या॑। त्वा॒ ब्वृष्ट्या॒ ब्वृष्ट्या॑ त्वा त्वा॒ ब्वृष्ट्या॑वतामवताँ॒ब्वृष्ट्या॑ त्वा त्वा॒ ब्वृष्ट्या॑वताम्। ब्वृष्ट्या॑वतामवताँ॒ब्वृष्ट्या॒ ब्वृष्ट्या॑वताँ॒ब्व्यन्तु॒ ब्व्यन्त्व॑वताँ॒ब्वृष्ट्या॒ ब्वृष्ट्या॑वताँ॒ब्व्यन्तु॒। अ॒व॒-ताँ॒ब्व्यन्तु॒ ब्व्यन्त्व॑वतामवताँ॒ब्व्यन्तु॒ ब्वयो॒ ब्वयो॒ ब्व्यन्त्व॑वतामवताँ॒ब्व्यन्तु॒ ब्वय॑÷ ॥ ब्व्यन्तु॒ ब्वयो॒ ब्वयो॒ ब्व्यन्तु॒ ब्व्यन्तु॒ ब्वयो॒क्तम॒क्तँब्वयो॒ ब्व्यन्तु॒ ब्व्यन्तु॒ ब्वयो॒क्तम्[1]। ब्वयो॒क्तम॒क्तँब्वयो॒ ब्वयो॒क्तꣳ रिहा॑णा॒ रिहा॑णाऽ अ॒क्तँब्वयो॒ ब्वयो॒क्तꣳ रिहा॑णाः। अ॒क्तꣳ रिहा॑णा॒ रिहा॑-णाऽ अ॒क्तम॒क्तꣳ रिहा॑णा म॒रुता॑म्म॒रुता॒ꣳ रिहा॑णाऽ अ॒क्तम॒क्तꣳ रिहा॑णा म॒रुता॑म् । रिहा॑णा म॒रुता॑म्म॒रुता॒ꣳ रिहा॑णा॒ रिहा॑णा म॒रुता॒म्पृष॑ती॒ः पृष॑तीर्म्म॒रुता॒ꣳ रिहा॑णा॒ रिहा॑णा म॒रुता॒म्पृष॑तीः। म॒रुता॒म्पृष॑ती॒ः पृष॑तीर्म्म॒रुता॑म्म॒रुता॒म्पृष॑ती-र्ग्गच्छ गच्छ॒ पृष॑तीर्म्म॒रुता॑म्म॒रुता॒म्पृष॑तीर्ग्गच्छ। पृष॑तीर्ग्गच्छ गच्छ॒ पृष॑ती॒ः पृष॑तीर्ग्गच्छ ब्व॒शा ब्व॒शा ग॑च्छ॒ पृष॑ती॒ः पृष॑तीर्ग्गच्छ ब्व॒शा। ग॒च्छ॒ ब्व॒शा ब्व॒शा ग॑च्छ गच्छ ब्व॒शा पृश्नि॒ः पृश्नि॑र्ब्व॒शा ग॑च्छ गच्छ ब्व॒शा पृश्नि॑÷। ब्व॒शा पृश्नि॒ः पृश्नि॑र्ब्व॒शा ब्व॒शा पृश्नि॑र्भू॒त्वा भू॒त्वा पृश्नि॑र्ब्व॒शा ब्व॒शा पृश्नि॑र्भू॒त्वा। पृश्नि॑र्भू॒त्वा भू॒त्वा पृश्नि॒ः पृश्नि॑र्भू॒त्वा दि॒वन्दिव॑म्भू॒त्वा पृश्नि॒ः पृश्नि॑र्भू॒त्वा दिव॑म्। भू॒त्वा दि॒वन्दिव॑म्भू॒त्वा भू॒त्वा दिव॑ङ्गच्छ गच्छ॒ दिव॑म्भू॒त्वा भू॒त्वा दिव॑ङ्गच्छ। दिव॑ङ्गच्छ गच्छ॒ दि॒वन्दिव॑ङ्गच्छ॒ त॒तस्तत॑ गच्छ॒ दि॒वन्दिव॑ङ्गच्छ॒ तत॑÷। ग॒च्छ॒ त॒तस्तत॑ गच्छ गच्छ॒ तत॑ नो न॒स्तत॑ गच्छ गच्छ॒ तत॑ नः[2]। तत॑ नो न॒स्तत॒स्तत॑ नो॒ ब्वृष्टिं॒ब्वृष्टिं॑न्न॒स्तत॒स्तत॑ नो॒ ब्वृष्टि॑म्। नो॒ ब्वृष्टिं॒ब्वृष्टिं॑न्नो नो॒ ब्वृष्टि॒मा व॑ह ब्व॒हा वृष्टिं॑न्नो नो॒ ब्वृष्टि॒मा व॑ह। ब्वृष्टि॒मा व॑ह ब्व॒हा वृष्टिं॒ब्वृष्टि॒मा व॑ह। आ व॑ह। ब्व॒हेति॑ वह॥ च॒क्षु॒ष्पाऽ अ॑ग्नेग्ग्ने चक्षु॒ःपाश्च॑क्षु॒ष्पाऽ अ॑ग्नेस्यस्यग्ग्ने चक्षु॒ःपाश्च॑क्षु॒ष्पाऽ अ॑ग्नेसि।

---

1. अनुदात्तमाख्यातमामन्त्रितवत् (वा. प्रा. ६.१) इस सूत्र के अनुसार संबोधन पद की भाँति क्रिया पद भी अनुदात्त होता है। जिन कारणों से संबोधन पद अनुदात्त होता है, उन्हीं कारणों से क्रिया पद भी अनुदात्त होता है। वा. प्रा (२.१७) के अनुसार संबोधन पद का आद्युदात्तत्व भी निर्देशित है। वही नियम यहाँ भी लगने पर ब्यन्तु पद आद्युदात्त हो जाएगा।

2 . नो नौ मे मदर्थे त्रिष्वेकेषु(वा.प्रा. २. ३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ नः पद अनुदात्त है।

चक्षुःपाऽ इतिं चक्षुः पाः। अग्नेस्यस्यग्नेग्नेसि चक्षुश्चक्षुंरस्यग्नेग्नेसि चक्षुं÷। असि चक्षुश्चक्षुंरस्यसि चक्षुंर्म्मे मे चक्षुंरस्यसि चक्षुंर्म्मे। चक्षुंर्म्मे मे चक्षुश्चक्षुंर्म्मे पाहि पाहि मे चक्षुश्चक्षुंर्म्मे पाहि। मे पाहि पाहि मे मे पाहि। पाहीतिं पाहि॥१६॥

यम्पंरिधिम्पंरिधिंॅव्यंॅव्यम्पंरिधिम्पुर्व्यधंत्थाः पुर्व्यधंत्थाः परिधिंॅव्यंॅव्यम्पंरिधिम्पुर्व्यधंत्थाः। परिधिम्पुर्व्यधंत्थाः पुर्व्यधंत्थाः परिधिम्पंरिधिम्पुर्व्यधंत्थाऽ अग्ग्नेग्ग्नें पुर्व्यधंत्थाः परिधिम्पंरिधिम्पुर्व्यधंत्थाऽ अग्ग्नें। परिधिमितिं परिधिम्। पुर्व्यधंत्थाऽ अग्ग्नेग्ग्नें पुर्व्यधंत्थाः पुर्व्यधंत्थाऽ अग्ग्नें देव देवाग्ग्नें पुर्व्यधंत्थाः पुर्व्यधंत्थाऽ अग्ग्नें देव। पुर्व्यधंत्थाऽ इतिं परि अधंत्थाः। अग्ग्नें देव देवाग्ग्नेग्ग्नें देव पुणिभिं÷ पुणिभिर्द्देवाग्ग्नेग्ग्नें देव पुणिभिं÷। देव पुणिभिं÷ पुणिभिर्द्देव देव पुणिभिंर्ग्गुह्यमांनो गुह्यमांनः पुणिभिर्द्देव देव पुणिभिंर्ग्गुह्यमांनः। पुणिभिंर्ग्गुह्यमांनो गुह्यमांनः पुणिभिं÷ पुणिभिंर्ग्गुह्यमांनः। पुणिभिरितिं पुणि भिं÷। गुह्यमांनऽ इतिं गुह्यमांनः॥ तन्तें ते तन्तन्तंऽ एतमेतन्ते तन्तन्तंऽ एतम्। तऽ एतमेतन्तें तऽ एतमन्न्वन्न्वेतन्तें तऽ एतमनुं। एतमन्न्वन्न्वेतमेतमनु जोषञ्जोषमन्न्वेतमेतमनु जोषंम्। अनु जोषञ्जोषमन्न्वनु जोषंम्भरामि भरामि जोषमन्न्वनु जोषंम्भरामि। जोषंम्भरामि भरामि जोषञ्जोषंम्भराम्म्येषऽ एष भंरामि जोषञ्जोषंम्भराम्म्येषः। भराम्म्येषऽ एष भंरामि भराम्म्येष न नैष भंरामि भराम्म्येष न[1]। एष न नैषऽ एष नेदिन्नैषऽ एष नेत्। नेदिन्न नेत्त्वत्त्वदिन्न नेत्त्वत्। इत्त्वत्त्वदिदित्त्वदंपचेतयांताऽ अपचेतयांतै त्त्वदिदित्त्वदंपचेतयांतै[2]। त्त्वदंपचेतयांताऽ अपचेतयांतै त्त्वत्त्वदंपचेतयांताऽ

[1]. वा.प्रा.३.१७. के अनुसार व्यञ्जन परे होने के कारण एषः नः यहाँ एषः के विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. वा.प्रा.६.१७. के अनुसार यहाँ अपचेतयातै यह क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है।

अ॒ग्नेर॒ग्नेर॑पचे॒तया॑तै॒ त्वत्त्वद॑पचे॒तया॑ताऽ अ॒ग्नेः। अ॒प॒चे॒तया॑ताऽ अ॒ग्नेर॒ग्नेर॑प-चे॒तया॑ताऽ अपचे॒तया॑ताऽ अ॒ग्नेः प्रि॒यम्प्रि॒यम॒ग्नेर॑पचे॒तया॑ताऽ अपचे॒तया॑ताऽ अ॒ग्नेः प्रि॒यम्। अ॒प॒चे॒तया॑ता॒ऽ इत्य॑प चे॒तया॑तै। अ॒ग्नेः प्रि॒यम्प्रि॒यम॒ग्नेर॒ग्नेः प्रि॒यम्पाथ॒ः पाथ॑ः प्रि॒यम॒ग्नेर॒ग्नेः प्रि॒यम्पाथ॑ः। प्रि॒यम्पाथ॒ः पाथ॑ः प्रि॒य-म्प्रि॒यम्पाथोप्प्यपि॒ पाथ॑ः प्रि॒यम्प्रि॒यम्पाथोपि॑। पाथोप्प्यपि॒ पाथ॒ः पाथोपी॑त-मितमपि॒ पाथ॒ः पाथोपी॑तम्। अपी॑तमित॒मप्प्यपी॑तम्। इ॒त॒मिती॑तम्॥१७॥

स॒ꣳस्र॒वभा॑गा स्त्थ स्त्थ सꣳस्र॒वभा॑गाः सꣳस्र॒वभा॑गा स्त्थे॒षेषा स्त्थ॑ सꣳस्र॒वभा॑गाः सꣳस्र॒वभा॑गा स्त्थे॒षा[1]। स॒ꣳस्र॒वभा॑गा॒ऽ इति॑ सꣳस्र॒व भा॑गाः। स्थे॒षेषा स्त्थ॑ स्त्थे॒षा बृ॒हन्तो॑ बृ॒हन्त॑ऽ इ॒षा स्त्थ॑ स्त्थे॒षा बृ॒हन्त॑ः। इ॒षा बृ॒हन्तो॑ बृ॒हन्त॑ऽ इ॒षेषा बृ॒हन्त॑ः प्प्रस्त्त॒रेष्ट्ठाः प्प्र॑स्त्त॒रेस्त्था बृ॒हन्त॑ऽ इ॒षेषा बृ॒हन्त॑ः प्प्रस्त्त-रे॒ष्ट्ठाः। बृ॒हन्त॑ः प्प्रस्त्त॒रेष्ट्ठाः प्प्र॑स्त्त॒रेस्त्था बृ॒हन्तो॑ बृ॒हन्त॑ः प्प्रस्त्त॒रेष्ट्ठाः प॑रि॒धेया॑ः परि॒धेया॑ः प्प्रस्त्त॒रेस्त्था बृ॒हन्तो॑ बृ॒हन्त॑ः प्प्रस्त्त॒रेष्ट्ठाः प॑रि॒धेया॑ः। प्र॒स्त्त॒रे॒ष्ट्ठाः प॑रि॒धेया॑ः परि॒धेया॑ः प्प्रस्त्त॒रेस्त्थाः प्प्र॑स्त्त॒रेष्ट्ठाः प॑रि॒धेया॑श्च च परि॒धेया॑ः प्प्रस्त्त॒रे-स्त्थाः प्प्र॑स्त्त॒रेष्ट्ठाः प॑रि॒धेया॑श्च[2]। प्र॒स्त्त॒रेस्त्थाऽ इति॑ प्प्रस्त्त॒रे स्थाः। प॒रि॒धेया॑श्च च परि॒धेया॑ः परि॒धेया॑श्च दे॒वा दे॒वाश्च॑ परि॒धेया॑ः परि॒धेया॑श्च दे॒वाः। प॒रि॒धेया॒ऽ इति॑ परि॒ धेया॑ः। च॒ दे॒वा दे॒वाश्च॑ च दे॒वाः। दे॒वाऽ इति॑ दे॒वाः॥ इ॒माँव्वाचँ॒व्वाच॑मि॒मामि॒-माँव्वाच॑म॒ब्भ्यु॒भि वाच॑मि॒मामि॒माँव्वाच॑म॒भि। व्वाच॑म॒ब्भ्यु॒भि वाचँ॒व्वाच॑म॒भि विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒भि वाचँ॒व्वाच॑म॒भि विश्श्वे॑। अ॒भि विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒ब्भ्यु॒भि विश्श्वे॑ गृ॒णन्तो॑ गृ॒णन्तो॒ व्विश्श्वे॒ब्भ्यु॒भि विश्श्वे॑ गृ॒णन्त॑ः। व्विश्श्वे॑ गृ॒णन्तो॑ गृ॒णन्तो॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ गृ॒णन्त॑ऽ आ॒सद्द्या॒सद्द्य॑ गृ॒णन्तो॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ गृ॒णन्त॑ऽ आ॒सद्द्य॑। गृ॒णन्त॑ऽ आ॒सद्द्या॒सद्द्य॑ गृ॒णन्तो॑

---

[1]. अनुस्वारस्योपरिष्टात्संयोगो यदि दृश्यते। ह्रस्वं तं तु विजानीयात्सꣳस्रवभागास्थेति निदर्शनम्॥ – पा. शि. २८.

[2]. वा.प्रा.२.१६. के अनुसार यहाँ च पद अनुदात्त है।

गृणन्तंऽ आसद्यास्मिन्नस्मिन्नासद्यं गृणन्तौ गृणन्तंऽ आसद्यास्मिन्। आसद्यास्मिन्नस्मिन्नासद्यासद्यास्मिन्बर्हिषि बर्हिष्ष्यस्मिन्नासद्यासद्यास्मिन्बर्हिषि। आसद्येत्या सद्यं। अस्मिन्बर्हिषि बर्हिष्ष्यस्मिन्नस्मिन्बर्हिषि मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्बर्हिष्ष्यस्मिन्नस्मिन्बर्हिषि मादयद्ध्वम्। बर्हिषि मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्बर्हिषि बर्हिषि मादयद्ध्वꣳ स्वाहा स्वाहा मादयद्ध्वम्बर्हिषि बर्हिषि मादयद्ध्वꣳ स्वाहा। मादयद्ध्वꣳ स्वाहा स्वाहा मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वꣳ स्वाहा व्वाड्वाट् स्वाहा मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वꣳ स्वाहा व्वाट्। स्वाहा व्वाड्वाट् स्वाहा स्वाहा व्वाट्। व्वाडिति वाट्॥१८॥

घृताची स्त्थ स्त्थो घृताची घृताची स्त्थो धुर्य्यौ धुर्य्यौ स्त्थो घृताची घृताची स्त्थो धुर्य्यौ। घृताचीऽ इति घृताची[1]। स्त्थो धुर्य्यौ धुर्य्यौ स्त्थ स्त्थो धुर्य्यौ पातम्पातन्धुर्य्यौ स्त्थ स्त्थो धुर्य्यौ पातम्। धुर्य्यौ पातम्पातन्धुर्य्यौ धुर्य्यौ पातꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने पातन्धुर्य्यौ धुर्य्यौ पातꣳ सुम्म्ने। पातꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने पातम्पातꣳ सुम्म्ने स्त्थं स्त्थꣳ सुम्म्ने पातम्पातꣳ सुम्म्ने स्त्थं÷। सुम्म्ने स्त्थं स्त्थꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं÷ सुम्म्ने। सुम्म्नेऽ इति सुम्म्ने[2]। स्त्थꣳ सुम्म्ने सुम्म्ने स्त्थं स्त्थꣳ सुम्म्ने मा मा सुम्म्ने स्त्थं स्त्थꣳ सुम्म्ने मा। सुम्म्ने मा मा सुम्म्ने सुम्म्ने मा धत्तन्धत्तम्मा सुम्म्ने सुम्म्ने मा धत्तम्। मा धत्तन्धत्तम्मा मा धत्तम्। धत्तमिति धत्तम्॥ यज्ज्ञ नमो नमो यज्ज्ञ यज्ज्ञ नमश्च च नमो यज्ज्ञ यज्ज्ञ नमश्च। नमश्च च नमो नमश्च ते ते च नमो नमश्च ते। च ते ते च च तऽ उपोप ते च च तऽ उप। तऽ उपोप ते तऽ उप च चोप ते तऽ उप च। उप च

---

1. घृताची यह पद द्विवचन होने के कारण यहाँ प्रगृह्य है। अतः यहाँ स्थितोपस्थित पाठ होता है। इसी अध्याय की छठीं कण्डिका में यह पद प्रगृह्य संज्ञक नहीं था। अतः वहाँ स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता है।

2. इस कण्डिका में प्रथम सुम्ने पद द्विवचनान्त होने से प्रगृह्य है, द्वितीय सुम्ने पद सप्तम्यन्त है, अतः पहले सुम्ने पद का स्थितोपस्थित पाठ होता है. द्वितीय सुम्ने पद का स्थितोपस्थित पाठ नहीं होता है।

चोपोपं च युज्ञस्यं युज्ञस्यु चोपोपं च युज्ञस्यं। चु युज्ञस्यं युज्ञस्यं च च युज्ञस्यं शिुवे शिुवे युज्ञस्यं च च युज्ञस्यं शिुवे। युज्ञस्यं शिुवे शिुवे युज्ञ-स्यं युज्ञस्यं शिुवे सꣳ सꣳ शिुवे युज्ञस्यं युज्ञस्यं शिुवे सम्। शिुवे सꣳ सꣳ शिुवे शिुवे सन्तिंष्ठस्व तिष्ठस्वु सꣳ शिुवे शिुवे सन्तिंष्ठस्व। सन्तिंष्ठस्व तिष्ठस्वु सꣳ सन्तिंष्ठस्वु स्विुष्टे स्विुष्टे तिष्ठस्वु सꣳ सन्तिंष्ठस्वु स्विुष्टे। तिुष्ठुस्वु स्विुष्टे स्विुष्टे तिष्ठस्व तिष्ठस्वु स्विुष्टे मे मे स्विुष्टे तिष्ठस्व तिष्ठस्वु स्विुष्टे मे। स्विंष्टे मे मे स्विुष्टे स्विुष्टे मे सꣳ सम्मे स्विुष्टे स्विुष्टे मे सम्। स्विंष्टुऽ इति सु इंष्टे। मे सꣳ सम्मे मे सन्तिंष्ठस्व तिष्ठस्वु सम्में मे सन्तिंष्ठस्व। सन्तिंष्ठस्व तिष्ठस्वु सꣳ सन्तिंष्ठस्व। तिुष्ठुस्वेतिं तिष्ठस्व॥१९॥

अग्ग्नेंदब्धायोदब्धुायोग्ग्नेग्ग्नेंदब्धायोशीतमाशितमादब्धुायोग्ग्नेग्ग्नेंदब्धायो-शीतम[1]। अुदुब्धुायुोशीुतुमाशिुतुमादुब्धुायुोदुब्धुायुोशीुतुम् पुाहि पुाह्यशितमा-दब्धायोदब्धायोशीतम पुाहि। अुदुब्धुायुोऽ इत्त्यंदब्ध आयो। अुशीुतुम् पुाहि पुाह्यशितमाशीतम पुाहि मां मा पुाह्यशितमाशीतम पुाहि मां। अुशिुतुमेत्त्यंशि-तम। पुाहि मां मा पुाहि पुाहि मां दिुद्योर्दिुद्योम्मां पुाहि पुाहि मां दिुद्योः। मुा दिुद्योर्दिुद्योम्मां मा दिुद्योः प्प्रसिंत्त्यै प्प्रसिंत्त्यै दिुद्योम्मां मा दिुद्योः प्प्रसिंत्त्यै। दिुद्योः प्प्रसिंत्त्यै प्प्रसिंत्त्यै दिुद्योर्दिुद्योः प्प्रसिंत्त्यै दुरिंष्ट्यै दुरिंष्ट्यै प्प्रसिंत्त्यै दिुद्यो-र्दिुद्योः प्प्रसिंत्त्यै दुरिंष्ट्यै। प्रसिंत्त्यै दुरिंष्ट्यै दुरिंष्ट्यै प्प्रसिंत्त्यै प्प्रसिंत्त्यै दुरिंष्ट्यै दुरद्म्न्यै दुंरद्म्न्यै दुरिंष्ट्यै प्प्रसिंत्त्यै प्प्रसिंत्त्यै दुरिंष्ट्यै दुरद्म्न्यै। प्रसिंत्त्याुऽ इतिु प्प्र सिंत्त्यै। दुरिंष्ट्यै दुरद्म्न्यै दुंरद्म्न्यै दुरिंष्ट्यै दुरिंष्ट्यै दुरद्म्न्याऽ अंविुषमंविुषन्दुंरद्म्न्यै दुरिंष्ट्यै दुरिंष्ट्यै दुरद्म्न्याऽ अंविुषम्। दुरिंष्ट्याुऽ इतिु दुः इंष्ट्यै। दुरुद्म्न्याऽ

---

[1]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार अशितम इस पद में ह्रस्व स्वर(इ) दीर्घ हो गया है तथा वा.प्रा.५.३७. के अनुसार इस पद का पृथकरण नहीं होता है।

अविषमविषन्दुरद्धन्यै दुरद्धन्याऽ अविषन्नो नोविषन्दुरद्धन्यै दुरद्धन्याऽ अविषन्नः। दुरद्धन्याऽ इति दुः अद्धन्यै। अविषन्नो नोविषमविषन्नः पितुम्पितुन्नोविषमविषन्नः पितुम्। नः पितुम्पितुन्नो नः पितुङ्कृणु कृणु पितुन्नो नः पितुङ्कृणु। पितुङ्कृणु कृणु पितुम्पितुङ्कृणु सुषदा सुसदा कृणु पितुम्पितुङ्कृणु सुषदा[1]। कृणु सुषदा सुसदा कृणु कृणु सुषदा योनौ योनौ सुसदा कृणु कृणु सुषदा योनौ। सुषदा योनौ योनौ सुसदा सुषदा योनौ स्वाहा स्वाहा योनौ सुसदा सुषदा योनौ स्वाहा। सुसदेति सु सदा। योनौ स्वाहा स्वाहा योनौ योनौ स्वाहा ब्राड्वाट् स्वाहा योनौ योनौ स्वाहा ब्राट्। स्वाहा ब्राड्वाट् स्वाहा स्वाहा ब्राडग्नयेग्नये ब्राट् स्वाहा स्वाहा ब्राडग्नये। ब्राडग्नयेग्नये ब्राड्वाडग्नये सँव्वेशपतये सँव्वेशपतयेग्नये ब्राड्वाडग्नये सँव्वेशपतये। अग्नये सँव्वेशपतये सँव्वेशपतयेग्नयेग्नये सँव्वेशपतये स्वाहा स्वाहा सँव्वेशपतयेग्नयेग्नये सँव्वेशपतये स्वाहा। सँव्वेशपतये स्वाहा स्वाहा सँव्वेशपतये सँव्वेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै सरस्वत्यै स्वाहा सँव्वेशपतये सँव्वेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै। सँव्वेशपतयऽ इति सँव्वेश पतये। स्वाहा सरस्वत्यै सरस्वत्यै स्वाहा स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै यशोभगिन्यै सरस्वत्यै स्वाहा स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै। सरस्वत्यै यशोभगिन्यै यशोभगिन्यै सरस्वत्यै सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा स्वाहा यशोभगिन्यै सरस्वत्यै सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा। यशोभगिन्यै स्वाहा स्वाहा यशोभगिन्यै यशोभगिन्यै स्वाहा। यशोभगिन्याऽ इति यशः भगिन्यै। स्वाहेति स्वाहा॥२०॥

व्वेदोस्यसि व्वेदो व्वेदोसि येन येनासि व्वेदो व्वेदोसि येन[2]। असि येन येनास्यसि येन त्वन्त्वँय्येनास्यसि येन त्वम्। येन त्वन्त्वँय्येन येन त्वन्देव देव त्वँ-

---

[1]. वा.प्रा.३.५६. के अनुसार सुसदा इस पद में द्वितीय सकार का षकार विहित है।

[2]. या. शि. ७८. के अनुसार वेदोसि में अभिनिहित स्वर है।

ऽयेन॒ येन॒ त्वन्दे॑व। त्वन्दे॑व देव॒ त्वन्त्वन्दे॑व व्वेद व्वेद देव॒ त्वन्त्वन्दे॑व व्वेद। दे॒व॒ व्वे॒द॒ व्वे॒द॒ दे॒व॒ दे॒व॒ व्वे॒द॒ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद देव देव व्वेद दे॒वेब्भ्य॑ः। व्वे॒द॒ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद व्वेद दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ व्वेद व्वेद दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दः। दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दोभु॒वोभ॑वो व्वे॒दो दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ व्वे॒दोभ॑वः। व्वे॒दोभु॒वो-भ॑वो व्वे॒दो व्वे॒दोभ॑व॒स्स्तेन॒ तेनाभ॑वो व्वे॒दो व्वे॒दोभ॑व॒स्स्तेन॑। अभ॑व॒स्स्तेन॒ तेनाभु॒वोभ॑व॒-स्स्तेन॒ मह्य॒म्मह्य॒न्तेनाभु॒वोभ॑व॒स्स्तेन॒ मह्य॑म्। तेन॒ मह्य॒म्मह्य॒न्तेन॒ तेन॒ मह्यँ॑-व्वे॒दो व्वे॒दो मह्य॒न्तेन॒ तेन॒ मह्यँ॑व्वे॒दः। मह्यँ॑व्वे॒दो व्वे॒दो मह्य॒म्मह्यँ॑व्वे॒दो भू॑या भूया व्वे॒दो मह्य॒म्मह्यँ॑व्वे॒दो भू॑याः। व्वे॒दो भू॑या भूया व्वे॒दो व्वे॒दो भू॑याः। भू॒या॒ऽ इति॑ भूयाः ॥ दे॒वा॑ गातुविदो गातुवि॒दो॒ दे॒वा॒ दे॒वा॑ गातुविदो गा॒तु॒ङ्गा॒तु॒ङ्गा॑तुवि॒दो॒ दे॒वा॒ दे॒वा॑ गातुविदो गा॒तुम्। गा॒तु॒वि॒दो॒ गा॒तु॒ङ्गा॒तु॒ङ्गा॑तुविदो गातुविदो गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तु॒ङ्गा॑तुविदो गातुविदो गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा। गा॒तु॒वि॒द॒ऽ इति॑ गातु व्विदः। गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तु॒ङ्गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा गा॒तु॒ङ्गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा गा॒तु॒ङ्गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा गा॒तुम्। व्वि॒त्त्वा गा॒तु॒ङ्गा॒तुँ॑-व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑तेत गा॒तुँ॑व्वि॒त्त्वा व्वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑त। गा॒तुमि॑तेत गा॒तु॒ङ्गा॒तुमि॑त। इ॒तेती॑त॥ मन॑सस्प्पते पते॒ मन॑सो॒ मन॑सस्प्पतऽ इ॒ममि॒मम्प॑ते॒ मन॑सो॒ मन॑स-स्प्पतऽ इ॒मम्[1]। प॒त॒ऽ इ॒ममि॒मम्प॑ते पतऽ इ॒मन्दे॑व दे॒वेमम्प॑ते पतऽ इ॒मन्दे॑व। इ॒मन्दे॑व दे॒वेममि॒मन्दे॑व य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञन्दे॑वे॒ममि॒मन्दे॑व य॒ज्ज्ञम्। दे॒व॒ य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञ-न्दे॑व देव य॒ज्ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ज्ञन्दे॑व देव य॒ज्ज्ञꣳ स्वाहा॑। य॒ज्ज्ञꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञꣳ स्वाहा॒ व्वाते॒ व्वाते॒ स्वाहा॑ य॒ज्ज्ञँय्य॒ज्ज्ञꣳ स्वाहा॒ व्वाते॑।

---

[1]. मनसः पते यहाँ पत्यौ तालव्यस्वरोदये(वा.प्रा.३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) इन सूत्रों के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है। संहिता, जटा, घन आदि में मनसस्प्पतऽइमम् पाठ आता है। यहाँ पत में तालव्यस्वर बाद में नहीं है, पद स्वरूप पते में ही तालव्य स्वर है। इससे सिद्ध होता है कि प्रातिशाख्य की प्रवृत्ति पदों के आधार पर है।

स्वाहा॒ व्वा॒ते व्वा॒ते स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाते॑ धा धा॒ व्वा॒ते स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वाते॑ धाः। व्वाते॑ धा धा॒ व्वा॒ते व्वाते॑ धाः। धा॒ऽ इति॑ धाः॥२१॥

सम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिः सꣳ सम्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताम्ब॒र्हिः सꣳ सम्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम्[1]। ब॒र्हिर॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम्ब॒र्हिर्ब्ब॒र्हिर॑ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑। अ॒ङ्क्ता॒ꣳ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ ह॒विषा॑ङ्क्ताम॒ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑। ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ ह॒विषा॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैः। घृ॒तेना॑दि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिरादि॒त्यैर्घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिः। आ॒दि॒त्यैर्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिरादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑भिरादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॑ः। व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ म॒रुद्भि॒र्व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिर्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्र॑ः। व्वसु॑भि॒रिति॒ वसु॑ भिः। म॒रुद्भि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्रो॑ म॒रुद्भि॑र्म्म॒रुद्भि॒रिन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभिः। म॒रुद्भि॒रिति॑ म॒रुत् भि॑ः॥ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्ताम॒ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्ताम्[2]। व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्ताम॒ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्तान्दि॒व्यन्दि॒व्यम॑ङ्क्ताँव्वि॒श्वदे॑वेभि॒र्व्वि॒श्वदे॑वेभिरङ्क्तान्दि॒व्यम्। व्वि॒श्वदे॑वेभि॒रिति॑ वि॒श्व दे॑वेभिः। अ॒ङ्क्ता॒न्दि॒व्यन्दि॒व्यम॑ङ्क्ताम॒ङ्क्तान्दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्यम॑ङ्क्ताम॒ङ्क्तान्दि॒व्यन्नभ॑ः। दि॒व्यन्नभो॒ नभो॑ दि॒व्यन्दि॒व्यन्नभो॑ गच्छतु गच्छ॒तु नभो॑ दि॒व्यन्दि॒व्यन्नभो॑ गच्छतु। नभो॑ गच्छतु गच्छ॒तु नभो॒ नभो॑ गच्छ॒तु यद्यद् ग॑च्छतु नभो॒ नभो॑ गच्छ॒तु यत्। ग॒च्छ॒तु यद्यद् ग॑च्छतु गच्छ॒तु यत्स्वाहा॒ स्वाहा॒ यद् ग॑च्छतु गच्छ॒तु यत्स्वाहा॑। यत्स्वाहा॒ स्वाहा॒ यद्यत्स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२२॥

---

[1]. वा. प्रा. ६.३०. में निर्दिष्ट होने के कारण बर्हिरङ्क्ताम् यहाँ दो अनुनासिक (ङ) होंगे।

[2]. वा. प्रा. ६.३०. में निर्दिष्ट न होने के कारण विश्वदेवेभिरङ्क्ताम् यहाँ पर दो ङकार स्वीकार्य नहीं हैं।

कस्त्वा॑ त्वा॒ कः कस्त्वा॒ व्वि वि त्वा॒ कः कस्त्वा॒ व्वि। त्वा॒ व्वि वि त्वा॑ त्वा॒ व्वि मु॑ञ्चति मुञ्चति॒ व्वि त्वा॑ त्वा॒ व्वि मु॑ञ्चति। व्वि मु॑ञ्चति मुञ्चति॒ व्वि वि मु॑ञ्चति॒ स स मु॑ञ्चति॒ व्वि वि मु॑ञ्चति॒ सः। मु॒ञ्च॒ति॒ स स मु॑ञ्चति मुञ्चति॒ स कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ स मु॑ञ्चति मुञ्चति॒ स कस्म्मै॑। स कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ स स कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ स स कस्म्मै॒ तस्म्मै॑। कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ पोषा॑य॒ पोषा॑य॒ तस्म्मै॒ कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ तस्म्मै॒ पोषा॑य। तस्म्मै॒ पोषा॑य॒ पोषा॑य॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ पोषा॑य॒ रक्क्षसा॒ꣳ रक्क्षसा॒म्पोषा॑य॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ पोषा॑य॒ रक्क्षसाम्॥ पोषा॑य॒ रक्क्षसा॒ꣳ रक्क्षसा॒म्पोषा॑य॒ पोषा॑य॒ रक्क्षसाम्भा॒गो भा॒गो रक्क्षसा॒म्पोषा॑य॒ पोषा॑य॒ रक्क्षसाम्भा॒गः। रक्क्षसाम्भा॒गो भा॒गो रक्क्षसा॒ꣳ रक्क्षसाम्भा॒गो॒स्यसि भा॒गो रक्क्षसा॒ꣳ रक्क्षसाम्भा॒गो॒सि[1]। भा॒गो॒स्यसि भा॒गो भा॒गो॒सि। अ॒सीत्त्य॑सि॥२३॥

सँव्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा सꣳ सँव्वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ पय॑सा॒ व्वर्च॑सा सꣳ सँव्वर्च॑सा॒ पय॑सा। व्वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ पय॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सꣳ सम्पय॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सम्। पय॑सा॒ सꣳ सम्पय॑सा॒ पय॑सा॒ सन्त॒नूभि॑स्त॒नूभि॒ः सम्पय॑सा॒ पय॑सा॒ सन्त॒-नूभि॑ः। सन्त॒नूभि॑स्त॒नूभि॒ः सꣳ सन्त॒नूभि॒रग॑न्न्मह्य॒ग॑न्न्महि त॒नूभि॒ः सꣳ सन्त॒नूभि॒रग॑न्न्महि । त॒नूभि॒रग॑न्न्मह्य॒ग॑न्न्महि त॒नूभि॑स्त॒नूभि॒रग॑न्न्महि॒ मन॑सा॒ मन॒साग॑न्न्महि त॒नूभि॑स्त॒नूभि॒रग॑न्न्महि॒ मन॑सा। अग॑न्न्महि॒ मन॑सा॒ मन॒साग॑न्न्म-ह्य॒ग॑न्न्महि॒ मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॒साग॑न्न्मह्य॒ग॑न्न्महि॒ मन॑सा॒ सम्। मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सꣳ शि॒वेन॑ शि॒वेन॒ सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सꣳ शि॒वेन॑। सꣳ शि॒वेन॑ शि॒वेन॒ सꣳ सꣳ शि॒वेन॑। शि॒वेनेति॑ शि॒वेन॑॥ त्वष्टा॑ सु॒दत्र॑ः सु॒दत्र॒स्त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ सु॒दत्रो॒ व्वि वि सु॒दत्र॒स्त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ सु॒दत्रो॒ व्वि[2]। सु॒दत्रो॒ व्वि वि सु॒दत्र॑ः सु॒दत्रो॒ व्वि द॑धातु दधातु॒ व्वि सु॒दत्र॑ः सु॒दत्रो॒ व्वि द॑धातु। सु॒दत्र॒ऽ इति॑ सु॒ दत्र॑ः। व्वि द॑धातु

[1]. वा.प्रा.२.८. के अनुसार असि पद यहाँ अनुदात्त है।

दधातु व्वि वि दधातु रायो रायो दधातु व्वि वि दधातु रायः। दधातु रायो रायो दधातु दधातु रायोन्वनु रायो दधातु दधातु रायोनु। रायोन्वनु रायो रायोनु मार्ष्टु मार्ष्ट्वनु रायो रायोनु मार्ष्टु[1]। अनु मार्ष्टु मार्ष्ट्वन्वनु मार्ष्टु तन्वस्तन्वो मार्ष्ट्वन्वनु मार्ष्टु तन्वः। मार्ष्टु तन्वस्तन्वो मार्ष्टु मार्ष्टु तन्वो यद्यत्तन्वो मार्ष्टु मार्ष्टु तन्वो यत्। तन्वो यद्यत्तन्वस्तन्वो यद्विलिँष्टँव्विलिँष्टँय्यत्तन्वस्तन्वो यद्विलिँष्टम्। यद्विलिँष्टँव्विलिँष्टँय्यद्यद्विलिँष्टम्। विलिँष्टमिति वि लिँष्टम्॥२४॥

दिवि व्विष्णुर्व्विष्णुर्दिवि दिवि व्विष्णुर्व्वि वि विष्णुर्दिवि दिवि व्विष्णुर्व्वि। व्विष्णुर्व्वि वि विष्णुर्व्विष्णुर्व्यक्रꣳस्ताक्रꣳस्त व्वि विष्णुर्व्विष्णुर्व्यक्रꣳस्त। व्यक्रꣳस्ताक्रꣳस्त व्वि व्यक्रꣳस्त जागतेन जागतेनाक्रꣳस्त व्वि व्यक्रꣳस्त जागतेन। अक्रꣳस्त जागतेन जागतेनाक्रꣳस्ताक्रꣳस्त जागतेन च्छन्दसा च्छन्दसा जागतेनाक्रꣳस्ताक्रꣳस्त जागतेन च्छन्दसा[2]। जागतेन च्छन्दसा च्छन्दसा जागतेन जागतेन च्छन्दसा ततस्ततश्च्छन्दसा जागतेन जागतेन च्छन्दसा ततः। छन्दसा ततस्ततश्च्छन्दसा च्छन्दसा ततो निब्भँक्तो निब्भँक्तस्ततश्च्छन्दसा च्छन्दसा ततो निब्भँक्तः। ततो निब्भँक्तो निब्भँक्तस्ततस्ततो निब्भँक्तोन्तरिक्षेन्तरिक्षे निब्भँक्तस्ततस्ततो निब्भँक्तोन्तरिक्षे। निब्भँक्तोन्तरिक्षेन्तरिक्षे निब्भँक्तो निब्भँक्तोन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन त्रैस्तुभेनान्तरिक्षे निब्भँक्तो निब्भँक्तोन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन। निब्भँक्तऽ इति निः भक्तः। अन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन त्रैस्तुभेनान्तरिक्षेन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन पृथिव्याम्पृथिव्यान्त्रैस्तुभेनान्तरि-

---

[2]. सुदत्रः वि यहाँ सर्वो अःकार ओकारम्(वा.प्रा.४.४३) इस सूत्र से धिसंज्ञक व्यञ्जन(व) बाद में होने से सोपध विसर्जनीय ओकार होता है।

[1]. मार्ष्टु यहाँ पर स्वरपूर्व में न रहने के कारण ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) प्रवृत्त नहीं होगा। परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) इस सूत्र से षकार का ही द्वित्व होगा।

[2]. छन्दसा छन्दसा तथा जागतेन छन्दसा यहाँ वा.प्रा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर चकार से व्यवहित होता है।

क्षेन्तरिक्षे त्रैष्टुभेन पृथिव्याम्। त्रैष्टुभेन पृथिव्याम्पृथिव्यात्रैस्तुभेन त्रैष्टुभेन पृथिव्याङ्गायत्रेण गायत्रेण पृथिव्यान्त्रैस्तुभेन त्रैष्टुभेन पृथिव्याङ्गायत्रेण। त्रैस्तुभेनेति त्रैस्तुभेन[1]। पृथिव्याङ्गायत्रेण गायत्रेण पृथिव्याम्पृथिव्याङ्गायत्रेणास्म्मादस्म्माद् गायत्रेण पृथिव्याम्पृथिव्याङ्गायत्रेणास्म्मात्। गायत्रेणास्म्मादस्म्माद् गायत्रेण गायत्रेणास्म्मादन्नादन्नादस्म्माद् गायत्रेण गायत्रेणास्म्मादन्नात्। अस्म्मादन्नादन्नादस्म्मादस्म्मादन्नादस्याऽ अस्याऽ अन्नादस्म्मादस्म्मादन्नादस्यै। अन्नादस्याऽ अस्याऽ अन्नादन्नादस्यै प्प्रतिष्ठायां॰ प्प्रतिस्त्थायाऽ अस्याऽ अन्नादन्नादस्यै प्प्रतिष्ठायां॰। अस्यै प्प्रतिष्ठायां॰ प्प्रतिस्त्थायाऽ अस्याऽ अस्यै प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्माग्न्म प्प्रतिस्त्थायाऽ अस्याऽ अस्यै प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म। प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्मागन्न्म प्प्रतिस्त्थायां॰ प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म स्वः स्वरगन्न्म प्प्रतिस्त्थायां॰ प्प्रतिष्ठायाऽ अगन्न्म स्वः। प्रतिस्त्थायाऽ इति प्प्रति स्थायां॰। अगन्न्म स्वः स्वरगन्न्मागन्न्म स्वः सं सँ स्वरगन्न्मागन्न्म स्वः सम्। स्वः सं सँ स्वः स्वः सञ्ज्योतिंषा ज्योतिंषा सँ स्वः स्वः सञ्ज्योतिंषा। स्वरिति स्वः । सञ्ज्योतिंषा ज्योतिंषा सं सञ्ज्योतिंषाभूमाभूम ज्योतिंषा सं सञ्ज्योतिंषाभूम। ज्योतिंषाभूमाभूम ज्योतिंषा ज्योतिंषाभूम। अभूमेत्त्यभूम॥२५॥

स्वयम्भूरस्यसि स्वयम्भूः स्वयम्भूरसि श्रेष्ठः श्रेष्ठोसि स्वयम्भूः स्वयम्भूरसि श्रेष्ठः[2]। स्वयम्भूरिति स्वयम् भूः। असि श्रेष्ठः श्रेष्ठोस्यसि श्रेष्ठो रश्म्मी रश्म्मिः श्रेष्ठोस्यसि श्रेष्ठो रश्म्मिः। श्रेष्ठो रश्म्मी रश्म्मिः श्रेष्ठः श्रेष्ठो रश्म्मिर्व्वर्चोदा व्वर्चोदा रश्म्मिः श्रेष्ठः श्रेष्ठो रश्म्मिर्व्वर्चोदाः। रश्म्मिर्व्वर्चोदा व्वर्चोदा रश्म्मी रश्म्मिर्व्वर्चोदाऽ अस्यसि व्वर्चोदा रश्म्मी रश्म्मिर्व्वर्चोदाऽ असि। व्वर्चोदाऽ

---

1. वा. प्रा. ५.२९. के अनुसार यहाँ पृथक्करण नहीं होगा।

2. श्रेष्ठः श्रेष्ठः यहाँ वा.प्रा.४.१०७. के अनुसार विसर्जनीय से परे शकार का द्वित्व नहीं होता है।

अ॑स्यसि व्व॒र्चो॒दा व्व॑र्चो॒दाऽ अ॑सि॒ व्व॒र्चो॒ व्वर्चोसि व्व॒र्चो॒दा व्व॑र्चो॒दाऽ अ॑सि॒ व्व॒र्चः॑। व्व॒र्चो॒दाऽ इति॑ वर्च॒ः दाः। अ॒सि॒ व्व॒र्चो॒ व्वर्चौस्यसि॒ व्वर्चौ मे मे॒ व्वर्चौस्यसि॒ व्वर्चौ मे। व्वर्चौ मे मे॒ व्व॒र्चो॒ व्वर्चौ मे देहि देहि मे॒ व्व॒र्चो॒ व्वर्चौ मे देहि। मे॒ दे॒हि॒ दे॒हि॒ मे॒ मे॒ दे॒हि॒। दे॒हीति॑ देहि॥ सूर्य्य॑स्या॒वृत॑मा॒वृत॒ꣳ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्या॒वृ॒तमन्न्वन्न्वा॒वृत॒ꣳ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्या॒वृ॒तमनु॑। आ॒वृ॒तमन्न्वन्न्वा॒वृत॑मा॒वृ॒तमन्न्वा व॑र्त्ते व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वा॒वृत॑मा॒वृ॒तमन्न्वा व॑र्त्ते[1]। आ॒वृ॒तमित्त्या॒ व्वृत॑म्। अन्न्वा व॑र्त्ते व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वन्न्वा व॒र्त्तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्वर्त्त॒ऽ आन्न्वन्न्वा व॒र्त्तेग्ग्ने॑। आ व॑र्त्ते। व्व॒र्त्तेग्ग्नेग्ग्ने॑ व्वर्त्ते व्व॒र्त्तेग्ग्ने॑ गृहपते गृहप॒तेग्ग्ने॑ व्वर्त्ते व्व॒र्त्तेग्ग्ने॑ गृहपते॥२६॥

अग्ग्ने॑ गृहपते गृहप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिर्गृ॑हप॒तेग्ग्नेग्ग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिः। गृ॒ह॒प॒ते॒ सु॒गृ॒ह॒प॒तिः सु॑गृहप॒तिर्गृ॑हपते गृहपते सुगृहप॒तिस्त्वया॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिर्गृ॑हपते गृहपते सुगृहप॒तिस्त्वया॑। गृ॒ह॒प॒त॒ऽ इति॑ गृह पते। सु॒गृ॒ह॒प॒तिस्त्वया॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वया॑ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वया॑ग्ग्ने। सु॒गृ॒ह॒प॒तिरिति॑ सु गृहप॒तिः। त्वया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वया॒ त्वया॑ग्ग्ने॒हम॒हम॑ग्ग्ने॒ त्वया॒ त्वया॑ग्ग्ने॒हम्। अ॒ग्ग्ने॒हम॒हम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒हङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना॒हम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒हङ्गृ॒हप॑तिना। अ॒हङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना॒हम॒हङ्गृ॒हप॑तिना भूयासम्भूयासङ्गृ॒हप॑तिना॒हम॒हङ्गृ॒हप॑तिना भूयासम्। गृ॒हप॑तिना भूयासम्भूयासङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिर्भ्भू॑यासङ्गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिः। गृ॒हप॑ति॒नेति॑ गृ॒ह प॑तिना। भू॒या॒स॒ꣳ सु॒गृ॒ह॒प॒तिः सु॑गृहप॒तिर्भ्भू॑यासम्भूयासꣳ सुगृहप॒तिस्त्वन्त्वꣳ सु॑गृहप॒तिर्भ्भू॑यासम्भूयासꣳ सुगृहप॒तिस्त्वम्

---

[1]. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार यहाँ अनु यह उपसर्ग अनुदात्त नहीं होगा। वा.प्रा.४.१८३. के अनुसार क्रम पाठ में दो पदों का समूह लिया जाता है परन्तु ४.१८४. के अनुसार अपृक्त(यहां आकार) बीच में आने पर तीन पदों को लिया जाता है, यही स्थिति जटा पाठ में होगी परन्तु घनपाठ में आकार मध्य में आने पर चार पदों को लिया जाता है। वा.प्रा.४.१८५. के अनुसार आकार के साथ उसके उत्तरवर्ती पद को दूसरी बार मिलाना चाहिए। यह स्थिति जटा, घन में समान होगी। वा.प्रा.१.१५१. के अनुसार यहाँ आकार अपृक्त संज्ञक है।

। सु॒गृ॒ह॒प॒तिस्त्वन्त्वꣳ सु॑गृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वम्मया॒ मया॒ त्वꣳ सु॑गृहप॒तिः सु॑गृहप॒तिस्त्वम्मया॑। सु॒गृ॒ह॒प॒तिरिति॑ सु गृहप॒तिः। त्वम्मया॒ मया॒ त्वन्त्वम्मया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ मया॒ त्वन्त्वम्मया॑ग्ग्ने। मया॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ मया॒ मया॑ग्ग्ने गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिनाग्ग्ने॒ मया॒ मया॑ग्ग्ने गृ॒हप॑तिना। अ॒ग्ग्ने॒ गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिनाग्ग्नेग्ग्ने गृ॒हप॑तिना भूया भूया गृ॒हप॑तिनाग्ग्नेग्ग्ने गृ॒हप॑तिना भूयाः। गृ॒हप॑तिना भूया भूया गृ॒हप॑तिना गृ॒हप॑तिना भूयाः। गृ॒हप॑ति॒नेति॑ गृ॒ह प॑तिना। भू॒या॒ऽ इति॑ भूयाः॥ अ॒स्त्थू॒रि णौ॑ नावस्त्थू॒र्व्व॒स्त्थू॒रि णौ॒ गार्ह॑पत्त्यानि॒ गार्ह॑पत्त्यानि नावस्त्थू॒र्व्व॒स्त्थू॒रि णौ॒ गार्ह॑पत्त्यानि[1]। नौ॒ गार्ह॑पत्त्यानि॒ गार्ह॑पत्त्यानि नौ नौ॒ गार्ह॑पत्त्यानि सन्तु सन्तु॒ गार्ह॑पत्त्यानि नौ नौ॒ गार्ह॑पत्त्यानि सन्तु। गार्ह॑पत्त्यानि सन्तु सन्तु॒ गार्ह॑पत्त्यानि॒ गार्ह॑पत्त्यानि सन्तु श॒तꣳ श॒तꣳ स॑न्तु॒ गार्ह॑पत्त्यानि॒ गार्ह॑पत्त्यानि सन्तु श॒तम्। गार्ह॑पत्त्या॒नीति॒ गार्ह॑ पत्त्यानि। स॒न्तु॒ श॒तꣳ श॒तꣳ स॑न्तु सन्तु श॒तꣳ हिमा॒ हिमाः॑ श॒तꣳ स॑न्तु सन्तु श॒तꣳ हिमाः॑। श॒तꣳ हिमा॒ हिमाः॑ श॒तꣳ श॒तꣳ हिमा॑ऽ अचारिषमचारिष॒ꣳ हिमाः॑ श॒तꣳ श॒तꣳ हिमा॑ऽ अचारिषम्। हिमा॑ऽ अचारिषमचारिष॒ꣳ हिमा॒ हिमा॑ऽ अचारि॒षन्तत्तद॑चारिष॒ꣳ हिमा॒ हिमा॑ऽ अचारि॒षन्तत्॥ अ॒चा॒रि॒ष॒न्तत्तद॑चारिषमचारि॒षन्तद॑शकमशकु॒न्तद॑चारिषमचारि॒षन्तद॑शकम्। तद॑शकमशकु॒न्तत्तद॑शकु॒न्तत्तद॑शकु॒न्तत्तद॑शकु॒न्तत्। अ॒श॒कु॒न्तत्तद॑शकमशकु॒न्तन्न्मे॑ मे॒ तद॑शकमशकु॒न्तन्न्मे॑। तन्न्मे॑ मे॒ तत्तन्न्मे॑राद्ध्यराधि मे॒ तत्तन्न्मे॑राधि। मे॒रा॒द्ध्य॒रा॒धि॒ मे॒ मे॒रा॒धी॒दमि॒दम॑राधि मे मेराधी॒दम्। अ॒रा॒धी॒दमि॒दम॑राद्ध्यराधी॒दम॒हम॒हमि॒दम॑राद्ध्यराधी॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ षो षो॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳषः। अ॒हꣳ षो षो॒हम॒हꣳ षऽ ए॒वैव षो॒हम॒हꣳ षऽ ए॒व। षऽ ए॒वैव षो षऽ ए॒वास्म्म्यस्म्म्ये॒व षो षऽ ए॒वास्म्मि॑म्। ए॒वास्म्म्यस्म्म्ये॒वैवास्म्मि॒म् स सोस्म्म्ये॒-

[1]. अस्थूरि नौ यहां वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नकार निपातन से णकार होता है।

वैवास्म्मि सः। अस्म्मि स सोऽस्म्म्यस्म्मि सोऽस्म्म्यस्म्मि सोऽस्म्म्यस्म्मि सोऽस्म्मि। सोऽस्म्म्यस्म्मि स सोऽस्म्मि। अस्म्मीत्त्यस्म्मि॥२७॥

अग्ग्नये कव्व्यवाहनाय कव्व्यवाहनायाग्ग्नयेग्ग्नये कव्व्यवाहनाय स्वाहा स्वाहा कव्व्यवाहनायाग्ग्नयेग्ग्नये कव्व्यवाहनाय स्वाहा[1]। कव्व्यवाहनाय स्वाहा स्वाहा कव्व्यवाहनाय कव्व्यवाहनाय स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहा कव्व्यवाहनाय कव्व्यवाहनाय स्वाहा सोमाय। कव्व्यवाहनायेति कव्व्य व्वाहनाय। स्वाहा सोमाय सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय पितृमते पितृमते सोमाय स्वाहा स्वाहा सोमाय पितृमते। सोमाय पितृमते पितृमते सोमाय सोमाय पितृमते स्वाहा स्वाहा पितृमते सोमाय सोमाय पितृमते स्वाहा। पितृमते स्वाहा स्वाहा पितृमते पितृमते स्वाहा। पितृमतऽ इति पितृ मते। स्वाहेति स्वाहा॥ अपहताऽ असुराऽ असुराऽ अपहताऽ अपहताऽ असुरा रक्क्षाꣳसि रक्क्षाꣳस्यसुराऽ अपहताऽ अपहताऽ असुरा रक्क्षाꣳसि। अपहताऽ इत्त्यप हताः। असुरा रक्क्षाꣳसि रक्क्षाꣳस्यसुराऽ असुरा रक्क्षाꣳसि व्वेदिषदो व्वेदिसदो रक्क्षाꣳस्यसुराऽ असुरा रक्क्षाꣳसि व्वेदिषदः[2]। रक्क्षाꣳसि व्वेदिषदो व्वेदिसदो रक्क्षाꣳसि रक्क्षाꣳसि व्वेदिषदो ये ये व्वेदिसदो रक्क्षाꣳसि रक्क्षाꣳसि व्वेदिषदो ये। व्वेदिषदो ये ये व्वेदिसदो व्वेदिषदो ये रूपाणि रूपाणि ये व्वेदिसदो व्वेदिषदो ये रूपाणि। व्वेदिसदऽ इति वेदि सदः॥२८॥

ये रूपाणि रूपाणि ये ये रूपाणि प्प्रतिमुञ्चमानाः प्प्रतिमुञ्चमाना रूपाणि ये ये रूपाणि प्प्रतिमुञ्चमानाः। रूपाणि प्प्रतिमुञ्चमानाः प्प्रतिमुञ्चमाना रूपाणि रूपाणि प्प्रतिमुञ्चमानाऽ असुराऽ असुराः प्प्रतिमुञ्चमाना रूपाणि रूपाणि

---

[1]. सर्व विश्व मानुषाशाः स्वाहा वाजः पयो नमः (वा. प्रा. २.३९) इस सूत्र के अनुसार स्वाहा पद आद्युदात्त है।

[2]. वेदिसदः यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से एक ही पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी(वा.प्रा.१.४६) के अनुसार इ की भावी संज्ञा है।

प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ असु॑राः। प्र॒ति॒मु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ असु॑रा॒ऽ असु॑राः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑नाः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ असु॑रा॒ः सन्त॒ः सन्तोसु॑राः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑नाः प्प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ असु॑रा॒ः सन्त॑ः। प्र॒ति॒मु॒ञ्चमा॑ना॒ऽ इति॑ प्प्रति मु॒ञ्चमा॑नाः। असु॑रा॒ः सन्त॒ः सन्तो-सु॑रा॒ऽ असु॑रा॒ः सन्त॑ः स्व॒धया॑ स्व॒धया॒ सन्तोसु॑रा॒ऽ असु॑रा॒ः सन्त॑ः स्व॒धया॑। सन्त॑ः स्व॒धया॑ स्व॒धया॒ सन्त॒ः सन्त॑ः स्व॒धया॒ चर॑न्ति॒ चर॑न्ति स्व॒धया॒ सन्त॒ः सन्त॑ः स्व॒धया॒ चर॑न्ति। स्व॒धया॒ चर॑न्ति॒ चर॑न्ति स्व॒धया॑ स्व॒धया॒ चर॑न्ति। चर॒न्तीति॒ चर॑न्ति॥ प॒रा॒पुरो॑ नि॒पुरो॑ नि॒पुर॑ः प॒रा॒पुर॑ः प॒रा॒पुरो॑ नि॒पुरो॒ ये ये नि॒पुर॑ः प॒रा॒पुर॑ः प॒रा॒पुरो॑ नि॒पुरो॒ ये। प॒रा॒पु॒रऽ इति॑ प॒रा पुर॑ः। नि॒पुरो॒ ये ये नि॒पुरो॑ नि॒पुरो॒ ये भर॑न्ति॒ भर॑न्ति॒ ये नि॒पुरो॑ नि॒पुरो॒ ये भर॑न्ति। नि॒पु॒रऽ इति॑ नि॒ पुर॑ः। ये भर॑न्ति॒ भर॑न्ति॒ ये ये भर॑न्त्य॒ग्निर॒ग्निर्भर॑न्ति॒ ये ये भर॑न्त्य॒ग्निः। भर॑न्त्य॒ग्निर॒ग्निर्भर॑न्ति॒ भर॑न्त्य॒ग्निष्टाँस्ता॒नग्निर्भर॑न्ति॒ भर॑न्त्य॒ग्निष्टान्[1]। अ॒ग्निष्टाँस्ता॒नग्निर॒ग्निष्टाँल्लो॒काल्लो॒कात्ता॒नग्निर॒ग्निष्टाँल्लो॒कात्[2]। ताँल्लो॒काल्लो॒-कात्ताँस्ताँल्लो॒कात्प्र प्प्र लो॒कात्ताँस्ताँल्लो॒कात्प्र। लो॒कात्प्र प्प्र लो॒काल्लो॒कात्प्र णु॑दाति नुदाति॒ प्प्र लो॒काल्लो॒कात्प्र णु॑दाति। प्र णु॑दाति नुदाति॒ प्प्र प्प्र णु॑दात्य॒स्म्माद॒स्म्मान्नु॑दाति॒ प्प्र प्प्र णु॑दात्य॒स्म्मात्। नु॒दा॒त्य॒स्म्माद॒स्म्मान्नु॑दाति नुदात्य॒स्म्मात्। अ॒स्म्मादित्य॒स्म्मात्॥२९॥

अत्र॑ पितरः पित॒रोत्रात्र॑ पितरो मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वम्पित॒रोत्रात्र॑ पितरो माद-यद्ध्वम्। पि॒त॒रो॒ मा॒द॒य॒द्ध्व॒म्मा॒द॒य॒द्ध्व॒म्पि॒त॒रः पि॒त॒रो॒ मा॒द॒य॒द्ध्वँ॒रु॒य॒था॒भा॒गँ॑रु॒य॑थाभा॒ग-म्मा॑दयद्ध्वम्पितरः पितरो मादयद्ध्वँरुयथाभा॒गम्। मा॒द॒य॒द्ध्वँ॒रु॒य॒था॒भा॒गँ॑रु॒य॑थाभा॒ग-

---

1. अग्निस्त्तान् यहाँ वा.प्रा.३.७६. के अनुसार अग्निः के वाद एकाक्षर पद तान् परे होने से सकार षकार होता है। वा.प्रा.३.७९. के अनुसार षकारोत्तरवर्ती तकार टकार हो जाता है। १.९९-१०१ में तान् पद को एकाक्षर माना गया है। वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार यहाँ टकार का द्वित्व होता है।

2. नुश्चानुनासिकम् (वा. प्रा. ४.१४) के अनुसार तान् लोकात् यहाँ पर नकार अनुनासिक लकार होता है।

म्मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वँ स्वथाभागमा वृषायद्ध्वँ वृषयद्ध्वमा यथाभागम्मादयद्ध्वम्मादयद्ध्वँ-स्वथाभागमा वृषायद्ध्वम्[1]। यथाभागमा वृषायद्ध्वँ वृषयद्ध्वमा यथाभागँ स्वथाभाग-मा वृषायद्ध्वम्। यथाभागमिति यथा भागम्। आ वृषायद्ध्वम्। वृषयद्ध्वमिति वृष यद्ध्वम्॥ अमीमदन्त पितरः पितरोमीमदन्तामीमदन्त पितरो यथाभागँ स्वथा-भागम्पितरोमीमदन्तामीमदन्त पितरो यथाभागम्। पितरो यथाभागँ स्वथाभाग-म्पितरः पितरो यथाभागमावृषायिषतावृषायिषता यथाभागम्पितरः पितरो यथाभागमावृषायिषत। यथाभागमावृषायिषतावृषायिषता यथाभागँ स्वथाभाग-मावृषायिषत। यथाभागमिति यथा भागम्। आवृषायिषत। अवृषायिषतेत्य-वृषायिषत[2] ॥३०॥

नमो वो वो नमो नमो वः पितरः पितरो वो नमो नमो वः पितरः। वः पितरः पितरो वो वः पितरो रसाय रसाय पितरो वो वः पितरो रसाय। पितरो रसाय रसाय पितरः पितरो रसाय शोषाय शोषाय रसाय पितरः पितरो रसाय शोषाय। रसाय शोषाय शोषाय रसाय रसाय शोषाय जीवाय जीवाय शोषाय रसाय रसाय शोषाय जीवाय। शोषाय जीवाय जीवाय शोषाय शोषाय जीवाय स्वधायै स्वधायै जीवाय शोषाय शोषाय जीवाय स्वधायै। जीवाय स्वधायै स्वधायै जीवाय जीवाय स्वधायै घोराय घोराय स्वधायै जीवाय जीवाय स्वधायै घोराय। स्वधायै घोराय घोराय स्वधायै स्वधायै घोराय मन्यवे मन्यवे घोराय स्वधायै स्वधायै घोराय मन्यवे। घोराय मन्यवे मन्यवे घोराय घोराय मन्यवे नमो नमो मन्यवे घोराय घोराय मन्यवे नमः। मन्यवे नमो नमो मन्यवे

---

1. वृषयद्ध्वम् यहाँ वा.प्रा.३.९६. के अधिकार में पठित सूत्र ३.११२. के अनुसार यकार बाद में होने पर वृष का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

2. जनयत्या ओषधयोवृषायिषत नहि चनास्मभ्यमजावयो वलगम् (वा. प्रा. ५.३५) इस सूत्र के अनुसार अवृषायिषत इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

म॒न्यवे॒ नमो॑ वो वो॒ नमो॑ म॒न्यवे॑ म॒न्यवे॒ नमो॑ वः। नमो॑ वो वो॒ नमो॒ नमो॑ वः पितरः पितरो वो॒ नमो॒ नमो॑ वः पितरः। व्व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒र॒ः पित॑र॒ः पित॑रः पितरो वो वः पितर॒ः पित॑रः। पि॒त॒र॒ः पित॑र॒ः पित॑रः पितरः पितर॒ः पित॑रो॒ नमो॒ नम॒ः पित॑रः पितरः पितर॒ः पित॑रो॒ नम॑ः। पित॑रो॒ नमो॒ नम॒ः पित॑र॒ः पित॑रो॒ नमो॑ वो वो॒ नम॒ः पित॑र॒ः पित॑रो॒ नमो॑ वः। नमो॑ वो वो॒ नमो॒ नमो॑ वो गृ॒हान्गृ॒हान्वो॒ नमो॒ नमो॑ वो गृ॒हान्। व्वो॒ गृ॒हान्गृ॒हान्वो॑ वो गृ॒हान्नो॑ नो गृ॒हान्वो॑ वो गृ॒हान्न॑ः। गृ॒हान्नो॑ नो गृ॒हान्गृ॒हान्न॑ः पितरः पितरो नो गृ॒हान्गृ॒हा-न्न॑ः पितरः। न॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ नो॒ न॒ः पि॒त॒रो॒ द॒त्त द॒त्त पि॒त॒रो॒ नो॒ न॒ः पि॒त॒रो॒ द॒त्त। पि॒त॒रो॒ द॒त्त द॒त्त पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ द॒त्त स॒तः स॒तो द॑त्त पितरः पितरो दत्त स॒तः। द॒त्त स॒तः स॒तो द॑त्त दत्त स॒तो वो॑ वः स॒तो द॑त्त दत्त स॒तो व॑ः[1]। स॒तो वो॑ वः स॒तः स॒तो व॑ः पितरः पितरो वः स॒तः स॒तो व॑ः पितरः। व्व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒ दे॒ष्म्म॒ पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒। पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्म॒ दे॒ष्म्म॒ पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ दे॒ष्म्मै॒तदे॒तद्दे॑ष्म्म पितरः पितरो देष्म्मै॒तत्। दे॒ष्म्मै॒तदे॒तद्दे॑ष्म्म देष्म्मै॒तद्वो॑ वऽ ए॒तद्दे॑ष्म्म देष्म्मै॒तद्व॑ः। ए॒तद्वो॑ वऽ ए॒तदे॒तद्व॑ः पितरः पितरो वऽ ए॒तदे॒तद्व॑ः पितरः। व्व॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ वो॒ व॒ः पि॒त॒रो॒ व्वासो॒ व्वास॑ः पितरो वो वः पितरो॒ व्वास॑ः[2]। पि॒त॒रो॒ व्वासो॒ व्वास॑ः पितरः पितरो॒ व्वास॒ऽ आ ध॑त्त ध॒त्ता वास॑ः पितरः पितरो॒ व्वास॒ऽ आ ध॑त्त। व्वास॒ऽ आ ध॑त्त ध॒त्ता वासो॒ व्वास॒ऽ आ ध॑त्त पितरः पितरो ध॒त्ता वासो॒ व्वास॒ऽ आ ध॑त्त पितरः ॥३१॥

आ ध॑त्त। ध॒त्त पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ ध॒त्त ध॒त्त पि॒त॒रो॒ गर्ब्भ॒ङ्गर्ब्भ॑म्पितरो धत्त धत्त पितरो॒ गर्ब्भ॑म्। पि॒त॒रो॒ गर्ब्भ॒ङ्गर्ब्भ॑म्पितरः पितरो॒ गर्ब्भ॑ङ्कुमा॒रङ्कु॑मा॒रङ्गर्ब्भ॑म्पितरः

---

[1]. स॒तः व॒ः यहाँ उदात्ताच्चानुदात्तं स्वरितम् (वा.प्रा.४.१३७) से उदात्त से परवर्ती अनुदात्त स्वरित होता है।

[2]. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) इस सूत्र के अनुसार व॒ः पद यहाँ अनुदात्त है।

पितरो गर्ब्भँङ्कुमारम्। गर्ब्भँङ्कुमारङ्कुमारङ्गर्ब्भङ्गर्ब्भँङ्कुमारम्पुष्करस्रजम्पुष्करस्रज-ङ्कुमारङ्गर्ब्भङ्गर्ब्भँङ्कुमारम्पुष्करस्रजम्। कुमारम्पुष्करस्रजम्पुष्करस्रजङ्कुमारङ्कुमा-रम्पुष्करस्रजम्। पुष्करस्रजमिति पुष्कर स्रजम्॥ यथेहेह यथा यथेह पुरुषः पुरुषऽ इह यथा यथेह पुरुषः[1]। इह पुरुषः पुरुषऽ इहेह पुरुषोसदसत्पुरुषऽ इहेह पुरुषोसत्। पुरुषोसदसत्पुरुषः पुरुषोसत्। असदित्यसत्॥३२॥

ऊर्ज्जँव्वहन्तीर्व्वहन्तीरूर्ज्जमूर्ज्जँव्वहन्तीरमृतममृतँव्वहन्तीरूर्ज्जमूर्ज्जँव्वहन्तीर-मृतम्। व्वहन्तीरमृतममृतँव्वहन्तीर्व्वहन्तीरमृतङ्घृतङ्घृतममृतँव्वहन्तीर्व्वहन्तीरमृतङ्घृ-तम्। अमृतङ्घृतङ्घृतममृतममृतङ्घृतम्पयः पयो घृतममृतममृतङ्घृतम्पयः। घृतम्पयः पयो घृतङ्घृतम्पयः कीलालङ्कीलालम्पयो घृतङ्घृतम्पयः कीलालम्। पयः कीलालङ्कीलालम्पयः पयः कीलालम्परिस्रुतम्परिस्रुतङ्कीलालम्पयः पयः कीलालम्परिस्रुतम्। कीलालम्परिस्रुतम्परिस्रुतङ्कीलालङ्कीलालम्परिस्रु-तम्। परिस्रुतमिति परि स्रुतम्॥ स्वधा स्त्थ स्त्थ स्वधाः स्वधा स्त्थ तर्प्पयत तर्प्पयत स्त्थ स्वधाः स्वधा स्त्थ तर्प्पयत[2]। स्त्थ तर्प्पयत तर्प्पयत स्त्थ स्त्थ तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत स्त्थ स्त्थ तर्प्पयत मे। तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे पितॄन्पितॄन्मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे पितॄन्। मे पितॄन्पितॄन्मे मे पितॄन्। पितॄनिति पितॄन्॥३३॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे द्वितीयोध्यायः॥

---

[1]. यथा गृभोभुवोऽग्निभ्यः(वा.प्रा.२.९) के अनुसार यथा पद गृभः, भुवः तथा अग्निः के बाद होने पर सर्वानुदात्त होता है। यहाँ उक्त परिस्थिति न होने से सर्वानुदात नहीं है।

[2]. स्वधाः स्थ यहाँ पर लुङ् मुदि जित्परे (वा. प्रा. ३.१३) इस सूत्र से विसर्ग का लोप होता है।

॥तृतीयोऽध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ स॒मिधा॒ग्निम॒ग्निꣳ स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ग्निन्दु॑वस्यत दुवस्यता॒ग्निꣳ स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ग्निन्दु॑वस्यत[1]। स॒मिधेति॑ स॒म् इधा॑। अ॒ग्निन्दु॑वस्यत दुवस्यता॒ग्निम॒ग्निन्दु॑वस्यत घृ॒तैर्घृ॒तैर्दु॑वस्यता॒ग्निम॒ग्निन्दु॑वस्यत घृ॒तैः। दु॒व॒स्य॒त घृ॒तैर्घृ॒तैर्दु॑वस्यत दुवस्यत घृ॒तैर्बो॑धयत बोधयत घृ॒तैर्दु॑वस्यत दुवस्यत घृ॒तैर्बो॑धयत। घृ॒तैर्बो॑धयत बोधयत घृ॒तैर्घृ॒तैर्बो॑धय॒ताति॑थि॒मति॑थिम्बोधयत घृ॒तैर्घृ॒तैर्बो॑धय॒ताति॑थिम्। बो॒ध॒य॒ताति॑थि॒मति॑थिम्बोधयत बोधय॒ताति॑थिम्। अति॑थि॒मित्त्यति॑थिम्॥ आस्म्मि॑न्नस्म्मि॒न्नास्म्मि॑न्न्ह॒व्या ह॒व्यास्म्मि॒न्नास्म्मि॑न्न्ह॒व्या। अ॒स्म्मि॒न्न्ह॒व्या ह॒व्यास्म्मि॑न्नस्म्मिन्न्ह॒व्या जु॑होतन जुहोतन ह॒व्यास्म्मि॑न्नस्म्मिन्न्ह॒व्या जु॑होतन। ह॒व्या जु॑होतन जुहोतन ह॒व्या ह॒व्या जु॑होतन। जु॒हो॒त॒नेति॑ जुहोतन॥१॥

सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ शो॒चिषे॒ सुस॑मिद्धाय॒ सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तङ्घृ॒तꣳ शो॒चिषे॒ सुस॑मिद्धाय॒ सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तम्। सुस॑मिद्धा॒येति॒ सु स॑मिद्धाय। शो॒चिषे॑ घृ॒तङ्घृ॒तꣳ शो॒चिषे॑ शो॒चिषे॑ घृ॒तन्ती॒व्रन्ती॒व्रङ्घृ॒तꣳ शो॒चिषे॑ शो॒चिषे॑ घृ॒तन्ती॒व्रम्। घृ॒तन्ती॒व्रन्ती॒व्रङ्घृ॒तङ्घृ॒तन्ती॒व्रञ्जु॑होतन जुहोतन ती॒व्रङ्घृ॒तङ्घृ॒तन्ती॒व्रञ्जु॑होतन। ती॒व्रञ्जु॑होतन जुहोतन ती॒व्रन्ती॒व्रञ्जु॑होतन। जु॒हो॒त॒नेति॑ जुहोतन॥ अ॒ग्नये॑ जा॒तवे॑दसे जा॒तवे॑दसे॒ग्नये॒ग्नये॑ जा॒तवे॑दसे। जा॒तवे॑दस॒ऽ इति॑ जा॒त ब्वे॑दसे॥२॥

तन्त्वा॑ त्वा॒ तन्तन्त्वा॑ स॒मिद्भिः॑ स॒मिद्भि॑स्त्वा॒ तन्तन्त्वा॑ स॒मिद्भिः॑। त्वा॒ स॒मिद्भिः॑ स॒मिद्भि॑स्त्वा त्वा स॒मिद्भि॑रङ्गिरोङ्गिरः स॒मिद्भि॑स्त्वा त्वा स॒मिद्भि॑रङ्गिरः। स॒मिद्भि॑रङ्गिरोङ्गिरः स॒मिद्भिः॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरो घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑ङ्गिरः स॒मिद्भिः॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरो घृ॒तेन॑। स॒मिद्भि॒रिति॑ स॒मित् भिः॑। अ॒ङ्गि॒रो॒ घृ॒तेन॑ घृ॒तेना॑ङ्गिरोङ्गिरो घृ॒तेन॑ ब्वर्द्धयामसि ब्वर्द्धयामसि घृ॒तेना॑ङ्गिरोङ्गिरो घृ॒तेन॑ ब्वर्द्धयामसि। घृ॒तेन॑ ब्वर्द्धयामसि

---

[1]. अग्निम् यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार गकार का द्वित्व होता है।

व्वर्द्धयामसि घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ व्वर्द्धयामसि। व्व॒र्द्ध॒या॒म॒सीति॑ वर्द्धयामसि॥ बृ॒हच्छो॑च शोच बृहद् बृ॒हच्छो॑चा यविष्ठ्य यविष्ठ्य शोच बृहद् बृ॒हच्छो॑चा यविष्ठ्य[1]। शो॒चा॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒ शो॒च॒ शो॒चा॒ य॒वि॒ष्ठ्य॒। य॒वि॒ष्ठ्येति॑ यविष्ठ्य॥३॥

उप॑ त्वा॒ त्वोपोप॑ त्वाग्ग्ने॒ग्ग्ने॒ त्वोपोप॑ त्वाग्ग्ने। त्वा॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒ त्वा॒ त्वा॒ग्ग्ने॒ ह॒वि-ष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीरग्ग्ने त्वा त्वाग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीः। अ॒ग्ग्ने॒ ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीर-ग्ग्नेग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीं॑र्घृ॒ताचीं॑र्ह॒विष्म्म॑तीरग्ग्नेग्ग्ने ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीः॑[2]। ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीं॑र्घृ॒ताचीं॑र्ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीं॑र्य्यन्तु यन्तु घृ॒ताचीं॑र्ह॒वि-ष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीर्घृ॒ताचीं॑र्य्यन्तु। घृ॒ताचीं॑र्य्यन्तु यन्तु घृ॒ताचीं॑र्घृ॒ताचीं॑र्य्यन्तु हर्य्यत हर्य्यत यन्तु घृ॒ताचीं॑र्घृ॒ताचीं॑र्य्यन्तु हर्य्यत। य॒न्तु॒ ह॒र्य्य॒त॒ ह॒र्य्य॒त॒ य॒न्तु॒ य॒न्तु॒ ह॒र्य्य॒त॒। ह॒र्य्य॒तेति॑ हर्य्यत॥ जु॒षस्व॑ स॒मिध॑ः स॒मिधो॑ जु॒षस्व॑ जु॒षस्व॑ स॒मिधो॒ मम॒ मम॑ स॒मिधो॑ जु॒षस्व॑ जु॒षस्व॑ स॒मिधो॒ मम॑। स॒मिधो॒ मम॒ मम॑ स॒मिध॑ः स॒मिधो॒ मम॑। स॒मिध॒ऽ इति॑ स॒म् इध॑ः। ममेति॒ मम॑॥४॥

भूर्भुवो॒ भुवो॒ भूर्भूर्भुव॒ः स्व॒ः स्व॒र्भुवो॒ भूर्भूर्भुव॒ः स्व॒ः। भुव॒ः स्व॒ः स्व॒र्भुवो॒ भुव॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व॒ स्व॒र्भुवो॒ भुव॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व। स्व॒र्द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व॒ स्व॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व भू॒म्म्ना भू॒म्म्ना द्यौरि॑व॒ स्व॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व भू॒म्म्ना। द्यौरि॑व भू॒म्म्ना भू॒म्म्ना द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व भू॒म्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ भू॒म्म्ना द्यौरि॑व॒ द्यौरि॑व भू॒म्म्ना पृ॑थि॒वीव॑। द्यौरि॒वेति॒ द्यौः इ॑व। भू॒म्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ भू॒म्म्ना भू॒म्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ व्व॒रि॒म्म्णा व्व॑रि॒म्म्णा पृ॑थि॒वीव॑ भू॒म्म्ना भू॒म्म्ना पृ॑थि॒वीव॑ व्व॒रि॒म्म्णा। पृ॒थि॒वीव॑ व्व॒रि॒म्म्णा व्व॑रि॒म्म्णा पृ॑थि॒वीव॑ पृथि॒वीव॑ व्व॒रि॒म्म्णा। पृ॒थि॒वीवेति॑ पृथि॒वी इ॑व[3]।

---

1. शोच यविष्ठ्य यहाँ वा.प्रा.३.११२. के अनुसार शोच का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

2. हविष्म्मतीर्घृताची: यहाँ पर परं तु रेफहकाराभ्याम् (वा. प्रा. ४.१०२) इस सूत्र से रेफ से परवर्ती घकार की द्विरुक्ति प्राप्त है परन्तु ऋवर्णे (वा. प्रा. ४.११३) से उसका निषेध है।

3. वा.प्रा.५.१८. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

ब्वरिम्म्णेतिं वरिम्म्णा॥ तस्यांस्त्ते ते तस्यास्त्तस्यांस्त्ते पृथिवि पृथिवि ते तस्या-स्त्तस्यांस्त्ते पृथिवि। ते पृथिवि पृथिवि ते ते पृथिवि देवयजनि देवयजनि पृथिवि ते ते पृथिवि देवयजनि। पृथिवि देवयजनि देवयजनि पृथिवि पृथिवि देवयजनि पृष्टे पृष्टे दैवयजनि पृथिवि पृथिवि देवयजनि पृष्टे। देवयजनि पृष्टे पृष्टे दैवयजनि देवयजनि पृष्टेग्ग्निमग्ग्निम्पृष्टे दैवयजनि देवयजनि पृष्टेग्ग्निम्। देवयजनीतिं देव ष्यजनि। पृष्टेग्ग्निमग्ग्निम्पृष्टे पृष्टेग्ग्निमंन्नादमंन्नादमग्ग्निम्पृष्टे पृष्टेग्ग्निमंन्नादम्। अग्ग्निमंन्नादमंन्नादमग्ग्निमग्ग्निमंन्नादमन्नाद्यांयान्नाद्यांयान्नादमग्ग्निमग्ग्निमंन्नादम-न्नाद्यांय। अन्नादमन्नाद्यांयान्नाद्यांयान्नादमंन्नादमन्नाद्याया दंधे दधुऽ आन्नाद्यांया-न्नादमंन्नादमन्नाद्याया दंधे। अन्नादमित्त्यंन्न अदम्। अन्नाद्याया दंधे दधुऽ आन्ना-द्यांयान्नाद्याया दंधे। अन्नाद्यायेत्त्यंन्न अद्यांय। आ दंधे। दधुऽ इतिं दधे॥५॥

आयमयमायङ्गौग्गौरयमायङ्गौः। अयङ्गौग्गौरयमयङ्गौः पृश्निः पृश्नि-ग्गौरयमयङ्गौः पृश्निंः। गौः पृश्निः पृश्निग्गौग्गौः पृश्निंरक्क्रमीदक्क्रमी-त्पृश्निग्गौग्गौः पृश्निंरक्क्रमीत्। पृश्निंरक्क्रमीदक्क्रमीत्पृश्निः पृश्निंरक्क्रमीदसंद-दसंददक्क्रमीत्पृश्निः पृश्निंरक्क्रमीदसंदत्। अक्क्रमीदसंददसंददक्क्रमीदक्क्रमीदसंद-न्मातरंम्मातरमसंददक्क्रमीदक्क्रमीदसंदन्मातरंम्। असंदन्मातरंम्मातरमसंददसंद-न्मातरंम्पुरः पुरो मातरमसंददसंदन्मातरंम्पुरः। मातरंम्पुरः पुरो मातरं-म्मातरंम्पुरः। पुरऽ इतिं पुरः॥ पितरंञ्च च पितरंम्पितरंञ्च प्प्रयन्प्रयँश्च्च पितरंम्पितरंञ्च प्प्रयन्। च प्प्रयन्प्रयँश्च्च च प्प्रयन्त्स्वः स्वंः प्प्रयँश्च्च च प्प्रयन्त्स्वंः। प्रयन्त्स्वः स्वंः प्प्रयन्प्रयन्त्स्वंः। प्रयन्निति प्प्र यन्। स्वरिति स्वंः॥६॥

अ॒न्तश्च॑रति चरत्य॒न्तर॒न्तश्च॑रति रोच॒ना रो॑च॒ना च॑रत्य॒न्तर॒न्तश्च॑रति रोच॒ना[1]। अ॒न्तरित्य॒न्तः। च॒र॒ति॒ रो॒च॒ना रो॑च॒ना च॑रति चरति रोच॒नास्यास्य रो॑च॒ना च॑रति चरति रोच॒नास्य। रो॒च॒नास्यास्य रो॑च॒ना रो॑च॒नास्य प्प्रा॒णात्प्रा॒णाद॒स्य रो॑चना रो॑च॒नास्य प्प्रा॒णात्। अ॒स्य प्प्रा॒णात्प्रा॒णाद॒स्यास्य प्प्रा॒णाद॑पान॒त्य॒पान॒ती प्प्रा॒णाद॒स्यास्य प्प्रा॒णाद॑पान॒ती[2]। प्रा॒णाद॑पान॒त्य॒पान॒ती प्प्रा॒णात्प्रा॒णाद॑पान॒ती। अ॒पा॒न॒तीत्य॑प अ॒न॒ती॥ व्य॑क्ख्यदक्ख्य॒द्वि व्य॑क्ख्यन्न्महि॒षो म॑हि॒षो॒क्ख्य॒द्वि व्य॑क्ख्यन्न्महि॒षः। अ॒क्ख्य॒न्न्म॒हि॒षो म॑हि॒षो॒क्ख्यदक्ख्यन्न्महि॒षो दिव॒न्दिव॑म्म्महि॒षो॒क्ख्यदक्ख्यन्न्महि॒षो दिव॑म्। म॒हि॒षो दिव॒न्दिव॑म्म्महि॒षो म॑हि॒षो दिव॑म्। दिव॒मिति॒ दिव॑म्॥७॥

त्रि॒ꣳशद्धाम॒ धाम॑ त्रि॒ꣳशत्त्रि॒ꣳशद्धाम॒ व्वि वि धाम॑ त्रि॒ꣳशत्त्रि॒ꣳशद्धाम॒ व्वि। धाम॒ व्वि वि धाम॒ धाम॒ व्वि रा॑जति राजति॒ व्वि धाम॒ धाम॒ व्वि रा॑जति। व्वि रा॑जति राजति॒ व्वि वि रा॑जति॒ व्वाग्ग्वाग्ग्रा॑जति॒ व्वि वि रा॑जति॒ व्वाक्[3]। रा॒ज॒ति॒ व्वाग्ग्वाग्ग्रा॑जति राजति॒ व्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑ पत॒ङ्गाय॒ व्वाग्ग्रा॑जति राजति॒ व्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑। व्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑ पत॒ङ्गाय॒ व्वाग्ग्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑ धीयते धीयते पत॒ङ्गाय॒ व्वाग्ग्वाक्प॑त॒ङ्गाय॑ धीयते। प॒त॒ङ्गाय॑ धीयते धीयते पत॒ङ्गाय॑ पत॒ङ्गाय॑ धीयते। धी॒य॒त॒ऽ इति॑ धीयते॥ प्रति॒ व्वस्तो॒र्व्वस्तो॒ꣳ प्प्रति॒ प्प्रति॒ व्वस्तो॒रहाह॒ व्वस्तो॒ꣳ प्प्रति॒ प्प्रति॒ व्वस्तो॒रह॑। व्वस्तो॒रहाह॒ व्वस्तो॒र्व्वस्तो॒रह॒ द्द्युभि॒र्द्द्युभि॒रह॒ व्वस्तो॒र्व्वस्तो॒रह॒ द्द्युभि॑ः। अह॒ द्द्युभि॒र्द्द्युभि॒रहाह॒ द्द्युभि॑ः। द्द्युभि॒रिति॒ द्द्यु भि॑ः॥८॥

---

1. अन्तरनाद्युदात्तम्(वा.प्रा.१.१६२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ आद्युदात्त न होने से अन्तः पद रिफित है।

2. वा. प्रा. २.६१ के अनुसार यहाँ अ॒स्य पद अन्तोदात्त है।

3. वाक् राजति यहाँ स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरधौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से धि संज्ञक वर्ण(र) बाद में होने से अपञ्चम स्पर्श(क) तृतीय(ग) होता है।

अ॒ग्निर्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निर॒ग्निर्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निर॒ग्नि-र्ज्योति॒र्ज्योति॑ः। ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निर॒ग्निर्ज्यो-ति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निः। ज्योति॑र॒ग्निर॒ग्निर्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निः स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्निर्ज्योति॒र्ज्योति॑र॒ग्निः स्वाहा॑[1]। अ॒ग्निः स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्निर॒ग्निः स्वाहा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ग्निर॒ग्निः स्वाहा॒ सूर्य्य॑ः। स्वाहा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यो॒ ज्योति॑ः। सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॑ः। ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॑ः। ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒-र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॑। सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ अ॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ग्निर॒ग्नि-र्व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ग्निर॒ग्निर्व्वर्च्चो॒ ज्योति॑ः[2]। व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्च॑ः। ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्यो-ति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्च॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्च॒ः स्वाहा॑। व्वर्च्च॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वर्च्चो॒ व्वर्च्च॒ः स्वाहा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ व्वर्च्चो॒ व्वर्च्च॒ः स्वाहा॒ सूर्य्य॑ः। स्वाहा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यो॒ व्वर्च्चो॒ व्वर्च्च॒ः सूर्य्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यो॒ व्वर्च्च॑ः। सूर्य्यो॒ व्वर्च्चो॒ व्वर्च्च॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्च॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॑ः। व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्व्वर्च्च॑ः। ज्योति॒र्व्वर्च्चो॒ व्वर्च्चो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च्च॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वर्च्चो॒

[1]. अविकारं शाकल्यः शषसेषु (वा. प्रा. ३.१०) विसर्ग से परे श, ष एवं स होने पर शाकल्याचार्य के अनुसार विसर्ग का विकार नहीं होता। प्रत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः (वा. प्रा. ३.९) इस सूत्र की प्रवृत्ति माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है।

[2]. व्वर्च्चः यहाँ वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार चकार का द्वित्व विहित है।

ज्योति॒र्ज्योति॒र्व्वर्च॒ः स्वाहा॑। व्वर्च॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ व्वर्चो॒ व्वर्च॒ः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॑ः। सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॑ः। सूर्य्यो॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ ज्योति॒ः सूर्य्य॒ः सूर्य्यो॒ ज्योति॒ः स्वाहा॑। ज्योति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ ज्योति॒र्ज्योति॒ः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥९॥

स॒जूर्द्दे॒वेन॑ दे॒वेन॑ स॒जूः स॒जूर्द्दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॑वि॒त्रा दे॒वेन॑ स॒जूः स॒जूर्द्दे॒वेन॑ सवि॒त्रा। स॒जूरिति॑ स॒ जूः। दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॑वि॒त्रा दे॒वेन॑ दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जूः स॒जूः स॑वि॒त्रा दे॒वेन॑ दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जूः। स॒वि॒त्रा स॒जूः स॒जूः स॑वि॒त्रा स॑वि॒त्रा स॒जू रात्र्या॒ रात्र्या॑ स॒जूः स॑वि॒त्रा स॑वि॒त्रा स॒जू रात्र्या॑[1]। स॒जू रात्र्या॒ रात्र्या॑ स॒जूः स॒जू रात्र्येन्द्र॑वत्त्येन्द्र॑वत्या॒ रात्र्या॑ स॒जूः स॒जू रात्र्येन्द्र॑वत्या। स॒जूरिति॑ स॒ जूः। रात्र्येन्द्र॑व॒त्त्येन्द्र॑वत्या॒ रात्र्या॒ रात्र्येन्द्र॑वत्या। इन्द्र॑व॒त्त्येतीन्द्र॑ व्वत्या॥ जु॒षा॒णोऽ अ॒ग्ग्निर॒ग्ग्निर्ज्जु॑षा॒णो जु॑षा॒णोऽ अ॒ग्ग्निर्व्वे॑तु व्वेत्त्व॒ग्ग्निर्ज्जु॑षा॒णो जु॑षा॒णोऽ अ॒ग्ग्निर्व्वे॑तु। अ॒ग्ग्निर्व्वे॑तु व्वेत्त्व॒ग्ग्निर॒ग्ग्निर्व्वे॑तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ व्वेत्त्व॒ग्ग्निर॒ग्ग्निर्व्वे॑तु॒ स्वाहा॑। व्वे॒तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ व्वेतु व्वे॒तु स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ उ॒षसा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्य॑ऽ उ॒षसो॒षसा॒ सूर्य्य॑ः॥ सूर्य्य॒ऽ इति॒ सूर्य्य॑ः॥१०॥

उ॒प॒प्प्र॒यन्तो॑ऽ अद्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रमु॑पप्प्र॒यन्त॑ऽ उपप्प्रयन्तो॑ऽ अद्ध्व॒रम्मन्त्र॒म्मन्त्र॑मद्ध्व॒रमु॑पप्प्रयन्त॑ऽ उपप्प्र॒यन्तो॑ऽ अद्ध्व॒रम्मन्त्र॑म्[2]। उ॒प॒प्प्र॒यन्त॒ऽ इत्त्यु॑प प्र॒यन्त॑ः। अ॒द्ध्व॒रम्मन्त्र॒म्मन्त्र॑मद्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रम्मन्त्र॑व्वोचेम व्वोचेम॒ मन्त्र॑मद्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रम्मन्त्र॑व्वोचेम। मन्त्र॑-

[1]. सजूः राञ्या यहाँ भाष्युपधश्च रिद्विसर्जनीयः(वा.प्रा.४.३५) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत आये रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा(वा.प्रा.४.३६) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. प्रकृतिभाव ऋक्षु (वा. प्रा. ४.८२) के अनुसार यहाँ उपप्रयन्तो का ओकार का प्रकृतिभाव से रहता है।

ब्वोचेम ब्वोचेम॒ मन्त्र॒म्मन्त्रँब्वोचेमा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ ब्वोचेम॒ मन्त्र॒म्मन्त्रँब्वोचेमा॒ग्ग्नये॑। ब्वो॒चे॒मा॒-ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ ब्वोचेम ब्वोचेमा॒ग्ग्नये॑। अ॒ग्ग्नय॒ऽ इत्त्य॒ग्ग्नये॑॥ आ॒रेऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मेऽ आ॒रऽ आ॒रेऽ अ॒स्म्मे च॑ चा॒स्म्मेऽ आ॒रऽ आ॒रेऽ अ॒स्म्मे च॑। अ॒स्म्मे च॑ चा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे च॑ शृण्ण्व॒ते शृ॑ण्ण्व॒ते चा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे च॑ शृण्ण्व॒ते। अ॒स्म्मेऽ इत्त्य॒स्म्मे। च॒ शृ॒ण्ण्व॒ते शृ॑ण्ण्व॒ते च॑ च शृण्ण्व॒ते। शृ॒ण्ण्व॒तऽ इति॑ शृण्ण्व॒ते॥११॥

अ॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा मू॒र्द्धाग्ग्निर॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा दि॒वो दि॒वो मू॒र्द्धाग्ग्निर॒ग्ग्निर्म्मू॒र्द्धा दि॒वः। मू॒र्द्धा दि॒वो दि॒वो मू॒र्द्धा मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्क॒कुद्दि॒वो मू॒र्द्धा मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्। दि॒वः क॒कुत्क॒कुद्दि॒वो दि॒वः क॒कुत्पति॒ः पति॑ः क॒कुद्दि॒वो दि॒वः क॒कुत्पति॑ः। क॒कु-त्पति॒ः पति॑ः क॒कुत्क॒कुत्पति॑ः पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्याः पति॑ः क॒कुत्क॒कुत्पति॑ः पृथि॒व्याः। पति॑ः पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्याः पति॒ः पति॑ः पृथि॒व्याऽ अ॒यम॒यम्पृ॑थि॒व्याः पति॒ः पति॑ः पृथि॒व्याऽ अ॒यम्। पृ॒थि॒व्याऽ अ॒यम॒यम्पृ॑थि॒व्याः पृ॑थि॒व्याऽ अ॒यम्। अ॒यमित्त्य॒यम्॥ अ॒पाꣳ रेता॑ꣳसि॒ रेता॑ꣳस्य॒पाम॒पाꣳ रेता॑ꣳसि जिन्न्वति जिन्न्वति॒ रेता॑ꣳस्य॒पाम॒पाꣳ रेता॑ꣳसि जिन्न्वति। रेता॑ꣳसि जिन्न्वति जिन्न्वति॒ रेता॑ꣳसि॒ रेता॑ꣳसि जिन्न्वति। जि॒न्न्व॒तीति॑ जिन्न्वति॥१२॥

उ॒भा वाँब्वामु॒भोभा वा॑मिन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्राग्ग्नी वामु॒भोभा वा॑मिन्द्राग्ग्नी। ब्वा॒मि॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ वाँ॒ब्वा॒मि॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ आ॒हु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नी वाँ-ब्वामिन्द्राग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्यै॑। इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ आ॒हु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्रा-ग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भोभाहु॒वद्ध्या॑ऽ इन्द्राग्ग्नीऽ इन्द्राग्ग्नीऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा। इ॒न्द्रा॒ग्ग्नी॒ऽ इती॑न्द्राग्ग्नी। आ॒हु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भोभाहु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा राध॑सो॒ राध॑सऽ उ॒भाहु॒वद्ध्या॑ऽ आहु॒वद्ध्या॑ऽ उ॒भा राध॑सः। आ॒हु॒वद्ध्या॒ऽ इत्त्या॑ हु॒वद्ध्यै॑।

उ॒भा राध॑सो॒ राध॑सऽ उ॒भोभा राध॑सः स॒ह स॒ह राध॑सऽ उ॒भोभा राध॑सः स॒ह[1]। राध॑सः स॒ह स॒ह राध॑सो॒ राध॑सः स॒ह मा॑दु॒यद्ध्यै मादु॒यद्ध्यै स॒ह राध॑सो॒ राध॑सः स॒ह मा॑दु॒यद्ध्यै॑। स॒ह मा॑दु॒यद्ध्यै मादु॒यद्ध्यै स॒ह स॒ह मा॑दु॒यद्ध्यै॑। मा॒दु॒यद्ध्या॒ऽ इति॑ मादु॒यद्ध्यै॑॥ उ॒भा दा॒तारौ॑ दा॒तारा॑ऽ उ॒भोभा दा॒तारा॑वि॒षामि॒षान्दा॒तारा॑ऽ उ॒भोभा दा॒तारा॑वि॒षाम्। दा॒तारा॑वि॒षामि॒षान्दा॒तारौ॑ दा॒तारा॑वि॒षाꣳ र॑यी॒णाꣳ र॑यी॒णामि॒षा-न्दा॒तारौ॑ दा॒तारा॑वि॒षाꣳ र॑यी॒णाम्। इ॒षाꣳ र॑यी॒णाꣳ र॑यी॒णामि॒षामि॒षाꣳ र॑यी॒णा-मु॒भोभा र॑यी॒णामि॒षामि॒षाꣳ र॑यी॒णामु॒भा। र॒यी॒णामु॒भोभा र॑यी॒णाꣳ र॑यी॒णामु॒भा व्वाज॑स्य॒ व्वाज॑स्यो॒भा र॑यी॒णाꣳ र॑यी॒णामु॒भा व्वाज॑स्य। उ॒भा व्वाज॑स्य॒ व्वाज॑स्यो॒-भोभा व्वाज॑स्य सा॒तये॑ सा॒तये॒ व्वाज॑स्यो॒भोभा व्वाज॑स्य सा॒तये॑। व्वाज॑स्य सा॒तये॑ सा॒तये॒ व्वाज॑स्य॒ व्वाज॑स्य सा॒तये॑ हुवे हुवे सा॒तये॒ व्वाज॑स्य॒ व्वाज॑स्य सा॒तये॑ हुवे। सा॒तये॑ हुवे हुवे सा॒तये॑ सा॒तये॑ हुवे वाँ॑व्वाꣳ हुवे सा॒तये॑ सा॒तये॑ हुवे वाम्। हु॒वे॒ वाँ॒व्वा॒ꣳ हु॒वे॒ हु॒वे॒ वा॒म्। व्वा॒मिति॑ वाम्॥१३॥

अ॒यन्ते॑ ते॒यम॒यन्ते॒ योनि॒र्ऋत्वियो॒ योनि॑स्ते॒यम॒यन्ते॒ योनि॑ः। ते॒ योनि॒र्ऋत्वियो॒ योनि॑स्ते ते॒ योनि॑र्ऋ॒त्विय॑ऽ ऋ॒त्वियो॒ योनि॑स्ते ते॒ योनि॑र्ऋ॒त्विय॑ः[2]। योनि॑र्ऋ॒त्विय॑ऽ ऋ॒त्वि-यो॒ योनि॒र्ऋत्वियो॒ योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒ यतो॒ यत॑ः ऋ॒त्वियो॒ योनि॒र्ऋत्वियो॒ योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒ यत॑ः[3]। ऋ॒त्वियो॒ यतो॒ यत॑ऽ ऋ॒त्विय॑ऽ ऋ॒त्वियो॒ यतो॑ जा॒तो जा॒तो यत॑ऽ ऋ॒त्विय॑ऽ

---

[1]. विसर्जनीय व्यञ्जन में परिगणित है स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) इस सूत्र से प्राप्त विसर्ग के द्वित्व का निषेध विसर्जनीयः (वा. प्रा. ४.११६) इस सूत्र से होता है। वा. प्रा. १.१५९ के अनुसार उत्तर शास्त्र बलवान् होता है। वा.प्रा.३.१०. के अनुसार यहाँ विसर्जनीय का विकार नहीं होता है।

[2]. याज्ञवल्क्य शिक्षा में पाँच स्वरभक्तियों का उल्लेख है, उनमें रेफ एवं ऋकार के योग का वर्णन नहीं है, जबकि प्रतिज्ञासूत्र २. में यह निर्दिष्ट है। गौड़ संप्रदाय में संहिता में स्वरभक्ति के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है। दाक्षिणात्य संप्रदाय के वैदिक महर्षि याज्ञवल्क्य के स्वरभक्ति विषयक उपदेश को संहिता में ग्रहण करते हैं। उनके पुत्र द्वारा उपदिष्ट विशिष्ट स्वरभक्ति को केवल ब्राह्मण में चरितार्थ करते हैं।

[3]. यतो गतौ(वा.प्रा.२.५८) इस सूत्र के अनुसार गति अर्थ का वाचक यतः पद अन्तोदात्त होता है, यहाँ गत्यर्थक न होने से यह पद अन्तोदात्त नहीं है।

ऋत्वियो यतो जातः। यतो जातो जातो यतो यतो जातोऽ अरोचथाऽ अरोचथा जातो यतो यतो जातोऽ अरोचथाः। जातोऽ अरोचथाऽ अरोचथा जातो जातोऽ अरोचथाः। अरोचथाऽ इत्यरोचथाः॥ तञ्जानञ्जानँस्तन्तञ्जानन्नग्ग्नेग्ग्ने जानँस्तन्तञ्जानन्नग्ग्ने। जानन्नग्ग्नेग्ग्ने जानञ्जानन्नग्ग्नऽ आ रोह रोहाग्ग्ने जानञ्जानन्नग्ग्नऽ आ रोह। अग्ग्नऽ आ रोह रोहाग्ग्नेग्ग्नऽ आ रोहाथाथ रोहाग्ग्नेग्ग्नऽ आ रोहाथ। आ रोह। रोहाथाथ रोह रोहाथा नो नोथ रोह रोहाथा नः। अथा नो नोथाथा नो वर्द्धय वर्द्धय नोथाथा नो वर्द्धय। नो वर्द्धय वर्द्धय नो नो वर्द्धया रयिꣳ रयिँवर्द्धय नो नो वर्द्धया रयिम्। वर्द्धया रयिꣳ रयिँवर्द्धय वर्द्धया रयिम्। रयिमिति रयिम्॥१४॥

अयमिहेहायमयमिह प्प्रथमः प्प्रथमऽ इहायमयमिह प्प्रथमः। इह प्प्रथमः प्प्रथमऽ इहेह प्प्रथमो धायि धायि प्प्रथमऽ इहेह प्प्रथमो धायि। प्रथमो धायि धायि प्प्रथमः प्प्रथमो धायि धातृभिर्द्धातृभिर्द्धायि प्प्रथमः प्प्रथमो धायि धातृभिः। धायि धातृभिर्द्धातृभिर्द्धायि धायि धातृभिर्होता होता धातृभिर्द्धायि धायि धातृभिर्होता। धातृभिर्होता होता धातृभिर्द्धातृभिर्होता यजिष्ठो यजिष्ठो होता धातृभिर्द्धातृभिर्होता यजिष्ठः। धातृभिरिति धातृ भिः[1]। होता यजिष्ठो यजिष्ठो होता होता यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेषु यजिष्ठो होता होता यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेषु। यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेषु यजिष्ठो यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यऽ ईड्ड्योद्ध्वरेषु यजिष्ठो यजिष्ठोऽ अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यः। अद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यऽ ईड्ड्योद्ध्वरेष्ष्वद्ध्वरेष्ष्वीड्ड्यः। ईड्ड्यऽ इतीड्ड्यः॥ यमप्प्नवानोप्प्नवानो यँय्यमप्प्नवानो भृगवो भृगवोप्प्नवानो यँय्यमप्प्नवानो भृगवः। अप्प्नवानो भृगवो भृगवोप्प्नवानोप्प्नवानो भृगवो व्विरुरुचुर्व्विरुरुचुर्भृगवोप्प्नवानोप्प्नवानो भृगवो व्विरुरुचुः। भृगवो व्विरुरुचुर्व्विरुरुचुर्भृगवो भृगवो व्विरुरुचुर्व्वनेषु व्वनेषु व्विरुरुचुर्भृगवो भृगवो व्विरुरुचुर्व्वनेषु। व्विरुरुचुर्व्वनेषु व्वनेषु

[1]. वा.प्रा.१.८८. के अनुसार ऋकार तथा णकार सावग्रह पद के पूर्व-पद के अन्त में ही आते हैं।

व्विरु॒रु॒चुर्व्विरु॑रु॒चुर्व्वने॑षु चि॒त्रश्चि॒त्रँव्वने॑षु व्विरु॒रु॒चुर्व्विरु॑रु॒चुर्व्वने॑षु चि॒त्रम्। व्वि॒रु॒रु॒चुरिति॑ वि रु॒रु॒चुः॑। व्वने॑षु चि॒त्रश्चि॒त्रँव्वने॑षु व्वने॑षु चि॒त्रँव्वि॒भ्वँव्वि॒भ्व॒ञ्चि॒त्रँव्वने॑षु व्वने॑षु चि॒त्रँव्वि॒भ्व॒म्। चि॒त्रँव्वि॒भ्वँव्वि॒भ्व॒ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रँव्वि॒भ्वँव्वि॒शेवि॑शे व्वि॒शेवि॑शे व्वि॒भ्व॒ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रँव्वि॒भ्वँव्वि॒शेवि॑शे। व्वि॒भ्वँव्वि॒शेवि॑शे व्वि॒शेवि॑शे व्वि॒भ्वँव्वि॒भ्वँव्वि॒शेवि॑शे। व्वि॒भ्व॒मिति॑ वि॒ भ्व॒म्। व्वि॒शेवि॑श॒ऽ इति॑ वि॒शे व्वि॑शे॥१५॥

अ॒स्य प्प्र॒त्नाम्प्र॒त्नाम॒स्यास्य प्प्र॒त्नाम॒न्वनु॑ प्प्र॒त्नाम॒स्यास्य प्प्र॒त्नाम॒नु॑[1]। प्र॒त्नाम॒न्वनु॑ प्प्र॒त्नाम्प्र॒त्नाम॒नु द्यु॒तन्द्यु॒तम॒नु॑ प्प्र॒त्नाम्प्र॒त्नाम॒नु द्यु॒तम्। अनु॒ द्यु॒तन्द्यु॒तम॒न्वनु॒ द्यु॒तᳬ शु॒क्रᳬ शु॒क्रन्द्यु॒तम॒न्वनु॒ द्यु॒तᳬ शु॒क्रम्। द्यु॒तᳬ शु॒क्रᳬ शु॒क्रन्द्यु॒तन्द्यु॒तᳬ शु॒क्रन्दु॑दुहे दुदुहे शु॒क्रन्द्यु॒तन्द्यु॒तᳬ शु॒क्रन्दु॑दुहे। शु॒क्रन्दु॑दुहे दुदुहे शु॒क्रᳬ शु॒क्रन्दु॑दु॒हे॒ऽ अह्र॒योऽह्र॑यो दुदुहे शु॒क्रᳬ शु॒क्रन्दु॑दु॒हे॒ऽ अह्र॑यः[2]। दु॒दु॒हे॒ऽ अह्र॒योऽह्र॑यो दुदुहे दु॒दु॒हे॒ऽ अह्र॑यः। अह्र॑य॒ऽ इत्यह्र॑यः॥ पय॑ः सहस्र॒साᳬ सँह॑स्र॒साम्पय॒ः पय॑ः सहस्र॒सामृषि॒मृषि॑ᳬ सहस्र॒साम्पय॒ः पय॑ः सहस्र॒सामृषि॑म्। स॒ह॒स्र॒सामृषि॒मृषि॑ᳬ सहस्र॒साᳬ सँह॑स्र॒सामृषि॑म्। स॒ह॒स्र॒सामिति॑ सहस्र॒ साम्। ऋषि॒मित्त्यृषि॑म्॥१६॥

त॒नू॒पा॒ऽ अ॑ग्नेऽग्ने तनूपास्त॑नूपा॒ऽ अ॑ग्नेस्यस्यग्ने तनूपास्त॑नूपा॒ऽ अ॑ग्नेसि। त॒नू॒पा॒ऽ इति॑ तनू॒ पाः॑। अ॒ग्ने॒स्य॒स्य॒ग्ने॒ग्ने॒सि॒ त॒न्व॒न्त॒न्व॒मस्यग्नेग्नेसि त॒न्व॒म्[3]। अ॒सि॒ त॒न्व॒न्त॒न्व॒मस्यसि त॒न्व॒म्मे मे त॒न्व॒मस्यसि त॒न्व॒म्मे। त॒न्व॒म्मे मे त॒न्व॒न्त॒न्व॒म्मे पाहि पाहि मे त॒न्व॒न्त॒न्व॒म्मे पाहि। मे॒ पा॒हि॒ पा॒हि॒ मे॒ मे॒ पा॒ह्य॒ायु॒र्द्दा॒ऽ

---

[1]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार यहाँ अस्य पद अन्तोदात्त है।

[2]. दुदुहे एवं अह्रयः तथा तत्सदृश स्थलों में दुदुर् हे एवं अर् ह्रयः ऐसा उच्चारण करने पर स्वरभक्ति अपरिहार्य होगी अर्थात् दुदुरेहे एवं अरेह्रयः यह उच्चारण होगा जो कि अविवक्षित है।

[3]. एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्य (वा. प्रा. १.१११) एक पद में यकार अथवा वकार से युक्त अनुदात्तपूर्व स्वरित जात्य कहलाता है। यहाँ त॒न्व॒म् में व का अकार जात्य स्वरित है।

आ॑यु॒र्दा॒ः पा॑हि मे मे पाह्यायु॒र्दा॒ः। पा॒ह्या॒यु॒र्दा॒ऽ आ॑यु॒र्दा॒ः पा॑हि पाह्यायु॒र्दा॒ऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्नऽ आयु॒र्दा॒ः पा॑हि पाह्यायु॒र्दा॒ऽ अ॑ग्ग्ने। आ॒यु॒र्दा॒ऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्नऽ आयु॒र्दा॒ऽ आ॑यु॒र्दा॒ऽ अ॑ग्ग्नेस्यस्यग्ग्नऽ आयु॒र्दा॒ऽ आ॑यु॒र्दा॒ऽ अ॑ग्ग्नेसि। आ॒यु॒र्दा॒ऽ इत्या॑यु॒ः दाः। अ॒ग्ग्ने॒स्य॒स्य॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒स्यायु॒राउं॑रस्यग्ग्नेग्ग्ने॒स्यायुं॑ः। अ॒स्यायु॒रायुं॑रस्य॒स्यायुं॑म्र्मे म॒ऽ आयुं॑रस्य॒स्यायुं॑म्र्मे। आयुं॑म्र्मे म॒ऽ आयु॒रायुं॑म्र्मे देहि देहि म॒ऽ आयु॒रायुं॑म्र्मे देहि। मे॒ दे॒हि॒ दे॒हि॒ मे॒ मे॒ दे॒हि॒ ब्व॒र्चो॒दा ब्व॑र्चो॒दा दे॑हि मे मे देहि ब्व॒र्चो॒दाः। दे॒हि॒ ब्व॒र्चो॒दा ब्व॑र्चो॒दा दे॑हि देहि ब्व॒र्चो॒दाऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्ने ब्व॒र्चो॒दा दे॑हि देहि ब्व॒र्चो॒दाऽ अ॑ग्ग्ने। ब्व॒र्चो॒दाऽ अ॑ग्ग्नेग्ग्ने ब्व॒र्चो॒दा ब्व॑र्चो॒दाऽ अ॑ग्ग्नेस्यस्यग्ग्ने ब्व॒र्चो॒दा ब्व॑र्चो॒दाऽ अ॑ग्ग्नेसि। ब्व॒र्चो॒दाऽ इति॑ वर्च॒ः दाः। अ॒ग्ग्ने॒स्य॒स्य॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒सि॒ ब्व॒र्चो॒ ब्व॒र्चो॑स्यग्ग्नेग्ग्ने॒सि॒ ब्व॒र्च॑ः। अ॒सि॒ ब्व॒र्चो॒ ब्व॒र्चो॑स्यसि॒ ब्व॒र्चो॑ मे मे॒ ब्व॒र्चो॑स्यसि॒ ब्व॒र्चो॑ मे। ब्व॒र्चो॑ मे मे॒ ब्व॒र्चो॒ ब्व॒र्चो॑ मे देहि देहि मे॒ ब्व॒र्चो॒ ब्व॒र्चो॑ मे देहि। मे॒ दे॒हि॒ दे॒हि॒ मे॒ मे॒ दे॒हि॒। दे॒ही॒ति॑ देहि॥ अग्ग्ने॒ यद्यदग्ग्नेग्ग्ने॒ यन्न्मे॑ मे॒ यदग्ग्नेग्ग्ने॒ यन्न्मे॑। यन्न्मे॑ मे॒ यद्यन्न्मे॑ त॒न्न्वा॒स्त॒न्न्वा॒ मे॒ यद्यन्न्मे॑ त॒न्न्वा॒ः। मे॒ त॒न्न्वा॒स्त॒न्न्वा॒ मे मे त॒न्न्वा॒ऽ ऊनमू॒नन्त॒न्न्वा॒ मे मे त॒न्न्वा॒ऽ ऊनम्। त॒न्न्वा॒ऽ ऊनमू॒नन्त॒न्न्वा॒स्त॒न्न्वा॒ऽ ऊनन्तत्त-दू॒नन्त॒न्न्वा॒स्त॒न्न्वा॒ऽ ऊनन्तत्। ऊनन्तत्तदू॒नमू॒नन्तन्न्मे॑ मे॒ तदू॒नमू॒नन्तन्न्मे॑। तन्न्मे॑ मे॒ तत्तन्न्म॒ऽ आ पृ॑ण पृ॒णा मे॒ तत्तन्न्म॒ऽ आ पृ॑ण। म॒ऽ आ पृ॑ण पृ॒णा मे॑ म॒ऽ आ पृ॑ण। आ पृ॑ण। पृ॒णेति॑ पृण॥१७॥

इन्धा॑नास्त्वा॒ त्वेन्धा॑ना॒ऽ इन्धा॑नास्त्वा श॒तꣳ श॒तन्त्वेन्धा॑ना॒ऽ इन्धा॑ना-स्त्वा श॒तम्। त्वा॒ श॒तꣳ श॒तन्त्वा॑ त्वा श॒तꣳ हिमा॒ हिमा॑ः श॒तन्त्वा॑ त्वा श॒तꣳ हिमा॑ः। श॒तꣳ हिमा॒ हिमा॑ः श॒तꣳ श॒तꣳ हिमा॑ द्युमन्तं॑न्द्युमन्त॒ꣳ हिमा॑ः श॒तꣳ श॒तꣳ हिमा॑ द्युमन्तं॑म्। हिमा॑ द्यु॒मन्तं॑न्द्युमन्त॒ꣳ हिमा॒ हिमा॑ द्युमन्त॒ꣳ सꣳ सन्द्यु॒मन्त॒ꣳ हिमा॒ हिमा॑ द्युमन्त॒ꣳ सम्। द्यु॒मन्त॒ꣳ सꣳ सन्द्यु॒मन्तं॑न्द्युमन्त॒ꣳ

समि॑धीमहीधीमहि॒ सन्द्यु॒मन्त॑न्द्युमन्त॒ꣳ समि॑धीमहि। द्यु॒मन्त॒मिति॑ द्यु॒ मन्त॑म्। समि॑धीमहीधीमहि॒ सꣳ समि॑धीमहि। इ॒धी॒म॒ही॒ती॑धीमहि॥ व्रय॑स्वन्तो व्रय॒स्कृ-तँ॑व्रय॒ꣳकृत॒ꣳव्रय॑स्वन्तो॒ व्रय॑स्वन्तो व्रय॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ꣳ सह॑स्वन्तो व्रय॒ꣳकृत॒ꣳव्र-य॑स्वन्तो॒ व्रय॑स्वन्तो व्रय॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तꣳ[1]। व्र॒य॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ꣳ सह॑स्व-न्तो व्रय॒ꣳकृतँ॑व्रय॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तꣳ सह॒स्कृत॑ꣳ सह॒ꣳकृत॒ꣳ सह॑स्वन्तो व्रय॒ꣳकृतँ॑व्रय॒स्कृत॒ꣳ सह॑स्वन्तꣳ सह॒स्कृत॑म्। व्र॒य॒ꣳकृत॒मिति॑ वय॒ꣳ कृत॑म्। सह॑-स्वन्तꣳ सह॒स्कृत॑ꣳ सह॒ꣳकृत॒ꣳ सह॑स्वन्त॒ꣳ सह॑स्वन्तꣳ सह॒स्कृत॑म्। स॒ह॒ꣳकृ॒त॒-मिति॑ सह॒ꣳ कृत॑म्॥ अग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मग्ग्नेग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑न॒-मद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मग्ग्नेग्ग्ने॑ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासꣳ। स॒प॒त्न॒दम्भ॑-न॒मद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासꣳ सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑भ्य॒मदा॑-भ्य॒मद॑ब्धासꣳ सपत्न॒दम्भ॑नꣳ सपत्न॒दम्भ॑न॒मद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑भ्यम्। स॒प॒त्न॒द-म्भ॑न॒मिति॑ सपत्न॒ दम्भ॑नम्। अद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑भ्य॒मदा॑भ्य॒मद॑ब्धा॒सोद॑ब्धासो॒ऽ अदा॑भ्यम्[2]। अदा॑भ्य॒मित्यदा॑भ्यम्॥ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति स्व॒स्ति चित्र॑वसो॒ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति चित्र॑वसो॒ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑[3]। चित्र॑वसो॒ऽ इति॒ चित्र॑ व्रसो। स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ पा॒रम्पा॒रन्ते॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ पा॒रम्। ते॒ पा॒रम्पा॒रन्ते॑ ते पा॒रम॑शीयाशीय पा॒रन्ते॑ ते पा॒रम॑शीय। पा॒रम॑शीयाशीय पा॒रम्पा॒रम॑शीय। अ॒शी॒येत्त्य॑शीय॥१८॥

सन्त्वन्त्वꣳ सꣳ सन्त्वम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वꣳ सꣳ सन्त्वम॑ग्ग्ने। त्वम॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ग्ने॒ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्याग्ग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ग्ने॒ सूर्य्य॑स्य। अ॒ग्ग्ने॒ सूर्य्य॑स्य॒

---

1. वा.प्रा.३.२१. के अधिकार में आये सूत्र समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) के अनुसार वयःकृतम् यहाँ विसर्जनीय सकार हो गया है।

2. प्रतिषेधे नावग्रहः(वा.प्रा.५.२४) इस सूत्र के अनुसार निषेधार्थक नञ् के साथ समास होने पर अदब्धासः तथा अदाभ्यम् इन पदों का पृथक्करण नहीं होता है।

3. चित्रवसो यहाँ पर वा. प्रा. ३.९७ के अनुसार चित्र का अकार दीर्घ हो गया है।

सू॒र्य्य॑स्याग्नेग्ने॒ सू॒र्य्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य्य॑स्याग्नेग्ने॒ सूर्य्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा। सूर्य्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य॒ व्वर्च॑सागथाऽ अगथा॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य्य॑स्य॒ सूर्य्य॑स्य॒ व्वर्च॑सागथाः। व्वर्च॑सागथाऽ अगथा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सागथा॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णामगथा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सागथा॒ऽ ऋषी॑णाम्। अ॒ग॒था॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णामगथाऽ अगथा॒ऽ ऋषी॑णाँ॒ स्तु॒तेन॑ स्तु॒तेन॒ऽ ऋषी॑णामगथाऽ अगथा॒ऽ ऋषी॑णाँ॒ स्तु॒तेन॑। ऋषी॑णाँ॒ स्तु॒तेन॑ स्तु॒तेन॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णाँ॒ स्तु॒तेन॑। स्तु॒तेनेति॑ स्तु॒तेन॑॥ प्रि॒येण॒ धाम्ना॒ धाम्ना॑ प्प्रि॒येण॑ प्प्रि॒येण॒ धाम्ना॒हम॒हन्धाम्ना॑ प्प्रि॒येण॑ प्प्रि॒येण॒ धाम्ना॒हम्। धाम्ना॒हम॒हन्धाम्ना॒ धाम्ना॒हमायु॒षायु॑षा॒हन्धाम्ना॒ धाम्ना॒हमायु॑षा। अ॒हमायु॒षा- यु॑षा॒हम॒हमायु॑षा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॒सायु॑षा॒हम॒हमायु॑षा॒ व्वर्च॑सा। आयु॑षा॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॒सा- यु॒षायु॑षा॒ व्वर्च॑सा प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॒ व्वर्च॒सायु॒षायु॑षा॒ व्वर्च॑सा प्प्र॒जया॑। व्वर्च॑सा प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा प्प्र॒जया॑ रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जया॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा प्प्र॒जया॑ रा॒यः। प्र॒जया॑ रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यः प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ रा॒यस्प्पोषे॑ण। प्र॒जयेति॑ प्प्र॒ जया॑। रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्प्पोषे॑ण ग्गिमषीय ग्गिमषीय॒ पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्प्पोषे॑ण ग्गिमषीय। पोषे॑ण ग्गिमषीय ग्गिमषीय॒ पोषे॑ण॒ पोषे॑ण ग्गिमषीय। ग्मि॒षी॒येति॑ ग्गिमषीय॥१९॥

अन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्धोन्ध॒ स्त्थान्ध॑÷[1]। स्थान्धोन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धो॑ वो॒ वोन्ध॑ स्त्थ॒ स्त्थान्धो॑ वः। अन्धो॑ वो॒ वोन्धोन्धो॑ वो भक्षीय भक्षीय॒ वोन्धोन्धो॑ वो भक्षीय। व्वो॒ भ॒क्षी॒य॒ भ॒क्षी॒य॒ वो॒ वो॒ भ॒क्षी॒य॒ मह॒ो मह॑ो भक्षीय वो वो भक्षीय॒ मह॑÷। भ॒क्षी॒य॒ मह॒ो मह॑ो भक्षीय भक्षीय॒ मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ मह॑ो भक्षीय भक्षीय॒ मह॑ स्त्थ। मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ मह॒ो मह॑ स्त्थ॒ मह॒ो मह॑ स्त्थ॒ मह॒ो मह॑ स्त्थ॒ मह॑÷। स्थ॒ मह॒ो मह॑ स्त्थ स्त्थ॒ मह॑ो वो वो॒ मह॑ स्त्थ

[1]. वा.प्रा.२.३४. के अनुसार यहाँ अन्धः पद आद्युदात है।

स्त्थ॒ महो॑ वः। महो॑ वो वो॒ महो॒ महो॑ वो भक्षीय भक्षीय वो॒ महो॒ महो॑ वो भक्षीय। व्वो॒ भ॒क्षी॒य॒ भ॒क्षी॒य॒ वो॒ वो॒ भ॒क्षी॒योर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्जो॑ भक्षीय वो वो भक्षी॒योर्ज्जं॑÷। भ॒क्षी॒योर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्जो॑ भक्षीय भक्षी॒योर्ज्जं॑ स्त्थ॒ स्त्थोर्ज्जो॑ भक्षीय भक्षी॒योर्ज्जं॑ स्त्थ। ऊर्ज्जं॑ स्त्थ॒ स्त्थोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्ज॒ स्त्थोर्ज्ज॒मू॒र्ज्ज॒ꣳ स्थोर्ज्ज॒ऽ ऊर्ज्ज॒ स्त्थोर्ज्जं॑म्। स्थोर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑ꣳ स्थ॒ स्त्थोर्ज्जँ॑व्वो व॒ऽ ऊर्ज्जं॑ꣳ स्थ॒ स्त्थोर्ज्जँ॑व्वः। ऊर्ज्जँ॑व्वो व॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्जँ॑व्वो भक्षीय भक्षीय व॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्जँ॑व्वो भक्षीय। व्वो॒ भ॒क्षी॒य॒ भ॒क्षी॒य॒ वो॒ वो॒ भ॒क्षी॒य॒ रा॒यो रा॒यो भ॑क्षीय वो वो भक्षीय रा॒यः। भ॒क्षी॒य॒ रा॒यो रा॒यो भ॑क्षीय भक्षीय रा॒यस्प्पोष॒ः पोषो॑ रा॒यो भ॑क्षीय भक्षीय रा॒यस्प्पोषं॑÷[1]। रा॒यस्प्पोष॒ः पोषो॑ रा॒यो रा॒यस्प्पोष॑ स्त्थ स्त्थ॒ पोषो॑ रा॒यो रा॒यस्प्पोष॑ स्त्थ। पोष॑ स्त्थ स्त्थ॒ पोष॒ः पोष॑ स्त्थ रा॒यो रा॒य स्त्थ॒ पोष॒ः पोष॑ स्त्थ रा॒यः। स्त्थ॒ रा॒यो रा॒य स्त्थं॑ स्त्थ रा॒यस्प्पोष॒म्पोषं॑ꣳ रा॒य स्त्थं॑ स्त्थ रा॒यस्प्पोषं॑म्। रा॒यस्प्पोष॒म्पोषं॑ꣳ रा॒यो रा॒यस्प्पोषँ॑व्वो व॒ः पोषं॑ꣳ रा॒यो रा॒यस्प्पोषँ॑व्वः। पोषँ॑व्वो व॒ः पोष॒म्पोषँ॑व्वो भक्षीय भक्षीय व॒ः पोष॒म्पोषँ॑व्वो भक्षीय। व्वो॒ भ॒क्षी॒य॒ भ॒क्षी॒य॒ वो॒ वो॒ भ॒क्षी॒य॒। भ॒क्षी॒येति॑ भक्षीय॥२०॥

रेव॑ती॒ रम॑द्ध्वꣳ रम॑द्ध्वꣳ रेव॑ती॒ रेव॑ती॒ रम॑द्ध्वम॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्रम॑द्ध्वꣳ रेव॑ती॒ रेव॑ती॒ रम॑द्ध्वम॒स्म्मिन्। रम॑द्ध्वम॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्रम॑द्ध्वꣳ रम॑द्ध्वम॒स्म्मिन्न्योनौ॒ य्योना॑व॒स्म्मिन्न्रम॑द्ध्वꣳ रम॑द्ध्वम॒स्म्मिन्न्योनौ॑। अ॒स्म्मिन्न्योनौ॒ य्योना॑व॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्योनौ॑ गो॒ष्ट्ठे गो॒स्त्थे य्योना॑व॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्योनौ॑ गो॒ष्ट्ठे[2]। य्योनौ॑ गो॒ष्ट्ठे गो॒स्त्थे य्योनौ॒ य्योनौ॑ गो॒ष्ट्ठे लो॒के लो॒के गो॒स्त्थे य्योनौ॒ य्योनौ॑ गो॒ष्ट्ठे लो॒के। गो॒ष्ट्ठे लो॒के लो॒के गो॒स्त्थे गो॒ष्ट्ठे लो॒के क्षये॒ क्षये॑ लो॒के गो॒स्त्थे गो॒ष्ट्ठे लो॒के क्षये॑। गो॒स्त्थ॒ऽ इति॑ गो॒ स्थे। लो॒के

---

[1]. रायः सहसः पोषपुत्रयोः (वा. प्रा. ३.२५) इस सूत्र के अनुसार रायः का विसर्जनीय सकार हो गया है।

[2]. दन्त्यस्य मूर्धन्यापत्तिर्नतिः (वा. प्रा. १.४२) दन्त्य वर्ण का मूर्धन्य होना नति है। यहाँ गोस्त्थे का गोष्ट्ठे हो गया है।

क्षये क्षयें लोके लोके क्षयें। क्षयऽ इति क्षयें॥ इहैवैवेहेहैव स्तं स्तैवेहेहैव स्तं। एव स्तं स्तैवैव स्त मा मा स्तैवैव स्त मा[1]। स्त मा मा स्तं स्त मापाप मा स्तं स्त मापं। मापाप मा मापं गात गाताप मा मापं गात। अपं गात गातापापं गात। गातेतिं गात॥२१॥

सꣳहितास्यंसि सꣳहिता संꣳहितासिं व्विश्वरूपी व्विंश्वरूप्प्युसि सꣳहिता संꣳहितासिं व्विश्वरूपी। सꣳहितेतिं सम् हिता। असि व्विश्वरूपी व्विंश्वरूप्प्युस्यसि व्विश्वरूप्प्यूर्ज्जोर्ज्जा व्विंश्वरूप्प्युस्यसि व्विश्वरूप्प्यूर्ज्जा। व्विश्वरूप्प्यूर्ज्जोर्ज्जा व्विंश्वरू-पी व्विंश्वरूप्प्यूर्ज्जा मां मोर्ज्जा व्विंश्वरूपी व्विंश्वरूप्प्यूर्ज्जा मां। व्विश्वरूपीतिं विश्व रूपी। ऊर्ज्जा मां मोर्ज्जोर्ज्जा मा विंश व्विशा मोर्ज्जोर्ज्जा मा विंश। मा विंश व्विशा मा मा विंश गौपत्त्येनं गौपत्त्येनं व्विशा मा मा विंश गौपत्त्येनं। आ विंश। व्विश गौपत्त्येनं गौपत्त्येनं व्विश व्विश गौपत्त्येनं। गौपत्त्येनेतिं गौपत्त्येनं॥ उपं त्वा त्वो-पोपं त्वाग्ग्नेग्ग्ने त्वोपोपं त्वाग्ग्ने। त्वाग्ग्नेग्ग्ने त्वा त्वाग्ग्ने दिवेदिंवे दिवेदिंवेग्ग्ने त्वा त्वाग्ग्ने दिवेदिंवे। अग्ग्ने दिवेदिंवे दिवेदिंवेग्ग्नेग्ग्ने दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्दिवे-दिंवेग्ग्नेग्ग्ने दिवेदिंवे दोषांवस्तः। दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्दिवेदिंवे दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्धिया धिया दोषांवस्तर्द्दिवेदिंवे दिवेदिंवे दोषांवस्तर्द्धिया। दिवेदिंवऽ इतिं दिवे दिंवे। दोषांवस्तर्द्धिया धिया दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्धिया व्वयँव्वयन्धिया दोषांवस्तर्द्दोषांवस्तर्द्धिया व्वयम्। दोषांवस्तरिति दोषां व्वस्तः[2]। धिया व्वयँव्वयन्धिया धिया व्वयम्। व्वयमितिं वयम्॥ नमो भरंन्तो भरंन्तो नमो नमो भरंन्तऽ एमंसीमस्या भरंन्तो नमो नमो भरंन्तऽ एमंसि। भरंन्तऽ एमंसीमस्या भरंन्तो भरंन्तऽ एमंसि। एमंसि। इमसीतींमसि॥२२॥

---

1. वा.प्रा.२.४. में उत्तम पुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद अनुदात्त बताया गया है, यहाँ निषेधार्थक होने से यह पद अनुदात्त नहीं है।

2. स्तोतर्वस्तः सनुतरभार्वार्द्धाः (वा. प्रा. १.१६५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वस्तः रिफित है।

राज॑न्तमद्ध्व॒राणा॑मद्ध्व॒राणा॒ꣳ राज॑न्त॒ꣳ राज॑न्तमद्ध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाङ्गो॒पाम॑द्ध्व॒रा-
णा॒ꣳ राज॑न्त॒ꣳ राज॑न्तमद्ध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाम्। अ॒द्ध्व॒राणा॑ङ्गो॒पाङ्गो॒पाम॑द्ध्व॒राणा॑मद्ध्व॒राणा॑-
ङ्गो॒पामृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ गो॒पाम॑द्ध्व॒राणा॑मद्ध्व॒राणा॑ङ्गो॒पामृ॒तस्य॑। गो॒पामृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒त-
स्य॑ गो॒पाङ्गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑वि॒न्दीदि॑विमृ॒तस्य॑ गो॒पाङ्गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑विम्। ऋ॒त-
स्य॒ दीदि॑वि॒न्दीदि॑विमृ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॒ दीदि॑विम्। दीदि॑वि॒मिति॒ दीदि॑विम्॥ व्वर्द्ध॑मा-
न॒ꣳ स्वे स्वे व्वर्द्ध॑मानँ॒व्वर्द्ध॑मान॒ꣳ स्वे दमे॒ दमे॒ स्वे व्वर्द्ध॑मानँ॒व्वर्द्ध॑मान॒ꣳ स्वे दमे॑। स्वे
दमे॒ दमे॒ स्वे स्वे दमे॑। दम॒ऽ इति॒ दमे॑॥२३॥

स नो॑ न॒ः स स नः॑ पि॒तेव॑ पि॒तेव॑ न॒ः स स नः॑ पि॒तेव॑। न॒ः पि॒तेव॑ पि॒तेव॑
नो नः पि॒तेव॑ सू॒नवे॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑ नो नः पि॒तेव॑ सू॒नवे॑। पि॒तेव॑ सू॒नवे॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑
पि॒तेव॑ सू॒नवेऽग्ग्नेऽग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ पि॒तेव॑ पि॒तेव॑ सू॒नवेऽग्ग्ने॑[1]। पि॒तेवेति॑ पि॒ता इ॑व।
सू॒नवेऽग्ग्नेऽग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ सू॒नवेऽग्ग्ने॑ सूपाय॒नः सु॑पाय॒नोऽग्ग्ने॑ सू॒नवे॑ सू॒नवेऽग्ग्ने॑ सूपाय॒नः।
अग्ग्ने॑ सूपाय॒नः सु॑पाय॒नोऽग्ग्नेऽग्ग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व भव सूपाय॒नोऽग्ग्नेऽग्ग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व।
सू॒पा॒य॒नो भ॑व भव सूपाय॒नः सु॑पाय॒नो भ॑व। सू॒पा॒य॒नऽ इति॑ सु उपाय॒नः। भ॒वेति॑
भव॥ सच॑स्वा नो न॒ः सच॑स्व॒ सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तये॑ न॒ः सच॑स्व॒
सच॑स्वा नः स्व॒स्तये॑।[2] न॒ः स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तये॑ नो नः स्व॒स्तये॑। स्व॒स्तय॒ऽ इति॑
स्व॒स्तये॑॥२४॥

अग्ग्ने॒ त्वन्त्वमग्ग्नेऽग्ग्ने॒ त्वन्नो॑ न॒स्त्वमग्ग्नेऽग्ग्ने॒ त्वन्नः॑। त्वन्नो॑ न॒स्त्वन्त्वन्नो॒ऽ
अन्त॒मोन्त॑मो न॒स्त्वन्त्वन्नो॒ऽ अन्त॑मः। नो॒ऽ अन्त॒मोन्त॑मो नो नो॒ऽ अन्त॑मऽ
उ॒तोतान्त॑मो नो नो॒ऽ अन्त॑मऽ उ॒त। अन्त॑मऽ उ॒तोतान्त॒मोन्त॑मऽ उ॒त त्रा॒ता
त्रा॒तोतान्त॒मोन्त॑मऽ उ॒त त्रा॒ता। उ॒त त्रा॒ता त्रा॒तोतोत त्रा॒ता शि॒वः शि॒वस्त्रा॒तोतो-

---

[1]. वा.प्रा.४.६५. के अनुसार सूनवे अग्ने यहाँ एकार से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. सचस्व नः यहाँ वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार नकार परे रहने पर पूर्वपद के अन्तिम स्वर का दीर्घ होता है।

त त्राता शिवः। त्राता शिवः शिवस्त्राता त्राता शिवो भव भव शिवस्त्राता त्राता शिवो भव। शिवो भव भव शिवः शिवो भवा वरूत्थ्यो वरूत्थ्यो भव शिवः शिवो भवा वरूत्थ्यः। भवा वरूत्थ्यो वरूत्थ्यो भव भवा वरूत्थ्यः। वरूत्थ्यऽ इति वरूत्थ्यः॥ वसुरग्निरग्निर्वसुर्वसुरग्निर्वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अग्निर्वसुर्वसुरग्नि-र्वसुश्रवाः। अग्निर्वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अग्निरग्निर्वसुश्रवाऽ अच्छाच्छ वसु-श्रवाऽ अग्निरग्निर्वसुश्रवाऽ अच्छं। वसुश्रवाऽ अच्छाच्छ वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अच्छां नक्षि नक्ष्यच्छ वसुश्रवा वसुश्रवाऽ अच्छां नक्षि[1]। वसुश्रवाऽ इति वसु श्रवाः। अच्छां नक्षि नक्ष्यच्छाच्छां नक्षि द्युमत्तमन्द्युमत्तमन्नक्ष्यच्छा-च्छां नक्षि द्युमत्तमम्। नक्षि द्युमत्तमन्द्युमत्तमन्नक्षि नक्षि द्युमत्तमꣳ रयिꣳ रयिन्द्युमत्तमन्नक्षि नक्षि द्युमत्तमꣳ रयिम्। द्युमत्तमꣳ रयिꣳ रयिन्द्युमत्तमन्द्यु-मत्तमꣳ रयिन्दां दा रयिन्द्युमत्तमन्द्युमत्तमꣳ रयिन्दाः। द्युमत्तममिति द्युमत् तमम्। रयिन्दां दा रयिꣳ रयिन्दाः। दाऽ इति दाः॥२५॥

तन्त्वां त्वा तन्तन्त्वां शोचिष्ठ शोचिष्ठ त्वा तन्तन्त्वां शोचिष्ठ। त्वा शोचिष्ठ शोचिष्ठ त्वा त्वा शोचिष्ठ दीदिवो दीदिवः शोचिष्ठ त्वा त्वा शोचिष्ठ दीदिवः। शोचिष्ठ दीदिवो दीदिवः शोचिष्ठ शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय सुम्नाय दीदिवः शोचिष्ठ शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय। दीदिवः सुम्नाय सुम्नाय दीदिवो दीदिवः सुम्नाय नूनन्नूनꣳ सुम्नाय दीदिवो दीदिवः सुम्नाय नूनम्। दीदिवऽ इति दीदि वः। सुम्नाय नूनन्नूनꣳ सुम्नाय सुम्नाय नूनमीमहऽ ईमहे नूनꣳ सुम्नाय सुम्नाय नूनमीमहे। नूनमीमहऽ ईमहे नूनन्नूनमीमहे सखिभ्यः सखि-भ्यऽ ईमहे नूनन्नूनमीमहे सखिभ्यः। ईमहे सखिभ्यः सखिभ्यऽ ईमहऽ ईमहे सखिभ्यः। सखिभ्यऽ इति सखि भ्यः॥ स नो नः स स नो बोधि बोधि

[1]. एवाच्छचकृमाथ (वा. प्रा. ३.१२४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अच्छ का अन्तिम स्वर दीर्घ हो गया है।

न॒ः स स नो॑ बोधि। नो॒ बो॒धि॒ बो॒धि॒ नो॒ नो॒ बो॒धि॒ श्रु॒धि श्रु॒धि बो॑धि नो नो बोधि श्रु॒धि। बो॒धि॒ श्रु॒धि श्रु॒धि बो॑धि बोधि श्रु॒धी ह॒व॒ꣳ ह॒व॑ꣳ श्रु॒धि बो॑धि बोधि श्रु॒धी हव॑म्[1]। श्रु॒धी ह॒व॒ꣳ हव॑ꣳ श्रु॒धि श्रु॒धी हव॑मुरु॒ष्ष्यो॑रु॒ष्ष्य हव॑ꣳ श्रु॒धि श्रु॒धी हव॑मुरु॒ष्ष्य। हव॑मुरु॒ष्ष्यो॑रु॒ष्ष्य ह॒व॒ꣳ हव॑मुरु॒ष्ष्या णो॑ नऽ उरु॒ष्ष्य ह॒व॒ꣳ हव॑मुरु॒ष्ष्या ण॑ः[2]। उ॒रु॒ष्ष्या णो॑ नऽ उरु॒ष्ष्यो॑रु॒ष्ष्या णो॑ऽ अघाय॒तो॑घय॒तो न॑ऽ उरु॒ष्ष्यो॑रु॒ष्ष्या णो॑ऽ अघाय॒तः। नो॒ऽ अ॒घा॒य॒तो॑घय॒तो नो॑ नोऽ अघाय॒तः सम॑स्स्मात्समस्स्मादघय॒तो नो॑ नोऽ अघाय॒तः सम॑स्स्मात्। अ॒घा॒य॒तः सम॑स्स्मात्समस्स्मादघय॒तो॑घाय॒तः सम॑स्स्मात्। अ॒घ॒य॒तऽ इत्य॑घ य॒तः[3]। स॒म॒स्स्मा॒दिति॑ समस्स्मात्॥२६॥

इ॒डऽ एही॒ह्येडऽ इ॒डऽ एह्य॑दि॒तेदि॑तऽ इ॒ह्येड॒ऽ इड॒ऽ एह्य॑दि॑ते[4]। एहि॑। इ॒ह्य॑दि॒तेदि॑तऽ इही॒ह्य॑दि॑त॒ऽ एही॒ह्यादि॑तऽ इही॒ह्य॑दि॑त॒ऽ एहि॑। अदि॑त॒ऽ एही॒ह्यादि॒तेदि॑त॒ऽ एहि॒ काम्म्या॒ः काम्म्या॑ऽ इ॒ह्यादि॒तेदि॑त॒ऽ एहि॒ काम्म्या॑ः। एहि॑। इ॒हि॒ काम्म्या॒ः काम्म्या॑ऽ इहीहि॒ काम्म्या॒ऽ ए॒ते॒ता काम्म्या॑ऽ इहीहि॒ काम्म्या॒ऽ एत॑। काम्म्या॒ऽ ए॒ते॒ता काम्म्या॒ः काम्म्या॒ऽ एत॑। एत॑। इ॒तेतीं॑त॥ मयि॑ वो वो॒ मयि॒ मयि॑ व॒ः काम॒धर॑णङ्काम॒धर॑णँव्वो मयि॒ मयि॑ व॒ः काम॒धर॑णम्। व्व॒ः का॒म॒धर॑णङ्काम॒धर॑णँव्वो व॒ः काम॒धर॑णम्भूयाद् भूयात्काम॒धर॑णँव्वो व॒ः काम॒धर॑णम्भूयात्।

---

1. श्रुधि हवम् यहाँ वा.३.१२९. के अनुसार दीर्घ होकर श्रुधी हवम् होता है।

2. वा. प्रा. ३.१०७ के अनुसार यहाँ उरुष्य का अन्तिम स्वर दीर्घ हो गया है। वा. प्रा. ३.८६. के अनुसार नः का नकार णकार हो गया है।

3. वा.प्रा.५.१०. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

4. एकान्तरादपि(वा.प्रा.६.१३) एक पद से व्यवहित भी सम्बोधन पद से परवर्ती क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है। सूत्रोक्त अपि पद से विकल्प कहा गया है- जैसे इडे आ इहि। यहाँ क्रियापद अपने प्रकृति स्वर से युक्त नहीं है।

का॒म॒धर॑णम्भूयाद् भूयात्काम॒धर॑णङ्काम॒धर॑णम्भूयात्। का॒म॒धर॑ण॒मिति॑ काम॒ धर॑णम्। भू॒या॒दिति॑ भूयात्॥२७॥

सो॒मान॒ꣳ स्वर॑ण॒ꣳ स्वर॑णꣳ सो॒मान॑ꣳ सो॒मान॒ꣳ स्वर॑णङ्कृणु॒हि कृ॑णु॒हि स्वर॑णꣳ सो॒मान॑ꣳ सो॒मान॒ꣳ स्वर॑णङ्कृणु॒हि। स्वर॑णङ्कृणु॒हि कृ॑णु॒हि स्वर॑ण॒ꣳ स्वर॑णङ्कृणु॒हि ब्र॑ह्मणो ब्रह्मणः कृणु॒हि स्वर॑ण॒ꣳ स्वर॑णङ्कृणु॒हि ब्र॑ह्मणः। कृ॒णु॒हि ब्र॑ह्मणो ब्रह्मणः कृणु॒हि कृ॑णु॒हि ब्र॑ह्मणस्पते पते ब्रह्मणः कृणु॒हि कृ॑णु॒हि ब्र॑ह्मण-स्पते। ब्र॒ह्म॒ण॒स्प॒ते॒ प॒ते॒ ब्र॒ह्म॒णो॒ ब्र॒ह्म॒ण॒स्प॒ते॒। प॒त॒ऽ इति॑ पते॥ कु॒क्षीव॑न्त॒ँय्यो यः कु॒क्षीव॑न्तङ्क॒क्षीव॑न्त॒ँय्यऽ औशि॒जऽ औशि॒जो यः कु॒क्षीव॑न्तङ्क॒क्षीव॑न्त॒ँ-य्यऽ औशि॒जः। यऽ औशि॒जऽ औशि॒जो यो यऽ औशि॒जः। औ॒शि॒जऽ इत्यौशि॒जः॥२८॥

यो रे॒वान्रे॒वान्यो यो रे॒वान्यो यो रे॒वान्यो यो रे॒वान्यः। रे॒वान्यो यो रे॒वान्रे॒-वान्योऽ अ॑मीव॒हामी॑व॒हा यो रे॒वान्रे॒वान्योऽ अ॑मीव॒हा[1]। योऽ अ॑मीव॒हामी॑व॒हा यो योऽ अ॑मीव॒हा व॑सु॒विद्व॑सु॒विद॑मीव॒हा यो योऽ अ॑मीव॒हा व॑सु॒वित्। अ॒मी॒व॒हा व॑सुवि-द्व॑सु॒विद॑मीव॒हामी॑व॒हा व॑सु॒वित्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नः पुष्टि॒वर्द्ध॑नो वसु॒विद॑मीव॒हामी॑व॒हा व॑सुवि-त्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नः। अ॒मी॒व॒हेत्य॑मीव॒ हा। व॒सु॒वित्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नः पुष्टि॒वर्द्ध॑नो वसु॒विद्व॑सुवि-त्पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नः। व॒सु॒विदिति॑ वसु॒ वित्। पु॒ष्टि॒वर्द्ध॑न॒ऽ इति॑ पुष्टि॒ वर्द्ध॑नः॥ स नो॑ नः स स न॑ः सिषक्तु सिसक्तु नः स स न॑ः सिषक्तु। नः सि॒ष॒क्तु॒ सि॒स॒क्तु॒ नो॒ नः सि॒ष॒क्तु॒ यो यः सिं॑सक्तु नो नः सिषक्तु॒ यः। सि॒ष॒क्तु॒ यो यः सिं॑सक्तु सिषक्तु॒ यस्तु॒रस्तु॒रो यः सिं॑सक्तु सिषक्तु॒ यस्तु॒रः। सि॒स॒क्त्विति॑ सिसक्तु। यस्तु॒रस्तु॒रो यो यस्तु॒रः। तु॒रऽ इति॑ तु॒रः॥२९॥

1. वा.प्रा.४.८२. के अनुसार यः अमीवहा यहाँ विसर्ग से सम्बन्धित ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

मा नो॑ नो॒ मा मा न॒ः शꣳस॒ः शꣳसो॑ नो॒ मा मा न॒ः शꣳस॑ः। न॒ः शꣳस॒ः शꣳसो॑ नो न॒ः शꣳसो॒ऽ अर॑रु॒षोर॑रुष॒ः शꣳसो॑ नो न॒ः शꣳसो॒ऽ अर॑रुषः। शꣳसो॒ऽ अर॑रु॒षोर॑रुष॒ः शꣳस॒ः शꣳसो॒ऽ अर॑रुषो धू॒र्त्तिर्द्धू॒र्त्तिरर॑रुष॒ः शꣳस॒ः शꣳसो॒ऽ अर॑रुषो धू॒र्त्तिः। अर॑रुषो धू॒र्त्तिर्द्धू॒र्त्तिरर॑रु॒षोर॑रुषो धू॒र्त्तिः प्प्रण॒क्प्रण॑ग्ग्धू॒र्त्तिरर॑रु॒षोर॑रुषो धू॒र्त्तिः प्प्रण॑क्। धू॒र्त्तिः प्प्रण॒क्प्रण॑ग्ग्धू॒र्त्तिर्द्धू॒र्त्तिः प्प्रण॒ङ्ङ्मर्त्त्यैँ॑स्य॒ मर्त्त्यैँ॑स्य॒ प्प्रण॑ग्ग्धू॒र्त्तिर्द्धू॒र्त्तिः प्प्रण॒ङ्ङ्मर्त्त्यैँ॑स्य। प्रण॒ङ्ङ्मर्त्त्यैँ॑स्य॒ मर्त्त्यैँ॑स्य॒ प्प्रण॒क्प्रण॒ङ्ङ्मर्त्त्यैँ॑स्य। मर्त्त्य॒स्येति॒ मर्त्त्यैँ॑स्य॥ रक्षा॑ णो नो॒ रक्ष॒ रक्षा॑ णो ब्ब्रह्मणो ब्ब्रह्मणो नो॒ रक्ष॒ रक्षा॑ णो ब्ब्रह्मणः[1]। नो॒ ब्ब्र॒ह्म॒णो॒ ब्ब्र॒ह्म॒णो॒ नो॒ नो॒ ब्ब्र॒ह्म॒ण॒स्प्प॒ते॒ प॒ते॒ ब्ब्र॒ह्म॒णो॒ नो॒ नो॒ ब्ब्र॒ह्म॒ण॒स्प्प॒ते॒। ब्ब्र॒ह्म॒ण॒स्प्प॒ते॒ प॒ते॒ ब्ब्र॒ह्म॒णो॒ ब्ब्र॒ह्म॒ण॒स्प्प॒ते॒। प॒त॒ऽ इति॑ पते॥३०॥

महि॑ त्त्री॒णात्त्री॒णाम्महि॒ महि॑ त्त्री॒णामवो॑वस्त्री॒णाम्महि॒ महि॑ त्त्री॒णामव॑ः। त्त्री॒णामवो॑वस्त्री॒णात्त्री॒णामवो॑स्त्त्व॒स्त्त्वव॑स्त्री॒णात्त्री॒णामवो॑स्त्तु[2]। अवो॑स्त्त्व॒स्त्त्ववोवो॑स्त्तु द्द्युक्षन्द्द्यु॒क्षम॒स्त्त्ववोवो॑स्त्तु द्द्युक्षम्। अ॒स्त्तु द्द्युक्षन्द्द्यु॒क्षम॑स्त्त्वस्त्तु द्द्युक्षम्मि॒त्त्रस्य॑ मि॒त्त्रस्य॑ द्द्युक्षम॑स्त्त्वस्त्तु द्द्युक्षम्मि॒त्त्रस्य॑। द्द्युक्षम्मि॒त्त्रस्य॑ मि॒त्त्रस्य॑ द्द्युक्षन्द्द्युक्षम्मि॒त्त्रस्या॑ऽर्य्य॒म्म्णो॒ऽर्य्य॒म्म्णो मि॒त्त्रस्य॑ द्द्युक्षन्द्द्युक्षम्मि॒त्त्रस्या॑ऽर्य्य॒म्म्णः। मि॒त्त्रस्या॑ऽर्य्य॒म्म्णो॒ऽर्य्य॒म्म्णो मि॒त्त्रस्य॑ मि॒त्त्रस्या॑ऽर्य्य॒म्म्णः। अ॒र्य्य॒म्म्णऽ इत्त्य॑र्य्य॒म्म्णः॥ दु॒रा॒धर्षँ॒व्व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य दु॒राधर्षँ॒न्दु॒रा॒धर्षँ॒व्व्वरु॑णस्य। दु॒रा॒धर्ष॒मिति॑ दुः आ॒धर्षँम्। व्वरु॑ण॒स्येति॒ वरु॑णस्य॥३१॥

न॒हि तेषा॒न्तेषा॑न्न॒हि न॒हि तेषा॑म॒मामा तेषा॑न्न॒हि न॒हि तेषा॑म॒मा। तेषा॑म॒मामा तेषा॒न्तेषा॑म॒मा च॒न च॒नामा तेषा॒न्तेषा॑म॒मा च॒न। अ॒मा च॒न च॒नामामा च॒न

---

[1]. वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार यहाँ रक्ष के अन्तिम स्वर का दीर्घ हो गया है तथा वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नः के नकार का निपातन (औत्सर्गिक णत्व) से णकार हो गया है।

[2]. वा. प्रा. ४.७६ के अनुसार अवः अस्तु यहाँ पर अस्तु इस पद के अकार का अभिनिधान हो गया है।

न न च॒नामामा च॒न न। च॒न न न च॒न च॒न नाद्धु॒स्वद्धंसु॒ न च॒न च॒न नाद्धंसु। नाद्धु॒स्वद्धंसु॒ न नाद्धंसु ब्वार॒णेषु॑ ब्वार॒णेष्ष्वद्धंसु॒ न नाद्धंसु ब्वार॒णेषु॑। अद्धंसु ब्वार॒णेषु॑ ब्वार॒णेष्ष्वद्धु॒स्वद्धंसु ब्वार॒णेषु॑। अद्धु॒स्वित्त्यद्धं सु। ब्वा॒र॒णेष्ष्विति॑ वार॒णेषु॑॥ ईशे॑ रि॒पू रि॒पुरीश॒ऽ ईशे॑ रि॒पुर॒घशं॑ढ॰सो॒घशं॑ढ॰सो रि॒पुरीश॒ऽ ईशे॑ रि॒पुर॒घशं॑ढ॰सः[1]। रि॒पुर॒घ-शं॑ढ॰सो॒घशं॑ढ॰सो रि॒पू रि॒पुर॒घशं॑ढ॰सः। अ॒घशं॑ढ॰स॒ऽ इत्त्य॒घ शं॑ढ॰सः॥३२॥

ते हि हि ते ते हि पु॒त्रास॑ः पु॒त्रासो॒ हि ते ते हि पु॒त्रास॑ः। हि पु॒त्रास॑ः पु॒त्रासो॒ हि हि पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒रदि॑तेः पु॒त्रासो॒ हि हि पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑तेः। पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒रदि॑तेः पु॒त्रास॑ः पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒ः प्प्र प्प्रादि॑तेः पु॒त्रास॑ः पु॒त्रासो॒ऽ अदि॑ते॒ः प्प्र। अदि॑ते॒ः प्प्र प्प्रादि॑ते॒रदि॑ते॒ः प्प्र जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ प्प्रादि॑ते॒रदि॑ते॒ः प्प्र जी॒वसे॑। प्र जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ प्प्र प्प्र जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य॒ मर्त्त्या॑य जी॒वसे॒ प्प्र प्प्र जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य। जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य॒ मर्त्त्या॑य जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ मर्त्त्या॑य। मर्त्त्या॒येति॒ मर्त्त्या॑य॥ ज्योति॒-र्य्यच्छ॑न्ति॒ यच्छ॑न्ति॒ ज्योति॒र्ज्ज्योति॒र्य्यच्छ॒न्त्यज॑स्र॒मज॑स्र॒ꣳ य्यच्छ॑न्ति॒ ज्योति॒-र्ज्ज्योति॒र्य्यच्छ॒न्त्यज॑स्रम्। यच्छ॒न्त्यज॑स्र॒मज॑स्र॒ꣳ य्यच्छ॑न्ति॒ यच्छ॒न्त्यज॑स्रम्। अज॑स्र॒मित्त्यज॑स्रम्॥३३॥

कु॒दा च॒न च॒न कु॒दा कु॒दा च॒न स्त॒री स्त॒रीश्च॒न कु॒दा कु॒दा च॒न स्त॒रीः[2]। च॒न स्त॒री स्त॒रीश्च॒न च॒न स्त॒रीर॑स्स्यसि स्त॒रीश्च॒न च॒न स्त॒रीर॑सि। स्त॒रीर॑स्स्यसि स्त॒री स्त॒रीर॑सि॒ न नासि॑ स्त॒री स्त॒रीर॑सि॒ न। अ॒सि॒ न नास्स्य॑सि॒ नेन्द्रे॑न्द्र॒ नास्स्य॑सि॒ नेन्द्र॑। नेन्द्रे॑न्द्र॒ न नेन्द्र॑ सश्चसि सश्चसीन्द्र॒ न नेन्द्र॑ सश्चसि। इ॒न्द्र॒ स॒श्च॒सि॒ स॒श्च॒सी॒न्द्रे॒न्द्र॒ स॒श्च॒सि॒ दा॒शुषे॑ दा॒शुषे॑ सश्चसीन्द्रेन्द्र सश्चसि दा॒शुषे॑। स॒श्च॒सि॒ दा॒शुषे॑

1. रिपुः ईशे तथा रिपुः अघशंसः दोनों स्थलों में रेफं स्वरधौ (वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्ग रेफ होता है। र एफेन(वा.प्रा.१.३९) इस सूत्र के अनुसार र एफ के द्वारा निर्दिष्ट होता है।

2. कदा नरिष्येम पूर्वम्(वा.प्रा.२.२३) न रिष्येम पूर्व में होने पर कदा पद आद्युदात्त होता है। यहाँ उक्त स्थिति न होने से कदा आद्युदात्त नहीं है।

दाशुषे सश्चसि सश्चसि दाशुषे। दाशुषऽ इति दाशुषे॥ उपोपेदिदुपोपोपोपेन्नु न्विदुपोपोपोपेन्नु। उपोपेत्युप उप[1]। इन्नु न्विदिन्नु मघवन्मघवन्न्विदिन्नु मघवन्। नु मघवन्मघवन्नु नु मघवन्भूयो भूयो मघवन्नु नु मघवन्भूयः । मघवन्भूयो भूयो मघवन्मघवन्भूयऽ इदिद् भूयो मघवन्मघवन्भूयऽ इत्। मघवन्निति मघ वन्। भूयऽ इदिद् भूयो भूयऽ इन्नु न्विद् भूयो भूयऽ इन्नु। इन्नु न्विदिन्नु ते ते न्विदिन्नु ते। नु ते ते नु नु ते दानन्दानन्ते नु नु ते दानम्। ते दानन्दानन्ते ते दानन्देवस्य देवस्य दानन्ते ते दानन्देवस्य। दानन्देवस्य देवस्य दानन्दानन्देवस्य पृच्यते पृच्यते देवस्य दानन्दानन्देवस्य पृच्यते। देवस्य पृच्यते पृच्यते देवस्य देवस्य पृच्यते। पृच्यतऽ इति पृच्यते॥३४॥

तत्सवितुः सवितुस्तत्तत्सवितुर्ब्वरेण्यँब्वरेण्यꣳ सवितुस्तत्तत्सवितुर्ब्वरे-ण्यम्। सवितुर्ब्वरेण्यँब्वरेण्यꣳ सवितुः सवितुर्ब्वरेण्यम्भर्गो भर्गो ब्वरेण्यꣳ सवितुः सवितुर्ब्वरेण्यम्भर्गः। ब्वरेण्यम्भर्गो भर्गो ब्वरेण्यँब्वरेण्यम्भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो ब्वरेण्यँब्वरेण्यम्भर्गो देवस्य। भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य धीमहि। देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि॥ धियो यो यो धियो धियो यो नो नो यो धियो धियो यो नः। यो नो नो यो यो नः प्प्रचोदयात्प्रचोदयान्नो यो यो नः प्प्रचोदयात्। नः प्प्रचोदयात्प्रचोदयान्नो नः प्प्रचोदयात्। प्रचोदयादिति प्प्र चोदयात्॥३५॥

1. आम्रेडिते चोत्तरः (वा. प्रा. ६.३) उपसर्ग की द्विरुक्ति होने पर परवर्ती उपसर्ग अनुदात्त होता है।

परि॑ ते ते॒ परि॒ परि॑ ते दू॒डभो॑ दु॒र्द्दभ॑स्ते॒ परि॒ परि॑ ते दू॒डभ॑ः[1]। ते॒ दू॒डभो॑ दु॒र्द्दभ॑स्ते ते दू॒डभो॒ रथो॒ रथो॑ दु॒र्द्दभ॑स्ते ते दू॒डभो॒ रथ॑ः। दू॒डभो॒ रथो॒ रथो॑ दु॒र्द्दभो॑ दू॒डभो॒ रथो॒स्म्मान॒स्म्मान्न्रथो॑ दु॒र्द्दभो॑ दू॒डभो॒ रथो॒स्म्मान्। दु॒र्द्दभ॒ऽ इति॑ दु॒ः दभ॑ः। रथो॒स्म्मान॒स्म्मान्न्रथो॒ रथो॒स्म्माँ२॥ऽ अ॑श्न्नोत्त्वश्न्नोत्त्व॒स्म्मान्न्रथो॒ रथो॒स्म्माँ२॥ऽ अ॑श्न्नोतु[2]। अ॒स्म्माँ२॥ऽ अ॑श्न्नोत्त्वश्न्नोत्त्व॒स्म्मान॒स्म्माँ२॥ऽ अ॑श्न्नोतु ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑श्न्नोत्त्व॒स्म्मान॒स्म्माँ२॥ऽ अ॑श्न्नोतु ब्वि॒श्श्वत॑ः। अ॒श्न्नो॒तु ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑-श्न्नोत्त्वश्न्नोतु ब्वि॒श्श्वत॑ः। ब्वि॒श्श्वत॒ऽ इति॑ वि॒श्श्वत॑ः॥ येन॒ रक्क्ष॑सि॒ रक्क्ष॑सि॒ येन॒ येन॒ रक्क्ष॑सि दा॒शुषो॑ दा॒शुषो॒ रक्क्ष॑सि॒ येन॒ येन॒ रक्क्ष॑सि दा॒शुष॑ः। रक्क्ष॑सि दा॒शुषो॑ दा॒शुषो॒ रक्क्ष॑सि॒ रक्क्ष॑सि दा॒शुष॑ः। दा॒शुष॒ऽ इति॑ दा॒शुष॑ः॥३६॥ शतम्॥१००॥

स्वः॑ सु॒प्प्र॒जाः सु॑प्प्र॒जाः स्व॒ः स्व॒ः सु॒प्प्र॒जाः प्प्र॒जाभि॑ः प्प्र॒जाभि॑ः सु॒प्प्र॒जाः स्व॒ः स्व॒ः सु॒प्प्र॒जाः प्प्र॒जाभि॑ः। स्व॒रिति॒ स्व॒ः। सु॒प्प्र॒जाः प्प्र॒जाभि॑ः प्प्र॒जाभि॑ः सु॒प्प्र॒जाः सु॑प्प्र॒जाः प्प्र॒जाभि॑ः स्याँ स्याम्प्प्र॒जाभि॑ः सु॒प्प्र॒जाः सु॑प्प्र॒जाः प्प्र॒जाभि॑ः स्याम्। सु॒प्प्र॒जाऽ इति॑ सु प्र॒जाः[3]। प्र॒जाभि॑ः स्याँ स्याम्प्प्र॒जाभि॑ः प्प्र॒जाभि॑ः स्याँ सु॒वीर॑ः सु॒वीर॑ः स्याम्प्प्र॒जाभि॑ः प्प्र॒जाभि॑ः स्याँ सु॒वीर॑ः। प्र॒जाभि॒रिति॑ प्प्र जाभि॑ः। स्या॒ँ सु॒वीर॑ः सु॒वीर॑ः स्याँ स्याँ सु॒वीरो॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒वीर॑ः स्याँ स्याँ सु॒वीरो॑ ब्वी॒रैः। सु॒वीरो॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒वीर॑ः सु॒वीरो॑ ब्वी॒रैः सु॒पोष॑ः सु॒पोषो॑ ब्वी॒रैः सु॒वीर॑ः सु॒वीरो॑ ब्वी॒रैः सु॒पोष॑ः। सु॒वीर॒ऽ इति॑ सु॒ ब्वीर॑ः। ब्वी॒रैः सु॒पोष॑ः सु॒पोषो॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒पोष॒ः पोषै॒ः पोषै॑ः

[1]. उकारं दुर्दे (वा. प्रा. ३.४२) इस सूत्र के अनुसार दुः के विसर्जनीय का उकार हो गया है, दीर्घ होने पर उकार दीर्घ हो गया। परवर्ती दकार मूर्धन्य हो गया।

[2]. अस्म्मान् अश्न्नोतु यहाँ आकारोपधो यकारम्(वा.प्रा.३.१४२) के अनुसार नकार यकार होता है तथा उपधा का अनुनासिक होता है। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः(वा.प्रा.४.१२७) से यकार का लोप, न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से सन्धि का निषेध होने पर अस्म्माँ२॥ऽ अश्न्नोतु होता है।

[3]. बहुप्रकृतावागन्तुना पर्वणा (वा. प्रा. ५.७) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण हुआ है।

सुपोषों व्वीरैर्व्वीरैः सुपोषः पोषैः। सुपोषः पोषैः पोषैः सुपोषः सुपोषः पोषैः। सुपोषऽ इतिं सु पोषः। पोषैरिति पोषैः॥ नर्व्वं प्प्रजाम्प्रजान्नर्व्वं नर्व्वं प्प्रजाम्मे मे प्प्रजान्नर्व्वं नर्व्वं प्प्रजाम्मे[1]। प्रजाम्मे मे प्प्रजाम्प्रजाम्मे पाहि पाहि मे प्प्रजाम्प्रजाम्मे पाहि। प्रजामितिं प्र जाम्। मे पाहि पाहि मे मे पाहि शꣳस्य शꣳस्यं पाहि मे मे पाहि शꣳस्यं। पाहि शꣳस्य शꣳस्यं पाहि पाहि शꣳस्यं पशून्पशूञ्छꣳस्यं पाहि पाहि शꣳस्यं पशून्। शꣳस्यं पशून्पशूञ्छꣳस्य शꣳस्यं पशूनथर्व्वाथर्व्व पशूञ्छꣳस्य शꣳस्यं पशूनथर्व्व। पशूनथर्व्वाथर्व्व पशून्पशूनथर्व्व पितुम्पितुमथर्व्व पशून्पशूनथर्व्व पितुम्। अथर्व्व पितुम्पितुमथर्व्वाथर्व्व पितुम्। पितुमितिं पितुम्॥३७॥

आगन्मागन्मागन्म व्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसम्। अगन्म व्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसमस्मभ्यमस्मभ्यँव्विश्ववेदसमगन्मागन्म व्विश्ववेदसमस्मभ्यम्। व्विश्ववेदसमस्मभ्यमस्मभ्यँव्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमस्मभ्यँव्वसुवित्तमँव्वसुवित्तममस्मभ्यँव्विश्ववेदसँव्विश्ववेदसमस्मभ्यँव्वसुवित्तमम्। व्विश्ववेदसमितिं विश्व वेदसम्। अस्मभ्यँव्वसुवित्तमँव्वसुवित्तममस्मभ्यमस्मभ्यँव्वसुवित्तमम्। व्वसुवित्तममितिं वसुवित् तमम्॥ अग्ने सम्म्राट्ट् सम्म्राडग्नेग्ने सम्म्राडभ्युभि सम्म्राडग्नेग्ने सम्म्राडभि[2]। सम्म्राडभ्युभि सम्म्राट्ट् सम्म्राडभि द्युम्नन्द्युम्नमभि सम्म्राट्ट् सम्म्राडभि द्युम्नम्। सम्म्राडितिं सम् राट्। अभि द्युम्नन्द्युम्नमभ्युभि द्युम्नमभ्युभि द्युम्नमभ्युभि द्युम्नमभि। द्युम्नमभ्युभि द्युम्नन्द्युम्नमभि सहः सहोभि द्युम्नन्द्युम्नमभि

[1]. नो नौ मे मदर्थे त्रिष्वेकेषु(वा.प्रा.२.३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मे पद अनुदात्त है।

[2]. प्रकृत्या सम्राट् साम्राजि (वा. प्रा. ४.६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार सम्राट् पद में मकार प्रकृति भाव से है। यह सूत्र अनुस्वारं शेष्मसु मकारः (वा. प्रा. ४.१) का अपवाद है, अतः सꣳराट् ऐसा नहीं होगा।

सहं÷। अभि सहः सहोभ्भ्युभि सहऽ आ यंच्छस्व यच्छस्वा सहोभ्भ्युभि सहऽ आ यंच्छस्व। सहऽ आ यंच्छस्व यच्छस्वा सहः सहऽ आ यंच्छस्व। आ यंच्छस्व। यच्छस्वेतिं यच्छस्व॥३८॥

अयमग्निरग्निरयमयमग्निर्गृहपंतिर्गृहपंतिरग्निरयमयमग्निर्गृहपंतिः। अग्निर्गृहपंतिर्गृहपंतिरग्निरग्निर्गृहपंतिर्गार्हंपत्यो गार्हंपत्यो गृहपंतिरग्निरग्निर्गृहपंतिर्गार्हंपत्यः। गृहपंतिर्गार्हंपत्यो गार्हंपत्यो गृहपंतिर्गृहपंतिर्गार्हंपत्यः प्प्रजायांः प्प्रजाया गार्हंपत्यो गृहपंतिर्गृहपंतिर्गार्हंपत्यः प्प्रजायांः। गृहपंतिरितिं गृह पंतिः। गार्हंपत्यः प्प्रजायांः प्प्रजाया गार्हंपत्यो गार्हंपत्यः प्प्रजायां व्वसुवित्तंमो व्वसुवित्तंमः प्प्रजाया गार्हंपत्यो गार्हंपत्यः प्प्रजायां व्वसुवित्तंमः। गार्हंपत्यऽ इति गार्ह पत्यः। प्रजायां व्वसुवित्तंमो व्वसुवित्तंमः प्प्रजायांः प्प्रजायां व्वसुवित्तंमः। प्रजायाऽ इतिं प्प्र जायांः। व्वसुवित्तंमऽ इतिं वसुवित् तंमः॥ अग्ग्नें गृहपते गृहपतेग्ग्नेग्ग्नें गृहपते पुरीष्ष्य÷ पुरीष्ष्यो गृहपतेग्ग्नेग्ग्नें गृहपते पुरीष्ष्य÷। गृहपते पुरीष्ष्य÷ पुरीष्ष्यो गृहपते गृहपते पुरीष्ष्यो रयिमान्व्रयिमान्त्पुरीष्ष्यो गृहपते गृहपते पुरीष्ष्यो रयिमान्। गृहपतऽ इतिं गृह पते॥ पुरीष्ष्यो रयिमान्व्रयिमान्त्पुरीष्ष्य÷ पुरीष्ष्यो रयिमान्त्पुष्टिवर्द्धंनः पुष्टिवर्द्धंनो रयिमान्त्पुरीष्ष्य÷ पुरीष्ष्यो रयिमान्त्पुष्टिवर्द्धंनः। रयिमान्त्पुष्टिवर्द्धंनः पुष्टिवर्द्धंनो रयिमान्व्रयिमान्त्पुष्टिवर्द्धंनः। रयिमानितिं रयि मान्। पुष्टिवर्द्धंनऽ इतिं पुष्टि व्वर्द्धंनः॥ अग्ग्नें पुरीष्ष्य पुरीष्ष्याग्ग्नेग्ग्नें पुरीष्ष्य। पुरीष्ष्येतिं पुरीष्ष्य॥३९॥

गृहा मा मा गृहा गृहा मा बिंभीत बिभीत मा गृहा गृहा मा बिंभीत[1]। मा बिंभीत बिभीत मा मा बिंभीत मा मा बिंभीत मा मा बिंभीत मा। बिभीत मा मा

[1]. मा.म.प्र.शि.३. के अनुसार बिभीत पद में पवर्गीय बकार है।

बिभीत बिभीत मा वेपद्धं वेपद्धम्मा बिभीत बिभीत मा वेपद्धम्[1]। मा वेपद्धं-वेपद्धम्मा मा वेपद्धमूर्ज्जमूर्ज्जं वेपद्धम्मा मा वेपद्धमूर्ज्जम्। वेपद्धमूर्ज्जमूर्ज्जं वेपद्धं-वेपद्धमूर्ज्जम्बिभ्रतो बिभ्रतऽ ऊर्ज्जं वेपद्धं वेपद्धमूर्ज्जम्बिभ्रतः। ऊर्ज्जम्बिभ्रतो बिभ्रतऽ ऊर्ज्जमूर्ज्जम्बिभ्रतऽ एमसीमस्या बिभ्रतऽ ऊर्ज्जमूर्ज्जम्बिभ्रतऽ एम-सि। बिभ्रतऽ एमसीमस्या बिभ्रतो बिभ्रतऽ एमसि। एमसि। इमसीतीमसि॥ ऊर्ज्जम्बिभ्रद् बिभ्रदूर्ज्जमूर्ज्जम्बिभ्रद्वो वो बिभ्रदूर्ज्जमूर्ज्जम्बिभ्रद्वः। बिभ्रद्वो वो बिभ्रद् बिभ्रद्वः सुमनाः सुमना वो बिभ्रद् बिभ्रद्वः सुमनाः। वः सुमनाः सुमना वो वः सुमनाः सुमेधाः सुमेधाः सुमना वो वः सुमनाः सुमेधाः। सुमनाः सुमेधाः सुमेधाः सुमनाः सुमनाः सुमेधा गृहान्गृहान्त्सुमेधाः सुमनाः सुमनाः सुमेधा गृहान्[2]। सुमनाऽ इति सु मनाः। सुमेधा गृहान्गृहा-न्त्सुमेधाः सुमेधा गृहानैम्म्येम्म्या गृहान्त्सुमेधाः सुमेधा गृहानैमि। सुमेधाऽ इति सु मेधाः। गृहानैम्म्येम्या गृहान्गृहानैमि मनसा मनसैम्म्या गृहान्गृहानै-मि मनसा। ऐमि। एमि मनसा मनसैम्म्येमि मनसा मोदमानो मोदमानो मनसैम्म्येमि मनसा मोदमानः। मनसा मोदमानो मोदमानो मनसा मनसा मोदमानः। मोदमानऽ इति मोदमानः॥४०॥

येषामद्ध्येत्यद्ध्येति येषाँय्येषामद्ध्येति प्प्रवसन्प्रवसन्नद्ध्येति येषाँय्येषाम-द्ध्येति प्प्रवसन्। अद्ध्येति प्प्रवसन्प्रवसन्नद्ध्येत्यद्ध्येति प्प्रवसन्न्येषु येषु प्प्रवसन्न-द्ध्येत्यद्ध्येति प्प्रवसन्न्येषु। अद्ध्येतीत्यधि एति। प्रवसन्न्येषु येषु प्प्रवसन्प्रवसन्न्येषु सौमनसः सौमनसो येषु प्प्रवसन्प्रवसन्न्येषु सौमनसः। प्रवसन्निति प्प्र वसन्।

[1]. अय मा –स –न –शब्देभ्यो विभाषाम्रेडिते यवौ (या. शि. १५७) इस वचन के अनुसार व्यवस्थित विकल्प होने से वेपद्धम् के वकार का पदादि होने पर भी गुरुत्व नहीं होगा।

[2]. वा.प्रा.३.८९. के अनुसार यहाँ पदान्त नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

येषुं सौमनुसः सौंमनुसो येषु येषुं सौमनुसो बुहुर्बुहुः सौंमनुसो येषु येषुं सौमनुसो बुहुः। सौमुनुसो बुहुर्बुहुः सौंमनुसः सौंमनुसो बुहुः। बुहुरितिं बुहुः॥ गृहानुपोपं गृहान्गृहानुपं ह्वयामहे ह्वयामहु उपं गृहान्गृहानुपं ह्वयामहे। उपं ह्वयामहे ह्वयामहु उपोपं ह्वयामहे ते ते ह्वंयामहु उपोपं ह्वयामहे ते। ह्वुयामुहे ते ते ह्वंयामहे ह्वयामहे ते नों नुस्ते ह्वंयामहे ह्वयामहे ते नंः[1]। ते नों नुस्ते ते नों जानन्तु जानन्तु नुस्ते ते नों जानन्तु। नो जानुन्तु जानुन्तु नो नो जानुन्तु जानुतो जांनुतो जांनन्तु नो नो जानन्तु जानुतः। जानुन्तु जानुतो जांनुतो जांनन्तु जानन्तु जानुतः। जानुतऽ इतिं जानुतः॥४१॥

उपंहूताऽ इहेहोपंहूताऽ उपंहूताऽ इह गावो गावंऽ इहोपंहूताऽ उपंहूताऽ इह गावंः। उपंहूताऽ इत्युपं हूताः। इह गावो गावंऽ इहेह गावुऽ उपंहूताऽ उपंहूता गावंऽ इहेह गावुऽ उपंहूताः। गावुऽ उपंहूताऽ उपंहूता गावो गावुऽ उपंहूताऽ अजावयोंजावयुऽ उपंहूता गावो गावुऽ उपंहूताऽ अजावयंः। उपंहूताऽ अजावयोंजावयुऽ उपंहूताऽ उपंहूताऽ अजावयंः। उपंहूताऽ इत्युपं हूताः। अजावयुऽ इत्यंजावयंः[2]॥ अथोऽ अन्नस्यान्नस्याथोऽ अथोऽ अन्नंस्य कीला-लंः कीलालोन्नस्याथोऽ अथोऽ अन्नंस्य कीलालंः। अथोऽ इत्यथों। अन्नंस्य कीलालंः कीलालोन्नस्यान्नंस्य कीलालुऽ उपंहूतुऽ उपंहूतः कीलालोन्नस्या-न्नंस्य कीलालुऽ उपंहूतः। कीलालुऽ उपंहूतुऽ उपंहूतः कीलालंः कीलालुऽ उपंहूतो गृहेषुं गृहेषूपंहूतः कीलालंः कीलालुऽ उपंहूतो गृहेषुं। उपंहूतो गृहेषुं गृहेषूपंहूतुऽ उपंहूतो गृहेषुं नो नो गृहेषूपंहूतुऽ उपंहूतो गृहेषुं नः। उपंहूतुऽ इत्युपं हूतः। गृहेषुं नो नो गृहेषुं गृहेषुं नः। नुऽ इतिं नः॥ क्षेमांय वो वुः

[1]. स्वर पूर्व में न होने से सन्धि के प्रारम्भ में ह्वयामहे पद में वकार का द्वित्व नहीं होगा।

[2]. जनयत्या ओषधयोवृषायिषत नहि चनास्मभ्यमजावयो वलगम् (वा. प्रा. ५.३५) इस सूत्र से यहाँ पृथक्करण विहित नहीं है।

क्षेमा॑य॒ क्षेमा॑य व॒ः शान्त्यै॒ शान्त्यै॑ व॒ः क्षेमा॑य॒ क्षेमा॑य व॒ः शान्त्यै॑। व॒ः शान्त्यै॒ शान्त्यै॑ वो व॒ः शान्त्यै॒ प्प्र प्प्र शान्त्यै॑ वो व॒ः शान्त्यै॒ प्प्र। शान्त्यै॒ प्प्र प्प्र शान्त्यै॒ शान्त्यै॒ प्प्र प॑द्ये पद्ये॒ प्प्र शान्त्यै॒ शान्त्यै॒ प्प्र प॑द्ये। प्र प॑द्ये पद्ये॒ प्प्र प्प्र प॑द्ये शि॒वꣳ शि॒वम्प॑द्ये॒ प्प्र प्प्र प॑द्ये शि॒वम्। प॒द्ये॒ शि॒वꣳ शि॒वम्प॑द्ये पद्ये शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शि॒वम्प॑द्ये पद्ये शि॒वꣳ श॒ग्ग्मम्। शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शि॒वꣳ शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒य्योः शँ॒य्योः श॒ग्ग्मꣳ शि॒वꣳ शि॒वꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒य्योः। श॒ग्ग्मꣳ शँ॒य्योः शँ॒य्योः श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः श॒ग्ग्मꣳ श॒ग्ग्मꣳ शँ॒य्योः शँ॒य्योः। शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः शँ॒य्योः। शँ॒य्योरिति॑ श॒म् योः। शँ॒य्योरिति॑ श॒म् योः॥४२॥

प्र॒घा॒सिनो॑ हवामहे हवामहे प्प्रघा॒सिन॑ः प्प्रघा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ हवामहे प्प्रघा॒सिन॑ः प्प्रघा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुत॑ः। प्र॒घा॒सिन॒ऽ इति॑ प्प्र घा॒सिन॑ः। ह॒वा॒म॒हे॒ म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ हवामहे हवामहे म॒रुत॑श्च च म॒रुतो॑ हवामहे हवामहे म॒रुत॑श्च। म॒रुत॑श्च च म॒रुतो॑ म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सो रि॒शाद॑सश्च म॒रुतो॑ म॒रुत॑श्च रि॒शाद॑सः। च॒ रि॒शाद॑सो रि॒शाद॑सश्च च रि॒शाद॑सः। रि॒शाद॑स॒ऽ इति॑ रि॒शाद॑सः॥ क॒र॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः स॒जोष॑सः कर॒म्भेण॑ कर॒म्भेण॑ स॒जोष॑सः। स॒जोष॑स॒ऽ इति॑ स॒ जोष॑सः॥४३॥

यद् ग्रामे॒ ग्ग्रामे॒ यद्यद् ग्रामेर॒ण्येर॑ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ यद्यद् ग्रामेर॑ण्ये[1]। ग्रामेर॒ण्येर॑ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ ग्ग्रामेर॑ण्ये स॒भाया॑ꣳ स॒भाया॒मर॑ण्ये॒ ग्ग्रामे॒ ग्ग्रामेर॑ण्ये स॒भाया॑म्। अर॑ण्ये स॒भाया॑ꣳ स॒भाया॒मर॒ण्येर॑ण्ये स॒भाया॑मिन्द्रि॒यऽ इ॑न्द्रि॒ये स॒भाया॒मर॒ण्येर॑ण्ये स॒भाया॑मिन्द्रि॒ये। स॒भाया॑मिन्द्रि॒यऽ इ॑न्द्रि॒ये स॒भाया॑ꣳ

---

[1]. संहिता में इस मन्त्र में यत् पद पाँच बार आता है, वा.प्रा.४.१७७. के अनुसार प्रथम यत् को छोड़कर अन्य सभी की पुनरुक्ति में सङ्क्रम होता है।

सु॒भाया॑मिन्द्रि॒ये। इ॒न्द्रि॒यऽ इती॑न्द्रि॒ये॥ एनं॑श्चकृ॒म च॑कृ॒मैन॒ऽ एनं॑श्चकृ॒मा व्व॒यँ-
व्व॒यञ्चं॑कृ॒मैन॒ऽ एनं॑श्चकृ॒मा व्व॒यम्। च॒कृ॒मा व्व॒यँव्व॒यञ्च॑कृ॒म च॑कृ॒मा व्व॒यमि॒दमि॒दँव्व॒य-
ञ्चं॑कृ॒म च॑कृ॒मा व्व॒यमि॒दम्। व्व॒यमि॒दमि॒दँव्व॒यँव्व॒यमि॒दन्तत्तदि॒दँव्व॒यँव्व॒यमि॒दन्तत्।
इ॒दन्तत्तदि॒दमि॒दन्तदवाव॒ तदि॒दमि॒दन्तदव॑। तदवाव॒ तत्तदव॑ यजामहे यजाम॒हेव॒
तत्तदव॑ यजामहे। अव॑ यजामहे यजाम॒हेवाव॑ यजामहे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ यजाम॒हे-
वाव॑ यजामहे॒ स्वाहा॑। य॒जा॒म॒हे॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ यजामहे यजामहे॒ स्वाहा॑।
स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥४४॥

मो षू णो॑ न॒ः सु मो मो षू ण॑ऽ इन्द्रेन्द्र न॒ः सु मो मो षू ण॑ऽ इन्द्र[1]। मोऽ
इति॒ मो। सु न॑ः। न॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ नो॒ न॒ऽ इ॒न्द्रात्रात्रें॑न्द्र नो नऽ इ॒न्द्रात्र॑। इ॒न्द्रात्रात्रें-
न्द्रे॒न्द्रात्र॑ पृ॒त्सु पृ॒त्स्वत्रें॑न्द्रे॒न्द्रात्र॑ पृ॒त्सु। अत्र॑ पृ॒त्सु पृ॒त्स्वत्रात्र॑ पृ॒त्सु दे॒वैर्दे॒वैः
पृ॒त्स्वत्रात्र॑ पृ॒त्सु दे॒वैः। पृ॒त्सु दे॒वैर्दे॒वैः पृ॒त्सु पृ॒त्सु दे॒वैरस्त्यस्ति॑ दे॒वैः पृ॒त्सु पृ॒त्सु
दे॒वैरस्ति॑। पृ॒त्स्विति॑ पृ॒त् सु। दे॒वैरस्त्यस्ति॑ दे॒वैर्दे॒वैरस्ति॒ हि ह्यस्ति॑ दे॒वैर्दे॒वैरस्ति॒
हि। अस्ति॒ हि ह्यस्त्यस्ति॒ हि ष्म॑ स्म॒ ह्यस्त्यस्ति॒ हि ष्म॑। हि ष्म॑ स्म॒ हि
हि ष्मा॑ ते ते स्म॒ हि हि ष्मा॑ ते। स्मा॒ ते॒ ते॒ स्म॒ स्मा॒ ते॒ शु॒ष्मि॒ञ्छु॒ष्मिँ॒स्ते॒
स्म॒ स्मा॒ ते॒ शु॒ष्मि॒न्। ते॒ शु॒ष्मि॒ञ्छु॒ष्मिँ॒स्ते॒ ते॒ शु॒ष्मि॒न्न॒व॒याऽ अंव॒याः
शुं॑ष्मिँस्ते ते शु॒ष्मि॒न्नव॒याः। शु॒ष्मि॒न्न॒व॒याऽ अंव॒याः शुं॑ष्मिञ्छु॒ष्मिन्नव॒याः
। अ॒व॒याऽ इत्यं॑व॒ याः॥ म॒हश्चिं॑चि॒न्म॒हो म॒हश्चि॒द्यस्य॒ यस्यं॑ चि॒न्म॒हो म॒हश्चि॒-
द्यस्यं॑। चि॒द्यस्य॒ यस्यं॑ चिच्चि॒द्यस्यं॑ मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॒ यस्यं॑ चिच्चि॒द्यस्यं॑ मी॒ढुषः॑[2]।

---

[1]. मोषूणाभीषुणी च (वा. प्रा. ४.१८६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ क्रमपाठ में तीन पदों का क्रमवर्ग होता है। जटापाठ में भी तीन पदों का ही पाठ होता है। घनपाठ में चार पद ग्रहण किये जाते हैं। वा.प्रा.३.६१. के अनुसार यहाँ ओकार से परवर्ती सकार षकार होता है। वा.प्रा.३.१०७. के अनुसार मकार बाद में होने से षु का स्वर दीर्घ होता है। वा.प्रा.३.८६. के अनुसार नकार निपातन से णकार होता है।

[2]. वा. प्रा. ८.३९. के अनुसार माध्यन्दिन शाखा में ळकार एवं ळहकार नहीं हैं अतः मीढुषः ऐसा उच्चारण ही विहित है।

यस्य॑ मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॒ यस्य॒ यस्य॑ मी॒ढुषो॑ य॒व्व्या य॒व्व्या मी॒ढुषो॒ यस्य॒ यस्य॑ मी॒ढुषो॑ य॒व्व्या। मी॒ढुषो॑ य॒व्व्या य॒व्व्या मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॑ य॒व्व्या ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो य॒व्व्या मी॒ढुषो॑ मी॒ढुषो॑ य॒व्व्या ह॒विष्म्म॑तः[1]। य॒व्व्या ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो य॒व्व्या य॒व्व्या ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो य॒व्व्या य॒व्व्या ह॒विष्म्म॑तो म॒रुत॑ः। ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॒ व्वन्द॑ते॒ व्वन्द॑ते म॒रुतो॑ ह॒विष्म्म॑तो ह॒विष्म्म॑तो म॒रुतो॒ व्वन्द॑ते। म॒रुतो॒ व्वन्द॑ते॒ व्वन्द॑ते म॒रुतो॑ म॒रुतो॒ व्वन्द॑ते॒ गीर्ग्गीर्व्वन्द॑ते म॒रुतो॑ म॒रुतो॒ व्वन्द॑ते॒ गीः। व्वन्द॑ते॒ गीर्ग्गीर्व्वन्द॑ते॒ व्वन्द॑ते॒ गीः। गीरिति॒ गीः ॥४५॥

अक्र॒न्कर्म्म॒ कर्म्मा॑क्र॒न्नक्र॒न्कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑ः कर्म्म॒कृत॒ः कर्म्मा॑क्र॒न्नक्र॒न्कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑ः। कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑ः कर्म्म॒कृत॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑ः स॒ह स॒ह क॑र्म्म॒कृत॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ कर्म्म॒कृत॑ः स॒ह। क॒र्म्म॒कृत॑ः स॒ह स॒ह क॑र्म्म॒कृत॑ः कर्म्म॒कृत॑ः स॒ह व्वा॒चा व्वा॒चा स॒ह क॑र्म्म॒कृत॑ः कर्म्म॒कृत॑ः स॒ह व्वा॒चा। क॒र्म्म॒कृत॒ऽ इति॑ कर्म्म॒ कृत॑ः। स॒ह व्वा॒चा व्वा॒चा स॒ह स॒ह व्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑ मयो॒भुवा॑ व्वा॒चा स॒ह स॒ह व्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑। व्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑ मयो॒भुवा॑ व्वा॒चा व्वा॒चा म॑यो॒भुवा॑। म॒यो॒भुवेति॑ मय॒ः भुवा॑॥ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॒ कर्म्म॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वा कर्म्म॑ दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॒ः कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा। कर्म्म॑ कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वा कर्म्म॒ कर्म्म॑ कृ॒त्त्वास्त॒मस्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कर्म्म॒ कर्म्म॑ कृ॒त्त्वास्त॑म्। कृ॒त्त्वास्त॒मस्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वास्त॒म्प्र प्प्रास्त॑ङ्कृ॒त्त्वा कृ॒त्त्वास्त॒म्प्र। अस्त॒म्प्र प्प्रास्त॒मस्त॒म्प्रेते॑त॒ प्प्रास्त॒मस्त॒म्प्रेत॑। प्रेते॑त॒ प्प्र प्प्रेत॑ सचाभुव॒ः सचाभुव॒ऽ इत॒ प्प्र प्प्रेत॑ सचाभुव॒ः। इ॒त॒ स॒चा॒भु॒व॒ः स॒चा॒भु॒व॒ऽ इ॒ते॒त॒ स॒चा॒भु॒व॒ः। स॒चा॒भु॒व॒ऽ इति॑ सचा भुव॒ः ॥४६॥

---

[1]. हविष्म्मतः यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के द्वारा षकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) के द्वारा मकार का ही द्वित्व होता है। विप्रतिषेध उत्तरं बलवदलोपे(वा.प्रा.१.१५९) के अनुसार उत्तरवर्ती सूत्र बलवान् होता है।

अव॑भृथ निचुम्पुण निचुम्पु॒णाव॑भृ॒थाव॑भृथ निचुम्पुण निचे॒रुर्न्नि॑चे॒रुर्न्नि॑चुम्पुणाव॑भृ॒थाव॑भृथ निचुम्पुण निचे॒रुः। अव॑भृ॒थेत्यव॑ भृथ। नि॒चु॒म्पु॒ण॒ नि॒चे॒रुर्न्नि॑चे॒रुर्न्नि॑चुम्पुण निचुम्पुण निचे॒रुर॑स्यसि निचे॒रुर्न्नि॑चुम्पुण निचुम्पुण निचे॒रुर॑सि। नि॒चु॒म्पु॒णेति॑ नि चुम्पुण। नि॒चे॒रुर॑स्यसि निचे॒रुर्न्नि॑चे॒रुर॑सि निचुम्पु॒णो नि॑चुम्पुणो॒सि निचे॒रुर्न्नि॑चे॒रुर॑सि निचुम्पु॒णः। नि॒चे॒रुरिति॑ नि चे॒रुः। अ॒सि॒ नि॒चु॒म्पु॒णो नि॑चुम्पु॒णो॒स्यसि निचुम्पु॒णः। नि॒चु॒म्पु॒णऽ इति॑ नि चुम्पु॒णः॥ अव॑ दे॒वैर्द्दे॒वैरवाव॑ दे॒वैर्द्दे॒वकृ॑तन्दे॒वकृ॑तन्दे॒वैरवाव॑ दे॒वैर्द्दे॒वकृ॑तम्। दे॒वैर्द्दे॒वकृ॑तन्दे॒वकृ॑तन्दे॒वैर्द्दे॒वैर्द्दे॒वकृ॑त॒मेन॒ऽ एनो॑ दे॒वकृ॑तन्दे॒वैर्द्दे॒वैर्द्दे॒वकृ॑त॒मेनः॑[1]। दे॒वकृ॑त॒मेन॒ऽ एनो॑ दे॒वकृ॑तन्दे॒वकृ॑त॒मेनो॑यासिषमयासिष॒मेनो॑ दे॒वकृ॑तन्दे॒वकृ॑त॒मेनो॑यासिषम्[2]। दे॒वकृ॑त॒मिति॑ दे॒व कृ॑तम्। एनो॑यासिषमयासिष॒मेन॒ऽ एनो॑यासिष॒मवावा॑यासिष॒मेन॒ऽ एनो॑यासिष॒मव॑। अ॒या॒सि॒ष॒मवावा॑यासिषमयासिष॒मव॒ मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑रवा॑यासिषमयासिष॒मव॒ मर्त्त्यैः॑। अव॒ मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑रवाव॒ मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑रवाव॒ मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑कृतम्। मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑कृतम्पुरु॒रा॒व्ण्णः॑ पुरु॒रा॒व्ण्णो॒ मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑र्म्मर्त्त्यै॑कृतम्पुरु॒रा॒व्ण्णः॑। मर्त्त्यै॑कृतम्पुरु॒रा॒व्ण्णः॑ पुरु॒रा॒व्ण्णो॒ मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑कृतम्पुरु॒रा॒व्ण्णो॑ देव देव पुरु॒रा॒व्ण्णो॒ मर्त्त्यै॑कृ॒त॒म्मर्त्त्यै॑कृतम्पुरु॒रा॒व्ण्णो॑ देव। मर्त्त्यै॑कृ॒त॒मिति॒ मर्त्त्यै॑ कृतम्। पु॒रु॒रा॒व्ण्णो॑ देव देव पु॒रु॒रा॒व्ण्णः॑ पु॒रु॒रा॒व्ण्णो॑ देव रि॒षो रि॒षो दे॑व पु॒रु॒रा॒व्ण्णः॑ पु॒रु॒रा॒व्ण्णो॑ देव रि॒षः। पु॒रु॒रा॒व्ण्ण॒ऽ इति॑ पु॒रु॒ रा॒व्ण्णः॑। दे॒व॒ रि॒षो रि॒षो दे॑व देव रि॒षस्स्पा॑हि पाहि रि॒षो दे॑व देव रि॒षस्स्पा॑हि[3]। रि॒षस्स्पा॑हि पाहि रि॒षो रि॒षस्स्पा॑हि। पा॒हीति॑ पाहि॥४७॥

---

1. एनोऽपापे (वा. प्रा. २.१३) इस सूत्र के अनुसार एनः पद पाप का वाचक न होने पर अनुदात्त होता है। यहाँ पाप का वाचक होने से आद्युदात्त है।

2. एनोयासिषम् यहाँ व्यपरे च(वा.प्रा.४.७४) इस सूत्र से अकार का अभिनिधान हो गया।

3. रिषः पाहि यहाँ अध्वनो रजसो रिषः स्पृशस्पातौ(वा.प्रा.३.२८) इस सूत्र से विसर्जनीय सकार हो जाता है।

पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि दर्व्वि पू॒र्ण्णा पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॒ परा॑ दर्व्वि पू॒र्ण्णा पू॒र्ण्णा द॑र्व्वि॒ परा॑[1]। द॒र्व्वि॒ परा॒ परा॑ दर्व्वि दर्व्वि॒ परा॑ पत पत॒ परा॑ दर्व्वि दर्व्वि॒ परा॑ पत। परा॑ पत पत॒ परा॒ परा॑ पत॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ सु॒पू॑र्ण्णा पत॒ परा॒ परा॑ पत॒ सु॒पू॑र्ण्णा। प॒त॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ सु॒पू॑र्ण्णा पत पत॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ पुन॒ः पुन॒ः सु॒पू॑र्ण्णा पत पत॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ पुन॑ः। सु॒पू॑र्ण्णा॒ पुन॒ः पुन॒ः सु॒पू॑र्ण्णा॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ पु॒न॒रा प॑त प॒ता पु॒न॒ः सु॒पू॑र्ण्णा॒ सु॒पू॑र्ण्णा॒ पु॒न॒रा प॑त। सु॒पू॒र्ण्णेति॑ सु पू॒र्ण्णा। पु॒न॒रा प॑त प॒ता पु॒न॒ः पु॒न॒रा प॑त। आ प॑त। प॒तेति॑ पत॥ व॒स्न्नेव॒ वि॒ वि व॒स्न्नेव॑ व॒स्न्नेव॒ वि॒ क्री॑णावहै क्रीणावहै॒ वि॒ व॒स्न्नेव॑ व॒स्न्नेव॒ वि॒ क्री॑णावहै। व॒स्न्नेवेति॑ व॒स्न्ना इ॑व। वि॒ क्री॑णावहै क्रीणावहै॒ वि॒ वि क्री॑णावहा॒ऽ इष॒मिष॑ङ्क्रीणावहै॒ वि॒ वि क्री॑णावहा॒ऽ इष॑म्। क्री॒णा॒व॒हा॒ऽ इष॒मिष॑ङ्क्रीणावहै क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॑-ङ्क्रीणावहै क्रीणावहा॒ऽ इष॒मूर्ज्ज॑म्। इष॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्रतो शत-क्रत॒ऽ ऊर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्रतो। ऊर्ज्ज॑ꣳ शतक्रतो शतक्रत॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्ज॑ꣳ शतक्रतो। श॒त॒क्र॒तो॒ऽ इति॑ शत क्रतो॥४८॥

दे॒हि मे॑ मे दे॒हि दे॒हि मे॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि मे दे॒हि दे॒हि मे॒ ददा॑मि। मे॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि मे मे॒ ददा॑मि ते ते॒ ददा॑मि मे मे॒ ददा॑मि ते। ददा॑मि ते ते॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि ते॒ नि नि ते॒ ददा॑मि॒ ददा॑मि ते॒ नि। ते॒ नि नि ते॑ ते॒ नि मे॑ मे॒ नि ते॑ ते॒ नि मे॑[2]। नि मे॑ मे॒ नि नि मे॑ धेहि धेहि मे॒ नि नि मे॑ धेहि। मे॒ धे॒हि॒ धे॒हि॒ मे॒ मे॒ धे॒हि॒ नि नि धे॑हि मे मे धेहि॒ नि। धे॒हि॒ नि नि धे॑हि धेहि॒ नि ते॑ ते॒ नि धे॑हि धेहि॒ नि ते॑। नि ते॑ ते॒ नि नि ते॑ दधे दधे ते॒ नि नि ते॑ दधे। ते॒ द॒धे॒ द॒धे॒ ते॒ ते॒ द॒धे॒। द॒ध॒ऽ इति॑ दधे॥ नि॒हार॑ञ्च च नि॒हार॑न्नि॒हार॑ञ्च॒ हरा॑सि॒ हरा॑सि च नि॒हार॑न्नि॒हार॑ञ्च॒ हरा॑सि। नि॒हा॒र॒मिति॑ नि॒ हार॑म्। च॒ हरा॑सि॒ हरा॑सि च च॒ हरा॑सि मे मे॒ हरा॑सि च च॒ हरा॑सि मे। हरा॑सि मे मे॒ हरा॑सि॒

[1]. वा.प्रा.३.८४. के अनुसार पूर्णा पद में नकार णकार हो गया है।

[2]. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

हरा॑सि मे नि॒हार॑न्नि॒हार॑म्मे॒ हरा॑सि॒ हरा॑सि मे नि॒हार॑म्। मे॒ नि॒हार॑न्नि॒हार॑म्मे मे नि॒हार॒न्नि नि नि॒हार॑म्मे मे नि॒हार॒न्नि। नि॒हार॒न्नि नि नि॒हार॑न्नि॒हार॒न्नि ह॑राणि हरा-णि॒ नि नि॒हार॑न्नि॒हार॒न्नि ह॑राणि। नि॒हार॒मिति॑ नि॒ हार॑म्। नि ह॑राणि हराणि॒ नि नि ह॑राणि ते ते हराणि॒ नि नि ह॑राणि ते। ह॒रा॒णि॒ ते॒ ते॒ ह॒रा॒णि॒ ह॒रा॒णि॒ ते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ ते हराणि हराणि ते॒ स्वाहा॑। ते॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ ते ते॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥४९॥

अक्ष॒न्नमी॑मद॒न्तामी॑मद॒न्ताक्ष॒न्नक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ हि ह्यमी॑मद॒न्ताक्ष॒न्न-क्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ हि। अमी॑मदन्त॒ हि ह्यमी॑मद॒न्तामी॑मदन्त॒ ह्यवाव॒ ह्यमी॑मद॒-न्तामी॑मदन्त॒ ह्यव॑। ह्यवाव॒ हि ह्यव॑ प्प्रि॒याः॑ प्प्रि॒याऽ अव॒ हि ह्यव॑ प्प्रि॒याः॑[1]। अव॑ प्प्रि॒याः॑ प्प्रि॒याऽ अवाव॑ प्प्रि॒याऽ अ॑धूषताधूषत प्प्रि॒याऽ अवाव॑ प्प्रि॒याऽ अ॑धूषत। प्रि॒याऽ अ॑धूषताधूषत प्प्रि॒याः॑ प्प्रि॒याऽ अ॑धूषत। अ॒धू॒ष॒तेत्य॑धूषत॥ अस्तो॑षत॒ स्वभा॑नव॒ः स्वभा॑न॒वोस्तो॑ष॒तास्तो॑षत॒ स्वभा॑नवो॒ व्विप्प्रा॒ व्विप्प्रा॒ः स्वभा॑न॒वोस्तो॑ष॒तास्तो॑षत॒ स्वभा॑नवो॒ व्विप्प्रा॑ः। स्वभा॑नवो॒ व्विप्प्रा॒ व्विप्प्रा॒ः स्वभा॑-नव॒ः स्वभा॑नवो॒ व्विप्प्रा॒ नवि॑ष्ट्या॒ नवि॑ष्ट्या॒ व्विप्प्रा॒ः स्वभा॑नव॒ः स्वभा॑नवो॒ व्विप्प्रा॒ नवि॑ष्ट्या। स्वभा॑नव॒ऽ इति॒ स्व भा॑नवः। व्विप्प्रा॒ नवि॑ष्ट्या॒ नवि॑ष्ट्या॒ व्विप्प्रा॒ व्विप्प्रा॒ नवि॑ष्ट्या म॒ती म॒ती नवि॑ष्ट्या॒ व्विप्प्रा॒ व्विप्प्रा॒ नवि॑ष्ट्या म॒ती। नवि॑ष्ट्या म॒ती म॒ती नवि॑ष्ट्या॒ नवि॑ष्ट्या म॒ती योज॒ योज॑ म॒ती नवि॑ष्ट्या॒ नवि॑ष्ट्या म॒ती योज॑। म॒ती योज॒ योज॑ म॒ती म॒ती योजा॒ नु नु योज॑ म॒ती म॒ती योजा॒ नु। योजा॒ नु नु योज॒ योजा॒ न्न्वि॒न्द्रेन्द्र॒ नु योज॒ योजा॒ न्न्वि॒न्द्र[2]। न्वि॑न्द्रेन्द्र॒ नु न्न्वि॑न्द्र ते तऽ इन्द्र॒ नु

1. ह्यव यहाँ सन्धि के प्रारम्भ में स्वरपूर्व में न होने से यकार का द्वित्व नहीं होगा।

2. नु इन्द्र यहाँ अपृक्त न होने से उ(नु) प्रकृतिभाव से नहीं रहेगा। वा.प्रा.१.९५. के अनुसार स्वतन्त्र पद होने पर उकार प्रगृह्य होता है।

त्र्वि॑न्द्र ते। इ॒न्द्र॒ ते॒ त॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ ते॒ हरी॒ हरी॑ तऽ इन्द्रेन्द्र ते॒ हरी॑। ते॒ हरी॒ हरी॑ ते ते॒ हरी॑। हरी॒ऽ इति॒ हरी॑॥५०॥

सु॒स॒न्दृशं॑न्त्वा त्वा सुस॒न्दृशꣳ॑ सुस॒न्दृशं॑न्त्वा व्व॒यँव्व॒यन्त्वा॑ सुस॒न्दृशꣳ॑ सुस॒न्दृशं॑न्त्वा व्व॒यम्। सु॒स॒न्दृश॒मिति॑ सु स॒न्दृशं॑म्। त्वा॒ व्व॒यँव्व॒यन्त्वा॑ त्वा व्व॒यम्म॒घ॑व॒न्नमघ॑वन्व्व॒यन्त्वा॑ त्वा व्व॒यम्मघ॑वन्। व्व॒यम्मघ॑व॒न्नमघ॑वन्व्व॒यँव्व॒यम्मघ॑वन्वन्दि॒षी॒महि॑ व्वन्दि॒षी॒महि॒ मघ॑वन्व्व॒यँव्व॒यम्मघ॑वन्वन्दि॒षी॒महि॑। मघ॑वन्वन्दि॒षी॒महि॑ व्वन्दि॒षी॒महि॒ मघ॑व॒न्नमघ॑वन्वन्दि॒षी॒महि॑। मघ॑व॒न्निति॒ मघ॑ व्वन्। व्व॒न्दि॒षी॒म॒हीति॑ वन्दि॒षी॒महि॑॥ प्र नू॒नन्नू॒नम्प्र प्प्र नू॒नम्पू॒र्ण्णव॑न्धुरᳲ पू॒र्ण्णव॑न्धुरो नू॒नम्प्र प्प्र नू॒नम्पू॒र्ण्णव॑न्धुरᳲ[1]। नू॒नम्पू॒र्ण्णव॑न्धुरᳲ पू॒र्ण्णव॑न्धुरो नू॒नन्नू॒नम्पू॒र्ण्णव॑न्धुर स्तु॒त स्तु॒तः पू॒र्ण्णव॑न्धुरो नू॒नन्नू॒नम्पू॒र्ण्णव॑न्धुर स्तु॒तः। पू॒र्ण्णव॑न्धुर स्तु॒त स्तु॒तः पू॒र्ण्णव॑न्धुरᳲ पू॒र्ण्णव॑न्धुर स्तु॒तो या॑सि यासि स्तु॒तः पू॒र्ण्णव॑न्धुरᳲ पू॒र्ण्णव॑न्धुर स्तु॒तो या॑सि। पू॒र्ण्णव॑न्धुर॒ऽ इति॑ पू॒र्ण्ण व्व॑न्धुरᳲ। स्तु॒तो या॑सि यासि स्तु॒त स्तु॒तो या॑सि॒ व्वशा॒न्वशा॑न्यासि स्तु॒त स्तु॒तो या॑सि॒ व्वशा॑न्। या॒सि॒ व्वशा॒न्वशा॑न्यासि यासि॒ व्वशा॒ँ२॥ऽ अन्व॒नु वशा॑न्यासि यासि॒ व्वशा॒ँ२॥ऽ अनु॑। व्वशा॒ँ२॥ऽ अन्व॒नु वशा॒न्वशा॒ँ२॥ऽ अनु॑। अन्वित्यनु॑॥५१॥

मनो॒ नु नु मनो॒ मनो॒ न्वा ह्वा॑महे ह्वामह॒ऽ आ नु मनो॒ मनो॒ न्वा ह्वा॑महे। न्वा ह्वा॑महे ह्वामह॒ऽ आ नु न्वा ह्वा॑महे नाराश॒ꣳसेन॑ नाराश॒ꣳसेन॑ ह्वामह॒ऽ आ नु न्वा ह्वा॑महे नाराश॒ꣳसेन॑। आ ह्वा॑महे। ह्वा॒म॒हे॒ ना॒रा॒श॒ꣳसेन॑ नाराश॒ꣳसेन॑ ह्वामहे

[1]. पूर्णबन्धुरः इस पद के वकार को माण्डव्यमहर्षिप्रणीता शिक्षा में पवर्गीय नहीं माना है। अमोघानन्दिनी शिक्षा के अनुसार – प्रथमाक्षरं न वर्जीत द्वितीयं परिवर्जयेत्। एवं बह्वीस्तथा बाह्वोः पूर्णबन्धुं परित्यजेत्॥ श्लोक ६ ।

यहां भाष्यकार उव्वट बन्धुरशब्दो रथनीडवचनः एवं महीधर रथनीडवाची कह रहे हैं। त्रिबन्धुरः वा. सं.२८ -१९ इसके भाष्य में उव्वट सारथिस्थानवचनः कहते हैं, जबकि महीधर ने त्रीणि बन्धुराणि ऋग्यजुः सामलक्षणानि बन्धनानि कहा है। ऋग्वेद ८.५.२८. में हिरण्यबन्धुरम् पद आया है तथा ऋग्वेद ४.४६४. में भी यही पद आया है। श.ब्रा.२.६.१.३८ में पूर्णबन्धुरः पाठ है। ऋग्वेद ९.६२.१७ में त्रिबन्धुरे पाठ है।

ह्वामहे नाराश॒ꣳसेन॒ स्तोमे॑न॒ स्तोमे॑न नाराश॒ꣳसेन॑ ह्वामहे ह्वामहे नाराश॒ꣳसेन॒ स्तोमे॑न। ना॒रा॒श॒ꣳसेन॒ स्तोमे॑न॒ स्तोमे॑न नाराश॒ꣳसेन॑ नाराश॒ꣳसेन॒ स्तोमे॑न। स्तोमे॒नेति॒ स्तोमे॑न॥ पि॒तॄ॒णाञ्च॑ च पितॄणाम्पि॑तॄ॒णाञ्च॒ मन्म॑भि॒र्म्मन्म॑भिश्च पितॄ-णाम्पि॑तॄ॒णाञ्च॒ मन्म॑भिः। च॒ मन्म॑भि॒र्म्मन्म॑भिश्च च॒ मन्म॑भिः। मन्म॑भि॒रिति॒ मन्म॑ भिः॥५२॥

आ नो॑ न॒ऽ आ न॑ऽ एत्त्वेतु न॒ऽ आ न॑ऽ एतु[1]। न॒ऽ ए॒त्त्वे॒तु नो॒ न॒ऽ ए॒तु मनो॒ मन॑ऽ एतु नो नऽ एतु॒ मन॑ः। ए॒तु मनो॒ मन॑ऽ एत्त्वेतु मन॒ः पुन॒ः पुन॒र्म्मन॑ऽ एत्त्वेतु॒ मन॒ः पुन॑ः। मन॒ः पुन॒ः पुन॒र्म्मनो॒ मन॒ः पुन॒ः क्रत्त्वे॒ क्रत्त्वे॒ पुन॒र्म्मनो॒ मन॒ः पुन॒ः क्रत्त्वे॑। पुन॒ः क्रत्त्वे॒ क्रत्त्वे॒ पुन॒ः पुन॒ः क्रत्त्वे॒ दक्षा॑य॒ दक्षा॑य॒ क्रत्त्वे॒ पुन॒ः पुन॒ः क्रत्त्वे॒ दक्षा॑य। पुन॒रिति॒ पुन॑ः[2]। क्रत्त्वे॒ दक्षा॑य॒ दक्षा॑य॒ क्रत्त्वे॒ क्रत्त्वे॒ दक्षा॑य जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ दक्षा॑य॒ क्रत्त्वे॒ क्रत्त्वे॒ दक्षा॑य जी॒वसे॑। दक्षा॑य जी॒वसे॑ जी॒वसे॒ दक्षा॑य॒ दक्षा॑य जी॒वसे॑। जी॒वस॒ऽ इति॑ जी॒वसे॑॥ ज्योक्च॑ च॒ ज्ज्योग्ग्ज्योक्च॒ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्यं॑ञ्च॒ ज्ज्योग्ग्ज्योक्च॒ सूर्य्य॑म्। च॒ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्यं॑ञ्च च॒ सूर्य्य॑न्दृ॒शे दृ॒शे सूर्य्यं॑ञ्च च॒ सूर्य्य॑न्दृ॒शे। सूर्य्य॑न्दृ॒शे दृ॒शे सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॑न्दृ॒शे। दृ॒शाऽ इति॑ दृ॒शे॥५३॥

पुन॑र्न्नो न॒ः पुन॒ः पुन॑र्न्न॒ः पितर॒ः पितरो न॒ः पुन॒ः पुन॑र्न्न॒ः पितर॒ः। न॒ः पि॒त॒र॒ः पि॒त॒रो॒ नो॒ न॒ः पि॒त॒रो॒ मनो॒ मन॑ः पितरो नो न॒ः पितरो॒ मन॑ः। पि॒त॒रो॒ मनो॒ मन॑ः पितर॒ः पितरो॒ मनो॒ ददा॑तु॒ ददा॑तु मन॑ः पितर॒ः पितरो॒ मनो॒ ददा॑तु।

---

[1]. अपृक्तमध्यानि त्रीणि स त्रिक्रमः (वा. प्रा. ४.१८४) इस सूत्र में क्रमपाठ के अन्तर्गत मध्य में अपृक्तसंज्ञक पद आने पर त्रिक्रम (तीन पदों के क्रम) का विधान है। कण्डिका के प्रारम्भ में अथवा अन्त में आ पद आने पर यह नियम चरितार्थ नहीं होगा। जहाँ – जहाँ क्रम एवं जटा में त्रिक्रम का विधान माना जाता है, वहाँ – वहाँ घन में यह चतुष्क्रम होता है।

[2]. रिफितं च संहितायामनिरुक्तम्(वा.प्रा.४.१९) इस सूत्र के अनुसार संहिता में जिसका रेफस्वरूप स्पष्ट नहीं हो, उस रिफित पद को इति से व्यवहित किया जाता है। वा.प्रा.१.१६८) के अनुसार पुनः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

मनो॒ ददा॑तु॒ ददा॑तु॒ मनो॒ मनो॒ ददा॑तु॒ दैव्यो॒ दैव्यो॒ ददा॑तु॒ मनो॒ मनो॒ ददा॑तु॒ दैव्य॑ः । ददा॑तु॒ दैव्यो॒ दैव्यो॒ ददा॑तु॒ ददा॑तु॒ दैव्यो॒ जनो॒ जनो॒ दैव्यो॒ ददा॑तु॒ ददा॑तु॒ दैव्यो॒ जन॑ः । दैव्यो॒ जनो॒ जनो॒ दैव्यो॒ दैव्यो॒ जन॑ः । जन॒ऽ इति॒ जन॑ः ॥ जी॒वँब्रा॑तँ॒ब्रात॑ञ्जी॒वञ्जी॒-वँब्रात॑ꣳ सचेमहि सचेमहि॒ ब्रात॑ञ्जी॒वञ्जी॒वँब्रात॑ꣳ सचेमहि। ब्रात॑ꣳ सचेमहि सचेमहि॒ ब्रातँ॒ब्रात॑ꣳ सचेमहि। स॒चे॒म॒हीति॑ सचेमहि॥५४॥

ब्र॒यꣳ सो॑म सोम ब्र॒यँब्र॒यꣳ सो॑म ब्र॒ते ब्र॒ते सो॑म ब्र॒यँब्र॒यꣳ सो॑म ब्र॒ते। सो॒म॒ ब्र॒ते ब्र॒ते सो॑म सोम ब्र॒ते तव॒ तव॑ ब्र॒ते सो॑म सोम ब्र॒ते तव॑। ब्र॒ते तव॒ तव॑ ब्र॒ते ब्र॒ते तव॒ मनो॒ मन॒स्तव॑ ब्र॒ते ब्र॒ते तव॒ मन॑ः । तव॒ मनो॒ मन॒स्तव॒ तव॒ मन॑स्त॒नूषु॑ त॒नूषु॒ मन॒स्तव॒ तव॒ मन॑स्त॒नूषु॑। मन॑स्त॒नूषु॑ त॒नूषु॒ मनो॒ मन॑स्त॒नूषु॒ बिब्भ्र॑तो॒ बिब्भ्र॑त-स्त॒नूषु॒ मनो॒ मन॑स्त॒नूषु॒ बिब्भ्र॑तः । त॒नूषु॒ बिब्भ्र॑तो॒ बिब्भ्र॑तस्त॒नूषु॑ त॒नूषु॒ बिब्भ्र॑तः । बिब्भ्र॑त॒ऽ इति॒ बिब्भ्र॑तः ॥ प्र॒जाव॑न्तः सचेमहि सचेमहि प्प्र॒जाव॑न्तः प्प्र॒जाव॑-न्तः सचेमहि। प्र॒जाव॑न्त॒ऽ इति॑ प्प्र॒जा ब्व॑न्तः[1] । स॒चे॒म॒हीति॑ सचेमहि॥५५॥

ए॒ष ते॑ तऽ ए॒षऽ ए॒ष ते॑ रुद्र रुद्र तऽ ए॒षऽ ए॒ष ते॑ रुद्र[2] । ते॒ रु॒द्र॒ रु॒द्र॒ ते॒ ते॒ रु॒द्र॒ भा॒गो भा॒गो रु॑द्र ते ते रुद्र भा॒गः । रु॒द्र॒ भा॒गो भा॒गो रु॑द्र रुद्र भा॒गः स॒ह स॒ह भा॒गो रु॑द्र रुद्र भा॒गः स॒ह। भा॒गः स॒ह स॒ह भा॒गो भा॒गः स॒ह स्वस्रा॒ स्वस्रा॑ स॒ह भा॒गो भा॒गः स॒ह स्वस्रा॑। स॒ह स्वस्रा॒ स्वस्रा॑ स॒ह स॒ह स्वस्राम्बि॑क॒याम्बि॑कया॒ स्वस्रा॑ स॒ह स॒ह स्वस्राम्बि॑कया। स्वस्राम्बि॑क॒याम्बि॑कया॒ स्वस्रा॒ स्वस्राम्बि॑कया॒ तन्तमम्बि॑कया॒ स्वस्रा॒ स्वस्राम्बि॑कया॒ तम्। अम्बि॑कया॒ तन्तमम्बि॑क॒याम्बि॑कया॒ तञ्जु॑षस्व जुषस्व॒ तमम्बि॑क॒याम्बि॑कया॒ तञ्जु॑षस्व। तञ्जु॑षस्व जुषस्व॒ तन्तञ्जु॑षस्व॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषस्व॒ तन्तञ्जु॑षस्व॒ स्वाहा॑। जु॒ष॒स्व॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषस्व जुषस्व॒

1. वा.प्रा.५.७. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

2. स्य एष च (वा. प्रा. ३.१७) व्यञ्जन परे होने पर स्य एवं एषः का विसर्जनीय लुप्त हो जाता है।

स्वाहा॒खुरा॒खुः स्वाहा॑ जुषस्व जुषस्व॒ स्वाहा॒खुः। स्वाहा॒खुरा॒खुः स्वाहा॒ स्वाहा॒-
खुस्ते॑ तऽ आ॒खुः स्वाहा॒ स्वाहा॒खुस्ते॑। आ॒खुस्ते॑ तऽ आ॒खुरा॒खुस्ते॑ प॒शुः प॒शु-
स्त॑ऽ आ॒खुरा॒खुस्ते॑ प॒शुः। ते॒ प॒शुः प॒शुस्ते॑ ते प॒शुः। प॒शुरिति॑ प॒शुः ॥५६॥

अव॑ रु॒द्रꣳ रु॒द्रमवाव॑ रु॒द्रम॑दीमह्यदीमहि रु॒द्रमवाव॑ रु॒द्रम॑दीमहि। रु॒द्रम॑दी-
मह्यदीमहि रु॒द्रꣳ रु॒द्रम॑दीम॒ह्यवावा॑दीमहि रु॒द्रꣳ रु॒द्रम॑दीम॒ह्यव॑। अ॒दी॒म॒ह्यवा-
वा॑दीमह्यदीम॒ह्यव॑ दे॒वन्दे॒वमवा॑दीमह्यदीम॒ह्यव॑ दे॒वम्। अव॑ दे॒वन्दे॒वमवाव॑ दे॒व-
न्त्र्य॑म्बक॒न्त्र्य॒म्बकन्दे॒वमवाव॑ दे॒वन्त्र्य॑म्बकम्। दे॒वन्त्र्य॑म्बक॒न्त्र्य॒म्बकन्दे॒वन्दे॒व-
न्त्र्य॑म्बकम्। त्र्य॑म्बक॒मिति॒ त्रि अ॑म्बकम्॥ यथा॑ नो नो॒ यथा॒ यथा॑ नो॒ व्वस्य॑सो॒
व्वस्य॑सो नो॒ यथा॒ यथा॑ नो॒ व्वस्य॑सः। नो॒ व्वस्य॑सो॒ व्वस्य॑सो नो नो॒ व्वस्य॑स॒स्कर॒त्क-
र॒द्वस्य॑सो नो नो॒ व्वस्य॑स॒स्कर॑त्[1]। व्वस्य॑स॒स्कर॒त्कर॒द्वस्य॑सो॒ व्वस्य॑स॒स्कर॒च्छ्रेय॑स॒ः
श्रेय॑स॒ः कर॒द्वस्य॑सो॒ व्वस्य॑स॒स्कर॒च्छ्रेय॑सः[2]। कर॒च्छ्रेय॑स॒ः श्रेय॑स॒ः कर॒त्कर॒च्छ्रे-
य॑सो व्व्यवसा॒यया॑द्व्यवसा॒यया॒च्छ्रेय॑स॒ः कर॒त्कर॒च्छ्रेय॑सो व्व्यवसा॒यया॑त्। श्रेय॑सो
व्व्यवसा॒यया॑द्व्यवसा॒यया॒च्छ्रेय॑स॒ः श्रेय॑सो व्व्यवसा॒यया॑त्। व्य॒व॒सा॒यया॒दिति॑ वि
अवसा॒यया॑त्॥५७॥

भे॒ष॒जम॑स्यसि भेष॒जम्भे॑ष॒जम॑सि भेष॒जम्भे॑ष॒जम॑सि भेष॒जम्भे॑ष॒जम॑सि
भेष॒जम्। अ॒सि॒ भे॒ष॒जम्भे॑ष॒जम॑स्यसि भेष॒जङ्गवे॒ गवे॑ भेष॒जम॑स्यसि भेष॒जङ्गवे॑।
भे॒ष॒जङ्गवे॒ गवे॑ भेष॒जम्भे॑ष॒जङ्गवेश्श्वा॒याश्श्वा॑य॒ गवे॑ भेष॒जम्भे॑ष॒जङ्गवेश्श्वा॑य[3]। गवे-
श्श्वा॒याश्श्वा॑य॒ गवे॒ गवेश्श्वा॑य॒ पुरु॑षाय॒ पुरु॑षा॒याश्श्वा॑य॒ गवे॒ गवेश्श्वा॑य॒ पुरु॑षाय। अश्श्वा॑य॒

---

1. वस्यसः करत् यहाँ कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय सकार हो जाता है।

2. श्रेयसः करत् इस व्युत्क्रम पाठ में विसर्ग का सकार नहीं होगा। प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च(वा.प्रा.३.११) इस सूत्र के अनुसार विसर्ग प्रकृतिभाव से रहेगा। जिह्वामूलीयोपध्मानीयौ शाकटायनः(वा.प्रा.३.१२) यह मत माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है।

ज्यो.पृ.२२४ में ऐसे स्थलों में वा.प्रा.३.११. की चरितार्थता को स्पष्ट किया गया है।

3. वा. प्रा. ४.७५. के अनुसार यहाँ गवे से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त करता है।

पुरुषाय पुरुषायाश्वायाश्वाय पुरुषाय भेषजम्भेषजम्पुरुषायाश्वायाश्वाय पुरुषाय भेषजम्। पुरुषाय भेषजम्भेषजम्पुरुषाय पुरुषाय भेषजम्। भेषजमिति भेषजम् ॥ सुखम्मेषाय मेषाय सुखꣳ सुखम्मेषाय मेष्ष्यै मेष्ष्यै मेषाय सुखꣳ सुखम्मेषाय मेष्ष्यै। सुखमिति सु खम्। मेषाय मेष्ष्यै मेष्ष्यै मेषाय मेषाय मेष्ष्यै। मेष्ष्याऽ इति मेष्ष्यै॥५८॥

त्र्यम्बकँय्यजामहे यजामहे त्र्यम्बकन्त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिꣳ सुगन्धिँय्यजामहे त्र्यम्बकन्त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्। त्र्यम्बकमिति त्रि अम्बकम्। यजामहे सुगन्धिꣳ सुगन्धिँय्यजामहे यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्पुष्टिवर्द्धनꣳ सुगन्धिँय्यजामहे यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्पुष्टिवर्द्धनꣳ सुगन्धिꣳ सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। सुगन्धिमिति सु गन्धिम्। पुष्टिवर्द्धनमिति पुष्टि वर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनाद् बन्धनादुर्व्वारुकमिवोर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृत्योर्ब्बन्धनादुर्व्वारुकमिवोर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योः। उर्व्वारुकमिवेत्युर्व्वारुकम् इव। बन्धनान्मृत्योर्मृत्योर्ब्बन्धनाद् बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मुक्षीय मृत्योर्ब्बन्धनाद् बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय[1]। मृत्योर्म्मुक्षीय मुक्षीय मृत्योर्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मा मुक्षीय मृत्योर्मृत्योर्म्मुक्षीय मा। मुक्षीय मा मा मुक्षीय मुक्षीय मामृताद्मृतान्मा मुक्षीय मुक्षीय मामृतात्। मामृताद्मृतान्मा मामृतात्। अमृतादित्यमृतात्॥ पतिवेदनमितऽ इतः पतिवेदनम्पतिवेदनमितो मुक्षीय मुक्षीयेतः पतिवेदनम्पतिवेदनमितो मुक्षीय। पतिवेदनमिति पति वेदनम्॥ इतो मुक्षीय मुक्षीयेतऽ इतो मुक्षीय मा मा

---

1. मृत्योर्मृत्योः यहाँ परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से रेफोत्तरवर्ती मकार के द्वित्व की प्राप्ति का निषेध ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से होता है।

मु॑क्षीये॒तऽ इ॒तो मु॑क्षीय॒ मा। मु॒क्षी॒य॒ मा मा मु॑क्षीय मुक्षीय॒ मामु॒तो॒मु॒तो॒ मा
मु॑क्षीय मुक्षीय॒ मामुत॑ः। मामु॒तो॒मु॒तो॒ मा मामुत॑ः। अ॒मु॒त॒ऽ इत्य॒मुत॑ः॥५९॥

ए॒तत्ते॑ तऽ ए॒तदे॒तत्ते॑ रुद्र रुद्र तऽ ए॒तदे॒तत्ते॑ रुद्र। ते॒ रु॒द्र॒ रु॒द्र॒ ते॒ ते॒ रु॒द्रा॒व॒सम॑-
व॒सः॑ रु॑द्र ते ते रुद्राव॒सम्। रु॒द्रा॒व॒सम॑व॒सः॑ रु॑द्र रुद्राव॒सन्तेन॒ तेना॑व॒सः॑ रु॑द्र
रुद्राव॒सन्तेन॑। अ॒व॒सन्तेन॒ तेना॑व॒सम॑व॒सन्तेन॑ प॒रः प॒रस्तेना॑व॒सम॑व॒सन्तेन॑ प॒रः।
तेन॑ प॒रः प॒रस्तेन॒ तेन॑ प॒रो मूज॑वतो॒ मूज॑वतः प॒रस्तेन॒ तेन॑ प॒रो मूज॑वतः। प॒रो
मूज॑वतो॒ मूज॑वतः प॒रः प॒रो मूज॑व॒तोत्यति॒ मूज॑वतः प॒रः प॒रो मूज॑व॒तोति॑।
मूज॑व॒तोत्यति॒ मूज॑वतो॒ मूज॑व॒तोती॑ही॒ह्यति॒ मूज॑वतो॒ मूज॑व॒तोती॑हि। मूज॑वत॒ऽ
इति॒ मूज॑ व्रतः। अती॑ही॒ह्यत्यती॑हि। इ॒हीती॑हि॥ अव॑ततधन्वा॒ पिना॑कावसः॒
पिना॑काव॒सोव॑ततध॒न्वाव॑ततधन्वा॒ पिना॑कावसः॒ कृत्ति॑वासाः॒ कृत्ति॑वासाः॒ पिना॑-
काव॒सोव॑ततध॒न्वाव॑ततधन्वा॒ पिना॑कावसः॒ कृत्ति॑वासाः। अव॑ततध॒न्वेत्यव॑तत
धन्वा। पिना॑कावसः॒ कृत्ति॑वासाः॒ कृत्ति॑वासाः॒ पिना॑कावसः॒ पिना॑कावसः॒
कृत्ति॑वासा॒ऽ अहि॑ꣳस॒न्नहि॑ꣳस॒न्कृत्ति॑वासाः॒ पिना॑कावसः॒ पिना॑कावसः॒ कृत्ति॑वा-
सा॒ऽ अहि॑ꣳसन्। पिना॑कावस॒ऽ इति॒ पिना॑क अवसः। कृत्ति॑वासा॒ऽ अहि॑ꣳस॒न्न-
हि॑ꣳस॒न्कृत्ति॑वासाः॒ कृत्ति॑वासा॒ऽ अहि॑ꣳसन्नो॒ नोहि॑ꣳस॒न्कृत्ति॑वासाः॒ कृत्ति॑वासा॒ऽ
अहि॑ꣳसन्नः। कृत्ति॑वासा॒ऽ इति॒ कृत्ति॑ व्रासाः। अहि॑ꣳसन्नो॒ नोहि॑ꣳस॒न्नहि॑ꣳसन्नः
शि॒वः शि॒वो नोहि॑ꣳस॒न्नहि॑ꣳसन्नः शि॒वः। न॒ः शि॒वः शि॒वो नो॑ नः शि॒वोत्यति॑
शि॒वो नो॑ नः शि॒वोति॑[1]। शि॒वोत्यति॑ शि॒वः शि॒वोती॑ही॒ह्यति॑ शि॒वः शि॒वोती॑हि।
अती॑ही॒ह्यत्यती॑हि। इ॒हीती॑हि॥६०॥

---

[1]. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ शिवः से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

त्र्या॒यु॒षञ्ज॒मद॑ग्नेर्ज्ज॒मद॑ग्नेस्त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षञ्ज॒मद॑ग्नेः क॒श्श्यप॑स्य क॒श्श्यप॑स्य ज॒मद॑ग्नेस्त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षञ्ज॒मद॑ग्नेः क॒श्श्यप॑स्य[2]। त्र्या॒यु॒षमिति॑ त्रि आयु॒षम्। ज॒मद॑ग्नेः क॒श्श्यप॑स्य क॒श्श्यप॑स्य ज॒मद॑ग्नेर्ज्ज॒मद॑ग्नेः क॒श्श्यप॑स्य त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षङ्क॒श्श्यप॑स्य ज॒मद॑ग्नेर्ज्ज॒मद॑ग्नेः क॒श्श्यप॑स्य त्त्र्यायु॒षम्। ज॒मद॑ग्ने॒रिति॑ ज॒मत् अ॑ग्नेः। क॒श्श्यप॑स्य त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षङ्क॒श्श्यप॑स्य क॒श्श्यप॑स्य त्त्र्यायु॒षम्। त्र्या॒यु॒षमिति॑ त्रि आयु॒षम्॥ यद्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ यद्यद्दे॒वेषु॑ त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षन्दे॒वेषु॒ यद्यद्दे॒वेषु॑ त्त्र्यायु॒षम्। दे॒वेषु॑ त्त्र्यायु॒षन्त्र्या॑यु॒षन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ त्त्र्यायु॒षन्तत्तत्र्या॑यु॒षन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ त्त्र्यायु॒षन्तत्। त्र्या॒यु॒षन्तत्तत्त्र्या॑यु॒षन्त्र्या॑यु॒षन्तन्नो॑ न॒स्तत्त्र्या॑यु॒षन्त्र्या॑यु॒षन्तन्नः॑। त्र्या॒यु॒षमिति॑ त्रि आयु॒षम्। तन्नो॑ न॒स्तत्तन्नो॑ऽ अस्त्वस्तु न॒स्तत्तन्नो॑ऽ अस्तु। नो॒ऽ अ॒स्त्व॒स्तु नो॒ नो॒ऽ अ॒स्तु त्त्र्या॒यु॒षन्त्र्या॑यु॒षम॑स्तु नो नोऽ अस्तु त्त्र्यायु॒षम्। अ॒स्तु त्त्र्या॒यु॒षन्त्र्या॑यु॒षम॑स्त्वस्तु त्त्र्यायु॒षम्। त्र्या॒यु॒षमिति॑ त्रि आयु॒षम्॥६१॥

शि॒वो नाम॒ नाम॑ शि॒वः शि॒वो नामा॑स्यसि॒ नाम॑ शि॒वः शि॒वो नामा॑सि। नामा॑स्यसि॒ नाम॒ नामा॑सि॒ स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑तिरसि॒ नाम॒ नामा॑सि॒ स्वधि॑तिः। अ॒सि॒ स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑तिरस्यसि॒ स्वधि॑तिस्ते ते॒ स्वधि॑तिरस्यसि॒ स्वधि॑तिस्ते। स्वधि॑तिस्ते ते॒ स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑तिस्ते पि॒ता पि॒ता ते॒ स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑तिस्ते पि॒ता। स्वधि॑ति॒रिति॒ स्व धि॑तिः। ते॒ पि॒ता पि॒ता ते॑ ते पि॒ता नमो॒ नम॑ः पि॒ता ते॑ ते पि॒ता नम॑ः। पि॒ता नमो॒ नम॑ः पि॒ता पि॒ता नम॑स्ते ते॒ नम॑ः पि॒ता पि॒ता नम॑स्ते[2]। नम॑स्ते ते नमो॒ नम॑स्तेऽ अस्त्वस्तु ते॒ नमो॒ नम॑स्तेऽ अस्तु। ते॒ऽ

---

[2]. स्वरपूर्वाश्च शचजाः समानपदे द्विरुक्ताः(वा.प्रा.४.१५८) इस सूत्र के अनुसार कश्श्यपस्य पद में शकार के द्विरुच्चारण के अनन्तर एक ही यकार होगा।

[2]. तथयोः सम् (वा. प्रा. ३.८) तकार एवं थकार परे रहते विसर्जनीय सकार हो जाता है।

अ॒स्त्व॒स्तु॒ ते॒ ते॒ऽ अ॒स्तु॒ मा मास्तु॑ ते तेऽ अस्तु॒ मा। अ॒स्तु॒ मा मास्त्व॑स्तु॒ मा मा॑ मा॒ मास्त्व॑स्तु॒ मा मा॑। मा मा॑ मा॒ मा मा मा॑ हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा॒ मा मा मा॑ हिꣳसीः[1]। मा॒ हि॒ꣳसी॒र्हि॒ꣳसी॒र्म्मा॒ मा॒ हि॒ꣳसी॒ः। हि॒ꣳसी॒रिति॑ हिꣳसीः॥ नि व॑र्त्तयामि व्वर्त॑यामि॒ नि नि व॑र्त्तया॒म्म्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे व्वर्त॑यामि॒ नि नि व॑र्त्तया॒म्म्या-यु॑षे। व्व॒र्त्त॒या॒म्म्यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे व्वर्त॑यामि व्वर्त॑या॒म्म्यायु॑षे॒न्नाद्या॑या॒न्नाद्या॒यायु॑षे व्वर्त॑यामि व्वर्त॑या॒म्म्यायु॑षे॒न्नाद्या॑य। आयु॑षे॒न्नाद्या॑या॒न्नाद्या॒यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे॒न्नाद्या॑य प्प्र॒जन॑नाय प्प्र॒जन॑नाया॒न्नाद्या॒यायु॑ष॒ऽ आयु॑षे॒न्नाद्या॑य प्प्र॒जन॑नाय। अ॒न्नाद्या॑य प्प्र॒जन॑नाय प्प्र॒जन॑नाया॒न्नाद्या॑या॒न्नाद्या॑य प्प्र॒जन॑नाय रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जन॑नाया॒न्ना-द्या॑या॒न्नाद्या॑य प्प्र॒जन॑नाय रा॒यः। अ॒न्नाद्या॒येत्य॑न्न॒ अद्या॑य। प्र॒जन॑नाय रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जन॑नाय प्प्र॒जन॑नाय रा॒यस्प्पोषा॑य॒ पोषा॑य रा॒यः प्प्र॒जन॑नाय प्प्र॒जन॑नाय रा॒यस्प्पोषा॑य। प्र॒जन॑ना॒येति॑ प्प्र॒ जन॑नाय। रा॒यस्प्पोषा॑य॒ पोषा॑य रा॒यो रा॒यस्प्पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सुप्प्रजा॒स्त्वाय॒ पोषा॑य रा॒यो रा॒यस्प्पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑। पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सुप्प्रजा॒स्त्वाय॒ पोषा॑य॒ पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सुवीर्य्यी॑य सुवीर्य्यी॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॒ पोषा॑य॒ पोषा॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्य्यी॑य[2]। सु॒प्प्र॒जा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्य्यी॑य सु॒वीर्य्यी॑य सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सुप्प्रजा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्य्यी॑य। सु॒प्प्र॒जा॒स्त्वायेति॑ सुप्प्रजा॒ः त्वाय॑। सु॒वीर्य्या॒येति॑ सु॒ व्वीर्य्यी॑य॥६२॥

॥ इति माध्यन्दिनीयघनपाठे तृतीयोध्यायः॥

[1]. वा.प्रा.३.८१. के अनुसार हिꣳसीः इस पद में सकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. पादादौ च पदादौ च सँय्योगावग्रहेषु च। जः शब्द इति विज्ञेयो योऽन्यः स य इति स्मृतः॥ - या. शि. १५०

॥चतुर्थोध्यायः॥

हरिः ॐ॥ एदमिदमेदमगन्मागन्मेदमेदमगन्म[1]। इदमगन्मागन्मेद-मिदमगन्म देवयजनन्देवयजनमगन्मेदमिदमगन्म देवयजनम्। अगन्म देवय-जनन्देवयजनमगन्मागन्म देवयजनम्पृथिव्याः पृथिव्या देवयजनमगन्मागन्म देवयजनम्पृथिव्याः। देवयजनम्पृथिव्याः पृथिव्या देवयजनन्देवयजनम्पृथिव्या यत्र यत्र पृथिव्या देवयजनन्देवयजनम्पृथिव्या यत्र। देवयजनमिति देव यजनम् । पृथिव्या यत्र यत्र पृथिव्याः पृथिव्या यत्र देवासो देवासो यत्र पृथिव्याः पृथिव्या यत्र देवासः। यत्र देवासो देवासो यत्र यत्र देवासोऽ अजुषन्ताजुषन्त देवासो यत्र यत्र देवासोऽ अजुषन्त[2]। देवासोऽ अजुषन्ताजुषन्त देवासो देवासोऽ अजुषन्त विश्वे विश्वेजुषन्त देवासो देवासोऽ अजुषन्त विश्वे। अजुषन्त विश्वे विश्वेजुष-न्ताजुषन्त विश्वे। विश्वऽ इति विश्वे॥ ऋक्सामाभ्यांꣳ सन्तरन्तः सन्तरन्तऽ ऋक्सामाभ्यामृक्सामाभ्यांꣳ सन्तरन्तो यजुर्भिर्यजुर्भिः सन्तरन्तऽ ऋक्सामाभ्यामृक्सामाभ्यांꣳ सन्तरन्तो यजुर्भिः। ऋक्सामाभ्यामित्यृक् सामाभ्याम्। सन्तरन्तो यजुर्भिर्यजुर्भिः सन्तरन्तः सन्तरन्तो यजुर्भी रायो रायो यजुर्भिः सन्तरन्तः सन्तरन्तो यजुर्भी रायः। सन्तरन्तऽ इति सम् तरन्तः। यजुर्भी रायो रायो यजुर्भिर्यजुर्भी रायस्पोषेण पोषेण रायो यजु-र्भिर्यजुर्भी रायस्पोषेण। यजुर्भिरिति यजुः भिः। रायस्पोषेण पोषेण रायो रायस्पोषेण सꣳ सम्पोषेण रायो रायस्पोषेण सम्। पोषेण सꣳ सम्पोषेण पोषेण समिषेषा सम्पोषेण पोषेण समिषा। समिषेषा सꣳ समिषा मदेम मदेमेषा

---

1. वा.प्रा.४.१८२. में क्रमपाठ में अपृक्त पद(आ) मध्य में आने पर त्रिक्रम का विधान है, मन्त्र के आदि में तो दो पदों का ही क्रम होगा, यही स्थिति जटा में होगी, घन में तीन पदों का क्रम होगा- आ+इदम्+अगन्म।

2. वा.प्रा.४.८५. के अनुसार देवासः से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

सꣳ समि॒षा म॑देम। इ॒षा म॑देम मदेमे॒षेषा म॑देम। म॒दे॒मेति॑ मदेम॥ इ॒माऽ आपु॒ऽ आप॑ऽ इ॒माऽ इ॒माऽ आपः॒ शꣳ शमाप॑ऽ इ॒माऽ इ॒माऽ आपः॒ शम्। आपः॒ शꣳ शमापु॒ऽ आपः॒ शमु॑ मे मऽ उ॒ शमापु॒ऽ आपः॒ शमु॑ मे। शमु॑ मे मऽ उ॒ शꣳ शमु॑ मे सन्तु सन्तु मऽ उ॒ शꣳ शमु॑ मे सन्तु। उँ॒ऽ इत्यूँ। मे॒ स॒न्तु॒ स॒न्तु॒ मे॒ मे॒ स॒न्तु॒ दे॒वीर्दे॒वीः स॑न्तु मे मे सन्तु दे॒वीः। स॒न्तु॒ दे॒वीर्दे॒वीः स॑न्तु सन्तु दे॒वीरोष॑धु॒ऽ ओष॑धे दे॒वीः स॑न्तु सन्तु दे॒वीरोष॑धे। दे॒वीरोष॑धु॒ऽ ओष॑धे दे॒वीर्दे॒वीरोष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ त्राय॒स्वौ-ष॑धे दे॒वीर्दे॒वीरोष॑धे॒ त्राय॑स्व। ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ त्राय॒स्वौष॑धु॒ऽ ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ स्वधि॑ते॒ त्राय॒स्वौष॑धु॒ऽ ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते। त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ स्वधि॑ते॒ त्राय॑स्व॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ मा मा स्वधि॑ते॒ त्राय॑स्व॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ मा[1]। स्वधि॑ते॒ मा मा स्वधि॑ते॒ स्वधि॑ते॒ मैन॑मेन॒म्मा स्वधि॑ते॒ स्वधि॑ते॒ मैन॑म्। स्वधि॑त॒ऽ इति॒ स्व धि॑ते। मैन॑मेन॒म्मा मैन॑ꣳ हिꣳसीर्हिꣳसीरेन॒म्मा मैन॑ꣳ हिꣳसीः। ए॒न॒ꣳ हि॒ꣳसी॒र्हि॒ꣳ-सी॒रे॒न॒मे॒न॒ꣳ हि॒ꣳसी॒ः। हि॒ꣳसी॒रिति॑ हिꣳसीः॥१॥

आपो॑ऽ अ॒स्म्मान॒स्म्मानापु॒ऽ आपो॑ऽ अ॒स्म्मान्मा॒तरो॑ मा॒तरो॒स्म्मानापु॒ऽ आपो॑ऽ अ॒स्म्मान्मा॒तर॑ः[2]। अ॒स्म्मान्मा॒तरो॑ मा॒तरो॒स्म्मान॒स्म्मान्मा॒तर॑ः शु-न्धयन्तु शुन्धयन्तु मा॒तरो॒स्म्मान॒स्म्मान्मा॒तर॑ः शुन्धयन्तु। मा॒तर॑ः शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु मा॒तरो॑ मा॒तर॑ः शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ शुन्धयन्तु मा॒तरो॑ मा॒तर॑ः शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑। शु॒न्ध॒य॒न्तु॒ घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑ नो नो घृ॒तेन॑ शुन्धयन्तु शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑ नः। घृ॒तेन॑ नो नो घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ नो घृत॒प्प्वो॒ घृत॒प्प्वो॒ नो घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ नो घृत॒प्प्व॒ः। नो॒ घृ॒त॒प्प्वो॒ घृत॒प्प्वो॒ नो नो घृत॒प्प्व॒ः पुनन्तु पुनन्तु घृत॒प्प्वो॒ नो नो घृत॒प्प्व॒ः पुनन्तु। घृ॒त॒प्प्व॒ः पुनन्तु पुनन्तु

---

1. वा. प्रा. २.४. के अनुसार उत्तम पुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद ही अनुदात्त होता है। यहाँ निषेधार्थक होने से मा पद उदात्त है।

2. वा.प्रा.४.८५. के अनुसार आपो अस्मान् यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

घृत॒प्प्वो॒ घृत॒प्प्वः॒ पुनन्तु। घृ॒त॒प्प्व॒ऽ इति॑ घृत॒ प्वः॒। पु॒न॒न्त्विति॑ पुनन्तु॥
व्विश्व॒ꣳ हि हि व्विश्वँ॒व्विश्व॒ꣳ हि रि॒प्प्रꣳ रि॒प्प्रꣳ हि व्विश्वँ॒व्विश्व॒ꣳ हि रि॒प्प्रम्। हि
रि॒प्प्रꣳ रि॒प्प्रꣳ हि हि रि॒प्प्रम्प्र॒वह॑न्ति प्प्र॒वह॑न्ति रि॒प्प्रꣳ हि हि रि॒प्प्रम्प्र॒वह॑न्ति।
रि॒प्प्रम्प्र॒वह॑न्ति प्प्र॒वह॑न्ति रि॒प्प्रꣳ रि॒प्प्रम्प्र॒वह॑न्ति दे॒वीर्द्दे॒वीः प्प्र॒वह॑न्ति रि॒प्प्रꣳ
रि॒प्प्रम्प्र॒वह॑न्ति दे॒वीः। प्र॒वह॑न्ति दे॒वीर्द्दे॒वीः प्प्र॒वह॑न्ति प्प्र॒वह॑न्ति दे॒वीरुदु॒द्दे॒वीः
प्प्र॒वह॑न्ति प्प्र॒वह॑न्ति दे॒वीरुत्। प्र॒वह॒न्तीति॑ प्प्र॒ व्वह॑न्ति। दे॒वीरुदु॒द्दे-
वीर्द्दे॒वीरुदिदिदु॒द्दे॒वीर्द्दे॒वीरुदित्। उदिदिदुदुदि॒दा॑ब्भ्यऽ आब्भ्यु॒ऽ इदुदुदि॒दा॑ब्भ्यः।
इ॒दा॑ब्भ्यऽ आब्भ्य॒ऽ इदि॒दा॑ब्भ्य॒ः शुचि॒ः शुचि॑राब्भ्य॒ऽ इदि॒दा॑ब्भ्य॒ः शुचि॑ः।
आ॒ब्भ्य॒ः शुचि॒ः शुचि॑राब्भ्यऽ आब्भ्य॒ः शुचि॒रा पू॒तः पू॒तऽ आ शुचि॑राब्भ्यऽ
आब्भ्य॒ः शुचि॒रा पू॒तः। शुचि॒रा पू॒तः पू॒तऽ आ शुचि॒ः शुचि॒रा पू॒तऽ ए॑म्म्येमि
पू॒तऽ आ शुचि॒ः शुचि॒रा पू॒तऽ ए॑मि। आ पू॒तः[1]। पू॒तऽ ए॑म्म्येमि पू॒तः पू॒तऽ ए॑मि।
ए॒मीत्त्यै॑मि॥ दी॒क्षा॒त॒पसो॑स्त॒नूस्त॒नूर्द्दी॑क्षात॒पसो॑र्द्दीक्षात॒पसो॑स्त॒नूर॑स्यसि
त॒नूर्द्दी॑क्षात॒पसो॑र्द्दीक्षात॒पसो॑स्त॒नूर॑सि[2]। त॒नूर॑स्यसि त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ तान्ताम॑सि
त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ ताम्। अ॒सि॒ तान्ताम॑स्यसि॒ तान्त्वा॑ त्त्वा॒ ताम॑स्यसि॒ तान्त्वा॑।
तान्त्वा॑ त्त्वा॒ तान्तान्त्वा॑ शि॒वाꣳ शि॒वान्त्वा॒ तान्तान्त्वा॑ शि॒वाम्। त्वा॒ शि॒वाꣳ
शि॒वान्त्वा॑ त्त्वा शि॒वाꣳ श॒ग्ग्माꣳ श॒ग्ग्माꣳ शि॒वान्त्वा॑ त्त्वा शि॒वाꣳ श॒ग्ग्माम्।
शि॒वाꣳ श॒ग्ग्माꣳ श॒ग्ग्माꣳ शि॒वाꣳ शि॒वाꣳ श॒ग्ग्माम्परि॒ परि॑ श॒ग्ग्माꣳ शि॒वाꣳ
शि॒वाꣳ श॒ग्ग्माम्परि॑। श॒ग्ग्माम्परि॒ परि॑ श॒ग्ग्माꣳ श॒ग्ग्माम्परि॑ दधे दधे॒ परि॑
श॒ग्ग्माꣳ श॒ग्ग्माम्परि॑ दधे। परि॑ दधे दधे॒ परि॒ परि॑ दधे भ॒द्द्रम्भ॒द्द्रन्द॑धे॒ परि॒ परि॑ दधे

---

[1]. आ पूतजातयोः (वा. प्रा. ६.६) पूत पद एवं जात पद परे होने पर आ उपसर्ग अनुदात्त नहीं होता है।

[2]. वा.प्रा.२.४८. के अनुसार सम्बोधन न होने पर देवताद्वन्द्व द्विरुदात्त होते हैं, यहाँ दीक्षातपसोः पद देवताद्वन्द्वात्मक नहीं है, अतः द्विरुदात्त नहीं होगा।

भ॒द्रम्। द॒धे॒ भ॒द्रम्भ॒द्रन्द॑धे दधे भ॒द्रँव्वर्ण्णँ॒व्वर्ण्ण॑म्भ॒द्रन्द॑धे दधे भ॒द्रँव्वर्ण्ण॑म्। भ॒द्रँव्वर्ण्णँ॒-
व्वर्ण्ण॑म्भ॒द्रम्भ॒द्रँव्वर्ण्ण॒म्पुष्ष्य॑न्त्पुष्ष्य॑न्त्वर्ण्ण॑म्भ॒द्रम्भ॒द्रँव्वर्ण्ण॒म्पुष्ष्य॑न्। व्वर्ण्ण॒म्पुष्ष्य॒-
न्त्पुष्ष्य॒न्त्वर्ण्णँ॒व्वर्ण्ण॒म्पुष्ष्य॑न्। पुष्ष्य॒न्निति॒ पुष्ष्य॑न्॥२॥

वृ॒त्रस्या॑स्यसि वृ॒त्रस्य॑ वृ॒त्रस्या॑सि क॒नीन॑कः क॒नीन॑कोसि वृ॒त्रस्य॑ वृ॒त्र-
स्या॑सि क॒नीन॑कः। अ॒सि॒ क॒नीन॑कः क॒नीन॑कोस्यसि क॒नीन॑कश्चक्षु॒र्दाश्च॑क्षु-
र्दाः क॒नीन॑कोस्यसि क॒नीन॑कश्चक्षु॒र्दाः[1]। क॒नीन॑कश्चक्षु॒र्दाश्च॑क्षु॒र्दाः क॒नी-
न॑कः क॒नीन॑कश्चक्षु॒र्दाऽ अ॑स्यसि चक्षु॒र्दाः क॒नीन॑कः क॒नीन॑कश्चक्षु॒र्दाऽ
अ॑सि। च॒क्षु॒र्दाऽ अ॑स्यसि चक्षु॒र्दाश्च॑क्षु॒र्दाऽ अ॑सि॒ चक्षु॒श्चक्षु॑रसि चक्षु॒र्दाश्च॑-
क्षु॒र्दाऽ अ॑सि॒ चक्षुः॑। च॒क्षु॒र्दाऽ इति॑ चक्षुः॒ दाः। अ॒सि॒ चक्षु॒श्चक्षु॑रस्यसि॒
चक्षु॑र्म्मे मे॒ चक्षु॑रस्यसि॒ चक्षु॑र्म्मे। चक्षु॑र्म्मे मे॒ चक्षु॒श्चक्षु॑र्म्मे देहि देहि मे॒
चक्षु॒श्चक्षु॑र्म्मे देहि। मे॒ दे॒हि॒ दे॒हि॒ मे॒ मे॒ दे॒हि॒। दे॒हीति॑ देहि॥३॥

चि॒त्पति॑र्म्मा मा चि॒त्पति॑श्चि॒त्पति॑र्म्मा पुनातु पुनातु मा चि॒त्पति॑श्चि॒त्प-
ति॑र्म्मा पुनातु। चि॒त्पति॒रिति॑ चि॒त् पतिः॑। मा॒ पु॒ना॒तु॒ पु॒ना॒तु॒ मा॒ मा॒ पु॒ना॒तु॒
व्वा॒क्पति॑र्व्वा॒क्पतिः॑ पुनातु मा मा पुनातु व्वा॒क्पतिः॑। पु॒ना॒तु॒ व्वा॒क्पति॑र्व्वा॒क्पतिः॑
पुनातु पुनातु व्वा॒क्पति॑र्दे॒वो दे॒वो व्वा॒क्पतिः॑ पुनातु पुनातु व्वा॒क्पति॑र्दे॒वः। व्वा॒क्पति॑-
र्दे॒वो दे॒वो व्वा॒क्पति॑र्व्वा॒क्पति॑र्दे॒वः स॑वि॒ता स॑वि॒ता दे॒वो व्वा॒क्पति॑र्व्वा॒क्पति॑र्दे॒वः स॑वि॒ता
। व्वा॒क्पति॒रिति॑ वा॒क् पतिः॑। दे॒वः स॑वि॒ता स॑वि॒ता दे॒वो दे॒वः स॑वि॒ता। स॒वि॒तेति॑
सवि॒ता॥ तस्य॑ ते ते॒ तस्य॒ तस्य॑ ते पवित्रपते पवित्रपते ते॒ तस्य॒ तस्य॑ ते पवित्र-
पते। ते॒ प॒वि॒त्र॒प॒ते॒ प॒वि॒त्र॒प॒ते॒ ते॒ ते॒ प॒वि॒त्र॒प॒ते॒ प॒वित्र॑पूतस्य प॒वित्र॑पूतस्य पवित्रपते

---

[1]. विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) के अनुसार कनीनकः चक्षुर्दाः यहाँ विसर्ग शकार होता है।

ते ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य[1]। पवित्रपते पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य पवित्रपते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामो यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः। पवित्रपतऽ इति पवित्र पते। पवित्रपूतस्य यत्कामो यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने पुने यत्कामः पवित्रपूतस्य पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने। पवित्रपूतस्येति पवित्र पूतस्य। यत्कामः पुने पुने यत्कामो यत्कामः पुने तत्तत्पुने यत्कामो यत्कामः पुने तत्। यत्कामऽ इति यत् कामः। पुने तत्तत्पुने पुने तच्छकेयꣳ शकेयन्तत्पुने पुने तच्छकेयम्[2]। तच्छकेयꣳ शकेयन्तत्तच्छकेयम्। शकेयमिति शकेयम्॥४॥

आ वो वऽ आ वो देवासो देवासो वऽ आ वो देवासः। वो देवासो देवासो वो वो देवासऽ ईमहऽ ईमहे देवासो वो वो देवासऽ ईमहे। देवासऽ ईमहऽ ईमहे देवासो देवासऽ ईमहे वामँवाममीमहे देवासो देवासऽ ईमहे वामम्। ईमहे वामँ-वाममीमहऽ ईमहे वामम्प्रयति प्प्रयति वाममीमहऽ ईमहे वामम्प्रयति। वामम्प्र-यति प्प्रयति वामँवामम्प्रयत्यद्ध्वरे द्ध्वरे प्प्रयति वामँवामम्प्रयत्यद्ध्वरे। प्रयत्यद्ध्वरे-द्ध्वरे प्प्रयति प्प्रयत्यद्ध्वरे। प्रयतीति प्प्र यति। अद्ध्वरऽ इत्यद्ध्वरे॥ आ वो वऽ आ वो देवासो देवासो वऽ आ वो देवासः। वो देवासो देवासो वो वो देवासऽ आशिषऽ आशिषो देवासो वो वो देवासऽ आशिषः[3]। देवासऽ आशिषऽ आशिषो देवासो देवासऽ आशिषो यज्ञियासो यज्ञियासऽ आशिषो देवासो देवासऽ आशिषो यज्ञियासः। आशिषो यज्ञियासो यज्ञियासऽ आशिषऽ आशिषो यज्ञियासो हवामहे हवामहे यज्ञियासऽ आशिषऽ आशिषो यज्ञियासो हवामहे। आशिषऽ

---

[1]. वा. प्रा. २.१९. के अनुसार पवित्रपते पवित्रपूतस्य यहाँ एक पद के समान स्वर नहीं है।

[2]. तत् शकेयम् यहाँ शकारे च(वा.प्रा.४.९७) इस सूत्र से तकार चकार तथा परश्चास्पर्शपरश्छम्(वा.प्रा.४.९८) से शकार छकार होता है।

[3]. वो वान्ते त्वदर्थे (वा. प्रा. २.५) युष्मदर्थ में वर्तमान वः पद अनुदात्त होता है।

इत्या शिर्षः। युज्ञियासो हवामहे हवामहे युज्ञियासो युज्ञियासो हवामहे। हवामहऽ इति हवामहे॥५॥

स्वाहा युज्ञँय्युज्ञꣳ स्वाहा स्वाहा युज्ञम्मनसो मनसो युज्ञꣳ स्वाहा स्वाहा युज्ञम्मनसः। युज्ञम्मनसो मनसो युज्ञँय्युज्ञम्मनसऽ उरोरुरो-र्म्मनसो युज्ञँय्युज्ञम्मनसऽ उरोः। मनसऽ उरोरुरोर्म्मनसो मनसऽ उरोरन्त-रिक्षादुन्तरिक्षादुरोर्म्मनसो मनसऽ उरोरन्तरिक्षात्। उरोरन्तरिक्षादन्त-रिक्षादुरोरुरोरन्तरिक्षाद्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षादुरोरुरो-रन्तरिक्षाद्यावापृथिवीभ्याम्[1]। अन्तरिक्षाद्यावापृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवी-भ्यामन्तरिक्षादन्तरिक्षाद्यावापृथिवीभ्याँव्वाताद्वाताद्यावापृथिवीभ्यामन्त-रिक्षादन्तरिक्षाद्यावापृथिवीभ्याँव्वातात्। द्यावापृथिवीभ्याँव्वाताद्वाताद्यावा-पृथिवीभ्यान्द्यावापृथिवीभ्याँव्वातादा रंभे रभऽ आ वाताद्यावापृथिवीभ्या-न्द्यावापृथिवीभ्याँव्वातादा रंभे। व्वातादा रंभे रभऽ आ वाताद्वातादा रंभे स्वाहा स्वाहा रभऽ आ वाताद्वातादा रंभे स्वाहा। आ रंभे। रभे स्वाहा स्वाहा रभे रभे स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥६॥

आकूत्यै प्प्रयुजे प्प्रयुजऽ आकूत्याऽ आकूत्यै प्प्रयुजेग्ग्नयेग्ग्नये प्प्रयुजऽ आकूत्याऽ आकूत्यै प्प्रयुजेग्ग्नये। आकूत्याऽ इत्या कूत्यै। प्रयुजेग्ग्नयेग्ग्नये प्प्रयुजे प्प्रयुजेग्ग्नये स्वाहा स्वाहाग्ग्नये प्प्रयुजे प्प्रयुजेग्ग्नये स्वाहा। प्रयुजऽ इति प्प्र युजे। अग्ग्नये स्वाहा स्वाहाग्ग्नयेग्ग्नये स्वाहा मेधायै मेधायै स्वाहाग्ग्नयेग्ग्नये स्वाहा मेधायै। स्वाहा मेधायै मेधायै स्वाहा स्वाहा मेधायै मनसे मनसे मेधायै स्वाहा स्वाहा मेधायै मनसे। मेधायै मनसे मनसे मेधायै मेधायै मनसे दीक्षायै दीक्षायै मनसे मेधायै मेधायै मनसे दीक्षायै। मनसे दीक्षायै दीक्षायै मनसे

[1]. वा.प्रा.२.४७. के अनुसार द्यावापृथिवी पद द्विरुदात है।

मनसे दीक्षायै तपसे तपसे दीक्षायै मनसे मनसे दीक्षायै तपसे। दीक्षायै तपसे तपसे दीक्षायै दीक्षायै तपसे सरस्वत्यै सरस्वत्यै तपसे दीक्षायै दीक्षायै तपसे सरस्वत्यै। तपसे सरस्वत्यै सरस्वत्यै तपसे तपसे सरस्वत्यै पूष्णे पूष्णे सरस्वत्यै तपसे तपसे सरस्वत्यै पूष्णे। सरस्वत्यै पूष्णे पूष्णे सरस्वत्यै सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नयेऽग्नये पूष्णे सरस्वत्यै सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये[1]। पूष्णेऽग्नयेऽग्नये पूष्णे पूष्णेऽग्नये स्वाहा स्वाहाऽग्नये पूष्णे पूष्णेऽग्नये स्वाहा। अग्नये स्वाहा स्वाहाऽग्नयेऽग्नये स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ आपो देवीर्देवीरापऽ आपो देवीर्बृहतीर्बृहतीर्देवीरापऽ आपो देवीर्बृहतीः। देवीर्बृहतीर्बृहतीर्देवीर्देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो विश्वशम्भुवो बृहतीर्देवीर्देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवः। बृहतीर्विश्वशम्भुवो विश्वशम्भुवो बृहतीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवो बृहतीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी। विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवो विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवीऽ उरुऽ उरो द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवो विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवीऽ उरो। विश्वशम्भुवऽ इति विश्व शम्भुवः। द्यावापृथिवीऽ उरुऽ उरो द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ उरोऽ अन्तरिक्षान्तरिक्षोरो द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ उरोऽ अन्तरिक्ष। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। उरोऽ अन्तरिक्षान्तरिक्षोरऽ उरोऽ अन्तरिक्ष। उरोऽ इत्युरो। अन्तरिक्षेत्यन्तरिक्ष॥ बृहस्पतये हविषा हविषा बृहस्पतये बृहस्पतये हविषा विधेम विधेम हविषा बृहस्पतये बृहस्पतये हविषा विधेम। हविषा विधेम विधेम हविषा हविषा विधेम स्वाहा स्वाहा विधेम हविषा हविषा विधेम स्वाहा। विधेम स्वाहा स्वाहा विधेम विधेम स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥७॥

---

1. पूष्णेऽग्नये यहाँ पर वा.प्रा.१.१२४. के अनुसार उदात्त ग्न बाद में होने पर हाथ को अनुदात्तवत् ले जाकर फिर प्रकृष्ट रूप से नीचे ले जाते हैं।

व्विश्वों देवस्यं देवस्य व्विश्वो व्विश्वों देवस्यं नेतुर्न्नेतुर्द्देवस्य व्विश्वो व्विश्वों देवस्यं नेतुः। देवस्यं नेतुर्न्नेतुर्द्देवस्यं देवस्यं नेतुर्म्मर्त्तो मर्त्तो नेतुर्द्देवस्यं देवस्यं नेतुर्म्मर्त्तः। नेतुर्म्मर्त्तो मर्त्तो नेतुर्न्नेतुर्म्मर्त्तो व्वुरीत व्वुरीत मर्त्तो नेतुर्न्नेतुर्म्मर्त्तो व्वुरीत[1]। मर्त्तो व्वुरीत व्वुरीत मर्त्तो मर्त्तो व्वुरीत सक्ख्यꣳ सक्ख्यँव्वुरीत मर्त्तो मर्त्तो व्वुरीत सक्ख्यम्। व्वुरीत सक्ख्यꣳ सक्ख्यँव्वुरीत व्वुरीत सक्ख्यम्। सक्ख्यमितिं सक्ख्यम्॥ व्विश्वों राये राये व्विश्वो व्विश्वों रायऽ इंषुद्धयतीषुद्धयति राये व्विश्वो व्विश्वों रायऽ इंषुद्धयति। रायऽ इंषुद्धयतीषुद्धयति राये रायऽ इंषुद्धयति द्युम्म्नन्द्युम्म्नमिंषुद्धयति राये रायऽ इंषुद्धयति द्युम्म्नम्। इषुद्धयति द्युम्म्नन्द्युम्म्नमिंषुद्धयतीषुद्धयति द्युम्म्नँव्वृणीत व्वृणीत द्युम्म्नमिंषुद्धयतीषुद्धयति द्युम्म्नँव्वृणीत। द्युम्म्नँव्वृणीत व्वृणीत द्युम्म्नन्द्युम्म्नँव्वृणीत पुष्ष्यसें पुष्ष्यसें व्वृणीत द्युम्म्नन्द्युम्म्नँव्वृणीत पुष्ष्यसें। व्वृणीत पुष्ष्यसें पुष्ष्यसें व्वृणीत व्वृणीत पुष्ष्यसे स्वाहा स्वाहां पुष्ष्यसें व्वृणीत व्वृणीत पुष्ष्यसे स्वाहां। पुष्ष्यसे स्वाहा स्वाहां पुष्ष्यसें पुष्ष्यसे स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥८॥

ऋक्सामयोः शिल्प्पे शिल्प्पेंऽ ऋक्सामयोर्ऋक्सामयोः शिल्प्पें स्त्थ स्त्थः शिल्प्पेंऽ ऋक्सामयोर्ऋक्सामयोः शिल्प्पें स्त्थः[2]। ऋक्सामयोरित्यृक् सामयोंः। शिल्प्पें स्त्थ स्त्थः शिल्प्पे शिल्प्पें स्त्थस्त्ते ते स्त्थः शिल्प्पे शिल्प्पें स्त्थस्त्ते। शिल्प्पेऽ इति शिल्प्पें। स्त्थस्त्ते ते स्त्थं स्त्थस्त्ते वाँव्वान्ते स्त्थं स्त्थस्त्ते वांम्। ते वाँव्वान्ते ते वामा रंभे रभेऽ आ वान्ते ते वामा रंभे। तेऽ इति ते। व्वामा रंभे रभऽ आ वाँव्वामा रंभे ते ते रंभऽ आ वाँव्वामा रंभे ते। आ रंभे। रभे ते ते रंभे

---

1. मर्त्तो वुरीत मर्त्तेष्वग्निः परो मर्त्तस्ते मर्त्त इति च (वा. प्रा. ४.१६२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मर्त्त पद यकारसहित नहीं है।

2. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि (वा. प्रा. २.४८) सम्बोधन न होने पर देवताद्वन्द्व द्विरुदात्त होते हैं। ऋक्सामयोः यह देवताद्वन्द्व नहीं है, अतः यह पद द्विरुदात्त नहीं है।

रभे॒ ते मा॑ मा॒ ते र॑भे रभे॒ ते मा॑। ते मा॑ मा॒ ते ते मा॑ पातम्पातम्मा॒ ते ते मा॑ पातम्। तेऽ इति॒ ते। मा॒ पा॒त॒म्पा॒त॒म्मा॒ मा॒ पा॒त॒मास्यास्या पा॑तम्मा मा पात॒मास्य। पा॒त॒मास्यास्या पा॑तम्पात॒मास्य य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्या॒स्या पा॑तम्पात॒मास्य य॒ज्ञस्य॑। आस्य। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्या॒स्यास्य य॒ज्ञस्यो॒दृच॑ऽ उ॒दृचो॑ य॒ज्ञस्या॒स्यास्य य॒ज्ञस्यो॒दृच॑ः।[1] य॒ज्ञस्यो॒दृच॑ऽ उ॒दृचो॑ य॒ज्ञस्य॑ य॒ज्ञस्यो॒दृच॑ः। उ॒दृच॒ऽ इत्युत् ऋच॑ः॥ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॑। अ॒सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॑ मे मे॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॑ मे। शर्म्म॑ मे मे॒ शर्म्म॒ शर्म्म॑ मे यच्छ यच्छ मे॒ शर्म्म॒ शर्म्म॑ मे यच्छ। मे॒ य॒च्छ॒ य॒च्छ॒ मे॒ मे॒ य॒च्छ॒। य॒च्छेति॑ यच्छ॥९॥

ऊर्ग्ग॑स्य॒स्यूर्ग्गूर्ग्ग॑स्याङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्य॒स्यूर्ग्गूर्ग्ग॑स्याङ्गिर॒सी। अ॒स्या॒ङ्गि॒र॒स्या॒ङ्गिर॒स्य॒स्यस्याङ्गिर॒स्यूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्ण॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्य॒स्यस्याङ्गिर॒स्यूर्ण्ण॑म्म्रदाः। आ॒ङ्गि॒र॒स्यूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्ण॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्यूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मूर्ण्ण॑म्म्रदाऽ आङ्गिर॒स्या॒ङ्गिर॒स्यूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॑म्। ऊर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒म्मयि॒ मय्यूर्ज्ज॒मूर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ ऊर्ज्ज॒म्मयि॑ । ऊर्ण्ण॑म्म्रदा॒ऽ इत्यूर्ण्ण॑ म्रदाः। ऊर्ज्ज॒म्मयि॒ मय्यूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒म्मयि॑ धेहि धेहि॒ मय्यूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒म्मयि॑ धेहि। मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि। धे॒हीति॑ धेहि॥ सोम॑स्य नी॒विर्न्नी॒विः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य नी॒विर॑स्यसि नी॒विः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य नी॒विर॑सि। नीविर॑स्यसि नी॒विर्न्नी॒विर॑सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रसि नी॒विर्न्नी॒विर॑सि॒ व्विष्ण्णो॑ः। अ॒सि॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॑रस्यसि॒ व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॑। व्विष्ण्णो॒ः शर्म्म॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ व्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒ः शर्म्मा॑सि। शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒

[1]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार यज्ञस्य बाद में होने से अस्य पद अन्तोदात्त होता है।

शर्म्म॒ शर्म्मा॑सि॒ शर्म्मं॑। अ॒सि॒ शर्म्म॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म्मा॑स्यसि॒ शर्म्म॒ यज॑मानस्य। शर्म्म॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म्म॒ शर्म्म॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ शर्म्म॒ शर्म्म॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य। यज॑मान॒-स्येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॒र्य्योनि॒रिन्द्र॑स्य॒ यज॑मानस्य॒ यज॑मान॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॑ः। इन्द्र॑स्य॒ योनि॒र्य्योनि॒रिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॑रस्यसि॒ योनि॒रिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ योनि॑रसि। योनि॑रस्यसि॒ योनि॒र्य्योनि॑रसि सु॒स॒स्याः सु॑स॒स्याऽ अ॑सि॒ योनि॒र्य्योनि॑रसि सुस॒स्याः। अ॒सि॒ सु॒स॒स्याः सु॑स॒स्याऽ अ॑स्यसि सुस॒स्याः कृ॒षीः कृ॒षीः सु॑स॒स्याऽ अ॑स्यसि सुस॒स्याः कृ॒षीः। सु॒स॒स्याः कृ॒षीः कृ॒षीः सु॑स॒स्याः सु॑स॒स्याः कृषीस्कृ॑धि कृधि कृ॒षीः सु॑स॒स्याः सु॑स॒स्याः कृषीस्कृ॑धि[1]। सु॒स॒स्याऽ इति॑ सु स॒स्याः। कृ॒षीस्कृ॑धि कृधि कृ॒षीः कृ॒षीस्कृ॑धि। कृ॒धीति॑ कृधि॥ उच्छ्र॑यस्व श्रय॒स्वोदुच्छ्र॑यस्व व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते श्रय॒स्वो-दुच्छ्र॑यस्व व्वनस्प्पते। श्र॒य॒स्व॒ व्व॒न॒स्प्प॒ते॒ व्व॒न॒स्प्प॒ते॒ श्र॒य॒स्व॒ श्र॒य॒स्व॒ व्व॒न॒स्प्प॒त॒ऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते श्रयस्व श्रयस्व व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वः। व्व॒न॒स्प्प॒त॒ऽ ऊ॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ मो॒र्द्ध्वो व्व॑नस्प्पते व्वनस्प्पतऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑। ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ मो॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ पाहि पाहि मो॒र्द्ध्वऽ ऊ॒र्द्ध्वो मा॑ पाहि। मा॒ पा॒हि॒ पा॒हि॒ मा॒ मा॒ पा॒ह्यꣳह॒सोꣳह॑सः पाहि मा मा पा॒ह्यꣳह॑सः। पा॒ह्यꣳह॒सोꣳह॑सः पाहि पा॒ह्यꣳह॑सः। अꣳह॑स॒ऽ इत्यꣳह॑सः॥१०॥

व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुत व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुत व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुत व्व्रतम्। कृ॒णु॒त॒ व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणुत व्व्रतङ्कृ॑णुत। व्व्रतङ्कृ॑णुत कृणु-त व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुता॒ग्निर॒ग्निः कृ॑णुत व्व्रतँव्व्रतङ्कृ॑णुता॒ग्निः। कृ॒णु॒ता॒ग्निर॒ग्निः कृ॑णुत

[1]. भाव्युपधः षत्वमेति वर्जयित्वा कृषीस्कृधिम्।-व.र.प्र.शि.११९. कृषीश्च कृधौ सकारम् (वा. प्रा. ३.३३) कृधि बाद में रहने पर कृषीः पद का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

कृणुता॒ग्निर्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निः कृ॑णुत कृणुता॒ग्निर्ब्रह्म॑। अ॒ग्निर्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्र-
ह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्रह्मा॒ग्निः। ब्रह्मा॒ग्निर॒ग्निर्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निऽर्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो॒-
ग्निर्ब्रह्म॒ ब्रह्मा॒ग्निऽर्य॒ज्ज्ञः। अ॒ग्निऽर्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो॒ग्निर॒ग्निऽर्य॒ज्ज्ञो ब्व॒न॒स्प्पति॒र्ब्व॒न॒-
स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ज्ञो॒ग्निर॒ग्निऽर्य॒ज्ज्ञो ब्व॒न॒स्प्पति॑÷[1]। य॒ज्ज्ञो ब्व॒न॒स्प्पति॒र्ब्व॒न॒स्प्पति॑ऽर्य॒-
ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो ब्व॒न॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ज्ञियो॑ य॒ज्ज्ञियो॒ ब्व॒न॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो ब्व॒न॒स्प्पति॑-
ऽर्य॒ज्ज्ञिय॑÷। ब्व॒न॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ज्ञियो॑ य॒ज्ज्ञियो॒ ब्व॒न॒स्प्पति॒र्ब्व॒न॒स्प्पति॑ऽर्य॒ज्ज्ञिय॑÷।
य॒ज्ज्ञिय॒ऽ इति॑ य॒ज्ज्ञिय॑÷॥ दैवी॒न्धिय॒न्धिय॒न्दैवी॒न्दैवी॒न्धिय॑म्मनामहे मनामहे॒
धिय॒न्दैवी॒न्दैवी॒न्धिय॑म्मनामहे। धिय॑म्मनामहे मनामहे॒ धिय॒न्धिय॑म्मनामहे
सुमृडी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम्म॑नामहे॒ धिय॒न्धिय॑म्मनामहे सुमृडी॒काम्। म॒ना॒म॒हे॒
सु॒मृ॒डी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम्म॑नामहे मनामहे सुमृडी॒काम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒का-
म्म॑नामहे मनामहे सुमृडी॒काम॒भिष्ट॑ये। सु॒मृ॒डी॒काम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒काꣳ
सु॑मृडी॒काम॒भिष्ट॑ये ब्वर्चो॒धाँ॑ब्वर्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये सुमृडी॒काꣳ सु॑मृडी॒काम॒भिष्ट॑ये
ब्वर्चो॒धाम्। सु॒मृ॒डी॒कामिति॑ सु मृडी॒काम्। अ॒भिष्ट॑ये ब्वर्चो॒धाँ॑ब्वर्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये
ब्वर्चो॒धाँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसँब्वर्चो॒धाम॒भिष्ट॑ये॒भिष्ट॑ये ब्वर्चो॒धाँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसम्।
ब्व॒र्चो॒धाँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसँब्वर्चो॒धाँ॑ब्वर्चो॒धाँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था
य॒ज्ज्ञवा॑हसँब्वर्चो॒धाँ॑ब्वर्चो॒धाँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था। ब्व॒र्चो॒धामिति॑ वर्च्च॒ः धाम्।
य॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था य॒ज्ज्ञवा॑हसँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था नो॑ नः
सुती॒र्त्था य॒ज्ज्ञवा॑हसँऽय॒ज्ज्ञवा॑हसꣳ सुती॒र्त्था न॑÷। य॒ज्ज्ञवा॑हस॒मिति॑ य॒ज्ज्ञ
ब्वा॑हसम्। सु॒ती॒र्त्था नो॑ नः सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था नो॑ऽ असदसन्नः सुती॒र्त्था सु॑ती॒र्त्था

[1]. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार व॒न॒स्प्पति॑ः पद द्विरुदात्त है। वा.प्रा.३.५०. के अनुसार पति शब्द बाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित होता है। वा.प्रा.५.३७. के अनुसार वनस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

नो॑ऽ अस॑त्[1]। सु॒ती॒र्थेति॑ सु ती॒र्था। नो॒ऽ अ॒स॒द॒स॒न्नो॒ नो॒ऽ अ॒स॒द्वृ॒धे॒ वृ॒धे॑सन्नो नो॑ऽ अस॒द्वृधे॑। अ॒स॒द्वृ॒धे॒ वृ॒धे॑सदस॒द्वृधे॑। वृ॒ध॒ऽ इति॒ वृधे॑॥ ये दे॒वा दे॒वा ये ये दे॒वा मनो॑जाता॒ मनो॑जाता दे॒वा ये ये दे॒वा मनो॑जाताः। दे॒वा मनो॑जाता॒ मनो॑जाता दे॒वा दे॒वा मनो॑जाता मनो॒यु॒जो॑ मनो॒यु॒जो॒ मनो॑जाता दे॒वा दे॒वा मनो॑जाता मनो॒यु॒जः॑। मनो॑जाता मनो॒यु॒जो॑ मनो॒यु॒जो॒ मनो॑जाता॒ मनो॑जाता मनो॒यु॒जो॒ दक्ष॑क्रतवो॒ दक्ष॑क्रतवो मनो॒यु॒जो॒ मनो॑जाता॒ मनो॑जाता मनो॒यु॒जो॒ दक्ष॑क्रतवः। मनो॑जाता॒ऽ इति॒ मनः॑ जाताः[2]। म॒नो॒यु॒जो॒ दक्ष॑क्रतवो॒ दक्ष॑क्रतवो मनो॒यु॒जो॑ मनो॒यु॒जो॒ दक्ष॑क्रतव॒स्ते ते दक्ष॑क्रतवो मनो॒यु॒जो॑ मनो॒यु॒जो॒ दक्ष॑क्रतव॒स्ते। म॒नो॒यु॒ज॒ऽ इति॑ मनः॒ युजः॑। दक्ष॑क्रतव॒स्ते ते दक्ष॑क्रतवो॒ दक्ष॑क्रतव॒स्ते नो॑ न॒स्ते दक्ष॑क्रतवो॒ दक्ष॑क्रतव॒स्ते नः॑। दक्ष॑क्रतव॒ऽ इति॒ दक्ष॑ क्रतवः। ते नो॑ न॒स्ते ते नो॑वन्त्ववन्तु न॒स्ते ते नो॑वन्तु[3]। नो॒व॒न्त्व॒व॒न्तु॒ नो॒ नो॒व॒न्तु॒ ते तेऽ॑वन्तु नो नोवन्तु॒ ते। अ॒व॒न्तु॒ ते ते॑वन्त्ववन्तु॒ ते नो॑ न॒स्ते॒वन्त्ववन्तु॒ ते नः॑। ते नो॑ न॒स्ते ते नः॑ पान्तु पान्तु न॒स्ते ते नः॑ पान्तु। नः॒ पा॒न्तु॒ पा॒न्तु॒ नो॒ नः॒ पा॒न्तु॒ तेभ्य॒स्तेभ्यः॑ पान्तु नो नः पान्तु॒ तेभ्यः॑। पा॒न्तु॒ तेभ्य॒स्तेभ्यः॑ पान्तु पान्तु॒ तेभ्यः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ तेभ्यः॑ पान्तु पान्तु॒ तेभ्यः॒ स्वाहा॑। तेभ्यः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ तेभ्य॒स्तेभ्यः॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥११॥

श्वा॒त्राः॒ पी॒ताः॒ पी॒ताः॒ श्वा॒त्राः॒ श्वा॒त्राः॒ पी॒ता भ॑वत भवत पी॒ताः॒ श्वा॒त्राः॒ श्वा॒त्राः॒ पी॒ता भ॑वत। पी॒ता भ॑वत भवत पी॒ताः॒ पी॒ता भ॑वत यू॒यँ॑यू॒यम्भ॑वत पी॒ताः॒ पी॒ता भ॑वत यू॒यम्। भ॒व॒त॒ यू॒यँ॑यू॒यम्भ॑वत भवत यू॒यमा॑पऽ आपो यू॒य-

---

[1]. नो असत् यहाँ ओकार का प्रकृतिभाव अन्वेषणीय है।

[2]. मनोजाताः यहाँ पर अवग्रहः पदान्तवत् (वा. प्रा. १.१५३) इस सूत्र के अनुसार सावग्रह पद का पूर्वपद मनः पदान्त के समान कार्य को प्राप्त करता है अतः विसर्जनीय में तर्जनी एवं कनिष्ठिका का प्रदर्शन होगा।

[3]. वा.प्रा.४.७४. के अनुसार यहाँ अवन्तु के अकार का अभिनिधान होता है।

म्भ॑वत भवत यू॒यमा॑पः। यू॒यमा॑पऽ आपो यू॒यँय्यू॒यमा॑पोऽ अ॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑-
मापो यू॒यँय्यू॒यमा॑पोऽ अ॒स्म्माक॑म्। आ॒पो॒ऽ अ॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑मापऽ आपोऽ
अ॒स्म्माक॑म॒न्तर॒न्तर॒स्म्माक॑मापऽ आपोऽ अ॒स्म्माक॑म॒न्तः। अ॒स्म्माक॑म॒न्तर॒-
न्तर॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑म॒न्तरु॒दरे॑ऽ उ॒दरे॒न्तर॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॑म॒न्तरु॒दरे॑। अ॒न्तरु॒-
दरे॑ऽ उ॒दरे॒न्तर॒न्तरु॒दरे॑ सु॒शेवा॑ः सु॒शेवा॑ऽ उ॒दरे॒न्तर॒न्तरु॒दरे॑ सु॒शेवा॑ः। उ॒दरे॑ सु॒शे-
वा॑ः सु॒शेवा॑ऽ उ॒दरे॑ऽ उ॒दरे॑ सु॒शेवा॑ः। सु॒शेवा॒ऽ इति॑ सु॒ शेवा॑ः॥ ताऽ अ॒स्म्मभ्य॑-
म॒स्म्मभ्य॒न्तास्ताऽ अ॒स्म्मभ्य॑मय॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॒स्म्मभ्य॒न्तास्ताऽ
अ॒स्म्मभ्य॑मय॒क्ष्माः[1]। अ॒स्म्मभ्य॑मय॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॒स्म्मभ्य॑म॒स्म्म-
भ्य॑मय॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॒स्म्मभ्य॑म॒स्म्मभ्य॑मय॒क्ष्माऽ
अ॑नमी॒वाः। अ॒य॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ
अना॑ग॒सोना॑गसोनमी॒वाऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑य॒क्ष्माऽ अ॑नमी॒वाऽ अना॑गसः। अ॒न॒मी॒-
वाऽ अना॑ग॒सोना॑गसोनमी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अना॑गसः॒ स्वद॑न्तु स्वद॒न्त्वना॑गसोन-
मी॒वाऽ अ॑नमी॒वाऽ अना॑गसः स्वद॑न्तु। अना॑गस॒ः स्वद॑न्तु स्वद॒न्त्वना॑ग॒सोना॑-
गस॒ः स्वद॑न्तु दे॒वीर्दे॒वीः स्वद॒न्त्वना॑ग॒सोना॑गस॒ः स्वद॑न्तु दे॒वीः। स्वद॑न्तु दे॒वी-
र्दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वद॑न्तु दे॒वीर॒मृता॑ऽ अ॒मृता॑ दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वद॑न्तु दे॒वीर॒मृता॑ः।
दे॒वीर॒मृता॑ऽ अ॒मृता॑ दे॒वीर्दे॒वीर॒मृता॑ऽ ऋ॒ता॒वृध॑ऽ ऋ॒त॒वृधो॒मृता॑ दे॒वीर्दे॒वीर॒मृता॑ऽ
ऋ॒ता॒वृध॑ः[2]। अ॒मृता॑ऽ ऋ॒ता॒वृध॑ऽ ऋ॒त॒वृधो॒मृता॑ऽ अ॒मृता॑ऽ ऋ॒ता॒वृध॑ः। ऋ॒त॒वृध॒ऽ
इत्यृ॒त॒ वृध॑ः॥१२॥

1. अयक्ष्माः यहाँ यैस्तु परं तैर्न पूर्वम् (वा. प्रा. ४.१०५) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार मकार का द्वित्व नहीं होगा। यत्र चोभयतः स्पर्शैः सँय्युक्ताः शषसाः सहाः (सह?)। तत्र नाद्यः क्रमो ज्ञेयो नापरो बोधितो बुधैः॥ - व. शि. १५७ -१५८.

2. दीर्घम्(वा.प्रा.३.९६) के अधिकार में पढ़े गये सूत्र वा.प्रा.३.९७. के अनुसार ऋतवृधः पद में वकार परे होने से ऋत का अन्तिम ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर ऋतावृधः होता है।

इ॒यन्तें तऽ इ॒यमि॒यन्तें य॒ज्ञियां य॒ज्ञियां तऽ इ॒यमि॒यन्तें य॒ज्ञियां। ते॒ य॒ज्ञियां य॒ज्ञियां ते ते य॒ज्ञियां त॒नूस्त॒नूर्य॒ज्ञियां ते ते य॒ज्ञियां त॒नूः। य॒ज्ञियां त॒नूस्त॒नूर्य॒ज्ञियां य॒ज्ञियां त॒नूर॒पोपस्त॒नूर्य॒ज्ञियां य॒ज्ञियां त॒नू-र॒पः। त॒नूर॒पोपस्त॒नूस्त॒नूर॒पो मुं॑ञ्चामि मुञ्चाम्म्य॒पस्त॒नूस्त॒नूर॒पो मुं॑ञ्चामि। अ॒पो मुं॑ञ्चामि मुञ्चाम्म्य॒पो॒पो मुं॑ञ्चामि॒ न न मुं॑ञ्चाम्म्य॒पो॒पो मुं॑ञ्चामि॒ न। मु॒ञ्चा॒मि॒ न न मुं॑ञ्चामि मुञ्चामि॒ न प्प्र॒जाम्प्र॒जान्न मुं॑ञ्चामि मुञ्चामि॒ न प्प्र॒जाम्। न प्प्र॒जाम्प्र॒जान्न न प्प्र॒जाम्। प्र॒जामितिं प्प्र॒ जाम्॥ अ॒ꣳहो॒मुचः॒ स्वाहां॑कृताः स्वाहां॑कृताऽ अꣳहो॒मुचोंꣳहो॒मुचः॒ स्वाहां॑कृताः पृथि॒वीम्पृं॑थि॒वीꣳ स्वाहां॑कृताऽ अꣳहो॒मुचों-ꣳ हो॒मुचः॒ स्वाहां॑कृताः पृथि॒वीम्। अ॒ꣳहो॒मु॒चऽ इत्त्यꣳहः॒ मुचः॑। स्वाहां॑कृताः पृथि॒वीम्पृं॑थि॒वीꣳ स्वाहां॑कृ॒ताः स्वाहां॑कृताः पृथि॒वीमा विंशत व्वि॒श॒ता पृं॑थि॒वीꣳ स्वाहां॑कृ॒ताः स्वाहां॑कृताः पृथि॒वीमा विंशत। स्वाहां॑कृ॒ताऽ इति॒ स्वाहां कृताः। पृ॒थि॒वीमा विंशत व्वि॒श॒ता पृं॑थि॒वीम्पृं॑थि॒वीमा विंशत पृथि॒ष्या पृं॑थि॒ष्या व्विं॒श॒ता पृं॑थि॒वीम्पृं॑थि॒वीमा विंशत पृथि॒ष्या। आ विंशत। व्वि॒श॒त॒ पृ॒थि॒ष्या पृं॑थि॒ष्या व्विंशत व्विशत पृथि॒ष्या सꣳ सम्पृं॑थि॒ष्या व्विंशत व्विशत पृथि॒ष्या सम्। पृ॒थि॒ष्या सꣳ सम्पृं॑थि॒ष्या पृं॑थि॒ष्या सम्भं॑व भव॒ सम्पृं॑थि॒ष्या पृं॑थि॒ष्या सम्भं॑व[1]। सम्भं॑व भव॒ सꣳ सम्भं॑व। भ॒वेतिं भव॥१३॥

अग्ग्ने॒ त्वन्त्वमग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वꣳ सु सु त्वमग्ग्नेग्ग्ने॒ त्वꣳ सु। त्वꣳ सु सु त्वन्त्वꣳ सु जां॑गृहि जागृहि॒ सु त्वन्त्वꣳ सु जां॑गृहि। सु जां॑गृहि जागृहि॒ सु सु जां॑गृहि व्व॒यँव्व॒यञ्जां॑गृहि॒ सु सु जां॑गृहि व्व॒यम्। जा॒गृ॒हि॒ व्व॒यँव्व॒यञ्जां॑गृहि जागृहि व्व॒यꣳ सु सु व॒यञ्जां॑गृहि जागृहि व्व॒यꣳ सु। व्व॒यꣳ सु सु व॒यँव्व॒यꣳ सु मं॑न्दिषीमहि मन्दिषीमहि॒ सु व॒यँव्व॒यꣳ सु मं॑न्दिषीमहि। सु मं॑न्दिषीमहि मन्दिषीमहि॒ सु सु

[1]. वा.प्रा.४.२८. के अनुसार सम्भव बाद में होने से यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

मन्दिषीमहि। मन्दिषीमहीति मन्दिषीमहि॥ रक्षा णो नो रक्ष रक्षा णोऽ अप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्नो रक्ष रक्षा णोऽ अप्प्रयुच्छन्। नोऽ अप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्नो नोऽ अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नो नोऽ अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे। अप्प्रयुच्छन्प्रबुधे प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्प्रबुधे नो नः प्प्रबुधेप्प्रयुच्छन्नप्प्रयुच्छन्प्रबुधे नः। अप्प्रयुच्छन्नित्यप्प्र युच्छन्। प्रबुधे नो नः प्प्रबुधे प्प्रबुधे नः पुनः पुनर्न्नः प्प्रबुधे प्प्रबुधे नः पुनः। प्रबुधऽ इति प्प्र बुधे। नः पुनः पुनर्न्नो नः पुनस्कृधि कृधि पुनर्न्नो नः पुनस्कृधि। पुनस्कृधि कृधि पुनः पुनस्कृधि[1]। पुनरिति पुनः। कृधीति कृधि॥१४॥

पुनर्म्मनो मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः पुनर्म्मनः पुनः। मनः पुनः पुनर्म्मनो मनः पुनरायुरायुः पुनर्म्मनो मनः पुनरायुः। पुनरायुरायुः पुनः पुनरायुर्म्मे मऽ आयुः पुनः पुनरायुर्म्मे। आयुर्म्मे मऽ आयुरायुर्म्मऽ आगन्नगन्ना मऽ आयुरायुर्म्मऽ आगन्। मऽ आगन्नगन्ना मे मऽ आगन्पुनः पुनरगन्ना मे मऽ आगन्पुनः। आगन्। अगन्पुनः पुनरगन्नगन्पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनरगन्नगन्पुनः प्प्राणः। पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः पुनः। पुनरिति पुनः। प्राणः पुनः पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनरात्मात्मा पुनः प्प्राणः प्प्राणः पुनरात्मा। पुनरात्मात्मा पुनः पुनरात्मा मे मऽ आत्मा पुनः पुनरात्मा मे। आत्मा मे मऽ आत्मात्मा मऽ आगन्नगन्ना मऽ आत्मात्मा मऽ आगन्। मऽ आगन्नगन्ना मे मऽ आगन्पुनः पुनरगन्ना मे मऽ आगन्पुनः। आगन्। अगन्पुनः पुनरगन्नगन्पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनरगन्नगन्पुनश्चक्षुः। पुनश्चक्षुश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः पुनश्चक्षुः पुनः। पुनरिति पुनः। चक्षुः पुनः

1. कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार कृधि बाद में रहने पर पूर्ववर्ती पद का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

पुन॒श्चक्षु॒श्चक्षु॒ः पुन॒ः श्रोत्र॒ꣳ श्रोत्र॒म्पुन॒श्चक्षु॒श्चक्षु॒ः पुन॒ः श्रोत्र॑म्। पुन॒ः श्रोत्र॒ꣳ श्रोत्र॒म्पुन॒ः पुन॒ः श्रोत्र॑म्मे मे॒ श्रोत्र॒म्पुन॒ः पुन॒ः श्रोत्र॑म्मे। पुन॒रिति॒ पुन॑ः। श्रोत्र॑म्मे मे॒ श्रोत्र॒ꣳ श्रोत्र॑म्म॒ऽ आग॑न्नग॒न्ना मे॒ श्रोत्र॒ꣳ श्रोत्र॑म्म॒ऽ आग॑न्। म॒ऽ आग॑न्नग॒न्ना मे म॒ऽ आग॑न्। आग॑न्। अ॒ग॒न्नित्य॑गन्॥ वै॒श्वा॒न॒रोऽ अद॒ब्धोद॑ब्धो वैश्वान॒रो वै॒श्वान॒रोऽ अद॑ब्धस्तनू॒पास्त॑नू॒पाऽ अद॑ब्धो वैश्वान॒रो वै॒श्वान॒रोऽ अद॑ब्धस्तनू॒पाः[1]। अद॑ब्धस्तनू॒पास्त॑नू॒पाऽ अद॒ब्धोद॑ब्धस्तनू॒पाऽ अ॒ग्निर॒ग्नि- स्त॑नू॒पाऽ अद॒ब्धोद॑ब्धस्तनू॒पाऽ अ॒ग्निः। त॒नू॒पाऽ अ॒ग्निर॒ग्निस्त॑नू॒पास्त॑नू॒पाऽ अ॒ग्निर्नो॒ नो॒ग्निस्त॑नू॒पास्त॑नू॒पाऽ अ॒ग्निर्न॑ः। त॒नू॒पाऽ इति॑ तनू॒ पाः। अ॒ग्निर्नो॒ नो॒ग्निर॒ग्निर्न॑ः पातु पातु नो॒ग्निर॒ग्निर्न॑ः पातु। न॒ः पा॒तु पा॒तु नो॒ न॒ः पा॒तु दु॒रि॒ताद्दु॑रि॒तात्पा॑तु नो नः पातु दु॒रि॒तात्। पा॒तु दु॒रि॒ताद्दु॑रि॒तात्पा॑तु पातु दु॒रि॒ताद॑व॒द्याद॑व॒द्याद्दु॑रि॒तात्पा॑तु पातु दु॒रि॒ताद॑व॒द्यात्। दु॒रि॒ताद॑व॒द्याद॑व॒द्याद्दु॑रि॒ता- द्दु॑रि॒ताद॑व॒द्यात्। दु॒रि॒तादिति॑ दुः इ॒तात्। अ॒व॒द्यादित्य॑व॒द्यात्॥१५॥

त्वम॑ग्नेग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ने व्र॒त॒पा व्र॑त॒पाऽ अ॑ग्ने॒ त्वन्त्वम॑ग्ने व्र॒त॒पाः। अ॒ग्ने॒ व्र॒त॒पा व्र॑त॒पाऽ अ॑ग्नेग्ने व्र॒त॒पाऽ अ॑स्यसि व्र॒त॒पाऽ अ॑ग्नेग्ने व्र॒त॒पाऽ अ॑सि। व्र॒त॒पाऽ अ॑स्यसि व्र॒त॒पा व्र॑त॒पाऽ अ॑सि दे॒वो दे॒वो॒सि व्र॒त॒पा व्र॑त॒पाऽ अ॑सि दे॒वः। व्र॒त॒पाऽ इति॑ व्र॒त॒ पाः। अ॒सि॒ दे॒वो दे॒वो॒स्यसि दे॒वऽ आ मर्त्ये॑षु मर्त्ये॒ष्ष्वा दे॒वो॒स्यसि दे॒वऽ आ मर्त्ये॑षु। दे॒वऽ आ मर्त्ये॑षु मर्त्ये॒ष्ष्वा दे॒वो दे॒वऽ आ मर्त्ये॒ष्ष्वा मर्त्ये॒ष्ष्वा दे॒वो दे॒वऽ आ मर्त्ये॒ष्ष्वा[2]। आ मर्त्ये॑षु। मर्त्ये॒ष्ष्वा मर्त्ये॑षु मर्त्ये॒ष्ष्वा। एत्या॥ त्वँय्य॒ज्ञेषु॑ य॒ज्ञेषु॒ त्वन्त्वँय्य॒ज्ञेष्ष्वीड्य॒ऽ ईड्यो॑ य॒ज्ञेषु॒ त्वन्त्वँय्य॒ज्ञेष्ष्वीड्य॑ः। य॒ज्ञे-

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार वैश्वानरो अदब्धः में ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

[2]. कण्डिका अथवा अर्धर्च के अन्त में आ (अपृक्त पद) आने पर तीन पदों का समूह गृहीत होता है, इस सन्धि में मर्त्येषु के पहले आ(अपृक्त पद) आया है, अतः यहाँ उसके कारण चार पदों का समूह सन्धिकार्य हेतु लिया जाता है।

ष्वीङ्ग्यऽ ईङ्ग्यों यज्ञेषुं यज्ञेष्वीङ्ग्यंः। ईङ्ग्यऽ इतीङ्ग्यंः॥ रास्स्वेयदियद्रास्स्व रास्स्वेयत्सोम सोमेयद्रास्स्व रास्स्वेयत्सोम[1]। इयत्सोम सोमेयुदियत्सोमा भूयो भूयऽ आ सोमेयुदियत्सोमा भूयंः। सोमा भूयो भूयऽ आ सोंम सोमा भूयों भर भर भूयऽ आ सोंम सोमा भूयों भर। आ भूयंः। भूयों भर भर भूयो भूयों भर देवो देवो भंर भूयो भूयों भर देवः। भर देवो देवो भंर भर देवो नों नो देवो भंर भर देवो नंः। देवो नों नो देवो देवो नंः सविता संविता नों देवो देवो नंः सविता[2]। नः सविता संविता नों नः सविता ब्वसोर्ब्वसोंः सविता नों नः सविता ब्वसोंः। सविता ब्वसोर्ब्वसोंः सविता संविता ब्वसोंर्दाता दाता ब्वसोंः सविता संविता ब्वसोंर्दाता। ब्वसोंर्दाता दाता ब्वसोर्ब्वसोंर्दाता ब्वसु ब्वसुं दाता ब्वसोर्ब्वसोंर्दाता ब्वसुं। दाता ब्वसु ब्वसुं दाता दाता ब्वस्वंदाददाद्वसुं दाता दाता ब्वस्वंदात्। ब्वस्वंदाददाद्वसु ब्वस्वंदात्। अदादित्त्यंदात्॥१६॥

एषा तें तऽ एषैषा तें शुक्र शुक्र तऽ एषैषा तें शुक्र। ते शुक्र शुक्र ते ते शुक्र तनूस्तनूः शुंक्र ते ते शुक्र तनूः। शुक्र तनूस्तनूः शुंक्र शुक्र तनूरेतदेतत्तनूः शुंक्र शुक्र तनूरेतत्। तनूरेतदेतत्तनूस्तनूरेतद्वर्चो ब्वर्चंऽ एतत्तनूस्तनूरेतद्वर्चंः। एतद्वर्चो ब्वर्चंऽ एतदेतद्वर्चस्तया तया ब्वर्चंऽ एतदेतद्वर्चस्तयां। ब्वर्चस्तया तया ब्वर्चो ब्वर्चस्तया सः सन्तया ब्वर्चो ब्वर्चस्तया सम्। तया सः सन्तया तया सम्भंव भव सन्तया तया सम्भंव। सम्भंव भव सः सम्भंव ब्भ्राजम्भ्राजंम्भव सः सम्भंव ब्भ्राजंम्। भव ब्भ्राजम्भ्राजंम्भव भव ब्भ्राजंङ्गच्छ गच्छ ब्भ्राजंम्भव भव ब्भ्राजंङ्गच्छ। भ्राजंङ्गच्छ गच्छ ब्भ्राजम्भ्राजंङ्गच्छ। गच्छेतिं गच्छ॥ जूरंस्यसि

---

[1]. द्विसकारं शास्स्व रास्स्वेति (वा. प्रा. ४.१४७) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ रास्स्व पद में दो सकार हैं।

[2]. नः सविता यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र के अनुसार शकार बाद में रहने पर विसर्जनीय विकार को नहीं प्राप्त होता है। मत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः(वा.प्रा.३.९) यह शाकटायन के मत से परसवर्ण का विधान माध्यन्दिन शाखा के लिये नहीं है।

जूर्ज्जूर्रसि धृता धृतासि जूर्ज्जूर्रसि धृता। असि धृता धृतास्यसि धृता मनसा मन-
सा धृतास्यसि धृता मनसा। धृता मनसा मनसा धृता धृता मनसा जुष्टा जुष्टा
मनसा धृता धृता मनसा जुष्टा। मनसा जुष्टा जुष्टा मनसा मनसा जुष्टा व्विष्ण्णवे
व्विष्ण्णवे जुष्टा मनसा मनसा जुष्टा व्विष्ण्णवे। जुष्टा व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे जुष्टा
जुष्टा व्विष्ण्णवे। व्विष्ण्णवऽ इति विष्ण्णवे॥१७॥

तस्यास्ते ते तस्यास्तस्यास्ते सत्यसंवसः सत्यसंवसस्ते तस्यास्तस्यास्ते
सत्यसंवसः। ते सत्यसंवसः सत्यसंवसस्ते ते सत्यसंवसः प्प्रसवे प्प्रसवे सत्य-
संवसस्ते ते सत्यसंवसः प्प्रसवे। सत्यसंवसः प्प्रसवे प्प्रसवे सत्यसंवसः सत्य-
संवसः प्प्रसवे तन्न्वस्तन्न्वः प्प्रसवे सत्यसंवसः सत्यसंवसः प्प्रसवे तन्न्वः।
सत्यसंवसऽ इति सत्य संवसः। प्रसवे तन्न्वस्तन्न्वः प्प्रसवे प्प्रसवे तन्न्वो यन्त्रँ-
य्यन्त्रन्तन्न्वः प्प्रसवे प्प्रसवे तन्न्वो यन्त्रम्। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। तन्न्वो यन्त्रँय्यन्त्र-
न्तन्न्वस्तन्न्वो यन्त्रमशीयाशीय यन्त्रन्तन्न्वस्तन्न्वो यन्त्रमशीय। यन्त्रमशीयाशीय
यन्त्रँय्यन्त्रमशीय स्वाहा स्वाहाशीय यन्त्रँय्यन्त्रमशीय स्वाहा। अशीय स्वाहा
स्वाहाशीयाशीय स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ शुक्रमस्यसि शुक्रꣳ शुक्रमसि चन्द्र-
श्चन्द्रमसि शुक्रꣳ शुक्रमसि चन्द्रम्। असि चन्द्रश्चन्द्रमस्यसि चन्द्रममृतममृतञ्च-
न्द्रमस्यसि चन्द्रममृतम्[1]। चन्द्रममृतममृतञ्चन्द्रश्चन्द्रममृतँव्वैश्श्वदेवँव्वैश्श्वदेवममृ-
तञ्चन्द्रश्चन्द्रममृतँव्वैश्श्वदेवम्। अमृतँव्वैश्श्वदेवँव्वैश्श्वदेवममृतममृतँव्वैश्श्वदेवम्। व्वैश्श्वदेव-
मिति वैश्श्व देवम्॥१८॥

---

[1]. संहिता में इस मन्त्र में असि पद चार बार आया है। वा.प्रा.४.१७७. के अनुसार प्रथमभिन्न अन्य असि की आवृति में सङ्क्रम होता है।

चिच्चिन्मना मना चिच्चिन्मना धीर्द्धीर्म्मना चिच्चिन्मना धीः[1]। मना धीर्द्धीर्म्मना मना धीर्द्दक्षिणा दक्षिणा धीर्म्मना मना धीर्द्दक्षिणा। धीर्द्दक्षिणा दक्षिणा धीर्द्धीर्द्दक्षिणा क्षत्रियां क्षत्रिया दक्षिणा धीर्द्धीर्द्दक्षिणा क्षत्रियां। दक्षिणा क्षत्रियां क्षत्रिया दक्षिणा दक्षिणा क्षत्रियां यज्ञियां यज्ञियां क्षत्रिया दक्षिणा दक्षिणा क्षत्रियां यज्ञियां। क्षत्रियां यज्ञियां यज्ञियां क्षत्रियां क्षत्रियां यज्ञियादितिरदितिर्य्यज्ञियां क्षत्रियां क्षत्रियां यज्ञियादितिः। यज्ञियादितिरदितिर्य्यज्ञियां यज्ञियादितिरुभयतःशीर्ष्ण्युभयतःशीर्ष्ण्यदितिर्य्यज्ञियां यज्ञियादितिरुभयतःशीर्ष्णी[2]। अदितिरुभयतः शीर्ष्ण्युभयतःशीर्ष्ण्यदितिरदितिरुभयतःशीर्ष्णी। उभयतःशीर्ष्णीत्युभयतः शीर्ष्णी॥ सा नो नः सा सा नः सुप्राची सुप्राची नः सा सा नः सुप्राची। नः सुप्राची सुप्राची नो नः सुप्राची सुप्रतीची सुप्रतीची सुप्राची नो नः सुप्राची सुप्रतीची। सुप्राची सुप्रतीची सुप्रतीची सुप्राची सुप्राची सुप्रतीच्येद्ध्येधि सुप्रतीची सुप्राची सुप्राची सुप्रतीच्येधि। सुप्राचीति सु प्राची। सुप्रतीच्येद्ध्येधि सुप्रतीची सुप्रतीच्येधि मित्रो मित्रऽ एधि सुप्रतीची सुप्रतीच्येधि मित्रः। सुप्रतीचीति सु प्रतीची। एधि मित्रो मित्रऽ एद्ध्येधि मित्रस्त्वां त्वा मित्रऽ एद्ध्येधि मित्रस्त्वां। मित्रस्त्वां त्वा मित्रो मित्रस्त्वां पदि पदि त्वां मित्रो मित्रस्त्वां पदि। त्वा पदि पदि त्वां त्वा पदि बंद्धीताम्बद्धीताम्पदि त्वां त्वा पदि बंद्धीताम्। पदि बंद्धीताम्बद्धीताम्पदि पदि बंद्धीताम्पूषा पूषा बंद्धीताम्पदि पदि बंद्धीताम्पूषा। बद्धीताम्पूषा पूषा बंद्धीताम्बद्धीताम्पूषाद्ध्नोर्द्धनः पूषा

[1].शु.य. के भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने मना पद न मानकर मनः पद माना है। वा.प्रा. में भाष्यकार उव्वट ने २.१६. के भाष्य में उदाहरण के रूप में भी चिदसि मनोसि लिखा है।

[2]. अविकारं च शाकल्यो मन्यते शषसेपु च – व. शि. – १२०.

बद्धीताम्बद्धीताम्पूषाद्ध्वनः। पूषाद्ध्वनोद्ध्वनः पूषा पूषाद्ध्वनस्प्पातु पात्वद्ध्वनः पूषा पूषाद्ध्वनस्प्पातु[1]। अद्ध्वनस्प्पातु पात्वद्ध्वनोद्ध्वनस्प्पात्विन्द्रायेन्द्राय पात्वद्ध्वनोद्ध्वनस्प्पात्विन्द्राय। पात्विन्द्रायेन्द्राय पातु पात्विन्द्रायाद्ध्यक्षायाद्ध्यक्षायेन्द्राय पातु पात्विन्द्रायाद्ध्यक्षाय[2]। इन्द्रायाद्ध्यक्षायाद्ध्यक्षायेन्द्रायेन्द्रायाद्ध्यक्षाय। अद्ध्यक्षायेत्यधि अक्षाय॥१९॥

अनु त्वा त्वान्वनु त्वा माता माता त्वान्वनु त्वा माता। त्वा माता माता त्वा त्वा माता मन्न्यताम्मन्न्यताम्माता त्वा त्वा माता मन्न्यताम्। माता मन्न्यताम्मन्न्यताम्माता माता मन्न्यताम्पिता पिता मन्न्यताम्माता माता मन्न्यताम्पिता। मन्न्यताम्पिता पिता मन्न्यताम्मन्न्यताम्पिता ब्भ्राता ब्भ्राता पिता मन्न्यताम्मन्न्यताम्पिता ब्भ्राता। पिता ब्भ्राता ब्भ्राता पिता पिता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यो ब्भ्राता पिता पिता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः। भ्राता सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यो ब्भ्राता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सखा सखा सगर्ब्भ्यो ब्भ्राता ब्भ्राता सगर्ब्भ्यः सखा। सगर्ब्भ्यः सखा सखा सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यः सखा सयूत्थ्यः सयूत्थ्यः सखा सगर्ब्भ्यः सगर्ब्भ्यः सखा सयूत्थ्यः। सगर्ब्भ्यऽ इति स गर्ब्भ्यः। सखा सयूत्थ्यः सयूत्थ्यः सखा सखा सयूत्थ्यः। सयूत्थ्यऽ इति स यूत्थ्यः॥ सा देवि देवि सा सा देवि देवन्देवन्देवि सा सा देवि देवम्। देवि देवन्देवन्देवि देवि देवमच्छाच्छ देवन्देवि देवि देवमच्छ। देवमच्छाच्छ देवन्देवमच्छेहीह्यच्छ देवन्देवमच्छेहि। अच्छेहीह्यच्छाच्छेहीन्द्रायेन्द्रायेह्यच्छाच्छेहीन्द्राय। इहीन्द्रायेन्द्रायेहीहीन्द्राय सोमꣳ सोममिन्द्रायेहीहीन्द्राय सोमम्। इन्द्राय सोमꣳ सोममिन्द्रायेन्द्राय

---

[1]. अध्वनो रजसो रिषः स्पृशस्पातौ (वा. प्रा. ३.२८) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार अध्वनः पातु यहाँ पर विसर्जनीय सकार हो गया है।

[2]. चिदसि प्रथमा ज्ञेया अर्म्मेभ्योऽथ पराभवेत्। ध्यक्षा ध्यक्षान्तयोः सम्यगुभयोः कण्डिकाद्वयी॥-पा.शि.२२.

उक्त श्लोक में ध्यक्ष तथा ध्याक्षान्तयोः के स्थान में ध्यक्ष्यान्तयोः पाठ उचित है।

सोम॑छ रु॒द्रो रु॒द्रः॒ सोम॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ सोम॑छ रु॒द्रः॒। सोम॑छ रु॒द्रो रु॒द्रः॒ सोम॒छ सोम॑छ रु॒द्रस्त्वा॑ त्वा रु॒द्रः॒ सोम॒छ सोम॑छ रु॒द्रस्त्वा॑[1]। रु॒द्रस्त्वा॑ त्वा रु॒द्रो रु॒द्रस्त्वा व॑र्त्तयतु ब्व॒र्त्तय॒त्त्वा त्वा॑ रु॒द्रो रु॒द्रस्त्वा व॑र्त्तयतु। त्वा व॑र्त्तयतु ब्व॒र्त्तय॒त्त्वा त्वा॒ त्वा व॑र्त्तयतु स्व॒स्ति स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तय॒त्त्वा त्वा॒ त्वा व॑र्त्तयतु स्व॒स्ति। आ व॑र्त्तयतु। ब्व॒र्त्त॒य॒तु स्व॒स्ति स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तयतु स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ सोम॑सखा स्व॒स्ति ब्व॑र्त्तयतु ब्वर्त्तयतु स्व॒स्ति सोम॑सखा। स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ सोम॑सखा स्व॒स्ति स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ पुन॒ः पुन॒ः सोम॑सखा स्व॒स्ति स्व॒स्ति सोम॑सखा॒ पुन॑ः। सोम॑सखा॒ पुन॒ः पुन॒ः सोम॑सखा॒ सोम॑सखा॒ पुन॒रेही॒ह्या पुन॒ः सोम॑सखा॒ सोम॑सखा॒ पुन॒रेहि॑। सोम॑स॒खेति॒ सोम॑ सखा। पुन॒रेही॒ह्या पुन॒ः पुन॒रेहि॑। एहि॑। इ॒हीती॑हि॥२०॥

ब्वस्व्य॑स्यसि॒ ब्वस्वी॒ ब्वस्व्य॒स्यदि॑ति॒रदि॑तिरसि॒ ब्वस्वी॒ ब्वस्व्य॒स्यदि॑तिः। अ॒स्यदि॑ति॒रदि॑तिरस्य॒स्यदि॑तिरादि॒त्त्यादि॒त्त्यादि॑तिरस्य॒स्यदि॑तिरादि॒त्त्या। अदि॑ति-रादि॒त्त्यादि॒त्त्यादि॑ति॒रदि॑तिरादि॒त्त्या रु॒द्रा रु॒द्रादि॒त्त्यादि॑ति॒रदि॑तिरादि॒त्त्या रु॒द्रा। आ॒दि॒त्त्या रु॒द्रा रु॒द्रादि॒त्त्यादि॒त्त्या रु॒द्रा च॒न्द्रा च॒न्द्रा रु॒द्रादि॒त्त्यादि॒त्त्या रु॒द्रा च॒न्द्रा। रु॒द्रा च॒न्द्रा च॒न्द्रा रु॒द्रा रु॒द्रा च॒न्द्रा। च॒न्द्रेति॑ च॒न्द्रा॥ बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा त्वा॒ बृह॒स्प्प-ति॒र्बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा सु॒म्न्ने सु॒म्न्ने त्वा॒ बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ष्ट्वा सु॒म्न्ने[2]। त्वा॒ सु॒म्न्ने सु॒म्न्ने त्वा॑ त्वा सु॒म्न्ने र॑म्म्णातु रम्म्णातु सु॒म्न्ने त्वा॑ त्वा सु॒म्न्ने र॑म्म्णातु। सु॒म्न्ने र॑म्म्णातु रम्म्णातु सु॒म्न्ने सु॒म्न्ने र॑म्म्णातु रु॒द्रो रु॒द्रो र॑म्म्णातु सु॒म्न्ने सु॒म्न्ने र॑म्म्णातु रु॒द्रः॒। र॒म्म्णा॒तु रु॒द्रो रु॒द्रो र॑म्म्णातु रम्म्णातु रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒र्ब्वसु॑भी रु॒द्रो र॑म्म्णातु रम्म्णातु रु॒द्रो ब्वसु॑भिः। रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒र्ब्वसु॑भी रु॒द्रो रु॒द्रो ब्वसु॑भि॒रा च॑के चक॒ऽ आ वसु॑भी रु॒द्रो

---

[1]. त्वा च(वा.प्रा.२.६) मध्यम पुरुष के अर्थ का वोधक त्वा पद अनुदात्त होता है।

[2]. बृहस्प्पतिः त्वा यहाँ सकारपरे च (वा. प्रा. ३.७७) के अनुसार विसर्जनीय सकार षकार हो जाता है।

रु॒द्रो व्व॒सु॑भि॒रा च॑क्रे। व्व॒सु॑भि॒रा च॑क्रे चक्रु॒ऽ आ वसु॑भि॒र्व्व॒सु॑भि॒रा च॑क्रे। व्व॒सु॑भि॒रिति॒ वसु॑ भिः। आ च॑क्रे। च॒क्रु॒ऽ इति॑ चक्रे॥२१॥

अदि॑त्यास्त्वा॒ त्वादि॑त्या॒ऽ अदि॑त्यास्त्वा मू॒र्द्धन्मू॒र्द्धंस्त्वादि॑त्या॒ऽ अदि॑त्या-स्त्वा मू॒र्द्धन्। त्वा॒ मू॒र्द्धन्मू॒र्द्धंस्त्वा॑ त्वा मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्म्मि जिघ॒र्म्म्या मू॒र्द्धंस्त्वा॑ त्वा मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्म्मि। मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्म्मि जिघ॒र्म्म्या मू॒र्द्धन्मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्म्मि दे॒व॒यज॑ने दे॒व॒यज॑ने जिघ॒र्म्म्या मू॒र्द्धन्मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्म्मि दे॒व॒यज॑ने। आ जि॑घर्म्मि। जि॒घ॒र्म्मि॒ दे॒व॒यज॑ने दे॒व॒यज॑ने जिघर्म्मि जिघर्म्मि दे॒व॒यज॑ने पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या दे॑व॒यज॑ने जिघर्म्मि जिघर्म्मि दे॒व॒यज॑ने पृथि॒व्याः। दे॒व॒यज॑ने पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या दे॑व॒यज॑ने दे॒व॒यज॑ने पृथि॒व्याऽ इडा॑या॒ऽ इडा॑याः पृथि॒व्या दे॑व॒यज॑ने दे॒व॒यज॑ने पृथि॒व्याऽ इडा॑याः। दे॒व॒यज॑न॒ऽ इति॑ दे॒व॒ यज॑ने। पृ॒थि॒व्याऽ इडा॑या॒ऽ इडा॑याः पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्याऽ इडा॑यास्प्प॒दम्प॒दमिडा॑याः पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्याऽ इडा॑यास्प्प॒दम्[1]। इडा॑यास्प्प॒दम्प॒दमिडा॑या॒ऽ इडा॑यास्प्प॒दम॑स्यसि प॒दमिडा॑या॒ऽ इडा॑यास्प्प॒दम॑सि। प॒दम॑स्यसि प॒दम्प॒दम॑सि घृ॒तव॑द् घृ॒तव॑दसि प॒दम्प॒दम॑सि घृ॒तव॑त्। अ॒सि॒ घृ॒तव॑द् घृ॒तव॑दस्यसि घृ॒तव॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ घृ॒तव॑दस्यसि घृ॒तव॒त्स्वाहा॑। घृ॒तव॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ घृ॒तव॑द् घृ॒तव॒त्स्वाहा॑। घृ॒तव॒दिति॑ घृ॒त व्व॑त्। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ अ॒स्म्मे र॑मस्व रमस्वा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे र॑मस्वा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे र॑मस्वा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे र॑मस्वा॒-स्म्मे[2]। अ॒स्म्मेऽ इत्त्य॒स्म्मे। र॒म॒स्वा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे र॑मस्व रमस्वा॒स्म्मे ते॑ ते॒स्म्मे र॑मस्व रमस्वा॒स्म्मे ते॑। अ॒स्म्मे ते॑ ते॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ते॒ बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्त्ते॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ते॒ बन्धु॑ः। अ॒स्म्मेऽ इत्त्य॒स्म्मे। ते॒ बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्त्ते ते॒ बन्धु॒स्त्वे त्वे बन्धु॑स्त्ते ते॒ बन्धु॒स्त्वे। बन्धु॒स्त्वे त्वे बन्धु॒र्ब्बन्धु॒स्त्वे रायो॒ राय॒स्त्वे बन्धु॒र्ब्बन्धु॒स्त्वे राय॑ः। त्वे

1.वा.प्रा.३.२३. के अनुसार इडायाः इस पद का विसर्जनीय सकार होता है।

2.चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) सूत्रोक्त तीनों पद प्रगृह्य होते हैं।

रायो॒ राय॒स्त्वे त्वे रायो॒ मे मे राय॒स्त्वे त्वे रायो॒ मे। त्वेऽ इति॒ त्वे। रायो॒ मे मे रायो॒ रायो॒ मे रायो॒ रायो॒ मे रायो॒ रायो॒ मे राय॑ः। मे रायो॒ रायो॒ मे मे रायो॒ मा मा रायो॒ मे मे रायो॒ मा। मेऽ इति॒ मे[1]। रायो॒ मा मा रायो॒ रायो॒ मा व्व॒यँव्व॒यम्मा रायो॒ रायो॒ मा व्व॒यम्। मा व्व॒यँव्व॒यम्मा मा व्व॒यꣳ रा॒यो रा॒यो व्व॒यम्मा मा व्व॒यꣳ रा॒यः। व्व॒यꣳ रा॒यो रा॒यो व्व॒यँव्व॒यꣳ रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यो व्व॒यँव्व॒यꣳ रा॒यस्प्पोषे॑ण। रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ व्वि वि पोषे॑ण रा॒यो रा॒यस्प्पोषे॑ण॒ व्वि। पोषे॑ण॒ व्वि वि पोषे॑ण॒ पोषे॑ण॒ व्वि यौ॑ष्म्म यौष्म्म॒ व्वि पोषे॑ण॒ पोषे॑ण॒ व्वि यौ॑ष्म्म। व्वि यौ॑ष्म्म यौष्म्म॒ व्वि वि यौ॑ष्म्म॒ तोत॒स्तोतो॑ यौष्म्म॒ व्वि वि यौ॑ष्म्म॒ तोत॑ः। यौ॒ष्म्म॒ तोत॒स्तोतो॑ यौष्म्म यौष्म्म॒ तोतो॒ रायो॒ राय॒स्तोतो॑ यौष्म्म यौष्म्म॒ तोतो॒ राय॑ः। तोतो॒ रायो॒ राय॒स्तोत॒स्तोतो॒ राय॑ः। राय॒ऽ इति॒ राय॑ः॥२२॥

सम॑क्ख्येक्ख्ये॒ सꣳ सम॑क्ख्ये दे॒व्व्या दे॒व्व्याक्ख्ये॒ सꣳ सम॑क्ख्ये दे॒व्व्या। अ॒क्ख्ये॒ दे॒व्व्या दे॒व्व्याक्ख्यै॑क्ख्ये दे॒व्व्या धि॒या धि॒या दे॒व्व्याक्ख्यै॑क्ख्ये दे॒व्व्या धि॒या। दे॒व्व्या धि॒या धि॒या दे॒व्व्या दे॒व्व्या धि॒या सꣳ सन्धि॒या दे॒व्व्या दे॒व्व्या धि॒या सम्। धि॒या सꣳ सन्धि॒या धि॒या सन्दक्क्षि॑णया॒ दक्क्षि॑णया॒ सन्धि॒या धि॒या सन्दक्क्षि॑णया। सन्दक्क्षि॑णया॒ दक्क्षि॑णया॒ सꣳ सन्दक्क्षि॑णयो॒रुच॑क्क्षसो॒रुच॑क्क्षसा॒ दक्क्षि॑णया॒ सꣳ सन्दक्क्षि॑णयो॒रुच॑क्क्षसा। दक्क्षि॑णयो॒रुच॑क्क्षसो॒रुच॑क्क्षसा॒ दक्क्षि॑णया॒ दक्क्षि॑णयो॒रुच॑क्क्षसा। उ॒रुच॑क्क्ष॒सेत्यु॒रु च॑क्क्षसा॥ मा मे॑ मे॒ मा मा म॒ऽ आयु॒रायु॑र्म्मे॒ मा मा म॒ऽ आयु॑ः। म॒ऽ आयु॒रायु॑र्म्मे म॒ऽ आयु॒ः प्प्र प्प्रायु॑र्म्मे म॒ऽ आयु॒ः प्प्र। आयु॒ः प्प्र प्प्रायु॒रायु॒ः प्प्र मो॑षीर्म्मोषी॒ः प्प्रायु॒रायु॒ः प्प्र मो॑षीः। प्र मो॑षीर्म्मोषी॒ः प्प्र प्प्र मो॑षी॒र्म्मो मो मो॑षी॒ः प्प्र प्प्र मो॑षी॒र्म्मो। मो॒षी॒र्म्मो मो मो॑षीर्म्मोषी॒-

[1]प्रगृह्यं स्वरे(वा.प्रा.४.८८) के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। मे उदात्तम् (वा.प्रा.१.९७) इस सूत्र में उदात्त मे पद को प्रगृह्य कहा गया है।

म्र्मो॑ऽ अ॒हम॒हम्मो मो॑षीम्र्मो॑षी॒म्र्मो॑ऽ अ॒हम्[1]। मोऽ अ॒हम॒हम्मो मोऽ अ॒हन्तव॒ तवा॒हम्मो मोऽ अ॒हन्तव॑। मोऽ इति॒ मो। अ॒हन्तव॒ तवा॒हम॒हन्तव॑ ब्वी॒रँब्वी॒रन्तवा॒ह-म॒हन्तव॑ ब्वी॒रम्। तव॑ ब्वी॒रँब्वी॒रन्तव॒ तव॑ ब्वी॒रँब्विं॑देय ब्विं॑देय ब्वी॒रन्तव॒ तव॑ ब्वी॒रँब्विं॑देय। ब्वी॒रँब्विं॑देय ब्विं॑देय ब्वी॒रँब्वी॒रँब्विं॑देय॒ तव॒ तव॑ ब्विं॑देय ब्वी॒रँब्वी॒रँब्विं॑देय॒ तव॑। ब्वि॒दे॒य॒ तव॒ तव॑ ब्विं॑देय ब्विं॑देय॒ तव॑ देवि देवि॒ तव॑ ब्विं॑देय ब्विं॑देय॒ तव॑ देवि। तव॑ देवि देवि॒ तव॒ तव॑ देवि स॒न्दृशिं॑ स॒न्दृशिं॑ देवि॒ तव॒ तव॑ देवि स॒न्दृशिं॑। दे॒वि॒ स॒न्दृशिं॑ स॒न्दृशिं॑ देवि देवि स॒न्दृशिं॑। स॒न्दृशीतिं॑ स॒म् दृशिं॑॥२३॥

ए॒ष तें॑ तऽ ए॒षऽ ए॒ष तें॑ गाय॒त्रो गा॑य॒त्रस्त॑ऽ ए॒षऽ ए॒ष तें॑ गाय॒त्रः। ते॒ गाय॒त्रो गा॑य॒त्रस्तें॑ ते गाय॒त्रो भा॒गो भा॒गो गा॑य॒त्रस्तें॑ ते गाय॒त्रो भा॒गः। गा॒य॒त्रो भा॒गो भा॒गो गा॑य॒त्रो गा॑य॒त्रो भा॒गऽ इतीतिं॑ भा॒गो गा॑य॒त्रो गा॑य॒त्रो भा॒गऽ इतिं॑। भा॒गऽ इतीतिं॑ भा॒गो भा॒गऽ इतिं॑ मे म॒ऽ इतिं॑ भा॒गो भा॒गऽ इतिं॑ मे। इतिं॑ मे म॒ऽ इतीतिं॑ मे॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य म॒ऽ इतीतिं॑ मे॒ सोमा॑य। मे॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य मे मे॒ सोमा॑य ब्रूताद् ब्रूता॒त्सोमा॑य मे मे॒ सोमा॑य ब्रूतात्। सोमा॑य ब्रूताद् ब्रूता॒त्सोमा॑य॒ सोमा॑य ब्रूता॒त्रैष्टुं॑भ॒स्त्रैस्त्तुं॑भो ब्रूता॒त्सोमा॑य॒ सोमा॑य ब्रूता॒त्रैष्टुं॑भः। ब्रूता॒त्रैष्टुं॑भ॒स्त्रै-स्त्तुं॑भो ब्रूताद् ब्रूता॒त्रैष्टुं॑भो॒ जाग॑तो॒ जाग॑त॒स्त्रैस्त्तुं॑भो ब्रूताद् ब्रूता॒त्रैष्टुं॑भो॒ जाग॑तः। त्रैष्टुं॑भो॒ जाग॑तो॒ जाग॑त॒स्त्रैस्त्तुं॑भ॒स्त्रैष्टुं॑भो॒ जाग॑तश्च्छन्दोना॒माना॑ञ्छन्दोना॒माना॒-ञ्जाग॑त॒स्त्रैस्त्तुं॑भ॒स्त्रैष्टुं॑भो॒ जाग॑तश्च्छन्दोना॒माना॑म्। त्रैस्त्तुं॑भ॒ऽ इति॒ त्रैस्त्तुं॑भः[2]। जाग॑तश्च्छन्दोना॒माना॑ञ्छन्दोना॒माना॒ञ्जाग॑तो॒ जाग॑तश्च्छन्दोना॒माना॒ꣳ सा-म्म्रा॑ज्य॒ꣳ साम्म्रा॑ज्यञ्छन्दोना॒माना॒ञ्जाग॑तो॒ जाग॑तश्च्छन्दोना॒माना॒ꣳ साम्म्रा-

---

[1]. मो अहम् यहाँ वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९२. के अनुवर्तन में आये सूत्र ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः(वा.प्रा.१.९४) के अनुसार मो पद में ओकार प्रगृह्यसंज्ञक है।

[2]. तद्धिते चैकाक्षरवृद्धावनिहिते (वा. प्रा. ५.२९) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण नहीं होता है।

ज्ज्यम्[1]। छन्दोनामानाꣳ साम्म्राज्ज्यꣳ साम्म्राज्ज्यञ्छन्दोनामानाञ्छन्दोना-
मानाꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ गच्छ साम्म्राज्ज्यञ्छन्दोनामानाञ्छन्दोनामानाꣳ
साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ। छन्दोनामानामिति छन्दः नामानाम्। साम्म्राज्ज्यङ्गच्छ
गच्छ साम्म्राज्ज्यꣳ साम्म्राज्ज्यङ्गच्छास्म्माकऽ आस्म्माको गच्छ साम्म्राज्ज्यꣳ
साम्म्राज्ज्यङ्गच्छास्म्माकः। साम्म्राज्ज्यमिति साम् राज्ज्यम्। गच्छास्म्माकऽ
आस्म्माको गच्छ गच्छास्म्माकोस्यस्यास्म्माको गच्छ गच्छास्म्माकोसि।
आस्म्माकोस्यस्यास्म्माकऽ आस्म्माकोसि शुक्रः शुक्रोस्यास्म्माकऽ आस्म्मा-
कोसि शुक्रः। असि शुक्रः शुक्रोस्यसि शुक्रस्ते ते शुक्रोस्यसि शुक्रस्ते। शुक्रस्ते
ते शुक्रः शुक्रस्ते ग्ग्रह्यो ग्ग्रह्यस्ते शुक्रः शुक्रस्ते ग्ग्रह्यः। ते ग्ग्रह्यो ग्ग्रह्यस्ते
ते ग्ग्रह्यो व्विचितो व्विचितो ग्ग्रह्यस्ते ते ग्ग्रह्यो व्विचितः। ग्रह्यो व्विचितो व्विचि-
तो ग्ग्रह्यो ग्ग्रह्यो व्विचितस्त्वा त्वा व्विचितो ग्ग्रह्यो ग्ग्रह्यो व्विचितस्त्वा।
व्विचितस्त्वा त्वा व्विचितो व्विचितस्त्वा व्वि वि त्वा व्विचितो व्विचितस्त्वा व्वि।
व्विचितऽ इति वि चितः। त्वा व्वि वि त्वा त्वा व्वि चिन्न्वन्तु चिन्न्वन्तु व्वि त्वा त्वा
व्वि चिन्न्वन्तु। व्वि चिन्न्वन्तु चिन्न्वन्तु व्वि वि चिन्न्वन्तु। चिन्न्वन्त्विति चिन्न्वन्तु॥२४॥

अभि त्त्यन्त्त्यमब्भ्युभि त्त्यन्देवन्देवन्त्त्यमब्भ्युभि त्त्यन्देवम्[2]। त्त्यन्देव-
न्देवन्त्त्यन्त्त्यन्देवꣳ सवितारꣳ सवितारन्देवन्त्त्यन्त्त्यन्देवꣳ सवितारम्। देवꣳ
सवितारꣳ सवितारन्देवन्देवꣳ सवितारमोण्ण्योरोण्ण्योः सवितारन्देवन्देवꣳ
सवितारमोण्ण्योः[3]। सवितारमोण्ण्योरोण्ण्योः सवितारꣳ सवितारमोण्ण्योः
कविक्क्रतुङ्कविक्क्रतुमोण्ण्योः सवितारꣳ सवितारमोण्ण्योः कविक्क्रतुम्। ओण्ण्योः

[1]. प्रकृत्या सम्राड्वाम्राजि(वा.प्रा.४.६) इस सूत्र के अनुसार साम्राज्यम् पद में मकार प्रकृतिभाव से रहता है, अतः सा०राज्यम् ऐसा पाठ नहीं होगा।

[2].वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र ६.२६. के अनुसार अभित्त्यम् यहाँ दो स्पर्श(तकार) होंगे।

[3]. स्येति ण्यत्वं च (वा. प्रा. ४.१५७) इस सूत्र के अनुसार ओण्योः यहां पर एक यकार है।

कविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमोण्ण्योरोण्ण्योः कविक्क्रंतुमर्चाम्म्यर्चांमि कविक्क्रंतुमोण्ण्योरो-
ण्ण्योः कविक्क्रंतुमर्चांमि। कविक्क्रंतुमर्चाम्म्यर्चांमि कविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमर्चांमि
सत्यसंवꣳ सत्यसंवमर्चांमि कविक्क्रंतुङ्कविक्क्रंतुमर्चांमि सत्यसंवम्। कविक्क्रंतुमितिं
कवि क्क्रंतुम्। अर्चांमि सत्यसंवꣳ सत्यसंवमर्चाम्म्यर्चांमि सत्यसंवꣳ रत्नधाꣳ
रत्नधाꣳ सत्यसंवमर्चाम्म्यर्चांमि सत्यसंवꣳ रत्नधाम्। सत्यसंवꣳ रत्नधाꣳ
रत्नधाꣳ सत्यसंवꣳ सत्यसंवꣳ रत्नधामब्भ्यभि रत्नधाꣳ सत्यसंवꣳ सत्यसं-
वꣳ रत्नधामभि। सत्यसंवमितिं सत्य संवम्। रत्नधामब्भ्यभि रत्नधाꣳ रत्न-
धामभि प्प्रियम्प्प्रियमभि रत्नधाꣳ रत्नधामभि प्प्रियम्। रत्नधामितिं रत्न
धाम्। अभि प्प्रियम्प्प्रियमब्भ्यभि प्प्रियम्मतिम्मतिम्प्प्रियमब्भ्यभि प्प्रियम्मतिम्।
प्प्रियम्मतिम्मतिम्प्प्रियम्प्प्रियम्मतिङ्कविङ्कविम्मतिम्प्प्रियम्प्प्रियम्मतिङ्कविम्। मतिङ्क-
विङ्कविम्मतिम्मतिङ्कविम्। कविमितिं कविम्॥ ऊर्द्धा यस्य यस्योर्द्धोर्द्धा यस्या-
मतिंरमतिर्र्यस्योर्द्धोर्द्धा यस्यामतिंः। यस्यामतिंरमतिर्र्यस्य यस्यामतिब्भा भाऽ
अमतिर्र्यस्य यस्यामतिब्भाः। अमतिब्भा भाऽ अमतिंरमतिब्भाऽ अदिंद्युतददिं-
द्युतद् भाऽ अमतिंरमतिब्भाऽ अदिंद्युतत्। भाऽ अदिंद्युतददिंद्युतद् भा भाऽ अदिं-
द्युतत्सवींमनि सवींमन्न्यदिंद्युतद् भा भाऽ अदिंद्युतत्सवींमनि। अदिंद्युतत्सवींमनि
सवींमन्न्यदिंद्युतददिंद्युतत्सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिः सवींमन्न्यदिंद्युत-
ददिंद्युतत्सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिः। सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिः सवीं-
मनि सवींमनि हिरंण्ण्यपाणिरमिमीतामिमीत हिरंण्ण्यपाणिः सवींमनि सवींमनि
हिरंण्ण्यपाणिरमिमीत। हिरंण्ण्यपाणिरमिमीतामिमीत हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपा-
णिरमिमीत सुक्क्रतुंः सुक्क्रतुंरमिमीत हिरंण्ण्यपाणिर्हिरंण्ण्यपाणिरमिमीत सुक्क्रतुंः
। हिरंण्ण्यपाणिरिति हिरंण्ण्य पाणिः। अमिमीत सुक्क्रतुंः सुक्क्रतुंरमिमीतामिमीत

सुक्रतुं÷ कृपा कृपा सुक्रतुंरमिमीतामिमीत सुक्रतुं÷ कृपा। सुक्रतुं÷ कृपा कृपा सुक्रतुं÷ सुक्रतुं÷ कृपा स्वः स्वः कृपा सुक्रतुं÷ सुक्रतुं÷ कृपा स्वं÷। सुक्रतुरितिं सु क्रतुं÷। कृपा स्वः स्वः कृपा कृपा स्वं÷। स्वरिति स्वः÷[1]॥ प्रजाभ्य्यंस्त्वा त्वा प्प्रजाभ्य्यं÷ प्प्रजाभ्य्यंस्त्वा प्प्रजाः प्प्रजास्त्वां प्प्रजाभ्य्यं÷ प्प्रजाभ्य्यंस्त्वा प्प्रजाः। प्रजाभ्यऽ इतिं प्प्र जाभ्य्यं÷। त्वा प्प्रजाः प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजास्त्वां। प्रजास्त्वां त्वा प्प्रजाः प्प्रजास्त्वांनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु त्वा प्प्रजाः प्प्रजास्त्वांनुप्प्राणंन्तु। प्रजाऽ इतिं प्प्र जाः। त्वानुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु त्वा त्वानुप्प्राणंन्तु प्प्रजाः प्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्तु त्वा त्वानुप्प्राणंन्तु प्प्रजाः। अनुप्प्राणंन्तु प्प्रजाः प्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु प्प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजाऽ अंनुप्प्राणंन्त्वनुप्प्राणंन्तु प्प्रजास्त्वम्। अनुप्प्राणन्त्वित्यंनु प्राणंन्तु। प्रजास्त्वन्त्वम्प्रजाः प्प्रजास्त्वमंनुप्प्राणिंह्यनुप्प्राणिंहि त्वम्प्रजाः प्प्रजास्त्वमंनुप्प्राणिंहि। प्रजाऽ इतिं प्प्र जाः। त्वमंनुप्प्राणिंह्यनुप्प्राणिंहि त्वन्त्वमंनुप्प्राणिंहि। अनुप्प्राणिहीत्त्यंनु प्राणिंहि॥२५॥

शुक्रन्त्वां त्वा शुक्रः शुक्रन्त्वां शुक्रेणं शुक्रेणं त्वा शुक्रः शुक्रन्त्वां शुक्रेणं। त्वा शुक्रेणं शुक्रेणं त्वा त्वा शुक्रेणं क्रीणामि क्रीणामि शुक्रेणं त्वा त्वा शुक्रेणं क्रीणामि। शुक्रेणं क्रीणामि क्रीणामि शुक्रेणं शुक्रेणं क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रक्क्रींणामि शुक्रेणं शुक्रेणं क्रीणामि चन्द्रम्। क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रक्क्रींणामि क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रेणं चन्द्रेणं चन्द्रक्क्रींणामि क्रीणामि चन्द्रश्चन्द्रेणं। चन्द्रश्चन्द्रेणं चन्द्रेणं चन्द्रश्चन्द्रश्चन्द्रेणामृतंममृतंश्चन्द्रेणं चन्द्रश्चन्द्रश्चन्द्रेणामृतम्। चन्द्रेणामृतंममृतंश्चन्द्रेणं चन्द्रेणामृतंममृतेंनामृतेंनामृतंश्चन्द्रेणं चन्द्रेणामृतंममृतेंन। अमृतंममृतें-

[1]. स्वः पदमनरणे (वा. प्रा. १.१६६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ स्वः पद रिफित संज्ञक है। अतः स्वरिति स्वः ऐसा स्थितोपस्थित पाठ होगा। रिफितं च संहितायामनिरुक्तम्(वा.प्रा.४.१९)।

नामृतेंनामृतंममृतंममृतेंन। अमृतेनेत्यमृतेंन॥ सुग्मे तें ते सुग्मे सुग्मे ते गोग्गोंस्तें सुग्मे सुग्मे ते गोः[1]। ते गोग्गोंस्तें ते गोरस्म्मेऽ अस्म्मे गोस्तें ते गोरस्म्मे। गोरस्म्मेऽ अस्म्मे गोग्गोंरस्म्मे तें तेस्म्मे गोग्गोंरस्म्मे तें। अस्म्मे तें तेस्म्मेऽ अस्म्मे तें चन्द्राणिं चन्द्राणिं तेस्म्मेऽ अस्म्मे तें चन्द्राणिं। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। ते चन्द्राणिं चन्द्राणिं ते ते चन्द्राणि तपंसुस्तपंसश्चन्द्राणिं ते ते चन्द्राणि तपंसः। चन्द्राणि तपंसुस्तपंसश्चन्द्राणिं चन्द्राणि तपंसस्तनूस्तनूस्त-पंसश्चन्द्राणिं चन्द्राणि तपंसस्तनूः। तपंसस्तनूस्तनूस्तपंसुस्तपंसस्तनूंरस्यसि तनूस्तपंसुस्तपंसस्तनूंरसि। तनूंरस्यसि तनूस्तनूंरसि प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेरसि तनूस्तनूंरसि प्प्रजापंतेः। असि प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेरस्यसि प्प्रजापंतेर्ब्वर्ण्णो ब्वर्ण्णः प्प्रजापंतेरस्यसि प्प्रजापंतेर्ब्वर्ण्णः[2]। प्रजापंतेर्ब्वर्ण्णो ब्वर्ण्णः प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेर्ब्वर्ण्णः परमेणं परमेण ब्वर्ण्णः प्प्रजापंतेः प्प्रजापंतेर्ब्वर्ण्णः परमेणं।[3] प्रजापंतेरितिं प्प्रजा पंतेः। ब्वर्ण्णः परमेणं परमेण ब्वर्ण्णो ब्वर्ण्णः परमेणं पशुनां पशुनां परमेण ब्वर्ण्णो ब्वर्ण्णः परमेणं पशुनां। परमेणं पशुनां पशुनां परमेणं परमेणं पशुनां क्रीयसे क्रीयसे पशुनां परमेणं परमेणं पशुनां क्रीयसे। पशुनां क्रीयसे क्रीयसे पशुनां पशुनां क्रीयसे सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषङ्क्रींयसे पशुनां पशुनां क्रीयसे सहस्रपोषम्। क्रीयसे सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषङ्क्रींयसे क्रीयसे सहस्रपोषम्पुंषेयम्पुषेयꣳ सहस्रपोषङ्क्रींयसे क्रीयसे सहस्रपोषम्पुंषेयम्। सहस्रपो-षम्पुंषेयम्पुषेयꣳ सहस्रपोषꣳ संहस्रपोषम्पुंषेयम्। सहस्रपोषमितिं सहस्र पोषम्। पुषेयमितिं पुषेयम्॥२६॥

---

[1].वा.प्रा.२.५. के अनुसार युष्मदर्थ में होने से यहाँ ते पद अनुदात है।

[2]. असि (वा. प्रा. २.८) इस सूत्र के अनुसार असि पद यहाँ अनुदात है।

[3].प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च(वा.प्रा.३.११) क,ख,प तथा फ बाद में होने पर विसर्जनीय प्रकृतिभाव से रहता है।

मि॒त्रो नो॑ नो मि॒त्रो मि॒त्रो न॒ऽ ए॒ही॒ह्या नो॑ मि॒त्रो मि॒त्रो न॒ऽ एहि॑। न॒ऽ ए॒ही॒ह्या नो॑ न॒ऽ ए॒हि॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रधऽ इ॒ह्या नो॑ न॒ऽ ए॒हि॒ सुमि॑त्रधः। एहि॑। इ॒हि॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रधऽ इहीहि॒ सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रधऽ इहीहि॒ सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्य। सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्यो॒रुमू॒-रुमिन्द्र॑स्य॒ सुमि॑त्रध॒ः सुमि॑त्रध॒ऽ इन्द्र॑स्यो॒रुम्। सुमि॑त्रध॒ऽ इति॒ सु मि॑त्रधः। इन्द्र॑स्यो॒रुमू॒रुमिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्यो॒रुमा वि॑श वि॒शोरुमिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्यो॒रुमा वि॑श। उ॒रु-मा वि॑श वि॒शोरुमू॒रुमा वि॑श॒ दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णँ॒विशोरुमू॒रुमा वि॑श॒ दक्षि॑णम्। आ वि॑श। वि॒श॒ दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णँ॒विश वि॒श॒ दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्दक्षि॑णँ॒विश वि॒श॒ दक्षि॑णमु॒शन्। दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्दक्षि॑ण॒न्दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्त॑मु॒शन्त॑मु॒शन्द-क्षि॑ण॒न्दक्षि॑णमु॒शन्नु॒शन्त॑म्[1]। उ॒शन्नु॒शन्त॑मु॒शन्त॑मु॒शन्नु॒शन्नु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒शन्नु॒शन्नु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः। उ॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒-शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नꣳ स्यो॒नꣳ स्यो॒नऽ उ॒शन्त॑मु॒शन्त॑ꣳ स्यो॒नः स्यो॒नम्। स्यो॒नः स्यो॒नꣳ स्यो॒नꣳ स्यो॒नः स्यो॒नः स्यो॒नम्। स्यो॒नमिति॑ स्यो॒नम्॥ स्वा-न॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राज॒ स्वान॒ स्वान॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ स्वान॒ स्वान॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे[2]। भ्राजाङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॒रेङ्घा॑रे॒ ब्भ्राज॒ ब्भ्राजाङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे। अङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॒रेङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॒ हस्त॒ बम्भा॒रेङ्घा॒रेङ्घा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॑। बम्भा॑रे॒ हस्त॒ हस्त॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ हस्त॒ बम्भा॑रे॒ बम्भा॑रे॒ हस्त॒ सुह॑स्त। हस्त॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ हस्त॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नो॒ कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒ हस्त॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नो। सुह॑स्त॒ कृशा॑नो॒ कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नवे॒तऽ ए॒ते कृशा॑नो॒ सुह॑स्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नवे॒ते। सुह॒स्तेति॒ सु ह॑स्त।

---

[1].उशन् उशन्तम् यहाँ ङ्गो चेद्ध्रस्वपूर्वो स्वरे पदान्तौ(वा.प्रा.४.१०८) इस सूत्र के अनुसार पदान्त नकार का द्वित्व होता है।

[2]. वा. प्रा. २.२१. के अनुसार स्वानं पद से परवर्ती छः पद आद्युदात्त होते हैं।

कृशा॑नवे॒तऽ ए॒ते कृशा॑नो॒ कृशा॑नवे॒ते वो॑ वऽ ए॒ते कृशा॑नो॒ कृशा॑नवे॒ते व॑÷ । कृशा॑-नो॒ऽ इति॒ कृशा॑नो । ए॒ते वो॑ वऽ ए॒तऽ ए॒ते व॑÷ सोम॒क्रय॑णाः सोम॒क्रय॑णा वऽ ए॒तऽ ए॒ते व॑÷ सोम॒क्रय॑णाः । व॒ः सो॒म॒क्रय॑णाः सोम॒क्रय॑णा वो वः सोम॒क्रय॑णा॒स्ताँ-स्तान्त्सो॑म॒क्रय॑णा वो वः सोम॒क्रय॑णा॒स्तान् । सो॒म॒क्रय॑णा॒स्ताँस्तान्त्सो॑म॒क्रय॑-णाः सोम॒क्रय॑णा॒स्तान्र॑क्षस्द्धः रक्षस्द्धु॒न्तान्त्सो॑म॒क्रय॑णाः सोम॒क्रय॑-णा॒स्तान्र॑क्षस्द्धम् । सो॒म॒क्रय॑णा॒ऽ इति॑ सोम॒ क्रय॑णाः । तान्र॑क्षस्द्धः रक्षस्द्धु॒न्ताँ-स्तान्र॑क्षस्द्धु॒म्मा मा र॑क्षस्द्धु॒न्ताँस्तान्र॑क्षस्द्धु॒म्मा । र॒क्ष॒स्द्धु॒म्मा मा र॑क्षस्द्धः रक्ष-स्द्धु॒म्मा वो॑ वो॒ मा र॑क्षस्द्धः रक्षस्द्धु॒म्मा व॑÷ । मा वो॑ वो॒ मा मा वो॑ दभन्दभन्वो॒ मा मा वो॑ दभन् । वो॒ द॒भ॒न्द॒भ॒न्वो॒ वो॒ द॒भ॒न् । द॒भ॒न्निति॑ दभन् ॥२७॥

परि॑ मा मा॒ परि॒ परि॑ माग्ने॒ग्ने मा॒ परि॒ परि॑ माग्ने । मा॒ग्ने॒ग्ने॒ मा॒ मा॒ग्ने॒ दु॒श्च॑रिता॒दुश्च॑रितादग्ने मा माग्ने॒ दुश्च॑रितात् । अ॒ग्ने॒ दुश्च॑रिता॒दुश्च॑रितादग्ने॒ग्ने॒ दुश्च॑रिताद् बाधस्व बाधस्व॒ दुश्च॑रितादग्ने॒ग्ने॒ दुश्च॑रिताद् बाधस्व । दुश्च॑रिताद् बाधस्व बाधस्व॒ दुश्च॑रिता॒दुश्च॑रिताद् बाध॒स्वा मा॒ मा बा॑धस्व॒ दुश्च॑रिता॒दुश्च॑रिताद् बाध॒स्वा मा॑[1] । दुश्च॑रिता॒दिति॒ दुः॑ च॑रितात् । बा॒ध॒स्वा मा॒ मा बा॑धस्व बाध॒स्वा मा॒ सुच॑रिते॒ सुच॑रिते॒ मा बा॑धस्व बाध॒स्वा मा॒ सुच॑रिते । आ मा॑ । मा॒ सुच॑रिते॒ सुच॑रिते मा मा॒ सुच॑रिते भज भज॒ सुच॑रिते मा मा॒ सुच॑रिते भज । सुच॑रिते भज भज॒ सुच॑रिते॒ सुच॑रिते भज । सुच॑रित॒ऽ इति॒ सु च॑रिते । भ॒जेति॑ भज ॥ उदायु॒षायु॒षोदुदायु॑षा स्वा॒युषा॑ स्वा॒युषायु॒षोदुदायु॑षा स्वा॒युषा॑ । आयु॑षा स्वा॒युषा॑ स्वा॒युषायु॒षायु॑षा स्वा॒युषोदुत्स्वा॒युषायु॒षायु॑षा स्वा॒युषोत् । स्वा॒युषोदुत्स्वा॒युषा॑ स्वा॒युषोद॑स्त्थामस्त्था॒मुत्स्वा॒युषा॑ स्वा॒युषोद॑स्त्थाम् । स्वा॒युषेति॑ सु आ॒युषा॑ । उद॑स्त्थामस्त्था॒मुदुद॑स्त्थाम॒मृता॑न॒मृता॑नस्त्था॒मुदुद॑स्त्थाम॒मृता॑न् । अ॒स्त्था॒म॒मृ-

[1]. बा॒धस्व॒ आ यहाँ वा.प्रा.४.१३४. के अनुसार उदात वाला एकीभाव उदात होता है ।

तांनमृतांनस्त्थामस्त्थाममृतारँ॥ऽ अन्वन्वमृतांनस्त्थामस्त्थाममृतारँ॥ऽ अनुं।
अमृतारँ॥ऽ अन्वन्वमृतांनमृतारँ॥ऽ अनुं[1]। अन्वित्यनुं॥२८॥

प्रति पन्थाम्पन्थाम्प्रति प्प्रति पन्थांमपद्मह्यपद्महि पन्थाम्प्रति प्प्रति पन्थांमपद्महि। पन्थांमपद्मह्यपद्महि पन्थाम्पन्थांमपद्महि स्वस्तिगाꣳ स्वंस्तिगामंपद्महि पन्थाम्पन्थांमपद्महि स्वस्तिगाम्। अपद्महि स्वस्तिगाꣳ स्वंस्तिगामंपद्मह्यपद्महि स्वस्तिगामंनेहसंमनेहसꣳ स्वस्तिगामंपद्मह्यपद्महि स्वस्तिगामंनेहसंम्। स्वस्तिगामंनेहसंमनेहसꣳ स्वस्तिगाꣳ स्वंस्तिगामंनेहसंम्। स्वस्तिगामितिं स्वस्ति गाम्। अनेहसमित्यंनेहसंम्॥ येन विश्श्वा विश्श्वा येन येन विश्श्वाः परि परि विश्श्वा येन येन विश्श्वाः परिं। विश्श्वाः परि परि विश्श्वा विश्श्वाः परि द्विषो द्विषः परि विश्श्वा विश्श्वाः परि द्विषंः। परि द्विषो द्विषः परि परि द्विषों वृणक्किं वृणक्कि द्विषः परि परि द्विषों वृणक्किं। द्विषों वृणक्किं वृणक्कि द्विषो द्विषों वृणक्किं विन्दतें विन्दतें वृणक्कि द्विषो द्विषों वृणक्किं विन्दतें। वृणक्किं विन्दतें विन्दतें वृणक्किं वृणक्किं विन्दते वसु वसुं विन्दतें वृणक्किं वृणक्किं विन्दते वसुं। विन्दते वसु वसुं विन्दतें विन्दते वसुं। वस्विति वसुं[2]॥२९॥

अदिंत्यास्त्वक्क्वगदिंत्याऽ अदिंत्यास्त्वगंस्यसि त्वगदिंत्याऽ अदिंत्यास्त्वगंसि। त्वगंस्यसि त्वक्क्वगस्यदिंत्याऽ अदिंत्याऽ असि त्वक्क्वगस्यदिंत्यै। अस्यदिंत्याऽ अदिंत्याऽ अस्यस्यदिंत्यै सदः सदोदिंत्याऽ अस्यस्यदिंत्यै सदंः। अदिंत्यै सदः सदोदिंत्याऽ अदिंत्यै सदऽ आ सींद सीदा सदोदिंत्याऽ अदिंत्यै सदऽ आ सींद। सदऽ आ सींद सीदा सदः सदऽ आ सींद। आ सींद। सीदेतिं सीद॥ अस्तंभ्नाद्यान्द्यामस्तंभ्नादस्तंभ्नाद्याँवृषभो वृषभो द्यामस्तंभ्नादस्तंभ्ना-

---

[1]. यथा सौराष्ट्रिका नारी अराँऽ इत्यभिभाषते। एवं रङ्गः प्रयोक्तव्यो ङकारेण विवर्जितः॥ -या. शि. १९०.

[2]. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ होता है।

द्याँवृ॑ष॒भः। द्याँवृ॑ष॒भो वृ॑ष॒भो द्यान्द्याँवृ॑ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवृष॒भो द्यान्द्याँ-वृ॑ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम्। वृ॒ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षँवृष॒भो वृ॑ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒-मर्मि॑मी॒तामि॑मीता॒न्तरि॑क्षँवृष॒भो वृ॑ष॒भोऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत। अ॒न्तरि॑क्ष॒म-मि॑मी॒तामि॑मीता॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत व॒रि॒माण॑ँव॒रि॒माण॒ममि॑मीता॒न्तरि-क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत व॒रि॒माण॑म्। अमि॑मीत व॒रि॒माण॑ँव॒रि॒माण॒ममि॑मी॒ता-मि॑मीत व॒रि॒माण॑म्पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या व॑रि॒माण॒ममि॑मी॒तामि॑मीत व॒रि॒माण॑म्पृथि॒-व्याः। व॒रि॒माण॑म्पृथि॒व्याः पृ॑थि॒व्या व॑रि॒माण॑ँव॒रि॒माण॑म्पृथि॒व्याः। पृ॒थि॒व्याऽ इति॑ पृथि॒व्याः॥ आसी॑ददसीद॒दासी॑द्॒विश्वा॒ विश्वा॑सीद॒दासी॑द्॒विश्वा॑[1]। अ॒सी॒द्॒विश्वा॒ विश्वा॑सीददसीद्॒विश्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑सीददसीद्॒विश्वा॒ भुव॑नानि । विश्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्म्राट् स॒म्म्राड् भुव॑नानि॒ विश्वा॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्म्राट्। भुव॑नानि स॒म्म्राट् स॒म्म्राड् भुव॑नानि॒ भुव॑नानि स॒म्म्राड्विश्वा॒ विश्वा॑ स॒म्म्राड् भुव॑नानि॒ भुव॑नानि स॒म्म्राड्विश्वा॑। स॒म्म्राड्विश्वा॒ विश्वा॑ स॒म्म्राट् स॒म्म्राड्विश्वेदिद्विश्वा॑ स॒म्म्राट् स॒म्म्राड्विश्वेत्। स॒म्म्राडिति॑ स॒म् राट्। विश्वेदिद्विश्वा॒ विश्वेत्तानि॒ तानीद्विश्वा॒ विश्वेत्तानि॑। इत्तानि॒ तानीदित्तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ तानीदित्तानि॒ वरु॑णस्य। तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य॒ तानि॒ तानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॒ वरु॑णस्य॒ तानि॒ तानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑। वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॒ वरु॑णस्य॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑। व्र॒तानीति॑ व्र॒तानि॑॥३०॥

वने॑षु॒ वि वि वने॑षु॒ वने॑षु॒ व्य॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ँवि वने॑षु॒ वने॑षु॒ व्य॒न्तरि-क्षम्[2]। व्य॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ँवि व्य॒न्तरि॑क्षन्ततान ततान॒न्तरि॑क्ष॒ँवि

[1].वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद ऊष्मान्त नहीं है।

[2].वि अन्तरिक्षम् यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से इकार का अन्तस्थ निर्दिष्ट है। विकारी यथासन्नम्(वा.प्रा.१.१४२) यह सूत्र विकारी इ उच्चारणस्थान की दृष्टि से समीपवर्ती वर्ण को प्राप्त करता है, कहता है। तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य(वा.प्रा.१.१३४) यह सूत्र सप्तमी के द्वारा निर्दिष्ट होने पर विधीयमान कार्य वर्णान्तराव्यवहित पूर्व को कहता है।

द्यन्तरिक्षन्ततान। अन्तरिक्षन्ततान ततानान्तरिक्षमन्तरिक्षन्ततान् व्वाजँव्वाजन्ततानान्तरिक्षमन्तरिक्षन्ततान् व्वाजम्। ततान् व्वाजँव्वाजन्ततान ततान् व्वाजमर्व्वत्स्वर्व्वत्सु व्वाजन्ततान ततान् व्वाजमर्व्वत्सु। व्वाजमर्व्वत्स्वर्व्वत्सु व्वाजँव्वाजमर्व्वत्सु पयः पयोर्व्वत्सु व्वाजँव्वाजमर्व्वत्सु पयः। अर्व्वत्सु पयः पयोर्व्वत्स्वर्व्वत्सु पयऽ उस्रियासूस्रियासु पयोर्व्वत्स्वर्व्वत्सु पयऽ उस्रियासु। अर्व्वत्स्विवत्यर्व्वत् सु। पयऽ उस्रियासूस्रियासु पयः पयऽ उस्रियासु। उस्रियास्वित्युस्रियासु ॥ हृत्सु क्रतुङ्क्रतुꣳ हृत्सु हृत्सु क्रतुँव्वरुणो व्वरुणः क्रतुꣳ हृत्सु हृत्सु क्रतुँव्वरुणः। हृत्स्विवति हृत् सु[1]। क्रतुँव्वरुणो व्वरुणः क्रतुङ्क्रतुँव्वरुणो व्विक्षु व्विक्षु व्वरुणः क्रतुङ्क्रतुँव्वरुणो व्विक्षु। व्वरुणो व्विक्षु व्विक्षु व्वरुणो व्वरुणो व्विक्ष्वग्निमग्निँव्विक्षु व्वरुणो व्वरुणो व्विक्ष्वग्निम्। व्विक्ष्वग्निमग्निँव्विक्षु व्विक्ष्वग्निन्दिवि दिव्यग्निँव्विक्षु व्विक्ष्वग्निन्दिवि। अग्निन्दिवि दिव्यग्निमग्निन्दिवि सूर्य्यꣳ सूर्य्यन्दिव्यग्निमग्निन्दिवि सूर्य्यम्। दिवि सूर्य्यꣳ सूर्य्यन्दिवि दिवि सूर्य्यमदधाददधात्सूर्य्यन्दिवि दिवि सूर्य्यमदधात्। सूर्य्यमदधाददधात्सूर्य्यꣳ सूर्य्यमदधात्सोमꣳ सोममदधात्सूर्य्यꣳ सूर्य्यमदधात्सोमम्। अदधात्सोमꣳ सोममदधाददधात्सोममद्द्रावद्द्रौ सोममदधाददधात्सोममद्द्रौ। सोममद्द्रावद्द्रौ सोमꣳ सोममद्द्रौ। अद्द्रावित्यद्द्रौ ॥३१॥

सूर्य्यस्य चक्षुश्चक्षुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य चक्षुरा रोह रोहा चक्षुः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य चक्षुरा रोह। चक्षुरा रोह रोहा चक्षुश्चक्षुरा रोहाग्नेरग्ने रोहा चक्षुश्चक्षुरा रोहाग्नेः। आ रोह। रोहाग्नेरग्ने रोह रोहाग्नेरक्ष्णोक्ष्णोग्ने

पदान्तपदाद्योः सन्धिः(वा.प्रा.३.३) से सन्धिकार्य पदान्त तथा पदादि में होना कहा गया है। उदात्तस्यान्तस्थीभावे स्वरितं परमनुदात्तम्(वा.प्रा.४.४९) इस सूत्र से परवर्ती अनुदात्त का स्वरित स्वर कहा गया है। युवर्णौ यवौ क्षैप्रः(वा.प्रा) इस सूत्र से क्षैप्रसंज्ञक स्वरित का विधान किया गया है।

[1]. स्विति चानतौ (वा. प्रा. ५.१४) इस सूत्र के अनुसार हृत्सु पद में पृथक्करण हुआ है।

रोह रोहाग्ग्नेरक्ष्णः[1]। अग्ग्नेरक्ष्णोक्ष्णोग्ग्नेरग्ग्नेरक्ष्णः कनीनकङ्कनीनकमक्ष्णोग्ग्नेरग्ग्नेरक्ष्णः कनीनकम्। अक्ष्णः कनीनकङ्कनीनकमक्ष्णोक्ष्णः कनीनकम्। कनीनकमिति कनीनकम्॥ यत्रैतशेभिरेतशेभिर्य्यत्र यत्रैतशेभिरीयसऽ ईयसऽ एतशेभिर्य्यत्र यत्रैतशेभिरीयसे। एतशेभिरीयसऽ ईयसऽ एतशेभिरेतशेभिरीयसे ब्भ्राजमानो ब्भ्राजमानऽ ईयसऽ एतशेभिरेतशेभिरीयसे ब्भ्राजमानः। ईयसे ब्भ्राजमानो ब्भ्राजमानऽ ईयसऽ ईयसे ब्भ्राजमानो व्विपश्चिता व्विपश्चिता ब्भ्राजमानऽ ईयसऽ ईयसे ब्भ्राजमानो व्विपश्चिता। भ्राजमानो व्विपश्चिता व्विपश्चिता ब्भ्राजमानो ब्भ्राजमानो व्विपश्चिता। व्विपश्चितेति विपः चिता॥३२॥

उस्स्रावेतमितमोस्स्राऽ उस्स्रावेतन्धूर्षाहौ धूःसहावितमोस्स्राऽ उस्स्रावेतन्धूर्षाहौ[2]। एतम्। इतन्धूर्षाहौ धूःसहावितमितन्धूर्षाहौ युज्ज्येथाँय्युज्ज्येथान्धूःसहावितमितन्धूर्षाहौ युज्ज्येथाम्। धूर्षाहौ युज्ज्येथाँय्युज्ज्येथान्धूःसहौ धूर्षाहौ युज्ज्येथामनश्श्रूऽ अनश्श्रू युज्ज्येथान्धूःसहौ धूर्षाहौ युज्ज्येथामनश्श्रू। धूःसहाविति धूः सहौ। युज्ज्येथामनश्श्रूऽ अनश्श्रू युज्ज्येथाँय्युज्ज्येथामनश्श्रूऽ अवीरहणाववीरहनावनश्श्रू युज्ज्येथाँय्युज्ज्येथामनश्श्रूऽ अवीरहणौ। अनश्श्रूऽ अवीरहणाववीरहनावनश्श्रूऽ अनश्श्रूऽ अवीरहणौ ब्ब्रह्मचोदनौ ब्ब्रह्मचोदनाववीरहनावनश्श्रूऽ अनश्श्रूऽ अवीरहणौ ब्ब्रह्मचोदनौ। अनश्श्रूऽ इत्यनश्श्रू। अवीरहणौ ब्ब्रह्मचोदनौ ब्ब्रह्मचोदनाववीरहनाववीरहणौ ब्ब्रह्मचोदनौ। अवीरहनावित्यवीर हनौ। ब्ब्रह्मचोदनाविति ब्ब्रह्म चोदनौ॥ स्वस्ति यजमानस्य यजमानस्य स्वस्ति स्वस्ति यजमानस्य गृहान्गृहान्यजमानस्य स्वस्ति स्वस्ति यजमानस्य गृहान्। यजमानस्य गृहान्गृ-

---

1. अक्ष्णः यहाँ यैस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५) इस सूत्र से ककार की द्विरुक्ति तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) इस सूत्र से णकार की द्विरुक्ति का अभाव होगा।

2. स्वर्धूः सांसहयोः (वा. प्रा. ३.४१) इस सूत्र के अनुसार धूः सहौ यहाँ धूः का विसर्जनीय रेफ एवं परवर्ती सकार षकार हो गया है। वा.प्रा.३.१२२. के अनुसार धूः से परे सह का अकार दीर्घ होता है।

हान्यजमानस्य यजमानस्य गृहान्गच्छतङ्गच्छतङ्गृहान्यजमानस्य यजमानस्य गृहान्गच्छतम्[1]। गृहान्गच्छतङ्गच्छतङ्गृहान्गृहान्गच्छतम्। गच्छतमिति गच्छतम्॥२३॥

भद्रो मे मे भद्रो भद्रो मेस्यसि मे भद्रो भद्रो मेसि। मेस्यसि मे मेसि प्र प्रासि मे मेसि प्र। असि प्र प्रास्यसि प्र च्यवस्व च्यवस्व प्रास्यसि प्र च्यवस्व। प्र च्यवस्व च्यवस्व प्र प्र च्यवस्व भुवो भुवश्च्यवस्व प्र प्र च्यवस्व भुवः। च्यवस्व भुवो भुवश्च्यवस्व च्यवस्व भुवस्पते पते भुवश्च्यवस्व च्यवस्व भुवस्पते। भुवस्पते पते भुवो भुवस्पते विश्वानि विश्वानि पते भुवो भुवस्पते विश्वानि। पते विश्वानि विश्वानि पते पते विश्वान्यभ्यभि विश्वानि पते पते विश्वान्यभि। विश्वान्यभ्यभि विश्वानि विश्वान्यभि धामानि धामान्यभि विश्वानि विश्वान्यभि धामाभि। अभि धामानि धामान्यभ्यभि धामानि। धामानीति धामानि॥ मा त्वा त्वा मा मा त्वा परिपरिणः परिपरिणस्त्वा मा मा त्वा परिपरिणः। त्वा परिपरिणः परिपरिणस्त्वा त्वा परिपरिणो विदन्विद-न्परिपरिणस्त्वा त्वा परिपरिणो विदन्। परिपरिणो विदन्विदन्परिपरिणः परिपरिणो विदन्परिपन्थिनः परिपन्थिनो विदन्परिपरिणः परिपरिणो विदन्प-रिपन्थिनः । परिपरिणऽ इति परि परिणः। विदन्परिपन्थिनः परिपन्थिनो विदन्विदन्परिपन्थिनो वृका वृकाः परिपन्थिनो विदन्विदन्परिपन्थिनो वृकाः। परिपन्थिनो वृका वृकाः परिपन्थिनः परिपन्थिनो वृकाऽ अघायवोघयवो वृकाः परिपन्थिनः परिपन्थिनो वृकाऽ अघायवः। परिपन्थिनऽ इति परि पन्थिनः॥ वृकाऽ अघायवोघयवो वृका वृकाऽ अघायवः। अघयवऽ इत्यघ यवः॥ श्येनो

[1].वा.मा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने पर स्वर चकार से व्यवहित होता है।

भूत्वा भूत्वा श्श्येनः श्येनो भूत्वा परा परा भूत्वा श्श्येनः श्येनो भूत्वा परा[1]।
भूत्वा परा परा भूत्वा भूत्वा परा पत पत परा भूत्वा भूत्वा परा पत। परा पत पत परा परा पत यजमानस्य यजमानस्य पत परा परा पत यजमानस्य। पत यजमानस्य यजमानस्य पत पत यजमानस्य गृहान्गृहान्यजमानस्य पत पत यजमानस्य गृहान्। यजमानस्य गृहान्गृहान्यजमानस्य यजमानस्य गृहान्गच्छ गच्छ गृहान्यजमानस्य यजमानस्य गृहान्गच्छ। गृहान्गच्छ गच्छ गृहान्गृहान्गच्छ ततद् गच्छ गृहान्गृहान्गच्छ तत्। गच्छ ततद् गच्छ गच्छ तन्नौ नौ तद् गच्छ गच्छ तन्नौ। तन्नौ नौ ततन्नौ सँस्कृतꣳ सँस्कृतन्नौ ततन्नौ सँस्कृतम्। नौ सँस्कृतꣳ सँस्कृतन्नौ नौ सँस्कृतम्। सँस्कृतमिति सँस्कृतम्[2] ॥३४॥

नमो मित्रस्य मित्रस्य नमो नमो मित्रस्य व्वरुणस्य व्वरुणस्य मित्रस्य नमो नमो मित्रस्य व्वरुणस्य। मित्रस्य व्वरुणस्य व्वरुणस्य मित्रस्य मित्रस्य व्वरुणस्य चक्क्षसे चक्क्षसे व्वरुणस्य मित्रस्य मित्रस्य व्वरुणस्य चक्क्षसे। व्वरुणस्य चक्क्षसे चक्क्षसे व्वरुणस्य व्वरुणस्य चक्क्षसे महो महश्चक्क्षसे व्वरुणस्य व्वरुणस्य चक्क्षसे महः। चक्क्षसे महो महश्चक्क्षसे चक्क्षसे महो देवाय देवाय महश्चक्क्षसे चक्क्षसे महो देवाय। महो देवाय देवाय महो महो देवाय ततद्देवाय महो महो देवाय तत्। देवाय ततद्देवाय देवाय तद्दृतमृतन्तद्देवाय देवाय तद्दृतम्। तद्दृतमृतन्ततद्दृतꣳ सपर्य्यत सपर्य्यतऽ ऋतन्ततद्दृतꣳ सपर्य्यत। ऋतꣳ सपर्य्यत सपर्य्यतऽ ऋतमृतꣳ सपर्य्यत। सपर्य्यतेति सपर्य्यत॥ दूरेदृशे देवजाताय देवजाता-

---

[1]. वा. प्रा. ४.१५५. के अनुसार श्येनः पद में एक यकार है।

[2].वा.प्रा.५.४३. के अनुसार सँस्कृतम् पद में उपधाभूत स्वर के अनुनासिक होने से इसका पृथक्करण नहीं होता है। वा.प्रा.५.४४. में काण्वों के मत का उल्लेख करते हुये अनुस्वार का आगम होने से इस पद में पृथक्करण नहीं माना गया है।

य दू॒रे॒दृशे॑ दू॒रे॒दृशे॑ दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑ के॒तवे॑ दे॒वजा॑ताय दू॒रे॒दृशे॑ दू॒रे॒दृशे॑ दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑। दू॒रे॒दृश॒ऽ इति॑ दू॒रे॒ दृशे॑। दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑ के॒तवे॑ दे॒वजा॑ताय दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑ दि॒वो दि॒वः॒ के॒तवे॑ दे॒वजा॑ताय दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑ दि॒वः॒। दे॒वजा॑ता॒येति॑ दे॒व जा॑ताय। के॒तवे॑ दि॒वो दि॒वः॒ के॒तवे॑ के॒तवे॑ दि॒वस्प्पु॒त्राय॑ पु॒त्राय॑ दि॒वः॒ के॒तवे॑ के॒तवे॑ दि॒वस्प्पु॒त्राय॑[1]। दि॒वस्प्पु॒त्राय॑ पु॒त्राय॑ दि॒वो दि॒वस्प्पु॒त्राय॒ सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य पु॒त्राय॑ दि॒वो दि॒वस्प्पु॒त्राय॒ सूर्य्या॑य। पु॒त्राय॒ सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य पु॒त्राय॑ पु॒त्राय॒ सूर्य्या॑य शꣳसत शꣳसत॒ सूर्य्या॑य पु॒त्राय॑ पु॒त्राय॒ सूर्य्या॑य शꣳसत। सूर्य्या॑य शꣳसत शꣳसत॒ सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य शꣳसत। श॒ꣳस॒तेति॑ शꣳसत॥३५॥

व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमु॒त्तम्भ॑नँ॒व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमस्यस्यु॒त्तम्भ॑नँ॒-व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि[2]। उ॒त्तम्भ॑नमस्यस्यु॒त्तम्भ॑नमु॒त्तम्भ॑नमसि स्कम्भ॒सर्ज्जनी स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीऽ अस्यु॒त्तम्भ॑नमु॒त्तम्भ॑नमसि स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी। अ॒सि॒ स्क॒म्भ॒सर्ज्ज॑नी स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीऽ अस्यसि स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्त्थ स्त्थ स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नीऽ अस्यसि स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्त्थः। स्क॒म्भ॒सर्ज्ज॑नी स्त्थ स्त्थ स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्त्थऽ ऋत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑नी स्त्थ स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्कम्भ॒सर्ज्ज॑नी स्त्थऽ ऋत॒सद॑नी। स्क॒म्भ॒सर्ज्ज॑नी॒ऽ इति॑ स्कम्भ॒ सर्ज्ज॑नी। स्थ॒ऽ ऋ॒त॒सद॑न्न्यृत॒सद॑नी स्त्थ स्त्थऽ ऋत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑नमृत॒सद॑नमृत॒सद॑नी स्त्थ स्त्थऽ ऋत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑नम्। ऋ॒त॒सद॑न्न्यृत॒सद॑नमृत॒सद॑नमृत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑न॒मा सी॑द सी॒दऽ ऋ॑त॒सद॑नमृत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑न्न्यृत॒सद॑न॒ सी॑द। ऋ॒त॒स॒दनी॒त्यृ॑त॒ सद॑नी। ऋ॒त॒

[1].वा.मा.३.२४. के अनुसार यहाँ दिवः का विसर्जनीय सकार हो गया है।

[2]. वा. मा. ५.३८. के अनुसार उत्तम्भनम् पद का पृथक्करण नहीं होता है एवं वा. मा. ६.२९. के अनुसार इस पद में तीन स्पर्श (त) होते हैं।

सद॑नुमा सी॑द सी॒दऽ ऋ॒तुसद॑नमृतुसद॑नुमा सी॑द। ऋ॒तुसद॑नु॒मित्य़ृ॒तु सद॑नम्। आ सी॑द। सी॒देति॑ सीद॥३६॥

या तें ते॒ या या ते॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ते॒ या या ते॒ धामा॑नि। ते॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ते ते॒ धामा॑नि ह॒विषा॑ ह॒विषा॒ धामा॑नि ते ते॒ धामा॑नि ह॒विषा॑। धामा॑नि ह॒विषा॑ ह॒विषा॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ यज॑न्ति ह॒विषा॒ धामा॑नि॒ धामा॑नि ह॒विषा॒ यज॑न्ति। ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ यज॑न्ति ह॒विषा॑ ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ ता ता यज॑न्ति ह॒विषा॑ ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ ता। यज॑न्ति॒ ता ता यज॑न्ति॒ यज॑न्ति॒ ता तें ते॒ ता यज॑न्ति॒ यज॑न्ति॒ ता तें[1]। ता तें ते॒ ता ता ते॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ ते॒ ता ता ते॒ व्विश्वा॑। ते॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ ते ते॒ व्विश्वा॑ परि॒भूः प॑रि॒भूर्व्विश्वा॑ ते ते॒ व्विश्वा॑ परि॒भूः। व्विश्वा॑ परि॒भूः प॑रि॒भूर्व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ परि॒भूर॑स्त्वस्तु परि॒भूर्व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ परि॒भूर॑स्तु। प॒रि॒भूर॑स्त्वस्तु परि॒भूः प॑रि॒भूर॑स्तु य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम॑स्तु परि॒भूः प॑रि॒भूर॑स्तु य॒ज्ञम्। प॒रि॒भूरिति॑ परि॒ भूः। अ॒स्तु॒ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम॑स्त्वस्तु य॒ज्ञम्। य॒ज्ञमिति॑ यज्ञम्॥ ग॒य॒स्फान॑ः प्प्र॒तर॑णः प्प्र॒तर॑णो गय॒स्फानो॑ गय॒स्फान॑ः प्प्र॒तर॑णः सु॒वीर॑ः सु॒वीर॑ः प्प्र॒तर॑णो गय॒स्फानो॑ गय॒स्फान॑ः प्प्र॒तर॑णः सु॒वीर॑ः। ग॒य॒स्फान॒ऽ इति॑ गय॒ स्फान॑ः। प्र॒तर॑णः सु॒वीर॑ः सु॒वीर॑ः प्प्र॒तर॑णः प्प्र॒तर॑णः सु॒वीरो॒वीर॑हावी॑रहा सु॒वीर॑ः प्प्र॒तर॑णः प्प्र॒तर॑णः सु॒वीरो॒वीर॑हा। प्र॒तर॑ण॒ऽ इति॑ प्प्र॒ तर॑णः। सु॒वीरो॒वीर॑हावी॑रहा सु॒वीर॑ः सु॒वीरो॒वीर॑ह॒ प्प्र प्प्रावी॑रहा सु॒वीर॑ः सु॒वीरो॒वीर॑ह॒ प्प्र। सु॒वीर॒ऽ इति॑ सु व्वीर॑ः। अवी॑रह॒ प्प्र प्प्रावी॑र॒हावी॑रह॒ प्प्र च॑र चर॒ प्प्रावी॑र॒हावी॑रह॒ प्प्र च॑र। अवी॑र॒हेत्यवी॑र हा। प्र च॑र चर॒ प्प्र प्प्र च॑रा सोम सोम चर॒ प्प्र प्प्र च॑रा सोम[2]। च॒रा॒ सो॒म॒ सो॒म॒ च॒र॒ च॒रा॒ सो॒म॒ दु॒र्य्या॒न्दु॒र्य्यान्त्सोम

[1]. वा. प्रा. ४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

[2].वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार चर सोम यहां ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर चरा सोम होता है।

चर चरा सोम॒ दुर्व्वीन्। सो॒म॒ दुर्व्वा॒न्दुर्व्वीन्त्सोम सोम॒ दुर्व्वीन्। दुर्व्वा॒निति॒ दुर्व्वीन्॥३७॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे चतुर्थोध्यायः॥

॥पञ्चमोध्यायः॥

हरि॑ः ॐ॥ अ॒ग्नेस्त॒नूस्त॒नूर॒ग्नेर॒ग्नेस्त॒नूर॑स्यसि त॒नूर॒ग्नेर॒ग्नेस्त॒नूर॑सि। त॒नूर॑स्यसि त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वेसि त॒नूस्त॒नूर॑सि॒ व्विष्ण॑वे। अ॒सि॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वेस्यसि॒ व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वेस्यसि॒ व्विष्ण॑वे त्वा। व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वा॒ सोम॑स्य । त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा त्वा॒ सोम॒स्याति॑थे॒रति॑थेः सोम॑स्य त्वा त्वा॒ सोम॒स्याति॑थेः। सोम॒स्याति॑थे॒रति॑थेः सोम॑स्य॒ सोम॒स्याति॑थेरा-ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यमति॑थेः सोम॑स्य॒ सोम॒स्याति॑थेराति॒त्थ्यम्। अति॑थेराति॒त्थ्य-मा॑ति॒त्थ्यमति॑थे॒रति॑थेराति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमति॑थे॒रति॑थेराति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑[1]। आ॒ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाया॑ति॒त्थ्यमा॑ति॒त्थ्यꣳ श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑। श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ श्श्ये॒नाय॑ श्श्ये॒नाय॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑। सो॒म॒भृते॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे रा॑यस्प्पो-ष॒दे॒ग्ग्नये॑ सोम॒भृते॑ सोम॒भृते॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे। सो॒म॒भृत॒ऽ इति॑ सोम॒ भृते॑। अ॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे रा॑यस्प्पोष॒दे॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ रायस्प्पोष॒दे। रा॒य॒स्प्पो॒ष॒दऽ इति॑ रायस्प्पोष॒ दे॥१॥

अ॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑म॒ग्नेर॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑मस्यसि ज॒नित्र॑म॒ग्नेर॒ग्नेर्ज्ज॒नित्र॑मसि। ज॒नित्र॑मस्यसि ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑मसि॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णावसि ज॒नित्र॑ञ्ज॒नित्र॑मसि॒ व्वृष॑णौ। अ॒सि॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णावस्यसि॒ व्वृष॑णौ स्त्थ स्त्थो॒ व्वृष॑णावस्यसि॒ व्वृष॑णौ स्त्थः। व्वृष॑णौ स्त्थ स्त्थो॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णौ स्त्थऽ उ॒र्व्वश्श्यु॒र्व्वशी॑ स्त्थो॒ व्वृष॑णौ॒ व्वृष॑णौ स्त्थऽ उ॒र्व्वशी॑।

[1]. आतित्थ्यꣳ श्येनाय यहाँ (वा.प्रा.४.१०१) से शकार की द्विरुक्ति नहीं होती है वा.प्रा. ८.२१. में अनुसार व्यञ्जनों में परिगणित होने से स्वर के वाद शकार नहीं आ रहा है अतः द्विरुक्ति नहीं होगी।

स्थऽ उर्व्वश्श्युर्व्वशीं स्त्थ स्त्थऽ उर्व्वश्श्यायुरायुरुर्व्वशीं स्त्थ स्त्थऽ उर्व्वश्श्यायुः[1]। उर्व्वश्श्यायुरायुरुर्व्वश्श्युर्व्वश्श्यायुः पुरूरवा॑ः पुरूरवा॑ऽ आयुरुर्व्वश्श्युर्व्वश्श्यायुः पुरूरवा॑ः। आयुः पुरूरवा॑ः पुरूरवा॑ऽ आयुरायुः पुरूरवा॑ मन्थामि मन्थामि पुरूरवा॑ऽ आयुरायुः पुरूरवा॑ मन्थामि। पुरूरवा॑ मन्थामि मन्थामि पुरूरवा॑ः पुरूरवा॑ मन्थामि॥ मन्थामीति॑ मन्थामि॥२॥

भव॑तन्नो नो भव॑तम्भव॑तन्नः सम॑नसौ सम॑नसौ नो भव॑तम्भव॑तन्नः सम॑नसौ[2]। नः सम॑नसौ सम॑नसौ नो नः सम॑नसौ सचे॑तसौ सचे॑तसौ सम॑नसौ नो नः सम॑नसौ सचे॑तसौ। सम॑नसौ सचे॑तसौ सचे॑तसौ सम॑नसौ सम॑नसौ सचे॑तसावरेपसा॑वरेपसौ सचे॑तसौ सम॑नसौ सम॑नसौ सचे॑तसावरेपसौ॑। सम॑नसाविति स म॑नसौ। सचे॑तसावरेपसा॑वरेपसौ सचे॑तसौ सचे॑तसावरेपसौ॑। सचे॑तसाविति स चे॑तसौ। अरेपसावित्य॑रेपसौ॑॥ मा यज्ञँय्यज्ञम्मा मा यज्ञꣳ हिं॑ꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टँय्यज्ञम्मा मा यज्ञꣳ हिं॑ꣳसिष्टम्। यज्ञꣳ हिं॑ꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टँय्यज्ञँय्यज्ञꣳ हिं॑ꣳसिष्टम्मा मा हिं॑ꣳसिष्टँय्यज्ञँय्यज्ञꣳ हिं॑ꣳसिष्टम्मा। हिꣳसिष्टम्मा मा हिं॑ꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टम्मा यज्ञप॑तिँय्यज्ञप॑तिम्मा हिं॑ꣳसिष्टꣳ हिꣳसिष्टम्मा यज्ञप॑तिम्। मा यज्ञप॑तिँय्यज्ञप॑तिम्मा मा यज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ जातवेदसौ यज्ञप॑तिम्मा मा यज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ। यज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ जातवेदसौ यज्ञप॑तिँय्यज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ शिवौ शिवौ जा॑तवेदसौ यज्ञप॑तिँय्यज्ञप॑तिञ्जातवेदसौ शिवौ। यज्ञप॑तिमिति॑ यज्ञ प॑तिम्। जातवेदसौ शिवौ शिवौ जा॑तवेदसौ जातवेदसौ शिवौ भ॑वतम्भवतꣳ शिवौ जा॑तवेदसौ जातवेदसौ शिवौ भ॑वतम्। जातवेदसाविति॑ जात वे॑दसौ। शिवौ भ॑वतम्भवतꣳ शिवौ शिवौ

---

[1]. आयुर्यमोर्वश्यस्तिभ्यः (वा. प्रा. २.६०) इस सूत्र के अनुसार यहाँ उर्वशी से परवर्ती आयुः पद अन्तोदात्त है।

[2]. मकारः प्रत्यये स्पर्शे भवेत्तद्वर्गपञ्चमः – व. शि. १४६। भवतम् एवं नः की सन्धि होने पर मकार नकार हो जायगा।

भंवतमुद्याद्य भंवतः शिवौ शिवौ भंवतमुद्य। भुवुतुमुद्याद्य भंवतम्भवतमुद्य नों नोद्य भंवतम्भवतमुद्य नंः[1]। अुद्य नों नोद्याद्य नंः। नुऽ इतिं नः॥३॥

अुग्नावुग्निरुग्निरुग्नावुग्नावुग्निश्चंरति चरत्युग्निरुग्नावुग्नावुग्निश्चंरति। अुग्निश्चंरति चरत्युग्निरुग्निश्चंरति प्प्रविंष्टुः प्प्रविंष्टश्चरत्युग्निरुग्निश्चंरति प्प्रविंष्टः। चुरुति प्प्रविंष्टुः प्प्रविंष्टश्चरति चरति प्प्रविंष्टुऽ ऋषींणामृषींणाम्प्रविंष्ट- श्चरति चरति प्प्रविंष्टुऽ ऋषींणाम्। प्रविंष्टुऽ ऋषींणामृषींणाम्प्रविंष्टुः प्प्रविंष्टुऽ ऋषींणाम्पुत्रः पुत्रऽ ऋषींणाम्प्रविंष्टुः प्प्रविंष्टुऽ ऋषींणाम्पुत्रः। प्रविंष्टुऽ इति प्प्र विंष्टः। ऋषींणाम्पुत्रः पुत्रऽ ऋषींणामृषींणाम्पुत्रोऽ अंभिशस्तिुपावांभिशस्ति- पावां पुत्रऽ ऋषींणामृषींणाम्पुत्रोऽ अंभिशस्तिुपावां। पुत्रोऽ अंभिशस्तिुपावांभि- शस्तिुपावां पुत्रः पुत्रोऽ अंभिशस्तिुपावां। अुभिशुस्तिुपावेत्यंभिशस्ति पावां॥ स नों नुः स स नंः स्योनः स्योनो नुः स स नंः स्योनः। नुः स्योनः स्योनो नों नः स्योनः सुयजां सुयजां स्योनो नों नः स्योनः सुयजां। स्योनः सुयजां सुयजां स्योनः स्योनः सुयजां यज यज सुयजां स्योनः स्योनः सुयजां यज। सुयजां यज यज सुयजां सुयजां यजेहेह यंज सुयजां सुयजां यजेह। सुयजेतिं सु यजां। यजेहेह यंज यजेह देवेभ्यों देवेभ्यंऽ इह यंज यजेह देवेभ्यंः। इह देवेभ्यों देवेभ्यंऽ इहेह देवेभ्यों हृव्यः हृव्यन्देवेभ्यंऽ इहेह देवेभ्यों हृव्यम्। देवेभ्यों हृव्यः हृव्यन्देवेभ्यों देवेभ्यों हृव्यः सदुः सदंः हृव्यन्देवेभ्यों देवेभ्यों हृव्यः सदंम्। हृव्यः सदुः सदंः हृव्यः हृव्यः सदुमप्प्रंयुच्छन्नप्प्रंयु- च्छन्त्सदंः हृव्यः हृव्यः सदुमप्प्रंयुच्छन्। सदुमप्प्रंयुच्छन्नप्प्रंयुच्छन्त्सदुः स- दुमप्प्रंयुच्छन्त्स्वाहा स्वाहाप्प्रंयुच्छन्त्सदुः सदुमप्प्रंयुच्छन्त्स्वाहां। अप्प्रंयुच्छ-

---

[1].वा.प्रा.३.११४. के अनुसार यहाँ अद्य के अन्तिम अकार का दीर्घ नहीं होता है। (अद्य के बाद तम्, हकार, चकार, भवत, वृणीमहे तथा देव बाद में होने पर दीर्घ होता है)।

न्त्स्वाहा॒ स्वाहाप्प्र॑युच्छ॒न्नप्प्र॑युच्छ॒न्त्स्वाहा॑। अप्प्र॑युच्छ॒न्नित्यप्प्र॑ युच्छन्। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥४॥

आप॑तये त्वा॒ त्वाप॑तय॒ऽ आप॑तये त्वा॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये॒ त्वाप॑तय॒ऽ आप॑तये त्वा॒ परि॑पतये। आप॑तय॒ऽ इत्त्या प॑तये। त्वा॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये त्वा त्वा॒ परि॑पतये गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॑पतये त्वा त्वा॒ परि॑पतये गृह्णामि। परि॑पतये गृह्णामि गृह्णामि॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि॒ परि॑पतये॒ परि॑पतये गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑[1]। परि॑पतय॒ऽ इति॒ परि॑ पतये। गृ॒ह्णा॒मि॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्व॒राय॑ शाक्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ गृह्णामि गृह्णामि॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्व॒राय॑। तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्व॒राय॑ शाक्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्व॒राय॒ शक्व॑ने॒ शक्व॑ने शाक्व॒राय॒ तनू॒नप्प्त्रे॒ तनू॒नप्प्त्रे॑ शाक्व॒राय॒ शक्व॑ने। तनू॒नप्प्त्र॒ऽ इति॒ तनू॒ नप्प्त्रे॑[2]। शा॒क्व॒राय॒ शक्व॑ने॒ शक्व॑ने शाक्व॒राय॑ शाक्व॒राय॒ शक्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठा॒यौजि॑ष्ठाय॒ शक्व॑ने शाक्व॒राय॑ शाक्व॒राय॒ शक्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठाय। शक्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठा॒यौजि॑ष्ठाय॒ शक्व॑ने॒ शक्व॑न॒ऽ ओजि॑ष्ठाय। ओजि॑ष्ठा॒येत्त्योजि॑ष्ठाय॥ अना॑धृष्टमस्य॒स्यना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टमस्यनाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यम॒स्यना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टमस्यनाधृ॒ष्ष्यम्। अ॒स्य॒ना॒धृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यम॑स्यस्यनाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑मनाधृ॒ष्ष्यम॑स्यस्यनाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॑म्। अ॒ना॒धृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑मनाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॒मोज॒ऽ ओजो॑ दे॒वाना॑मनाधृ॒ष्ष्यम॑नाधृ॒ष्ष्यन्दे॒वाना॒मोज॑÷। दे॒वाना॒मोज॒ऽ ओजो॑ दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मोजोन॑भिश॒स्त्यन॑भिश॒स्त्योजो॑ दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मोजोन॑भिशस्ति[3]। ओजोन॑भिश॒स्त्यन॑भिश॒स्त्योज॒ऽ ओजोन॑भिश-

---

1. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार तनू॒नप्प्त्रे॑ पद द्विरुदात्त है।

2. उदाद्यन्तो न्यवग्रहस्तायाभाव्यः(वा.प्रा.१.१२०) इस सूत्र के अनुसार ताथाभाव्य नामक स्वरित का आठवाँ भेद कहा गया है। माध्यन्दिन शाखा में इसे कम्प माना गया है, अतः माध्यन्दिन शाखा में स्वरित के सात भेद ही माने जाते हैं।

3. वा.प्रा.४.८०. के अनुसार ओजः अनभिशस्ति यहाँ अकार का अभिनिधान होता है।

स्त्य॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्योज॒ऽ ओजोन॑भिशस्त्यभिशस्ति॒-

पाः। अन॑भिशस्त्यभिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्यन॑भिशस्त्यभिश-

स्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्य॑म॑नभिशस्ते॒न्य॑म॑भिशस्ति॒पाऽ अन॑भिश॒स्त्यन॑भिश-

स्त्यभिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्य॑म्। अन॑भिश॒स्तीत्यन॑भि शस्ति। अ॒भि॒श॒स्ति॒-

पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्य॑म॑नभिशस्ते॒न्य॑म॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒-

न्य॑मञ्ज॒साञ्ज॑सानभिशस्ते॒न्य॑म॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑भिशस्ति॒पाऽ अ॑नभिशस्ते॒न्य॑मञ्ज॑-

सा। अ॒भि॒श॒स्ति॒पाऽ इत्य॑भिशस्ति॒ पाः। अ॒न॒भि॒श॒स्ते॒न्य॑मञ्ज॒साञ्ज॑सानभिशस्ते॒-

न्य॑म॑नभिशस्ते॒न्य॑मञ्ज॑सा स॒त्यꣳ स॒त्यमञ्ज॑सानभिशस्ते॒न्य॑म॑नभिशस्ते॒न्य॑मञ्ज॑-

सा स॒त्यम्। अ॒न॒भि॒श॒स्ते॒न्य॑मित्य॑नभि शस्ते॒न्य॑म्। अञ्ज॑सा स॒त्यꣳ स॒त्यमञ्ज॒-

साञ्ज॑सा स॒त्यमुपोप॑ स॒त्यमञ्ज॒साञ्ज॑सा स॒त्यमुप॑। स॒त्यमुपोप॑ स॒त्यꣳ स॒त्यमुप॑

गेषङ्गे॒षमुप॑ स॒त्यꣳ स॒त्यमुप॑ गेषम्। उप॑ गेषङ्गे॒षमुपोप॑ गेषꣳ स्वि॒ते स्वि॒ते

गे॑ष॒मुपोप॑ गेषꣳ स्वि॒ते। गे॒ष॒ꣳ स्वि॒ते स्वि॒ते गे॑षङ्गेषꣳ स्वि॒ते मा॑ मा स्वि॒ते

गे॑षङ्गेषꣳ स्वि॒ते मा॑। स्वि॒ते मा॑ मा स्वि॒ते स्वि॒ते मा॑ धा धा मा स्वि॒ते स्वि॒ते मा॑

धाः। स्वि॒तऽ इति॑ सु इ॒ते। मा॒ धा॒ धा॒ मा॒ मा॒ धा॒ः। धा॒ऽ इति॑ धाः ॥५॥

अग्ने॑ व्रतपा व्रतपा॒ऽ अग्नेग्ने॑ व्रतपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒ऽ अग्नेग्ने॑ व्रतपा॒स्त्वे।

व्र॒त॒पा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे व्र॑तपाः। व्र॒त॒-

पा॒ऽ इति॑ व्रत पाः। त्वे व्र॑तपा व्रतपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒ या या व्र॑तपा॒स्त्वे त्वे व्र॑तपा॒

या। त्वेऽ इ॒ति॒ त्वे॑[1]। व्र॒त॒पा॒ या या व्र॑तपा व्रतपा॒ या तव॒ तव॒ या व्र॑तपा व्रतपा॒ या

तव॑। व्र॒त॒पा॒ऽ इति॑ व्रत पाः। या तव॒ तव॒ या या तव॑ त॒नूस्त॒नूस्तव॒ या या तव॑

त॒नूः। तव॑ त॒नूस्त॒नूस्तव॒ तव॑ त॒नूरि॒यमि॒यन्त॒नूस्तव॒ तव॑ त॒नूरि॒यम्। त॒नूरि॒यमि॒-

यन्त॒नूस्त॒नूरि॒यꣳ सा सेयन्त॒नूस्त॒नूरि॒यꣳ सा। इ॒यꣳ सा सेयमि॒यꣳ सा मयि॒

[1]. चमू अस्मे त्वे (वा. मा. १.९६) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार त्वे पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

मयि॒ सेयमि॒यꣳ सा मयि॑। सा मयि॒ मयि॒ सा सा मयि॒ यो यो मयि॒ सा सा मयि॒ यो[1]। मयि॒ यो यो मयि॒ मयि॒ यो मम॒ मम॒ यो मयि॒ मयि॒ यो मम॑। यो मम॒ मम॒ यो यो मम॑ त॒नूस्त॒नूर्म्मम॒ यो यो मम॑ त॒नूः। योऽ इति॒ यो। मम॑ त॒नूस्त॒नूर्म्मम॒ मम॑ त॒नूरे॒षैषा त॒नूर्म्मम॒ मम॑ त॒नूरे॒षा। त॒नूरे॒षैषा त॒नूस्त॒नूरे॒षा सा सैषा त॒नूस्त॒नूरे॒षा सा। ए॒षा सा सैषैषा सा त्वयि॒ त्वयि॒ सैषैषा सा त्वयि॑। सा त्वयि॒ त्वयि॒ सा सा त्वयि॑। त्वयीति॒ त्वयि॑॥ स॒ह नौ॑ नौ स॒ह स॒ह नौ॑ व्रतपते व्रतपते नौ स॒ह स॒ह नौ॑ व्रतपते। नौ॒ व्र॒त॒प॒ते॒ व्र॒त॒प॒ते॒ नौ॒ नौ॒ व्र॒त॒प॒ते॒ व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॑ व्रतपते नौ नौ व्रतपते व्र॒तानि॑। व्र॒त॒प॒ते॒ व्र॒तानि॑ व्र॒तानि॑ व्रतपते व्रतपते व्र॒तान्यन्वनु॑ व्र॒तानि॑ व्रतपते व्रतपते व्र॒तान्यनु॑। व्र॒त॒प॒त॒ऽ इति॑ व्रत पते। व्र॒तान्यन्वनु॑ व्र॒तानि॑ व्र॒तान्यनु॑ मे॒ मेनु॑ व्र॒तानि॑ व्र॒तान्यनु॑ मे। अनु॑ मे॒ मेन्वनु॑ मे दी॒क्षान्दी॒क्षाम्मेन्वनु॑ मे दी॒क्षाम्। मे॒ दी॒क्षान्दी॒क्षाम्मे॑ मे दी॒क्षान्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षाम्मे॑ मे दी॒क्षान्दी॒क्षाप॑तिः। दी॒क्षान्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षान्दी॒क्षान्दी॒क्षाप॑ति॒र्म्मन्य॑ता॒म्मन्य॑तान्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षान्दी॒क्षान्दी॒क्षाप॑ति॒र्म्मन्य॑ताम्। दी॒क्षाप॑ति॒र्म्मन्य॑ता॒म्मन्य॑तान्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षाप॑ति॒र्म्मन्य॑ता॒मन्वनु॒ मन्य॑तान्दी॒क्षाप॑तिर्दी॒क्षाप॑ति॒र्म्मन्य॑ता॒मनु॑। दी॒क्षाप॑ति॒रिति॑ दी॒क्षा प॑तिः। मन्य॑ता॒मन्वनु॒ मन्य॑ता॒म्मन्य॑ता॒मनु॒ तप॒स्तपोनु॒ मन्य॑ता॒म्मन्य॑ता॒मनु॒ तपः॑। अनु॒ तप॒स्तपोन्वनु॒ तप॒स्तप॑स्प्पति॒स्तपः॑ पति॒स्तपोन्वनु॒ तप॒स्तप॑स्प्पतिः। तप॒स्तप॑स्प्पति॒स्तपः॑ पति॒स्तप॒स्तप॒स्तप॑स्प्पतिः। तपः॑ पति॒रिति॒ तपः॑ पतिः॥६॥

अ॒ꣳशुर॑ꣳशुष्टे ते॒ꣳशुर॑ꣳशुर॒ꣳशुर॑ꣳशुष्टे देव देव ते॒ꣳशुर॑ꣳशुर॒ꣳशुर॑ꣳशुष्टे देव[2]। अ॒ꣳशुर॑ꣳशुरित्य॒ꣳशुः अ॑ꣳशुः। ते॒ दे॒व॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒। दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒मा प्प्या॑यताम्प्याय॒ता॒मा सो॑म देव देव सो॒मा

[1]. भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने यो को या उ के रूप में माना है।

प्प्यायताम्। सोमा प्प्यायताम्प्यायतामा सोम सोमा प्प्यायतामिन्द्रायेन्द्राय प्प्यायतामा सोम सोमा प्प्यायतामिन्द्राय। आ प्प्यायताम्[1]। प्प्यायतामिन्द्रायेन्द्राय प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रायैकधनविदऽ एकधनविदऽ इन्द्राय प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रायैकधनविदे। इन्द्रायैकधनविदऽ एकधनविदऽ इन्द्रायेन्द्रायैकधनविदे। एकधनविदऽ इत्येकधन ब्विदे॥ आ तुभ्यन्तुभ्यमा तुभ्यमिन्द्रऽ इन्द्रस्तुभ्यमा तुभ्यमिन्द्रः। तुभ्यमिन्द्रऽ इन्द्रस्तुभ्यन्तुभ्यमिन्द्रः प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रस्तुभ्यन्तुभ्यमिन्द्रः प्प्यायताम्। इन्द्रः प्प्यायताम्प्यायतामिन्द्रऽ इन्द्रः प्प्यायतामा त्वन्त्वमा प्प्यायतामिन्द्रऽ इन्द्रः प्प्यायतामा त्वम्। प्प्यायतामा त्वन्त्वमा प्प्यायताम्प्यायतामा त्वमिन्द्रायेन्द्राय त्वमा प्प्यायताम्प्यायतामा त्वमिन्द्राय। आ त्वम्। त्वमिन्द्रायेन्द्राय त्वन्त्वमिन्द्राय प्प्यायस्व प्प्यायस्वेन्द्राय त्वन्त्वमिन्द्राय प्प्यायस्व। इन्द्राय प्प्यायस्व प्प्यायस्वेन्द्रायेन्द्राय प्प्यायस्व। प्प्यायस्वेति प्प्यायस्व॥ आ प्प्यायय प्प्यायया प्प्याययास्मानस्मान्प्प्यायया प्प्याययास्मान्। प्प्याययास्मानस्मान्प्प्यायय प्प्याययास्मान्त्सखीन्त्सखीनस्मान्प्प्यायय प्प्याययास्मान्त्सखीन्। अस्मान्त्सखीन्त्सखीनस्मानस्मान्त्सखीन्त्सन्न्या सन्न्या सखीनस्मानस्मान्त्सखीन्त्सन्न्या। सखीन्त्सन्न्या सन्न्या सखीन्त्सखीन्त्सन्न्या मेधया मेधया सन्न्या सखीन्त्सखीन्त्सन्न्या मेधया। सन्न्या मेधया मेधया सन्न्या सन्न्या मेधया स्वस्ति

[2]. सधिरंशुरदितिः (वा. प्रा. ३.७५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अंशुः का विसर्जनीय सकार षकार हो गया है। षात्तथो मूर्धन्यम् (वा. प्रा. ३.७९) यह सूत्र षकारोत्तरवर्ती त को मूर्धन्य करता है।

[1]. वा.प्रा.४.१८३. में दो पदों का समूह लेकर क्रम पाठ का विधान है। वा.प्रा.४.१८४. में अपृक्त पद आने पर तीन पदों के समूह का निर्देश है। वा.प्रा.१.१५१. में आ तथा उ को अपृक्त कहा गया है। वा.प्रा.४.१८५. में आकार के साथ उत्तरवर्ती पद को पुनः ग्रहण करना निर्दिष्ट है। मन्त्र अथवा अर्द्धर्च के आदि या अन्त में उक्त नियम प्रवर्तित नहीं होता है। जिन स्थलों में क्रम पाठ में दो पद को ग्रहण करना उपदिष्ट है उन स्थलों में घनपाठ में उसके उत्तरवर्ती पद को लेकर तीन तथा जिन स्थलों में क्रम में तीन पद लिये जायेंगे, उन स्थलों में घनपाठ में उसके उत्तरवर्ती पद को लेकर चार पदों का समूह होगा।

स्व॒स्ति मे॒धया॑ स॒न्न्या स॒न्न्या मे॒धया॑ स्व॒स्ति। मे॒धया॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒धया॑ मे॒धया॑ स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति मे॒धया॑ मे॒धया॑ स्व॒स्ति ते॑। स्व॒स्ति ते॑ ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ देव देव ते स्व॒स्ति स्व॒स्ति ते॑ देव। ते॒ दे॒व॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ ते॒ ते॒ दे॒व॒ सो॒म॒। दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ सु॒त्याꣳ सु॒त्याꣳ सो॑म देव देव सोम सु॒त्याम्। सो॒म॒ सु॒त्याꣳ सु॒त्याꣳ सो॑म सोम सु॒त्याम॑शीयाशीय सु॒त्याꣳ सो॑म सोम सु॒त्याम॑शीय। सु॒त्याम॑शीयाशीय सु॒त्याꣳ सु॒त्याम॑शीय। अ॒शी॒येत्य॑शीय॥ एष्टा॒ रायो॒ राय॒ऽ एष्टा॒ऽ एष्टा॒ राय॒ः प्प्र प्प्र राय॒ऽ एष्टा॒ऽ एष्टा॒ राय॒ः प्प्र[1]। एष्टा॒ऽ इत्त्या ई॑ष्टाः। राय॒ः प्प्र प्प्र रायो॒ राय॒ः प्प्रेषऽ इ॒षे प्प्र रायो॒ राय॒ः प्प्रेषे। प्रेषऽ इ॒षे प्प्र प्प्रेषे भगा॑य॒ भगा॑ये॒षे प्प्र प्प्रेषे भगा॑य। इ॒षे भगा॑य॒ भगा॑ये॒षऽ इ॒षे भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॒तम्भगा॑ये॒षऽ इ॒षे भगा॑यऽ ऋ॒तम्[2]। भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॒तम्भगा॑य॒ भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋ॒तम्भगा॑य॒ भगा॑यऽ ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ः। ऋ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋ॒तमृ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ नम॑ऽ ऋतवा॒दि-ब्भ्य॑ऽ ऋ॒तमृ॒तमृ॑तवा॒दिब्भ्यो॒ नम॑ः। ऋ॒त॒वा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ नम॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्नम॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्य॑ऽ ऋतवा॒दिब्भ्यो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म्। ऋ॒त॒वा॒दिब्भ्य॒ऽ इत्त्यृ॑तवा॒दि भ्य॑ः। नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒न्नमो॒ नमो॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म् । द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒मिति॒ द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॑म्॥७॥

या ते॑ ते॒ या या ते॑ऽ अग्ग्नेग्ग्ने ते॒ या या ते॑ऽ अग्ग्ने[3]। ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्ग्ने॒य॒ःश॒याय॑ःश॒याग्ग्ने॑ ते तेऽ अग्ग्नेयःश॒या। अ॒ग्ग्ने॒य॒ःश॒याय॑ःश॒याग्ग्ने॑ग्ग्नेयः-

---

[1]. वा.प्रा.२.४२. के अनुसार पोष बाद में न होने पर रायः पद आद्युदात्त होता है।

[2]. कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम् (वा. प्रा. ४.५०) इस सूत्र के अनुसार ऋकार परे होने पर कण्ठ्य स्वर ह्रस्व (अ) हो जाता है।

[3]. ते चानुदात्तमनुदात्ते(वा.प्रा.४.८४) इस सूत्र के अनुसार ते॒ अ॒ग्ने यहाँ अनुदात्त अकार बाद में होने से ते का एकार प्रकृतिभाव से रहता है।

शया तनूस्तनूर्यःशयाग्नेंग्नेयःशया तनूः। अयःशया तनूस्तनूर्यःशयार्य÷-शया तनूर्व्वर्षिष्ठा व्वर्षिष्ठा तनूर्यःशयार्य÷शया तनूर्व्वर्षिष्ठा। अयःशयेत्ययः शया। तनूर्व्वर्षिष्ठा व्वर्षिष्ठा तनूस्तनूर्व्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा गह्वरेस्त्था व्वर्षिष्ठा तनूस्तनूर्व्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। व्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा गह्वरेस्त्था व्वर्षिष्ठा व्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। गह्वरेस्त्थेति गह्वरे स्था॥ उग्रँव्वचो व्वचऽ उग्रमुग्रँव्वचोऽ अपाप वचऽ उग्रमुग्रँव्वचोऽ अप। व्वचोऽ अपाप वचो व्वचोऽ अपावधीदवधीदप वचो व्वचोऽ अपावधीत्। अपावधीदवधीद-पापावधीत्त्वेषन्त्वेषमवधीदपापावधीत्त्वेषम्। अवधीत्त्वेषन्त्वेषमवधीदवधीत्त्वेषँ-व्वचो व्वचस्त्त्वेषमवधीदवधीत्त्वेषँव्वचः÷। त्वेषँव्वचो व्वचस्त्त्वेषन्त्वेषँव्वचोऽ अपाप वचस्त्त्वेषन्त्वेषँव्वचोऽ अप[1]। व्वचोऽ अपाप वचो व्वचोऽ अपावधीदवधीदप वचो व्वचोऽ अपावधीत्। अपावधीदवधीदपापावधीत्त्स्वाहा स्वाहावधीदपापावधी-त्त्स्वाहा। अवधीत्त्स्वाहा स्वाहावधीदवधीत्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ रजःशया हरिशया हरिशया रजःशया रजःशया हरिशया[2]। रजःशयेति रजः शया॥ हरिशयेति हरि शया॥ ८॥

तप्सायनी मे मे तप्सायनी तप्सायनी मेस्यसि मे तप्सायनी तप्सायनी मेसि। तप्सायनीति तप्स अयनी। मेस्यसि मे मेसि व्वित्तायनी व्वित्तायन्न्यसि मे मेसि व्वित्तायनी। असि व्वित्तायनी व्वित्तायन्न्यस्यसि व्वित्तायनी मे मे व्वित्तायन्न्यस्य-सि व्वित्तायनी मे। व्वित्तायनी मे मे व्वित्तायनी व्वित्तायनी मेस्यसि मे व्वित्तायनी व्वित्तायनी मेसि। व्वित्तायनीति वित्त अयनी। मेस्यसि मे मेस्यवतादवतादसि मे मेस्यवतात्। अस्यवतादवतादस्यस्यवतान्न्मा मावतादस्यस्यवतान्न्मा। अवता-

1. वचो अप यहाँ वा.प्रा.४.८५. के अनुसार ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

2. हरि शयेत्येके (वा. प्रा. ३.१२८) इस सूत्र में प्रतिपादित हरि के इकार का दीर्घत्व माध्यन्दिनशाखा के लिये नहीं है।

न्मा॒ माव॑ता॒दव॑तान्मा नाथि॒तान्नाथि॑ता॒न्माव॑ता॒दव॑तान्मा नाथि॒तात्। मा॒ ना॒थि॒-
तान्नाथि॑ता॒न्मा॑ मा नाथि॒तादव॑ता॒दव॑तान्नाथि॒ता॒न्मा॑ मा नाथि॒तादव॑तात्। ना॒थि॒-
तादव॑ता॒दव॑तान्नाथि॒तान्नाथि॑ता॒दव॑तान्मा॒ माव॑तान्नाथि॒तान्नाथि॑ता॒दव॑तान्मा। अव॑-
तान्मा॒ माव॑ता॒दव॑तान्मा ध्यथि॒ताद्ध्यथि॑ता॒न्माव॑ता॒दव॑तान्मा ध्यथि॒तात्। मा॒
ध्य॒थि॒ताद्ध्यथि॑ता॒न्मा॑ मा ध्यथि॒तात्। ध्य॒थि॒तादिति॑ ध्यथि॒तात्॥ द्वि॒देद॒ग्निर॒ग्निर्द्वि॒-
देद्द्वि॒देद॒ग्निर्नभो॒ नभो॒ग्निर्द्वि॒देद्द्वि॒देद॒ग्निर्नभ॑ः। अ॒ग्निर्नभो॒ नभो॒ग्निर॒ग्निर्नभो॒ नाम॒
नाम॒ नभो॒ग्निर॒ग्निर्नभो॒ नाम॑। नभो॒ नाम॒ नाम॒ नभो॒ नभो॒ नामाग्नेग्ने॒ नाम॒ नभो॒
नभो॒ नामाग्ने॑। नामाग्नेग्ने॒ नाम॒ नामाग्ने॑ऽ अङ्गिरोङ्गि॒रोग्ने॒ नाम॒ नामाग्ने॑ऽ
अङ्गिर३ः। अग्ने॑ऽ अङ्गिरोङ्गि॒रोग्नेग्ने॑ऽ अङ्गिर॒ऽ आयु॒नायु॑नाङ्गि॒रोग्नेग्ने॑ऽ अङ्गिर॒ऽ
आयु॑ना। अ॒ङ्गि॒र॒ऽ आयु॒नायु॑नाङ्गिरोङ्गिर॒ऽ आयु॑ना॒ नाम्ना॒ नाम्नायु॑नाङ्गिरोङ्गिर॒ऽ
आयु॑ना॒ नाम्ना॑। आयु॑ना॒ नाम्ना॒ नाम्नायु॒नायु॑ना॒ नाम्नेही॒ह्या नाम्नायु॒नायु॑ना॒
नाम्नेहि॑। नाम्नेही॒ह्या नाम्ना॒ नाम्नेहि॒ यो य॑ऽ इ॒ह्या नाम्ना॒ नाम्नेहि॒ य॒ः। एहि॑
। इ॒हि॒ यो य॑ऽ ई॑हीहि॒ यो॒स्याम॒स्याँ॑ऽय॑ऽ ई॑हीहि॒ यो॒स्याम्। यो॒स्याम॒स्याँ॑ऽयो यो॒-
स्याम्पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याम॒स्याँ॑ऽयो यो॒स्याम्पृ॑थि॒व्याम्। अ॒स्याम्पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्या-
म॒स्याम॒स्याम्पृ॑थि॒व्याम॑स्यसि॑ पृथि॒व्याम॒स्याम॒स्याम्पृ॑थि॒व्याम॑सि[1]। पृथि॒व्याम-
स्यसि॑ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याम॑सि॒ यद्यद॑सि॑ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याम॑सि॒ यत्। असि॒ यद्यद-
स्यसि॒ यत्ते॑ ते॒ यद॑स्यसि॒ यत्ते॑। यत्ते॑ ते॒ यद्यत्तेना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टन्ते॒ यद्यत्तेना॑धृष्टम्।
तेना॑धृष्ट॒मना॑धृष्टन्ते॒ तेना॑धृष्ट॒न्नाम॒ नामाना॑धृष्टन्ते॒ तेना॑धृष्ट॒न्नाम॑। अना॑धृष्ट॒न्नाम॒
नामाना॑धृष्ट॒मना॑धृष्ट॒न्नाम॑ य॒ज्ञियँ॑ऽय॒ज्ञिय॒न्नामाना॑धृष्ट॒मना॑धृष्ट॒न्नाम॑ य॒ज्ञिय॑म्।
नाम॑ य॒ज्ञियँ॑ऽय॒ज्ञिय॒न्नाम॒ नाम॑ य॒ज्ञिय॒न्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञिय॒न्नाम॒ नाम॑ य॒ज्ञिय॒-
न्तेन॑। य॒ज्ञिय॒न्तेन॒ तेन॑ य॒ज्ञियँ॑ऽय॒ज्ञिय॒न्तेन॑ त्वा त्वा॒ तेन॑ य॒ज्ञियँ॑ऽय॒ज्ञि-

[1].वा.प्रा.२.४०. के अनुसार यहाँ असि पद आद्युदात्त है।

य॒न्तेन॑ त्वा। तेन॑ त्वा त्वा॒ तेन॒ तेन॒ त्वा द॑धे दध॒ऽ आ त्वा॒ तेन॒ तेन॒ त्वा द॑धे। त्वा द॑धे दध॒ऽ आ त्वा॒ त्वा द॑धे द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दध॒ऽ आ त्वा॒ त्वा द॑धे द्वि॒तीय॑-स्याम्[1]। आ द॑धे। द॒धे॒ द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दधे दधे द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्या-न्तृ॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्दधे दधे द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्याम्। द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑-स्यान्तृ॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्द्वि॒तीय॑स्यान्तृ॒तीय॑स्याम्। तृ॒तीय॑स्या॒मिति॑ तृ॒तीय॑-स्याम्॥ अनु॑ त्वा॒ त्वान्वनु॑ त्वा दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये॒ त्वान्वनु॑ त्वा दे॒ववी॑तये[2]। त्वा॒ दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये त्वा त्वा दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही। दे॒ववी॑तये सि॒ꣳही सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये सि॒ꣳह्यस्यसि सि॒ꣳही दे॒ववी॑तये दे॒ववी॑तये सि॒ꣳह्यसि। दे॒ववी॑तय॒ऽ इति॑ दे॒व वी॑तये॥९॥

सि॒ꣳह्यस्यसि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि सपत्त्नसा॒ही स॑पत्त्नस॒ह्यसि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि सपत्त्नसा॒ही[3]। अ॒सि॒ स॒प॒त्त्न॒सा॒ही स॑पत्त्नस॒ह्यस्यसि सपत्त्नसा॒ही दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः सपत्त्नस॒ह्यस्यसि सपत्त्नसा॒ही दे॒वेब्भ्य॑ः। स॒प॒त्त्न॒सा॒ही दे॒वे-ब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः सपत्त्नस॒ही स॑पत्त्नसा॒ही दे॒वेब्भ्य॑ः कल्प्पस्व कल्प्पस्व दे॒वे-ब्भ्य॑ः सपत्त्नस॒ही स॑पत्त्नसा॒ही दे॒वेब्भ्य॑ः कल्प्पस्व। स॒प॒त्त्न॒स॒हीति॑ सपत्त्न स॒ही । दे॒वेब्भ्य॑ः कल्प्पस्व कल्प्पस्व दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः कल्प्पस्व शुन्धस्व शुन्धस्व कल्प्पस्व दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्य॑ः कल्प्पस्व शुन्धस्व। क॒ल्प्प॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒ क॒ल्प्प॒स्व॒

---

1. पदसमूहे (वा. प्रा. ४.१७७) पदों के पुनरुक्त होने पर सङ्क्रम होता है। पुनरुक्त पदों को छोड़कर अपुनरुक्त पद के साथ होने वाली सन्धि को यहाँ सङ्क्रम शब्द से कहा गया है। यह सङ्क्रम संहितायाम् (वा. प्रा. ४.१७८) इस सूत्र के अनुसार संहिता में भी होता है।

लोकन्ताऽ इन्द्रम् (वा. सं. १३. ५८)

2. त्वा च(वा.प्रा.२.६) युष्मदर्थ में विद्यमान त्वा पद अनुदात्त होता है।

3. अभिमातिपृतनासुसपत्नधूर्विश्वसमत्सुपृतनाव्रातेभ्यः सहेः (वा. प्रा. ३.१२२) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यहाँ सपत्त्न से परवर्ती सह का अकार दीर्घ होने से सपत्त्नसाही हो गया है।

शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒। शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒न्ध॒स्व॒ शु॒म्भ॒स्व॒। शु॒म्भ॒स्वेति॑ शुम्भस्व॥१०॥

इ॒न्द्र॒घो॒षस्त्वा॑ त्वेन्द्रघो॒षऽ इन्द्रघो॒षस्त्वा॒ व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिस्त्वेन्द्रघो॒षऽ इन्द्रघो॒षस्त्वा॒ व्वसु॑भिः। इ॒न्द्र॒घो॒षऽ इतीन्द्र॑ घो॒षः। त्वा॒ व्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिस्त्वा त्वा॒ व्वसु॑भिः पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॒द्वसु॑भिस्त्वा त्वा॒ व्वसु॑भिः पु॒रस्ता॑त्। व्वसु॑भिः पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॒द्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिः पु॒रस्ता॑त्पातु पातु पु॒रस्ता॒द्वसु॑भि॒र्व्वसु॑भिः पु॒रस्ता॑त्पातु। व्वसु॑भि॒रिति॒ वसु॑ भिः। पु॒रस्ता॑त्पातु पातु पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्पातु॒ प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः पातु पु॒रस्ता॑त्पु॒रस्ता॑त्पातु॒ प्प्रचे॑ताः। पा॒तु॒ प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः पातु पातु॒ प्प्रचे॑ता रु॒द्रै रु॒द्रैः प्प्रचे॑ताः पातु पातु॒ प्प्रचे॑ता रु॒द्रैः। प्रचे॑ता रु॒द्रै रु॒द्रैः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ता रु॒द्रैः प॒श्चात्प॒श्चाद्रु॒द्रैः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ता रु॒द्रैः प॒श्चात्। प्रचे॑ता॒ऽ इति॒ प्र चे॑ताः। रु॒द्रैः प॒श्चात्प॒श्चाद्रु॒द्रै रु॒द्रैः प॒श्चान्म॒नोज॑वा॒ म॒नोज॑वाः प॒श्चाद्रु॒द्रै रु॒द्रैः प॒श्चान्म॒नोजवाः। प॒श्चान्म॒नोज॑वा॒ म॒नोज॑वाः प॒श्चात्प॒श्चान्म॒नोज॑वाः पि॒तृभि॑ः पि॒तृभि॒र्म्मनोज॑वाः प॒श्चात्प॒श्चान्म॒नोज॑वाः पि॒तृभि॑ः। म॒नोज॑वाः पि॒तृभि॑ः पि॒तृभि॒र्म्मनोजवा॒ म॒नोज॑वाः पि॒तृभि॑र्द्दक्षिण॒तो द॑क्षिण॒तः पि॒तृभि॒र्म्मनोजवा॒ म॒नोज॑वाः पि॒तृभि॑र्द्दक्षिण॒तः[1]। म॒नोज॑वा॒ऽ इति॒ मन॑ः जवाः। पि॒तृभि॑र्द्दक्षिण॒तो द॑क्षिण॒तः पि॒तृभि॑ः पि॒तृभि॑र्द्दक्षिण॒तो व्वि॒श्वक॑र्म्मा व्वि॒श्वक॑र्म्मा दक्षिण॒तः पि॒तृभि॑ः पि॒तृभि॑र्द्दक्षिण॒तो व्वि॒श्वक॑र्म्मा। पि॒तृभि॒रिति॑ पि॒तृ भिः। द॒क्षि॒ण॒तो व्वि॒श्वक॑र्म्मा व्वि॒श्वक॑र्म्मा दक्षिण॒तो द॑क्षिण॒तो व्वि॒श्वक॑र्म्मादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वि॒श्वक॑र्म्मा दक्षिण॒तो द॑क्षिण॒तो व्वि॒श्वक॑र्म्मादि॒त्यैः। व्वि॒श्वक॑र्म्मादि॒त्यैरा॑दि॒त्यैर्व्वि॒श्वक॑र्म्मा व्वि॒श्वक॑र्म्मादि॒त्यैरु॑त्तर॒तऽ उत्तर॒तऽ आ॑दि॒त्यैर्व्वि॒श्वक॑र्म्मा व्वि॒श्वक॑र्म्मादि॒त्यैरु॑त्तर॒तः। व्वि॒श्वक॒र्म्मेति॑ वि॒श्व क॑र्म्मा। आ॒दि॒त्यैरु॑त्तर॒तऽ उत्तर॒तऽ आ॑दि॒त्यैरा-

1.वा.प्रा.२.३०. के अनुसार यहाँ दक्षिणा आद्युदात्त नहीं है।

दि॒त्यैरु॑त्तर॒तऽ इ॒दमि॒दमु॑त्तर॒तऽ आ॑दि॒त्यैरा॑दि॒त्यैरु॑त्तर॒तऽ इ॒दम्। उ॒त्त॒र॒तऽ इ॒दमि॒दमु॑त्तर॒तऽ उ॑त्तर॒तऽ इ॒दम॒हम॒हमि॒दमु॑त्तर॒तऽ उ॑त्तर॒तऽ इ॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हन्त॒प्सन्त॒प्सम॒हमि॒दमि॒दम॒हन्त॒प्सम्। अ॒हन्त॒प्सन्त॒प्सम॒हम॒हन्त॒प्सँब्बार्ब्बास्त॒प्सम॒हम॒हन्त॒प्सँब्बाः[1]। त॒प्सँब्बार्ब्बास्त॒प्सन्त॒प्सँब्बार्बँहि॒र्द्धा बँहि॒र्द्धा ब्बास्त॒प्सन्त॒प्सँ ब्बार्बँहि॒र्द्धा। ब्बार्बँहि॒र्द्धा बँहि॒र्द्धा ब्बार्ब्बार्बँहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञाद् बँहि॒र्द्धा ब्बार्ब्बार्बँहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञात्। ब॒हि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञाद् बँहि॒र्द्धा बँहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञान्निर्न्निर्ग्य॒ज्ज्ञाद् बँहि॒र्द्धा बँहि॒र्द्धा य॒ज्ज्ञान्निः। ब॒हि॒र्द्धेति॑ ब॒हिः धा। य॒ज्ज्ञान्निर्न्निर्ग्य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञान्निः सृ॑जामि सृजामि॒ निर्ग्य॒ज्ज्ञाद्य॒ज्ज्ञान्निः सृ॑जामि। निः सृ॑जामि सृजामि॒ निर्न्निः सृ॑जामि। सृ॒जा॒मीति॑ सृजामि॥११॥

सि॒ꣳह्यस्यसि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑सि सि॒ꣳही सि॒ꣳह्यसि॒ स्वाहा॑। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑दित्य॒वनि॑रादित्य॒वनिः॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑दित्य॒वनि॑ः। स्वाहा॑दित्य॒वनि॑रादित्य॒वनिः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑दित्य॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒व-नि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑रादित्य॒वनिः॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑दित्य॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑ः। आ॒दि॒त्य॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒व-नि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑रादित्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑रादि-त्य॒वनि॑रादित्य॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः। आ॒दि॒त्य॒वनि॒रित्या॑दित्य॒ ब्वनि॑ः। ब्र॒ह्म॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑र्ब्ब्रह्म॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः। ब्र॒ह्म॒व-नि॒रिति॑ ब्रह्म॒ ब्वनि॑ः। क्ष॒त्र॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनी॑ रायस्प्पोष॒वनी॑ रायस्प्पोष॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनि॑ः क्क्षत्र॒-वनि॑ः क्क्षत्र॒वनि॑ः सुप्प्रजा॒वनी॑ रायस्प्पोष॒वनि॑ः[2]। क्ष॒त्र॒वनि॒रिति॑ क्क्षत्र॒ ब्वनि॑ः।

---

[1]. स्तोतर्वस्तः सनुतरभार्वार्द्धाः (वा. प्रा. १.१६५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ बाः पद रिफितसंज्ञक है।

[2]. सुप्रजावनिः रायस्पोषवनिः यहाँ वा.प्रा.४.३६. के अनुसार र बाद में होने पर विसर्जनीय लुप्त होता है तथा उपधा दीर्घ होता है।

सु॒प्र॒जा॒वनीं॑ रायस्प्पोष॒वनीं॑ रायस्प्पोष॒वनिः॑ सुप्रजा॒वनिः॑ सुप्रजा॒वनीं॑ रायस्प्पोष॒वनि॒रा व॑ह व्व॒हा रा॑यस्प्पोष॒वनिः॑ सुप्रजा॒वनिः॑ सुप्रजा॒वनीं॑ राय-स्प्पोष॒वनि॒रा व॑ह। सु॒प्र॒जा॒वनि॒रिति॑ सुप्रजा॒ व्वनिः॑। रा॒य॒स्प्पो॒ष॒वनि॒रा व॑ह व्व॒हा रा॑यस्प्पोष॒वनीं॑ रायस्प्पोष॒वनि॒रा व॑ह दे॒वान्दे॒वान्व्व॒हा रा॑यस्प्पोष॒वनीं॑ रायस्प्पोष॒वनि॒रा व॑ह दे॒वान्। रा॒य॒स्प्पो॒ष॒वनि॒रिति॑ रायस्प्पोष॒ व्वनिः॑। आ व॑ह। व्व॒ह॒ दे॒वान्दे॒वान्व॑ह व्वह दे॒वान्यज॑मानाय॒ यज॑मानाय दे॒वान्व॑ह व्वह दे॒वान्यज॑मानाय। दे॒वान्यज॑मानाय॒ यज॑मानाय दे॒वान्दे॒वान्यज॑मानाय॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ यज॑मानाय दे॒वान्दे॒वान्यज॑मानाय॒ स्वाहा॑। यज॑मानाय॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ यज॑मानाय॒ यज॑मानाय॒ स्वाहा॑ भू॒तेब्भ्यो॑ भू॒तेब्भ्य॒ः स्वाहा॒ यज॑मानाय॒ यज॑मानाय॒ स्वाहा॑ भू॒तेब्भ्य॑ः। स्वाहा॑ भू॒तेब्भ्यो॑ भू॒तेब्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ भू॒तेब्भ्य॑स्त्वा त्वा भू॒तेब्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ भू॒तेब्भ्य॑स्त्वा। भू॒तेब्भ्य॑स्त्वा त्वा भू॒तेब्भ्यो॑ भू॒तेब्भ्य॑स्त्वा। त्वेति॑ त्वा॥१२॥

ध्रु॒वो॒स्यसि ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒सि पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑सि ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒सि[1] पृथि॒वीम्। अ॒सि॒ पृ॒थि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॑स्यसि पृथि॒वीन्दृ॑ꣳह दृꣳह पृथि॒वीम॑स्यसि पृथि॒वीन्दृ॑ꣳह। पृ॒थि॒वीन्दृ॑ꣳह दृꣳह पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीन्दृ॑ꣳह ध्रु॒व॒क्षि॒द्ध्रु॒व॒क्षि॒दृ॑ꣳह पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वी-न्दृ॑ꣳह ध्रु॒व॒क्षित्। दृ॒ꣳह॒ ध्रु॒व॒क्षि॒द्ध्रु॒व॒क्षि॒दृ॑ꣳह दृꣳह ध्रु॒व॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षम॒न्त-रि॑क्षन्ध्रु॒व॒क्षि॒दृ॑ꣳह दृꣳह ध्रु॒व॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षम्। ध्रु॒व॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षम॒न्त-रि॑क्षन्ध्रु॒व॒क्षि॒द्ध्रु॒व॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षमच्युत॒क्षि॒द॑च्युत॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षन्ध्रु॒व॒क्षि॒द्ध्रु॒व॒-क्षि॒द॒न्तरि॑क्षमच्युत॒क्षित्। ध्रु॒व॒क्षि॒दिति॑ ध्रु॒व॒ क्षित्। अ॒न्तरि॑क्षमच्युत॒क्षि॒द॑-च्युत॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमच्युत॒क्षि॒द्दि॒वन्दिव॑मच्युत॒क्षि॒द॒न्तरि॑क्षम॒न्त-

[1]. ध्रुवः असि यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.४३. तथा वा.प्रा.४.४४. के अनुसार सोपध विसर्जनीय ओकार हो जाता है। वा. प्रा. ४.६२ के अनुसार ओकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

रि॑क्षमच्युत॒क्षिद्दि॑व॑म्। अ॒च्युत॒क्षिद्दि॒वन्दि॑व॑मच्युत॒क्षिद॑च्युत॒क्षिद्दि॑व॑म॒ग्नेर॒-
ग्नेर्द्दि॑व॑मच्युत॒क्षिद॑च्युत॒क्षिद्दि॑व॑म॒ग्नेः। अ॒च्युत॒क्षिदित्य॑च्युत॒ क्षित्। दि॑व॑म॒-
ग्नेर॒ग्नेर्द्दि॒वन्दि॑व॑म॒ग्नेः पुरी॑ष॒म्पुरी॑षम॒ग्नेर्द्दि॒वन्दि॑व॑म॒ग्नेः पुरी॑षम्। अ॒ग्नेः पुरी॑ष॒-
म्पुरी॑षम॒ग्नेर॒ग्नेः पुरी॑षमस्यसि॒ पुरी॑षम॒ग्नेर॒ग्नेः पुरी॑षमसि। पुरी॑षमस्यसि॒
पुरी॑ष॒म्पुरी॑षमसि। अ॒सीत्य॑सि॥१३॥

यु॒ञ्जते॒ मनो॒ मनो॑ यु॒ञ्जते॑ यु॒ञ्जते॒ मन॑ऽ उ॒तोत मनो॑ यु॒ञ्जते॑ यु॒ञ्जते॒ मन॑ऽ उ॒त। मन॑ऽ उ॒तोत मनो॒ मन॑ऽ उ॒त यु॑ञ्जते यु॒ञ्जत॑ऽ उ॒त मनो॒ मन॑ऽ उ॒त यु॑ञ्जते। उ॒त यु॑-ञ्जते यु॒ञ्जत॑ऽ उ॒तोत यु॑ञ्जते॒ धियो॒ धियो॑ यु॒ञ्जत॑ऽ उ॒तोत यु॑ञ्जते॒ धिय॑ः। यु॒ञ्ज॒ते धियो॒ धियो॑ यु॒ञ्जते यु॒ञ्जते॒ धियो॒ व्विप्रा॒ व्विप्रा॒ धियो॑ यु॒ञ्जते यु॒ञ्जते॒ धियो॒ व्विप्रा॑ः[1]। धियो॒ व्विप्रा॒ व्विप्रा॒ धियो॒ धियो॒ व्विप्रा॒ व्विप्र॑स्य॒ व्विप्र॑स्य॒ व्विप्रा॒ धियो॒ धियो॒ व्विप्रा॒ व्विप्र॑स्य। व्विप्रा॒ व्विप्र॑स्य॒ व्विप्र॑स्य॒ व्विप्रा॒ व्विप्रा॒ व्विप्र॑स्य बृह॒तो बृ॑ह॒तो व्विप्र॑स्य॒ व्विप्रा॒ व्विप्रा॒ व्विप्र॑स्य बृह॒तः। व्विप्र॑स्य बृह॒तो बृ॑ह॒तो व्विप्र॑स्य॒ व्विप्र॑स्य बृह॒तो व्वि॑प॒श्चितो॑ व्विप॒श्चितो॑ बृह॒तो व्विप्र॑स्य॒ व्विप्र॑स्य बृह॒तो व्वि॑प॒श्चित॑ः। बृ॒ह॒तो व्वि॑प॒श्चितो॑ व्विप॒श्चितो॑ बृह॒तो बृ॑ह॒तो व्वि॑प॒श्चित॑ः। व्वि॒प॒श्चित॒ऽ इति॑ विप॒ः चित॑ः॥ व्वि होत्रा॒ होत्रा॒ व्वि वि होत्रा॑ दधे दधे॒ होत्रा॒ व्वि वि होत्रा॑ दधे। होत्रा॑ दधे दधे॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दधे व्वयुना॒विद्व्वयुन॒विद्द॑धे॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दधे व्वयुना॒वित्[2]। द॒धे॒ व्व॒युना॒विद्व्वयुन॒विद्द॑धे दधे व्वयुना॒विदेक॒ऽ एको॑ व्वयुन॒विद्द॑धे दधे व्वयुना॒विदेक॑ः। व्व॒यु॒ना॒विदेक॒ऽ एको॑ व्वयुन॒विद्व्वयुना॒विदेक॒ऽ इदिदेको॑ व्वयुन॒विद्व्वयुना॒विदेक॒ऽ इत्। व्व॒यु॒न॒विदिति॑ वयुन॒ व्वित्। एक॒ऽ इदिदेक॒ऽ एक॒ऽ इन्न्म॒ही म॒हीदेक॒ऽ एक॒ऽ इन्म॒ही। इन्म॒ही म॒हीदि-न्म॒ही दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ म॒हीदिन्म॒ही दे॒वस्य॑। म॒ही दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ म॒ही म॒ही दे॒वस्य॑

[1].विप्राः विप्राः यहाँ लोपं धौ (वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र के अनुसार व (धिसंज्ञक वर्ण) होने से कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है।

[2]. वा. प्रा. ३.९७. के अनुसार यहाँ वयुन का अन्तिम स्वर वकार परे रहते दीर्घ होने पर वयुनावित् होता है।

सवि॒तुः॑ स॑वि॒तुर्दे॒वस्य॑ म॒ही म॒ही दे॒वस्य॑ सवि॒तुः॑। दे॒वस्य॑ सवि॒तुः॑ स॑वि॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ सवि॒तुः॑ परि॑ष्टुति॒ः परि॑स्तुतिः सवि॒तुर्दे॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ सवि॒तुः॑ परि॑ष्टुतिः। स॒वि॒तुः॑ परि॑ष्टुति॒ः परि॑स्तुतिः सवि॒तुः॑ स॑वि॒तुः॑ परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ परि॑स्तु-तिः सवि॒तुः॑ स॑वि॒तुः॑ परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॑। परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ परि॑स्तुति॒ः परि॑ष्टुति॒ः स्वाहा॑। परि॑स्तुति॒रिति॒ परि॑ स्तुतिः। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१४॥

इ॒दँव्विष्णु॒र्व्विष्ण॑रि॒दमि॒दँव्विष्णु॒र्व्वि वि विष्ण॑रि॒दमि॒दँव्विष्णु॒र्व्वि। व्विष्णु॒र्व्वि वि विष्णु॒र्व्विष्णु॒र्व्वि च॑क्रमे चक्रमे॒ व्वि विष्णु॒र्व्विष्णु॒र्व्वि च॑क्रमे। व्वि च॑क्रमे चक्रमे॒ व्वि वि च॑क्रमे त्रे॒धा त्रे॒धा च॑क्रमे॒ व्वि वि च॑क्रमे त्रे॒धा। च॒क्र॒मे॒ त्रे॒धा त्रे॒धा च॑क्रमे चक्रमे त्रे॒धा नि नि त्रे॒धा च॑क्रमे चक्रमे त्रे॒धा नि। त्रे॒धा नि नि त्रे॒धा त्रे॒धा नि द॑धे दधे॒ नि त्रे॒धा त्रे॒धा नि द॑धे। नि द॑धे दधे॒ नि नि द॑धे प॒दम्प॒दन्द॑धे॒ नि नि द॑धे प॒दम्। द॒धे॒ प॒दम्प॒दन्द॑धे दधे प॒दम्। प॒दमिति॑ प॒दम्॥ सम॑ूढमस्यास्य॒ सम॑ूढ॒ꣳ सम॑ूढमस्य पाꣳसुरे पा॑ꣳसुरे॒स्य॒ सम॑ूढ॒ꣳ सम॑ूढमस्य पाꣳसुरे। सम॑ूढ॒मिति॒ सम् ऊंढम्। अ॒स्य॒ पा॒ꣳसुरे पा॑ꣳसु॒रे॒स्यास्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॒ स्वाहा॑ पाꣳसु॒रे॒स्यास्य पाꣳसु॒रे स्वाहा॑। पा॒ꣳसुरे स्वाहा॒ स्वाहा॑ पाꣳसुरे पा॑ꣳसु॒रे स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१५॥

इरा॑वती धेनु॒मती॑ धेनु॒मती॒ऽ इरा॑वती॒ऽ इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि हि धे॑नु॒मती॒ऽ इरा॑वती॒ऽ इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि[1]। इरा॑वती॒ऽ इतीरा॑ व्वती। धे॒नु॒मती॒ हि हि धे॑नु॒म-ती॑ धेनु॒मती॒ हि भू॒तम्भू॒तꣳ हि धे॑नु॒मती॑ धेनु॒मती॒ हि भू॒तम्। धे॒नु॒मती॒ऽ इति॑ धेनु मती॑। हि भू॒तम्भू॒तꣳ हि हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑ सुयव॒सिनी॑ भू॒तꣳ हि हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑। भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॑ सुयव॒सिनी॑ भू॒तम्भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॒ मन॑वे॒ मन॑वे

---

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद मकृति भाव से रहता है। वा.प्रा.१.९३. के अनुसार इरावती यह पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

सुयव॒सिनी॑ भू॒तम्भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॒ मन॑वे। सू॒य॒व॒सिनी॒ मन॑वे॒ मन॑वे सुयव॒सिनी॑ सूयव॒सिनी॒ मन॑वे दश॒स्या द॑श॒स्या मन॑वे सुयव॒सिनी॑ सूयव॒सिनी॒ मन॑वे दश॒स्या। सु॒य॒व॒सिनी॒ऽ इति॑ सु य॒व॒सिनी॑। मन॑वे दश॒स्या द॑श॒स्या मन॑वे॒ मन॑वे दश॒स्या। द॒श॒स्येति॑ दश॒स्या॥ व्य॑स्कभ्ना॒ऽ अस्कभ्ना॒ वि व्य॑स्कभ्ना॒ रोद॑सी॒ रोद॑सीऽ अस्कभ्ना॒ वि व्य॑स्कभ्ना॒ रोद॑सी[1]। अ॒स्क॒भ्ना॒ रोद॑सी॒ रोद॑सीऽ अस्कभ्नाऽ अस्कभ्ना॒ रोद॑सी विष्णो विष्णो॒ रोद॑सीऽ अस्कभ्नाऽ अस्कभ्ना॒ रोद॑सी विष्णो । रोद॑सी विष्णो विष्णो॒ रोद॑सी॒ रोद॑सी विष्णवे॒तेऽ ए॒ते वि॑ष्णो॒ रोद॑सी॒ रोद॑सी विष्णवे॒ते[2]। रोद॑सी॒ऽ इति॒ रोद॑सी। वि॒ष्ण॒वे॒तेऽ ए॒ते वि॑ष्णो विष्णवे॒ते दा॒धर्त्थ॑ दा॒धर्त्थै॒ते वि॑ष्णो विष्णवे॒ते दा॒धर्त्थ॑। वि॒ष्णो॒ऽ इति॑ विष्णो। ए॒ते दा॒धर्त्थ॑ दा॒धर्त्थै॒तेऽ ए॒ते दा॒धर्त्थ॑ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीन्दा॒धर्त्थै॒तेऽ ए॒ते दा॒धर्त्थ॑ पृथि॒वीम्। ए॒तेऽ इत्ये॒ते। दा॒धर्त्थ॑ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीन्दा॒धर्त्थ॑ दा॒धर्त्थ॑ पृथि॒वीम॒भितो॒भित॑÷ पृथि॒वी-न्दा॒धर्त्थ॑ दा॒धर्त्थ॑ पृथि॒वीम॒भित॑÷। पृथि॒वीम॒भि॒तो॒भित॑÷ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखै॑र्म्म॒यूखै॑र॒भित॑÷ पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखै॑ः। अ॒भितो॑ म॒यूखै॑र्म्म॒यूखै॑र॒-भितो॒भितो॑ म॒यूखै॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ म॒यूखै॑र॒भितो॒भितो॑ म॒यूखै॒ः स्वाहा॑। म॒यूखै॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ म॒यूखै॑र्म्म॒यूखै॒ः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१६॥

दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒वेषु॒ दे॒वेषु॒ दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒वेष्वा घो॑षतङ्घोषत॒मा दे॒वेषु॒ दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒वेष्वा घो॑षतम्। दे॒व॒श्रुता॒विति॑ दे॒व॒ श्रुतौ॑। दे॒वेष्वा घो॑षत-

---

[1]. वि अ॒स्क॒भ्ना॒ः यहाँ युवर्णौ यवौ क्षैप्रः (वा. प्रा. १.११५) इस सूत्र से क्षैप्र संज्ञक स्वरित होता है।

[2]. विष्णो यह पद ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः(वा.प्रा.१.९४) इस सूत्र के अनुसार प्रगृह्य है। ओकारश्च(वा.प्रा.४.९३) के अनुसार पदान्तीय ओकार प्रकृतिभाव से रहता है। इस सूत्र में प्लुतमितौ (वा.प्रा.४.९२) से इति की अनुवृत्ति हो रही है। अतः इति पद बाद में होने पर ही ओकारान्त पद विष्णो प्रगृह्य होगा। एते पद परे होने पर प्रगृह्य नहीं होगा। ज्योत्स्नावृत्ति पृ.२२९ के अनुसार ओत् (पा.१.११५) इत्यनेन प्रगृह्यत्वम्। ओकारश्च(ज्यो.५१६ शु.प्रा.४.९२) इत्यनेन विहितप्रगृह्यनिमित्तप्रकृतिभावस्तु इतौ(ज्यो.५१६ शु.प्रा.४.९१. अनुवृत्तिः) प्रकृतिभावविधानादन्यत्र न। अत एव- विष्णवेते (सं.५.१६ पद ५.१६) इत्यत्र अवादेशः।

ङ्घोषतमा देवेषु देवेष्ष्वा घोषतम्प्राची प्प्राचीं घोषतमा देवेषु देवेष्ष्वा घोषतम्प्राचीं
। आ घोषतम्। घोषतम्प्राची प्प्राचीं घोषतङ्घोषतम्प्राची प्प्र प्प्र प्प्राचीं घोषतङ्घो-
षतम्प्राची प्प्र। प्राची प्प्र प्प्र प्प्राची प्प्राची प्प्रेतमितम्प्र प्प्राची प्प्राची प्प्रेतम्।
प्राचीऽ इति प्प्राचीं। प्रेतमितम्प्र प्प्रेतमद्धुरमद्धुरमितम्प्र प्प्रेतमद्धुरम्। इतमद्धुरम-
द्धुरमितमितमद्धुरङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ अद्धुरमितमितमद्धुरङ्कल्प्पयन्ती[1]।
अद्धुरङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ अद्धुरमद्धुरङ्कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्धमूर्द्धङ्कल्प्पयन्तीऽ
अद्धुरमद्धुरङ्कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्धम्। कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्धमूर्द्धङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पय-
न्तीऽ ऊर्द्धँऽय्यज्ञँऽय्यज्ञमूर्द्धङ्कल्प्पयन्ती कल्प्पयन्तीऽ ऊर्द्धँऽय्यज्ञम्। कल्प्पय-
न्तीऽ इति कल्प्पयन्ती। ऊर्द्धँऽय्यज्ञँऽय्यज्ञमूर्द्धमूर्द्धँऽय्यज्ञन्नयतन्नयतँऽय्यज्ञमू-
र्द्धमूर्द्धँऽय्यज्ञन्नयतम्। य्यज्ञन्नयतन्नयतँऽय्यज्ञँऽय्यज्ञन्नयतम्मा मा नयतँऽय्यज्ञँ-
ऽय्यज्ञन्नयतम्मा। नयतम्मा मा नयतन्नयतम्मा जिह्वरतञ्जिह्वरतम्मा नयतन्नय-
तम्मा जिह्वरतम्। मा जिह्वरतञ्जिह्वरतम्मा मा जिह्वरतम्। जिह्वरतमिति जिह्वर-
तम्॥ स्वङ्गोष्ठङ्गोस्त्थꣳ स्वꣳ स्वङ्गोष्ठमा वदतँव्वदतमा गोस्त्थꣳ स्वꣳ स्वङ्गोष्ठमा
वदतम्। गोष्ठमा वदतँव्वदतमा गोस्त्थङ्गोष्ठमा वदतन्देवी देवी व्वदतमा गोस्त्थङ्गो-
ष्ठमा वदतन्देवी। गोस्त्थमिति गो स्थम्। आ वदतम्। व्वदतन्देवी देवी व्वदतँव्वद-
तन्देवी दुर्य्ये दुर्य्ये देवी व्वदतँव्वदतन्देवी दुर्य्ये। देवी दुर्य्ये दुर्य्ये देवी देवी दुर्य्येऽ
आयुरायुर्दुर्य्ये देवी देवी दुर्य्येऽ आयुः। देवीऽ इति देवी। दुर्य्येऽ आयुरायुर्दुर्य्ये
दुर्य्येऽ आयुर्म्मा मायुर्दुर्य्ये दुर्य्येऽ आयुर्म्मा। दुर्य्येऽ इति दुर्य्ये। आयुर्म्मा मायुरा-
युर्म्मा निर्न्निर्म्मायुरायुर्म्मा निः। मा निर्न्निर्म्मा मा निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्म्मा मा
निर्व्वादिष्टम्। निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टम्प्रजाम्प्रजाँव्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टम्प्रजाम्।
व्वादिष्टम्प्रजाम्प्रजाँव्वादिष्टँव्वादिष्टम्प्रजाम्मा मा प्प्रजाँव्वादिष्टँव्वादिष्टम्प्रजाम्मा।

[1]. एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ कल्पयन्ती पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

प्रजाम्मा मा प्प्रजाम्प्रजाम्मा निर्न्निर्म्मा प्प्रजाम्प्रजाम्मा निः। प्रजामिति प्प्र जाम्। मा निर्न्निर्म्मा मा निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्म्मा मा निर्व्वादिष्टम्। निर्व्वादिष्टँव्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टमत्रात्र व्वादिष्टन्निर्न्निर्व्वादिष्टमत्र। व्वादिष्टमत्रात्र व्वादिष्टँव्वादिष्टमत्र रमेथाᳫं रमेथामत्र व्वादिष्टँव्वादिष्टमत्र रमेथाम्। अत्र रमेथाᳫं रमेथामत्रात्र रमेथाँव्वर्ष्ष्मन्न्वर्ष्ष्मन्न्रमेथामत्रात्र रमेथाँव्वर्ष्ष्मन्[1]। रमेथाँव्वर्ष्ष्मन्न्वर्ष्ष्मन्न्रमेथाᳫं रमेथाँव्वर्ष्ष्मन्न्पृथिव्याः पृथिव्या व्वर्ष्ष्मन्न्रमेथाᳫं रमेथाँव्वर्ष्ष्मन्न्पृथिव्याः। व्वर्ष्ष्मन्पृथिव्याः पृथिव्या व्वर्ष्ष्मन्न्वर्ष्ष्मन्न्पृथिव्याः। पृथिव्याऽ इति पृथिव्याः॥१७॥

व्विष्ण्णोर्न्नु नु व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णोर्न्नु कङ्कन्नु व्विष्ण्णोर्व्विष्ण्णोर्न्नु कम्। नु कङ्कन्नु नु कँव्वीर्य्याणि व्वीर्य्याणि कन्नु नु कँव्वीर्य्याणि। कँव्वीर्य्याणि व्वीर्य्याणि कङ्कँव्वीर्य्याणि प्प्र प्प्र वीर्य्याणि कङ्कँव्वीर्य्याणि प्प्र। व्वीर्य्याणि प्प्र प्प्र वीर्य्याणि व्वीर्य्याणि प्प्र वोचँव्वोचम्प्र वीर्य्याणि व्वीर्य्याणि प्र वोचम्। प्र वोचँव्वोचम्प्र प्प्र वोचँय्यो यो व्वोचम्प्र प्प्र वोचँय्यः। व्वोचँय्यो यो व्वोचँव्वोचँय्यः पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि यो व्वोचँव्वोचँय्यः पार्त्थिवानि। यः पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि यो यः पार्त्थिवानि व्विममे व्विममे पार्त्थिवानि यो यः पार्त्थिवानि व्विममे। पार्त्थिवानि व्विममे व्विममे पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि व्विममे रजाᳫंसि रजाᳫंसि व्विममे पार्त्थिवानि पार्त्थिवानि व्विममे रजाᳫंसि। व्विममे रजाᳫंसि रजाᳫंसि व्विममे व्विममे रजाᳫंसि। व्विममऽ इति वि ममे। रजाᳫंसीति रजाᳫंसि॥ योऽ अस्कभायदस्कभायद्यो योऽ अस्कभायदुत्तरमुत्तरमस्कभायद्यो योऽ अस्कभायदुत्तरम्। अस्कभायदुत्तरमुत्तरमस्कभायदस्कभायदुत्तरᳬ सधस्त्थᳬ सधस्त्थमुत्तरमस्कभायदस्कभायदुत्तरᳬ सधस्त्थम्। उत्तरᳬ सधस्त्थᳬ सधस्त्थमुत्तरमुत्तरᳬ सधस्त्थँव्विचक्रमाणो व्विच-

[1].व्वर्ष्ष्मन् यहाँ पर परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः(वा.प्रा.४.१०६) इन सूत्रों से क्रमशः षकार का द्वित्व प्राप्त है, मकार का द्वित्व प्राप्त नहीं है।

क्रमाणः सधस्त्थमुत्तरमुत्तरꣳ सधस्त्थँव्विचक्रमाणः। उत्तरमित्युत् तरम्[1]।
सधस्त्थँव्विचक्रमाणो व्विचक्रमाणः सधस्त्थꣳ सधस्त्थँव्विचक्रमाणस्त्रेधा त्रेधा
व्विचक्रमाणः सधस्त्थꣳ सधस्त्थँव्विचक्रमाणस्त्रेधा। सधस्त्थमिति सध स्थम्।
व्विचक्रमाणस्त्रेधा त्रेधा व्विचक्रमाणो व्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायऽ उरुगायस्त्रेधा
व्विचक्रमाणो व्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः। व्विचक्रमाणऽ इति वि चक्रमाणः।
त्रेधोरुगायऽ उरुगायस्त्रेधा त्रेधोरुगायो व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवऽ उरुगायस्त्रेधा
त्रेधोरुगायो व्विष्ण्णवे। उरुगायो व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवऽ उरुगायऽ उरुगायो
व्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवऽ उरुगायऽ उरुगायो व्विष्ण्णवे त्वा। उरुगायऽ इत्युरु
गायः। व्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे त्वा। त्वेति त्वा॥१८॥

दिवो वा वा दिवो दिवो वा व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो वा दिवो दिवो वा व्विष्ण्णो। वा
व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो वा वा व्विष्ण्णऽ उतोत व्विष्ण्णो वा वा व्विष्ण्णऽ उत[2]। व्विष्ण्णऽ
उतोत व्विष्ण्णो व्विष्ण्णऽ उत वा वोत व्विष्ण्णो व्विष्ण्णऽ उत वा। व्विष्ण्णोऽ इति
विष्ण्णो[3]। उत वा वोतोत वा पृथिव्व्याः पृथिव्व्या वोतोत वा पृथिव्व्याः। वा
पृथिव्व्याः पृथिव्व्या वा वा पृथिव्व्या महो महः पृथिव्व्या वा वा पृथिव्व्या महः।
पृथिव्व्या महो महः पृथिव्व्याः पृथिव्व्या महो वा वा महः पृथिव्व्याः पृथिव्व्या महो
वा। महो वा वा महो महो वा व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो वा महो महो वा व्विष्ण्णो। वा
व्विष्ण्णो व्विष्ण्णो वा वा व्विष्ण्णऽ उरोरुरोर्व्विष्ण्णो वा वा व्विष्ण्णऽ उरोः। व्विष्ण्णऽ
उरोरुरोर्व्विष्ण्णो व्विष्ण्णऽ उरोरन्तरिक्क्षादन्तरिक्क्षादुरोर्व्विष्ण्णो व्विष्ण्णऽ उरोर-
न्तरिक्क्षात्। व्विष्ण्णोऽ इति विष्ण्णो। उरोरन्तरिक्क्षादन्तरिक्क्षादुरोरुरोरन्त-

---

[1] .तरतमयोश्चातिशयेऽदक्षिणप्रत्यासङ्गे (वा. प्रा. ५.२) इस सूत्र के अनुसार यहाँ उत्तरम् पद का पृथक्करण विहित है।

[2]. न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र के अनुसार असमान उच्चारण-स्थान वाला स्वर बाद में होने पर वकार का लोप नहीं होता, यह नियम काण्व शाखा के लिये नहीं है, यह काण्वशाखीय भाष्यकार अनन्त का मत है।

[3]. ओकारश्च पदान्तेऽनवग्रहः (वा. प्रा. १.९४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ ओकार प्रगृह्यसंज्ञक है।

रिंक्षात्। अन्तरिंक्षादित्यन्तरिंक्षात्॥ उभा हि ह्युभोभा हि हस्ता हस्ता ह्युभोभा हि हस्तां। हि हस्ता हस्ता हि हि हस्ता ब्वसुना ब्वसुना हस्ता हि हि हस्ता ब्वसुना। हस्ता ब्वसुना ब्वसुना हस्ता हस्ता ब्वसुना पृणस्वं पृणस्व ब्वसुना हस्ता हस्ता ब्वसुना पृणस्वं। ब्वसुना पृणस्वं पृणस्व ब्वसुना ब्वसुना पृणस्वा प्प्र प्प्रा पृणस्व ब्वसुना ब्वसुना पृणस्वा प्प्र। पृणस्वा प्प्र प्प्रा पृणस्वं पृणस्वा प्प्र यंच्छ यच्छ प्प्रा पृणस्वं पृणस्वा प्प्र यंच्छ। आ प्प्र। प्र यंच्छ यच्छ प्प्र प्प्र यंच्छ दक्षिणाद्दक्षिणाद्यच्छ प्प्र प्प्र यंच्छ दक्षिणात्[1]। यच्छ दक्षिणाद्दक्षिणाद्य-च्छ यच्छ दक्षिणादोतोता दक्षिणाद्यच्छ यच्छ दक्षिणादोत। दक्षिणादोतो-ता दक्षिणाद्दक्षिणादोत सुव्यात्सुव्यादुता दक्षिणाद्दक्षिणादोत सुव्यात्। ओत। उत सुव्यात्सुव्यादुतोत सुव्याद्विष्णवे ब्विष्णवे सुव्यादुतोत सुव्याद्विष्णवे। सुव्याद्विष्णवे ब्विष्णवे सुव्यात्सुव्याद्विष्णवे त्वा त्वा ब्विष्णवे सुव्यात्सुव्याद्वि-ष्णवे त्वा। ब्विष्णवे त्वा त्वा ब्विष्णवे ब्विष्णवे त्वा। त्वेतिं त्वा॥१९॥

प्र तत्तत्प्र प्प्र तद्विष्णुर्ब्विष्णुस्तत्प्र प्प्र तद्विष्णुः। तद्विष्णुर्ब्विष्णुस्तत्त-द्विष्णुं स्तवते स्तवते ब्विष्णुस्तत्तद्विष्णुं स्तवते[2]। ब्विष्णुं स्तवते स्तवते ब्विष्णुर्ब्विष्णुं स्तवते ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण स्तवते ब्विष्णुर्ब्विष्णुं स्तवते ब्वीर्य्येण। स्तवते ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण स्तवते स्तवते ब्वीर्य्येण मृगो मृगो ब्वीर्य्येण स्तवते स्तवते ब्वीर्य्येण मृगः। ब्वीर्य्येण मृगो मृगो ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण मृगो न न मृगो ब्वीर्य्येण ब्वीर्य्येण मृगो न। मृगो न न मृगो मृगो न भीमो भीमो न मृगो मृगो न भीमः। न भीमो भीमो न न भीमः कुंचरः कुंचरो भीमो न न भीमः कुंचरः। भीमः कुंचरः कुंचरो भीमो भीमः कुंचरो गिंरिष्ठा गिंरिस्त्थाः कुंचरो भीमो भीमः

[1]. दक्षिणा च(वा.प्रा.२.२९) दक्षिणा पद आद्युदात्त होता है।

[2]. विष्णुः स्तवते यहाँ पर लुङ् मुदि जितपरे (वा. प्रा. ३.१३) के अनुसार विसर्ग का लोप होता है।

कुंचरो गिरिष्ठाः। कुचरो गिरिष्ठा गिरिस्स्थाः कुंचरः कुंचरो गिरिष्ठाः। गिरिस्स्थाऽ इति गिरि स्थाः॥ यस्योरुषूरुषु यस्य यस्योरुषु त्रिषु त्रिषूरुषु यस्य यस्योरुषु त्रिषु[1]। उरुषु त्रिषु त्रिषूरुषूरुषु त्रिषु विक्रमणेषु विक्रमणेषु त्रिषूरुषूरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। त्रिषु विक्रमणेषु विक्रमणेषु त्रिषु त्रिषु विक्रमणेष्ष्वधिक्क्षिय-न्त्यधिक्क्षियन्ति विक्रमणेषु त्रिषु त्रिषु विक्रमणेष्ष्वधिक्क्षियन्ति। विक्रमणेष्ष्व-धिक्क्षियन्त्यधिक्क्षियन्ति विक्रमणेषु विक्रमणेष्ष्वधिक्क्षियन्ति भुवनानि भुवनान्न्यधिक्क्षियन्ति विक्रमणेषु विक्रमणेष्ष्वधिक्क्षियन्ति भुवनानि। विक्रम-णेष्ष्विति वि क्रमणेषु। अधिक्क्षियन्ति भुवनानि भुवनान्न्यधिक्क्षियन्त्यधिक्क्षि-यन्ति भुवनानि विश्श्वा विश्श्वा भुवनान्न्यधिक्क्षियन्त्यधिक्क्षियन्ति भुवनानि विश्श्वा[2]। अधिक्क्षियन्तीत्त्यधि क्षियन्ति। भुवनानि विश्श्वा विश्श्वा भुवनानि भुवनानि विश्श्वा। विश्श्वेति विश्श्वा॥२०॥

विष्ष्णो ररराटꣳ रराटꣳविष्ष्णोर्विष्ष्णो रराटमस्यसि रराटꣳविष्ष्णोर्विष्ष्णो रराटमसि। रराटमस्यसि रराटꣳ रराटमसि श्न्नप्प्त्रे श्न्नप्प्त्रेऽ असि रराटꣳ रराटमसि श्न्नप्प्त्रे। असि श्न्नप्प्त्रे श्न्नप्प्त्रेऽ अस्यसि श्न्नप्प्त्रे स्स्थ स्स्थः श्नप्प्त्रेऽ अस्यसि श्न्नप्प्त्रे स्स्थः। श्नप्प्त्रे स्स्थ स्स्थः श्नप्प्त्रे श्न्नप्प्त्रे स्स्थः स्यूः स्यू स्स्थः श्नप्प्त्रे श्न्नप्प्त्रे स्स्थः स्यूः[3]। श्नप्प्त्रेऽ इति श्न्नप्प्त्रे। स्थः स्यूः स्यू स्स्थ स्स्थः स्यूर्द्धुवो द्धुवः स्यू स्स्थ स्स्थः स्यूर्द्धुवः। स्यूर्द्धुवो द्धुवः स्यूः स्यूर्द्धुवो वैष्ष्णवँवैष्ष्णवन्ध्रुवः स्यूः स्यूर्द्धुवो वैष्ष्णवम्। ध्रुवो वैष्ष्णवँवैष्ष्णवन्ध्रुवो द्धुवो

[1]. उरुषु त्रिषु तथा उरुषु उरुषु यहाँ सिं संज्ञक स्वर उ सवर्ण परे रहते सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है। अथैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत उपर्युक्त सूत्र आता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) सूत्र से उ सिं संज्ञक है।

[2]. वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद स्वरान्त है।

[3]. स्थः स्यूः यहाँ पर विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः (वा. प्रा. ४.१०७) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय से परवर्ती स्पर्श व्यञ्जन परे रहते द्वित्व को प्राप्त करता है यहाँ उक्त स्थिति न होने से सकार का द्वित्व नहीं होगा।

व्वैँष्ण॒वँव्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे व्वैष्ण॒वन्ध्रु॒वो ध्रु॒वो व्वैँष्ण॒वँव्विष्ण॑वे॥ व्वै॒ष्ण॒वँव्विष्ण॑-
वे॒ व्विष्ण॑वे व्वैष्ण॒वँव्वैँष्ण॒वँव्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे व्वैष्ण॒वँव्वैँष्ण॒वँव्विष्ण॑वे
त्वा। व्विष्ण॑वे त्वा त्वा॒ व्विष्ण॑वे॒ व्विष्ण॑वे त्वा। त्वेति॑ त्वा॥२१॥

नाऽर्व्वँस्यसि॒ नारी॒ नाऽर्व्वँसी॒दमि॒दम॑सि॒ नारी॒ नाऽर्व्वँसी॒दम्। अ॒सी॒दमि॒दम॑-
स्यसी॒दम॒हम॒हमि॒दम॑स्यसी॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्ष॑सा॒ꣳ रक्ष॑-
सामहमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्ष॑साम्। अ॒हꣳ रक्ष॑सा॒ꣳ रक्ष॑साम॒हम॒हꣳ रक्ष॑साग्ग्री॒-
वा ग्ग्री॒वा रक्ष॑साम॒हम॒हꣳ रक्ष॑साग्ग्री॒वाः। रक्ष॑साग्ग्री॒वा ग्ग्री॒वा रक्ष॑सा॒ꣳ
रक्ष॑साग्ग्री॒वाऽ अप्प्यपि॑ ग्ग्री॒वा रक्ष॑सा॒ꣳ रक्ष॑साग्ग्री॒वाऽ अपि॑। ग्री॒वाऽ अप्प्यपि॑
ग्ग्री॒वा ग्ग्री॒वाऽ अपि॑ कृन्तामि कृन्ता॒म्म्यपि॑ ग्ग्री॒वा ग्ग्री॒वाऽ अपि॑ कृन्तामि। अपि॑
कृन्तामि कृन्ता॒म्म्यप्प्यपि॑ कृन्तामि। कृ॒न्ता॒मीति॑ कृन्तामि॥ बृ॒हन्न॑स्यसि
बृ॒हन्न्बृ॒हन्न॑सि बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒हद्द्र॑वाऽ असि बृ॒हन्न्बृ॒हन्न॑सि बृ॒हद्द्र॑वाः। अ॒सि॒ बृ॒हद्द्र॑वा
बृ॒हद्द्र॑वाऽ अस्यसि बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒ह॒तीम्बृ॒ह॒तीम्बृ॒हद्द्र॑वाऽ अस्यसि बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒ह॒तीम्।
बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒ह॒तीम्बृ॒ह॒तीम्बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒ह॒तीमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य बृ॒ह॒तीम्बृ॒हद्द्र॑वा बृ॒हद्द्र॑वा
बृ॒ह॒तीमिन्द्रा॑य। बृ॒हद्द्र॑वा॒ऽ इति॑ बृ॒हत् र॑वाः। बृ॒ह॒तीमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य बृ॒ह॒तीम्बृ॒ह॒ती-
मिन्द्रा॑य॒ व्वाचँ॒व्वाच॒मिन्द्रा॑य बृ॒ह॒तीम्बृ॒ह॒तीमिन्द्रा॑य॒ व्वाच॑म्। इन्द्रा॑य॒ व्वाचँ॒व्वाच॒मि-
न्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ व्वाचँव्वद व्वद॒ व्वाच॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ व्वाचँव्वद[1]। व्वाचँव्वद व्वद॒ व्वाचँ॒व्वाचँव्वद।
व्व॒देति॑ वद॥२२॥

र॒क्षो॒हणँ॒व्वलग॒हनँ॒व्वलग॒हन॑ꣳ रक्षो॒हन॑ꣳ रक्षो॒हणँ॒व्वलग॒हनँ॒व्वैष्ण॒वीँव्वै-
ष्ण॒वीँव्वलग॒हन॑ꣳ रक्षो॒हन॑ꣳ रक्षो॒हणँ॒व्वलग॒हनँ॒व्वैष्ण॒वीम्। र॒क्षो॒हन॒मिति॑
रक्ष॒ः हन॑म्। व्व॒ल॒ग॒हनँ॒व्वैष्ण॒वीँव्वैष्ण॒वीँव्वलग॒हनँ॒व्वलग॒हनँ॒व्वैष्ण॒वीमि॒दमि॒दँ॒व्वै-

---

[1].वाचम् वाचम् तथा वाचम् वद यहाँ अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम्(वा.प्रा.४.१०) इस सूत्र से अन्तस्थ वर्ण(व) बाद में होने से मकार अनुनासिक अन्तस्थ व होता है।

ष्ण॒वीँ॑ब्वलग॒हनँ॑ब्वलग॒हनँ॑ब्वैष्ण॒वीमि॒दम्। ब्व॒ल॒ग॒ह॒नमिति॑ वलग॒ हन॑म्। ब्वै॒ष्ण॒-
वीमि॒दमि॒दँ॑ब्वैष्ण॒वीँ॑ब्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हम॒हमि॒दँ॑ब्वैष्ण॒वीँ॑ब्वैष्ण॒वीमि॒दम॒हम्। इ॒दम॒ह-
म॒हमि॒दमि॒दम॒हन्तन्तम॒हमि॒दमि॒दम॒हन्तम्। अ॒हन्तन्तम॒हम॒हन्तँ॑ब्वल॒गँ॑ब्वल॒गन्त-
म॒हम॒हन्तँ॑ब्वल॒गम्। तँ॑ब्वल॒गँ॑ब्वल॒गन्तन्तँ॑ब्वल॒गमुदु॒द्बल॒गन्तन्तँ॑ब्वल॒गमुत्। ब्व॒ल॒गमु-
दु॒द्बल॒गँ॑ब्वल॒गमुत्त्किँ॑रामि किरा॒म्म्युद्बल॒गँ॑ब्वल॒गमुत्त्किँ॑रामि[1]। उत्त्किँ॑रामि किरा॒-
म्म्युदुत्त्किँ॑रामि॒ षँ॑ठ्षङ्किँ॑रा॒म्म्युदुत्त्किँ॑रामि॒ षम्। कि॒रा॒मि॒ षँ॑ठ्षङ्किँ॑रामि किरामि॒
षम्मे॑ मे॒ षङ्किँ॑रामि किरामि॒ षम्मे॑। षम्मे॑ मे॒ षँ॑ठ्षम्मे॒ निष्ट्यो॒ निष्ट्यो॑ मे॒ षँ॑ठ्षम्मे॒
निष्ट्य॑ः। मे॒ निष्ट्यो॒ निष्ट्यो॑ मे मे॒ निष्ट्यो॒ षँ॑ठ्षन्निष्ट्यो॑ मे मे॒ निष्ट्यो॒ षम्। निष्ट्यो॒
षँ॑ठ्षन्निष्ट्यो॒ निष्ट्यो॒ षम॒मात्त्यो॒मात्त्यो॒ षन्निष्ट्यो॒ निष्ट्यो॒ षम॒मात्त्य॑ः।
षम॒मात्त्यो॒मात्त्यो॒ षँ॑ठ्षम॒मात्त्यो॑ निच॒ख्खान॑ निच॒ख्खाना॒मात्त्यो॒ षँ॑ठ्षम॒मात्त्यो॑ निच॒-
ख्खान॑। अ॒मात्त्यो॑ निच॒ख्खान॑ निच॒ख्खाना॒मात्त्यो॒मात्त्यो॑ निच॒ख्खान॑ सम॒ानः सं॑मा॒नो
निं॑च॒ख्खाना॒मात्त्यो॒मात्त्यो॑ निच॒ख्खान॑ सम॒ानः। नि॒च॒ख्खान॑ सम॒ानः सं॑मा॒नो निं॑च॒-
ख्खान॑ निच॒ख्खान॑ सम॒ानोसं॑मा॒नोसं॑मानः सम॒ानो निं॑च॒ख्खान॑ निच॒ख्खान॑ सम॒ानोसं॑-
मानः। नि॒च॒ख्खानेति॑ नि च॒ख्खान॑। स॒मा॒नोसं॑मा॒नोसं॑मानः सम॒ानः सं॑मा॒नो-
सं॑मान॒ः सब॑न्धु॒ः सब॑न्धु॒रसं॑मानः सम॒ानः सं॑मा॒नोसं॑मान॒ः सब॑न्धुः। असं॑मान॒ः
सब॑न्धु॒ः सब॑न्धु॒रसं॑मा॒नोसं॑मान॒ः सब॑न्धु॒रसं॑बन्धु॒रसं॑बन्धु॒ः सब॑न्धु॒रसं॑मा॒नोसं॑मा-
न॒ः सब॑न्धु॒रसं॑बन्धुः। सब॑न्धु॒रसं॑बन्धु॒रसं॑बन्धु॒ः सब॑न्धु॒ः सब॑न्धु॒रसं॑बन्धुः सजा॒-
तः सं॑जा॒तोसं॑बन्धु॒ः सब॑न्धु॒ः सब॑न्धु॒रसं॑बन्धुः सजा॒तः। सब॑न्धु॒रिति॒ स ब॑न्धुः।
असं॑बन्धुः सजा॒तः सं॑जा॒तोसं॑बन्धु॒रसं॑बन्धुः सजा॒तोसं॑जा॒तोसं॑जातः सजा॒तो-
सं॑बन्धु॒रसं॑बन्धुः सजा॒तोसं॑जातः। असं॑बन्धु॒रित्त्यसं॑ बन्धुः। स॒जा॒तोसं॑जा॒तोसं॑-
जातः सजा॒तः सं॑जा॒तोसं॑जात॒ऽ उदुदसं॑जातः सजा॒तः सं॑जा॒तोसं॑जात॒ऽ उत्।

[1]. वा. प्रा. ५.३५. के अनुसार वलगम् पद का पृथक्करण विहित नहीं है।

सजातऽ इति स जातः। असंजातऽ उदुदसंजातोसंजातऽ उत्कृत्याङ्कृत्या-मुदसंजातोसंजातऽ उत्कृत्याम्[1]। उत्कृत्याङ्कृत्यामुदुत्कृत्याङ्किरामि किरामि कृत्यामुदुत्कृत्याङ्किरामि। कृत्याङ्किरामि किरामि कृत्याङ्कृत्याङ्किरामि। किरामीति किरामि॥२३॥

स्वराडस्यसि स्वराट् स्वराडसि सपत्नहा संपत्नहासि स्वराट् स्वराडसि सपत्नहा। स्वराडिति स्व राट्। असि सपत्नहा संपत्नहास्यसि सपत्नहा संत्रराट् संत्रराट् संपत्नहास्यसि सपत्नहा संत्रराट्[2]। सपत्नहा संत्रराट् संत्रराट् संपत्नहा संपत्नहा संत्रराडभिमातिहाभिमातिहा संत्रराट् संपत्नहा संपत्नहा संत्रराडभिमातिहा। सपत्नहेति सपत्न हा। सत्रराडभिमातिहाभिमातिहा संत्रराट् संत्रराडभिमातिहा जंनराड् जंनराडभिमातिहा संत्रराट् संत्रराडभिमा-तिहा जंनराट्। सत्रराडिति सत्र राट्। अभिमातिहा जंनराड् जंनराडभि-मातिहाभिमातिहा जंनराड्रक्षोहा रक्षोहा जंनराडभिमातिहाभिमातिहा जंनराड्रक्षोहा। अभिमातिहेत्यभिमाति हा। जनराड्रक्षोहा रक्षोहा जंनराड् जंनराड्रक्षोहा संब्रराट् संब्रराड्रक्षोहा जंनराड् जंनराड्रक्षोहा संब्रराट्। जनराडिति जन राट्। रक्षोहा संब्रराट् संब्रराड्रक्षोहा रक्षोहा संब्रराड-मित्रहामित्रहा संब्रराड्रक्षोहा रक्षोहा संब्रराडमित्रहा। रक्षोहेति रक्षः हा। सब्रराडमित्रहामित्रहा संब्रराट् संब्रराडमित्रहा। सब्रराडिति सब्र राट्। अमित्रहेत्यमित्र हा॥२४॥

---

[1]. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार असजातः इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[2]. सत्रराट् यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार तकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु वा.प्रा.६.२७. के अनुसार उसका विरोध होता है। सत्रराट् समस्त पद है, यहाँ भी अवग्रह होने के कारण वा.प्रा.६.२७. प्रवर्तित होगा, क्योंकि प्रातिशाख्यों की प्रवृत्ति पद को मानकर होती है।

र॒क्ष्॒ोहणो॑ वो वो रक्ष्॒ोहनो॑ रक्ष्॒ोहणो॑ वो ब्वलग॒हनो॑ ब्वलग॒हनो॑ वो रक्ष्॒ोहनो॑ रक्ष्॒ोहणो॑ वो ब्वलग॒हन॑÷। र॒क्ष्॒ोहन॒ऽ इति॑ रक्ष॒ꣳ हन॑÷। ब्वो॒ ब्व॒ल॒ग॒हनो॑ ब्वलग॒हनो॑ वो वो ब्वलग॒हन॒ꣳ प्प्र प्प्र व॑लग॒हनो॑ वो वो ब्वलग॒हन॒ꣳ प्प्र। ब्व॒ल॒ग॒हन॒ꣳ प्प्र प्प्र व॑लग॒हनो॑ ब्वलग॒हन॒ꣳ प्प्रोक्ष्॑ाम्म्युक्ष्ामि॒ प्प्र व॑लग॒हनो॑ ब्वलग॒हन॒ꣳ प्प्रोक्ष्॑ामि। ब्व॒ल॒ग॒हन॒ऽ इति॑ वलग॒ हन॑÷। प्रोक्ष्॑ाम्म्युक्ष्ामि॒ प्प्र प्प्रोक्ष्॑ामि ब्वैष्ण॒वान्वैष्ण॒वानु॑क्ष्ामि॒ प्प्र प्प्रोक्ष्॑ामि ब्वैष्ण॒वान्। उ॒क्ष्ा॒मि॒ ब्वै॒ष्ण॒वान्वैष्ण॒वानु॑क्ष्ाम्म्युक्ष्ामि ब्वैष्ण॒वानवाव॑ वैष्ण॒वानु॑क्ष्ाम्म्युक्ष्ामि ब्वैष्णवानव॑। ब्वै॒ष्ण॒वानवाव॑ वैष्ण॒वान्वैष्ण॒वानव॑ नयामि नया॒म्म्यव॑ वैष्ण॒-वान्वैष्ण॒वानव॑ नयामि[1]। अव॑ नयामि नया॒म्म्यवाव॑ नया॒म्म्यवाव॑ नया॒म्म्य-वाव॑ नया॒म्म्यव॑। न॒या॒म्म्यवाव॑ नयामि नया॒म्म्यव॑ स्तृणामि स्तृणा॒म्म्यव॑ नयामि नया॒म्म्यव॑ स्तृणामि। अव॑ स्तृणामि स्तृणा॒म्म्यवाव॑ स्तृणामि रक्ष्॒ोहणौ॑ रक्ष्॒ोहनौ॑ स्तृणा॒म्म्यवाव॑ स्तृणामि रक्ष्॒ोहणौ॑। स्तृ॒णा॒मि॒ र॒क्ष्॒ोहणौ॑ रक्ष्॒ोहनौ॑ स्तृणामि स्तृणामि रक्ष्॒ोहणौ॑ वाँब्वाꣳ रक्ष्॒ोहनौ॑ स्तृणामि स्तृणामि रक्ष्॒ोहणौ॑ वाम्। र॒क्ष्॒ोहणौ॑ वाँब्वाꣳ रक्ष्॒ोहनौ॑ रक्ष्॒ोहणौ॑ वाँब्वलग॒हनौ॑ ब्वलग॒हनौ॑ वाꣳ रक्ष्॒ोहनौ॑ रक्ष्॒ोहणौ॑ वाँब्वलग॒हनौ॑। र॒क्ष्ोहना॒विति॑ रक्ष॒ꣳ हनौ॑। ब्वाँ॒ब्व॒ल॒ग॒हनौ॑ ब्वलग॒हनौ॑ वाँब्वाँब्वलग॒हना॒ऽ उपोप॑ वलग॒हनौ॑ वाँब्वाँब्वलग॒हना॒ऽ उप॑। ब्व॒ल॒ग॒हना॒ऽ उपोप॑ वलग॒हनौ॑ ब्वलग॒हना॒ऽ उप॑ दधामि दधा॒म्म्युप॑ वलग॒हनौ॑ ब्वलग॒हना॒ऽ उप॑ दधामि। ब्व॒ल॒ग॒हना॒विति॑ वलग॒ हनौ॑। उप॑ दधामि दधा॒म्म्युपोप॑ दधामि ब्वैष्ण॒वी ब्वैष्ण॒वी द॑धा॒म्म्युपोप॑ दधामि ब्वैष्ण॒वी। द॒धा॒मि॒ ब्वै॒ष्ण॒वी ब्वैष्ण॒वी द॑धामि दधामि ब्वैष्ण॒वी परि॒ परि॑ वैष्ण॒वी द॑धामि दधामि ब्वैष्ण॒वी परि॑। ब्वै॒ष्ण॒वी परि॒

[1]. नाव नयामि (वा. प्रा. ३.१०६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अव पद के अन्तिम स्वर का दीर्घ नहीं होगा। सङ्क्रमे च वैष्णवान्(वा.प्रा.३.१४९) इस सूत्र के अनुसार सङ्क्रम में यहाँ वैष्णवान् का नकार भी विकार को नहीं प्राप्त होता है।

परि॑ वैष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वी पर्य्यूँहाम्म्यूहामि॒ परि॑ वैष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वी पर्य्यूँहामि।
ब्वै॒ष्ण॒वीऽ इति॑ वैष्ण॒वी। पर्य्यूँहाम्म्यूहामि॒ परि॒ पर्य्यूँहामि ब्वैष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वीऽ ऊ॑हामि॒ परि॒ पर्य्यूँहामि ब्वैष्ण॒वी। ऊ॒हा॒मि॒ ब्वै॒ष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वीऽ ऊ॑हाम्म्यूहामि ब्वैष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वीऽ ऊ॑हाम्म्यूहामि ब्वैष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वम्। ब्वै॒ष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वम॑स्यसि ब्वैष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वी ब्वैँष्ण॒वम॑सि। ब्वै॒ष्ण॒वीऽ इति॑ वैष्ण॒वी। ब्वै॒ष्ण॒वम॑स्यसि ब्वैष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वम॑सि ब्वैष्ण॒वा ब्वैँष्ण॒वाऽ अ॑सि ब्वैष्ण॒वँब्वैँष्ण॒वम॑सि ब्वैष्ण॒वाः। अ॒सि॒ ब्वै॒ष्ण॒वा ब्वैँष्ण॒वाऽ अ॑स्यसि ब्वैष्ण॒वा स्त्थ॑ स्त्थ ब्वैष्ण॒वाऽ अ॑स्यसि ब्वैष्ण॒वा स्त्थ॑। ब्वै॒ष्ण॒वा स्त्थ॑ स्त्थ ब्वैष्ण॒वा ब्वैँष्ण॒वा स्त्थ॑। स्थेति॑ स्त्थ॥२५॥

यवो॑स्यसि॒ यवो॒ यवो॑सि य॒वय॑ य॒वया॑सि॒ यवो॒ यवो॑सि य॒वय॑[1]। अ॒सि॒ य॒वय॑ य॒वया॑स्यसि य॒वया॒स्म्मद॒स्म्मद्य॒वया॑स्यसि य॒वया॒स्म्मत्। य॒वया॒स्म्मद॒-स्म्मद्य॒वय॑ य॒वया॒स्म्मद्द्वेषो॒ द्द्वेषो॒स्म्मद्य॒वय॑ य॒वया॒स्म्मद्द्वेष॑÷। अ॒स्म्मद्द्वेषो॒ द्द्वेषो॒स्म्म-द॒स्म्मद्द्वेषो॑ य॒वय॑ य॒वय॒ द्द्वेषो॒स्म्मद॒स्म्मद्द्वेषो॑ य॒वय॑। द्वेषो॑ य॒वय॑ य॒वय॒ द्द्वेषो॒ द्द्वेषो॑ य॒व-यारा॑ती॒ररा॑तीर्य्य॒वय॒ द्द्वेषो॒ द्द्वेषो॑ य॒वयारा॑तीः। य॒वयारा॑ती॒ररा॑तीर्य्य॒वय॑ य॒वयारा॑ती-र्द्दि॒वे दि॒वेरा॑तीर्य्य॒वय॑ य॒वयारा॑तीर्द्दि॒वे। अरा॑तीर्द्दि॒वे दि॒वेरा॑ती॒ररा॑तीर्द्दि॒वे त्वा॑ त्वा दि॒वेरा॑ती॒ररा॑तीर्द्दि॒वे त्वा॑। दि॒वे त्वा॑ त्वा दि॒वे दि॒वे त्वा॒न्तरि॑क्षाया॒न्तरि॑क्षाय त्वा दि॒वे दि॒वे त्वा॒न्तरि॑क्षाय। त्वा॒न्तरि॑क्षाया॒न्तरि॑क्षाय त्वा त्वा॒न्तरि॑क्षाय पृथि॒-ध्यै पृ॑थि॒ध्याऽ अ॒न्तरि॑क्षाय त्वा त्वा॒न्तरि॑क्षाय पृथि॒ध्यै। अ॒न्तरि॑क्षाय पृथि॒ध्यै पृ॑थि॒ध्याऽ अ॒न्तरि॑क्षाया॒न्तरि॑क्षाय पृथि॒ध्यै शुन्ध॑न्ता॒ꣳ शुन्ध॑न्ताम्पृथि॒ध्याऽ अ॒न्तरि॑क्षाया॒न्तरि॑क्षाय पृथि॒ध्यै शुन्ध॑न्ताम्। पृ॒थि॒ध्यै शुन्ध॑न्ता॒ꣳ शुन्ध॑न्ता-म्पृथि॒ध्यै पृ॑थि॒ध्यै शुन्ध॑न्ताँल्लो॒का लो॒काः शुन्ध॑न्ताम्पृथि॒ध्यै पृ॑थि॒ध्यै शुन्ध॑न्ताँ-

[1].यवः असि यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार असि के अकार का अभिनिधान होता है।

ल्लोकाः। शुन्धन्ताँल्लोका लोकाः शुन्धन्ताꣳ शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृसदना लोकाः शुन्धन्ताꣳ शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः। लोकाः पितृषदनाः पितृसदना लोका लोकाः पितृषदनाः पितृषदनम्पितृसदनम्पितृसदना लोका लोकाः पितृषदनाः पितृषदनम्[1]। पितृषदनाः पितृषदनम्पितृसदनम्पितृसदनाः पितृषदनाः पितृषदनमस्यसि पितृसदनम्पितृसदनाः पितृषदनाः पितृषदनमसि। पितृसदनाऽ इति पितृ सदनाः। पितृषदनमस्यसि पितृसदनम्पितृषदनमसि। पितृसदनमिति पितृ सदनम्। असीत्यसि॥२६॥

उद्दिवन्दिवमुदुद्दिवꣳ स्तभान स्तभान दिवमुदुद्दिवꣳ स्तभान[2]। दिवꣳ स्तभान स्तभान दिवन्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षमन्तरिक्षमा स्तभान दिवन्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षम्। स्तभानान्तरिक्षमन्तरिक्षमा स्तभान स्तभानान्तरिक्षम्पृण पृणान्तरिक्षमा स्तभान स्तभानान्तरिक्षम्पृण। आन्तरिक्षम्। अन्तरिक्षम्पृण पृणान्तरिक्षमन्तरिक्षम्पृण दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृणान्तरिक्षमन्तरिक्षम्पृण दृꣳहस्व। पृण दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृण पृण दृꣳहस्व पृथिव्याम्पृथिव्यान्दृꣳहस्व पृण पृण दृꣳहस्व पृथिव्याम्। दृꣳहस्व पृथिव्याम्पृथिव्यान्दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृथिव्यान्द्युतानो द्युतानः पृथिव्यान्दृꣳहस्व दृꣳहस्व पृथिव्यान्द्युतानः। पृथिव्यान्द्युतानो द्युतानः पृथिव्याम्पृथिव्यान्द्युतानस्त्वा त्वा द्युतानः पृथिव्याम्पृथिव्यान्द्युतानस्त्वा। द्युतानस्त्वा त्वा द्युतानो द्युतानस्त्वा मारुतो मारुतस्त्वा द्युतानो द्युतानस्त्वा मारुतः। त्वा मारुतो मारुतस्त्वा त्वा मारुतो मिनोतु मिनोतु मारुतस्त्वा त्वा मारुतो मिनोतु। मारुतो मिनोतु मिनोतु

1. पितृसदनाः तथा पितृसदनम् यहाँ भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) के अनुसार एक पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी(वा.प्रा.१.४६) के अनुसार ऋ की संज्ञा भावी है।

2. याज्ञवल्क्य शिक्षा में संयोग पिण्ड सात प्रकार के निर्देशित हैं। उद्दिवꣳ स्तभान यह मृत्पिण्ड का उदाहरण है। - या. शि. २०५

मारुतो मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ मिनोतु मारुतो मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ[1]। मिनोतु मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ मिनोतु मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण ध्रुवेण मित्रावरुणौ मिनोतु मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण। मित्रावरुणौ ध्रुवेण ध्रुवेण मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्म्मणा धर्म्मणा ध्रुवेण मित्रावरुणौ मित्रा-वरुणौ ध्रुवेण धर्म्मणा। ध्रुवेण धर्म्मणा धर्म्मणा ध्रुवेण ध्रुवेण धर्म्मणा। धर्म्मणे-ति धर्म्मणा॥ ब्रह्मवनिं त्वा त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं त्वा ब्रह्मवनिं ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं। ब्रह्मवनीतिं ब्रह्म वनिं। त्वा क्षत्रवनिं क्षत्रव-निं त्वा त्वा क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं त्वा त्वा क्षत्र-वनिं रायस्पोषवनिं। क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रव-निं रायस्पोषवनि परि परिं रायस्पोषवनिं क्षत्रवनिं क्षत्रवनिं रायस्पोषवनि परिं। क्षत्रवनीतिं क्षत्र वनिं। रायस्पोषवनि परि परिं रायस्पोषवनिं रायस्पो-षवनि पर्य्यूँहाम्म्यूहामि परिं रायस्पोषवनिं रायस्पोषवनि पर्य्यूँहामि। राय-स्पोषवनीतिं रायस्पोष वनिं[2]। पर्य्यूँहाम्म्यूहामि परि पर्य्यूँहामि। ऊहामीत्यूं-हामि॥ ब्रह्मं दृꣳह दृꣳह ब्रह्म ब्रह्मं दृꣳह क्षत्रङ्क्षत्रन्दृंꣳह ब्रह्म ब्रह्मं दृꣳह क्षत्रम्। दृꣳह क्षत्रङ्क्षत्रन्दृंꣳह दृꣳह क्षत्रमायुरायुं÷ क्षत्रन्दृंꣳह दृꣳह क्षत्रमायुं÷। क्षत्रमायुरायुं÷ क्षत्रङ्क्षत्रमायुं÷ प्प्रजाम्प्रजामायुं÷ क्षत्रङ्क्षत्रमायुं÷ प्प्रजाम्। आयुं÷ प्प्रजाम्प्रजामायुरायुं÷ प्प्रजाम्। प्रजामितिं प्प्र जाम्॥२७॥

ध्रुवास्यंसि ध्रुवा ध्रुवासिं ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवा ध्रुवासिं ध्रुवः। असि ध्रुवो ध्रुवोस्यसि ध्रुवोयमयन्ध्रुवोस्यसि ध्रुवोयम्। ध्रुवोयमयन्ध्रुवो ध्रुवोयँय्यजमानो यजमानोयन्ध्रुवो ध्रुवोयँय्यजमानः। अयँय्यजमानो यजमानोयमयँय्यजमानो-

---

[1]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार सम्बोधन न होने से यहाँ मित्रावरुणौ पद द्विरुदात है।

[2]. नि वनि नसः प्रपीनम् (वा. प्रा. ३.९०) इस सूत्र के अनुसार वनि का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

स्मिन्नस्मिन्न्यजमानोयमयँय्यजमानोस्मिन्। यजमानोस्मिन्नस्मिन्न्यज-मानो यजमानोस्मिन्नायतनऽ आयतनेस्मिन्न्यजमानो यजमानोस्मिन्नायतने। अस्मिन्नायतनऽ आयतनेस्मिन्नस्मिन्नायतने प्प्रजया प्प्रजयायतनेस्मिन्-न्नस्मिन्नायतने प्प्रजया। आयतने प्प्रजया प्प्रजयायतनऽ आयतने प्प्रजया पशुभिः पशुभिः प्प्रजयायतनऽ आयतने प्प्रजया पशुभिः। आयतनऽ इत्या यतने। प्रजया पशुभिः पशुभिः प्प्रजया प्प्रजया पशुभिर्ब्भूयाद् भूयात्पशुभिः प्प्रजया प्प्रजया पशुभिर्ब्भूयात्। प्रजयेति प्र जया। पशुभिर्ब्भूयाद् भूयात्प-शुभिः पशुभिर्ब्भूयात्। पशुभिरिति पशु भिः। भूयादिति भूयात्॥ घृतेन द्यावा-पृथिवी द्यावापृथिवी घृतेन घृतेन द्यावापृथिवी पूर्य्येथाम्पूर्य्येथान्द्यावापृथिवी घृतेन घृतेन द्यावापृथिवी पूर्य्येथाम्। द्यावापृथिवी पूर्य्येथाम्पूर्य्येथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी पूर्य्येथामिन्द्रस्येन्द्रस्य पूर्य्येथान्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी पूर्य्येथा-मिन्द्रस्य। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। पूर्य्येथामिन्द्रस्येन्द्रस्य पूर्य्येथा-म्पूर्य्येथामिन्द्रस्य च्छदिश्च्छदिरिन्द्रस्य पूर्य्येथाम्पूर्य्येथामिन्द्रस्य च्छदिः[1]। इन्द्रस्य च्छदिश्च्छदिरिन्द्रस्येन्द्रस्य च्छदिरस्यसि च्छदिरिन्द्रस्येन्द्रस्य च्छदिर-सि। छदिरस्यसि च्छदिश्च्छदिरसि व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्यासि च्छदि-श्च्छदिरसि व्विश्वजनस्य। असि व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्यास्यसि व्विश्वजनस्य च्छाया च्छाया व्विश्वजनस्यास्यसि व्विश्वजनस्य च्छाया[2]। व्विश्वजनस्य च्छाया च्छाया व्विश्वजनस्य व्विश्वजनस्य च्छाया। व्विश्वजनस्येति विश्व जनस्य। छायेति च्छाया॥२८॥

---

1. इन्द्रस्य छदिः यहाँ वा.प्रा.४.२५. के अनुसार छकार बाद में होने से अकार(य) चकार से व्यवहित होता है।

2. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र(वा.प्रा.४.२५) इस सूत्र के अनुसार विश्वजनस्य छाया इन दो पदों के मध्य च आता है।

परिं त्वा त्वा॒ परि॒ परिं त्वा गिर्व्वणो गिर्व्वणस्त्वा॒ परि॒ परिं त्वा गिर्व्वणः[1]।
त्वा॒ गि॒र्व्व॒णो॒ गि॒र्व्व॒ण॒स्त्वा॒ त्वा॒ गि॒र्व्व॒णो॒ गिरो॒ गिरौं गिर्व्वणस्त्वा त्वा गिर्व्वणो॒ गिरंः।
गि॒र्व्व॒णो॒ गिरो॒ गिरौं गिर्व्वणो गिर्व्वणो॒ गिरंऽ इ॒माऽ इ॒मा गिरौं गिर्व्वणो गिर्व्वणो॒ गिरंऽ
इ॒माः। गिरंऽ इ॒माऽ इ॒मा गिरो॒ गिरंऽ इ॒मा भंवन्तु भवन्त्वि॒मा गिरो॒ गिरंऽ इ॒मा
भंवन्तु। इ॒मा भंवन्तु भवन्त्वि॒माऽ इ॒मा भंवन्तु व्वि॒श्श्वतौं व्वि॒श्श्वतौं भवन्त्वि॒माऽ
इ॒मा भंवन्तु व्वि॒श्श्वतंः। भ॒व॒न्तु॒ व्वि॒श्श्वतौं व्वि॒श्श्वतौं भवन्तु भवन्तु व्वि॒श्श्वतंः।
व्वि॒श्श्वत॒ऽ इतिं वि॒श्श्वतंः॥ व्वृ॒द्धायु॒मन्न्वनुं वृ॒द्धायुँव्वृ॒द्धायु॒मनु॒ वृद्धंयो॒ व्वृद्धु॒योनुं
वृ॒द्धायुँव्वृ॒द्धायु॒मनु॒ वृद्धंयः। व्वृ॒द्धायु॒मितिं वृ॒द्ध आंयुम्। अनु॒ वृद्धंयो॒ व्वृद्धु॒योन्न्वनु॒ वृद्धंयो॒
जुष्टा॒ जुष्टा॒ व्वृद्धु॒योन्न्वनु॒ वृद्धंयो॒ जुष्टांः। व्वृद्धंयो॒ जुष्टा॒ जुष्टा॒ व्वृद्धंयो॒ व्वृद्धंयो॒ जुष्टां
भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टा॒ व्वृद्धंयो॒ व्वृद्धंयो॒ जुष्टां भवन्तु। जुष्टां भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टा॒ जुष्टां
भवन्तु॒ जुष्टंयो॒ जुष्टंयो भवन्तु॒ जुष्टा॒ जुष्टां भवन्तु॒ जुष्टंयः। भ॒व॒न्तु॒ जुष्टंयो॒ जुष्टंयो
भवन्तु भवन्तु॒ जुष्टंयः। जुष्टंय॒ऽ इति॒ जुष्टंयः॥२९॥

इन्द्रंस्य॒ स्यूः स्यूरिन्द्र॒स्येन्द्रंस्य॒ स्यूरंस्यसि॒ स्यूरिन्द्र॒स्येन्द्रंस्य॒ स्यूरंसि।
स्यूरंस्यसि॒ स्यूः स्यूरंसि ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒सि॒ स्यूः स्यूरंसि ध्रु॒वः। अ॒सि॒ ध्रु॒वो ध्रु॒वो॒स्यसि
ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो॒स्यसि ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रम्। ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रँव्वैंश्श्व-
दे॒वँव्वैंश्श्वदे॒वमै॒न्द्रन्ध्रु॒वो ध्रु॒वऽ ऐ॒न्द्रँव्वैंश्श्वदे॒वम्॥ ऐ॒न्द्रँव्वैंश्श्वदे॒वँव्वैंश्श्वदे॒वमै॒न्द्रमै॒न्द्रँ-
व्वैंश्श्वदे॒वम्। व्वै॒श्श्व॒दे॒वमितिं वैश्श्व दे॒वम्॥३०॥

व्वि॒भूरंस्यसि व्वि॒भूर्व्वि॒भूरंसि प्प्र॒वाहंणः प्प्र॒वाहंनोसि व्वि॒भूर्व्वि॒भूरंसि प्प्र॒वाहं-
णः[2]। व्वि॒भूरितिं वि॒ भूः। अ॒सि॒ प्प्र॒वाहंणः प्प्र॒वाहंनोस्यसि प्प्र॒वाहंणो॒ व्वह्नि॒र्व्वह्निंः
प्प्र॒वाहंनोस्यसि प्प्र॒वाहंणो॒ व्वह्निंः। प्र॒वाहंणो॒ व्वह्नि॒र्व्वह्निंः प्प्र॒वाहंनः प्प्र॒वाहंणो॒

1.गिर्वणः (वा. प्रा. २.१०) यह पद अनुदात्त होता है।

2. **स्वरयवहकपेथ** (वा. प्रा. ३.८५) इस सूत्र के अनुसार प्रवाहनः इस पद का नकार णकार हो जाता है।

व्व॒ह्नि॑र्हव्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नो॒ व्व॒ह्नि॑ः प्प्र॒वाह॑नः प्प्र॒वाह॑णो॒ व्व॒ह्नि॑र्हव्य॒वाह॑नः। प्र॒वाह॑न॒ऽ इति॑ प्प्र॒ व्वाह॑नः। व्व॒ह्नि॑र्हव्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नो॒ व्व॒ह्निर्व्व॒ह्नि॑र्हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो॒ व्व॒ह्निर्व्व॒ह्नि॑र्हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः[1]। ह॒व्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रो ह॑व्य॒वाह॑नो हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ताः। ह॒व्य॒वाह॑न॒ऽ इति॑ हव्य॒ व्वाह॑नः॥ श्वा॒त्रः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑तास्तु॒थस्तु॒थः प्प्रचे॑ताः श्वा॒त्रः श्वा॒त्रः प्प्रचे॑तास्तु॒थः। प्रचे॑तास्तु॒थस्तु॒थः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑तास्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दास्तु॒थः प्प्रचे॑ता॒ः प्प्रचे॑तास्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दाः। प्रचे॑ता॒ऽ इति॒ प्प्र चे॑ताः। तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दास्तु॒थस्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिगु॒शिग्वि॒श्ववे॑दास्तु॒थस्तु॒थो व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्। व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिगु॒शिग्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्क॒विः क॒विरु॒शिग्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ उ॒शिक्क॒विः। व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ इति॑ वि॒श्व व्वेदाः॥३१॥

उ॒शिक्क॒विः क॒विरु॒शिगु॒शिक्क॒विरङ्गि॑रि॒रङ्गि॑रिः क॒विरु॒शिगु॒शिक्क॒विरङ्गि॑रिः। क॒विरङ्गि॑रि॒रङ्गि॑रिः क॒विः क॒विरङ्गि॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गि॑रिः क॒विः क॒विरङ्गि॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिः। अङ्गि॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गि॑रि॒रङ्गि॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर॑व॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒रङ्गि॑रि॒रङ्गि॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूः। बम्भा॑रिरव॒स्यूर॑व॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वानव॒स्यूर्ब्बम्भा॑रि॒र्ब्बम्भा॑रिरव॒स्यूर्दुव॑स्वान्[2]। अ॒व॒स्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वानव॒स्यूर॑व॒स्यूर्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वानव॒स्यूर॑व॒स्यूर्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः[3]। दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूम्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः शु॒न्ध्यूर्दुव॑स्वा॒न्दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूम्मा॑र्ज्जा॒लीय॑ः। शु॒न्ध्यूम्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः शु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूम्मा॑-

---

1. विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७) इस सूत्र के अनुसार हव्यवाहनः श्वात्रः यहाँ विसर्ग से परे शकार की द्विरुक्ति नहीं होगी, जैसे इसी मन्त्र में व्वह्निः प्प्रवाहणः में पकार का द्वित्व होगा, वैसा उपर्युक्त स्थल में शकार का द्वित्व नहीं होगा।

2. प्रकृत्या पदान्तीयः (वा. प्रा. ३.८९) पदान्त नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

3. दुवस्वान् शुन्ध्यूः यहाँ परश्चास्पर्शपरश्छम्(वा.प्रा.४.९८) इस सूत्र से शकार छकार होता है।

ज्र्जा॒लीय॑ः स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राण्ण्मा॑र्ज्जा॒लीय॑ः शु॒न्ध्यूः शु॒न्ध्यूर्म्मा॑र्ज्जा॒लीय॑ः स॒म्म्राट्। मा॒र्ज्जा॒लीय॑ः स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राण्ण्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः स॒म्म्राट्ट् कृ॒शानु॑ः कृ॒शानु॑ः स॒म्म्राण्ण्मा॑र्ज्जा॒लीयो॑ मार्ज्जा॒लीय॑ः स॒म्म्राट्ट् कृ॒शानु॑ः। स॒म्म्राट्ट् कृ॒शानु॑ः कृ॒शानु॑ः स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राट्ट् कृ॒शानु॑ः परि॒षद्य॑ः परि॒सद्य॑ः कृ॒शानु॑ः स॒म्म्राट्ट् स॒म्म्राट्ट् कृ॒शानु॑ः परि॒षद्य॑ः। स॒म्म्राडिति॑ स॒म् राट्। कृ॒शानु॑ः परि॒षद्य॑ः परि॒सद्य॑ः कृ॒शानु॑ः कृ॒शानु॑ः परि॒षद्य॒ः पव॑मान॒ः पव॑मानः परि॒सद्य॑ः कृ॒शानु॑ः कृ॒शानु॑ः परि॒षद्यः पव॑मानः। प॒रि॒षद्य॒ः पव॑मान॒ः पव॑मानः परि॒सद्य॑ः परि॒षद्य॒ः पव॑मानो॒ नभो॒ नभ॒ः पव॑मानः परि॒सद्य॑ः परि॒षद्य॒ः पव॑मानो॒ नभ॑ः। प॒रि॒सद्य॒ऽ इति॑ परि॒ सद्य॑ः। पव॑मानो॒ नभो॒ नभ॒ः पव॑मान॒ः पव॑मानो॒ नभ॑ः प्प्र॒तक्क्वा॑ प्प्र॒तक्क्वा॒ नभ॒ः पव॑मान॒ः पव॑मानो॒ नभ॑ः प्प्र॒तक्क्वा॑। नभ॑ः प्प्र॒तक्क्वा॑ प्प्र॒तक्क्वा॒ नभो॒ नभ॑ः प्प्र॒तक्क्वा॑ मृ॒ष्टो मृ॒ष्टः प्प्र॒तक्क्वा॒ नभो॒ नभ॑ः प्प्र॒तक्क्वा॑ मृ॒ष्टः। प्र॒तक्क्वा॑ मृ॒ष्टो मृ॒ष्टः प्प्र॒तक्क्वा॑ प्प्र॒तक्क्वा॑ मृ॒ष्टो ह॑व्य॒सूद॑नो हव्य॒सूद॑नो मृ॒ष्टः प्प्र॒तक्क्वा॑ प्प्र॒तक्क्वा॑ मृ॒ष्टो ह॑व्य॒सूद॑नः। प्र॒तक्क्वेति॑ प्प्र॒ तक्क्वा॑। मृ॒ष्टो ह॑व्य॒सूद॑नो हव्य॒सूद॑नो मृ॒ष्टो मृ॒ष्टो ह॑व्य॒सूद॑नऽ ऋ॒तधा॑मऽ ऋ॒तधा॑मा हव्य॒सूद॑नो मृ॒ष्टो मृ॒ष्टो ह॑व्य॒सूद॑नऽ ऋ॒तधा॑मा[1]। ह॒व्य॒सूद॑नऽ ऋ॒तधा॑मऽ ऋ॒तधा॑मा हव्य॒सूद॑नो हव्य॒सूद॑नऽ ऋ॒तधा॑मा॒ स्व॒ज्ज्यो॑तिः स्व॒ज्ज्यो॑तिर्ऋ॒तधा॑मा हव्य॒सूद॑नो हव्य॒सूद॑नऽ ऋ॒तधा॑मा॒ स्व॒ज्ज्यो॑तिः[2]। ह॒व्य॒सूद॑न॒ऽ इति॑ हव्य॒ सूद॑नः। ऋ॒तधा॑मा॒ स्व॒ज्ज्यो॑ति॒ः स्व॒ज्ज्यो॑तिर्ऋ॒तधा॑मऽ ऋ॒तधा॑मा॒ स्व॒ज्ज्यो॑तिः समु॒द्रः सं॑मु॒द्रः स्व॑ज्ज्यो॑तिर्ऋ॒तधा॑मऽ ऋ॒तधा॑मा॒ स्व॒ज्ज्यो॑तिः समु॒द्रः। ऋ॒तधा॒मेत्यृ॒त धा॑मा। स्व॑ज्ज्यो॑तिः समु॒द्रः सं॑मु॒द्रः

---

1. ऋतधामा ऋतधामा यहाँ कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम्(वा.प्रा.४.५०) के अनुसार ऋकार बाद में होने से मा का स्वर(आ) ह्रस्व अ होता है।

2. वा. प्रा. ४.१५५. के अनुसार ज्योतिः एक यकार के संयोग वाला पद है।

स्व॑र्ज्ज्योति॒ः स्व॒र्ज्ज्योतिः समुद्रो वि॒श्वव्य॑चा वि॒श्वव्य॑चाः समु॒द्रः स्व॑र्ज्ज्योति॒ः स्व॒र्ज्ज्योतिः समु॒द्रो वि॒श्वव्य॑चाः। स्व॑र्ज्ज्योति॒रिति॒ स्व॒÷ ज्योतिः॥३२॥

स॒मु॒द्रो वि॒श्वव्य॑चा वि॒श्वव्य॑चाः समु॒द्रः स॑मु॒द्रो वि॒श्वव्य॑चाऽ अ॒जो॒जो वि॒श्वव्य॑चाः समु॒द्रः स॑मु॒द्रो वि॒श्वव्य॑चाऽ अ॒जः। वि॒श्वव्य॑चाऽ अ॒जो॒जो वि॒श्वव्य॑चा वि॒श्वव्य॑चाऽ अ॒जऽ एक॑पा॒देक॑पाद॒जो वि॒श्वव्य॑चा वि॒श्वव्य॑चाऽ अ॒जऽ एक॑पात्। वि॒श्वव्य॑चा॒ऽ इति॑ वि॒श्व व्य॑चाः। अ॒जऽ एक॑पा॒देक॑पाद॒जो॒जऽ एक॑पा॒दहि॒रहि॒रेक॑पाद॒जो॒जऽ एक॑पा॒दहि॑÷। एक॑पा॒दहि॒रहि॒रेक॑पा॒देक॑पा॒दहि॑र्बु॒ध्न्यो॒ बु॒ध्न्योहि॒रेक॑पा॒देक॑पा॒दहि॑र्बु॒ध्न्य॒÷[1]। एक॑पा॒दित्येक॑ पात्। अहि॑र्बु॒ध्न्यो॒ बु॒ध्न्योहि॒रहि॑र्बु॒ध्न्यो॒ वाग्ग्वाग्ग्बु॒ध्न्योहि॒रहि॑र्बु॒ध्न्यो॒ वाक्। बु॒ध्न्यो॒ वाग्ग्वाग्ग्बु॒ध्न्यो॒ बु॒ध्न्यो॒ वाग॒न्द्रमै॒न्द्रँ॑वाग्ग्बु॒ध्न्यो॒ बु॒ध्न्यो॒ वाग॒न्द्रम्। वाग॒न्द्रमै॒न्द्रँ॑वाग्ग्वाग॒न्द्रꣳ सद॒ः सद॑ऽ ऐ॒न्द्रँ॑वाग्ग्वाग॒न्द्रꣳ सद॑÷। ऐ॒न्द्रꣳ सद॒ः सद॑ऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रꣳ सद॒ऽ ऋ॒त॑स्य॒ऽ ऋ॒त॑स्य॒ सद॑ऽ ऐ॒न्द्रमै॒न्द्रꣳ सद॒ऽ ऋ॒त॑स्य। सद॒ऽ ऋ॒त॑स्य॒ऽ ऋ॒त॑स्य॒ सद॒ः सद॒ऽ ऋ॒त॑स्य द्वारौ द्वारा॒वृत॑स्य॒ सद॒ः सद॒ऽ ऋ॒त॑स्य द्वारौ। ऋ॒त॑स्य द्वारौ द्वारा॒वृत॑स्य॒ऽ ऋ॒त॑स्य द्वारौ॒ मा मा द्वा॑रा॒वृत॑स्य॒ऽ ऋ॒त॑स्य द्वारौ॒ मा। द्वा॒रौ॒ मा मा द्वा॑रौ द्वारौ॒ मा मा॑ मा॒ मा द्वा॑रौ द्वारौ॒ मा मा॑। मा मा॑ मा॒ मा मा मा॒ सꣳ सम्मा॒ मा मा मा॒ सम्। मा॒ सꣳ सम्मा॑ मा॒ सन्ता॑प्सन्ताप्स॒ꣳ सम्मा॑ मा॒ सन्ता॑प्सम्। सन्ता॑प्सन्ताप्स॒ꣳ सꣳ सन्ता॑प्स॒मर्द्ध॑ना॒मर्द्ध॑नान्ताप्स॒ꣳ सꣳ सन्ता॑प्स॒मर्द्ध॑नाम्। ता॒प्स॒मर्द्ध॑ना॒मर्द्ध॑नान्ताप्सन्ताप्स॒मर्द्ध॑नामद्धपतेद्धप॒तेर्द्ध॑नान्ताप्सन्ताप्स॒मर्द्ध॑नामद्धपते। अर्द्ध॑नामद्धपतेद्धप॒तेर्द्ध॑ना॒मर्द्ध॑नामद्धपते॒ प्र प्राद्ध॑प॒तेर्द्ध॑ना॒मर्द्ध॑नामद्धपते॒ प्र। अ॒द्ध॒प॒ते॒ प्र प्राद्ध॑पतेद्धपते॒ प्र मा॑ मा॒ प्राद्ध॑पतेद्धपते॒ प्र मा॑। अ॒द्ध॒प॒त॒ऽ इत्य॑द्ध पते। प्र मा॑ मा॒ प्र प्र

---

[1]. बु॒ध्न्य॒+ अहि॑+ यहाँ वा.प्रा.४.१३३. के अनुसार स्वरित स्वर का एकीभाव स्वरित कहा गया है परन्तु अग्रिम सूत्र उदात्त के एकीभाव को उदात्त कहता है। वा.प्रा.१.१५९. परवर्ती सूत्र को इस सम्बन्ध में बलवान् कहता है।

मा॑ तिर तिर मा॒ प्र प्र मा॑ तिर। मा॒ ति॒र॒ ति॒र॒ मा॒ मा॒ ति॒र॒ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ति॑र मा मा तिर स्व॒स्ति। ति॒र॒ स्व॒स्ति स्व॒स्ति ति॑र तिर स्व॒स्ति मे॑ मे स्व॒स्ति ति॑र तिर स्व॒स्ति मे॑। स्व॒स्ति मे॑ मे स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒स्मिन्न॒स्मिन्मे॑ स्व॒स्ति स्व॒स्ति मे॒स्मिन्। मे॒स्मिन्न॒स्मिन्मे॑ मे॒स्मिन्प॒थि प॒थ्य॒स्मिन्मे॑ मे॒स्मिन्प॒थि। अ॒स्मिन्प॒थि प॒थ्य॒स्मिन्न॒स्मिन्प॒थि दे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ प॒थ्य॒स्मिन्न॒स्मिन्प॒थि दे॑व॒याने॑। प॒थि दे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ प॒थि प॒थि दे॑व॒याने॑ भूयाद् भूयादेव॒याने॑ प॒थि प॒थि दे॑व॒याने॑ भूयात्। दे॒व॒याने॑ भूयाद् भूयादे॑व॒याने॑ देव॒याने॑ भूयान्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ भूयादेव॒याने॑ देव॒याने॑ भूयान्मि॒त्रस्य॑। दे॒व॒यान॒ऽ इति॑ देव॒ याने॑। भू॒या॒न्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ भूयाद् भूयान्मि॒त्रस्य॑ मा मा मि॒त्रस्य॑ भूयाद् भूयान्मि॒त्रस्य॑ मा॥३३॥

मि॒त्रस्य॑ मा मा मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ मा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा मा मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॑ मा॒ चक्षु॑षा। मा॒ चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षा मा मा॒ चक्षु॑षेक्षद्ध्वमीक्षद्ध्व॒ञ्चक्षु॑षा मा मा॒ चक्षु॑षेक्षद्ध्वम्। चक्षु॑षेक्षद्ध्वमीक्षद्ध्व॒ञ्चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षेक्षद्ध्व॒मग्ग्न॒योग्ग्न॑यऽ ईक्षद्ध्व॒ञ्चक्षु॑षा॒ चक्षु॑षेक्षद्ध्व॒मग्ग्न॑यः[1]। ई॒क्ष॒द्ध्व॒मग्ग्न॒योग्ग्न॑यऽ ईक्षद्ध्वमीक्षद्ध्व॒मग्ग्न॑यः सगराः सगरा॒ऽ अग्ग्न॑यऽ ईक्षद्ध्वमीक्षद्ध्व॒मग्ग्न॑यः सगराः[2]। अग्ग्न॑यः सगराः सगरा॒ऽ अग्ग्न॒योग्ग्न॑यः सगरा॒ः सग॑रा॒ः सग॑राः सगरा॒ऽ अग्ग्न॒योग्ग्न॑यः सगरा॒ः सग॑राः। स॒ग॒रा॒ः सग॑रा॒ः सग॑राः सगराः सगरा॒ः सग॑रा स्त्थ स्त्थ॒ सग॑राः सगराः सगरा॒ः सग॑रा स्त्थ। सग॑रा स्त्थ स्त्थ॒ सग॑रा॒ः सग॑रा स्त्थ॒ सग॑रेण॒ सग॑रेण स्त्थ॒ सग॑रा॒ः सग॑रा स्त्थ॒ सग॑रेण। स्त्थ॒ सग॑रेण॒ सग॑रेण स्त्थ स्त्थ॒

1. वा. प्रा. २.१७ के अनुसार पदपूर्व आमन्त्रित पद अनुदात्त होता है। यदि वह अनेक पदार्थों का वाचक न हो एवं पाद के प्रारम्भ में न हो। यहाँ अग्नयः अनेक पदार्थों का वाचक होने से अनुदात्त (सर्वानुदात्त) नहीं है।

2. अग्नयः सगराः तथा सगराः सगराः यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय विकार को प्राप्त नहीं करता है। प्रत्ययसवर्णं मुदि शाकटायनः(वा.प्रा.३.९) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय का परसवर्णत्व माध्यन्दिन शाखा में सम्प्रदाय से अप्राप्त है।

सगरेण नाम्ना नाम्ना सगरेण स्त्थ स्त्थ सगरेण नाम्ना। सगरेण नाम्ना नाम्ना सगरेण सगरेण नाम्ना रौद्रेण रौद्रेण नाम्ना सगरेण सगरेण नाम्ना रौद्रेण। नाम्ना रौद्रेण रौद्रेण नाम्ना नाम्ना रौद्रेणानीकेनानीकेन रौद्रेण नाम्ना नाम्ना रौद्रेणानीकेन। रौद्रेणानीकेनानीकेन रौद्रेण रौद्रेणानीकेन पात पातानीकेन रौद्रेण रौद्रेणानीकेन पात। अनीकेन पात पातानीकेनानीकेन पात मा मा पातानीके- नानीकेन पात मा। पात मा मा पात पात माग्नयोग्नयो मा पात पात माग्नयः । माग्नयोग्नयो मा माग्नयः पिपृत पिपृताग्नयो मा माग्नयः पिपृत। अग्नयः पिपृत पिपृताग्नयोग्नयः पिपृत गोपायत गोपायत पिपृताग्नयोग्नयः पिपृत गोपायत। पिपृत गोपायत गोपायत पिपृत पिपृत गोपायत नमो नमो गोपायत पिपृत पिपृत गोपायत नमः। गोपायत नमो नमो गोपायत गोपायत नमो वो वो नमो गोपायत गोपायत नमो वः। नमो वो वो नमो नमो वोस्त्वस्तु वो नमो नमो वोस्तु। व्वोस्त्वस्तु वो वोस्तु मा मास्तु वो वोस्तु मा। अस्तु मा मास्त्वस्तु मा मा मा मास्त्वस्तु मा मा[1]। मा मा मा मा मा मा हिꣳसिष्ट हिꣳसिष्ट मा मा मा मा हिꣳसिष्ट। मा हिꣳसिष्ट हिꣳसिष्ट मा मा हिꣳसिष्ट। हिꣳसिष्टेति हिꣳसिष्ट॥३४॥

ज्योतिरस्यसि ज्योतिर्ज्योतिरसि व्विश्वरूपँव्विश्वरूपमसि ज्योति- र्ज्योतिरसि व्विश्वरूपम्। असि व्विश्वरूपँव्विश्वरूपमस्यसि व्विश्वरूपँव्विश्वेषाँव्विश्वे- षाँव्विश्वरूपमस्यसि व्विश्वरूपँव्विश्वेषाम्। व्विश्वरूपँव्विश्वेषाँव्विश्वेषाँव्विश्वरूपँव्विश्व- रूपँव्विश्वेषान्देवानान्देवानाँव्विश्वेषाँव्विश्वरूपँव्विश्वरूपँव्विश्वेषान्देवानाम्। व्विश्वरूप- मिति विश्व रूपम्। व्विश्वेषान्देवानान्देवानाँव्विश्वेषाँव्विश्वेषान्देवानाꣳ समित्समि- द्देवानाँव्विश्वेषाँव्विश्वेषान्देवानाꣳ समित्। देवानाꣳ समित्समिद्देवानान्देवानाꣳ

[1]. इस सन्धि में प्रथम मा उदात है, द्वितीय मा वा.प्रा. २.४. के अनुसार अस्मदर्थ में प्रयुक्त होने से अनुदात है।

सु॒मित्। सु॒मिदिति॑ सु॒म् इत्॥ त्वꣳ सो॑म सोम॒ त्वन्त्वꣳ सो॑म तनू॒कृद्भ्य॑स्तनू॒कृद्भ्य॑ः सोम॒ त्वन्त्वꣳ सो॑म तनू॒कृद्भ्य॑ः। सो॒म॒ त॒नू॒कृ॒द्भ्य॑स्तनू॒कृद्भ्य॑ः सोम सोम तनू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यस्तनू॒कृद्भ्य॑ः सोम सोम तनू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यः। त॒नू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यस्तनू॒कृद्भ्य॑स्तनू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यो॒ द्वेषो॑भ्यस्तनू॒कृद्भ्य॑स्तनू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यः[1]। त॒नू॒कृद्भ्य॒ऽ इति॑ तनू॒कृत् भ्य॑ः। द्वेषो॑भ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यऽ उ॒रूर्व॒न्यकृ॑तेभ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒ द्वेषो॑भ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यऽ उ॒रु। द्वेषो॑भ्य॒ऽ इति॒ द्वेष॑ः भ्यः। अ॒न्यकृ॑तेभ्यऽ उ॒रूर्व॒न्यकृ॑तेभ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यऽ उ॒रु य॒न्ता य॒न्तोर्व॒न्यकृ॑तेभ्यो॒न्यकृ॑तेभ्यऽ उ॒रु य॒न्ता। अ॒न्यकृ॑तेभ्य॒ऽ इत्य॒न्य कृ॑तेभ्यः। उ॒रु य॒न्ता य॒न्तोरू॒रु य॒न्तास्य॑सि य॒न्तोरू॒रु य॒न्तासि॑। य॒न्तास्य॑सि य॒न्ता य॒न्तासि॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ वरू॑थमसि य॒न्ता य॒न्तासि॒ वरू॑थम्। अ॒सि॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ वरू॑थमस्यसि॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ वरू॑थमस्यसि॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ स्वाहा॑। वरू॑थ॒ꣳ॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ स्वाहा॑ जुषा॒णो जु॑षा॒णः स्वाहा॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ वरू॑थ॒ꣳ॒ स्वाहा॑ जुषा॒णः। स्वाहा॑ जुषा॒णो जु॑षा॒णः स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषा॒णोऽ अ॒प्सुर॒प्सुर्जु॑षा॒णः स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुषा॒णोऽ अ॒प्सुः[2]। जु॒षा॒णोऽ अ॒प्सुर॒प्सुर्जु॑षा॒णो जु॑षा॒णोऽ अ॒प्सुराज्य॒स्याज्य॑स्या॒प्सुर्जु॑षा॒णो जु॑षा॒णोऽ अ॒प्सुराज्य॑स्य। अ॒प्सुराज्य॒स्याज्य॑स्या॒प्सुर॒प्सुराज्य॑स्य वे॒तु वे॒त्वाज्य॑स्या॒प्सुर॒प्सुराज्य॑स्य वे॒तु। आज्य॑स्य वे॒तु वे॒त्वाज्य॒स्याज्य॑स्य वे॒तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ वे॒त्वाज्य॒स्याज्य॑स्य वे॒तु स्वाहा॑। वे॒तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ वे॒तु वे॒तु स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३५॥

---

[1]. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ द्वेषोभ्यो से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

[2]. जुषाणश्चानध्वनि (वा. प्रा. ४.८३) इस सूत्र के अनुसार जुषाणोऽ अप्सुः यहाँ जुषाणो का ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

अग्ने॒ नय॒ नयाग्नेग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ सु॒पथा॒ नयाग्नेग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑[1]। नय॑ सु॒पथा॑ सु॒पथा॒ नय॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये रा॒ये सु॒पथा॒ नय॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये। सु॒पथा॑ रा॒ये रा॒ये सु॒पथा॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽ अ॒स्मान॒स्मान्रा॒ये सु॒पथा॑ सु॒पथा॑ रा॒येऽ अ॒स्मान्[2]। सु॒पथेति॑ सु॒ पथा॑। रा॒येऽ अ॒स्मान॒स्मान्रा॒ये रा॒येऽ अ॒स्मान्विश्वा॑नि॒ व्विश्वा॑न्य॒स्मान्रा॒ये रा॒येऽ अ॒स्मान्विश्वा॑नि। अ॒स्मान्विश्वा॑नि॒ व्विश्वा॑न्य॒स्मान॒स्मान्विश्वा॑नि देव देव॒ व्विश्वा॑न्य॒स्मान॒स्मान्विश्वा॑नि देव। व्विश्वा॑नि देव देव॒ व्विश्वा॑नि॒ व्विश्वा॑नि देव व्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि देव॒ व्विश्वा॑नि॒ व्विश्वा॑नि देव व्व॒युना॑नि। दे॒व॒ व्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि देव देव व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्वि॒द्वान्व॒युना॑नि देव देव व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्। व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्वि॒द्वान्व॒युना॑नि व्व॒युना॑नि व्वि॒द्वान्। व्वि॒द्वानिति॑ वि॒द्वान्॥

यु॒यो॒ध्य॒स्मद॒स्मद्यु॑यो॒धि यु॒यो॒ध्य॒स्मज्जु॑हुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णम॒स्मद्यु॑यो॒धि यु॒यो॒ध्य॒स्मज्जु॑हुरा॒णम्। अ॒स्मज्जु॑हुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णम॒स्मद॒स्मज्जु॑हुरा॒णमेन॒ऽ एनो॑ जुहुरा॒णम॒स्मद॒स्मज्जु॑हुरा॒णमेनः॑। जु॒हु॒रा॒णमेन॒ऽ एनो॑ जुहुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठा॒मेनो॑ जुहुरा॒णञ्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठाम्। एनो॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठा॒मेन॒ऽ एनो॒ भूयि॑ष्ठान्ते ते॒ भूयि॑ष्ठा॒मेन॒ऽ एनो॒ भूयि॑ष्ठान्ते। भूयि॑ष्ठान्ते ते॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठान्ते॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिन्ते॒ भूयि॑ष्ठा॒म्भूयि॑ष्ठान्ते॒ नम॑ऽउक्तिम्। ते॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिन्ते ते॒ नम॑ऽउक्तिं॑व्विधेम व्विधेम॒ नम॑ऽउक्तिन्ते ते॒ नम॑ऽउक्तिं॑व्विधेम। नम॑ऽउक्तिं॑व्विधेम व्विधेम॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिं॑व्विधेम। नम॑ऽउक्ति॒मिति॒ नमः॑ उक्तिम्। व्वि॒धे॒मेति॑ विधेम॥३६॥

---

1. उदात्ताच्चामन्त्रितादनन्तरम्(वा.प्रा.६.१२) इस सूत्र के अनुसार उदात्तयुक्त सम्बोधन-पद (अग्ने) से अव्यवहित परवर्ती क्रियापद(नय॑) अपने प्रकृतिस्वर से युक्त है।

2. राये अस्मान् यहाँ वा.प्रा.४.८२. के अनुसार राये का एकार प्रकृति भाव से रहता है।

अयन्नो नोयमयन्नोऽ अग्निरग्निर्न्नोयमयन्नोऽ अग्निः। नोऽ अग्निरग्निर्न्नो नोऽ अग्निर्व्वरिवो व्वरिवोग्निर्न्नो नोऽ अग्निर्व्वरिवः। अग्निर्व्वरिवो व्वरिवोग्निरग्निर्व्व-रिवस्कृणोतु कृणोतु व्वरिवोग्निरग्निर्व्वरिवस्कृणोतु[1]। व्वरिवस्कृणोतु कृणोतु व्वरि-वो व्वरिवस्कृणोत्त्वयमयङ्कृणोतु व्वरिवो व्वरिवस्कृणोत्त्वयम्। कृणोत्त्वयमयङ्कृणोतु कृणोत्त्वयम्मृधो मृधोयङ्कृणोतु कृणोत्त्वयम्मृधः। अयम्मृधो मृधोयमयम्मृधः पुरः पुरो मृधोयमयम्मृधः पुरः। मृधः पुरः पुरो मृधो मृधः पुरऽ एत्त्वेतु पुरो मृधो मृधः पुरऽ एतु। पुरऽ एत्त्वेतु पुरः पुरऽ एतु प्प्रभिन्दन्न्प्रभिन्दन्नेतु पुरः पुरऽ एतु प्प्रभिन्दन्। एतु प्प्रभिन्दन्न्प्रभिन्दन्नेत्त्वेतु प्प्रभिन्दन्। प्रभिन्दन्निति प्प्र भिन्दन्॥ अयँव्वाजान्न्वाजानयमयँव्वाजाञ्जयतु जयतु व्वाजानयमयँव्वाजाञ्जयतु[2]। व्वाजाञ्जयतु जयतु व्वाजान्न्वाजाञ्जयतु व्वाजसातौ व्वाजसातौ जयतु व्वाजान्न्वा-जाञ्जयतु व्वाजसातौ। जयतु व्वाजसातौ व्वाजसातौ जयतु जयतु व्वाजसातावयम-यँव्वाजसातौ जयतु जयतु व्वाजसातावयम्। व्वाजसातावयमयँव्वाजसातौ व्वाजसा-तावयꣳ शत्रूञ्छत्रूनयँव्वाजसातौ व्वाजसातावयꣳ शत्रून्। व्वाजसाताविति वाज सातौ। अयꣳ शत्रूञ्छत्रूनयमयꣳ शत्रूञ्जयतु जयतु शत्रूनयमयꣳ शत्रूञ्जयतु। शत्रूञ्जयतु जयतु शत्रूञ्छत्रूञ्जयतु जर्हृषाणो जर्हृषाणो जयतु शत्रूञ्छत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः। जयतु जर्हृषाणो जर्हृषाणो जयतु जयतु जर्हृषाणः स्वाहा स्वाहा जर्हृषाणो जयतु जयतु जर्हृषाणः स्वाहा। जर्हृषाणः स्वाहा स्वाहा जर्हृषाणो जर्हृषाणः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥३७॥शतम्॥२००॥

---

[1]. आविर्निरिड इडाया वसतिर्वरिवः (वा. प्रा. ३.२३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वरिवः का विसर्जनीय सकार हो जाता है।

[2]. वाजान् जयतु यहाँ तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम्(वा.प्रा.४.९६) इस सूत्र से चकारवर्ग(ज) बाद में होने से तकारवर्ग (ञ) होता है।

उरु व्विंष्ण्णो व्विष्ण्णऽ उरूरु व्विंष्ण्णो व्वि वि विंष्ण्णऽ उरूरु व्विंष्ण्णो व्वि। व्विष्ण्णो व्वि वि विंष्ण्णो व्विष्ण्णो व्वि क्क्रंमस्व क्क्रमस्व व्वि विंष्ण्णो व्विष्ण्णो व्वि क्क्रंमस्व। व्विष्ण्णोऽ इतिं विष्ण्णो। व्वि क्क्रंमस्व क्क्रमस्व व्वि वि क्क्रंमस्वोरूरु क्क्रंमस्व व्वि वि क्क्रंमस्वोरु। क्क्रमस्वोरूरु क्क्रंमस्व क्क्रमस्वोरु क्क्षयांय क्क्षयांयोरु क्क्रंमस्व क्क्रमस्वोरु क्क्षयांय। उरु क्क्षयांय क्क्षयांयोरूरु क्क्षयांय नो नः क्क्षयांयोरूरु क्क्षयांय नः। क्षयांय नो नः क्क्षयांय क्क्षयांय नस्कृधि कृधि नः क्क्षयांय क्क्षयांय नस्कृधि[1]। नस्कृधि कृधि नो नस्कृधि। कृधीतिं कृधि॥ घृतङ्घृतयोने घृतयोने घृतङ्घृतङ्घृतयोने पिब पिब घृतयोने घृतङ्घृतङ्घृतयोने पिब। घृतयोने पिब पिब घृतयोने घृतयोने पिब प्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं पिब घृतयोने घृतयोने पिब प्प्रप्प्रं[2]। घृतयोनऽ इतिं घृत योने। पिब प्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं पिब पिब प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिंष्व्यज्ज्ञपं-तिम्प्रप्प्रं पिब पिब प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिम्। प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिंष्व्यज्ज्ञपंतिम्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिन्तिर तिर य्यज्ज्ञपंतिम्प्रप्प्र प्प्रप्प्रं यज्ज्ञपंतिन्तिर। प्रप्प्रेति प्प्र प्रं। य्यज्ज्ञपंतिन्तिर तिर य्यज्ज्ञपंतिंष्व्यज्ज्ञपंतिन्तिर स्वाहा स्वाहां तिर य्यज्ज्ञपंतिं-ष्व्यज्ज्ञपंतिन्तिर स्वाहां। य्यज्ज्ञपंतिमितिं यज्ज्ञ पंतिम्। तिर स्वाहा स्वाहां तिर तिर स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥३८॥

देवं सवितः सवितर्द्देव देवं सवितरेषऽ एष संवितर्द्देव देवं सवितरेषः। सवितरेषऽ एष संवितः सवितरेष तें तऽ एष संवितः सवितरेष तें। एष तें तऽ एषऽ एष ते सोमः सोमंस्तऽ एषऽ एष ते सोमंः। ते सोमः सोमंस्ते ते सोमस्तन्तं सोमंस्ते ते सोमस्तम्। सोमस्तन्तं सोमः सोमस्तं रंक्क्षस्व रक्क्षस्व तं सोमः सोमस्तं रंक्क्षस्व। तं रंक्क्षस्व रक्क्षस्व तन्तं रंक्क्षस्व

---

[1]. नः कृधि यहाँ कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) के अनुसार विसर्ग सकार होता है।

[2]. आम्रेडिते चोत्तर (वा. प्रा. ६.३) द्विरुक्त पद में बाद में विद्यमान उपसर्ग अनुदात होता है।

मा मा रंक्षस्व तन्तꣳ रंक्षस्व मा। रक्षस्व मा मा रंक्षस्व रक्षस्व मा त्वां त्वा मा रंक्षस्व रक्षस्व मा त्वां। मा त्वां त्वा मा मा त्वां दभन्दभँस्त्वा मा मा त्वां दभन्। त्वा दभन्दभँस्त्वा त्वा दभन्। दभन्निति दभन्॥ एतत्त्वन्त्वमेतदेत- त्वन्देव देव त्वमेतदेतत्त्वन्देव। त्वन्देव देव त्वन्त्वदेव सोम सोम देव त्वन्त्वन्देव सोम। देव सोम सोम देव देव सोम देवो देवꣳ सोम देव देव सोम देवꣳ। सोम देवो देवꣳ सोम सोम देवो देवान्देवान्देवꣳ सोम सोम देवो देवान्। देवो देवान्देवान्देवो देवो देवाꣳ॥ऽ उपोप देवान्देवो देवो देवाꣳ॥ऽ उप। देवाꣳ॥ऽ उपोप देवान्दे- वाꣳ॥ऽ उपागाऽ अगाऽ उप देवान्देवाꣳ॥ऽ उपागाꣳ। उपागाऽ अगाऽ उपोपा- गाऽ इदमिदमंगाऽ उपोपागाऽ इदम्। अगाऽ इदमिदमंगाऽ अगाऽ इदमहमहमि- दमंगाऽ अगाऽ इदमहम्। इदमहमहमिदमिदमहम्मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानहमिदमि- दमहम्मंनुष्ष्यान्। अहम्मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानहमहम्मंनुष्ष्यान्त्सह सह मंनु- ष्ष्यानहमहम्मंनुष्ष्यान्त्सह। मनुष्ष्यान्त्सह सह मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्त्सह रायो रायꣳ सह मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्त्सह रायꣳ। सह रायो रायꣳ सह सह रायस्प्पोषेंण पोषेंण रायꣳ सह सह रायस्प्पोषेंण[1]। रायस्प्पोषेंण पोषेंण रायो रायस्प्पोषेंण स्वाहा स्वाहा पोषेंण रायो रायस्प्पोषेंण स्वाहां। पोषेंण स्वाहा स्वाहा पोषेंण पोषेंण स्वाहा निर्न्निꣳ स्वाहा पोषेंण पोषेंण स्वाहा निꣳ। स्वाहा निर्न्निꣳ स्वाहा स्वाहा निर्व्वरुंणस्य व्वरुंणस्य निꣳ स्वाहा स्वाहा निर्व्वरुंणस्य। निर्व्वरुंणस्य व्वरुंण- स्य निर्न्निर्व्वरुंणस्य पाशात्पाशाद्वरुंणस्य निर्न्निर्व्वरुंणस्य पाशांत्। व्वरुंणस्य पाशात्पाशाद्वरुंणस्य व्वरुंणस्य पाशान्मुच्ये मुच्ये पाशाद्वरुंणस्य व्वरुंणस्य पाशान्मुच्ये। पाशान्मुच्ये मुच्ये पाशात्पाशान्मुच्ये। मुच्यऽ इतिं मुच्ये॥ अभूं- द्यथायथँ॰यथायथमभूदभूंद्यथायथमम॒ꣳस्तामꣳस्त यथायथमभूदभूंद्यथायथम-

[1]. रायः पोषेण यहाँ वा.प्रा.३.२५. के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है।

मꣳस्त[1]॥ यथायथममꣳस्तामꣳस्त यथायथꣳयथायथममꣳस्त। यथायथमि-
तिं यथा यथम्। अमꣳस्तेत्यमꣳस्त॥३९॥

अत्यन्न्यानन्न्यानत्त्यत्त्यन्न्यारँ॥ऽ अगामगामन्न्यानत्त्यत्त्यन्न्यारँ॥ऽ अगा-
म्। अन्न्यारँ॥ऽ अगामगामन्न्यानन्न्यारँ॥ऽ अगान्न नागामन्न्यानन्न्यारँ॥ऽ
अगान्न। अगान्न नागामगान्नान्न्यानन्न्यान्नागामगान्नान्न्यान्। नान्न्यानन्न्यान्न
नान्न्यारँ॥ऽ उपोपान्न्यान्न नान्न्यारँ॥ऽ उप। अन्न्यारँ॥ऽ उपोपान्न्यानन्न्यारँ॥ऽ
उपागामगामुपान्न्यानन्न्यारँ॥ऽ उपागाम्। उपागामगामुपोपागामर्व्वागर्व्वागगा-
मुपोपागामर्व्वाक्। अगामर्व्वागर्व्वागगामगामर्व्वाक्क्वा त्वार्व्वागगामगामर्व्वाक्क्वा।
अर्व्वाक्क्वा त्वार्व्वागर्व्वाक्क्वा परेब्भ्यः परेब्भ्यस्त्वार्व्वागर्व्वाक्क्वा परेब्भ्यः। त्वा परे-
ब्भ्यः परेब्भ्यस्त्वा त्वा परेब्भ्योविंदमविंदम्परेब्भ्यस्त्वा त्वा परेब्भ्योविंदम्।
परेब्भ्योविंदमविंदम्परेब्भ्यः परेब्भ्योविंदम्परः परोविंदम्परेब्भ्यः परेब्भ्योविंद-
म्परः। अविंदम्परः परोविंदमविंदम्परोवरेब्भ्योवरेब्भ्यः परोविंदमविंदम्परो-
वरेब्भ्यः। परोवरेब्भ्योवरेब्भ्यः परः परोवरेब्भ्यः। अवरेब्भ्यऽ इत्त्यवरेब्भ्यः॥
तन्त्वा त्वा तन्तन्त्वा जुषामहे जुषामहे त्वा तन्तन्त्वा जुषामहे। त्वा जुषामहे
जुषामहे त्वा त्वा जुषामहे देव देव जुषामहे त्वा त्वा जुषामहे देव। जुषामहे देव
देव जुषामहे जुषामहे देव व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते देव जुषामहे जुषामहे देव
व्वनस्प्पते[2]। देव व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते देव देव व्वनस्प्पते देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै
व्वनस्प्पते देव देव व्वनस्प्पते देवयज्ज्यायै। व्वनस्प्पते देवयज्ज्यायै देवयज्ज्यायै
व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते देवयज्ज्यायै देवा देवा देवयज्ज्यायै व्वनस्प्पते व्वनस्प्पते

---

1. अमꣳस्त यहाँ ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०२) की प्रवृत्ति नहीं होगी, वा.प्रा.८.७. तथा ८.२१. के अनुसार अनुस्वार की गणना व्यञ्जनों में है।

2. पत्यौ च सकारेण (वा. प्रा. ३.५०) पति शब्द वाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित हो जाता है।

देवयुज्यायै देवाः। देवयुज्यायै देवा देवा देवयुज्यायै देवयुज्यायै देवास्त्वा त्वा देवा देवयुज्यायै देवयुज्यायै देवास्त्वा[1]। देवयुज्याया इति देव यज्यायै। देवास्त्वा त्वा देवा देवास्त्वा देवयुज्यायै देवयुज्यायै त्वा देवा देवास्त्वा देवयुज्यायै। त्वा देवयुज्यायै देवयुज्यायै त्वा त्वा देवयुज्यायै जुषन्ता-ञ्जुषन्तान्देवयुज्यायै त्वा त्वा देवयुज्यायै जुषन्ताम्। देवयुज्यायै जुषन्ता-ञ्जुषन्तान्देवयुज्यायै देवयुज्यायै जुषन्ताँव्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे जुषन्तान्देव-युज्यायै देवयुज्यायै जुषन्ताँव्विष्ण्णवे। देवयुज्याया इति देव यज्यायै। जुषन्ताँव्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे जुषन्ताञ्जुषन्ताँव्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवे जुषन्ता-ञ्जुषन्ताँव्विष्ण्णवे त्वा। व्विष्ण्णवे त्वा त्वा व्विष्ण्णवे व्विष्ण्णवे त्वा। त्वेति त्वा॥४०॥

द्याम्मा मा द्यान्द्याम्मा लेखीर्ल्लेखीर्म्मा द्यान्द्याम्मा लेखीः। मा लेखीर्ल्ले-खीर्म्मा मा लेखीरन्तरिक्षमन्तरिक्षँल्लेखीर्म्मा मा लेखीरन्तरिक्षम्। लेखीर-न्तरिक्षमन्तरिक्षँल्लेखीर्ल्लेखीरन्तरिक्षम्मा मान्तरिक्षँल्लेखीर्ल्लेखीरन्तरिक्ष-म्मा। अन्तरिक्षम्मा मान्तरिक्षमन्तरिक्षम्मा हिंꣳसीर्हिꣳसीर्म्मान्तरिक्षम-न्तरिक्षम्मा हिंꣳसीः। मा हिंꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा मा हिंꣳसीः पृथिव्या पृथिव्या हिंꣳसीर्म्मा मा हिंꣳसीः पृथिव्या। हिꣳसीः पृथिव्या पृथिव्या हिंꣳसीर्हिꣳसीः पृथिव्या सꣳ सम्पृथिव्या हिंꣳसीर्हिꣳसीः पृथिव्या सम्। पृथिव्या सꣳ सम्पृथि-व्या पृथिव्या सम्भव भव सम्पृथिव्या पृथिव्या सम्भव[2]। सम्भव भव सꣳ सम्भव। भवेति भव॥ अयꣳ हि ह्ययमयꣳ हि त्वा त्वा ह्ययमयꣳ हि त्वा। हि त्वा त्वा हि हि त्वा स्वधितिः स्वधितिस्त्वा हि हि त्वा स्वधितिः। त्वा

[1]. देवाः त्वा यहाँ विसर्जनीयः (वा.प्रा.३.६) के अधिकार में पठित सूत्र तथयोः सम् (वा.प्रा.३.८) से विसर्जनीय सकार होता है। ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा.प्रा.४.१०३) से तकार का द्वित्व विहित है।

[2]. पृथिव्या स्वरान्तं सम्भव शुक्रो मन्थी पृथिवीं परो देवेभिरित्येतेषु (वा. प्रा. ४.२८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑तिस्त्वा त्वा॒ स्वधि॑ति॒स्तेति॑जान॒स्तेति॑जान॒ः स्वधि॑तिस्त्वा त्वा॒ स्वधि॑ति॒स्तेति॑जानः। स्वधि॑ति॒स्तेति॑जान॒स्तेति॑जान॒ः स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑ति॒स्ते-ति॑जानः प्प्रणि॒नाय॑ प्प्रनि॒नाय॒ तेति॑जान॒ः स्वधि॑ति॒ः स्वधि॑ति॒स्तेति॑जानः प्प्रणि॒नाय॑। स्वधि॑ति॒रिति॒ स्व धि॑तिः। तेति॑जानः प्प्रणि॒नाय॑ प्प्रनि॒नाय॒ तेति॑जा-न॒स्तेति॑जानः प्प्रणि॒नाय॑ मह॒ते म॑ह॒ते प्प्र॑नि॒नाय॒ तेति॑जान॒स्तेति॑जानः प्प्रणि॒ना-य॑ मह॒ते। प्र॒णि॒नाय॑ मह॒ते म॑ह॒ते प्प्र॑नि॒नाय॑ प्प्रणि॒नाय॑ मह॒ते सौभ॑गाय॒ सौभ॑गाय मह॒ते प्प्र॑नि॒नाय॑ प्प्रणि॒नाय॑ मह॒ते सौभ॑गाय। प्र॒नि॒नायेति॑ प्प्र नि॒नाय॑। म॒ह॒ते सौभ॑गाय॒ सौभ॑गाय मह॒ते म॑ह॒ते सौभ॑गाय। सौभ॑गा॒येति॒ सौभ॑गाय॥ अत॒स्त्व-न्त्वमतोत॒स्त्वन्दे॑व देव॒ त्वमतोत॒स्त्वन्दे॑व। त्वन्दे॑व देव॒ त्वन्त्वन्दे॑व ब्वनस्प्पते ब्वनस्प्पते देव॒ त्वन्त्वन्दे॑व ब्वनस्प्पते। दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ दे॒व॒ दे॒व॒ ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ श॒तव॑ल्शः श॒तव॑ल्शो ब्वनस्प्पते देव देव ब्वनस्प्पते श॒तव॑ल्शः[1]। ब्व॒न॒स्प्प॒ते॒ श॒तव॑ल्शः श॒तव॑ल्शो ब्वनस्प्पते ब्वनस्प्पते श॒तव॑ल्शो॒ ब्वि वि श॒तव॑ल्शो ब्वनस्प्पते ब्वनस्प्पते श॒तव॑ल्शो॒ ब्वि। श॒तव॑ल्शो॒ ब्वि वि श॒तव॑ल्शः श॒तव॑ल्शो॒ ब्वि रो॑ह रोह॒ ब्वि श॒तव॑ल्शः श॒तव॑ल्शो॒ ब्वि रो॑ह। श॒तव॑ल्श॒ऽ इति॑ श॒त ब्व॑ल्शः। ब्वि रो॑ह रोह॒ ब्वि वि रो॑ह स॒हस्र॑वल्शाः स॒हस्र॑वल्शा रोह॒ ब्वि वि रो॑ह स॒हस्र॑वल्शाः। रो॒ह॒ स॒हस्र॑वल्शाः स॒हस्र॑वल्शा रोह रोह स॒हस्र॑वल्शा॒ ब्वि वि स॒हस्र॑वल्शा रोह रोह स॒हस्र॑वल्शा॒ ब्वि। स॒हस्र॑वल्शा॒ ब्वि वि स॒हस्र॑वल्शाः स॒हस्र॑वल्शा॒ ब्वि व॒यँब्व॒यँब्वि स॒हस्र॑वल्शाः स॒हस्र॑वल्शा॒ ब्वि व॒यम्। स॒हस्र॑वल्शा॒ऽ इति॑ स॒हस्र॑ ब्वल्शाः। ब्वि व॒यँब्व॒यँब्वि वि व॒यꣳ रु॑हेम रुहेम ब्व॒यँब्वि वि व॒यꣳ रु॑हेम। ब्व॒यꣳ रु॑हेम रुहेम ब्व॒यँब्व॒यꣳ रु॑हेम। रु॒हे॒मेति॑ रुहेम॥४१॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे पञ्चमोध्यायः॥

[1]. यहाँ हरिता नामक स्वर भक्ति है। शतवल्शेति हारिता – या. शि. १०१.

॥षष्ठोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ ॥ अ॒ग्ग्रे॒णीर॑स्यस्यग्ग्रे॒नीर॑ग्ग्रे॒णीर॑सि स्वावे॒शः स्वा॑वे॒शो॒स्यग्ग्रे॒नी-र॑ग्ग्रे॒णीर॑सि स्वावे॒शः। अ॒ग्ग्रे॒नीरित्त्य॑ग्ग्रे॒ नीः। अ॒सि॒ स्वा॒वे॒शः स्वा॑वे॒शो॒स्यसि स्वावे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णाꣳ स्वा॑वे॒शो॒स्यसि स्वावे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णाम्[1]। स्वा॒वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णाꣳ स्वा॑वे॒शः स्वा॑वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्यै॒तस्यो॑न्नेतॄ॒णाꣳ स्वा॑वे॒शः स्वा॑वे॒शऽ उ॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑। स्वा॒वे॒शऽ इति॑ सु आवे॒शः। उ॒न्ने॒तॄ॒णामे॒तस्यै॒तस्यो॑न्ने-तॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑ ब्वित्ताद्वित्ताद॒तस्यो॑न्नेतॄ॒णामु॑न्नेतॄ॒णामे॒तस्य॑ ब्वित्तात्। उ॒न्ने॒तॄ॒णा-मित्त्यु॑त् नेतॄ॒णाम्। ए॒तस्य॑ ब्वित्ताद्वित्ताद॒तस्यै॒तस्य॑ ब्वित्ता॒दद्ध्यधि॑ वित्ताद॒तस्यै॒तस्य॑ ब्वित्ता॒दधि॑ । ब्वि॒त्ता॒दद्ध्यधि॑ वित्ताद्वित्ता॒दधि॑ त्त्वा॒ त्त्वाधि॑ वित्ताद्वित्ता॒दधि॑ त्त्वा[2]। अधि॑ त्त्वा॒ त्त्वाद्ध्यधि॑ त्त्वा स्त्थास्यति स्त्थास्यति॒ त्त्वाद्ध्यधि॑ त्त्वा स्त्थास्यति। त्त्वा॒ स्त्था॒-स्य॒ति॒ स्त्था॒स्य॒ति॒ त्त्वा॒ त्त्वा॒ स्त्था॒स्य॒ति॒ दे॒वो दे॒व स्त्था॑स्यति त्त्वा त्त्वा स्त्थास्यति दे॒वः। स्था॒स्य॒ति॒ दे॒वो दे॒व स्त्था॑स्यति स्त्थास्यति दे॒वस्त्त्वा॑ त्त्वा दे॒व स्त्था॑स्यति स्त्थास्यति दे॒वस्त्त्वा॑। दे॒वस्त्त्वा॑ त्त्वा दे॒वो दे॒वस्त्त्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता त्त्वा॑ दे॒वो दे॒वस्त्त्वा॑ सवि॒ता। त्त्वा॒ स॒वि॒ता स॑वि॒ता त्त्वा॑ त्त्वा सवि॒ता मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता त्त्वा॑ त्त्वा सवि॒ता मद्ध्वा॑। स॒वि॒ता मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता मद्ध्वा॑नक्त्वनक्तु॒ मद्ध्वा॑ सवि॒ता स॑वि॒ता मद्ध्वा॑नक्तु। मद्ध्वा॑नक्त्वनक्तु॒ मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑नक्तु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्तु॒ मद्ध्वा॒ मद्ध्वा॑नक्तु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः। अ॒न॒क्तु॒ सु॒पि॒प्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्त्वनक्तु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा त्त्वा सुपिप्प॒लाब्भ्यो॑नक्त्वनक्तु सुपिप्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा। सु॒पि॒प्प॒लाब्भ्य॑स्त्वा त्त्वा सुपिप्प॒लाब्भ्य॑ः सुपिप्प॒लाब्भ्य॒-

[1] .उन्नेतृणाम् यहाँ ऋवर्णे वा.प्रा.४.११३. के अनुसार तकार का द्वित्व नहीं होता, अतः उन्नेत्रेणाम् ऐसा उच्चारण नहीं करना उचित होगा।

[2] . त्वा च (वा. प्रा. २.६) त्वा यह पद मध्यम पुरुष के अर्थ में विद्यमान होने पर अनुदात्त होता है।

स्त्वौषधीभ्य॒ऽ ओषधीभ्यस्त्वा सुपिप्पलाभ्यः सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः । सुपिप्पलाभ्य॒ऽ इति सु पिप्पलाभ्यः[1]। त्वौषधीभ्य॒ऽ ओषधीभ्यस्त्वा त्वौषधीभ्यः। ओषधीभ्य॒ऽ इत्योषधीभ्यः॥ द्यामग्रेणाग्रेण द्यान्द्यामग्रेणास्पृक्षोस्पृक्षोग्रेण द्यान्द्यामग्रेणास्पृक्षः। अग्रेणास्पृक्षोस्पृक्षोग्रेणाग्रेणास्पृक्ष॒ऽ आन्तरिक्षमन्तरिक्षमास्पृक्षोग्रेणाग्रेणास्पृक्ष॒ऽ आन्तरिक्षम्। अस्पृक्ष॒ऽ आन्तरिक्षमन्तरिक्षमास्पृक्षोस्पृक्ष॒ऽ आन्तरिक्षम्मद्ध्येन मद्ध्येनान्तरिक्षमास्पृक्षोस्पृक्ष॒ऽ आन्तरिक्षम्मद्ध्येन। आन्तरिक्षम्। अन्तरिक्षम्मद्ध्येन मद्ध्येनान्तरिक्षमन्तरिक्षम्मद्ध्येनाप्प्राऽ अप्प्रा मद्ध्येनान्तरिक्षमन्तरिक्षम्मद्ध्येनाप्प्राः। मद्ध्येनाप्प्राऽ अप्प्रा मद्ध्येन मद्ध्येनाप्प्राः पृथिवीम्पृथिवीमप्प्रा मद्ध्येन मद्ध्येनाप्प्राः पृथिवीम्। अप्प्राः पृथिवीम्पृथिवीमप्प्राऽ अप्प्राः पृथिवीमुपरेणोपरेण पृथिवीमप्प्राऽ अप्प्राः पृथिवीमुपरेण। पृथिवीमुपरेणोपरेण पृथिवीम्पृथिवीमुपरेणाद्दृꣳहीरद्दृꣳहीरुपरेण पृथिवीम्पृथिवीमुपरेणाद्दृꣳहीः। उपरेणाद्दृꣳहीरद्दृꣳहीरुपरेणोपरेणाद्दृꣳहीः। अद्दृꣳहीरित्यद्दृꣳहीः॥१॥

या ते ते या या ते धामानि धामानि ते या या ते धामानि[2]। ते धामानि धामानि ते ते धामान्युश्मस्युश्मसि धामानि ते ते धामान्युश्मसि। धामान्युश्मस्युश्मसि धामानि धामान्युश्मसि गमद्ध्यै गमद्ध्याऽ उश्मसि धामानि धामान्युश्मसि गमद्ध्यै। उश्मसि गमद्ध्यै गमद्ध्याऽ उश्मस्युश्मसि गमद्ध्यै यत्र यत्र गमद्ध्याऽ उश्मस्युश्मसि गमद्ध्यै यत्र। गमद्ध्यै यत्र यत्र गमद्ध्यै गमद्ध्यै यत्र गावो गावो यत्र गमद्ध्यै गमद्ध्यै यत्र गावः। यत्र गावो गावो

---

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार भ्यः इस विभक्ति से समस्त पद में पृथक्करण नहीं होगा, अतः सु इस पदांश से पृथक्करण होगा।

[2].निशब्दो बहुलम्(वा.प्रा.३.१८) इस सूत्र के अनुसार पदान्तीय नि शब्द का लोप होता है। सूत्रोक्त बहुलम् पद का तात्पर्य है कि कहीं लोप नहीं भी होता है, जैसे यहाँ धामानि।

यत्र॒ यत्र॒ गावो॒ भूरि॑शृङ्गा॒ भूरि॑शृङ्गा॒ गावो॒ यत्र॒ यत्र॒ गावो॒ भूरि॑शृङ्गाः॑[1]। गावो॒ भूरि॑शृङ्गा॒ भूरि॑शृङ्गा॒ गावो॒ गावो॒ भूरि॑शृङ्गाऽ अ॒यासो॒यासो॒ भूरि॑शृङ्गा॒ गावो॒ गावो॒ भूरि॑शृङ्गाऽ अ॒यास॑÷। भूरि॑शृङ्गाऽ अ॒यासो॒यासो॒ भूरि॑शृङ्गा॒ भूरि॑शृङ्गाऽ अ॒यास॑÷। भूरि॑शृङ्गा॒ऽ इति॒ भूरि॑ शृङ्गाः॑। अ॒यास॒ऽ इत्य॒यास॑÷॥ अत्राहाहात्रात्राह॒ तत्तदहात्रा-त्राह॒ तत्। अह॒ तत्तदहाह॒ तदु॑रुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ तदहाह॒ तदु॑रुगा॒यस्य॑। तदु॑रु-गा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ तत्तदु॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्णो॒र्व्विष्णो॑रुरुगा॒यस्य॒ तत्तदु॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्णोः॑। उ॒रु॒गा॒यस्य॒ व्विष्णो॒र्व्विष्णो॑रुरुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्णोः॑ प॒रमम्प॑-र॒मँव्विष्णो॑रुरुगा॒यस्यो॑रुगा॒यस्य॒ व्विष्णोः॑ प॒रमम्। उ॒रु॒गा॒यस्येत्यु॑रु गा॒यस्य॑। व्विष्णोः॑ प॒रमम्प॑र॒मँव्विष्णो॒र्व्विष्णोः॑ प॒रमम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मँव्विष्णो॒र्व्विष्णोः॑ प॒र॒-मम्प॒दम्। प॒र॒मम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्प॒दमवाव॑ प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्प॒दमव॑। प॒दम-वाव॑ प॒दम्प॒दमव॑ भारि भा॒र्व्यव॑ प॒दम्प॒दमव॑ भारि। अव॑ भारि भा॒र्व्यवाव॑ भारि॒ भूरि॒ भूरि॑ भा॒र्व्यवाव॑ भारि॒ भूरि॑। भा॒रि॒ भूरि॒ भूरि॑ भारि भारि॒ भूरि॑। भूरीति॒ भूरि॑॥२॥

व्विष्णो॒ः कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि॒ व्विष्णो॒र्व्विष्णो॒ः कर्म्मा॑णि पश्श्यत पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ व्विष्णो॒र्व्विष्णो॒ः कर्म्मा॑णि पश्श्यत। कर्म्मा॑णि पश्श्यत पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि पश्श्यत॒ यतो॒ यत॑÷ पश्श्यत॒ कर्म्मा॑णि॒ कर्म्मा॑णि पश्श्यत॒ यत॑÷[2]। प॒श्श्य॒त॒ यतो॒ यत॑÷ पश्श्यत पश्श्यत॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॒ यत॑÷ पश्श्यत पश्श्यत॒ यतो॑ व्व्रतानि॑। यतो॑ व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॒ यतो॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ पस्प॒शे प॑स्प॒शे व्व्रतानि॒ यतो॒ यतो॑ व्व्रतानि॑ पस्प॒शे। व्व्रतानि॑ पस्प॒शे प॑स्प॒शे व्व्रतानि॑ व्व्रतानि॑ पस्प॒शे। प॒स्प॒शऽ इति॑ पस्प॒शे॥ इन्द्र॑स्य॒ युज्ज्यो॒ युज्ज्य॒ऽ

[1]. भूरिशृङ्गाः भूरिशृङ्गाः यहाँ सन्धि की दशा में लोपं घी (वा. प्रा. ४.३९) इस सूत्र से प्रथम विसर्जनीय का लोप होता है।

[2].वा.प्रा.२.५८. के अनुसार गत्यर्थक यतः पद अन्तोदात होता है, यहाँ गत्यर्थक न होने से अन्तोदात्त नहीं है।

इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्य॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॑। युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्यो॒ युज्य॒ः सखा॑। सखेति॒ सखा॑॥३॥

तद्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॒स्तत्तद्विष्ण्णो॑ः प॒रमम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒स्तत्तद्विष्ण्णो॑ः प॒र-मम्। व्विष्ण्णो॑ः प॒रमम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒र्व्विष्ण्णो॑ः प॒रमम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मँव्विष्ण्णो॒-र्व्विष्ण्णो॑ः प॒रमम्प॒दम्। प॒र॒मम्प॒दम्प॒दम्प॑र॒मम्प॑र॒मम्प॒दꣳ सदा॒ सदा॑ प॒दम्प॑र॒म-म्प॑र॒मम्प॒दꣳ सदा॑। प॒दꣳ सदा॒ सदा॑ प॒दम्प॒दꣳ सदा॑ पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति॒ सदा॑ प॒दम्प॒दꣳ सदा॑ पश्श्यन्ति। सदा॑ पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति॒ सदा॒ सदा॑ पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः सू॒रय॑ः पश्श्यन्ति॒ सदा॒ सदा॑ पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः। प॒श्श्य॒न्ति॒ सू॒रय॑ः सू॒रय॑ः पश्श्यन्ति पश्श्यन्ति सू॒रय॑ः। सू॒रय॒ऽ इति॑ सू॒रय॑ः॥ दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒श्चक्क्षु॑-र्द्दि॒वी॒व दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒रात॑त॒मात॑त॒ञ्चक्क्षु॑र्द्दि॒वी॒व दि॒वी॒व॒ चक्क्षु॒रात॑तम्। दि॒वी॒वेति॑ दि॒वि इ॑व[1]। चक्क्षु॒रात॑त॒मात॑त॒ञ्चक्क्षु॒श्चक्क्षु॒रात॑तम्। आत॑त॒मित्या त॑तम्॥४॥

प॒रि॒वीर॑स्यसि परि॒वीः प॑रि॒वीर॑सि॒ परि॒ पर्य्यसि परि॒वीः प॑रि॒वीर॑सि॒ परि॑। प॒रि॒वीरिति॑ परि॒ व्वीः। अ॒सि॒ परि॒ पर्य्य॑स्यसि॒ परि॑ त्वा त्वा॒ पर्य्य॑स्यसि॒ परि॑ त्वा। परि॑ त्वा त्वा॒ परि॒ परि॑ त्वा॒ दैवी॒र्द्दैवी॑स्त्वा॒ परि॒ परि॑ त्वा॒ दैवी॑ः। त्वा॒ दैवी॒र्द्दैवी॑स्त्वा त्वा॒ दैवी॒र्व्विशो॒ व्विशो॒ दैवी॑स्त्वा त्वा॒ दैवी॒र्व्विश॑ः। दैवी॒र्व्विशो॒ व्विशो॒ दैवी॒र्द्दैवी॒र्व्विशो॑ ह्वयन्तां॒ह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ दैवी॒र्द्दैवी॒र्व्विशो॑ ह्वयन्ताम्। व्विशो॑ ह्वयन्तां॒ह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ व्विशो॑ ह्वयन्ता॒म्परि॒ परि॑ ह्वयन्ताँ॒व्विशो॒ व्विशो॑ ह्वयन्ता॒म्परि॑। ह्व॒य॒न्ता॒म्परि॒ परि॑ ह्वयन्ताँ॒ह्वयन्ता॒म्परी॒ममि॒मम्परि॑ ह्वयन्ताँ॒ह्वयन्ता॒म्परी॒मम्। परी॒ममि॒मम्परि॒ परी॒मँय्यज॑मानँ॒य्यज॑मानमि॒मम्परि॒ परी॒मँय्यज॑मानम्। इ॒मँय्यज॑मानँ॒य्यज॑मान-मि॒ममि॒मँय्यज॑माना॒ꣳ रायो॒ रायो॒ यज॑मानमि॒ममि॒मँय्यज॑मान॒ꣳ राय॑ः। यज॑मा-

[1]. ऋजुन्निहत्य प्रणिहन्यते उदात्ते (वा. प्रा. १.१२४) दि॒वी॒वेति॑ यहाँ स्वरित के पश्चात् उदात्त आने के कारण दि के प्रदर्शन में हाथ को अनुदात्त के स्थान पर (नीचे) ले जाकर तदनन्तर वी के प्रदर्शन में प्रकृष्ट रूप से नीचे ले जाया जाता है। इवर्ण उभयतो ह्रस्वः प्रश्लिष्टः (वा.प्रा.१.११६) इस सूत्र के अनुसार दि॒वि इ॒व यहाँ उदात्त इकार तथा अनुदात्त इकार दीर्घ होने से प्रश्लिष्ट नामक स्वरित होता है।

नः रायो रायो यजमानँय्यजमानः रायो मनुष्याणाम्मनुष्याणाᳬ रायो यजमानँय्यजमानः रायो मनुष्याणाम्। रायो मनुष्याणाम्मनुष्याणाᳬ रायो रायो मनुष्याणाम्। मनुष्याणामिति मनुष्याणाम्॥ दिवः सूनुः सूनुर्द्दिवो दिवः सूनुरस्यसि सूनुर्द्दिवो दिवः सूनुरसि। सूनुरस्यसि सूनुः सूनुरस्येषऽ एषोसि सूनुः सूनुरस्येषः। अस्येषऽ एषोस्यस्येष तें तऽ एषोस्यस्येष तें।[1] एष तें तऽ एषऽ एष तें पृथिव्यामपृथिव्यान्तऽ एषऽ एष तें पृथिव्याम्। ते पृथिव्याम्पृथिव्यान्तें ते पृथिव्याँल्लोको लोकः पृथिव्यान्तें ते पृथिव्याँल्लोकः। पृथिव्याँल्लोको लोकः पृथिव्याम्पृथिव्याँल्लोकऽ आरण्यऽ आरण्यो लोकः पृथिव्याम्पृथिव्याँल्लोकऽ आरण्यः। लोकऽ आरण्यऽ आरण्यो लोको लोकऽ आरण्यस्तें तऽ आरण्यो लोको लोकऽ आरण्यस्तें। आरण्यस्तें तऽ आरण्यऽ आरण्यस्तें पशुः पशुस्तऽ आरण्यऽ आरण्यस्तें पशुः। ते पशुः पशुस्तें ते पशुः। पशुरिति पशुः॥५॥

उपावीरस्यस्युपावीरुपावीरस्युपोपास्युपावीरुपावीरस्युप। उपावीरित्युप अवीः। अस्युपोपास्यस्युप देवान्देवानुपास्यस्युप देवान्। उप देवान्देवानुपोप देवान्दैवीर्दैवीर्द्देवानुपोप देवान्दैवीः। देवान्दैवीर्दैवीर्द्देवान्देवान्दैवीर्व्विशो व्विशो दैवीर्द्देवान्देवान्दैवीर्व्विशः। दैवीर्व्विशो व्विशो दैवीर्दैवीर्व्विशः प्प प्प विशो दैवीर्दैवीर्व्विशः प्प। व्विशः प्प प्प विशो व्विशः प्प्रागुरगुः प्प विशो व्विशः प्प्रागुः। प्रागुरगुः प्प प्प्रागुरुशिजऽ उशिजोगुः प्प प्प्रागुरुशिजः। अगुरुशिजऽ उशिजोगुरगुरुशिजो व्वह्नितमान्वह्नितमानुशिजोगुरगुरुशिजो व्वह्नितमान्। उशिजो व्वह्नितमान्वह्नितमानुशिजऽ उशिजो व्वह्नितमान्। व्वह्नितमानिति वह्नि

[1]. एषः ते यहाँ स्य एष च(वा.प्रा.३.१७) के अनुसार व्यञ्जन बाद में होने से एषः के विसर्जनीय का लोप होता है।

तमान्॥ दे॒वं॑ त्वष्टस्त्वष्ट॒र्द्दे॑व॒ दे॒वं॑ त्वष्ट॒र्व्व॑सु॒ व्व॒सु॑ त्वष्ट॒र्द्दे॑व॒ दे॒वं॑ त्वष्ट॒र्व्व॒सु॑[1]। त्व॒ष्ट॒र्व्व॒सु॒ व्व॒सु॑ त्वष्टस्त्वष्ट॒र्व्व॒सु॑ रम रम॒ व्व॒सु॑ त्वष्टस्त्वष्ट॒र्व्व॒सु॑ रम। व्व॒सु॑ रम रम॒ व्व॒सु॒ व्व॒सु॑ रम हु॒ध्या हु॒ध्या र॑म॒ व्व॒सु॒ व्व॒सु॑ रम हु॒ध्या। र॒म॒ हु॒ध्या हु॒ध्या र॑म रम हु॒ध्या तें॑ ते हु॒ध्या र॑म रम हु॒ध्या तें॑। हु॒ध्या तें॑ ते हु॒ध्या हु॒ध्या तें॑ स्वदन्ताꣳ स्वदन्तान्ते हु॒ध्या हु॒ध्या तें॑ स्वदन्ताम्। ते॒ स्व॒द॒न्ता॒ꣳ स्व॒द॒न्ता॒न्ते॒ ते॒ स्व॒द॒न्ता॒म्। स्व॒द॒न्ता॒मिति॑ स्व-दन्ताम्॥६॥

रेव॑ती॒ रम॑ध्वꣳ रम॑ध्वꣳ रेव॑ती॒ रेव॑ती॒ रम॑ध्व॒म्बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते॒ रम॑ध्वꣳ रेव॑-ती॒ रेव॑ती॒ रम॑ध्व॒म्बृह॑स्प्पते। रम॑ध्व॒म्बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते॒ रम॑ध्वꣳ रम॑ध्व॒म्बृह॑स्प्पते धा॒रय॑ धा॒रय॒ बृह॑स्प्पते॒ रम॑ध्वꣳ रम॑ध्व॒म्बृह॑स्प्पते धा॒रय॑। बृह॑स्प्पते धा॒रय॑ धा॒रय॒ बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते धा॒रया॒ व्वसू॑नि॒ व्वसू॑नि धा॒रय॒ बृह॑स्प्पते॒ बृह॑स्प्पते धा॒रया॒ व्वसू॑नि । धा॒रया॒ व्वसू॑नि॒ व्वसू॑नि धा॒रय॑ धा॒रया॒ व्वसू॑नि। व्वसू॒नीति॒ वसू॑नि॥ ऋ॒तस्य॑ त्वा त्वऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ त्वा देवहवि॑र्द्देवहविस्त्वऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ त्वा देवहविः। त्वा॒ दे॒व॒ह॒वि॒र्द्दे॒व॒ह॒वि॒स्त्वा॒ त्वा॒ दे॒व॒ह॒वि॒ः पाशे॑न॒ पाशे॑न देवहविस्त्वा त्वा देवहवि॒ः पाशे॑न। दे॒व॒ह॒वि॒ः पाशे॑न॒ पाशे॑न देवहवि॑र्द्देवहवि॒ः पाशे॑न॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ पाशे॑न देवहवि॑र्द्देवहवि॒ः पाशे॑न॒ प्प्रति॑। दे॒व॒ह॒वि॒रिति॑ देव हविः। पाशे॑न॒ प्प्रति॒ प्प्रति॒ पाशे॑न॒ पाशे॑न॒ प्प्रति॑ मुञ्चामि मुञ्चामि॒ प्प्रति॒ पाशे॑न॒ पाशे॑न॒ प्प्रति॑ मुञ्चामि। प्रति॑ मुञ्चामि मुञ्चामि॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ मुञ्चामि॒ धर्ष॒ धर्षं॑ मुञ्चामि॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ मुञ्चामि॒ धर्षं॑। मु॒ञ्चा॒मि॒ धर्ष॒ धर्षं॑ मुञ्चामि मुञ्चामि॒ धर्षा॒ मानु॑षो॒ मानु॑षो॒ धर्षं॑ मुञ्चामि मुञ्चामि॒ धर्षा॒ मानु॑षः[2]। धर्षा॒ मानु॑षो॒ मानु॑षो॒ धर्ष॒ धर्षा॒ मानु॑षः। मानु॑ष॒ऽ इति॒ मानु॑षः॥

---

[1]. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार त्वष्टः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

[2]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार धर्ष मानुषः यहाँ धर्ष के अन्तिम स्वर का दीर्घ होना कहा गया है। भाष्यकार महीधर ने द्व्यचोऽतस्तिङः(पा.६.३.१३५) से दीर्घ कहा है।

अ॒ग्नीषोमा॑भ्या॒ञ्जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑म॒ग्नीषोमा॑भ्याम॒ग्नीषोमा॑भ्या॒ञ्जुष्ट॒न्नि नि जुष्ट॑म॒ग्नी-षोमा॑भ्याम॒ग्नीषोमा॑भ्या॒ञ्जुष्ट॒न्नि[1]। जुष्ट॒न्नि नि जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒न्नि युं॑नज्मि युनज्मि॒ नि जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒न्नि युं॑नज्मि। नि युं॑नज्मि युनज्मि॒ नि नि युं॑नज्मि। यु॒न॒ज्मीति॑ युनज्मि॥ अ॒द्भ्यस्त्वा॑ त्वा॒द्भ्यो॒द्भ्यस्त्वौष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यस्त्वा॒द्भ्यो॒-द्भ्यस्त्वौष॑धीभ्यः। अ॒द्भ्यऽ इत्य॒त् भ्यः। त्वौष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यस्त्वा॒ त्वौष॑धीभ्यः। ओष॑धीभ्य॒ऽ इत्योष॑धीभ्यः॥७॥

अ॒पाम्पे॒रुः पे॒रुर॒पाम॒पाम्पे॒रुर॑स्यसि पे॒रुर॒पाम॒पाम्पे॒रुर॑सि। पे॒रुर॑स्यसि पे॒-रुः पे॒रुर॒स्याप॒ऽ आपों॑सि पे॒रुः पे॒रुर॒स्याप॑ः। अ॒स्याप॒ऽ आपों॑स्य॒स्यापों॑ दे॒वीर्दे॒-वीरापों॑स्य॒स्यापों॑ दे॒वीः। आपों॑ दे॒वीर्दे॒वीराप॒ऽ आपों॑ दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वदन्तु दे॒वी-राप॒ऽ आपों॑ दे॒वीः स्वद॑न्तु। दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वदन्तु दे॒वीर्दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वा॒त्तꣳ स्वा॒त्तꣳ स्वद॑न्तु दे॒वीर्दे॒वीः स्वद॑न्तु स्वा॒त्तम्। स्व॒द॒न्तु॒ स्वा॒त्तꣳ स्वा॒त्तꣳ स्वद॑न्तु स्वदन्तु स्वा॒त्तञ्चिं॒चित्स्वा॒त्तꣳ स्वद॑न्तु स्वदन्तु स्वा॒त्तञ्चि॑त्। स्वा॒त्तञ्चिं॑चित्स्वा॒त्तꣳ स्वा॒त्तञ्चि॒त्सत्सचि॑त्स्वा॒त्तꣳ स्वा॒त्तञ्चि॒त्सत्। चि॒त्सत्सचिं॑चि॒सद्दे॑वह॒विर्दे॑वह॒विः सचिं॑चि॒त्सद्दे॑वह॒विः। सद्दे॑वह॒विर्दे॑वह॒विः सत्सद्दे॑वह॒विः। दे॒व॒ह॒विरिति॑ देव ह॒विः॥ सन्तें॑ ते॒ सꣳ सन्तें॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णस्ते॒ सꣳ सन्तें॑ प्प्रा॒णः। ते॒ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णस्तें॑ ते प्प्रा॒णो व्वातें॑न॒ व्वातें॑न प्प्रा॒णस्तें॑ ते प्प्रा॒णो व्वातें॑न। प्रा॒णो व्वातें॑न॒ व्वातें॑न प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वातें॑न गच्छताङ्गच्छता॒ँव्वातें॑न प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वातें॑न गच्छताम्[2]। व्वातें॑न गच्छताङ्गच्छता॒ँव्वातें॑न॒ व्वातें॑न गच्छता॒मङ्गा॒न्यङ्गा॑नि गच्छता॒ँव्वातें॑न॒ व्वातें॑न गच्छ-ता॒मङ्गा॑नि। ग॒च्छ॒ता॒मङ्गा॒न्यङ्गा॑नि गच्छताङ्गच्छता॒मङ्गा॑नि॒ यज॑त्रै॒र्य्यज॑त्रै॒रङ्गा॑नि

---

[1]. पूर्वो द्वन्द्वेष्ववायुषु (वा. प्रा. ३.१२७) इस सूत्र के अनुसार वायु-रहित द्वन्द्व समासों में पूर्व-पद का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

[2]. गच्छताम् वातेन यहाँ सन्धि की दशा में अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम् (वा. प्रा. ४.१०) इस सूत्र से मकार परवर्ती अन्तस्थ वर्ण (व) के समान स्थान वाला अनुनासिक अन्तस्थ हो जाता है।

गच्छताङ्गच्छतामङ्गानि यजत्रैः। अङ्गानि यजत्रैर्यजत्रैरङ्गान्यङ्गानि यजत्रैर्य्यु-ज्ज्ञपतिर्य्युज्ज्ञपतिर्य्यजत्रैरङ्गान्यङ्गानि यजत्रैर्य्युज्ज्ञपतिः। यजत्रैर्य्युज्ज्ञपति-र्य्युज्ज्ञपतिर्य्यजत्रैर्य्यजत्रैर्य्युज्ज्ञपतिराशिषाशिषा यज्ज्ञपतिर्य्यजत्रैर्य्यजत्रैर्य्यु-ज्ज्ञपतिराशिषा। यज्ज्ञपतिराशिषाशिषा यज्ज्ञपतिर्य्युज्ज्ञपतिराशिषा। यज्ज्ञ-पतिरिति यज्ज्ञ पतिः। आशिषेत्या शिषा॥८॥

घृतेनाक्तावक्तौ घृतेन घृतेनाक्तौ पशून्पशूनक्तौ घृतेन घृतेनाक्तौ पशून्। अक्तौ पशून्पशूनक्तावक्तौ पशूँस्त्रायेथान्त्रायेथाम्पशूनक्तावक्तौ पशूँस्त्रायेथाम्[1]। पशूँस्त्रायेथान्त्रायेथाम्पशून्पशूँस्त्रायेथाꣳ रेवति रेवति त्रायेथाम्पशून्पशूँस्त्रा-येथाꣳ रेवति। त्रायेथाꣳ रेवति रेवति त्रायेथान्त्रायेथाꣳ रेवति यजमाने यजमाने रेवति त्रायेथान्त्रायेथाꣳ रेवति यजमाने। रेवति यजमाने यजमाने रेवति रेवति यजमाने प्प्रियम्प्प्रियँय्यजमाने रेवति रेवति यजमाने प्प्रियम्। यजमाने प्प्रियम्प्प्रियँय्यजमाने यजमाने प्प्रियन्धा धाः प्प्रियँय्यजमाने यजमाने प्प्रिय-न्धाः। प्रियन्धा धाः प्प्रियम्प्प्रियन्धाऽ आ विंश ब्विशा धाः प्प्रियम्प्प्रियन्धाऽ आ विंश। धाऽ आ विंश ब्विशा धा धाऽ आ विंश। आ विंश। ब्विशेति विश॥ उरोर-न्तरिक्षादन्तरिक्षादुरोरुरोरन्तरिक्षात्सजूः सजूरन्तरिक्षादुरोरुरोरन्त-रिक्षात्सजूः। अन्तरिक्षात्सजूः सजूरन्तरिक्षादन्तरिक्षात्सजूर्द्देवेन देवेन सजूरन्तरिक्षादन्तरिक्षात्सजूर्द्देवेन। सजूर्द्देवेन देवेन सजूः सजूर्द्देवेन ब्वातेन ब्वातेन देवेन सजूः सजूर्द्देवेन ब्वातेन। सजूरिति स जूः। देवेन ब्वातेन ब्वातेन देवेन देवेन ब्वातेनास्यास्य ब्वातेन देवेन देवेन ब्वातेनास्य[2]। ब्वातेनास्यास्य ब्वातेन

---

[1]. पशून् त्रायेथाम् यहाँ तथयोः सम्(वा.प्रा.३.१३५) से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक वा.प्रा.४.१०३. से तकार का द्वित्व विहित है।

[2]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार हविषः बाद में होने पर अस्य पद अन्तोदात होता है।

वाते॑ना॒स्य ह॒विषो॑ ह॒विषो॒स्य वाते॑न॒ वाते॑ना॒स्य ह॒विषः॑। अ॒स्य ह॒विषो॑ ह॒विषो॒स्यास्य ह॒विष॒स्त्मना॒ त्मना॑ ह॒विषो॒स्यास्य ह॒विष॒स्त्मना॑। ह॒विष॒स्त्मना॒ त्मना॑ ह॒विषो॑ ह॒विष॒स्त्मना॑ यज यज॒ त्मना॑ ह॒विषो॑ ह॒विष॒स्त्मना॑ यज। त्मना॑ यज यज॒ त्मना॒ त्मना॑ यज॒ सꣳ सँय्य॑ज॒ त्मना॒ त्मना॑ यज॒ सम्। य॒ज॒ सꣳ सँय्य॑ज यज॒ सम॑स्यास्य॒ सँय्य॑ज यज॒ सम॑स्य। सम॑स्यास्य॒ सꣳ सम॑स्य त॒न्वा॒ त॒न्वा॒स्य॒ सꣳ सम॑स्य त॒न्वा॒। अ॒स्य॒ त॒न्वा॒ त॒न्वा॒स्यास्य त॒न्वा॒ भव भव त॒न्वा॒स्यास्य त॒न्वा॒ भव। त॒न्वा॒ भव भव त॒न्वा॒ त॒न्वा॒ भव। भ॒वेति॑ भव॥ वर्षो॒ वर्षी॑यसि॒ वर्षी॑यसि॒ वर्षो॒ वर्षो॒ वर्षी॑यसि य॒ज्ञे य॒ज्ञे वर्षी॑यसि॒ वर्षो॒ वर्षो॒ वर्षी॑यसि य॒ज्ञे। वर्षो॒ऽ इति॒ वर्षो॑। वर्षी॑यसि य॒ज्ञे य॒ज्ञे वर्षी॑यसि॒ वर्षी॑यसि य॒ज्ञे य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञे वर्षी॑यसि॒ वर्षी॑यसि य॒ज्ञे य॒ज्ञप॑तिम्। य॒ज्ञे य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञे य॒ज्ञे य॒ज्ञप॑तिन्धा धा य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञे य॒ज्ञे य॒ज्ञप॑तिन्धाः। य॒ज्ञप॑तिन्धा धा य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिन्धा॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ धा य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑तिन्धा॒ः स्वाहा॑। य॒ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। धा॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ धा धा॒ः स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॑ धा धा॒ः स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑। स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑। दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॑। दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॒ः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥९॥

माहि॒रहि॒र्म्मा माहि॑र्भूर्भूरहि॒र्म्मा[1] माहि॑र्भूः। अहि॑र्भूर्भूरहि॒रहि॑र्भूर्म्मा मा भू॒रहि॒रहि॑र्भू॒र्म्मा। भू॒र्म्मा मा भूं॑र्भू॒र्म्मा पृदा॑कुः पृदा॑कु॒र्म्मा भूं॑र्भू॒र्म्मा पृदा॑कुः

[1]. मा च (वा. प्रा. २.४) के अनुसार उत्तमपुरुष के अर्थ में विद्यमान मा पद अनुदात होता है। यहाँ मा पद निषेधार्थक होने से उदात है।

। मा पृदा॑कुः पृदा॑कुर्म्मा मा पृदा॑कुर्न्नमो॒ नम॒ः पृदा॑कुर्म्मा मा पृदा॑कु॒र्न्नम॑ः।
पृदा॑कु॒र्न्नमो॒ नम॒ः पृदा॑कुः पृदा॑कु॒र्न्नम॑स्ते ते॒ नम॒ः पृदा॑कुः पृदा॑कु॒र्न्नम॑स्ते। नम॑स्ते
ते॒ नमो॒ नम॑स्तऽ आतानातान ते॒ नमो॒ नम॑स्तऽ आतान। त॒ऽ आ॒ता॒ना॒ता॒न॒ ते॒ त॒ऽ
आ॒ता॒ना॒न॒र्व्वा॒न॒र्व्वाता॑न ते तऽ आताना॒न॒र्व्वा। आ॒ता॒ना॒न॒र्व्वा॒न॒र्व्वाता॑नातानान॒र्व्वा प्प्र
प्प्रान॒र्व्वाता॑नातानान॒र्व्वा प्प्र। आ॒ता॒नेत्या॑ तान। अ॒न॒र्व्वा प्प्र प्प्रान॒र्व्वान॒र्व्वा प्प्रेहीँहि॒
प्प्रान॒र्व्वान॒र्व्वा प्प्रेहिँ। प्रेहीँहि॒ प्प्र प्प्रेहिँ। इ॒हीतीँहि॥ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्याः कु॒ल्ल्या
घृ॒तस्य॑ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्याऽ उपोप॑ कु॒ल्ल्या घृ॒तस्य॑ घृ॒तस्य॑ कु॒ल्ल्याऽ उप॑।
कु॒ल्ल्याऽ उपोप॑ कु॒ल्ल्याः कु॒ल्ल्याऽ उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्योप॑ कु॒ल्ल्याः
कु॒ल्ल्याऽ उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑। उप॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्योपोप॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ः
पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्योपोप॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॑ः। ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ः पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ
ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ऽ अन्न्वनु॒ पत्थ्या॑ऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॒ पत्थ्या॒ऽ अनु॑। पत्थ्या॒ऽ
अन्न्वनु॒ पत्थ्या॒ः पत्थ्या॒ऽ अनु॑। अन्न्वित्त्यनु॑॥१०॥

देवी॑रापऽ आपो॒ देवी॒र्देवी॑रापः शु॒द्धाः शु॒द्धाऽ आ॑पो॒ देवी॒र्देवी॑रापः शु॒द्धाः।
आ॒प॒ः शु॒द्धाः शु॒द्धाऽ आ॑पऽ आपः शु॒द्धा ब्वोँढ्ढ॒ँब्वोढ्ढ॒ः शु॒द्धाऽ आ॑पऽ आपः शु॒द्धा
ब्वोँढ्ढम्। शु॒द्धा ब्वोँढ्ढ॒ँब्वोढ्ढ॒ः शु॒द्धाः शु॒द्धा ब्वोँढ्ढ॒ः सुप॑रिविष्टा॒ः सुप॑रिविष्टा ब्वोढ्ढ॒ः
शु॒द्धाः शु॒द्धा ब्वोँढ्ढ॒ः सुप॑रिविष्टाः[1]। ब्वो॒ढ्ढ॒ः सुप॑रिविष्टा॒ः सुप॑रिविष्टा ब्वोँढ्ढ॒ँब्वोढ्ढ॒ः
सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टा ब्वोँढ्ढ॒ँब्वोढ्ढ॒ः सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॑। सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॑
दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टा॒ः सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टा॒ः सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टा॒ः
सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टाः। सुप॑रिविष्टा॒ऽ इति॒ सु प॑रिविष्टाः। दे॒वेषु॒ सुप॑रिवि-
ष्टा॒ः सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सुप॑रिविष्टा ब्व॒यँब्व॒यः सुप॑रिविष्टा दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ सुप॑रिवि-

[1]. सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टाः यहाँ सन्धि की दशा में अविकारं शाकल्यः शषसेषु (वा. प्रा. ३.१०) इस सूत्र से विसर्जनीय विकार को नहीं प्राप्त होगा।

ष्टा व्वयम्। सुपरिविष्टा व्वयँव्वयꣳ सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टा व्वयम्परिवेष्टारः परिवे-
ष्टारो व्वयꣳ सुपरिविष्टाः सुपरिविष्टा व्वयम्परिवेष्टारः। सुपरिविष्टाऽ इति सु परि-
विष्टाः। व्वयम्परिवेष्टारः परिवेष्टारो व्वयँव्वयम्परिवेष्टारो भूयास्म्म भूयास्म्म परि-
वेष्टारो व्वयँव्वयम्परिवेष्टारो भूयास्म्म। परिवेष्टारो भूयास्म्म भूयास्म्म परिवेष्टारः
परिवेष्टारो भूयास्म्म। परिवेष्टारऽ इति परि व्वेष्टारः। भूयास्म्मेति भूयास्म्म॥११॥

व्वाचन्ते ते व्वाचँव्वाचन्ते शुन्धामि शुन्धामि ते व्वाचँव्वाचन्ते शुन्धामि। ते
शुन्धामि शुन्धामि ते ते शुन्धामि प्प्राणम्प्राणꣳ शुन्धामि ते ते शुन्धामि प्प्राणम्
। शुन्धामि प्प्राणम्प्राणꣳ शुन्धामि शुन्धामि प्प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणꣳ
शुन्धामि शुन्धामि प्प्राणञ्चक्षुः। प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणम्प्राणञ्चक्षुः श्रोत्रꣳ
श्रोत्रञ्चक्षुः प्राणम्प्राणञ्चक्षुः श्रोत्रम्[1]। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः
श्रोत्रन्नाभिन्नाभिꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रन्नाभिम्। श्रोत्रन्नाभिन्नाभिꣳ श्रोत्रꣳ
श्रोत्रन्नाभिम्मेढ्रम्मेढ्रन्नाभिꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रन्नाभिम्मेढ्रम्। नाभिम्मेढ्रम्मेढ्रन्नाभि-
न्नाभिम्मेढ्रम्पायुम्पायुम्मेढ्रन्नाभिन्नाभिम्मेढ्रम्पायुम्। मेढ्रम्पायुम्पायुम्मेढ्रम्मेढ्र-
म्पायुञ्चरित्राँश्चरित्रान्त्पायुम्मेढ्रम्मेढ्रम्पायुञ्चरित्रान्। पायुञ्चरित्राँश्चरित्रान्त्पायुम्पा-
युञ्चरित्रान्। चरित्रानिति चरित्रान्॥१२॥

मनस्ते ते मनो मनस्तऽ आ प्प्यायताम्प्यायतामा ते मनो मनस्तऽ आ
प्प्यायताम्। तऽ आ प्प्यायताम्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायताँव्वाग्ग्वाक्प्यायता-
मा ते तऽ आ प्प्यायताँव्वाक्। आ प्प्यायताम्। प्यायताँव्वाग्ग्वाक् प्यायताम्प्याय-
ताँव्वाक् प्राणः प्प्राणो व्वाक् प्यायताम्प्यायताँव्वाक् प्राणः। व्वाक् प्राणः प्प्राणो
व्वाग्ग्वाक् प्राणश्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणो व्वाग्ग्वाक् प्राणश्चक्षुः। प्राणश्चक्षुश्चक्षुः

---

1. चक्षुः श्रोत्रम् यहाँ विसर्जनीय के बाद शकार द्वित्व नहीं होगा, विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७) इस सूत्र के अनुसार बाद में व्यञ्जन होने पर विसर्जनीय से परवर्ती स्पर्श ही द्वित्व को प्राप्त करता है।

प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुः प्प्राणः प्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम्। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रञ्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रम्। श्रोत्रमिति श्श्रोत्रम्॥ यत्ते ते यद्यत्ते क्रूरङ्क्रूरन्ते यद्यत्ते क्रूरम्। ते क्रूरङ्क्रूरन्ते ते क्रूरँय्यद्यत्क्रूरन्ते ते क्रूरँय्यत्। क्रूरँय्यद्यत्क्रूरङ्क्रूरँय्यदास्त्थितमास्त्थितँय्यत्क्रूरङ्क्रूरँय्यदास्त्थितम्। यदास्त्थितमास्त्थितँय्यद्यदास्त्थितन्तत्तदास्त्थितँय्यद्यदास्त्थितन्तत्।

आस्त्थितन्तत्तदास्त्थितमास्त्थितन्तत्ते ते तदास्त्थितमास्त्थितन्तत्ते। आस्त्थितमित्या स्थितम्। तत्ते ते तत्तत्ऽ आ प्प्यायतामप्प्यायतामा ते तत्तत्ऽ आ प्प्यायताम्। तऽ आ प्प्यायतामप्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायतान्निर्न्निः प्प्यायतामा ते तऽ आ प्प्यायतान्निः। आ प्प्यायताम्। प्प्यायतान्निर्न्निः प्प्यायतामप्प्यायतान्नि ष्ट्यायताꣳ स्त्यायतान्निः प्प्यायतामप्प्यायतान्नि ष्ट्यायताम्[1]। नि ष्ट्यायताꣳ स्त्यायतान्निर्न्नि ष्ट्यायतान्तत्तत्स्त्यायतान्निर्न्नि ष्ट्यायतान्तत्।[2] स्त्यायतान्तत्तत्स्त्यायताꣳ स्त्यायतान्तत्ते ते तत्स्त्यायताꣳ स्त्यायतान्तत्ते। तत्ते ते तत्तत्ते शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु ते तत्तत्ते शुद्ध्यतु। ते शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु ते ते शुद्ध्यतु शꣳ शꣳ शुद्ध्यतु ते ते शुद्ध्यतु शम्। शुद्ध्यतु शꣳ शꣳ शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु शमहोब्भ्योहोब्भ्यः शꣳ शुद्ध्यतु शुद्ध्यतु शमहोब्भ्यः। शमहोब्भ्योहोब्भ्यः शꣳ शमहोब्भ्यः। अहोब्भ्यऽ इत्त्यहः भ्यः॥१३॥

निरस्तꣳ रक्क्षो रक्क्षो निरस्तन्निरस्तꣳ रक्क्षऽ इदमिदꣳ रक्क्षो निरस्तन्निरस्तꣳ रक्क्षऽ इदम्। निरस्तमिति निः अस्तम्। रक्क्षऽ इदमिदꣳ रक्क्षो

---

[1]. निः स्त्यायताम् यहाँ सन्धि की दशा में नेः स्त्यास्तनोः (वा,. प्रा. ३.६९) इस सूत्र से सकार षकार हो जाता है। षात्तथौ मूर्धन्यम् (वा. प्रा. ३.७९) इस सूत्र से षकार से परवर्ती तकार टकार हो जाता है।

[2]. तत् स्त्यायताम् यहाँ तकार के बाद न तो तकार का एवं न ही सकार के बाद तकार का द्वित्व होगा। यैस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५) यत्र चोभयतः स्पर्शैः सँय्युक्ताः शषसाः सह। तत्र नाद्यः क्रमो ज्ञेयो नापरो बोधितो बुधैः। पक्ष्माणि वाऽथ सूक्ष्मा(सुक्ष्मा) च विश्वप्स्या(विश्वप्स्या) च तथा पुनः। नेदृशेषु द्विरुक्तिः स्यादिति प्राहुर्मनीषिणः।-व.शिक्षा-१५७-१५९.

रक्ष॑ऽ इ॒दम॒हम॒हमि॒दꣳ रक्षो॒ रक्ष॑ऽ इ॒दम॒हम्। इ॒दम॒हम॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्षो॒ रक्षो॒हमि॒दमि॒दम॒हꣳ रक्ष॑ः। अ॒हꣳ रक्षो॒ रक्षो॒हम॒हꣳ रक्षो॒ब्भ्यु॒भि रक्षो॒हम॒हꣳ रक्षो॒भि। रक्षो॒ब्भ्यु॒भि रक्षो॒ रक्षो॒भि तिं॑ष्ठामि तिष्ठाम्म्यु॒भि रक्षो॒ रक्षो॒भि तिं॑ष्ठामि। अ॒भि तिं॑ष्ठामि तिष्ठाम्म्यु॒ब्भ्यु॒भि तिं॑ष्ठा॒म्म्यवाव॑ तिष्ठाम्म्यु॒ब्भ्यु॒भि तिं॑ष्ठा॒म्म्यव॑। ति॒ष्ठा॒म्म्यवाव॑ तिष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यव॑ बाधे बा॒धेव॑ तिष्ठामि तिष्ठा॒म्म्यव॑ बाधे। अव॑ बाधे बा॒धेवाव॑ बाधेधु॒मम॑धु॒मम्बा॒धेवाव॑ बाधेधु॒मम्। बा॒धे॒धु॒मम॑धु॒मम्बा॑धे बाधेधु॒मन्तमु॒स्तमो॑धु॒मम्बा॑धे बाधेधु॒मन्तम॑ः। अ॒धु॒मन्तमु॒स्तमो॑धु॒मम॑धु॒मन्तमो॑ नयामि नयामि॒ तमो॑धु॒मम॑धु॒मन्तमो॑ नयामि। तमो॑ नयामि नयामि॒ तमु॒स्तमो॑ नयामि। न॒या॒मीति॑ नयामि॥ घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी॒ प्प्र प्प्र द्या॑वापृथिवी घृ॒तेन॑ घृ॒तेन॑ द्यावा-पृथिवी॒ प्प्र। द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ प्प्र प्प्र द्या॑वापृथिवी द्यावापृथिवी॒ प्प्रोण्णु॑वाथा-मूण्णु॑वाथा॒म्प्र द्या॑वापृथिवी द्यावापृथिवी॒ प्प्रोण्णु॑वाथाम्। द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ऽ इति॑ द्यावापृथिवी[1]। प्रोण्णु॑वाथामूण्णु॑वाथा॒म्प्र प्प्रोण्णु॑वाथाँ॒व्वायो॒ व्वाय॑ऽ ऊण्णु॑वाथा॒म्प्र प्प्रोण्णु॑वाथाँ॒व्वायो॑। ऊ॒ण्णु॒वा॒थाँ॒व्वायो॒ व्वाय॑ऽ ऊण्णु॑वाथामूण्णु॑वाथाँ॒व्वायो॒ व्वेर्व्वेर्व्वाय॑ऽ ऊण्णु॑वाथामूण्णु॑वाथाँ॒व्वायो॒ व्वेः। व्वायो॒ व्वेर्व्वेर्व्वायो॒ व्वायो॒ व्वे स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑व्वेर्व्वायो॒ व्वायो॒ व्वे स्तो॒काना॑म्। व्वायो॒ऽ इति॒ वायो॑। व्वे स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑व्वेर्व्वे स्तो॒काना॑मु॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि स्तो॒काना॑व्वेर्व्वे स्तो॒काना॑मु॒ग्ग्निः। स्तो॒काना॑मु॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑मु॒ग्ग्निराज्ज्यु॒स्याज्ज्य॑स्या॒ग्ग्नि स्तो॒काना॑ꣳ स्तो॒काना॑मु॒ग्ग्निराज्ज्य॑स्य। अ॒ग्ग्निराज्ज्यु॒स्याज्ज्य॑स्या॒ग्ग्निर॒ग्ग्नि-राज्ज्य॑स्य व्वेतु व्वे॒त्वाज्ज्य॑स्या॒ग्ग्निर॒ग्ग्निराज्ज्य॑स्य व्वेतु। आज्ज्य॑स्य व्वेतु व्वे॒त्वाज्ज्यु॒स्याज्ज्य॑स्य व्वे॒तु स्वाहा॒ स्वाहा॑ व्वे॒त्वाज्ज्यु॒स्याज्ज्य॑स्य व्वे॒तु स्वाहा॑। व्वे॒तु

1. पदावृत्ती चान्तरेण (वा. प्रा. ४.२०) पद की द्विरुक्ति होने पर मध्य में इति होता है। जैसे द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी।

स्वाह॒ स्वाहा॑ ब्वेतु ब्वेतु॒ स्वाह॒ स्वाहा॑कृते॒ स्वाहा॑कृते॒ स्वाहा॑ ब्वेतु ब्वेतु॒ स्वाह॒ स्वाहा॑कृते। स्वाह॒ स्वाहा॑कृते॒ स्वाहा॑कृते॒ स्वाह॒ स्वाह॒ स्वाहा॑कृतेऽ ऊ॒र्द्ध्वन॑भसमू॒र्द्ध्वन॑भस॒ꣳ स्वाहा॑कृते॒ स्वाह॒ स्वाह॒ स्वाहा॑कृतेऽ ऊ॒र्द्ध्वन॑भसम्[1]। स्वाहा॑कृतेऽ ऊ॒र्द्ध्वन॑भसमू॒र्द्ध्वन॑भस॒ꣳ स्वाहा॑कृते॒ स्वाहा॑कृतेऽ ऊ॒र्द्ध्वन॑भसम्मारु॒त-म्मा॑रु॒तमू॒र्द्ध्वन॑भस॒ꣳ स्वाहा॑कृते॒ स्वाहा॑कृतेऽ ऊ॒र्द्ध्वन॑भसम्मारु॒तम्। स्वाहा॑कृते॒ऽ इति॒ स्वाहा॑ कृते। ऊ॒र्द्ध्वन॑भसम्मारु॒तम्मा॑रु॒तमू॒र्द्ध्वन॑भसमू॒र्द्ध्वन॑भसम्मारु॒तङ्ग॑च्छत-ङ्गच्छतम्मारु॒तमू॒र्द्ध्वन॑भसमू॒र्द्ध्वन॑भसम्मारु॒तङ्ग॑च्छतम्। ऊ॒र्द्ध्वन॑भस॒मित्यू॒र्द्ध्व न॑भसम् । मा॒रु॒तङ्ग॑च्छतङ्गच्छतम्मारु॒तम्मा॑रु॒तङ्ग॑च्छतम्। ग॒च्छ॒त॒मिति॑ गच्छतम्॥१४॥

इ॒दमा॑पऽ आपऽ इ॒दमि॒दमा॑प॒ः प्प्र प्प्राप॑ऽ इ॒दमि॒दमा॑प॒ः प्प्र। आ॒प॒ः प्प्र प्प्राप॑ऽ आप॒ः प्प्र व॑हत॒ ब्वहत॒ प्प्राप॑ऽ आप॒ः प्प्र व॑हत। प्र व॑हत ब्वहत॒ प्प्र प्प्र व॑ह-ताव॒द्यम॑व॒द्यँब्व॑हत॒ प्प्र प्प्र व॑हताव॒द्यम्। ब्व॒ह॒ता॒व॒द्यम॑व॒द्यँब्व॑हत ब्वहताव॒द्यञ्च॑ चाव॒द्यँब्व॑-हत ब्वहताव॒द्यञ्च॑। अ॒व॒द्यञ्च॑ चाव॒द्यम॑व॒द्यञ्च॒ मल॒म्मलं॑ञ्चाव॒द्यम॑व॒द्यञ्च॒ मलं॑म्। च॒ मल॒म्मलं॑ञ्च च॒ मलं॑ञ्च च॒ मलं॑ञ्च च॒ मलं॑ञ्च। मलं॑ञ्च च॒ मल॒म्मलं॑ञ्च॒ य॒द्यच्च॒ मल॒-म्मलं॑ञ्च॒ य॒त्। च॒ य॒द्यच्च॑ च॒ य॒त्। य॒दिति॒ यत्॥ य॒च्च॑ च॒ य॒द्यच्चा॑भिदु॒द्द्रोहा॑भिदु॒द्द्रोह॑ च॒ य॒द्यच्चा॑भिदु॒द्द्रोह॑। चा॒भि॒दु॒द्द्रोहा॑भिदु॒द्द्रोह॑ च चाभिदु॒द्द्रोहानृ॑त॒मनृ॑तमभिदु॒द्द्रोह॑ च चाभिदु॒द्द्रोहानृ॑तम्। अ॒भि॒दु॒द्द्रोहानृ॑त॒मनृ॑तमभिदु॒द्द्रोहा॑भिदु॒द्द्रोहानृ॑त॒ꣳय॒द्यदनृ॑तमभि-दु॒द्द्रोहा॑भिदु॒द्द्रोहानृ॑त॒ꣳय॒त्। अ॒भि॒दु॒द्द्रोहेत्य॑भि दु॒द्द्रोह॑। अनृ॑त॒ꣳय॒द्यदनृ॑त॒मनृ॑त॒ꣳय॒च्च॑ च॒ य॒दनृ॑त॒मनृ॑त॒ꣳय॒च्च॑[2]। य॒च्च॑ च॒ य॒द्यच्च॑ शे॒पे शे॒पे च॒ य॒द्यच्च॑ शे॒पे। च॒ शे॒पे शे॒पे च॑ च शे॒पेऽ अ॑भी॒रुर्णम॒भी॒रुर्ण॑ꣳ शे॒पे च॑ च शे॒पेऽ अ॑भी॒रुर्णम्। शे॒पेऽ अ॑भी॒रुर्णमभी॒-

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९३. के अनुसार यहाँ स्वाहाकृते पद प्रगृह्य है।

[2]. तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम् (वा. प्रा. ४.९६) चकार वर्ग बाद में होने पर तकार वर्ग चकारवर्ग हो जाता है। यत् च यहाँ सन्धि की दशा में तकार चकार होगा।

रु॒णꣳ शे॒पे शे॒पेऽ अभी॒रुण॑म्। अ॒भी॒रु॒णमित्य॑भी॒रुण॑म्॥ आपो॑ मा॒ माप॒ऽ आपो॑ मा॒ तस्म्मा॒त्तस्म्मा॒न्मा॒प॒ऽ आपो॑ मा॒ तस्म्मा॑त्। मा॒ तस्म्मा॒त्तस्म्मा॑न्मा मा॒ तस्म्मा॒देन॑स॒ऽ एन॑स॒स्तस्म्मा॑न्मा मा॒ तस्म्मा॒देन॑सः[1]। तस्म्मा॒देन॑स॒ऽ एन॑स॒-स्तस्म्मा॒त्तस्म्मा॒देन॑स॒ः पव॑मान॒ः पव॑मान॒ऽ एन॑स॒स्तस्म्मा॒त्तस्म्मा॒देन॑स॒ः पव॑मा-नः। एन॑स॒ः पव॑मान॒ः पव॑मान॒ऽ एन॑स॒ऽ एन॑स॒ः पव॑मानश्च च॒ पव॑मान॒ऽ एन॑स॒ऽ एन॑स॒ः पव॑मानश्च। पव॑मानश्च च॒ पव॑मान॒ः पव॑मानश्च मुञ्चतु मुञ्चतु च॒ पव॑मान॒ः पव॑मानश्च मुञ्चतु। च॒ मु॒ञ्च॒तु॒ मु॒ञ्च॒तु॒ च॒ च॒ मु॒ञ्च॒तु॒। मु॒ञ्च॒त्त्विति॑ मुञ्चतु॥१५॥

सन्ते॑ ते॒ सꣳ सन्ते॒ मनो॒ मन॑स्ते॒ सꣳ सन्ते॒ मन॑ः। ते॒ मनो॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ मन॑सा॒ मन॑सा॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ मन॑सा। मनो॒ मन॑सा॒ मन॑सा॒ मनो॒ मनो॒ मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॑सा॒ मनो॒ मनो॒ मन॑सा॒ सम्। मन॑सा॒ सꣳ सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सम्प्रा॒णः प्प्रा॒णः सम्मन॑सा॒ मन॑सा॒ सम्प्रा॒णः। सम्प्रा॒णः प्प्रा॒णः सꣳ सम्प्रा॒णः प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णः सꣳ सम्प्रा॒णः प्प्रा॒णेन॑। प्रा॒णः प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णेन॑ गच्छताङ्गच्छताम्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णेन॑ गच्छताम्। प्रा॒णेन॑ गच्छताङ्गच्छताम्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ गच्छताम्। ग॒च्छ॒ता॒मिति॑ गच्छताम्॥ रेड॑स्यसि॒ रेड्रेड॑स्य॒ग्निर॒ग्निर॑सि॒ रेड्रेड॑स्य॒ग्निः। अ॒स्य॒ग्निर॒ग्निर॑स्यस्य॒ग्निष्ट्वा॑ त्वा॒-ग्निर॑स्यस्य॒ग्निष्ट्वा॑[2]। अ॒ग्निष्ट्वा॑ त्वा॒ग्निर॒ग्निष्ट्वा॑ श्रीणातु श्रीणातु त्वा॒ग्निर॒ग्निष्ट्वा॑ श्रीणातु। त्वा॒ श्री॒णा॒तु॒ श्री॒णा॒तु॒ त्वा॒ त्वा॒ श्री॒णा॒त्त्वाप॒ऽ आप॑ः श्रीणातु त्वा त्वा श्रीणा॒त्त्वाप॑ः। श्री॒णा॒त्त्वाप॒ऽ आप॑ः श्रीणातु श्रीणा॒त्त्वाप॑स्त्वा॒ त्वाप॑ः श्रीणातु

---

1. एनोऽपापे(वा.प्रा.२.१३) इस सूत्र के अनुसार पाप का वाचक न होने पर एनः पद अनुदात्त होता है। यहाँ पाप का वाचक होने से उक्त पद आद्युदात्त है।

2. अग्निः त्वा यहाँ वा.प्रा.३.८६. के अनुसार अग्निः पद का विसर्ग सकार होता है। वा.प्रा.३.७६. से अग्निः पद का विसर्जनीय सकार षकार एकाक्षर पद बाद में होने से होता है। वा.प्रा.१.९९-१०१. के अनुसार त्वा एकाक्षर पद है। वा.प्रा.३.७९. के अनुसार यहाँ षकार से परवर्ती तकार टकार होता है। वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार उस टकार का द्वित्व होता है।

श्रीणात्त्वापस्त्वा। आपस्त्वा त्वाप॒ऽ आपस्त्वा सꣳ सन्त्वाप॒ऽ आपस्त्वा सम्। त्वा सꣳ सन्त्वा त्वा समरिणन्नरिणन्त्सन्त्वा त्वा समरिणन्। समरिणन्नरिणन्त्सꣳ समरिणन्व्रातस्य व्रातस्यारिणन्त्सꣳ समरिणन्व्रातस्य[1]। अरिणन्व्रातस्य व्रातस्यारिणन्नरिणन्व्रातस्य त्वा त्वा व्रातस्यारिणन्नरिणन्व्रातस्य त्वा। व्रातस्य त्वा त्वा व्रातस्य व्रातस्य त्वा ध्राज्यै ध्राज्यै त्वा व्रातस्य व्रातस्य त्वा ध्राज्यै। त्वा ध्राज्यै ध्राज्यै त्वा त्वा ध्राज्यै पूष्णः पूष्णो ध्राज्यै त्वा त्वा ध्राज्यै पूष्णः। ध्राज्यै पूष्णः पूष्णो ध्राज्यै ध्राज्यै पूष्णो रꣳह्यै रꣳह्यै पूष्णो ध्राज्यै ध्राज्यै पूष्णो रꣳह्यै। पूष्णो रꣳह्यै रꣳह्यै पूष्णः पूष्णो रꣳह्याऽ ऊष्मणऽ ऊष्मणो रꣳह्यै पूष्णः पूष्णो रꣳह्याऽ ऊष्मणः। रꣳह्याऽ ऊष्मणऽ ऊष्मणो रꣳह्यै रꣳह्याऽ ऊष्मणो व्यथिषद्व्यथिषदूष्मणो रꣳह्यै रꣳह्याऽ ऊष्मणो व्यथिषत्। ऊष्मणो व्यथिषद्व्यथिषदूष्मणऽ ऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतम्प्रयुतँव्यथिषदूष्मणऽ ऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतम्। व्यथिषत्प्रयुतम्प्रयुतँव्यथिषद्व्यथिषत्प्रयुतन्द्वेषो द्वेषः प्प्रयुतँव्यथिषद्व्यथिषत्प्रयुतन्द्वेषः। प्रयुतन्द्वेषो द्वेषः प्प्रयुतम्प्रयुतन्द्वेषः। प्रयुतमिति प्प्र युतम्। द्वेषऽ इति द्वेषः॥ १६॥

घृतङ्घृतपावानो घृतपावानो घृतङ्घृतङ्घृतपावानः पिबत पिबत घृतपावानो घृतङ्घृतङ्घृतपावानः पिबत[2]। घृतपावानः पिबत पिबत घृतपावानो घृतपावानः पिबत व्वसाँव्वसाम्पिबत घृतपावानो घृतपावानः पिबत व्वसाम्। घृतपावानऽ इति घृत पावानः। पिबत व्वसाँव्वसाम्पिबत पिबत व्वसाँव्वसापावानो व्वसापावानो व्वसा-

---

1. अरिणन् अरिणन् यहाँ सन्धि की दशा में ङ्णौ चेद्ध्रस्वपूर्वौ स्वरे पदान्तौ (वा. प्रा. ४.१०८) इस सूत्र से प्रथम अरिणन् का नकार द्वित्व को प्राप्त करता है।

2. वा.प्रा.२.१७. के अनुसार यहाँ पद पूर्व में होने वाला घृतपावानः आमन्त्रित पद अनुदात्त है।

म्पिबत पिबत॒ व्वसाँव्वसापावानः । व्वसाँव्वसापावानो व्वसापावानो॒ व्वसाँ॒व्वसाँव्वसापा-
वानः पिबत पिबत व्वसापावानो॒ व्वसाँ॒व्वसाँव्वसापावानः पिबत। व्व॒सा॒पा॒वा॒नः॒
पि॒ब॒त॒ पि॒ब॒त॒ व्व॒सा॒पा॒वा॒नो॒ व्व॒सा॒पा॒वा॒नः॒ पि॒ब॒ता॒न्तरि॑क्क्षस्या॒न्तरि॑क्क्षस्य पिबत
व्वसापावानो व्वसापावानः पिबता॒न्तरि॑क्क्षस्य। व्व॒सा॒पा॒वा॒न॒ऽ इति॑ वसा पावानः।
पि॒ब॒ता॒न्तरि॑क्क्षस्या॒न्तरि॑क्क्षस्य पिबत पिबता॒न्तरि॑क्क्षस्य ह॒विर्ह॒विर॒न्तरि॑क्क्षस्य
पिबत पिबता॒न्तरि॑क्क्षस्य ह॒विः। अ॒न्तरि॑क्क्षस्य ह॒विर्ह॒विर॒न्तरि॑क्क्षस्या॒न्तरि-
क्क्षस्य ह॒विर॑स्यसि ह॒विर॒न्तरि॑क्क्षस्या॒न्तरि॑क्क्षस्य ह॒विर॑सि। ह॒विर॑स्यसि ह॒विर्ह॒-
विर॑सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑सि ह॒विर्ह॒विर॑सि॒ स्वाहा॑। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑।
स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ दिशः॑ प्प्र॒दिशः॑ प्प्र॒दिशो॒ दिशो॒ दिशः॑ प्प्र॒दिश॑ऽ आ॒दिश॑ऽ
आ॒दिशः॑ प्प्र॒दिशो॒ दिशो॒ दिशः॑ प्प्र॒दिश॑ऽ आ॒दिशः॑। प्र॒दिश॑ऽ आ॒दिश॑ऽ आ॒दिशः॑
प्प्र॒दिशः॑ प्प्र॒दिश॑ऽ आ॒दिशो॑ व्वि॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ आ॒दिशः॑ प्प्र॒दिशः॑ प्प्र॒दिश॑ऽ
आ॒दिशो॑ व्वि॒दिशः॑। प्र॒दिश॒ऽ इति॑ प्प्र॒ दिशः॑। आ॒दिशो॑ व्वि॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ आ॒दिश॑ऽ
आ॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ आ॒दिश॑ऽ आ॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिशः॑।
आ॒दिश॒ऽ इत्या॒ दिशः॑। व्वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ व्वि॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑
दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्य॑ऽ उ॒द्दिशो॑ व्वि॒दिशो॑ व्वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ दि॒ग्ग्भ्यः। व्वि॒दिश॒ऽ इति॑ व्वि॒
दिशः॑। उ॒द्दिशो॑ दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्य॑ऽ उ॒द्दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॒ स्वाहा॑
दि॒ग्ग्भ्य॑ऽ उ॒द्दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॑। उ॒द्दिश॒ऽ इत्युत् दिशः॑। दि॒ग्ग्भ्यः
स्वाहा॒ स्वाहा॑ दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यः स्वाहा॑। दि॒ग्ग्भ्य॑ऽ इति॑ दि॒क् भ्यः। स्वाहेति॒
स्वाहा॑॥१७॥

ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णः प्प्रा॒ण॑ऽ ऐ॒न्द्र॑ऽ ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णो॑ऽ अङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गे प्प्रा॒ण॑ऽ
ऐ॒न्द्र॑ऽ ऐ॒न्द्रः प्प्रा॒णो॑ऽ अङ्गे॑ऽअङ्गे। प्रा॒णो॑ऽ अङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गे प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो॑ऽ

अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ नि न्यङ्गे॑ऽअङ्गे प्प्रा॒णः प्प्रा॒णोऽ अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ नि। अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ नि न्यङ्गे॑ऽ-अ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गे॒ नि दी॑द्ध्यदीद्ध्य॒न्न्यङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गे॒ नि दी॑द्ध्यत्। अङ्गे॑ऽअङ्ग॒ऽ इत्यङ्गे॑ अङ्गे। नि दी॑द्ध्यदीद्ध्य॒न्नि नि दी॑द्ध्यदै॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रो दी॑द्ध्य॒न्नि नि दी॑द्ध्यदै॒न्द्रः। दी॒द्ध्य॒-दै॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रो दी॑द्ध्यदीद्ध्यदै॒न्द्रऽ उ॑दा॒नऽ उ॑दा॒नऽ ऐ॒न्द्रो दी॑द्ध्यदीद्ध्यदै॒न्द्रऽ उ॑दा॒नः। ऐ॒न्द्रऽ उ॑दा॒नऽ उ॑दा॒नऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रऽ उ॑दा॒नोऽ अङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गऽ उदा॒नऽ ऐ॒न्द्रऽ ऐ॒न्द्रऽ उ॑दा॒नोऽ अङ्गे॑ऽअङ्गे[1]। उ॒दा॒नोऽ अङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ङ्गऽअङ्गऽ उदा॒नऽ उ॑दा॒नोऽ अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ निधी॑तो॒ निधी॒तोङ्गे॑ऽअङ्गऽ उदा॒नऽ उ॑दा॒नोऽ अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ निधी॑तः। उ॒दा॒-नऽ इत्यु॑त् आ॒नः। अङ्गे॑ऽअङ्गे॒ निधी॑तो॒ निधी॒तोङ्गे॑ऽअ॒ङ्गेङ्गे॑ऽअङ्गे॒ निधी॑तः। अङ्गे॑ऽ-अङ्ग॒ऽ इत्यङ्गे॑ अङ्गे। निधी॑त॒ऽ इति॒ नि धी॑तः॥ देवं॑ त्त्वष्टस्त्त्वष्ट॒र्द्देव॒ देवं॑ त्त्वष्ट॒र्भूरि॒ भूरिं॑ त्त्वष्ट॒र्द्देव॒ देवं॑ त्त्वष्ट॒र्भूरिं॑[2]। त्व॒ष्ट॒र्भूरि॒ भूरिं॑ त्त्वष्टस्त्त्वष्ट॒र्भूरिं॑ ते ते॒ भूरिं॑ त्त्वष्ट-स्त्त्वष्ट॒र्भूरिं॑ ते। भूरिं॑ ते ते॒ भूरि॒ भूरिं॑ ते॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंन्ते॒ भूरि॒ भूरिं॑ ते॒ सꣳसंम्। ते॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंन्ते ते॒ सꣳसंमेत्त्वेतु॒ सꣳसंन्ते ते॒ सꣳसंमेतु। सꣳसंमेत्त्वेतु॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंमेतु॒ सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मैतु॒ सꣳसु॒ꣳ सꣳसंमेतु॒ सलं॑क्ष्म। सꣳसु॒मिति॒ सम् संम्। ए॒तु॒ सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मैत्त्वेतु॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्यत्त्सलं॑क्ष्मैत्त्वेतु॒ सलं॑क्ष्मा॒ यत्[3]। सलं॑क्ष्मा॒ यद्यत्त्सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्विषुं॑रूपँ॒व्विषुं॑रूपँ॒ऽयत्त्सलं॑क्ष्म॒ सलं॑क्ष्मा॒ यद्विषुं॑-रूपम्। सल॒क्ष्मेति॒ स लं॑क्ष्म। यद्विषुं॑रूपँ॒व्विषुं॑रूपँ॒ऽयद्यद्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति॒ भवा॑ति॒ व्विषुं॑रूपँ॒ऽयद्यद्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति। व्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति॒ भवा॑ति॒ व्विषुं॑रूपँ॒व्विषुं॑रूप॒म्भवा॑ति। व्विषुं॑रूप॒मिति॒ विषुं॑ रूपम्। भवा॒तीति॒ भवा॑ति॥ दे॒व॒त्रा यन्तुँ॒ऽयन्तं॑न्देव॒त्रा दे॑व॒त्रा यन्त॒मव॒सेवं॑से॒ यन्तं॑न्देव॒त्रा दे॑व॒त्रा यन्त॒मवं॑से। दे॒व॒त्रेतिं॑ देव॒ त्रा। यन्त॒मव॒सेवं॑से॒

---

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार इस कण्डिका में प्राणः एवं उदानः इनसे सम्बन्धित ओकार प्रकृति भाव से रहते हैं। तथा अङ्गे इस पदावयव(पूर्वपद) का एकार भी प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. त्वष्टः भूरिं यहाँ रेफं स्वरघौ(वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

[3]. वा.प्रा. ३.११२. के अनुसार यहाँ सलक्ष्म का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

यन्तुँ᳭ष्यन्तमवंसे सखांयः सखायोवंसे यन्तुँ᳭ष्यन्तमवंसे सखांयः। अवंसे सखांयः सखायोवसेवंसे सखायोन्वनु सखायोवसेवंसे सखायोनु। सखायोन्वनु सखांयः सखायोनुं त्वा त्वानु सखांयः सखायोनु त्वा। अनुं त्वा त्वान्वनुं त्वा माता माता त्वान्वनुं त्वा माता। त्वा माता माता त्वां त्वा माता पितरंः पितरों माता त्वां त्वा माता पितरंः। माता पितरंः पितरों माता माता पितरों मदन्तु मदन्तु पितरों माता माता पितरों मदन्तु। पितरों मदन्तु मदन्तु पितरंः पितरों मदन्तु। मदुन्त्विति मदन्तु॥१८॥

समुद्रङ्गच्छ गच्छ समुद्रꣳ संमुद्रङ्गच्छ स्वाहा स्वाहां गच्छ समुद्रꣳ संमुद्रङ्गच्छ स्वाहां[1]। गच्छ स्वाहा स्वाहां गच्छ गच्छ स्वाहान्तरिक्षमन्तरिक्षꣳ स्वाहां गच्छ गच्छ स्वाहान्तरिक्षम्। स्वाहान्तरिक्षमन्तरिक्षꣳ स्वाहा स्वाहान्तरिक्षन्देवन्देवमन्तरिक्षꣳ स्वाहा स्वाहान्तरिक्षन्देवम्। अन्तरिक्षन्देवन्देवमन्तरिक्षमन्तरिक्षन्देवꣳ संवितारꣳ सवितारंन्देवमन्तरिक्षमन्तरिक्षन्देवꣳ संवितारम्। देवꣳ संवितारꣳ सवितारंन्देवन्देवꣳ संवितारम्मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणौ सवितारंन्देवन्देवꣳ संवितारम्मित्रावरुंणौ। सवितारम्मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणौ सवितारꣳ सवितारम्मित्रावरुंणावहोरात्रेऽ अंहोरात्रे मित्रावरुंणौ सवितारꣳ सवितारम्मित्रावरुंणावहोरात्रे। मित्रावरुंणावहोरात्रेऽ अंहोरात्रे मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणावहोरात्रे च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳस्यहोरात्रे मित्रावरुंणौ मित्रावरुंणावहोरात्रे च्छन्दांꣳसि। अहोरात्रे च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳस्यहोरात्रेऽ अंहोरात्रे च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवी च्छन्दांꣳस्यहोरात्रेऽ अंहोरात्रे च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी। अहोरात्रेऽ इत्यंहोरात्रे। छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी द्यावांपृथिवी च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳसि द्यावांपृथिवी यज्ञँ᳭ष्यज्ञन्द्यावांपृथिवी

[1]. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार समुद्रम् पद का पृथक्करण नहीं होता है।

च्छन्दांꣳसि च्छन्दांꣳसि द्यावापृथिवी यज्ञम्। द्यावापृथिवी यज्ञँय्यज्ञन्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी यज्ञꣳ सोमꣳ सोमँय्यज्ञन्द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी यज्ञꣳ सोमम्। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। यज्ञꣳ सोमꣳ सोमँय्यज्ञँय्यज्ञꣳ सोमन्दिव्यन्दिव्यꣳ सोमँय्यज्ञँय्यज्ञꣳ सोमन्दिव्यम्। सोमन्दिव्यन्दिव्यꣳ सोमꣳ सोमन्दिव्यन्नभो नभो दिव्यꣳ सोमꣳ सोमन्दिव्यन्नभः। दिव्यन्नभो नभो दिव्यन्दिव्यन्नभोग्निमग्निन्नभो दिव्यन्दिव्यन्नभोग्निम्[1]। नभोग्निमग्निन्नभो नभोग्निँव्वैश्वानरँव्वैश्वानरमग्निन्नभो नभोग्निँव्वैश्वानरम्। अग्निँव्वैश्वानरँव्वैश्वानरमग्निमग्निँव्वैश्वानरम्मनो मनो वैश्वानरमग्निमग्निँव्वैश्वानरम्मनः। वैश्वानरम्मनो मनो वैश्वानरँव्वैश्वानरम्मनो मे मे मनो वैश्वानरँव्वैश्वानरम्मनो मे। मनो मे मे मनो मनो मे हार्दि हार्दि मे मनो मनो मे हार्दि। मे हार्दि हार्दि मे मे हार्दि यच्छ यच्छ हार्दि मे मे हार्दि यच्छ। हार्दि यच्छ यच्छ हार्दि हार्दि यच्छ दिवन्दिवँय्यच्छ हार्दि हार्दि यच्छ दिवम्। यच्छ दिवन्दिवँय्यच्छ यच्छ दिवन्ते ते दिवँय्यच्छ यच्छ दिवन्ते। दिवन्ते ते दिवन्दिवन्ते धूमो धूमस्ते दिवन्दिवन्ते धूमः। ते धूमो धूमस्ते ते धूमो गच्छतु गच्छतु धूमस्ते ते धूमो गच्छतु। धूमो गच्छतु गच्छतु धूमो धूमो गच्छतु स्वः स्वर्ग्गच्छतु धूमो धूमो गच्छतु स्वः[2]। गच्छतु स्वः स्वर्ग्गच्छतु गच्छतु स्वर्ज्योतिर्ज्योतिः स्वर्ग्गच्छतु गच्छतु स्वर्ज्योतिः। स्वर्ज्योतिर्ज्योतिः स्वः स्वर्ज्योतिः पृथिवीम्पृथिवीञ्ज्योतिः स्वः स्वर्ज्योतिः पृथिवीम्। ज्योतिः पृथिवीम्पृथिवीञ्ज्योतिर्ज्योतिः पृथिवीम्भस्मना भस्मना पृथिवीञ्ज्योतिर्ज्योतिः पृथिवीम्भस्म-

---

[1]. गलत् पदों का अतिक्रमण करके अगलत् पदों के साथ सन्धि करना सङ्क्रम है। सङ्क्रमे च सर्वत्र (वा. प्रा. ४.८१) इस सूत्र के अनुसार सङ्क्रम में अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. एकपदे नीचपूर्वः सयवो जात्यः (वा.प्रा.१.१११) के भाष्यकारों ने एकपद में अनुदात पूर्व में न होने पर भी स्वः पद को जात्य स्वरित माना है।

ना। पृ॒थि॒वीम्भस्म॑ना॒ भस्म॑ना पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम्भस्म॒ना पृ॑ण पृ॒णा भस्म॑ना पृथि॒वीम्पृ॑थि॒वीम्भस्म॒ना पृ॑ण। भस्म॒ना पृ॑ण पृ॒णा भस्म॑ना॒ भस्म॒ना पृ॑ण॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पृ॒णा भस्म॑ना॒ भस्म॒ना पृ॑ण॒ स्वाहा॑। आ पृ॑ण। पृ॒ण॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पृण पृ॒ण स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१९॥

मापो॒पो मा मापो मा मापो मा मापो मा[1]। अ॒पो मा मापो॒पो मौष॑धी॒रो-ष॑धी॒र्म्मापो॒पो मौष॑धीः। मौष॑धी॒रोष॑धी॒र्म्मा मौष॑धीर्हि॑ꣳसीर्हि॑ꣳसी॒रोष॑धी॒र्म्मा मौ-ष॑धीर्हि॑ꣳसीः। ओष॑धीर्हि॑ꣳसीर्हि॑ꣳसी॒रोष॑धी॒रोष॑धीर्हि॑ꣳसी॒र्द्धाम्म्नो॑धाम्म्नो॒ धाम्म्नो॑-धाम्म्नो हिꣳसी॒रोष॑धी॒रोष॑धीर्हि॑ꣳसी॒र्द्धाम्म्नो॑धाम्म्नः। हि॒ꣳसी॒र्द्धाम्म्नो॑धाम्म्नो॒ धाम्म्नो॑धाम्म्नो हिꣳसीर्हि॑ꣳसी॒र्द्धाम्म्नो॑धाम्म्नो राजन्न्राज॒न्धाम्म्नो॑धाम्म्नो हिꣳसी-र्हि॑ꣳसी॒र्द्धाम्म्नो॑धाम्म्नो राजन्। धाम्म्नो॑धाम्म्नो राजन्न्राज॒न्धाम्म्नो॑धाम्म्नो॒ धाम्म्नो॑धा-म्म्नो राज॒ꣳस्तत॒स्तत॑ राज॒न्धाम्म्नो॑धाम्म्नो॒ धाम्म्नो॑धाम्म्नो राज॒ꣳस्तत॑ः[2]। धाम्म्नो॑-धाम्म्न॒ऽ इति॒ धाम्म्न॑ः धाम्म्नः। रा॒ज॒ꣳस्तत॒स्तत॑ राजन्न्राज॒ꣳस्तत॑ व्वरुण व्वरुण॒ तत॑ राजन्न्राज॒ꣳस्तत॑ व्वरुण। तत॑ व्वरुण व्वरुण॒ तत॒स्तत॑ व्वरुण नो नो व्वरुण॒ तत॒स्तत॑ व्वरुण नः। व्व॒रु॒ण॒ नो॒ नो॒ व्व॒रु॒ण॒ व्व॒रु॒ण॒ नो॒ मु॒ञ्च॒ मु॒ञ्च॒ नो॒ व्व॒रु॒ण॒ व्व॒रु॒ण॒ नो॒ मु॒ञ्च॒। नो॒ मु॒ञ्च॒ मु॒ञ्च॒ नो॒ नो॒ मु॒ञ्च॒। मुञ्चेति॑ मुञ्च॥ यदा॒हु॒राहु॒र्य्यद्यदा॒हु॒र॒घ्न्याऽ अ॒घ्न्याऽ आ॒हु-र्य्यद्यदा॒हु॒र॒घ्न्याः। आ॒हु॒र॒घ्न्याऽ अ॒घ्न्याऽ आ॒हु॒रा॒हु॒र॒घ्न्याऽ इतीत्य॒घ्न्याऽ आ॒हु॒रा॒हु॒र॒घ्न्याऽ इति॑। अ॒घ्न्याऽ इतीत्य॒घ्न्याऽ अ॒घ्न्याऽ इति॒ व्वरु॑ण व्व॒रु॒णेत्य॒घ्न्याऽ अ॒घ्न्याऽ इति॒ व्वरु॑ण। इति॒ व्वरु॑ण॒ व्व॒रु॒णेतीति॒ व्व॒रु॒णेतीति॒

1. उदात्तवानुदात्तः (वा. प्रा. ४.१३४) उदात्त के साथ किसी अन्य अनुदात्त अथवा स्वरित की सन्धि होने पर वह एकीभाव उदात्त होता है। यहाँ मा अ॒पः इस सन्धि की दशा में उदात्त प्रबल होगा।

2. राजन् ततः यहाँ वा.प्रा.३.१३५. के अनुसार तकार वाद में होने पर नकार सकार तथा उपधा(वा.प्रा.१.३५) का अनुनासिक होता है, अतः यहाँ अनुनासिकत्व स्वर का धर्म है, न कि पृथगक्षर अतः सकारोत्तरवर्ती तकार का द्वित्व वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार होगा।

व्वरु॒णेतीति॒ व्वरु॒णेति॑। व्वरु॒णेतीति॒ व्वरु॑ण॒ व्वरु॒णेति॒ शपा॑महे॒ शपा॑मह॒ऽ इति॒ व्वरु॑ण॒ व्वरु॒णेति॒ शपा॑महे। इति॒ शपा॑महे॒ शपा॑मह॒ऽ इतीति॒ शपा॑महे। शपा॑मह॒ऽ इति॒ शपा॑महे॥ सु॒मि॒त्रि॒या नो॑ नः॒ सुमित्रि॒याः॒ सु॑मित्रि॒या न॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ नः॒ सुमित्रि॒याः॒ सु॑मित्रि॒या न॒ऽ आप॑ः। सु॒मि॒त्रि॒या॒ऽ इति॑ सु मित्रि॒याः॒। न॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ नो न॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धय॒ऽ ओष॑धय॒ऽ आपो॑ नो न॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धयः॒। आप॒ऽ ओष॑धय॒ऽ ओष॑धय॒ऽ आप॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धयः॒ सन्तु स॒न्त्वोष॑धय॒ऽ आप॒ऽ आप॒ऽ ओष॑धयः॒ सन्तु। ओष॑धयः॒ सन्तु स॒न्त्वोष॑धय॒ऽ ओष॑धयः॒ सन्तु दुर्म्मित्रि॒या दु॑र्म्मित्रि॒याः॒ स॒न्त्वोष॑धय॒ऽ ओष॑धयः॒ सन्तु दुर्म्मित्रि॒याः॒। स॒न्तु॒ दु॒र्म्मि॒त्रि॒या दु॑र्म्मित्रि॒याः॒ स॑न्तु सन्तु दुर्म्मित्रि॒यास्त॒स्म्मै॒ तस्म्मै॑ दुर्म्मित्रि॒याः॒ स॑न्तु सन्तु दुर्म्मित्रि॒यास्त॒स्म्मै॑। दु॒र्म्मि॒त्रि॒यास्त॒स्म्मै॒ तस्म्मै॑ दुर्म्मित्रि॒या दु॑र्म्मित्रि॒यास्त॒स्म्मै॑ सन्तु सन्तु तस्म्मै॑ दुर्म्मित्रि॒या दु॑र्म्मित्रि॒यास्त॒स्म्मै॑ सन्तु। दु॒र्म्मि॒त्रि॒या॒ऽ इति॑ दुः॒ मित्रि॒याः॒। तस्म्मै॑ सन्तु सन्तु॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ सन्तु। स॒न्त्विति॑ सन्तु॥२०॥

ह॒विष्म्म॑तीरि॒माऽ इ॒मा ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीरि॒माऽ आप॒ऽ आप॑ऽ इ॒मा ह॒विष्म्म॑तीर्ह॒विष्म्म॑तीरि॒माऽ आप॑ः। इ॒माऽ आप॒ऽ आप॑ऽ इ॒माऽ इ॒माऽ आपो॑ ह॒विष्म्मा॑न्ह॒विष्म्मा॒नाप॑ऽ इ॒माऽ इ॒माऽ आपो॑ ह॒विष्म्मा॑न्। आपो॑ ह॒विष्म्मा॑-न्ह॒विष्म्मा॒नाप॒ऽ आपो॑ ह॒विष्म्मा॒२ँ॥ऽ आ वि॑वासति व्विवास॒त्त्या ह॒विष्म्मा॒नाप॒ऽ आपो॑ ह॒विष्म्मा॒२ँ॥ऽ आ वि॑वासति। ह॒विष्म्मा॒२ँ॥ऽ आ वि॑वासति व्विवास॒त्त्या ह॒विष्म्मा॑न्ह॒विष्म्मा॒२ँ॥ऽ आ वि॑वासति। आ वि॑वासति। व्वि॒वा॒स॒तीति॑ विवासति॥ ह॒विष्म्मा॑न्दे॒वो दे॒वो ह॒विष्म्मा॑न्ह॒विष्म्मा॑न्दे॒वोऽ अ॑द्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रो दे॒वो ह॒विष्म्मा॑-न्ह॒विष्म्मा॑न्दे॒वोऽ अ॑द्ध्व॒रः॒।[1] दे॒वोऽ अ॑द्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रो दे॒वो दे॒वोऽ अ॑द्ध्व॒रो ह॒विष्म्मा॑न्ह॒वि-ष्म्मा॑नद्ध्व॒रो दे॒वो दे॒वोऽ अ॑द्ध्व॒रो ह॒विष्म्मा॑न्। अ॒द्ध्व॒रो ह॒विष्म्मा॑न्ह॒विष्म्मा॑नद्ध्व॒रो॒द्ध्व॒रो

[1]. देवः अध्वरः यहाँ वा.प्रा.४.८५. के अनुसार देवः के विसर्जनीय से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

हविष्म्मा॑रँ॥ऽ अस्त्वस्तु हविष्म्मा॑नद्धरोद्धरो हविष्म्मा॑रँ॥ऽ अस्तु। हवि-ष्म्मा॑रँ॥ऽ अस्त्वस्तु हविष्म्मा॑न्हविष्म्मा॑रँ॥ऽ अस्तु सूर्ष्यः सूर्ष्योस्तु हवि-ष्म्मा॑न्हविष्म्मा॑रँ॥ऽ अस्तु सूर्ष्यः। अस्तु सूर्ष्यः सूर्ष्योस्त्वस्तु सूर्ष्यः । सूर्ष्यऽ इति सूर्ष्यः ॥२१॥

अग्ग्नेर्व्वो वोग्ग्नेरग्ग्नेर्व्वोप॑न्नगृहस्यापन्नगृहस्य वोग्ग्नेरग्ग्नेर्व्वोप॑न्नगृहस्य[1]। व्वो-प॑न्नगृहस्यापन्नगृहस्य वो वोप॑न्नगृहस्य सद॑सि सदस्यप॑न्नगृहस्य वो वोप॑न्नगृहस्य सद॑सि। अप॑न्नगृहस्य सद॑सि सदस्यप॑न्नगृहस्यापन्नगृहस्य सद॑सि सादयामि सादयामि सदस्यप॑न्नगृहस्यापन्नगृहस्य सद॑सि सादयामि। अप॑न्नगृहस्येत्यप॑न्न गृहस्य। सद॑सि सादयामि सादयामि सद॑सि सद॑सि सादयामीन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योः सा॑दयामि सद॑सि सद॑सि सादयामीन्द्राग्ग्न्योः। सादयामीन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योः सा॑दयामि सादयामीन्द्राग्ग्न्योब्भाग॑धेयीब्भागधे-यीरिन्द्राग्ग्न्योः सा॑दयामि सादयामीन्द्राग्ग्न्योब्भाग॑धेयीः[2]। इन्द्राग्ग्न्योब्भाग॑धे-यीब्भागधेयीरिन्द्राग्ग्न्योरिन्द्राग्ग्न्योब्भाग॑धेयी स्त्थ स्त्थ भागधेयीरिन्द्राग्ग्न्यो-रिन्द्राग्ग्न्योब्भाग॑धेयी स्त्थ। भागधेयी स्त्थ स्त्थ भागधेयीब्भागधेयी स्त्थ मित्रावरु॑णयोम्मित्रावरु॑णयो स्त्थ भागधेयीब्भागधेयी स्त्थ मित्रावरु॑णयोः। भागधेयीरिति भाग धेयीः। स्थ मित्रावरु॑णयोम्मित्रावरु॑णयो स्त्थ स्त्थ मित्रावरु॑णयोर्व्विश्श्वेषाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरु॑णयो स्त्थ स्त्थ मित्रावरु॑णयोर्व्विश्श्वेषाम्। मित्रावरु॑णयोर्व्विश्श्वेषाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरु॑णयोम्मित्रावरु॑णयोर्व्विश्श्वेषान्देवाना॑न्देवा-नाँव्विश्श्वेषाम्मित्रावरु॑णयोम्मित्रावरु॑णयोर्व्विश्श्वेषान्देवाना॑म्। व्विश्श्वेषान्देवाना॑न्देवा-

---

[1]. स्येति ण्यत्वं च (वा. प्रा. ४.१५७) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अपन्नगृहस्य पद एक यकार वाला है।

[2]. इन्द्राग्न्योः भागधेयीः यहाँ रेफं स्वरधौ(वा.प्रा.४.३७) के अनुसार विसर्जनीय रेफ होता है। परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) के अनुसार रेफ से परवर्ती भकार का द्वित्व प्रथमैर्द्वितीयास्तृतीयैश्चतुर्थाः(वा.प्रा.४.११०) इस सूत्र से बकार के साथ होता है।

नाँ॒न्विश्वे॑षाँ॒न्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑म्। दे॒वाना॒मिति॑ दे॒वाना॑म्॥ अ॒मूर्य्या या॑ऽ अ॒मूर॒मूर्य्या॑ऽ उपोप॒ या॑ऽ अ॒मूर॒मूर्य्या॑ऽ उप॑। या॑ऽ उपोप॒ या या॑ऽ उप॒ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ऽ उप॒ या या॑ऽ उप॒ सूर्य्ये॑। उप॒ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ऽ उपोप॒ सूर्य्ये॒ याभि॒र्य्याभि॒ः सूर्य्ये॒ऽ उपोप॒ सूर्य्ये॒ याभि॑ः। सूर्य्ये॒ याभि॒र्य्याभि॒ः सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ याभि॑र्वा वा॒ याभि॒ः सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ याभि॑र्वा। याभि॑र्वा वा॒ याभि॒र्य्याभि॑र्वा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्यौ॑ वा॒ याभि॒र्य्याभि॑र्वा॒ सूर्य्य॑ः। वा॒ सूर्य्य॒ः सूर्य्यौ॑ वा वा॒ सूर्य्य॑ः स॒ह स॒ह सूर्य्यौ॑ वा वा॒ सूर्य्य॑ः स॒ह। सूर्य्य॑ः स॒ह स॒ह सूर्य्य॒ः सूर्य्य॑ः स॒ह। स॒हेति॑ स॒ह॥ ता नो॑ न॒स्तास्ता नो॑ हिन्वन्तु हिन्वन्तु न॒स्तास्ता नो॑ हिन्वन्तु[1]। नो॒ हि॒न्व॒न्तु॒ हि॒न्व॒न्तु॒ नो॒ नो॒ हि॒न्व॒न्त्व॒द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रꣳ हि॑न्वन्तु नो नो हिन्वन्त्वद्ध्व॒रम्। हि॒न्व॒न्त्व॒द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रꣳ हि॑न्वन्तु हिन्वन्त्वद्ध्व॒रम्। अ॒द्ध्व॒रमित्य॑द्ध्व॒रम्॥२२॥

ह्व॒दे त्वा॑ त्वा ह्व॒दे ह्व॒दे त्वा॒ मन॑से॒ मन॑से त्वा ह्व॒दे ह्व॒दे त्वा॒ मन॑से। त्वा॒ मन॑से॒ मन॑से त्वा त्वा॒ मन॑से दि॒वे दि॒वे मन॑से त्वा त्वा॒ मन॑से दि॒वे। मन॑से दि॒वे दि॒वे मन॑से॒ मन॑से दि॒वे सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य दि॒वे मन॑से॒ मन॑से दि॒वे सूर्य्या॑य। दि॒वे सूर्य्या॑य॒ सूर्य्या॑य दि॒वे दि॒वे सूर्य्या॑य। सूर्य्या॒येति॒ सूर्य्या॑य॥ ऊ॒र्द्ध्वमि॒ममि॒ममू॒र्द्ध्वमू॒र्द्ध्वमि॒मम॑द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रमि॒ममू॒र्द्ध्वमू॒र्द्ध्वमि॒मम॑द्ध्व॒रम्। इ॒मम॑द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रमि॒ममि॒मम॑द्ध्व॒रन्दि॒वि दि॒व्य॒द्ध्व॒रमि॒ममि॒मम॑द्ध्व॒रन्दि॒वि। अ॒द्ध्व॒रन्दि॒वि दि॒व्य॒द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रन्दि॒वि दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ दि॒व्य॒द्ध्व॒रम॑द्ध्व॒रन्दि॒वि दे॒वेषु॑। दि॒वि दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॑ दि॒वि दि॒वि दे॒वेषु॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दि॒वि दि॒वि दे॒वेषु॒ होत्रा॑ः। दे॒वेषु॒ होत्रा॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ होत्रा॑ यच्छ यच्छ॒ होत्रा॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ होत्रा॑ यच्छ। होत्रा॑ यच्छ यच्छ॒ होत्रा॒ होत्रा॑ यच्छ। य॒च्छेति॑ यच्छ॥२३॥

सोम॑ राजन्राज॒न्त्सोम॒ सोम॑ राज॒न्विश्वा॒ विश्वा॑ राज॒न्त्सोम॒ सोम॑ राज॒न्विश्वा॑ः। रा॒ज॒न्विश्वा॒ विश्वा॑ राजन्राज॒न्विश्वा॒स्त्वन्त्वँविश्वा॑ राजन्राज॒न्विश्वा॒-

[1].वा.प्रा.४.३१. तथा ४.३२. में निर्दिष्ट न होने से यहाँ ताः पद ऊष्मान्त है।

स्त्वम्। व्विश्वा॒स्त्वन्त्वँव्विश्वा॒ व्विश्वा॒स्त्वम्प्र॒जाः प्प्र॒जास्त्वँव्विश्वा॒ व्विश्वा॒स्त्वम्प्र॒जाः[1]। त्वम्प्र॒जाः प्प्र॒जास्त्वन्त्वम्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहो॒पाव॑रोह प्प्र॒जास्त्वन्त्वम्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोह। प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहो॒पाव॑रोह प्प्र॒जाः प्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोह॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ऽ उ॒पाव॑रोह प्प्र॒जाः प्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोह॒ व्विश्वा॑ः। प्र॒जाऽ इति॑ प्प्र॒ जाः। उ॒पाव॑रोह॒ व्विश्वा॒ व्विश्वा॑ऽ उ॒पाव॑रोहो॒पाव॑रोह॒ व्विश्वा॒स्त्वान्त्वाँव्विश्वा॑ऽ उ॒पाव॑रोहो॒पाव॑रोह॒ व्विश्वा॒स्त्वाम्। उ॒पाव॑रो॒हेत्यु॑प॒ अव॑रोह। व्विश्वा॒स्त्वान्त्वाँव्विश्वा॒ व्विश्वा॒स्त्वाम्प्र॒जाः प्प्र॒जास्त्वाँव्विश्वा॒ व्विश्वा॒स्त्वाम्प्र॒जाः। त्वाम्प्र॒जाः प्प्र॒जास्त्वान्त्वाम्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहन्तू॒पाव॑रोहन्तु प्प्र॒जास्त्वान्त्वाम्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहन्तु। प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहन्तू॒पाव॑रोहन्तु प्प्र॒जाः प्प्र॒जाऽ उ॒पाव॑रोहन्तु। प्र॒जाऽ इति॑ प्प्र॒ जाः। उ॒पाव॑रोह॒न्त्वित्यु॑प॒ अव॑रोहन्तु॥ शृ॒णोत्व॒ग्निर॒ग्निः शृ॒णोतु॑ शृ॒णोत्व॒ग्निः स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ग्निः शृ॒णोतु॑ शृ॒णोत्व॒ग्निः स॒मिधा॑। अ॒ग्निः स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ग्निर॒ग्निः स॒मिधा॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ स॒मिधा॒ग्निर॒ग्निः स॒मिधा॒ हव॑म्। स॒मिधा॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ हव॑म्मे मे॒ हव॑ꣳ स॒मिधा॑ स॒मिधा॒ हव॑म्मे[2]। स॒मिधेति॑ स॒म् इधा॑। हव॑म्मे मे॒ हव॒ꣳ हव॑म्मे शृ॒ण्वन्तु॑ शृ॒ण्वन्तु॑ मे॒ हव॒ꣳ हव॑म्मे शृ॒ण्वन्तु॑। मे॒ शृ॒ण्वन्तु॑ शृ॒ण्वन्तु॑ मे मे शृ॒ण्वन्त्वाप॒ऽ आप॑ः शृ॒ण्वन्तु॑ मे मे शृ॒ण्वन्त्वाप॑ः। शृ॒ण्वन्त्वाप॒ऽ आप॑ः शृ॒ण्वन्तु॑ शृ॒ण्वन्त्वापो॑ धि॒षणा॑ धि॒षणा॒ऽ आप॑ः शृ॒ण्वन्तु॑ शृ॒ण्वन्त्वापो॑ धि॒षणा॑ः। आपो॑ धि॒षणा॑ धि॒षणा॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ धि॒षणा॑श्च च धि॒षणा॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ धि॒षणा॑श्च। धि॒षणा॑श्च च धि॒षणा॑ धि॒षणा॑श्च दे॒वीर्दे॒वीश्च॑ धि॒षणा॑ धि॒षणा॑श्च दे॒वीः। च॒ दे॒वीर्दे॒वीश्च॑ च दे॒वीः। दे॒वीरिति॑ दे॒वीः॥ श्रोता॑ ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाण॒ः श्रोत॒ श्रोता॑ ग्ग्रावाणो व्वि॒दुषो॑ व्वि॒दुषो॑ ग्ग्रावाण॒ः श्रोत॒ श्रोता॑

---

[1]. वा. प्रा. ४.२७. के अनुसार यहाँ विश्वाः पद ऊष्मान्त है।

[2]. नो नौ मे मदर्थे त्रिष्वेकेषु(वा.प्रा.२.३) इस सूत्र के अनुसार अस्मदर्थवाचक मे पद यहाँ अनुदात्त है।

ग्ग्रावाणो व्विदुषः। ग्रावाणो व्विदुषो व्विदुषो ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाणो व्विदुषो न न व्विदुषो ग्ग्रावाणो ग्ग्रावाणो व्विदुषो न। व्विदुषो न न व्विदुषो व्विदुषो न यज्ञँय्यज्ञन्न व्विदुषो व्विदुषो न यज्ञम्। न यज्ञँय्यज्ञन्न न यज्ञꣳ शृणोतु शृणोतु यज्ञन्न न यज्ञꣳ शृणोतु[1]। यज्ञꣳ शृणोतु शृणोतु यज्ञँय्यज्ञꣳ शृणोतु देवो देवः शृणोतु यज्ञँय्यज्ञꣳ शृणोतु देवः। शृणोतु देवो देवः शृणोतु शृणोतु देवः सविता सविता देवः शृणोतु शृणोतु देवः सविता। देवः सविता सविता देवो देवः सविता हवꣳ हवꣳ सविता देवो देवः सविता हवम्। सविता हवꣳ हवꣳ सविता सविता हवम्मे मे हवꣳ सविता सविता हवम्मे। हवम्मे मे हवꣳ हवम्मे स्वाहा स्वाहा मे हवꣳ हवम्मे स्वाहा। मे स्वाहा स्वाहा मे मे स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ २४॥

देवीरापऽ आपो देवीर्देवीरापोऽ अपामपामापो देवीर्देवीरापोऽ अपाम्[2]। आपोऽ अपामपामापऽ आपोऽ अपान्नपान्नपादपामापऽ आपोऽ अपान्नपात्। अपान्नपान्नपादपामपान्नपाद्यो यो नपादपामपान्नपाद्यः। नपाद्यो यो नपान्नपाद्यो वो वो यो नपान्नपाद्यो वः। यो वो वो यो यो वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो यो यो वऽ ऊर्म्मिः। व्वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिर्हविष्यो हविष्यऽ ऊर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिर्हविष्यः। ऊर्म्मिर्हविष्यो हविष्यऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्हविष्यऽ इन्द्रियावानिन्द्रियवान्हविष्यऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्हविष्यऽ इन्द्रियावान्। हविष्यऽ इन्द्रियावानिन्द्रियवान्हविष्यो हविष्यऽ इन्द्रियावान्मदिन्तमो मदिन्तमऽ इन्द्रियवान्हविष्यो हविष्यऽ इन्द्रियावान्मदिन्तमः। इन्द्रियावान्मदिन्तमो मदिन्तमऽ इन्द्रियवानिन्द्रियावान्मदिन्तमः। इन्द्रियवानितीन्द्रिय व्वान्।

---

[1]. अनुस्वारस्योपरिष्टात्संवृतं यत्र दृश्यते। दीर्घं तं तु विजानीयाच्छ्रोता ग्रावाणकं यथा॥ - या. शि. १४०

[2]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार आपो अपाम् यहाँ ओकार प्रकृति भाव से रहता है।

मुदिन्तमऽ इति मुदिन् तमः ॥ तन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्युस्तन्तन्देवेब्भ्यो देवत्रा देवत्रा देवेब्भ्युस्तन्तन्देवेब्भ्यो देवत्रा। देवेब्भ्यो देवत्रा देवत्रा देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो देवत्रा दत्त दत्त देवत्रा देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो देवत्रा दत्त। देवत्रा दत्त दत्त देवत्रा देवत्रा दत्त शुक्रपेब्भ्यः शुक्रपेब्भ्यो दत्त देवत्रा देवत्रा दत्त शुक्रपेब्भ्यः। देवत्रेति देव त्रा[1]। दत्त शुक्रपेब्भ्यः शुक्रपेब्भ्यो दत्त दत्त शुक्रपेब्भ्यो येषाँय्येषाꣳ शुक्रपेब्भ्यो दत्त दत्त शुक्रपेब्भ्यो येषाम्। शुक्रपेब्भ्यो येषाँय्येषाꣳ शुक्रपेब्भ्यः शुक्रपेब्भ्यो येषाम्भागो भागो येषाꣳ शुक्रपेब्भ्यः शुक्रपेब्भ्यो येषाम्भागः। शुक्रपेब्भ्यऽ इति शुक्र पेब्भ्यः। येषाम्भागो भागो येषाँय्येषाम्भाग स्त्थ स्त्थ भागो येषाँय्येषाम्भाग स्त्थ। भाग स्त्थ स्त्थ भागो भाग स्त्थ स्वाहा स्वाहा स्त्थ भागो भाग स्त्थ स्वाहा। स्थ स्वाहा स्वाहा स्त्थ स्त्थ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२५॥

कार्षिरस्यसि कार्षिः कार्षिरसि समुद्रस्य समुद्रस्यासि कार्षिः कार्षिरसि समुद्रस्य। असि समुद्रस्य समुद्रस्यास्यसि समुद्रस्य त्वा त्वा समुद्रस्यास्यसि समुद्रस्य त्वा। समुद्रस्य त्वा त्वा समुद्रस्य समुद्रस्य त्वाक्षित्त्याऽ अक्षित्त्यै त्वा समुद्रस्य समुद्रस्य त्वाक्षित्त्यै। त्वाक्षित्त्याऽ अक्षित्त्यै त्वा त्वाक्षित्त्याऽ उदुदक्षित्त्यै त्वा त्वाक्षित्त्याऽ उत्। अक्षित्त्याऽ उदुदक्षित्त्याऽ अक्षित्त्याऽ उन्नयामि नयाम्म्युदक्षित्त्याऽ अक्षित्त्याऽ उन्नयामि। उन्नयामि नयाम्म्युदुन्नयामि। नयामीति नयामि॥ समापऽ आपः सꣳ समापोऽ अद्भिरद्भिरापः सꣳ समापोऽ अद्भिः। आपोऽ अद्भिरद्भिरापऽ आपोऽ अद्भिरग्ग्मताग्ग्मताद्भिरापऽ आपोऽ अद्भिरग्ग्मत। अद्भिरग्ग्मताग्ग्मताद्भिरद्भिरग्ग्मत सꣳ समग्ग्मताद्भिरद्भिरग्ग्मत सम्। अद्भिरित्त्यत् भिः। अग्ग्मत सꣳ समग्ग्मताग्ग्मत समोषधीभिरोषधीभिः समग्ग्मताग्ग्मत समोषधीभिः। समोषधीभिरोषधीभिः सꣳ समोषधीभिरोषधी-

[1]. वा.प्रा.५.९. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

रोषधीरोषधीभिः सह समोषधीभिरोषधीः। ओषधीभिरोषधीरोषधीरोषधीभिरो-
षधीभिरोषधीः। ओषधीरित्योषधीः॥२६॥

यमग्नेग्ने यँय्यमग्ने पृत्सु पृत्स्वग्ने यँय्यमग्ने पृत्सु। अग्ने पृत्सु पृत्स्व-
ग्नेग्ने पृत्सु मर्त्यम्मर्त्यम्पृत्स्वग्नेग्ने पृत्सु मर्त्यम्। पृत्सु मर्त्यम्मर्त्यम्पृत्सु
पृत्सु मर्त्यमवाऽ अवा मर्त्यम्पृत्सु पृत्सु मर्त्यमवाः। पृत्स्विति पृत् सु[1]।
मर्त्यमवाऽ अवा मर्त्यम्मर्त्यमवा ब्वाजेषु ब्वाजेष्ववा मर्त्यम्मर्त्यमवा ब्वाजेषु।
अवा ब्वाजेषु ब्वाजेष्ववाऽ अवा ब्वाजेषु यँय्यँब्वाजेष्ववाऽ अवा ब्वाजेषु यम्। ब्वाजे-
षु यँय्यँब्वाजेषु ब्वाजेषु यञ्जुना जुना यँब्वाजेषु ब्वाजेषु यञ्जुनाः। यञ्जुना जुना
यँय्यञ्जुनाः। जुनाऽ इति जुनाः॥ स यन्ता यन्ता स स यन्ता शश्वतीः शश्व-
तीर्य्यन्ता स स यन्ता शश्वतीः। यन्ता शश्वतीः शश्वतीर्य्यन्ता यन्ता शश्वती-
रिषऽ इषः शश्वतीर्य्यन्ता यन्ता शश्वतीरिषः। शश्वतीरिषऽ इषः शश्वतीः
शश्वतीरिषः स्वाहा स्वाहेषः शश्वतीः शश्वतीरिषः स्वाहा। इषः स्वाहा
स्वाहेषऽ इषः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२७॥

रावास्यसि रावा रावासि गभीरङ्गभीरमसि रावा रावासि गभीरम्। असि
गभीरङ्गभीरमस्यसि गभीरमिममिमङ्गभीरमस्यसि गभीरमिमम्। गभीरमिममि-
मङ्गभीरङ्गभीरमिममद्ध्वरमद्ध्वरमिमङ्गभीरङ्गभीरमिममद्ध्वरम्। इममद्ध्वरमद्ध्वरमिम-
मिममद्ध्वरङ्कृधि कृद्ध्यद्ध्वरमिममिममद्ध्वरङ्कृधि। अद्ध्वरङ्कृधि कृद्ध्यद्ध्वरमद्ध्वरङ्कृधीन्द्रा-
येन्द्राय कृद्ध्यद्ध्वरमद्ध्वरङ्कृधीन्द्राय। कृधीन्द्रायेन्द्राय कृधि कृधीन्द्राय सुषूतमः
सुसूतममिन्द्राय कृधि कृधीन्द्राय सुषूतमम्। इन्द्राय सुषूतमः सुसूतममिन्द्राये-
न्द्राय सुषूतमम्। सुसूतममिति सु सूतमम्[2]॥ उत्तमेन पविना पविनोत्तमेनो-
त्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविनोत्तमेनोत्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तम्। उत्तमे-

[1]. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

नेत्युंत् तमेनं। पविनोर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविना पविनोर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्मधुमन्तमूर्ज्जस्वन्तम्पविना पविनोर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्। ऊर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्मधुमन्तमूर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तम्पयस्वन्तम्मधुमन्तमूर्ज्जस्वन्तमूर्ज्जस्वन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तम्। मधुमन्तम्पयस्वन्तम्पयस्वन्तम्मधुमन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राब्भ्या निग्ग्राब्भ्याः पयस्वन्तम्मधुमन्तम्मधुमन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राब्भ्याः। मधुमन्तमिति मधु मन्तम्। पयस्वन्तन्निग्ग्राब्भ्या निग्ग्राब्भ्याः पयस्वन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राब्भ्या स्त्थ स्त्थ निग्ग्राब्भ्याः पयस्वन्तम्पयस्वन्तन्निग्ग्राब्भ्या स्त्थ[1]। निग्ग्राब्भ्या स्त्थ स्त्थ निग्ग्राब्भ्या निग्ग्राब्भ्या स्त्थ देवश्श्रुतो देवश्श्रुत स्त्थ निग्ग्राब्भ्या निग्ग्राब्भ्या स्त्थ देवश्श्रुतः। निग्ग्राब्भ्याऽ इति नि ग्राब्भ्याः। स्त्थ देवश्श्रुतो देवश्श्रुत स्त्थ स्त्थ देवश्श्रुतस्तर्प्पयत तर्प्पयत देवश्श्रुत स्त्थ स्त्थ देवश्श्रुतस्तर्प्पयत। देवश्श्रुतस्तर्प्पयत तर्प्पयत देवश्श्रुतो देवश्श्रुतस्तर्प्पयत मा मा तर्प्पयत देवश्श्रुतो देवश्श्रुतस्तर्प्पयत मा। देवश्श्रुतऽ इति देव श्रुतः। तर्प्पयत मा मा तर्प्पयत तर्प्पयत मा मनो मनो मा तर्प्पयत तर्प्पयत मा मनः। मा मनो मनो मा मा मनो मे मे मनो मा मा मनो मे॥२८॥

मनो मे मे मनो मनो मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे मनो मनो मे तर्प्पयत। मे तर्प्पयत तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत व्वाचँव्वाचन्तर्प्पयत मे मे तर्प्पयत व्वाचम्। तर्प्पयत व्वाचँव्वाचन्तर्प्पयत तर्प्पयत व्वाचम्प्राणम्प्राणँव्वाचन्तर्प्पयत तर्प्पयत व्वाचम्प्राणम्। व्वाचम्प्राणम्प्राणँव्वाचँव्वाचम्प्राणञ्चक्षुश्चक्षुः प्प्राणँव्वाचँव्वाचम्प्रा-

[2]. वा. प्रा. ५.३. के अनुसार यह पद पूर्ववर्ती पद (सु) के सहित अवगृहीत होता है। वा.प्रा.३.५६. के अनुसार सुसूतमम् पद में द्वितीय सकार षकार होता है।

[1]. निग्राभ्याः स्थ यहाँ लुङ् मुदि जित्परे(वा.प्रा.३.१३) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

णश्चक्षुं÷[1]। प्राणश्चक्षुश्चक्षुं÷ प्प्राणम्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रश्चक्षुं÷ प्प्राणम्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम्। चक्षुः श्रोत्रꣳ श्रोत्रश्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रमात्मानमात्मानꣳ श्रोत्रश्चक्षुश्चक्षुः श्रोत्रमात्मानम्। श्रोत्रमात्मानमात्मानꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रमात्मानम्प्रजाम्प्रजामात्मानꣳ श्रोत्रꣳ श्रोत्रमात्मानम्प्रजाम्। आत्मानम्प्रजाम्प्रजामात्मानमात्मानम्प्रजाम्पशून्पशून्प्रजामात्मानमात्मानम्प्रजाम्पशून्। प्रजाम्पशून्पशून्प्रजाम्प्रजाम्पशून्गणान्गणान्पशून्प्रजाम्प्रजाम्पशून्गणान्। प्रजामितिं प्प्र जाम्। पशून्गणान्गणान्पशून्पशून्गणान्गणा गणा गणान्पशून्पशून्गणान्गणाः। गणान्गणा गणा गणान्गणान्गणा में मे गणा गणान्गणान्गणा में। गणा में मे गणा गणा मे मा मा में गणा गणा मे मा। मे मा मा में मे मा व्वि वि मा में मे मा व्वि। मा व्वि वि मा मा व्वि तृंषँस्तृषन्व्वि मा मा व्वि तृंषन्। व्वि तृंषँस्तृषन्व्वि वि तृंषन्। तृषन्नितिं तृषन्॥२९॥

इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा व्वसुंमते व्वसुंमते त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा व्वसुंमते। त्वा व्वसुंमते व्वसुंमते त्वा त्वा व्वसुंमते रुद्रवंते रुद्रवंते व्वसुंमते त्वा त्वा व्वसुंमते रुद्रवंते। व्वसुंमते रुद्रवंते रुद्रवंते व्वसुंमते व्वसुंमते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतऽ आदित्यवंते रुद्रवंते व्वसुंमते व्वसुंमते रुद्रवंतऽ आदित्यवंते। व्वसुंमतऽ इति वसुं मते। रुद्रवंतऽ आदित्यवंतऽ आदित्यवंते रुद्रवंते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्नेभिमातिग्घ्नऽ आदित्यवंते रुद्रवंते रुद्रवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्ने। रुद्रवंतऽ इतिं रुद्र व्वंते। आदित्यवंतेभिमातिग्घ्नेभिमातिग्घ्नऽ आदित्यवंतऽ आदित्यवंतेभिमातिग्घ्ने। आदित्यवंतऽ इत्यादित्य व्वंते। अभिमातिग्घ्नऽ इत्यंभिमाति घ्ने॥३०॥

---

[1]. उकार में विसर्ग आने पर हुकार के सदृश उच्चारण करना चाहिये। आखुस्ते पशुरित्यादौ ह (हु?) कारसदृशो भवेत्। - ल. मा. शि. १९.

यत्तें ते यद्यत्तें सोम सोम ते यद्यत्तें सोम[1]। ते सोम सोम ते ते सोम दिवि दिवि सोंम ते ते सोम दिवि। सोम दिवि दिवि सोंम सोम दिवि ज्योतिर्ज्योतिर्दिवि सोंम सोम दिवि ज्योतिंः। दिवि ज्योतिर्ज्योतिर्दिवि दिवि ज्योतिंः पृथिव्याम्पृंथिव्याञ्ज्योतिर्दिवि दिवि ज्योतिंः पृथिव्याम्। ज्योतिंः पृथिव्याम्पृंथिव्याञ्ज्योतिर्ज्योतिंः पृथिव्यामुराऽ उरौ पृंथिव्याञ्ज्योतिर्ज्योतिंः पृथिव्यामुरौ। पृथिव्यामुराऽ उरौ पृंथिव्याम्पृंथिव्यामुरावन्तरिक्षेन्तरिक्षऽ उरौ पृंथिव्याम्पृंथिव्यामुरावन्तरिक्षे[2]। उरावन्तरिक्षेन्तरिक्षऽ उराऽ उरावन्तरिक्षे। अन्तरिक्षऽ इत्यन्तरिक्षे॥ तेनास्म्माऽ अस्म्मै तेन तेनास्म्मै यजमानाय यजमानायास्म्मै तेन तेनास्म्मै यजमानाय। अस्म्मै यजमानाय यजमानायास्म्माऽ अस्म्मै यजमानायोरूरु यजमानायास्म्माऽ अस्म्मै यजमानायोरु। यजमानायोरूरु यजमानाय यजमानायोरु राये रायऽ उरु यजमानाय यजमानायोरु राये। उरु राये रायऽ उरूरु राये कृधि कृधि रायऽ उरूरु राये कृधि। राये कृधि कृधि राये राये कृद्ध्यद्ध्यधि कृधि राये राये कृद्ध्यधि। कृद्ध्यद्ध्यधि कृधि कृद्ध्यधि दात्रे दात्रेधि कृधि कृद्ध्यधि दात्रे[3]। अधि दात्रे दात्रेद्ध्यधि दात्रे ब्वोंचो ब्वोचो दात्रेद्ध्यधि दात्रे ब्वोंचः। दात्रे ब्वोंचो ब्वोचो दात्रे दात्रे ब्वोंचः। ब्वोचऽ इति वोचः॥३१॥

श्वात्रा स्त्थ स्त्थ श्वात्राः श्वात्रा स्त्थ ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुर स्त्थ श्वात्राः श्वात्रा स्त्थ ब्वृत्रतुरः। स्त्थ ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुर स्त्थ स्त्थ ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुर स्त्थ स्त्थ ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताः। ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ता राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्यामृतंस्य राधोंगूर्त्ता ब्वृत्रतुरों ब्वृत्रतुरो राधोंगूर्त्ताऽ अमृतंस्य। ब्वृत्रतुरऽ

1. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

2. उरौ अन्तरिक्षे यहाँ न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) के अनुसार वकार का लोप न होने से उरावन्तरिक्षे होगा।

3. वा. प्रा. ६.२६. के अनसार दात्रे पद में दो स्पर्श हैं।

इति॑ वृत्र॒ तुर॑ः। राधो॑गूर्त्ताऽ अ॒मृत॑स्या॒मृत॑स्य॒ राधो॑गूर्त्ता॒ राधो॑गूर्त्ताऽ अ॒मृत॑स्य॒ पत्नी॒ः पत्नी॑र॒मृत॑स्य॒ राधो॑गूर्त्ता॒ राधो॑गूर्त्ताऽ अ॒मृत॑स्य॒ पत्नी॑ः। राधो॑गूर्त्ता॒ऽ इति॒ राध॑ः गूर्त्ता॑ः। अ॒मृत॑स्य॒ पत्नी॒ः पत्नी॑र॒मृत॑स्या॒मृत॑स्य॒ पत्नी॑ः। पत्नी॒रिति॒ पत्नी॑ः॥ ता दे॑वीर्दे॒वीस्तास्ता दे॑वीर्दे॑व॒त्रा दे॑व॒त्रा दे॒वीस्तास्ता दे॑वीर्दे॑व॒त्रा। दे॒वी॒र्दे॒व॒त्रा दे॑व॒त्रा दे॑वीर्दे॑वीर्दे॑व॒त्रेमम॒मि॒मन्दे॑व॒त्रा दे॑वीर्दे॑वीर्दे॑व॒त्रेमम्। दे॒व॒त्रेमम॒मि॒मन्दे॑व॒त्रा दे॑व॒त्रेमँ-य॒ज्ञँय॒ज्ञमि॒मन्दे॑व॒त्रा दे॑व॒त्रेमँय॒ज्ञम्। दे॒व॒त्रेति॑ देव॒ त्रा[1]। इ॒मँय॒ज्ञँय॒-ज्ञमि॒मम॒मिँय॒ज्ञन्न॑यत नयत य॒ज्ञमि॒मम॒मिँय॒ज्ञन्न॑यत। य॒ज्ञन्न॑यत नयत य॒ज्ञँय॒ज्ञन्न॑य॒तोप॑हूता॒ऽ उप॑हूता नयत य॒ज्ञँय॒ज्ञन्न॑य॒तोप॑हूताः[2]। न॒य॒तो-प॑हूता॒ऽ उप॑हूता नयत नय॒तोप॑हूता॒ः सोम॑स्य॒ सोम॒स्योप॑हूता नयत नय॒तोप॑हूता॒ः सोम॑स्य। उप॑हूता॒ः सोम॑स्य॒ सोम॒स्योप॑हूता॒ऽ उप॑हूता॒ः सोम॑स्य पिबत पिबत॒ सोम॒स्योप॑हूता॒ऽ उप॑हूता॒ः सोम॑स्य पिबत। उप॑हूता॒ऽ इत्युप॑ हूताः। सोम॑स्य पिबत पिबत॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य पिबत। पि॒ब॒तेति॑ पिबत॥३२॥

ऊर्ज्जं॑न्धत्स्व धत्स्वोर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑न्धत्स्व॒ धिष॑णे॒ धिष॑णे धत्स्वोर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑न्धत्स्व॒ धिष॑णे। ध॒त्स्व॒ धिष॑णे॒ धिष॑णे धत्स्व धत्स्व॒ धिष॑णे व्वी॒ड्वी व्वी॒ड्वी धिष॑णे धत्स्व धत्स्व॒ धिष॑णे व्वी॒ड्वी। धिष॑णे व्वी॒ड्वी व्वी॒ड्वी धिष॑णे॒ धिष॑णे व्वी॒ड्वी स॒ती स॒ती व्वी॒ड्वी धिष॑णे॒ धिष॑णे व्वी॒ड्वी स॒ती। धिष॑णे॒ऽ इति॒ धिष॑णे। व्वी॒ड्वी स॒ती स॒ती व्वी॒ड्वी व्वी॒ड्वी स॒ती व्वी॑डयेथाँव्वीडयेथाꣳ स॒ती व्वी॒ड्वी व्वी॒ड्वी स॒ती व्वी॑डयेथाम्। व्वी॒ड्वीऽ इति॑ वी॒ड्वी। स॒ती व्वी॑डयेथाँव्वीडयेथाꣳ स॒ती स॒ती व्वी॑डये॒था॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑व्वीडयेथाꣳ स॒ती स॒ती व्वी॑डयेथा॒मूर्ज्जं॑म्। स॒तीऽ इति॑ स॒ती। व्वी॒ड॒ये॒था॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्जं॑व्वीडयेथाँव्वीडयेथा॒मूर्ज्जं॑-न्दधाथान्दधाथा॒मूर्ज्जं॑व्वीडयेथाँव्वीडयेथा॒मूर्ज्जं॑न्दधाथाम्। ऊर्ज्जं॑न्दधाथान्दधाथा॒मू-

1. शस्त्वत्रातादिषु च (वा. प्रा. ५.९) इस सूत्र के अनुसार त्रा (तद्धित प्रत्यय) बाद में होने पर पृथक्करण होता है।

2. नयत उपहूताः यहाँ उवर्ण ओकारम्(वा.प्रा.४.५५) के अनुसार उकार पूर्ववर्ती वर्ण के साथ ओकार होता है।

र्ज्जमूर्ज्जन्दधाथाम्। दधाथामिति दधाथाम्॥ पाप्मा हतो हतः पाप्मा पाप्मा हतो न न हतः पाप्मा पाप्मा हतो न। हतो न न हतो हतो न सोमः सोमो न हतो हतो न सोमः। न सोमः सोमो न न सोमः। सोमऽ इति सोमः॥३३॥

प्रागपागपाक् प्राक् प्रागपागुदगुदगपाक् प्राक् प्रागपागुदक्[1]। अपागुदगुदगपागपागुदगधरागधरागुदगपागपागुदगधराक्। उदगधरागधरागुदगुदगधराक् सर्व्वतः सर्व्वतोधरागुदगुदगधराक् सर्व्वतः। अधराक् सर्व्वतः सर्व्वतोधरागधराक् सर्व्वतस्त्वा त्वा सर्व्वतोधरागधराक् सर्व्वतस्त्वा। सर्व्वतस्त्वा त्वा सर्व्वतः सर्व्वतस्त्वा दिशो दिशस्त्वा सर्व्वतः सर्व्वतस्त्वा दिशः। त्वा दिशो दिशस्त्वा त्वा दिशऽ आ धावन्तु धावन्त्वा दिशस्त्वा त्वा दिशऽ आ धावन्तु। दिशऽ आ धावन्तु धावन्त्वा दिशो दिशऽ आ धावन्तु। आ धावन्तु। धावन्त्विति धावन्तु॥ अम्ब निर्न्निरम्बाम्ब निष्प्पर पर निरम्बाम्ब निष्प्पर[2]। निष्प्पर पर निर्न्निष्प्पर सꣳ सम्पर निर्न्निष्प्पर सम्। पर सꣳ सम्पर पर समरीररीः सम्पर पर समरीः। समरीररीः सꣳ समरीर्व्विदाँव्विदामरीः सꣳ समरीर्व्विदाम्। अरीर्व्विदाँव्विदामरीररीर्व्विदाम्। व्विदामिति विदाम्॥३४॥

त्वमङ्गाङ्ग त्वन्त्वमङ्ग प्र प्राङ्ग त्वन्त्वमङ्ग प्र। अङ्ग प्र प्राङ्गाङ्ग प्र शꣳसिषः शꣳसिषः प्राङ्गाङ्ग प्र शꣳसिषः। प्र शꣳसिषः शꣳसिषः प्र प्र शꣳसिषो देवो देवः शꣳसिषः प्र प्र शꣳसिषो देवः। शꣳसिषो देवो देवः शꣳसिषः शꣳसिषो देवः शविष्ठ शविष्ठ देवः शꣳसिषः शꣳसिषो देवः शविष्ठ। देवः शविष्ठ शविष्ठ देवो देवः शविष्ठ मर्त्त्यम्मर्त्त्यꣳ शविष्ठ देवो देवः शविष्ठ मर्त्त्यम्। शविष्ठ मर्त्त्यम्मर्त्त्यꣳ शविष्ठ शविष्ठ मर्त्त्यम्। मर्त्त्यमिति मर्त्त्यम्॥ न

---

[1]. प्राक् अपाक् तथा अपाक् उदक् यहाँ स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरधौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से ककार गकार होता है।

[2]. आविर्निरिड इडाया वसतिर्वरिवः (वा. प्रा. ३.२३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ निः का विसर्जनीय षकार हो जाता है।

त्वत्त्वन्न न त्वदन्न्योऽन्यस्त्वन्न न त्वदन्न्यः। त्वदन्न्योऽन्यस्त्वत्त्वदन्न्यो मघवन्मघ-वन्नन्न्यस्त्वत्त्वदन्न्यो मघवन्। अन्न्यो मघवन्मघवन्नन्न्योऽन्न्यो मघवन्नस्त्यस्ति मघवन्नन्न्योऽन्न्यो मघवन्नस्ति। मघवन्नस्त्यस्ति मघवन्मघवन्नस्ति मर्डिता मर्डितास्ति मघवन्मघवन्नस्ति मर्डिता। मघवन्निति मघ वन्। अस्ति मर्डिता मर्डितास्त्यस्ति मर्डितेन्द्रेन्द्र मर्डितास्त्यस्ति मर्डितेन्द्र। मर्डितेन्द्रेन्द्र मर्डिता मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ब्रवीमीन्द्र मर्डिता मर्डितेन्द्र ब्रवीमि। इन्द्र ब्रवीमि ब्रवीमीन्द्रेन्द्र ब्रवीमि ते ते ब्रवीमीन्द्रेन्द्र ब्रवीमि ते। ब्रवीमि ते ते ब्रवीमि ब्रवीमि ते वचो वचस्ते ब्रवीमि ब्रवीमि ते वचः। ते वचो वचस्ते ते वचः। वचऽ इति वचः[1]॥३५॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे षष्ठोऽध्यायः॥

[1]. अवसाने च (वा. प्रा. ४.१९६) अवसान (विराम) में स्थित पद का स्थितोपस्थित पाठ किया जाता है।

॥सप्तमोध्यायः॥

हरिंः ॐ॥ व्वाचस्प्पतये पतये व्वाचो व्वाचस्प्पतये पवस्व पवस्व पतये व्वाचो व्वाचस्प्पतये पवस्व[1]। पतये पवस्व पवस्व पतये पतये पवस्व व्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णंः पवस्व पतये पतये पवस्व व्वृष्ण्णंः। पवस्व व्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णंः पवस्व पवस्व व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णंः पवस्व पवस्व व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याम्। व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याङ्ग-भंस्तिपूतो गभंस्तिपूतोꣳशुब्भ्याँव्वृष्ण्णो व्वृष्ण्णोऽ अꣳशुब्भ्याङ्गभंस्तिपूतः। अꣳशुब्भ्याङ्गभंस्तिपूतो गभंस्तिपूतोꣳशुब्भ्यामꣳशुब्भ्याङ्गभंस्तिपूतः। अꣳशु-ब्भ्यामित्यꣳशु भ्याम्। गभंस्तिपूतऽ इति गभंस्ति पूतः॥ देवो देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो देवो देवो देवेब्भ्यंः पवस्व पवस्व देवेब्भ्यो देवो देवो देवेब्भ्यंः पवस्व। देवेब्भ्यंः पवस्व पवस्व देवेब्भ्यो देवेब्भ्यंः पवस्व येषाँय्येषाम्पवस्व देवेब्भ्यो देवेब्भ्यंः पवस्व येषाम्। पवस्व येषाँय्येषाम्पवस्व पवस्व येषाम्भागो भागो येषाम्पवस्व पवस्व येषाम्भागः। येषाम्भागो भागो येषाँय्येषाम्भागोस्यसिं भागो येषाँय्येषाम्भागोसिं[2]। भागोस्यसिं भागो भागोसिं। असीत्यसिं॥१॥

मधुंमतीर्न्नो नो मधुंमतीर्म्मधुंमतीर्न्नऽ इषऽ इषो नो मधुंमतीर्म्मधुंमतीर्न्नऽ इषंः। मधुंमतीरिति मधुं मतीः। नऽ इषऽ इषो नो नऽ इषंस्कृधि कृधीषो नो नऽ इषंस्कृधि। इषंस्कृधि कृधीषऽ इषंस्कृधि यद्यत्कृधीषऽ इषंस्कृधि यत्। कृधि यद्यत्कृंधि कृधि यत्ते ते यत्कृंधि कृधि यत्ते। यत्ते ते यद्यत्ते सोम सोम ते यद्यत्ते सोम। ते सोम सोम ते ते सोमादाब्भ्यमदाब्भ्यꣳ सोम ते ते सोमादाब्भ्यम् । सोमादाब्भ्यमदाब्भ्यꣳ सोम सोमादाब्भ्यन्नाम नामादाब्भ्यꣳ सोम सोमादा-

---

[1]. पत्यौ तालव्यस्वरोदये(वा.प्रा.३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) के अनुसार वाचः पतये यहाँ विसर्जनीय सकार होता है।

[2]. वा.प्रा.२.४०. के अनुसार यहाँ मधुमतीः पद बाद में होने से असि पद आद्युदात है।

ब्भ्युन्नाम॑। अदा॑ब्भ्युन्नाम् नामादा॑ब्भ्युमदा॑ब्भ्युन्नाम् जागृ॑वि जागृ॑वि नामादा॑-ब्भ्युमदा॑ब्भ्युन्नाम् जागृ॑वि। नाम् जागृ॑वि जागृ॑वि नाम् नाम् जागृ॑वि तस्म्मै तस्म्मै जागृ॑वि नाम् नाम् जागृ॑वि तस्म्मै॑। जागृ॑वि तस्म्मै तस्म्मै जागृ॑वि जागृ॑वि तस्म्मै॑ ते ते तस्म्मै जागृ॑वि जागृ॑वि तस्म्मै॑ ते। तस्म्मै॑ ते ते तस्म्मै तस्म्मै॑ ते सोम सोम ते तस्म्मै तस्म्मै॑ ते सोम। ते सोम् सोम् ते ते सोम् सोमा॑य सोमा॑य सोम ते ते सोम् सोमा॑य। सोम् सोमा॑य सोमा॑य सोम सोम् सोमा॑य स्वाहा स्वाहा सोमा॑य सोम सोम् सोमा॑य स्वाहा॑। सोमा॑य स्वाहा स्वाहा सोमा॑य सोमा॑य स्वाहा स्वाङ्कृ॑तः स्वाङ्कृ॑तः स्वाहा सोमा॑य सोमा॑य स्वाहा स्वाङ्कृ॑तः। स्वाहा स्वाङ्कृ॑तः स्वाङ्कृ॑तः स्वाहा स्वाहा स्वाङ्कृ॑तोस्यसि स्वाङ्कृ॑तः स्वाहा स्वाहा स्वाङ्कृ॑तोसि॥२॥

स्वाङ्कृ॑तोस्यसि स्वाङ्कृ॑तः स्वाङ्कृ॑तोसि व्विश्श्वे॑ब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्योसि स्वाङ्कृ॑तः स्वाङ्कृ॑तोसि व्विश्श्वे॑ब्भ्यः। स्वाङ्कृ॑तऽ इति स्वाम् कृ॑तः। असि व्विश्श्वे॑ब्भ्यो व्विश्श्वे॑-ब्भ्योस्यसि व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रियेब्भ्य॑ऽ इन्द्रियेब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्योस्यसि व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रियेब्भ्य॑÷। व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रियेब्भ्य॑ऽ इन्द्रियेब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रियेब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रियेब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्यो व्विश्श्वे॑ब्भ्यऽ इन्द्रिये-ब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्य॑÷। इन्द्रियेब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रियेब्भ्य॑ऽ इन्द्रिये-ब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो दिव्येब्भ्य॑ऽ इन्द्रियेब्भ्य॑ऽ इन्द्रिये-ब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यः। दिव्येब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो दिव्ये-ब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो मनो मनः पार्त्थि॑वेब्भ्यो दिव्येब्भ्यो॑ दिव्येब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो मन॑÷। पार्त्थि॑वेब्भ्यो मनो मनः पार्त्थि॑वेब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो मन॑-स्त्वा त्वा मनः पार्त्थि॑वेब्भ्युः पार्त्थि॑वेब्भ्यो मन॑स्त्वा। मन॑स्त्वा त्वा मनो मन॑-

स्त्वाष्ट्वष्टु त्वा मनो मनस्त्वाष्टु[1]। त्वाष्ट्वष्टु त्वा त्वाष्टु स्वाहा स्वाहाष्टु त्वा त्वाष्टु स्वाहा[2]। अष्टु स्वाहा स्वाहाष्ट्वष्टु स्वाहा त्वा त्वा स्वाहाष्ट्वष्टु स्वाहा त्वा। स्वाहा त्वा त्वा स्वाहा स्वाहा त्वा सुभव सुभव त्वा स्वाहा स्वाहा त्वा सुभव। त्वा सुभव सुभव त्वा त्वा सुभव सूर्य्याय सूर्य्याय सुभव त्वा त्वा सुभव सूर्य्याय। सुभव सूर्य्याय सूर्य्याय सुभव सुभव सूर्य्याय देवेभ्यो देवेभ्यः सूर्य्याय सुभव सुभव सूर्य्याय देवेभ्यः। सुभवेति सु भव। सूर्य्याय देवेभ्यो देवेभ्यः सूर्य्याय सूर्य्याय देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यः सूर्य्याय सूर्य्याय देवेभ्यस्त्वा। देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो मरीचिपेभ्यस्त्वा देवेभ्यो देवेभ्य-स्त्वा मरीचिपेभ्यः। त्वा मरीचिपेभ्यो मरीचिपेभ्यस्त्वा त्वा मरीचिपेभ्यो देव देव मरीचिपेभ्यस्त्वा त्वा मरीचिपेभ्यो देव। मरीचिपेभ्यो देव देव मरीचिपेभ्यो मरीचिपेभ्यो देवांꣳशोꣳशो देव मरीचिपेभ्यो मरीचिपेभ्यो देवांꣳशो। मरीचिपेभ्यऽ इति मरीचि पेभ्यः। देवांꣳशोꣳशो देव देवांꣳशो यस्म्मै यस्म्माऽ अꣳशो देव देवांꣳशो यस्म्मै। अꣳशो यस्म्मै यस्म्माऽ अꣳशोꣳशो यस्म्मै त्वा त्वा यस्म्माऽ अꣳशोꣳशो यस्म्मै त्वा। अꣳशोऽ इत्यꣳशो। यस्म्मै त्वा त्वा यस्म्मै यस्म्मै त्वेडऽ ईडे त्वा यस्म्मै यस्म्मै त्वेडे। त्वेडऽ ईडे त्वा त्वेडे ततदीडे त्वा त्वेडे तत्। ईडे ततदीडऽ ईडे तत्सत्यꣳ सत्यन्तदीडऽ ईडे तत्सत्यम्। तत्सत्यꣳ सत्यन्ततत्सत्यमुपरिप्प्रुतोपरिप्प्रुता सत्यन्ततत्सत्यमुपरिप्प्रुता[3]। सत्यमुपरिप्प्रुतोपरिप्प्रुता सत्यꣳ सत्यमुपरिप्प्रुता भङ्गेन भङ्गेनोपरिप्प्रुता सत्यꣳ सत्यमुपरिप्प्रुता भङ्गेन। उपरिप्प्रुता भङ्गेन

---

[1]. अष्टु अष्टु यहां स्वरे भाव्यन्तस्याम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से उकार अन्तस्थ व होता है।

[2]. सर्व विश्व मानुषाशाः स्वाहा वाजः पयो नमः (वा. प्रा. २.३९) ये पद आद्युदात्त होते हैं।

[3]. भाष्यकार उव्वट ने उपरिप्लुता पद माना है।

भङ्गेनोपरिप्लुतोपरिप्लुता भङ्गेन हतो हतो भङ्गेनोपरिप्लुतोपरिप्लुता भङ्गेन हतः।
उपरिप्लुतेत्युपरि प्रुता। भङ्गेन हतो हतो भङ्गेन भङ्गेन हतोसावसौ हतो भङ्गेन
भङ्गेन हतोसौ। हतोसावसौ हतो हतोसौ फट्ट फडसौ हतो हतोसौ फट्। असौ
फट्ट फडसावसौ फट्ट प्राणाय प्प्राणाय फडसावसौ फट्ट प्राणाय। फट्ट प्राणाय
प्प्राणाय फट्ट फट्ट प्राणाय त्वा त्वा प्प्राणाय फट्ट फट्ट प्राणाय त्वा। प्राणाय त्वा
त्वा प्प्राणाय प्प्राणाय त्वा ध्यानाय ध्यानाय त्वा प्प्राणाय प्प्राणाय त्वा ध्यानाय
। त्वा ध्यानाय ध्यानाय त्वा त्वा ध्यानाय त्वा त्वा ध्यानाय त्वा त्वा ध्यानाय
त्वा। ध्यानाय त्वा त्वा ध्यानाय ध्यानाय त्वा। ध्यानायेति वि आनाय। त्वेति
त्वा॥३॥

उपयामगृहीतोस्यस्युपयामगृहीतऽ उपयामगृहीतोस्यन्तरन्तरस्युपयाम-गृहीतऽ उपयामगृहीतोस्यन्तः। उपयामगृहीतऽ इत्युपयाम गृहीतः। अस्यन्त-रन्तरस्यस्यन्तर्य्यच्छ यच्छान्तरस्यस्यन्तर्य्यच्छ[1]। अन्तर्य्यच्छ यच्छान्तर-न्तर्य्यच्छ मघवन्मघवन्यच्छान्तरन्तर्य्यच्छ मघवन्। यच्छ मघवन्मघवन्यच्छ यच्छ मघवन्पाहि पाहि मघवन्यच्छ यच्छ मघवन्पाहि। मघवन्पाहि पाहि मघवन्मघवन्पाहि सोमꣳ सोमम्पाहि मघवन्मघवन्पाहि सोमम्। मघवन्निति मघ वन्। पाहि सोमꣳ सोमम्पाहि पाहि सोमम्। सोममिति सोमम्॥ उरुष्य रायो रायऽ उरुष्योरुष्य रायऽ एषऽ इषऽ आ रायऽ उरुष्योरुष्य रायऽ एषः[2]। रायऽ एषऽ इषऽ आ रायो रायऽ एषो यजस्व यजस्वेषऽ आ रायो रायऽ एषो यजस्व। एषः। इषो यजस्व यजस्वेषऽ इषो यजस्व। यजस्वेति यजस्व॥
४॥

---

1. अन्तरनाद्युदात्तम् (वा. प्रा. १.१६२) आद्युदात्त न होने पर अन्तः पद रिफितसंज्ञक होता है।

2. रायोऽपोषे(वा.प्रा.२.४२) इस सूत्र के अनुसार पोष बाद में न होने पर रायः पद आद्युदात्त होता है।

अ॒न्तस्तें ते॒न्तर॒न्तस्ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी ते॒न्तर॒न्तस्ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी । अ॒न्तरित्त्य॒न्तः॥ ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी तें ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी तें ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि। द्यावा॑पृथि॒वी द॑धामि दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी द॑धाम्म्य॒न्तर॒न्तर्द्दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी द॑धाम्म्य॒न्तः। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। द॒धा॒म्म्य॒न्तर॒न्तर्द्दधामि दधाम्म्य॒न्तर्द्दधामि दधाम्म्य॒न्तर्द्दधामि दधाम्म्य॒न्तर्द्दधामि। अ॒न्तर्द्दधामि दधाम्म्य॒न्तर॒न्तर्द्दधाम्म्यु॒रूरु द॑धाम्म्य॒न्तर॒न्तर्द्दधाम्म्यु॒रु। द॒धा॒म्म्यु॒रूरु द॑धामि दधाम्म्यु॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒रु द॑धामि दधाम्म्यु॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम्। उ॒र्व्व॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्षमु॒रूर्व्व॒न्तरि॑क्षम् । अ॒न्तरि॑क्ष॒मित्त्य॒न्तरि॑क्षम्॥ स॒जूर्द्दे॒वेभि॒र्द्दे॒वेभिः॑ स॒जूः स॒जूर्द्दे॒वेभि॒रव॑रै॒रव॑रैर्द्दे॒वेभिः॑ स॒जूः स॒जूर्द्दे॒वेभि॒रव॑रैः। स॒जूरिति॑ स॒ जूः। दे॒वेभि॒रव॑रै॒रव॑रैर्द्दे॒वेभि॒र्द्दे॒वेभि॒रव॑रै॒ः परै॒ः परै॒रव॑रैर्द्दे॒वेभि॒र्द्दे॒वेभि॒रव॑रै॒ः परैः॑। अव॑रै॒ः परै॒ः परै॒रव॑रै॒रव॑रै॒ः परैश्च॑ च॒ परै॒रव॑रै॒रव॑रै॒ः परैश्च॑। परैश्च॑ च॒ परै॒ः परैश्चान्तर्व्या॒मे॒न्तर्व्या॒मे च॒ परै॒ः परैश्चान्तर्व्या॒मे[1]। चा॒न्त॒र्व्या॒मे॒न्तर्व्या॒मे च॑ चान्तर्व्या॒मे म॑घवन्मघवन्नन्तर्व्या॒मे च॑ चान्तर्व्या॒मे म॑घवन्। अ॒न्त॒र्व्या॒मे म॑घवन्मघवन्नन्तर्व्या॒मे॒न्तर्व्या॒मे म॑घवन्मादयस्व मादयस्व मघवन्नन्तर्व्या॒मे॒न्तर्व्या॒मे म॑घवन्मादयस्व। अ॒न्त॒र्व्या॒मऽ इत्त्य॑न्तः या॒मे। म॒घ॒व॒न्मा॒द॒य॒स्व॒ मा॒द॒य॒स्व॒ म॒घ॒व॒न्म॒घ॒व॒न्मा॒द॒य॒स्वो॒दा॒नायो॑दा॒नाय॑ मादयस्व मघवन्मघवन्मादयस्वोदा॒नाय॑। म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ वन्। मा॒द॒य॒स्वो॒दा॒नायो॑दा॒नाय॑ मादयस्व मादयस्वोदा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नाय॑ मादयस्व मादयस्वोदा॒नाय॑ त्वा॥ उ॒दा॒नाय॑ त्वा त्वोदा॒नायो॑दा॒नाय॑ त्वा। उ॒दा॒नायेत्त्यु॑त् आ॒नाय॑। त्वेति॑ त्वा॥५॥

---

[1]. अन्तर्व्यामे अन्तर्व्यामे यहाँ एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) इस सूत्र से एकार से परे अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) के अनुसार एकार स्वरित होता है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) इस सूत्र से अभिनिहित स्वरित का विधान किया गया है।

आ वा॑यो ब्वाय॒वा वा॑यो भूष भूष ब्वाय॒वा वा॑यो भूष[1]। ब्वा॒यो॒ भू॒ष॒ भू॒ष॒ ब्वा॒यो॒ ब्वा॒यो॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः शु॒चि॒पा॒ भू॒ष॒ ब्वा॒यो॒ ब्वा॒यो॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः। ब्वा॒यो॒ऽ इति॑ वायो। भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ः शु॒चि॒पा॒ भू॒ष॒ भू॒ष॒ शु॒चि॒पा॒ऽ उपोप॑ शुचिपा भूष भूष शुचिपा॒ऽ उप॑। शु॒चि॒पा॒ऽ उपोप॑ शुचिपाः शुचिपा॒ऽ उप॑ नो न॒ऽ उप॑ शुचिपाः शुचिपा॒ऽ उप॑ नः। शु॒चि॒पा॒ऽ इति॑ शुचि पाः। उप॑ नो न॒ऽ उपोप॑ नः स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्न॒ऽ उपोप॑ नः स॒हस्र॑म्। न॒ः स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑न्ते ते स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑न्ते। स॒हस्र॑न्ते ते स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्ते नि॒युतो॑ नि॒युत॑स्ते स॒हस्र॑ꣳ स॒हस्र॑न्ते नि॒युत॑ः । ते॒ नि॒युतो॑ नि॒युत॑स्ते ते नि॒युतो॑ ब्विश्ववार ब्विश्ववार नि॒युत॑स्ते ते नि॒युतो॑ ब्विश्ववार। नि॒युतो॑ ब्विश्ववार ब्विश्ववार नि॒युतो॑ नि॒युतो॑ ब्विश्ववार। नि॒यु॒त॒ऽ इति॑ नि॒ युत॑ः । ब्वि॒श्व॒वा॒रेति॑ विश्व ब्वार॥ उपो॑ ते त॒ऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते॒ऽ अन्धोन्ध॑स्त॒ऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते॒ऽ अन्ध॑ः[2]। उपो॒ऽ इत्युपो॑। ते॒ऽ अन्धोन्ध॑स्ते ते॒ऽ अन्धो॒ मद्य॒म्मद्य॒मन्ध॑स्ते ते॒ऽ अन्धो॒ मद्य॑म्। अन्धो॒ मद्य॒म्मद्य॒मन्धोन्धो॒ मद्य॑मयाम्म्ययामि॒ मद्य॒मन्धोन्धो॒ मद्य॑मयामि। मद्य॑मयाम्म्ययामि॒ मद्य॒म्मद्य॑मयामि॒ यस्य॒ यस्या॑यामि॒ मद्य॒म्मद्य॑म-यामि॒ यस्य॑। अ॒या॒मि॒ यस्य॒ यस्या॑याम्म्ययामि॒ यस्य॑ देव दे॒व॒ यस्या॑याम्म्ययामि॒ यस्य॑ देव। यस्य॑ देव दे॒व॒ यस्य॒ यस्य॑ देव दधि॒षे द॑धि॒षे दे॑व॒ यस्य॒ यस्य॑ देव दधि॒षे। दे॒व॒ द॒धि॒षे द॑धि॒षे दे॑व देव दधि॒षे पू॑र्ब्ब॒पेय॑म्पूर्ब्ब॒पेय॑न्दधि॒षे दे॑व देव दधि॒षे पू॑र्ब्ब॒पेय॑म्। द॒धि॒षे पू॑र्ब्ब॒पेय॑म्पूर्ब्ब॒पेय॑न्दधि॒षे द॑धि॒षे पू॑र्ब्ब॒पेय॑ँब्वा॒यवे॑ ब्वा॒यवे॑ पूर्ब्ब॒पेय॑न्दधि॒षे द॑धि॒षे पू॑र्ब्ब॒पेय॑ँब्वा॒यवे॑। पू॒र्ब्ब॒पेय॑ँब्वा॒यवे॑ ब्वा॒यवे॑ पूर्ब्ब॒पेय॑म्पूर्ब्ब॒पेय॑ँब्वा॒यवे॑ त्वा त्वा ब्वा॒यवे॑ पूर्ब्ब॒पेय॑-

---

[1]. उपसर्गपरो यत्र यवकारो पदादिगौ। ईषत्स्पृष्टौ ततो ज्ञेयावभियुध्य उपा यथा॥– व. शि. २०९.

[2]. वा.प्रा.४.८२. के अनुसार ते अन्धः यहाँ ते का एकार प्रकृतिभाव से रहता है। ओकारान्तनिपातानां न्युत्क्रमेऽस्ति प्रगृह्यता। यथा-उपो॑ ते तऽ उपो॒ऽ उपो॑ ते (पद.७.६ सं.७.७) – ज्यो. वृ. पृ.२२९.

म्पूर्व्वपेयँव्वायवें त्वा। पूर्व्वपेयमितिं पूर्व्व पेयंम्। व्वायवें त्वा त्वा व्वायवें व्वायवें त्वा। त्वेतिं त्वा॥६॥

इन्द्रंवायूऽ इमऽ इमऽ इन्द्रंवायूऽ इन्द्रंवायूऽ इमे सुताः सुताऽ इमऽ इन्द्रं-वायूऽ इन्द्रंवायूऽ इमे सुताः। इन्द्रंवायूऽ इतीन्द्रंवायू। इमे सुताः सुताऽ इमऽ इमे सुताऽ उपोपं सुताऽ इमऽ इमे सुताऽ उपं। सुताऽ उपोपं सुताः सुताऽ उप प्प्रयोंभिः प्प्रयोंभिरुपं सुताः सुताऽ उप प्प्रयोंभिः। उप प्प्रयोंभिः प्प्रयोंभिरुपोप प्प्रयोंभिरा गंतङ्गतमा प्प्रयोंभिरुपोप प्प्रयोंभिरा गंतम्। प्रयोंभिरा गंतङ्गतमा प्प्रयोंभिः प्प्रयोंभिरा गंतम्। प्रयोंभिरिति प्प्रयंः भिः। आ गंतम्। गतमितिं गतम्॥ इन्दंवो वाँव्वामिन्दंवऽ इन्दंवो वामुशन्त्युशन्तिं वामिन्दंवऽ इन्दंवो वामु-शन्तिं। व्वामुशन्त्युशन्तिं वाँव्वामुशन्ति हि ह्युशन्तिं वाँव्वामुशन्ति हि[1]। उशन्ति हि ह्युशन्त्युशन्ति हि। हीति हि॥ व्वायवऽ इन्द्रवायुब्भ्यांमिन्द्रवायुब्भ्याँव्वायवें व्वायवंऽ इन्द्रवायुब्भ्यान्त्वा त्वेन्द्रवायुब्भ्याँव्वायवें व्वायवंऽ इन्द्रवायुब्भ्यान्त्वा[2]। इन्द्रवायुब्भ्यान्त्वा त्वेन्द्रवायुब्भ्यांमिन्द्रवायुब्भ्यान्त्वैषऽ एष त्वेन्द्रवायुब्भ्यां-मिन्द्रवायुब्भ्यान्त्वैषः। इन्द्रवायुब्भ्यामितीन्द्रवायु भ्याम्। त्वैषऽ एष त्वां त्वैष तें तऽ एष त्वां त्वैष तें। एष तें तऽ एषऽ एष ते योनिर्य्योनिंस्तऽ एषऽ एष ते योनिंः। ते योनिर्य्योनिंस्ते ते योनिंः सजोषोंब्भ्याँ सजोषोंब्भ्याँय्योनिंस्ते ते योनिंः सजोषोंब्भ्याम्। योनिंः सजोषोंब्भ्याँ सजोषोंब्भ्याँय्योनिर्य्योनिंः सजोषोंब्भ्यान्त्वा त्वा सजोषोंब्भ्याँय्योनिर्य्योनिंः सजोषोंब्भ्यान्त्वा। सजोषों-

---

[1]. उत्तरेऽपि (वा. प्रा. ६.१६) के अनुसार हि पद परे रहते उशन्ति पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है।

[2]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार इन्द्रंवायू यह पद आमन्त्रित होने से द्विरुदात्त नहीं है। इन्द्रवायुभ्याम् यह पद द्वन्द्वं चेन्द्रसोमपूर्वं पूषाग्निवायुषु(वा.प्रा.२.५५) इस सूत्र के अनुसार अन्तोदात्त है। यह सूत्र पूर्वोक्त सूत्र का अपवाद है।

ब्भ्यान्त्वा त्वा स॒जोषो॑ब्भ्याꣳ स॒जोषो॑ब्भ्यान्त्वा। स॒जोषो॑ब्भ्य॒मिति॑ स॒जोष॑÷ भ्याम्। त्वेति॑ त्वा॥७॥

अ॒यँव्वाँव्वाम॒यम॒यँव्वा॑म्मित्रावरुणा मित्रावरुणा वाम॒यम॒यँव्वा॑म्मित्रावरुणा। व्वा॒म्मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒ मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒ वाँव्वा॒म्मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒ सु॒तः सु॒तो मि॑त्रावरुणा वाँव्वा-म्मित्रावरुणा सु॒तः। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒ सु॒तः सु॒तो मि॑त्रावरुणा मित्रावरुणा सु॒तः सोम॒ꣳ सोम॑÷ सु॒तो मि॑त्रावरुणा मित्रावरुणा सु॒तः सोम॑÷। सु॒तः सोम॒ꣳ सोम॑÷ सु॒तः सु॒तः सोम॑ऽ ऋतावृधऽ ऋतवृ॒धा॒ सोम॑÷ सु॒तः सु॒तः सोम॑ऽ ऋतावृधा[1]। सोम॑ऽ ऋतावृधऽ ऋतवृ॒धा॒ सोम॒ꣳ सोम॑ऽ ऋतावृधा। ऋ॒त॒वृ॒धेत्यृ॑त व्वृधा॥ ममेदि-हमम॒ ममेदि॒हेहेहमम॒ ममेदि॒ह। इदि॒हेहेदिदि॒ह श्श्रु॑तꣳ श्रुतमि॒हेदिदि॒ह श्श्रु॑तम्[2]। इ॒ह श्श्रु॑तꣳ श्रुतमि॒हेह श्श्रु॑त॒ꣳ हव॒ꣳ हव॑ꣳ श्रुतमि॒हेह श्श्रु॑त॒ꣳ हव॑म्। श्रु॒त॒ꣳ हव॒ꣳ हव॑ꣳ श्रुतꣳ श्रुत॒ꣳ हव॑म्। हव॒मिति॒ हव॑म्॥ मि॒त्राव॑रु॑णाब्भ्यान्त्वा त्वा मि॒त्रा-व॑रु॑णाब्भ्याम्मि॒त्राव॑रु॑णाब्भ्यान्त्वा। त्वेति॑ त्वा॥८॥

रा॒या व्व॒यँव्व॒यꣳ रा॒या रा॒या व्व॒यꣳ स॑स॒वाꣳस॑÷ सस॒वाꣳसो॑ व्व॒यꣳ रा॒या रा॒या व्व॒यꣳ स॑स॒वाꣳस॑÷। व्व॒यꣳ स॑स॒वाꣳस॑÷ सस॒वाꣳसो॑ व्व॒यँव्व॒यꣳ स॑स॒वाꣳसो॑ मदेम मदेम सस॒वाꣳसो॑ व्व॒यँव्व॒यꣳ स॑स॒वाꣳसो॑ मदेम। स॒स॒वाꣳसो॑ मदेम मदेम सस॒वाꣳस॑÷ सस॒वाꣳसो॑ मदेम ह॒व्येन॑ ह॒व्येन॑ मदेम सस॒वाꣳस॑÷ सस॒वाꣳसो॑ मदेम ह॒व्येन॑। स॒स॒वाꣳस॒ऽ इति॑ सस॒ व्वाꣳस॑÷। म॒दे॒म॒ ह॒व्येन॑ ह॒व्येन॑ मदेम मदेम ह॒व्येन॑ दे॒वा दे॒वा ह॒व्येन॑ मदेम मदेम ह॒व्येन॑ दे॒वाः। ह॒व्येन॑ दे॒वा दे॒वा ह॒व्येन॑ ह॒व्येन॑ दे॒वा यव॑सेन॒ यव॑सेन दे॒वा ह॒व्येन॑ ह॒व्येन॑ दे॒वा यव॑सेन। दे॒वा यव॑सेन॒ यव॑सेन दे॒वा दे॒वा यव॑सेन॒ गावो॒ गावो॒ यव॑सेन दे॒वा दे॒वा यव॑सेन॒ गाव॑÷। यव॑सेन॒ गावो॒ गावो॒

[1]. ऋतवृधा यहाँ वा.प्रा.३.९७. के अनुसार वकार बाद में होने से ऋत इस पदावयव (पूर्वपद) का ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है।

[2]. इहपूर्व श्रुतम् (वा. प्रा. २.१४) इह से परे स्थित श्रु॒त॒म् पद अनुदात्त होता है।

यवसेन यवसेन गावः। गावऽ इति गावः॥ तान्धेनुन्धेनुन्तान्तान्धेनुम्मित्रा-
वरुणा मित्रावरुणा धेनुन्तान्तान्धेनुम्मित्रावरुणा। धेनुम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा
धेनुन्धेनुम्मित्रावरुणा युवँय्युवम्मित्रावरुणा धेनुन्धेनुम्मित्रावरुणा युवम्।
मित्रावरुणा युवँय्युवम्मित्रावरुणा मित्रावरुणा युवन्नो नो युवम्मित्रावरुणा मित्रा-
वरुणा युवन्नः। युवन्नो नो युवँय्युवन्नो विश्वाहा विश्वाहा नो युवँय्युवन्नो विश्वाहा
। नो विश्वाहा विश्वाहा नो नो विश्वाहा धत्तन्धत्तँविश्वाहा नो नो विश्वाहा धत्तम्।
विश्वाहा धत्तन्धत्तँविश्वाहा विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्तीन्धत्तँवि-
श्वाहा विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्। धत्तमनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्तीन्धत्त-
न्धत्तमनपस्फुरन्तीमृतायुभ्यामृतयुभ्यामनपस्फुरन्तीन्धत्तन्धत्तमनपस्फु-
रन्तीमृतायुभ्याम्[1]। अनपस्फुरन्तीमृतायुभ्यामृतयुभ्यामनपस्फुरन्तीम-
नपस्फुरन्तीमृतायुभ्यान्त्वा त्वऽ ऋतयुभ्यामनपस्फुरन्तीमनपस्फुरन्ती-
मृतायुभ्यान्त्वा। अनपस्फुरन्तीमित्यनप स्फुरन्तीम्। ऋतायुभ्यान्त्वा त्वऽ
ऋतयुभ्यामृतायुभ्यान्त्वा। ऋतयुभ्यामित्यृतयु भ्याम्। त्वेति त्वा॥९॥

या वाँव्वाँय्या या वाङ्कशा कशा वाँय्या या वाङ्कशा। वाङ्कशा कशा वाँव्वाङ्क-
शा मधुमती मधुमती कशा वाँव्वाङ्कशा मधुमती[2]। कशा मधुमती मधुमती कशा
कशा मधुमत्यश्विनाश्विना मधुमती कशा कशा मधुमत्यश्विना। मधु-
मत्यश्विनाश्विना मधुमती मधुमत्यश्विना सूनृतावती सूनृतावत्यश्विना मधुमती
मधुमत्यश्विना सूनृतावती। मधुमतीति मधु मती। अश्विना सूनृतावती सूनृता-
वत्यश्विनाश्विना सूनृतावती। सूनृतावतीति सूनृता वती॥ तया यज्ञँय्यज्ञन्त-

---

[1]. ऋतयुभ्याम् यहाँ वा.प्रा.३.११२. के अनुसार यकार बाद में होने से त का स्वर दीर्घ होता है।

[2]. वा. प्रा. २.१७. के अनुसार कोई भी पद पूर्व में होने पर संबोधन पद अनुदात होता है, यदि वह नानार्थक वाचक न हो एवं पाद के प्रारम्भ में न हो। यहाँ मधुमती पाद के प्रारम्भ में होने के कारण आद्युदात है।

या तया यज्ञम्मिमिक्षतम्मिमिक्षतँय्यज्ञन्तया तया यज्ञम्मिमिक्षतम्। यज्ञम्मिमिक्षतम्मिमिक्षतँय्यज्ञँय्यज्ञम्मिमिक्षतम्। मिमिक्षतमिति मिमिक्षतम्॥ अश्विभ्यान्त्वा त्वाश्विभ्यामश्विभ्यान्त्वा माद्धीभ्याम्माद्धी-भ्यान्त्वाश्विभ्यामश्विभ्यान्त्वा माद्धीभ्याम्। अश्विभ्यामित्यश्वि भ्याम्। त्वा माद्धीभ्याम्माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्यान्त्वा। माद्धीभ्यान्त्वा त्वा माद्धीभ्याम्माद्धीभ्यान्त्वा। त्वेति त्वा॥ १०॥

तम्प्रत्नथा प्प्रत्नथा तन्तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा तन्तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा। प्रत्नथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा प्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथा व्विश्वथा पूर्व्वथा प्प्रत्नथा प्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथा। प्रत्नथेति प्प्रत्न था। पूर्व्वथा व्विश्वथा व्विश्वथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथेमथा व्विश्वथा पूर्व्वथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा। पूर्व्वथेति पूर्व्व था। व्विश्वथेमथेमथा व्विश्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठतातिमिमथा व्विश्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्। व्विश्वथेति विश्व था। इमथा ज्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठताति-मिमथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिमिमथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्ब-र्हिषदम्[1]। इमथेतीम था[2]। ज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठ-तातिम्बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदꣳ स्वर्व्विदम्बर्हिसदञ्ज्येष्ठतातिञ्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम्। ज्ज्येष्ठतातिमिति ज्ज्येष्ठ तातिम्। बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदꣳ स्वर्व्विदम्बर्हिस-दम्बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम्। बर्हिसदमिति बर्हि सदम्। स्वर्व्विदमिति स्वः व्विदम्॥ प्रतीचीनँव्वृजनँव्वृजनम्प्रतीचीनम्प्रतीचीनँव्वृजनन्दोहसे दोहसे व्वृजनम्प्रतीचीन-

---

[1]. करेफाभ्यां च(वा.प्रा.३.५८) इस सूत्र के अनुसार बर्हिसदम् पद में रेफ से वाद में स्थित सकार षकार होता है।

[2]. प्रत्नपूर्वविश्वेमर्तुभ्यस्था (वा. प्रा. ५.१२) प्रस्तुत सूत्र के अनुसार इस कण्डिका में प्रत्न, पूर्व, विश्व एवं इम परे स्थित था प्रत्यय को पृथक् किया जाता है।

म्प्रतीची॒नँव्वृजनन्दोहसे। व्वृजनन्दोहसे दोहसे व्वृजनँव्वृजनन्दोहसे॒ धुनि॒न्धुनि-
न्दोहसे व्वृजनँव्वृजनन्दोहसे॒ धुनिम्। दो॒ह॒से॒ धुनि॒न्धुनिन्दोहसे दोहसे॒ धुनिमा॒शु-
मा॒शुन्धुनिन्दोहसे दोहसे॒ धुनिमा॒शुम्। धुनिमा॒शुमा॒शुन्धुनि॒न्धुनिमा॒शुञ्जयन्त॒-
ञ्जयन्तमा॒शुन्धुनि॒न्धुनिमा॒शुञ्जयन्तम्। आ॒शुञ्जयन्त॒ञ्जयन्तमा॒शुमा॒शुञ्जयन्त॒म-
न्न्वनु॒ जयन्तमा॒शुमा॒शुञ्जयन्त॒मनु॑। जयन्त॒मन्न्वनु॒ जयन्त॒ञ्जयन्त॒मनु॒ यासु॒
यास्वनु॒ जयन्त॒ञ्जयन्त॒मनु यासु॑। अनु॒ यासु॒ यास्वन्न्वनु॒ यासु॒ व्वर्द्धसे॒ व्वर्द्धसे॒ यास्व-
न्न्वनु॒ यासु॒ व्वर्द्धसे। यासु॒ व्वर्द्धसे॒ व्वर्द्धसे॒ यासु॒ यासु॒ व्वर्द्धसे। व्वर्द्धस॒ऽ इति॒ वर्द्धसे ॥
शण्डाय त्वा त्वा॒ शण्डाय॒ शण्डाय त्वा व्वी॒रताँव्वी॒रतान्त्वा॒ शण्डाय॒ शण्डाय त्वा
व्वी॒रताम्[1]। त्वा॒ व्वी॒रताँव्वी॒रतान्त्वा त्वा व्वी॒रताम्पाहि पाहि व्वी॒रतान्त्वा त्वा
व्वी॒रताम्पाहि। व्वी॒रताम्पाहि पाहि व्वी॒रताँव्वी॒रताम्पा॒ह्यपमृष्टोपमृष्टः पाहि व्वी॒रताँ-
व्वी॒रताम्पा॒ह्यपमृष्टः। पा॒ह्यपमृ॒ष्टोपमृष्टः पाहि पा॒ह्यपमृष्ट॒ः शण्ड॒ः शण्डोपमृष्टः
पाहि पा॒ह्यपमृष्ट॒ः शण्डः॑। अपमृष्ट॒ः शण्ड॒ः शण्डोपमृ॒ष्टोपमृष्ट॒ः शण्डो दे॒वा
दे॒वाः शण्डोपमृ॒ष्टोपमृष्ट॒ः शण्डो दे॒वाः। अपमृष्ट॒ऽ इत्यप मृष्टः। शण्डो दे॒वा
दे॒वाः शण्ड॒ः शण्डो दे॒वास्त्वा त्वा दे॒वाः शण्ड॒ः शण्डो दे॒वास्त्वा। दे॒वास्त्वा त्वा
दे॒वा दे॒वास्त्वा शु॒क्र॒पाः शुक्र॒पास्त्वा दे॒वा दे॒वास्त्वा शु॒क्र॒पाः। त्वा॒ शु॒क्र॒पाः
शुक्र॒पास्त्वा त्वा शु॒क्र॒पाः प्प्र प्प्र शुक्र॒पास्त्वा त्वा शु॒क्र॒पाः प्प्र। शु॒क्र॒पाः प्प्र प्प्र
शुक्र॒पाः शुक्र॒पाः प्प्र णयन्तु नयन्तु॒ प्प्र शुक्र॒पाः शुक्र॒पाः प्प्र णयन्तु। शु॒क्र॒पाऽ
इति॑ शु॒क्र पाः। प्र णयन्तु नयन्तु॒ प्प्र प्प्र णय॒न्त्वनाधृ॒ष्टानाधृष्टा नयन्तु॒ प्प्र प्प्र
णय॒न्त्वनाधृष्टा। न॒य॒न्त्वनाधृ॒ष्टानाधृष्टा नयन्तु नय॒न्त्वनाधृष्टास्य॒स्यनाधृष्टा
नयन्तु नय॒न्त्वनाधृ॒ष्टासि। अनाधृष्टास्य॒स्यनाधृ॒ष्टानाधृष्टासि। अ॒सीत्त्यसि॥११॥

---

[1]. स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से शण्डाय इस पद में प्रतीयमान णकार की द्विरुक्ति स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) से बाधित होती है।

सुवीरो वीरान्वीरान्त्सुवीरः सुवीरो वीरान्प्रजनयन्प्रजनयन्वीरान्त्सु-
वीरः सुवीरो वीरान्प्रजनयन्। सुवीरऽ इति सु वीरः। वीरान्प्रजनयन्प्रजन-
यन्वीरान्वीरान्प्रजनयन्परि परि प्रजनयन्वीरान्वीरान्प्रजनयन्परि। प्रजन-
यन्परि परि प्रजनयन्प्रजनयन्परीहीहि परि प्रजनयन्प्रजनयन्परीहि। प्रजन-
यन्निति प्र जनयन्। परीहीहि परि परीह्यभ्यभीहि परि परीह्यभि।
इह्यभ्यभीहीह्यभि रायो रायोभीहीह्यभि रायः। अभि रायो रायोभ्यभि
रायस्पोषेण पोषेण रायोभ्यभि रायस्पोषेण[1]। रायस्पोषेण पोषेण रायो
रायस्पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण रायो रायस्पोषेण यजमानम्। पोषेण
यजमानँय्यजमानम्पोषेण पोषेण यजमानम्। यजमानमिति यजमानम्॥
सञ्जग्ग्मानो दिवा दिवा सञ्जग्ग्मानः सञ्जग्ग्मानो दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा
सञ्जग्ग्मानः सञ्जग्ग्मानो दिवा पृथिव्या[2]। सञ्जग्ग्मानऽ इति सम् जग्ग्मानः।
दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रः पृथिव्या दिवा दिवा
पृथिव्या शुक्रः। पृथिव्या शुक्रः शुक्रः पृथिव्या पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा
शुक्रशोचिषा शुक्रः पृथिव्या पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा। शुक्रः शुक्रशोचिषा
शुक्रशोचिषा शुक्रः शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तो निरस्तः शुक्रशोचिषा शुक्रः
शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः। शुक्रशोचिषा निरस्तो निरस्तः शुक्रशोचिषा
शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शण्डो निरस्तः शुक्रशोचिषा शुक्रशोचिषा
निरस्तः शण्डः। शुक्रशोचिषेति शुक्र शोचिषा। निरस्तः शण्डः शण्डो
निरस्तो निरस्तः शण्डः शुक्रस्य शुक्रस्य शण्डो निरस्तो निरस्तः शण्डः
शुक्रस्य। निरस्तऽ इति निः अस्तः। शण्डः शुक्रस्य शुक्रस्य शण्डः शण्डः

1. रायः सहसः पोषपुत्रयोः (वा. प्रा. ३.२५) पोष एवं पुत्र परे होने पर क्रमशः रायः एवं सहसः का विसर्जनीय सकार हो जाता है।
2. वा. प्रा. ४.२८. के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

शुक्रस्याधिष्ठानमधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शण्डः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानम्। शुक्रस्याधिष्ठानमधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शुक्रस्याधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानꣳ शुक्रस्य शुक्रस्याधिष्ठानमसि। अधिष्ठानमस्यस्यधिस्त्थानमधिष्ठानमसि। अधिस्त्थानमित्यधि स्थानम्[1]। असीत्यसि॥१२॥

अच्छिन्नस्य ते तेच्छिन्नस्याच्छिन्नस्य ते देव देव तेच्छिन्नस्याच्छिन्नस्य ते देव। ते देव देव ते ते देव सोम सोम देव ते ते देव सोम। देव सोम सोम देव देव सोम सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य सोम देव देव सोम सुवीर्य्यस्य। सोम सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य सोम सोम सुवीर्य्यस्य रायो रायः सुवीर्य्यस्य सोम सोम सुवीर्य्यस्य रायः। सुवीर्य्यस्य रायो रायः सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य रायस्प्पोषस्य पोषस्य रायः सुवीर्य्यस्य सुवीर्य्यस्य रायस्प्पोषस्य। सुवीर्य्यस्येति सु वीर्य्यस्य। रायस्प्पोषस्य पोषस्य रायो रायस्प्पोषस्य ददितारो ददितारः पोषस्य रायो रायस्प्पोषस्य ददितारः। पोषस्य ददितारो ददितारः पोषस्य पोषस्य ददितारः स्याम स्याम ददितारः पोषस्य पोषस्य ददितारः स्याम। ददितारः स्याम स्याम ददितारो ददितारः स्याम। स्यामेति स्याम॥ सा प्प्रथमा प्प्रथमा सा सा प्प्रथमा सँस्कृतिः सँस्कृतिः प्प्रथमा सा सा प्प्रथमा सँस्कृतिः[2]। प्रथमा सँस्कृतिः सँस्कृतिः प्प्रथमा प्प्रथमा सँस्कृतिर्व्विश्ववारा व्विश्ववारा सँस्कृतिः प्प्रथमा प्प्रथमा सँस्कृतिर्व्विश्ववारा। सँस्कृतिर्व्विश्ववारा व्विश्ववारा सँस्कृतिः सँस्कृतिर्व्विश्ववारा स स व्विश्ववारा सँस्कृतिः सँस्कृतिर्व्विश्ववारा सः। व्विश्ववारा स स व्विश्ववारा व्विश्ववारा स प्प्रथमः प्प्रथमः स व्विश्ववारा व्विश्ववारा स प्प्रथमः

[1]. वा.प्रा.४.१९३. के अनुसार यहाँ स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये।

[2]. सम् कृतिः यहाँ समन्तः पदे कखपफेष्वनूष्मपरेषु (वा. प्रा. ४.८) इस सूत्र से मकार सकार हो जाता है तथा उपधा का अनुनासिकत्व। अनुनासिकत्व वर्ण का धर्म है, अनुस्वार न होने से यहाँ ꣳकार की सम्भावना नहीं है। वा. प्रा. ५.४३. के अनुसार उपधाभूत स्वर के अनुनासिक होने से यह सँस्कृतिः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

। व्वि॒श्ववा॒रेति॑ वि॒श्व व्वा॑रा। स प्प्र॑थ॒मः प्प्र॑थ॒मः स स प्प्र॑थ॒मो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः प्प्रथ॒मः स स प्प्र॑थ॒मो व्वरु॑णः। प्र॒थ॒मो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः प्प्रथ॒मः प्प्र॑थ॒मो व्वरु॑णो मि॒त्रो मि॒त्रो व्वरु॑णः प्प्रथ॒मः प्प्र॑थ॒मो व्वरु॑णो मि॒त्रः। व्वरु॑णो मि॒त्रो मि॒त्रो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णो मि॒त्रोऽ अ॒ग्निर॒ग्निर्म्मि॒त्रो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णो मि॒त्रोऽ अ॒ग्निः। मि॒त्रोऽ अ॒ग्निर॒ग्निर्म्मि॒त्रो मि॒त्रोऽ अ॒ग्निः। अ॒ग्निरित्य॒ग्निः ॥१३॥

स प्प्र॑थ॒मः प्प्र॑थ॒मः स स प्प्र॑थ॒मो बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ः प्प्रथ॒मः स स प्प्र॑थ॒मो बृह॒स्प्पति॑ः। प्र॒थ॒मो बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑ः प्प्रथ॒मः प्प्र॑थ॒मो बृह॒स्प्पति॑श्चिकि॒त्त्वाँश्चि॑कि॒त्त्वान्बृह॒स्प्पति॑ः प्प्रथ॒मः प्प्र॑थ॒मो बृह॒स्प्पति॑श्चिकि॒त्त्वान्। बृह॒स्प्पति॑श्चिकि॒त्त्वाँश्चि॑कि॒त्त्वान्बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑श्चिकि॒त्त्वाँस्तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ चिकि॒त्वान्बृह॒स्प्पति॒र्बृह॒स्प्पति॑श्चिकि॒त्त्वाँस्तस्म्मै॑। चि॒कि॒त्त्वाँस्तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ चिकि॒त्वाँश्चि॑कि॒त्त्वाँस्तस्म्मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ तस्म्मै॑ चिकि॒त्त्वाँश्चि॑कि॒त्त्वाँस्तस्म्मा॒ऽ इन्द्रा॑य। तस्म्मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ तस्म्मै॒ तस्म्मा॒ऽ इन्द्रा॑य सु॒तꣳ सु॒तमिन्द्रा॑य॒ तस्म्मै॒ तस्म्मा॒ऽ इन्द्रा॑य सु॒तम्। इन्द्रा॑य सु॒तꣳ सु॒तमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य सु॒तमा जु॑होत जु॒हो॒ता सु॒तमिन्द्रा॒येन्द्रा॑य सु॒तमा जु॑होत। सु॒तमा जु॑होत जु॒हो॒ता सु॒तꣳ सु॒तमा जु॑होत॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जु॒हो॒ता सु॒तꣳ सु॒तमा जु॑होत॒ स्वाहा॑। आ जु॑होत। जु॒हो॒त॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ जुहोत जुहोत॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ तृ॒म्पन्तु॒ होत्रा॒ होत्रा॑स्तृ॒म्पन्तु॑ तृ॒म्पन्तु॒ होत्रा॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॒ होत्रा॑स्तृ॒म्पन्तु॑ तृ॒म्पन्तु॒ होत्रा॒ मद्ध्व॑ः[1]। होत्रा॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॒ होत्रा॒ होत्रा॒ मद्ध्वो॒ या या मद्ध्वो॒ होत्रा॒ होत्रा॒ मद्ध्वो॒ याः। मद्ध्वो॒ या या मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॒ याः स्विं॑ष्टा॒ः स्वि॒ष्टा॒ या मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॒ याः स्विं॑ष्टाः। याः स्विं॑ष्टा॒ः स्वि॒ष्टा॒ या याः स्विं॑ष्टा॒ या याः स्विं॑ष्टा॒ या याः स्विं॑ष्टा॒ याः। स्विं॑ष्टा॒ या याः

[1]. तृम्पन्तु यहाँ वा. प्रा. ३.९३. के अनुसार नकार प्रकृति भाव से रहता है। होत्रास्तृम्पन्तु यहाँ ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से सकार से परे तकार का द्वित्व प्राप्त है परन्तु परवर्ती सूत्र ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११२) से द्वित्व का निषेध है।

स्विष्टाः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुप्रीता याः स्विष्टाः स्विष्टा याः सुप्रीताः। स्विष्टाऽ इति सु इष्टाः। याः सुप्रीताः सुप्रीता या याः सुप्रीताः सुहुताः सुहुताः सुप्रीता या याः सुप्रीताः सुहुताः। सुप्रीताः सुहुताः सुहुताः सुप्रीताः सुप्रीताः सुहुता यद्यत्सुहुताः सुप्रीताः सुप्रीताः सुहुता यत्। सुप्रीताऽ इति सु प्रीताः। सुहुता यद्यत्सुहुताः सुहुता यत्स्वाहा स्वाहा यत्सुहुताः सुहुता यत्स्वाहा। सुहुताऽ इति सु हुताः। यत्स्वाहा स्वाहा यद्यत्स्वाहायाडयाट्ट् स्वाहा यद्यत्स्वाहायाट्। स्वाहायाडयाट्ट् स्वाहा स्वाहायाडग्नीदग्नीडयाट्ट् स्वाहा स्वाहायाडग्नीत्। अयाडग्नीदग्नीदयाडयाडग्नीत्। अग्नीदित्यग्नीत्॥१४॥

अयँव्वेनो व्वेनोऽयमयँव्वेनश्चोदयच्चोदयद्वेनोऽयमयँव्वेनश्चोदयत्। व्वेनश्चोदयच्चोदयद्वेनो व्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भाः पृश्निगर्भाश्चोदयद्वेनो व्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भाः। चोदयत्पृश्निगर्भाः पृश्निगर्भाश्चोदयच्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निगर्भाश्चोदयच्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुः। पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निगर्भाः पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुः पृश्निगर्भाः पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसः। पृश्निगर्भाऽ इति पृश्नि गर्भाः। ज्योतिर्ज्जरायू रजसो रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने व्विमाने रजसो ज्ज्योतिर्ज्जरायुर्ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने। ज्योतिर्ज्जरायुरिति ज्योतिः जरायुः। रजसो व्विमाने व्विमाने रजसो रजसो व्विमाने। व्विमानऽ इति वि माने॥ इममपामपामिममिममपाँ सङ्गमे सङ्गमेपामिममिममपाँ सङ्गमे[1]। अपाँ सङ्गमे सङ्गमेपामपाँ सङ्गमे सूर्य्यस्य

[1]. सङ्गमे अपाम् यहाँ एदोद्भ्यां पूर्वमकारः (वा. प्रा. ४.६२) से अकार पूर्वरूप हो जाता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ (वा. प्रा. ४.६३) से स्वरित स्वर की प्राप्ति है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) इस सूत्र से अभिनिहित नामक स्वरित का विधान है।

सूर्य्यस्य सङ्गमेपामपाꣳ सङ्गमे सूर्य्यस्य। सङ्गमे सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य सङ्गमे सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुꣳ शिशुꣳ सूर्य्यस्य सङ्गमे सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुम्। सङ्गमऽ इति सम् गमे। सूर्य्यस्य शिशुꣳ शिशुꣳ सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य शिशुन्न न शिशुꣳ सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य शिशुन्न। शिशुन्न न शिशुꣳ शिशुन्न विप्प्रा विप्प्रा न शिशुꣳ शिशुन्न विप्प्राः। न विप्प्रा विप्प्रा न न विप्प्रा मतिभिर्म्मतिभिर्विप्प्रा न न विप्प्रा मतिभिः। विप्प्रा मतिभिर्म्मतिभिर्विप्प्रा विप्प्रा मतिभी रिहन्ति रिहन्ति मतिभिर्विप्प्रा विप्प्रा मतिभी रिहन्ति। मतिभी रिहन्ति रिहन्ति मतिभिर्म्मतिभी रिहन्ति। मतिभिरिति मति भिः। रिहन्तीति रिहन्ति॥ मर्ज्जाय त्वा त्वा मर्ज्जाय मर्ज्जाय त्वा। त्वेति त्वा॥१५॥

मनो न न मनो मनो न येषु येषु न मनो मनो न येषु। न येषु येषु न न येषु हवनेषु हवनेषु येषु न न येषु हवनेषु। येषु हवनेषु हवनेषु येषु येषु हवनेषु तिग्ग्मन्तिग्ग्मꣳ हवनेषु येषु येषु हवनेषु तिग्ग्मम्। हवनेषु तिग्ग्मन्तिग्ग्मꣳ हवनेषु हवनेषु तिग्ग्मँविपो विपस्तिग्ग्मꣳ हवनेषु हवनेषु तिग्ग्मँविपः[1]। तिग्ग्मँविपो विपस्तिग्ग्मन्तिग्ग्मँविपः शच्या शच्या विपस्तिग्ग्मन्तिग्ग्मँविपः शच्या[2]। विपः शच्या शच्या विपो विपः शच्या व्वनुथो व्वनुथः शच्या विपो विपः शच्या व्वनुथः। शच्या व्वनुथो व्वनुथः शच्या शच्या व्वनुथो द्रवन्ता द्रवन्ता व्वनुथः शच्या शच्या व्वनुथो द्रवन्ता। व्वनुथो द्रवन्ता द्रवन्ता व्वनुथो व्वनुथो द्रवन्ता। द्रवन्तेति द्रवन्ता॥ आ यो यऽ आ यः शर्य्याभिः शर्य्याभिर्य्यऽ आ यः शर्य्याभिः। यः शर्य्याभिः शर्य्याभिर्य्यो यः शर्य्याभिस्तुविनृम्म्णस्तुविनृम्म्णः

---

1. तिग्मम् विपः यहाँ सवर्णे (वा. प्रा. ४.११२) इस सूत्र से द्वित्व नहीं होता।

2. विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) के अनुसार विपः शच्या यहाँ शाकल्याचार्य के मत से विसर्ग का विकार नहीं होता है।

शर्व्वाँभि॒र्व्वो॑ यः शर्व्वाँभिस्तुविनृ॒म्म्णः। शर्व्वाँभिस्तुविनृ॒म्म्णस्तु॑विनृ॒म्म्णः शर्व्वाँभि॒ः शर्व्वाँभिस्तुविनृ॒म्म्णोऽ अ॑स्यास्य तुविनृ॒म्म्णः शर्व्वाँभि॒ः शर्व्वाँभिस्तुविनृ॒म्म्णोऽ अ॑स्य। तु॒वि॒नृ॒म्म्णोऽ अ॑स्यास्य तुविनृ॒म्म्णस्तु॑विनृ॒म्म्णोऽ अ॒स्याश्श्री॑णी॒ताश्श्री॑णीतास्य तुविनृ॒म्म्णस्तु॑विनृ॒म्म्णोऽ अ॒स्याश्श्री॑णीत। तु॒वि॒नृ॒म्म्णऽ इति॑ तुवि नृ॒म्म्णः। अ॒स्याश्श्री॑णी॒ताश्श्री॑णीतास्या॒स्याश्श्री॑णीता॒दिश॑मा॒दिश॒मश्श्री॑णीतास्या॒स्याश्श्री॑णीता॒दिश॑म्। अश्श्री॑णीता॒दिश॑मा॒दिश॒मश्श्री॑णी॒ताश्श्री॑णीता॒दिश॒ङ्गभ॑स्तौ॒ गभ॑स्तावा॒दिश॒मश्श्री॑णी॒ताश्श्री॑णीता॒दिश॒ङ्गभ॑स्तौ। आ॒दिश॒ङ्गभ॑स्तौ॒ गभ॑स्तावा॒दिश॑मा॒दिश॒ङ्गभ॑स्तौ प्प्र॒जाः प्प्र॒जा गभ॑स्तावा॒दिश॑मा॒दिश॒ङ्गभ॑स्तौ प्प्र॒जाः। आ॒दिश॒मित्या॒ दिश॑म्। गभ॑स्तौ प्प्र॒जाः प्प्र॒जा गभ॑स्तौ॒ गभ॑स्तौ प्प्र॒जाः पा॑हि पाहि प्प्र॒जा गभ॑स्तौ॒ गभ॑स्तौ प्प्र॒जाः पा॑हि। प्र॒जाः पा॑हि पाहि प्प्र॒जाः प्प्र॒जाः पा॒ह्यप॑मृ॒ष्टोप॑मृष्टः पाहि प्प्र॒जाः प्प्र॒जाः पा॒ह्यप॑मृष्टः। प्र॒जाऽ इति॑ प्प्र॒ जाः। पा॒ह्यप॑मृ॒ष्टोप॑मृष्टः पाहि पा॒ह्यप॑मृष्टो॒ मर्क्को॒ मर्क्कोप॑मृष्टः पाहि पा॒ह्यप॑मृष्टो॒ मर्क्कः। अप॑मृष्टो॒ मर्क्को॒ मर्क्कोप॑मृ॒ष्टोप॑मृष्टो॒ मर्क्को दे॒वा दे॒वा मर्क्कोप॑मृ॒ष्टोप॑मृष्टो॒ मर्क्को दे॒वाः। अप॑मृष्ट॒ऽ इत्यप॑ मृष्टः। मर्क्को दे॒वा दे॒वा मर्क्को॒ मर्क्को दे॒वास्त्त्वा॑ त्त्वा दे॒वा मर्क्को॒ मर्क्को दे॒वास्त्त्वा॑। दे॒वास्त्त्वा॑ त्त्वा दे॒वा दे॒वास्त्त्वा॑ मन्थि॒पा म॑न्थि॒पास्त्त्वा॑ दे॒वा दे॒वास्त्त्वा॑ मन्थि॒पाः। त्वा॒ म॒न्थि॒पा म॑न्थि॒पास्त्त्वा॑ त्त्वा मन्थि॒पाः प्प्र प्प्र म॑न्थि॒पास्त्त्वा॑ त्त्वा मन्थि॒पाः प्प्र[1]। म॒न्थि॒पाः प्प्र प्प्र म॑न्थि॒पा म॑न्थि॒पाः प्प्र ण॑यन्तु नयन्तु॒ प्प्र म॑न्थि॒पा म॑न्थि॒पाः प्प्र ण॑यन्तु[2]। म॒न्थि॒पाऽ इति॑ मन्थि॒ पाः। प्र ण॑यन्तु नयन्तु॒ प्प्र प्प्र ण॑य॒न्त्वना॑धृ॒ष्टाना॑धृष्टा नयन्तु॒ प्प्र प्प्र ण॑य॒न्त्वना॑धृष्टा।

---

[1]. मन्थिपाःप्प यहाँ पर व्यञ्जन होने के कारण स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र (वा. प्रा. ४.१०१) इस सूत्र से विसर्जनीय का द्वित्व प्राप्त है, जिसका विसर्जनीयः (वा. प्रा. ४.११६) इस सूत्र से निषेध होता है।

[2]. प्र नयन्तु यहाँ प्र नेतिनुदातिह्निनोमीनाम्(वा.प्रा.३.८८) के अनुसार प्र से परवर्ती नकार णकार होता है।

नयन्त्वनाधृष्टानाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वनाधृष्टास्यस्यनाधृष्टा नयन्तु नयन्त्वना-धृष्टासि। अनाधृष्टास्यस्यनाधृष्टानाधृष्टासि। असीत्यसि॥१६॥

सुप्रजाः प्रजाः प्रजाः सुप्रजाः सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्नप्रजनय-न्प्रजाः सुप्रजाः सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्। सुप्रजाऽ इति सु प्रजाः। प्रजाः प्रजनयन्प्रजनयन्प्रजाः प्रजाः प्रजनयन्परि परि प्रजनयन्प्रजाः प्रजाः प्रजनयन्परि। प्रजाऽ इति प्र जाः। प्रजनयन्परि परि प्रजनयन्प्रज-नयन्परीहीहि परि प्रजनयन्प्रजनयन्परीहि। प्रजनयन्निति प्र जनयन्। परीहीहि परि परीह्यभ्यभीहि परि परीह्यभि। इह्यभ्यभीहीह्यभि रायो रायोभीहीह्यभि रायः। अभि रायो रायोऽभ्यभि रायस्पोषेण पोषेण रायोऽभ्यभि रायस्पोषेण। रायस्पोषेण पोषेण रायो रायस्पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण रायो रायस्पोषेण यजमानम्। पोषेण यजमानँय्यजमानम्पोषेण पोषेण यजमानम्। यजमानमिति यजमानम्॥ सञ्जग्मानो दिवा दिवा सञ्जग्मानः सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा सञ्जग्मानः सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या[1]। सञ्जग्मानऽ इति सम् जग्मानः। दिवा पृथिव्या पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थी पृथिव्या दिवा दिवा पृथिव्या मन्थी। पृथिव्या मन्थी मन्थी पृथिव्या पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा मन्थी पृथिव्या पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा। मन्थी मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा मन्थी मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थी मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तः। मन्थिशोचिषा निरस्तो निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मर्को निरस्तो मन्थिशोचिषा मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्कः। मन्थिशोचिषेति मन्थि शोचिषा। निरस्तो मर्को मर्को निरस्तो निरस्तो मर्को

[1]. वा.प्रा.४.२८. के अनुसार यहाँ पृथिव्या पद स्वरान्त है।

म॒न्थिनो॑ म॒न्थिनो॒ मर्क्को॒ निर॑स्तो॒ निर॑स्तो॒ मर्क्को॑ म॒न्थिन॑ः। निर॑स्त॒ऽ इति॒ निः अ॑स्तः। मर्क्को॑ म॒न्थिनो॑ म॒न्थिनो॒ मर्क्को॒ मर्क्को॑ म॒न्थिनो॑धि॒ष्ठान॑मधि॒स्त्था-न॑म्म॒न्थिनो॒ मर्क्को॒ मर्क्को॑ म॒न्थिनो॑धि॒ष्ठान॑म्। म॒न्थिनो॑धि॒ष्ठान॑मधि॒स्त्थान॑-म्म॒न्थिनो॑ म॒न्थिनो॑धि॒ष्ठान॑मस्यस्यधि॒स्त्थान॑म्म॒न्थिनो॑ म॒न्थिनो॑धि॒ष्ठान॑मसि। अ॒धि॒ष्ठान॑मस्यस्यधि॒स्त्थान॑मधि॒ष्ठान॑मसि। अ॒धि॒स्त्थान॒मित्य॑धि॒ स्थान॑म्। अ॒सीत्य॑सि॥१७॥

ये दे॑वासो देवासो॒ ये ये दे॑वासो दि॒वि दि॒वि दे॑वासो॒ ये ये दे॑वासो दि॒वि। दे॒वा॒सो॒ दि॒वि दि॒वि दे॑वासो देवासो दि॒व्येका॑द॒शैका॑दश दि॒वि दे॑वासो देवासो दि॒व्ये-का॑दश। दि॒व्येका॑द॒शैका॑दश दि॒वि दि॒व्येका॑दश॒ स्त्थ स्त्थैका॑दश दि॒वि दि॒व्येका॑द-श॒ स्त्थ[1]। एका॑दश॒ स्त्थ स्त्थैका॑द॒शैका॑दश॒ स्त्थ पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याꣳ स्त्थैका॑द॒-शैका॑दश॒ स्त्थ पृ॑थि॒व्याम्। स्थ पृ॑थि॒व्याम्पृ॑थि॒व्याꣳ स्थ स्त्थ पृ॑थि॒व्यामद्ध्यधि॑ पृथि॒व्याꣳ स्थ स्त्थ पृ॑थि॒व्यामधि॑। पृ॒थि॒व्यामद्ध्यधि॑ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यामद्ध्येका॑द॒-शैका॑द॒शाधि॑ पृथि॒व्याम्पृ॑थि॒व्यामद्ध्येका॑दश। अद्ध्येका॑द॒शैका॑द॒शाद्ध्यद्ध्यै॑कादश॒ स्त्थ स्त्थैका॑द॒शाद्ध्यद्ध्येका॑दश॒ स्त्थ। एका॑दश॒ स्त्थ स्त्थैका॑द॒शैका॑दश॒ स्त्थ[2]। स्थेति॒ स्त्थ॥ अ॒प्प्सु॒क्षितो॑ महि॒ना म॑हि॒नाप्प्सु॒क्षितो॑प्प्सु॒क्षितो॑ महि॒नैका॑द॒शै-का॑दश महि॒नाप्प्सु॒क्षितो॑प्प्सु॒क्षितो॑ महि॒नैका॑दश। अ॒प्प्सु॒क्षित॒ऽ इत्य॑प्प्सु॒ क्षित॑ः। म॒हि॒नैका॑द॒शैका॑दश महि॒ना म॑हि॒नैका॑दश॒ स्त्थ स्त्थैका॑दश महि॒ना म॑हि॒नैका॑दश॒ स्त्थ। एका॑दश॒ स्त्थ स्त्थैका॑द॒शैका॑दश॒ स्त्थ ते ते स्त्थैका॑द॒शैका॑द-श॒ स्त्थ ते। स्थ ते ते स्त्थ स्त्थ ते दे॑वासो देवास॒स्त्ते स्त्थ स्त्थ ते दे॑वासः। ते

1. एकादश एकादश तथा स्थ एकादश दोनों स्थलों में अयैकमुत्तरश्चश्च(वा.प्रा.४.५२) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) के अनुसार सन्ध्यक्षर ए बाद में होने पर अकार परवर्ती सन्ध्यक्षर के सहित ऐकार होता है।

2. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार एकादश पद का पृथक्करण नहीं होता है।

देवासो देवासस्ते ते देवासो यज्ञँय्यज्ञन्देवासस्ते ते देवासो यज्ञम्। देवासो यज्ञँय्यज्ञन्देवासो देवासो यज्ञमिममिमँय्यज्ञन्देवासो देवासो यज्ञमिमम्। यज्ञमिममिमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमञ्जुषद्धञ्जुषद्धमिमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमञ्जुषद्धम्। इमञ्जुषद्धञ्जुषद्धमिममिमञ्जुषद्धम्। जुषद्धमिति जुषद्धम्॥१८॥

आग्ग्रयणोस्यस्याग्ग्रयणऽ आग्ग्रयणोसि स्वाग्ग्रयणः स्वाग्ग्रयणोस्याग्ग्रयणऽ आग्ग्रयणोसि स्वाग्ग्रयणः[1]। असि स्वाग्ग्रयणः स्वाग्ग्रयणोस्यसि स्वाग्ग्रयणः । स्वाग्ग्रयणऽ इति सु आग्ग्रयणः॥ पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञम्पाहि। यज्ञम्पाहि पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि यज्ञपतिँय्यज्ञपतिम्पाहि यज्ञँय्यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्। पाहि यज्ञपतिँय्यज्ञपतिम्पाहि पाहि यज्ञपतिँव्विष्णुर्व्विष्णुर्य्यज्ञपतिम्पाहि पाहि यज्ञपतिँव्विष्णुः। यज्ञपतिँव्विष्णुर्व्विष्णुर्य्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँव्विष्णुस्त्वान्त्वाँव्विष्णुर्य्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिँव्विष्णुस्त्वाम्। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। व्विष्णुस्त्वान्त्वाँव्विष्णुर्व्विष्णुस्त्वामिन्द्रियेणेन्द्रियेण त्वाँव्विष्णुर्व्विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण। त्वामिन्द्रियेणेन्द्रियेण त्वान्त्वामिन्द्रियेण पातु पात्विन्द्रियेण त्वान्त्वामिन्द्रियेण पातु। इन्द्रियेण पातु पात्विन्द्रियेणेन्द्रियेण पातु व्विष्णुँव्विष्णुम्पात्विन्द्रियेणेन्द्रियेण पातु व्विष्णुम्। पातु व्विष्णुँव्विष्णुम्पातु पातु व्विष्णुन्त्वन्त्वँव्विष्णुम्पातु पातु व्विष्णुन्त्वम्। व्विष्णुन्त्वन्त्वँव्विष्णुँव्विष्णुन्त्वम्पाहि पाहि त्वँव्विष्णुँव्विष्णुन्त्वम्पाहि। त्वम्पाहि पाहि त्वन्त्वम्पाह्यभ्यभि पाहि त्वन्त्वम्पाह्यभि[2]। पाह्यभ्यभि पाहि पाह्यभि सवनानि सवनान्यभि पाहि

---

[1]. ए ओ आभ्यामुदात्ताभ्यामकारो नीच एव च। लुप्यते सन्धिकार्ये यत्तं चाभिनिहितं विदुः॥– व. शि. ६०.

[2]. अभि अभि यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से इकार यकार होता है। उदात्तस्यान्तस्थीभावे स्वरितं परमनुदात्तम्(वा.प्रा.४.४९) इस सूत्र से परवर्ती अनुदात्त स्वरित होता है। युवर्णौ यवौ क्षैप्रः(वा.प्रा.१.११५) यह सूत्र क्षैप्र नामक स्वरित का विधान करता है।

पाह्य॒भि सव॑नानि। अ॒भि सव॑नानि॒ सव॑नान्य॒भ्य॒भि सव॑नानि पाहि पाहि॒ सव॑नान्य॒भ्य॒भि सव॑नानि पाहि। सव॑नानि पाहि पाहि॒ सव॑नानि॒ सव॑नानि पाहि। पा॒हीति॑ पाहि॥१९॥

सोम॑ः पवते पवते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते॒ सोम॑ः[1]। प॒व॒ते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते पवते॒ सोम॑ः पवते पवते॒ सोम॑ः पवते पवते॒ सोम॑ः पवते। सोम॑ः पवते पवते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते॒ऽस्मा ऽअ॒स्मै प॑वते॒ सोम॒ः सोम॑ः पवते॒ऽस्मै[2]। प॒व॒ते॒ऽस्मा ऽअ॒स्मै प॑वते पवते॒ऽस्मै ब्रह्म॑णे॒ ब्रह्म॑णे॒ऽस्मै प॑वते पवते॒ऽस्मै ब्रह्म॑णे। अ॒स्मै ब्रह्म॑णे॒ ब्रह्म॑णे॒ऽस्मा ऽअ॒स्मै ब्रह्म॑णे क्ष॒त्राय॑ क्ष॒त्राय॒ ब्रह्म॑णे॒ऽस्मा ऽअ॒स्मै ब्रह्म॑णे क्ष॒त्राय॑। ब्रह्म॑णे क्ष॒त्राय॑ क्ष॒त्राय॒ ब्रह्म॑णे॒ ब्रह्म॑णे क्ष॒त्राय॑ सुन्व॒ते सु॑न्व॒ते क्ष॒त्राय॒ ब्रह्म॑णे॒ ब्रह्म॑णे क्ष॒त्राय॑ सुन्व॒ते। क्ष॒त्राय॑ सुन्व॒ते सु॑न्व॒ते क्ष॒त्राय॑ क्ष॒त्राय॑ सुन्व॒ते यज॑मानाय॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते क्ष॒त्राय॑ क्ष॒त्राय॑ सुन्व॒ते यज॑मानाय। सु॒न्व॒ते यज॑मानाय॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते सु॑न्व॒ते यज॑मानाये॒षऽ इ॒षे यज॑मानाय सुन्व॒ते सु॑न्व॒ते यज॑मानाये॒षे। यज॑माना-ये॒षऽ इ॒षे यज॑मानाय॒ यजमानाये॒षऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षे यज॑मानाय॒ यज॑माना-ये॒षऽ ऊ॒र्ज्जे। इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षऽ इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जे॒द्द्भ्यो॒द्द्भ्यऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षऽ इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जे॒द्द्भ्यः। ऊ॒र्ज्जे॒द्द्भ्यो॒द्द्भ्यऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे॒द्द्भ्यऽ ओष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यो॒-द्द्भ्यऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे॒द्द्भ्यऽ ओष॑धीभ्यः। अ॒द्द्भ्यऽ ओष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यो॒-द्द्भ्यो॒द्द्भ्यऽ ओष॑धीभ्यो॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒मोष॑धीभ्यो॒द्द्भ्यो॒-द्द्भ्यऽ ओष॑धीभ्यो॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म्। अ॒द्द्भ्यऽ इत्य॒त् भ्यः। ओष॑धीभ्यो॒

1. सोम॑ः सोम॑ः यहाँ निहितमुदात्तस्वरितपरम्(वा.प्रा.४.१३८) इस सूत्र से उदात बाद में होने से पूर्ववर्ती स्वरित अनुदात होता है।

2. पूर्ववाननुदेशः (वा. प्रा. २.७) के अनुसार पूर्ववर्ती पदार्थ का निर्देश करने वाला सर्वनाम पद अनुदात होता है। यहाँ अ॒स्मै पद पूर्ववर्ती पदार्थ का निर्देश नहीं करता है। अतः सर्वानुदात नहीं है।

द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒मोष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यो॒ द्यावा॑पृथि॒वी-भ्या॑ᳪ सु॒भू॒ताय॑ सु॒भू॒ताय॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒मोष॑धीभ्य॒ऽ ओष॑धीभ्यो॒ द्यावा॑पृ-थि॒वीभ्या॑ᳪ सु॒भू॒ताय॑। द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑ᳪ सु॒भू॒ताय॑ सु॒भू॒ताय॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒-न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑ᳪ सु॒भू॒ताय॒ व्विश्वे॑भ्यो॒ व्विश्वे॑भ्यः सु॒भू॒ताय॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒-न्द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑ᳪ सु॒भू॒ताय॒ व्विश्वे॑भ्यः। सु॒भू॒ताय॒ व्विश्वे॑भ्यो॒ व्विश्वे॑भ्यः सु॒भू॒ताय॑ सु॒भू॒ताय॒ व्विश्वे॑भ्यस्त्वा त्वा॒ व्विश्वे॑भ्यः सु॒भू॒ताय॑ सु॒भू॒ताय॒ व्विश्वे॑भ्यस्त्वा। सु॒भू॒ताये॒ति॑ सु भू॒ताय॑। व्विश्वे॑भ्यस्त्वा त्वा॒ व्विश्वे॑भ्यो॒ व्विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वा॒ व्विश्वे॑भ्यो॒ व्विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्य॑ः। त्वा॒ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑स्त्वा त्वा दे॒वेभ्य॑ः। दे॒वेभ्य॒ऽ इति॑ दे॒वेभ्य॑ः[1]॥२०॥

इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा बृ॒हद्व॑ते बृ॒हद्व॑ते॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा बृ॒हद्व॑ते। त्वा॒ बृ॒हद्व॑ते बृ॒हद्व॑ते त्वा त्वा बृ॒हद्व॑ते॒ व्वय॑स्वते॒ व्वय॑स्वते बृ॒हद्व॑ते त्वा त्वा बृ॒हद्व॑ते॒ व्वय॑स्वते। बृ॒हद्व॑ते॒ व्वय॑स्वते॒ व्वय॑स्वते बृ॒हद्व॑ते बृ॒हद्व॑ते॒ व्वय॑स्वत॒ऽ उक्था॒व्य॒मुक्था॒व्यँ॒ व्वय॑स्वते बृ॒हद्व॑ते बृ॒हद्व॑ते॒ व्वय॑स्वत॒ऽ उक्था॒व्य॒म्। बृ॒हद्व॑त॒ऽ इति॑ बृ॒हत् व्व॑ते। व्वय॑स्व-त॒ऽ उक्था॒व्य॒मुक्था॒व्यँ॒व्वय॑स्वते॒ व्वय॑स्वत॒ऽ उक्था॒व्य॒ङ्गृह्णा॑मि गृ॒ह्णाम्म्युक्था॒व्यँ॒व्वय॑-स्वते॒ व्वय॑स्वत॒ऽ उक्था॒व्य॒ङ्गृह्णामि। उ॒क्था॒व्य॒ङ्गृह्णा॑मि गृ॒ह्णाम्म्युक्था॒व्य॒मुक्था॒व्य॒-ङ्गृह्णामि। उ॒क्था॒व्य॒मित्त्यु॑क्थ अ॒व्य॒म्। गृ॒ह्णा॒मीति॑ गृ॒ह्णामि॥ यत्ते॑ ते॒ यद्यत्त॑ऽ इन्द्रेन्द्र ते॒ यद्यत्त॑ऽ इन्द्र। त॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ ते॒ त॒ऽ इ॒न्द्र॒ बृ॒हद् बृ॒हदि॑न्द्र ते त॒ऽ इन्द्र बृ॒हत्। इ॒न्द्र॒ बृ॒हद् बृ॒हदि॑न्द्रेन्द्र बृ॒हद्वयो॒ व्वयो॑ बृ॒हदि॑न्द्रेन्द्र बृ॒हद्वय॑ः। बृ॒हद्वयो॒ व्वयो॑ बृ॒हद् बृ॒हद्वय॒स्तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ व्वयो॑ बृ॒हद् बृ॒हद्वय॒स्तस्म्मै॑। व्वय॒स्तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ व्वयो॒ व्वय॒स्तस्म्मै॑ त्वा त्वा॒ तस्म्मै॒ व्वयो॒ व्वय॒स्तस्म्मै॑ त्वा। तस्म्मै॑ त्वा त्वा॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ त्वा॒ व्विष्ण्ण॑वे॒ व्विष्ण्ण॑वे त्वा॒ तस्म्मै॒ तस्म्मै॑ त्वा॒ व्विष्ण्ण॑वे। त्वा॒ व्विष्ण्ण॑वे॒

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार देवेभ्यः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

व्रिष्णवे त्वा त्वा व्रिष्णवे त्वा त्वा व्रिष्णवे त्वा त्वा व्रिष्णवे त्वा। व्रिष्णवे त्वा त्वा व्रिष्णवे व्रिष्णवे त्वोक्थेभ्यः उक्थेभ्यस्त्वा व्रिष्णवे व्रिष्णवे त्वोक्थेभ्यः। त्वोक्थेभ्यऽ उक्थेभ्यस्त्वा त्वोक्थेभ्यस्त्वा त्वोक्थेभ्यस्त्वा त्वोक्थेभ्यस्त्वा। उक्थेभ्यस्त्वा त्वोक्थेभ्यऽ उक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वोक्थेभ्यऽ उक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यः। त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यस्त्वा। देवेभ्यस्त्वा त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा देवाव्यन्देवाव्यन्त्वा देवेभ्यो देवेभ्यस्त्वा देवाव्यम्। त्वा देवाव्यन्देवाव्यन्त्वा त्वा देवाव्यँ्यज्ञस्य यज्ञस्य देवाव्यन्त्वा त्वा देवाव्यँ्यज्ञस्य। देवाव्यँ्यज्ञस्य यज्ञस्य देवाव्यन्देवाव्यँ्यज्ञस्यायुषऽ आयुषे यज्ञस्य देवाव्यन्देवाव्यँ्यज्ञस्यायुषे। देवाव्यमिति देव अव्यम्। यज्ञस्यायुषऽ आयुषे यज्ञस्य यज्ञस्यायुषे गृह्णामि गृह्णाम्यायुषे यज्ञस्य यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। आयुषे गृह्णामि गृह्णाम्यायुषऽ आयुषे गृह्णामि मित्रावरुणाभ्याम्मित्रावरुणाभ्याङ्गृह्णाम्यायुषऽ आयुषे गृह्णामि मित्रावरुणाभ्याम्[1]। गृह्णामि मित्रावरुणाभ्याम्मित्रावरुणाभ्याङ्गृह्णामि गृह्णामि मित्रावरुणाभ्यामिन्द्रायेन्द्राय मित्रावरुणाभ्याङ्गृह्णामि गृह्णामि मित्रावरुणाभ्यामिन्द्राय॥२१॥

मित्रावरुणाभ्यामिन्द्रायेन्द्राय मित्रावरुणाभ्याम्मित्रावरुणाभ्यामिन्द्रायेन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्राय मित्रावरुणाभ्याम्मित्रावरुणाभ्यामिन्द्रायेन्द्राग्निभ्याम्[2]। इन्द्रायेन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्रायेन्द्रायेन्द्राग्निभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्रायेन्द्रायेन्द्राग्निभ्यामिन्द्रावरुणाभ्याम्। इन्द्राग्निभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्रावरुणा-

[1]. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि (वा. प्रा. २.४८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मित्रावरुणाभ्याम् पद द्विरुदात्त है।

[2]. द्वन्द्वं चेन्द्रसोमपूर्वं पूषाग्निवायुषु(वा.प्रा.२.५५) इस सूत्र के अनुसार इन्द्राग्निभ्याम् यह समासात्मक पद अन्तोदात्त है।

भ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामि-
न्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यामिन्द्रावरु-
णाभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्याम्[1]। इन्द्राग्निभ्यामितीन्द्राग्नि भ्याम्। इन्द्राव-
रुणाभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्राव-
रुणाभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्राविष्णुंभ्यामिन्द्राविष्णुंभ्यामिन्द्राबृह-
स्प्पतिंभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्रावरुणाभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्रावि-
ष्णुंभ्याम्। इन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्राविष्णुंभ्यामिन्द्राविष्णुंभ्यामिन्द्राबृ-
हस्प्पतिंभ्यामिन्द्राबृहस्प्पतिंभ्यामिन्द्राविष्णुंभ्याम्। इन्द्राबृहस्प्पतिंभ्या-
मितीन्द्राबृहस्प्पतिं भ्याम्। इन्द्राविष्णुंभ्यामितीन्द्राविष्णु भ्याम्॥२२॥

मूर्द्धानन्दिवो दिवो मूर्द्धानम्मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिमरतिन्दिवो मूर्द्धान-
म्मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिम्। दिवोऽ अरतिमरतिन्दिवो दिवोऽ अरतिम्पृथिव्याः
पृथिव्याऽ अरतिन्दिवो दिवोऽ अरतिम्पृथिव्याः। अरतिम्पृथिव्याः पृथिव्याऽ
अरतिमरतिम्पृथिव्या व्वैश्वानरँव्वैश्वानरम्पृथिव्याऽ अरतिमरतिम्पृथिव्या व्वैश्वा-
नरम्। पृथिव्या व्वैश्वानरँव्वैश्वानरम्पृथिव्याः पृथिव्या व्वैश्वानरमृतऽ ऋते व्वैश्वा-
नरम्पृथिव्याः पृथिव्या व्वैश्वानरमृते। व्वैश्वानरमृतऽ ऋते व्वैश्वानरँव्वैश्वानरमृतऽ आ
जातञ्जातमऽ ऋते व्वैश्वानरँव्वैश्वानरमृतऽ आ जातम्[2]। ऋतऽ आ जातञ्जातमऽ
ऋतऽ ऋतऽ आ जातमग्निमग्निञ्जातमऽ ऋतऽ ऋतऽ आ जातमग्निम् । आ
जातम्। जातमग्निमग्निञ्जातञ्जातमग्निम्। अग्निमित्यग्निम्॥ कविꣳ
सम्म्राजꣳ सम्म्राजङ्कविङ्कविꣳ सम्म्राजमतिंथिमतिंथिꣳ सम्म्राजङ्कविङ्कविꣳ

---

1. इन्द्राबृहस्पतिभ्यामिन्द्राबृहस्पती इति त्रीणि (वा. प्रा. २.४९) इस सूत्र के अनुसार इन्द्राबृहस्पतिंभ्याम् पद में तीन अक्षर उदात्त हैं।

2. वा. प्रा. ६.६. के अनुसार यहाँ आ उपसर्ग अनुदात्त नहीं होता है।

सम्म्राजमतिंथिम्[1]। सम्म्राजमतिंथिमतिंथिꣳ सम्म्राजꣳ सम्म्राजमतिंथिञ्ज-नानाञ्जनानामतिंथिꣳ सम्म्राजꣳ सम्म्राजमतिंथिञ्जनानाम्। सम्म्राजमितिं सम् राजम्। अतिंथिञ्जनानाञ्जनानामतिंथिमतिंथिञ्जनानामासन्नासञ्जनानामतिंथि-मतिंथिञ्जनानामासन्। जनानामासन्नासञ्जनानाञ्जनानामासन्ना पात्रम्पात्रमास-ञ्जनानाञ्जनानामासन्ना पात्रम्[2]। आसन्ना पात्रम्पात्रमासन्नासन्ना पात्रञ्जनयन्त जनयन्त पात्रमासन्नासन्ना पात्रञ्जनयन्त। आ पात्रम्। पात्रञ्जनयन्त जनयन्त पात्रम्पात्रञ्जनयन्त देवा देवा जंनयन्त पात्रम्पात्रञ्जनयन्त देवाः। जनयन्त देवा देवा जंनयन्त जनयन्त देवाः। देवाऽ इतिं देवाः॥२३॥

ध्रुवोस्यसि ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवक्षिंतिरसि ध्रुवो ध्रुवोसि ध्रुवक्षिं-तिः। असि ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवक्षिंतिरस्यसि ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवक्षिंति-रस्यसि ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवाणाम्। ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवक्षिंति-र्ध्रुवाणान्ध्रुवतंमो ध्रुवतंमो ध्रुवाणान्ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवक्षिंतिर्ध्रुवाणान्ध्रुवतंमः। ध्रुवक्षिंतिरितिं ध्रुव क्षिंतिः। ध्रुवाणान्ध्रुवतंमो ध्रुवतंमो ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवत-मोच्युंतानामच्युंतानान्ध्रुवतंमो ध्रुवाणान्ध्रुवाणान्ध्रुवतमोच्युंतानाम्। ध्रुवतमो-च्युंतानामच्युंतानान्ध्रुवतंमो ध्रुवतमोच्युंतानामच्युतक्षित्तंमोच्युतक्षित्तमोच्युं-तानान्ध्रुवतंमो ध्रुवतमोच्युंतानामच्युतक्षित्तंमः। ध्रुवतंमऽ इतिं ध्रुव तंमः। अच्युंतानामच्युतक्षित्तंमोच्युतक्षित्तमोच्युंतानामच्युंतानामच्युतक्षित्तंमो वैश्वानरायं वैश्वानरायाच्युतक्षित्तमोच्युंतानामच्युंतानामच्युतक्षित्तंमो वैश्वा-नरायं। अच्युतक्षित्तंमो वैश्वानरायं वैश्वानरायाच्युतक्षित्तंमोच्युतक्षित्तंमो

---

1. प्रकृत्या सम्राड्साम्राजि(वा.प्रा.४.६) इस सूत्र में सम्राट् तथा साम्राज् (साम्राज्य) पद में मकार का प्रकृतिभाव कहा है। यहाँ सम्राजम् सम्राट् पद का द्वितीया का एकवचन है।

2. वा. प्रा. ६.२६. के अनुसार पात्रम् पद में दो स्पर्श हैं।

वैश्वानरायं त्वा त्वा वैश्वानरायाच्युतक्षित्तंमोच्युतक्षित्तंमो वैश्वानरायं त्वा। अच्युतक्षित्तमऽ इत्यच्युतक्षित् तंमः। वैश्वानरायं त्वा त्वा वैश्वानरायं वैश्वानरायं त्वा। त्वेतिं त्वा॥ ध्रुवन्ध्रुवेणं द्ध्रुवेणं द्ध्रुवन्ध्रुवन्ध्रुवेण मनंसा मनंसा द्ध्रुवेणं द्ध्रुवन्ध्रुवन्ध्रुवेण मनंसा। ध्रुवेण मनंसा मनंसा द्ध्रुवेणं द्ध्रुवेण मनंसा व्वाचा व्वाचा मनंसा द्ध्रुवेणं द्ध्रुवेण मनंसा व्वाचा। मनंसा व्वाचा व्वाचा मनंसा मनंसा व्वाचा सोमꣳ सोमँव्वाचा मनंसा मनंसा व्वाचा सोमंम्। व्वाचा सोमꣳ सोमँव्वाचा व्वाचा सोमंमवाव सोमँव्वाचा व्वाचा सोममवं। सोममवाव सोमꣳ सोममवं नयामि नयाम्म्यव सोमꣳ सोममवं नयामि। अवं नयामि नयाम्म्यवावं नयामि। नयामीतिं नयामि॥ अथां नो नोथाथां नऽ इन्द्रऽ इन्द्रो नोथाथां नऽ इन्द्रः। नऽ इन्द्रऽ इन्द्रों नो नऽ इन्द्रऽ इदिदिन्द्रों नो नऽ इन्द्रऽ इत्। इन्द्रऽ इदिदिन्द्रऽ इन्द्रऽ इद्विशो व्विशऽ इदिन्द्रऽ इन्द्रऽ इद्विशंः। इद्विशो व्विशऽ इदिद्विशोंसपत्त्नाऽ अंसपत्त्ना व्विशऽ इदिद्विशोंसपत्त्नाः[1]। व्विशोंसपत्त्नाऽ अंसपत्त्ना व्विशो व्विशोंसपत्त्नाः समंनसः समंनसोसपत्त्ना व्विशो व्विशोंसपत्त्नाः समंनसः। असपत्त्नाः समंनसः समंनसोसपत्त्नाऽ अंसपत्त्नाः समंनसस्क्करत्त्करत्त्समंनसोसपत्त्नाऽ अंसपत्त्नाः समंनसस्क्करंत्[2]। समंनसस्क्करत्त्करत्त्समंनसः समंनसस्क्करंत्। समंनसऽ इति स मंनसः। करदिति करंत्॥२४॥

यस्तें ते यो यस्तें द्रप्प्सो द्रप्प्सस्ते यो यस्तें द्रप्प्सः। ते द्रप्प्सो द्रप्प्सस्तें ते द्रप्प्स स्कन्दंति स्कन्दंन्ति द्रप्प्सस्तें ते द्रप्प्स स्कन्दंति। द्रप्प्स स्कन्दंति स्कन्दंति द्रप्प्सो द्रप्प्स स्कन्दंति यो य स्कन्दंति द्रप्प्सो द्रप्प्स स्कन्दंति यः।

---

[1].वा.प्रा.४.७१. के अनुसार यहाँ विशः से सम्बन्धित ओकार से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त होता है।

[2]. वा. प्रा. ६.१८. के अनुसार यहाँ करंत् यह आख्यात पद अपने प्रकृतिस्वर से युक्त होता है। कविष्करत्कृधिषु(वा.प्रा.३.३२) इस सूत्र के अनुसार करत् बाद में होने पर यहाँ समनसः पद का विसर्जनीय सकार होता है।

स्कन्दति यो य स्कन्दति स्कन्दति यस्ते ते य स्कन्दति स्कन्दति यस्ते। यस्ते ते यो यस्तेऽ अंशुरंशुस्ते यो यस्तेऽ अंशुः। तेऽ अंशुरंशुस्ते तेऽ अंशुर्ग्रावच्युतो ग्रावच्युतोंशुस्ते तेऽ अंशुर्ग्रावच्युतः। अंशुर्ग्रावच्युतो ग्रावच्युतोंशुरंशुर्ग्रावच्युतो धिषणयोर्धिषणयोर्ग्रावच्युतोंशुरंशुर्ग्राव-च्युतो धिषणयोः। ग्रावच्युतो धिषणयोर्धिषणयोर्ग्रावच्युतो ग्रावच्युतो धिषण-योरुपस्थादुपस्थाद्धिषणयोर्ग्रावच्युतो ग्रावच्युतो धिषणयोरुपस्थात्। ग्राव-च्युतऽ इति ग्राव च्युतः। धिषणयोरुपस्थादुपस्थाद्धिषणयोर्धिषणयोरुपस्था-त्। उपस्थादित्युप स्थात्॥ अध्वर्योर्वा वाध्वर्योरध्वर्योर्वा परि परि वाध्वर्योरध्व-र्योर्वा परि। वा परि परि वा वा परि वा वा परि वा वा परि वा। परि वा वा परि परि वा यो यो वा परि परि वा यः। वा यो यो वा वा यः पवित्रात्पवित्राद्यो वा वा यः पवित्रात्। यः पवित्रात्पवित्राद्यो यः पवित्रात्तन्तम्पवित्राद्यो यः पवित्रात्तम्। पवित्रात्तन्तम्पवित्रात्पवित्रात्तन्ते ते तम्पवित्रात्पवित्रात्तन्ते। तन्ते ते तन्तन्ते जुहोमि जुहोमि ते तन्तन्ते जुहोमि। ते जुहोमि जुहोमि ते ते जुहोमि मनसा मनसा जुहोमि ते ते जुहोमि मनसा। जुहोमि मनसा मनसा जुहोमि जुहोमि मनसा वषट्ट्कृतँवषट्ट्कृतम्मनसा जुहोमि जुहोमि मनसा वषट्ट्कृतम्[1]। मनसा वषट्ट्कृतँवषट्ट्कृतम्मनसा मनसा वषट्ट्कृतं स्वाहा स्वाहा वषट्ट्कृतम्मनसा मनसा वषट्ट्कृतं स्वाहा। वषट्ट्कृतं स्वाहा स्वाहा वषट्ट्कृतँवषट्ट्कृतं स्वाहा देवानान्देवानां स्वाहा वषट्ट्कृतँवषट्ट्कृतं स्वाहा देवानाम्। वषट्ट्कृतमिति वषट् कृतम्। स्वाहा देवानान्देवानां स्वाहा स्वाहा देवानामुत्क्रमणमुत्क्रमण-न्देवानां स्वाहा स्वाहा देवानामुत्क्रमणम्। देवानामुत्क्रमणमुत्क्रमणन्देवाना-

1. यहाँ वा.प्रा.४.१०१. के अनुसार टकार का द्वित्व होगा।

न्देवानामुत्क्रमणमस्यस्युत्क्रमणन्देवानान्देवानामुत्क्रमणमसि। उत्क्रमणमस्यस्युत्क्रमणमुत्क्रमणमसि। उत्क्रमणमित्युत् क्रमणम्। असीत्यसि॥२५॥

प्राणाय मे मे प्प्राणाय प्प्राणाय मे व्वर्चोदा व्वर्चोदा मे प्प्राणाय प्प्राणाय मे व्वर्चोदाः। मे व्वर्चोदा व्वर्चोदा मे मे व्वर्चोदा व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदा मे मे व्वर्चोदा व्वर्चसे। व्वर्चोदा व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदा व्वर्चोदा व्वर्चसे पवस्व पवस्व व्वर्चसे व्वर्चोदा व्वर्चोदा व्वर्चसे पवस्व। व्वर्चोदाऽ इति वर्चः दाः। व्वर्चसे पवस्व पवस्व व्वर्चसे व्वर्चसे पवस्व व्व्यानाय व्व्यानाय पवस्व व्वर्चसे व्वर्चसे पवस्व व्व्यानाय। पवस्व व्व्यानाय व्व्यानाय पवस्व पवस्व व्व्यानायोदानायोदानाय व्व्यानाय पवस्व पवस्व व्व्यानायोदानाय। व्व्यानायोदानायोदानाय व्व्यानाय व्व्यानायोदानाय व्वाचे व्वाचऽ उदानाय व्व्यानाय व्व्यानायोदानाय व्वाचे। व्व्यानायेति वि आनाय। उदानाय व्वाचे व्वाचऽ उदानायोदानाय व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचऽ उदानायोदानाय व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याम्।[1] उदानायेत्युत् आनाय। व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचे व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याꣳ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याँव्वाचे व्वाचे क्क्रतूदक्षाभ्याꣳ श्श्रोत्राय। क्रतूदक्षाभ्याꣳ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याꣳ श्श्रोत्राय चक्षुर्भ्याञ्चक्षुर्भ्याꣳ श्श्रोत्राय क्क्रतूदक्षाभ्याङ्क्रतूदक्षाभ्याꣳ श्श्रोत्राय चक्षुर्भ्याम्। श्श्रोत्राय चक्षुर्भ्याञ्चक्षुर्भ्याꣳ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय चक्षुर्भ्याम्मे मे चक्षुर्भ्याꣳ श्श्रोत्राय श्श्रोत्राय चक्षुर्भ्याम्मे। चक्षुर्भ्याम्मे मे चक्षुर्भ्याञ्चक्षुर्भ्याम्मे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ मे चक्षुर्भ्याञ्चक्षुर्भ्याम्मे व्वर्चोदसौ। चक्षुर्भ्यामिति चक्षुः भ्याम्। मे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ मे मे व्वर्चोदसौ व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदसौ मे मे व्वर्चोदसौ व्वर्चसे। व्वर्चोदसौ व्वर्चसे व्वर्चसे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ व्वर्चसे पवेथाम्पवेथाँव्वर्चसे व्वर्चोदसौ व्वर्चोदसौ व्वर्चसे पवेथाम्।

[1]. वा.प्रा.२.४७. के अनुसार क्रतूदक्षाभ्याम् पद द्विरुदात्त है।

व्र्चोदसावितिं वर्चः दसौं। व्र्चसे पवेथाम्पवेथाँव्र्चसे व्र्चसे पवेथामात्मनेऽ आत्मनें पवेथाँव्र्चसे व्र्चसे पवेथामात्मनें। पवेथामात्मानेऽ आत्मनें पवे-थाम्पवेथामात्मनऽ ओजंसऽ ओजंसऽ आत्मनें पवेथाम्पवेथामात्मनऽ ओजंसे॥ आत्मनऽ ओजंसऽ ओजंसऽ आत्मनेऽ आत्मनऽ ओजंसऽ आयुंषऽ आयुंषऽ ओजंसऽ आत्मनेऽ आत्मनऽ ओजंसऽ आयुंषे। ओजंसऽ आयुंषऽ आयुंषऽ ओजंसऽ ओजंसऽ आयुंषे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यऽ आयुंषऽ ओजंसऽ ओजंसऽ आयुंषे व्विश्वाब्भ्यः। आयुंषे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यऽ आयुंषऽ आयुंषे व्विश्वाब्भ्यो मे मे व्विश्वाब्भ्यऽ आयुंषऽ आयुंषे व्विश्वाब्भ्यो मे। व्विश्वाब्भ्यो मे मे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यो मे प्प्रजाब्भ्यः प्प्रजाब्भ्यों मे व्विश्वाब्भ्यो व्विश्वाब्भ्यो मे प्प्रजाब्भ्यः। मे प्प्रजाब्भ्यः प्प्रजाब्भ्यों मे मे प्प्रजाब्भ्यः। प्रजाब्भ्यऽ इतिं प्प्र जाब्भ्यः॥२६॥

कोस्यसि कः कोसि कतमः कंतमोसि कः कोसि कतमः[1]। असि कतमः कंतमोस्यसि कतमः कस्य कस्यं कतमोस्यसि कतमः कस्यं। कतमः कस्य कस्यं कतमः कंतमः कस्य कः कः कस्यं कतमः कंतमः कस्य कः। कस्य कः कः कस्य कस्य को नाम नाम कः कस्य कस्य को नामं। को नाम नाम कः को नामं। नामेति नामं॥ यस्यं ते ते यस्य यस्यं ते नाम नामं ते यस्य यस्यं ते नामं[2]। ते नाम नामं ते ते नामामंन्न्मह्यमंन्न्महि नामं ते ते नामामंन्न्महि। नामामंन्न्मह्यमंन्न्महि नाम नामामंन्न्महि यँव्यममंन्न्महि नाम नामामंन्न्महि यम्। अमंन्न्महि यँव्यममंन्न्मह्यमंन्न्महि यन्त्वां त्वा यममंन्न्मह्य-

---

[1]. कः असि यहाँ पर यजुष्षु च (वा. प्रा. ४.८०) इस सूत्र से विसर्जनीय से सम्बन्धित ओकार से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. वो वां ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात है।

म॑न्महि॒ यन्त्वा॑। यन्त्वा॑ त्वा॒ यँꣳयन्त्वा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न त्वा॒ यँꣳयन्त्वा॒ सोमे॑न। त्वा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न त्वा त्वा॒ सोमे॒नाती॑तृपा॒माती॑तृपाम॒ सोमे॑न त्वा त्वा॒ सोमे॒ना-ती॑तृपाम। सोमे॒नाती॑तृपा॒माती॑तृपाम॒ सोमे॑न॒ सोमे॒नाती॑तृपाम। अती॑तृपा॒मेत्त्यती॑-तृपाम॥२७॥

मध॑वे त्वा त्वा॒ मध॑वे॒ मध॑वे त्वा॒ माध॑वाय॒ माध॑वाय त्वा॒ मध॑वे॒ मध॑वे त्वा॒ माध॑वाय। त्वा॒ माध॑वाय॒ माध॑वाय त्वा त्वा॒ माध॑वाय शु॒क्राय॑ शु॒क्राय॒ माध॑वाय त्वा त्वा॒ माध॑वाय शु॒क्राय॑। माध॑वाय शु॒क्राय॑ शु॒क्राय॒ माध॑वाय॒ माध॑वाय शु॒क्राय॒ शुच॑ये॒ शुच॑ये शु॒क्राय॒ माध॑वाय॒ माध॑वाय शु॒क्राय॒ शुच॑ये। शु॒क्राय॒ शुच॑ये॒ शुच॑ये शु॒क्राय॑ शु॒क्राय॒ शुच॑ये॒ नभ॑से॒ नभ॑से॒ शुच॑ये शु॒क्राय॑ शु॒क्राय॒ शुच॑ये॒ नभ॑से। शुच॑ये॒ नभ॑से॒ नभ॑से॒ शुच॑ये॒ शुच॑ये॒ नभ॑से नभ॒स्या॒य नभ॒स्या॒य॒ नभ॑से॒ शुच॑ये॒ शुच॑ये॒ नभ॑से नभ॒स्या॒य। नभ॑से नभ॒स्या॒य नभ॒स्या॒य॒ नभ॑से॒ नभ॑से नभ॒स्या॒ये॒षऽ इ॒षे न॑भ॒स्या॒य॒ नभ॑से॒ नभ॑से नभ॒स्या॒ये॒षे। न॒भ॒स्या॒ये॒षऽ इ॒षे न॑भ॒स्या॒य नभ॒स्या॒ये॒षऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षे न॑भ॒स्या॒य नभ॒स्या॒ये॒षऽ ऊ॒र्ज्जे। इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षऽ इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जे सह॑से॒ सह॑सऽ ऊ॒र्ज्जऽ इ॒षऽ इ॒षऽ ऊ॒र्ज्जे सह॑से। ऊ॒र्ज्जे सह॑से॒ सह॑सऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे सह॑से सह॒स्या॒य सह॒स्या॒य॒ सह॑सऽ ऊ॒र्ज्जऽ ऊ॒र्ज्जे सह॑से सह॒स्या॒य। सह॑से सह॒स्या॒य सह॒स्या॒य॒ सह॑से॒ सह॑से सह॒स्या॒य॒ तप॑से॒ तप॑से सह॒स्या॒य॒ सह॑से॒ सह॑से सह॒स्या॒य॒ तप॑से। स॒ह॒स्या॒य॒ तप॑से॒ तप॑से सह॒स्या॒य सह॒स्या॒य॒ तप॑से तप॒स्या॒य तप॒स्या॒य॒ तप॑से सह॒स्या॒य सह॒स्या॒य॒ तप॑से तप॒स्या॒य। तप॑से तप॒स्या॒य तप॒स्या॒य॒ तप॑से॒ तप॑से तप॒स्या॒याꣳहसस्प्प॒तये॑ꣳहसः॒प॒तयै॑ तप॒स्या॒य॒ तप॑से॒ तप॑से तप॒स्या॒याꣳहसस्प्प॒तयै॑[1]। त॒प॒स्या॒याꣳहसस्प्प॒तये॑ꣳहसः॒प॒तयै॑ तप॒स्या॒य तप॒स्या॒याꣳहसस्प्प॒तयै॑। अ॒ꣳह॒स॒ःप॒त॒यऽ इत्त्यं॑ꣳहसः प॒तयै॑॥२८॥

[1]. समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) इस सूत्र के अनुसार अꣳहसःपतये इस एक पद में विद्यमान विसर्जनीय सकार होता है।

इन्द्राग्नीऽ आ गंतङ्गतमेन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ आ गंतꣳ सुतꣳ सुतङ्गंतमेन्द्राग्नीऽ इन्द्राग्नीऽ आ गंतꣳ सुतम्[1]। इन्द्राग्नीऽ इतीन्द्राग्नी। आ गंतम्। गतꣳ सुतꣳ सुतङ्गंतङ्गतꣳ सुतङ्गीर्भिर्गीर्भिः सुतङ्गंतङ्गतꣳ सुतङ्गीर्भिः। सुतङ्गीर्भिर्गीर्भिः सुतꣳ सुतङ्गीर्भिर्नन्नभो नभों गीर्भिः सुतꣳ सुतङ्गीर्भिर्नन्नभः। गीर्भिर्नन्नभो नभों गीर्भिर्गीर्भिर्नन्नभो व्वरेण्यँव्वरेण्यन्नभों गीर्भिर्गीर्भिर्नन्नभो व्वरेण्यम्। गीर्भिरिति गीः भिः। नभो व्वरेण्यँव्वरेण्यन्नभो नभो व्वरेण्यम्। व्वरेण्यमिति वरेण्यम्॥ अस्य पांतम्पातमस्यास्य पांतन्धिया धिया पांतमस्यास्य पांतन्धिया[2]। पातन्धिया धिया पांतम्पातन्धियेषितेषिता धिया पांतम्पातन्धियेषिता। धियेषितेषिता धिया धियेषिता। इषितेतीषिता॥ इन्द्राग्निभ्यान्त्वा त्वेन्द्राग्निभ्यामिन्द्राग्निभ्यान्त्वा। इन्द्राग्निभ्यामितीन्द्राग्नि भ्याम्। त्वेति त्वा॥२९॥

आ घ घा घा ये ये घा घा ये। घा ये ये घं घा येऽ अग्निमग्निँय्ये घं घा येऽ अग्निम्। येऽ अग्निमग्निँय्ये येऽ अग्निमिन्धतऽ इंन्धतेग्निँय्ये येऽ अग्निमिन्धते। अग्निमिन्धतऽ इंन्धतेग्निमग्निमिन्धते स्तृणन्ति स्तृणन्तीन्धतेग्निमग्निमिन्धते स्तृणन्ति। इन्धते स्तृणन्ति स्तृणन्तीन्धतऽ इंन्धते स्तृणन्ति बर्हिर्बर्हि स्तृणन्तीन्धतऽ इंन्धते स्तृणन्ति बर्हिः। स्तृणन्ति बर्हिर्बर्हि स्तृणन्ति स्तृणन्ति बर्हिरानुषगानुषग्बर्हि स्तृणन्ति स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। बर्हिरानुषगानुषग्बर्हिर्बर्हिरानुषक्। आनुषगित्यानुषक्॥ येषामिन्द्रऽ इन्द्रो येषाँय्येषामिन्द्रो युवा युवेन्द्रो येषाँय्येषामिन्द्रो युवा। इन्द्रो युवा युवेन्द्रऽ इन्द्रो युवा सखा सखा

[1]. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार इन्द्राग्नी का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. वा.प्रा.२.६२. के अनुसार पातम् पद बाद में होने से यहाँ अस्य यह पद अन्तोदात्त है।

युवेन्द्रऽ इन्द्रो युवा सखा। युवा सखा सखा युवा युवा सखा। सखेति सखा॥
अग्नीन्द्राभ्यान्त्वा त्वाग्नीन्द्राभ्यामग्नीन्द्राभ्यान्त्वा[1]। त्वेति त्वा॥३०॥

ओमासश्चर्षणीधृतश्चर्षणिधृतऽ ओमासऽ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे विश्वे चर्षणिधृतऽ ओमासऽ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे। चर्षणीधृतो विश्वे विश्वे चर्षणिधृतश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासो देवासो विश्वे चर्षणिधृतश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासः। चर्षणिधृतऽ इति चर्षणि धृतः। विश्वे देवासो देवासो विश्वे विश्वे देवासऽ आ गत गता देवासो विश्वे विश्वे देवासऽ आ गत। देवासऽ आ गत गता देवासो देवासऽ आ गत। आ गत। गतेति गत॥ दाश्वाꣳसो दाशुषो दाशुषो दाश्वाꣳसो दाश्वाꣳसो दाशुषः सुतꣳ सुतन्दाशुषो दाश्वाꣳसो दाश्वाꣳसो दाशुषः सुतम्। दाशुषः सुतꣳ सुतन्दाशुषो दाशुषः सुतम्। सुतमिति सुतम्॥३१॥

शृणुता मे मे शृणुत शृणुता मऽ इममिमम्मे शृणुत शृणुता मऽ इमम्[2]। मऽ इममिमम्मे मऽ इमꣳ हवꣳ हवमिमम्मे मऽ इमꣳ हवम्। इमꣳ हवꣳ हव-मिममिमꣳ हवम्। हवमिति हवम्॥ एदमिदमेदम्बर्हिर्बर्हिरिदमेदम्बर्हिः। इदम्बर्हिर्बर्हिरिदमिदम्बर्हिर्न्नि नि बर्हिरिदमिदम्बर्हिर्न्नि। बर्हिर्न्नि नि बर्हिर्बर्हिर्न्नि षीदत सीदत नि बर्हिर्बर्हिर्न्नि षीदत[3]। नि षीदत सीदत नि नि षीदत। सीदतेति सीदत॥३२॥

इन्द्र मरुत्वो मरुत्वऽ इन्द्रेन्द्र मरुत्वऽ इहेह मरुत्वऽ इन्द्रेन्द्र मरुत्वऽ इह। मरुत्वऽ इहेह मरुत्वो मरुत्वऽ इह पाहि पाहीह मरुत्वो मरुत्वऽ इह पाहि। इह पाहि पाहीहेह पाहि सोमꣳ सोमम्पाहीहेह पाहि सोमम्। पाहि सोमꣳ

---

1. अग्निश्चेन्द्रे (वा. प्रा. २.५६) इस सूत्र के अनुसार अग्निपूर्वपद एवं इन्द्रोत्तरपद वाला देवता द्वन्द्व समास अन्तोदात्त होता है।

2. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार मकार बाद में रहने से यहाँ शृणुत पद का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

3. नेः सीदतेः (वा. प्रा. ३.५९) नि से परे सीदति का सकार षकार हो जाता है।

सोम॑म्पाहि पाहि॒ सोम॑ँ॒ऽयथा॒ यथा॒ सोम॑म्पाहि पाहि॒ सोम॑ँ॒ऽयथा॑। सोम॑ँ॒ऽयथा॒ यथा॒ सोम॒ꣳ सोम॑ँ॒ऽयथा॑ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒ते यथा॒ सोम॒ꣳ सोम॑ँ॒ऽयथा॑ शार्य्या॒ते। यथा॑ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒ते यथा॒ यथा॑ शार्य्या॒तेऽ अपि॒बोपि॑बꣳ शार्य्या॒ते यथा॒ यथा॑ शार्य्या॒तेऽ अपि॑बꣳ। शा॒र्य्या॒तेऽ अपि॒बोपि॑बꣳ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒तेऽ अपि॑बꣳ सु॒तस्य॑ सु॒तस्यापि॑बꣳ शार्य्या॒ते शा॑र्य्या॒तेऽ अपि॑बꣳ सु॒तस्य॑। अपि॑बꣳ सु॒तस्य॑ सु॒तस्यापि॒बोपि॑बꣳ सु॒तस्य॑। सु॒तस्येति॑ सु॒तस्य॑॥ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ प्प्रनी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑। प्रणी॑ती॒ तव॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर शूर॒ तव॒ प्प्रनी॑ती॒ प्प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर। प्रनी॒तीति॒ प्प्र नी॑ती। तव॑ शूर शूर॒ तव॒ तव॑ शूर॒ शर्म्म॒ञ्छर्म्म॑ञ्छूर॒ तव॒ तव॑ शूर॒ शर्म्म॑न्। शूर॒ शर्म्म॒ञ्छर्म्म॑ञ्छूर शूर॒ शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति ब्विवास॒न्त्या शर्म्म॑ञ्छूर शूर॒ शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति। शर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति ब्विवास॒न्त्या शर्म्म॒ञ्छर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति क॒वय॑ः क॒वयो॑ ब्विवास॒न्त्या शर्म्म॒ञ्छर्म्म॒न्ना विं॑वासन्ति क॒वय॑ः। आ विं॑वासन्ति। ब्वि॒वा॒स॒न्ति॒ क॒वय॑ः क॒वयो॑ ब्विवासन्ति ब्विवासन्ति क॒वय॑ः सुय॒ज्ज्ञाः सुं॑य॒ज्ज्ञाः क॒वयो॑ ब्विवासन्ति ब्विवासन्ति क॒वय॑ः सुय॒ज्ज्ञाः। क॒वय॑ः सुय॒ज्ज्ञाः सुं॑य॒ज्ज्ञाः क॒वय॑ः क॒वय॑ः सुय॒ज्ज्ञाः। सु॒य॒ज्ज्ञाऽ इति॑ सु य॒ज्ज्ञाः॥ इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते म॒रुत्व॑ते॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते। त्वा॒ म॒रुत्व॑ते म॒रुत्व॑ते त्वा त्वा म॒रुत्व॑ते। म॒रुत्व॑त॒ऽ इति॑ म॒रुत्व॑ते॥२३॥

म॒रुत्व॑न्तँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वृ॑ष॒भम्म॒रुत्व॑न्तम्म॒रुत्व॑न्तँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वा॑वृधा॒नँ॒ब्ववृ॒धा॒नँ॒ब्वृ॑ष॒भम्म॒रुत्व॑न्तम्म॒रुत्व॑न्तँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वा॑वृधा॒नम्[1]। ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वा॑वृधा॒नँ॒ब्ववृ॒धा॒नँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वा॑वृधा॒नमक॑वारि॒मक॑वारिँ॒ब्ववृधा॒नँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वृ॒ष॒भँ॒ब्वा॑वृधा॒नमक॑वारिम्। ब्वा॒वृ॒धा॒नमक॑वारि॒मक॑वारिँ॒ब्ववृधा॒नँ॒ब्वा॑वृधा॒नमक॑वारिन्दि॒ब्यन्दि॒ब्यमक॑वारिँ॒ब्ववृधा॒नँ॒ब्वा॑वृधा॒नमक॑वारि-

1. ववृधानम् यहां व वृधवृजोः(वा.प्रा.३.११३) इस सूत्र के अनुसार वृध परे रहने से व का स्वर दीर्घ होता है।

न्दिुध्यम्। व्रवृधानमिति ववृधानम्। अर्कवारिन्दिुध्यन्दिुध्यमर्कवारिमर्कवारिन्दिु-ध्यꣳ शासꣳ शासन्दिुध्यमर्कवारिमर्कवारिन्दिुध्यꣳ शासम्। अर्कवारिमित्यर्कव अरिम्। दिुध्यꣳ शासꣳ शासन्दिुध्यन्दिुध्यꣳ शासमिन्द्रमिन्द्रꣳ शासन्दिुध्यन्दिु-ध्यꣳ शासमिन्द्रम्। शासमिन्द्रमिन्द्रꣳ शासꣳ शासमिन्द्रम्। इन्द्रमितीन्द्रम्॥ व्रिश्वासाहमवसेवसे व्रिश्वसहँव्रिश्वासाहमवसे नूतनाय नूतनायावसे व्रिश्वसहँ-व्रिश्वासाहमवसे नूतनाय[1]। व्रिश्वसहमिति विश्व सहम्। अवसे नूतनाय नूत-नायावसेवसे नूतनायोग्ग्रमुग्ग्रन्नूतनायावसेवसे नूतनायोग्ग्रम्। नूतनायोग्ग्रमुग्ग्र-न्नूतनाय नूतनायोग्ग्रꣳ सहोदाꣳ सहोदामुग्ग्रन्नूतनाय नूतनायोग्ग्रꣳ सहोदाम्। उग्ग्रꣳ सहोदाꣳ सहोदामुग्ग्रमुग्ग्रꣳ सहोदामिहेह सहोदामुग्ग्रमुग्ग्रꣳ सहोदामिह। सहोदामिहेह सहोदाꣳ सहोदामिह तन्तमिह सहोदाꣳ सहोदामिह तम्। सहो-दामिति सहः दाम्। इह तन्तमिहेह तꣳ हुवेम हुवेम तमिहेह तꣳ हुवेम। तꣳ हुवेम हुवेम तन्तꣳ हुवेम। हुवेमेति हुवेम॥ मरुतान्त्वा त्वा मरुताम्मरुतान्त्वौ-जसऽ ओजसे त्वा मरुताम्मरुतान्त्वौजसे।[2] त्वौजसऽ ओजसे त्वा त्वौजसे। ओजसऽ इत्योजसे॥३४॥

सजोषाऽ इन्द्रेन्द्र सजोषाः सजोषाऽ इन्द्र सगणः सगणऽ इन्द्र सजोषाः सजोषाऽ इन्द्र सगणः। सजोषाऽ इति स जोषाः। इन्द्र सगणः सगणऽ इन्द्रे-न्द्र सगणो मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सगणऽ इन्द्रेन्द्र सगणो मरुद्भिः। सगणो मरुद्भि-र्म्मरुद्भिः सगणः सगणो मरुद्भिः सोमꣳ सोमम्मरुद्भिः सगणः सगणो मरुद्भिः सोमम्। सगणऽ इति स गणः। मरुद्भिः सोमꣳ सोमम्मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सोमम्पिब पिब सोमम्मरुद्भिर्म्मरुद्भिः सोमम्पिब। मरुद्भिरिति मरुत् भिः।

---

[1]. विश्वसहभुवपुषवसुषु (वा. प्रा. ३.१०१) सह , भुव, पुष एवं वसु इनके परे रहने पर विश्व का अकार दीर्घ हो जाता है।

[2]. त्वा ओजसे यहाँ सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र के अनुसार आ परवर्ती ओ के सहित औकार होता है।

सोमम्पिब पिब सोमꣳ सोमम्पिब ब्वृत्रहा ब्वृत्रहा पिब सोमꣳ सोमम्पिब ब्वृत्रहा। पिब ब्वृत्रहा ब्वृत्रहा पिब पिब ब्वृत्रहा शूर शूर ब्वृत्रहा पिब पिब ब्वृत्रहा शूर। ब्वृत्रहा शूर शूर ब्वृत्रहा ब्वृत्रहा शूर ब्विद्वान्विद्वाञ्छूर ब्वृत्रहा ब्वृत्रहा शूर ब्विद्वान्। ब्वृत्रहेति वृत्र हा। शूर ब्विद्वान्विद्वाञ्छूर शूर ब्विद्वान्। ब्विद्वानिति विद्वान्॥ जहि शत्रूञ्छत्रूञ्जहि जहि शत्रूꣳ॥रपाप शत्रूञ्जहि जहि शत्रूꣳ॥रप[1]। शत्रूꣳ॥रपाप शत्रूञ्छत्रूꣳ॥रप मृधो मृधोप शत्रूञ्छत्रूꣳ॥रप मृधः। अप मृधो मृधोपाप मृधो नुदस्व नुदस्व मृधोपाप मृधो नुदस्व। मृधो नुदस्व नुदस्व मृधो मृधो नुदस्वाथाथ नुदस्व मृधो मृधो नुदस्वाथ। नुदस्वाथाथ नुदस्व नुदस्वाथाभयमभयमथ नुदस्व नुदस्वाथाभयम्। अथाभयमभयमथाथाभयङ्कृणुहि कृणुह्यभयमथाथाभयङ्कृणुहि। अभयङ्कृणुहि कृणुह्यभयमभयङ्कृणुहि ब्विश्वतो ब्विश्वतः कृणुह्यभयमभयङ्कृणुहि ब्विश्वतः[2]। कृणुहि ब्विश्वतो ब्विश्वतः कृणुहि कृणुहि ब्विश्वतो नो नो ब्विश्वतः कृणुहि कृणुहि ब्विश्वतो नः। ब्विश्वतो नो नो ब्विश्वतो ब्विश्वतो नः। नऽ इति नः॥३५॥

मरुत्वाꣳ॥ऽ इन्द्रेन्द्र मरुत्वान्मरुत्वाꣳ॥ऽ इन्द्र ब्वृषभो ब्वृषभऽ इन्द्र मरुत्वान्मरुत्वाꣳ॥ऽ इन्द्र ब्वृषभः। इन्द्र ब्वृषभो ब्वृषभऽ इन्द्रेन्द्र ब्वृषभो रणाय रणाय ब्वृषभऽ इन्द्रेन्द्र ब्वृषभो रणाय। ब्वृषभो रणाय रणाय ब्वृषभो ब्वृषभो रणाय पिब पिब रणाय ब्वृषभो ब्वृषभो रणाय पिब। रणाय पिब पिब रणाय रणाय पिबा सोमꣳ सोमम्पिब रणाय रणाय पिबा सोमम्[3]। पिबा सोमꣳ सोमम्पिब पिबा सोममनुष्ष्वधमनुस्वधꣳ सोमम्पिब पिबा सोममनुष्ष्वधम्। सोममनुष्ष्वधमनु-स्वधꣳ सोमꣳ सोममनुष्ष्वधम्मदाय मदायानुस्वधꣳ सोमꣳ सोममनुष्ष्वध-

[1]. यहाँ स्वर परे रहने पर वा. प्रा. ३.१४१. के अनुसार शत्रून् का नकार रेफ हो जाता है उपधा को अनुनासिक हो जाता है। वा. प्रा. १.३५. के अनुसार शत्रून् के ऊकार की उपधासंज्ञा होती है।

[2].विश्वतः कृणुहि यहाँ वा.प्रा.३.११. के अनुसार विसर्जनीय प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. वा.प्रा.३.१२९. के अनुसार पिब सोमम् यहाँ ह्रस्व स्वर दीर्घ होकर पिबा सोमम् होता है।

म्मदा॑य। अ॒नु॒ष्व॒धम्मदा॑य॒ मदा॑यानुस्व॒धम॑नुष्व॒धम्मदा॑य। अ॒नु॒स्व॒धमित्य॑नु स्व॒धम्। मदा॒येति॒ मदा॑य॥ आ सिं॑ञ्चस्व सिञ्चस्वा सिं॑ञ्चस्व ज॒ठरे॑ ज॒ठरे॑ सिञ्चस्वा सिं॑ञ्चस्व ज॒ठरे॑। सि॒ञ्च॒स्व॒ ज॒ठरे॑ ज॒ठरे॑ सिञ्चस्व सिञ्चस्व ज॒ठरे॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॑ ज॒ठरे॑ सिञ्चस्व सिञ्चस्व ज॒ठरे॒ मद्ध्वः। ज॒ठरे॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॑ ज॒ठरे॑ ज॒ठरे॒ मद्ध्वऽ ऊ॒र्म्मिमू॒र्म्मिम्मद्ध्वो॑ ज॒ठरे॑ ज॒ठरे॒ मद्ध्वऽ ऊ॒र्म्मिम्। मद्ध्वऽ ऊ॒र्म्मिमू॒र्म्मिम्मद्ध्वो॒ मद्ध्वऽ ऊ॒र्म्मिन्त्वन्त्वमू॒र्म्मिम्मद्ध्वो॒ मद्ध्वऽ ऊ॒र्म्मिन्त्वम्। ऊ॒र्म्मिन्त्वन्त्वमू॒र्म्मिमू॒र्म्मिन्त्वꣳ राजा॒ राजा॒ त्वमू॒र्म्मिमू॒र्म्मिन्त्वꣳ राजा॑। त्वꣳ राजा॒ राजा॒ त्वन्त्वꣳ राजा॑स्यसि॒ राजा॒ त्वन्त्वꣳ राजा॑सि। राजा॑स्यसि॒ राजा॒ राजा॑सि॒ प्प्रति॑प॒त्प्रति॑पदसि॒ राजा॒ राजा॑सि॒ प्प्रति॑पत्। अ॒सि॒ प्प्रति॑प॒त्प्रति॑पदस्यसि॒ प्प्रति॑पत्सु॒ताना॑ꣳ सु॒ताना॒म्प्रति॑पदस्यसि॒ प्प्रति॑पत्सु॒ताना॑म्। प्रति॑पत्सु॒ताना॑ꣳ सु॒ताना॒म्प्रति॑प॒त्प्रति॑पत्सु॒ताना॑म्। प्रति॑प॒दिति॒ प्प्रति॑ पत्। सु॒ताना॒मिति॑ सु॒ताना॑म्॥३६॥

म॒हाँ२॥ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ म॒हान्म॒हाँ२॥ऽ इन्द्रो॑ नृ॒वन्नृ॒वदिन्द्रो॑ म॒हान्म॒हाँ२॥ऽ इन्द्रो॑ नृ॒वत्। इन्द्रो॑ नृ॒वन्नृ॒वदिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्प्राश्च॑र्षणि॒प्प्राऽ आ नृ॒वदिन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्प्राः। नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्प्राश्च॑र्षणि॒प्प्राऽ आ नृ॒वन्नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्प्राऽ उ॒तोत च॑र्षणि॒प्प्राऽ आ नृ॒वन्नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्प्राऽ उ॒त। नृ॒वदिति॑ नृ॒ ब्वत्। आ च॑र्षणि॒प्प्राः। च॒र्ष॒णि॒प्प्राऽ उ॒तोत च॑र्षणि॒प्प्राश्च॑र्षणि॒प्प्राऽ उ॒त द्वि॒बर्हा॑ द्वि॒बर्हा॑ऽ उ॒त च॑र्षणि॒प्प्राश्च॑र्षणि॒प्प्राऽ उ॒त द्वि॒बर्हाः॑। च॒र्ष॒णि॒प्प्राऽ इति॑ चर्षणि॒ प्राः। उ॒त द्वि॒बर्हा॑ द्वि॒बर्हा॑ऽ उ॒तोत द्वि॒बर्हा॑ऽ अमि॒नो॒मि॒नो द्वि॒बर्हा॑ऽ उ॒तोत द्वि॒बर्हा॑ऽ अमि॒नः। द्वि॒बर्हा॑ऽ अमि॒नो॒मि॒नो द्वि॒बर्हा॑ द्वि॒बर्हा॑ऽ अमि॒नः सहो॑भिः॒ सहो॑भिरमि॒नो द्वि॒बर्हा॑ द्वि॒बर्हा॑ऽ अमि॒नः सहो॑भिः। द्वि॒बर्हा॒ऽ इति॑ द्वि॒ बर्हाः॑। अ॒मि॒नः सहो॑भिः॒ सहो॑भिरमि॒नो॒मि॒नः सहो॑भिः। सहो॑भि॒रिति॒ सहः॑ भिः॥ अ॒स्म्म॒द्र्य॒ग्ग्वावृधे ब्ववृधे-

स्म्मुद्द्रयुगस्म्मुद्द्रयुग्ग्वावृधे व्वीर्ग्यायुय व्वीर्ग्यायुय व्ववृधेस्म्मुद्द्रयुगस्म्मुद्द्रयुग्ग्वावृधे व्वीर्ग्यायुय[1]। व्वावृधे व्वीर्ग्यायुय व्वीर्ग्यायुय व्ववृधे व्वावृधे व्वीर्ग्यायोरुरुरुर्व्वीर्ग्यायुय व्ववृधे व्वावृधे व्वीर्ग्यायोरुः। व्ववृधऽ इति ववृधे। व्वीर्ग्यायोरुरुरुर्व्वीर्ग्यायुय व्वीर्ग्यायोरुः पृथुः पृथुरुरुर्व्वीर्ग्यायुय व्वीर्ग्यायोरुः पृथुः। उरुः पृथुः पृथुरुरुरुरुः पृथुः सुकृतः सुकृतः पृथुरुरुरुरुः पृथुः सुकृतः। पृथुः सुकृतः सुकृतः पृथुः पृथुः सुकृतः कुर्तृभिः कुर्तृभिः सुकृतः पृथुः पृथुः सुकृतः कुर्तृभिः। सुकृतः कुर्तृभिः कुर्तृभिः सुकृतः सुकृतः कुर्तृभिर्ब्भूद् भूत्कुर्तृभिः सुकृतः सुकृतः कुर्तृभिर्ब्भूत्[2]। सुकृतऽ इति सु कृतः। कुर्तृभिर्ब्भूद् भूत्कुर्तृभिः कुर्तृभिर्ब्भून्महेन्द्राय महेन्द्राय भूत्कुर्तृभिः कुर्तृभिर्ब्भून्महेन्द्राय। कुर्तृभिरिति कुर्तृ भिः। भून्महेन्द्राय महेन्द्राय भूद् भून्महेन्द्राय त्वा त्वा महेन्द्राय भूद् भून्महेन्द्राय त्वा॥ महेन्द्राय त्वा त्वा महेन्द्राय महेन्द्राय त्वा। महेन्द्रायेति महा इन्द्राय। त्वेति त्वा॥३७॥

यऽ ओजसौजसा यो यऽ ओजसा पुर्ज्जन्यः पुर्ज्जन्यऽ ओजसा यो यऽ ओजसा पुर्ज्जन्यः। ओजसा पुर्ज्जन्यः पुर्ज्जन्यऽ ओजसौजसा पुर्ज्जन्यो व्वृष्ट्टिमाँ२॥ऽइव व्वृष्ट्टिमानिव पुर्ज्जन्यऽ ओजसौजसा पुर्ज्जन्यो व्वृष्ट्टिमाँ२॥ऽइव। पुर्ज्जन्यो व्वृष्ट्टिमाँ२॥ऽइव व्वृष्ट्टिमानिव पुर्ज्जन्यः पुर्ज्जन्यो व्वृष्ट्टिमाँ२॥ऽइव। व्वृष्ट्टिमानिवेति वृष्ट्टिमान् इव॥ स्तोमैर्व्वृत्सस्य व्वृत्सस्य स्तोमैः स्तोमैर्व्वृत्सस्य व्वावृधे व्ववृधे व्वृत्सस्य स्तोमैः स्तोमैर्व्वृत्सस्य व्वावृधे। व्वृत्सस्य व्वावृधे व्ववृधे व्वृत्सस्य व्वृत्सस्य व्वावृधे। व्ववृधऽ इति ववृधे॥३८॥

---

1. व वृधवृजोः (वा. प्रा. ३.११३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ वृध परे रहने के कारण व का स्वर दीर्घ होने से वावृधे ऐसा अनुलोम में पाठ होता है।

2. सुकृतम्भूते (वा. प्रा. २.४५) भूतकाल का वाचक सुकृत पद आद्युदात्त होता है।

उदु॒ त्यन्त्यम्म्वुदुदु॒ त्यञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यम्म्वुदुदु॒ त्यञ्जा॒तवे॑दसम्[1]। ॐ॒ऽ इत्यूँ। त्यञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यन्त्यञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वन्दे॒वञ्जा॒तवे॑दस॒न्त्यन्त्य-ञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वम्। जा॒तवे॑दसन्दे॒वन्दे॒वञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वँव्वहन्ति व्वहन्ति दे॒वञ्जा॒तवे॑दसञ्जा॒तवे॑दसन्दे॒वँव्वहन्ति। जा॒तवे॑दस॒मिति॑ जा॒त व्वे॑दसम्। दे॒वँव्वहन्ति व्वहन्ति दे॒वन्दे॒वँव्वहन्ति के॒तव॑ः के॒तवो॑ व्वहन्ति दे॒वन्दे॒वँव्वहन्ति के॒तव॑ः। व्व॒हु॒न्ति॒ के॒तव॑ः के॒तवो॑ व्वहन्ति व्वहन्ति के॒तव॑ः। के॒तव॒ऽ इति॑ के॒तव॑ः॥ दृ॒शे व्विश्वा॑य॒ व्विश्वा॑य दृ॒शे दृ॒शे व्विश्वा॑य॒ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्यँ॒व्विश्वा॑य दृ॒शे दृ॒शे व्विश्वा॑य॒ सूर्य्य॑म्। व्विश्वा॑य॒ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्यँ॒व्विश्वा॑य॒ व्विश्वा॑य॒ सूर्य्य॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्यँ॒व्विश्वा॑य॒ व्विश्वा॑य॒ सूर्य्य॒ꣳ स्वाहा॑। सूर्य्य॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सूर्य्य॒ꣳ सूर्य्य॒ꣳ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३९॥

चि॒त्रन्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रन्दे॒वाना॒मुदु॒द्दे॒वाना॑ञ्चि॒त्रञ्चि॒त्रन्दे॒वाना॒मुत्[2]। दे॒वाना॒मुदु॒द्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मुद॑गादगा॒दु॒द्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॒मुद॑गात्। उद॑गादगा॒दुदुद॑गा॒-दनी॑क॒मनी॑कमगा॒दुदुद॑गा॒दनी॑कम्। अ॒गा॒दनी॑क॒मनी॑कमगादगा॒दनी॑क॒ञ्चक्षु॒श्च-क्षु॒रनी॑कमगादगा॒दनी॑क॒ञ्चक्षु॑ः। अनी॑क॒ञ्चक्षु॒श्चक्षु॒रनी॑क॒मनी॑क॒ञ्चक्षु॒र्म्मि॒त्र-स्य॑ मि॒त्रस्य॒ चक्षु॒रनी॑क॒मनी॑क॒ञ्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॑[3]। चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ चक्षु॒श्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॒ चक्षु॒श्चक्षु॒र्म्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य। मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेर॒ग्नेर्व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेः। व्वरु॑णस्या॒ग्नेर॒ग्नेर्व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्या॒ग्नेः। अ॒ग्नेरित्य॒-

---

[1]. उकारोऽपृक्तोऽस्पर्शात्(वा.प्रा.४.९१) इस सूत्र के अनुसार स्पर्श से बाद में न होने पर ही उकार प्रकृतिभाव से रहता है। त्यम् उ उत् इस विलोम में उकार प्रकृतिभाव से नहीं रहेगा। इस सम्बन्ध में ज्यो. वृ. पृ.२२८ में कहा है- सवर्णेऽपृक्त उः स्पर्शात् स्वरे याति वतामिह। जटायां सवर्णे स्वरे परे स्पर्शात् परः उ इति शब्दो वकारभावं याति। यथा-

उदु त्यन्त्यम्मवुदु दुत्यम्(पद.७.३९ सं.७.४१) अत्र मय उञो वो वा(पा.८.३.३३) इति वकारः।

[2]. वा. प्रा. ६.२७. के अनुसार यहाँ चित्रम् पद में चि से परे त्र में एक ही स्पर्श होगा।

[3]. चक्षुः मित्रस्य यहाँ वा.प्रा.४.३७. के अनुसार विसर्जनीय रेफ होता है तथा वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार रेफ से परवर्ती मकार का द्वित्व होता है।

ग्नेः॥ आप्रा॑ऽ अप्रा॒ऽ आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॑प्रा॒ऽ आप्रा॒ द्यावा॑-पृथि॒वी। अ॒प्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॑प्राऽ अप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॒न्तरि॑-क्षम॒न्तरि॑क्ष॒न्द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॑प्राऽ अप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॒न्तरि॑क्षम्। द्यावा॑-पृथि॒वीऽ अ॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒न्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्य॒ः सूर्यो॒न्तरि॑क्ष॒न्द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ अ॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्यः॑। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। अ॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्य॒ः सूर्यो॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्य॑ऽ आ॒त्मात्मा सूर्यो॒न्तरि॑क्षम॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्य॑ऽ आ॒त्मा। सूर्य॑ऽ आ॒त्मात्मा सूर्य॒ः सूर्य॑ऽ आ॒त्मा जग॑तो॒ जग॑तऽ आ॒त्मा सूर्य॒ः सूर्य॑ऽ आ॒त्मा जग॑तः। आ॒त्मा जग॑तो॒ जग॑तऽ आ॒त्मात्मा जग॑तस्त॒स्थुष॑स्त॒स्थुषो॒ जग॑तऽ आ॒त्मात्मा जग॑तस्त॒स्थुषः॑। जग॑तस्त॒स्थुष॑स्त॒स्थुषो॒ जग॑तो॒ जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च च त॒स्थुषो॒ जग॑तो॒ जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च। त॒स्थुष॑श्च च त॒स्थुष॑स्त॒स्थुष॑श्च॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ च त॒स्थुष॑स्त॒स्थुष॑श्च॒ स्वाहा॑। च॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ च च॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥४०॥

रू॒पेण॑ वो वो रू॒पेण॑ रू॒पेण॑ वो रू॒पꣳ रू॒पँव्वो॑ रू॒पेण॑ रू॒पेण॑ वो रू॒पम्। व्वो॒ रू॒पꣳ रू॒पँव्वो॑ वो रू॒पम॒भ्यु॒भि रू॒पँव्वो॑ वो रू॒पम॒भि। रू॒पम॒भ्यु॒भि रू॒पꣳ रू॒पम॒-भ्यागा॑मगा॒माभि रू॒पꣳ रू॒पम॒भ्यागा॑म्। अ॒भ्यागा॑मगा॒माभ्य॒भ्यागा॑न्तु॒थ-स्तु॒थो॒गा॒माभ्य॒भ्यागा॑न्तु॒थः। आगा॑म्। अ॒गा॒न्तु॒थस्तु॒थो॒गाममगान्तु॒थो वो॑ वस्तु॒थो॒गाममगान्तु॒थो वः॑। तु॒थो वो॑ वस्तु॒थस्तु॒थो वो॑ व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा वस्तु॒थस्तु॒थो वो॑ व्वि॒श्ववे॑दाः। व्वो॒ व्वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा वो वो व्वि॒श्ववे॑दा॒ व्वि वि वि॒श्ववे॑दा वो वो व्वि॒श्ववे॑दा॒ व्वि। व्वि॒श्ववे॑दा॒ व्वि वि वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ व्वि भ॑जतु भजतु॒ व्वि वि॒श्ववे॑दा व्वि॒श्ववे॑दा॒ व्वि भ॑जतु। व्वि॒श्ववे॑दा॒ऽ इति॑ वि॒श्व व्वे॑दाः। व्वि भ॑जतु

भजतु॒ ब्वि वि भ॑जतु। भ॒जु॒त्त्विति॑ भजतु॥ ऋ॒तस्य॑ प॒था प॒थऽ ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ प॒था प्प्र प्प्र प॒थऽ[1] ऋ॒तस्य॑ऽ ऋ॒तस्य॑ प॒था प्प्र। प॒था प्प्र प्प्र प॒था प॒था प्प्रेतै॑त॒ प्प्र प॒था प॒था प्प्रेत॑। प्रेतै॑त॒ प्प्र प्प्रेत॑ च॒न्द्रद॑क्षिणाश्च॒न्द्रद॑क्षिणाऽ इत॒ प्प्र प्प्रेत॑ च॒न्द्रद॑क्षिणाः। इत॒ च॒न्द्रद॑क्षिणाश्च॒न्द्रद॑क्षिणाऽ इतेत च॒न्द्रद॑क्षिणा॒ ब्वि वि च॒न्द्रद॑क्षिणाऽ इतेत च॒न्द्रद॑क्षिणा॒ ब्वि। च॒न्द्रद॑क्षिणा॒ ब्वि वि च॒न्द्रद॑क्षिणा-श्च॒न्द्रद॑क्षिणा॒ ब्वि स्व॒ः स्वु॒र्ब्वि च॒न्द्रद॑क्षिणाश्च॒न्द्रद॑क्षिणा॒ ब्वि स्व॑ः। च॒न्द्र-द॑क्षिणा॒ऽ इति॑ च॒न्द्र द॑क्षिणाः। ब्वि स्व॒ः स्वु॒र्ब्वि वि स्व॒ः पश्श्य॒ पश्श्य॒ स्वु॒र्ब्वि वि स्व॒ः पश्श्य॑। स्व॒ः पश्श्य॒ पश्श्य॒ स्व॒ः स्व॒ः पश्श्य॒ ब्वि वि पश्श्य॒ स्व॒ः स्व॒ः पश्श्य॒ ब्वि। स्व॒रिति॒ स्व॒ः। पश्श्य॒ ब्वि वि पश्श्य॒ पश्श्य॒ द्ध्यु॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षँ॒ब्वि पश्श्य॒ पश्श्य॒ द्ध्यु॒न्तरि॑क्क्षम्। द्ध्य॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षँ॒ब्वि द्ध्य॒न्तरि॑क्क्षँ॒ठ्यतं॑स्व॒ यतं॑स्वा॒न्त-रि॑क्क्षँ॒ब्वि द्ध्य॒न्तरि॑क्क्षँ॒ठ्यतं॑स्व। अ॒न्तरि॑क्क्षँ॒ठ्यतं॑स्व॒ यतं॑स्वा॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षँ॒-ठ्यतं॑स्व सद॒स्यैः सद॒स्यु॒ैर्व्यतं॑स्वा॒न्तरि॑क्क्षम॒न्तरि॑क्क्षँ॒ठ्यतं॑स्व सद॒स्यैः[2]। यतं॑स्व सद॒स्यैः सद॒स्यु॒ैर्व्यतं॑स्व॒ यतं॑स्व सद॒स्यैः। स॒द॒स्यु॒ैरिति॑ सद॒स्यैः॥४१॥

ब्रा॒ह्म॒णम॒द्याद्य ब्ब्रा॒ह्म॒णम्ब्रा॑ह्म॒णम॒द्य ब्वि॑देयँ॒ब्विदेयम॒द्य ब्ब्रा॒ह्म॒णम्ब्रा॑ह्म॒णम॒द्य ब्वि॑देयम्। अ॒द्य ब्वि॑देयँ॒ब्विदेयम॒द्याद्य ब्वि॑देयम्पितृ॒मन्त॑म्पितृ॒मन्तँ॒ब्विदेयम॒द्याद्य ब्वि॑दे-यम्पितृ॒मन्त॑म्। ब्वि॒दे॒यु॒म्पि॒तृ॒मन्त॑म्पितृ॒मन्तँ॒ब्विदेयँ॒ब्विदेयम्पितृ॒मन्त॑म्पैतृ॒म॒त्स्यम्पै॑तृ-म॒त्स्यम्पि॑तृ॒मन्तँ॒ब्विदेयँ॒ब्विदेयम्पितृ॒मन्त॑म्पैतृ॒म॒त्स्यम्। पि॒तृ॒मन्त॑म्पैतृ॒म॒त्स्यम्पै॑तृम॒-त्स्यम्पि॑तृ॒मन्त॑म्पितृ॒मन्त॑म्पैतृ॒म॒त्स्यमृषि॒मृषि॑म्पैतृम॒त्स्यम्पि॑तृ॒मन्त॑म्पितृ॒मन्त॑म्पैतृ-म॒त्स्यमृषि॑म्। पि॒तृ॒मन्त॒मिति॑ पितृ॒ मन्त॑म्[3]। पै॒तृ॒म॒त्स्यमृ॒षि॒मृषि॑म्पैतृम॒त्स्यम्पै॑तृम॒-

[1]. पथा ऋतस्य यहाँ कण्ठ्य ऋकारे ह्रस्वम्(वा.प्रा.४.५०) इस सूत्र के अनुसार ऋकार वाद में होने पर कण्ठ्य स्वर था का ह्रस्व थ होता है।

[2].स्येति ण्यत्वं च(वा.प्रा.४.१५७) के अनुसार सदस्यैः पद में एक यकार है।

[3]. णकारर्कारावबग्रहे (वा. प्रा. १.८८) इस सूत्र के अनुसार णकार एवं ऋकार सावग्रह पद के पूर्वपद में ही आते हैं।

त्यमृषिमार्षेयमार्षेयमृषिम्पैतृमत्त्यम्पैतृमत्त्यमृषिमार्षेयम्। पैतृमत्त्यमिति पैतृ मत्त्यम्। ऋषिमार्षेयमार्षेयमृषिमृषिमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणꣳ सुधातुदक्षिणमार्षेयमृषिमृषिमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणम्। आर्षेयꣳ सुधातुदक्षिणꣳ सुधातुदक्षिणमार्षेयमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणम्। सुधातुदक्षिणमिति सुधातु दक्षिणम्॥ अस्म्मद्राता देवत्रा देवत्रास्म्मद्राताऽ अस्म्मद्राता देवत्रा गच्छत गच्छत देवत्रास्म्मद्राताऽ अस्म्मद्राता देवत्रा गच्छत। अस्म्मद्राताऽ इत्यस्म्मत् राताः। देवत्रा गच्छत गच्छत देवत्रा देवत्रा गच्छत प्प्रदातारम्प्रदातारङ्गच्छत देवत्रा देवत्रा गच्छत प्प्रदातारम्। देवत्रेति देव त्रा[1]। गच्छत प्प्रदातारम्प्रदातारङ्गच्छत गच्छत प्प्रदातारमा विशत व्विशता प्प्रदातारङ्गच्छत गच्छत प्प्रदातारमा विशत। प्रदातारमा विशत व्विशता प्प्रदातारम्प्रदातारमा विशत। प्रदातारमिति प्प्र दातारम्। आ विशत। व्विशतेति विशत॥४२॥

अग्ग्नये त्वा त्वाग्ग्नयेग्ग्नये त्वा मह्यम्मह्यन्त्वाग्ग्नयेग्ग्नये त्वा मह्यम्। त्वा मह्यम्मह्यन्त्वा त्वा मह्यँव्वरुणो व्वरुणो मह्यन्त्वा त्वा मह्यँव्वरुणः। मह्यँव्वरुणो व्वरुणो मह्यम्मह्यँव्वरुणो ददातु ददातु व्वरुणो मह्यम्मह्यँव्वरुणो ददातु। व्वरुणो ददातु ददातु व्वरुणो व्वरुणो ददातु स स ददातु व्वरुणो व्वरुणो ददातु सः। ददातु स स ददातु ददातु सोमृतत्त्वममृतत्त्वꣳ स ददातु ददातु सोमृतत्त्वम्। सोमृतत्त्वममृतत्त्वꣳ स सोमृतत्त्वमशीयाशीयामृतत्त्वꣳ स सोमृतत्त्वमशीय। अमृतत्त्वमशीयाशीयामृतत्त्वममृतत्त्वमशीयायुरायुरशीयामृतत्त्वममृतत्त्वमशीयायुः। अमृतत्त्वमित्यमृत त्वम्। अशीयायुरायुरशीयाशीयायुर्दात्रे दात्रऽ आयुरशीयाशीयायुर्दात्रे। आयुर्दात्रे दात्रऽ आयुरायुर्दात्रऽ एद्ध्येधि दात्रऽ आयुरायुर्दात्रऽ एधि।[2] दात्रऽ एद्ध्येधि दात्रे दात्रऽ एधि मयो मयऽ एधि दात्रे दात्रऽ एधि मयः। एधि

[1]. शस्त्वत्रातातिषु (वा. प्रा. ५.९) इस सूत्र के अनुसार देवत्रा पद का पृथक्करण होता है।

मयो॒ मय॑ऽ एद्ध्येधि॒ मयो॒ मह्य॒म्मह्य॒म्मय॑ऽ एद्ध्येधि॒ मयो॒ मह्य॑म्। मयो॒ मह्य॒म्मह्य॒म्मयो॒ मयो॒ मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मयो॒ मयो॒ मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे। मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे मह्य॒म्मह्य॑म्प्रतिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒त्रे रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ प्प्रतिग्ग्रही॒त्रे प्प्र॑तिग्ग्रही॒त्रे रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒त्रऽ इति॑ प्प्रति ग्रही॒त्रे। रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णो व्वयो॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णो रु॒द्राय॑ रु॒द्राय॑ प्प्रा॒णो व्वय॑ः। प्रा॒णो व्वयो॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वय॑ः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णो व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये। व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वयो॒ व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्क्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ व्वयो॒ व्वयो॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्। बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वक्क्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वङ्ङ्मयो॒ मय॒स्त्वग्ग्बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ त्वङ्ङ् मय॑ः[1]। त्वङ्ङ् मयो॒ मय॒स्त्वक्क्वङ्ङ् मयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ मय॒स्त्वक्क्वङ्ङ् मयो॑ य्य॒माय॑। मयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ मयो॒ मयो॑ य्य॒माय॒ हयो॒ हयो॑ य्य॒माय॒ मयो॒ मयो॑ य्य॒माय॒ हय॑ः। य्य॒माय॒ हयो॒ हयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ हयो॒ व्वयो॒ व्वयो॒ हयो॑ य्य॒माय॑ य्य॒माय॒ हयो॒ व्वय॑ः। हयो॒ व्वयो॒ व्वयो॒ हयो॒ हयो॒ व्वय॑ः। व्वय॒ऽ इति॒ वय॑ः ॥४३॥

कोऽदादद॒त्त्कः कोऽदा॒त्त्कस्म्मै॒ कस्म्मा॑ऽ अदा॒त्त्कः कोऽदा॒त्त्कस्म्मै॑। अ॒दा॒त्त्कस्म्मै॒ कस्म्मा॑ऽ अदादद॒त्त्कस्म्मै॒ काम॒ङ् काम॒ङ् कस्म्मा॑ऽ अदादद॒त्त्कस्म्मै॒ काम॑ः। कस्म्मै॒ काम॒ङ् काम॒ङ् कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ काम॒ङ् कामा॑य॒ कामा॑य॒ काम॒ङ् कस्म्मै॒ कस्म्मै॒ काम॒ङ् कामा॑य। काम॒ङ् कामा॑य॒ कामा॑य॒ काम॒ङ् काम॒ङ्

---

[2]. दात्रे एधि यहाँ सन्ध्यक्षरमयवायावम्(वा.प्रा.४.४८) इस सूत्र से एकार अय् होता है। वा.प्रा.४.१२७. से यकार का लोप तथा सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) से प्राप्त ऐकार का निषेध न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से होता है।

[1]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है। त्वक् मयः यहाँ पञ्चमे पञ्चमम्(वा.प्रा.४.१२३) से ङकार तथा स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से ङकार का द्विर्भाव होता है।

कामा॑य। कामा॒येति॒ कामा॑य॥ कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता काम॑÷। दा॒ता काम॒ꣳ कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॑÷ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता कामो॑ दा॒ता दा॒ता काम॑÷ प्प्रतिग्ग्रही॒ता। काम॑÷ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता काम॒ꣳ काम॑÷ प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॒ काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॒ꣳ काम॑÷ प्प्रतिग्ग्रही॒ता काम॑। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒ता काम॒ काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता कामै॒तदे॒तत्काम॑ प्प्रतिग्ग्रही॒ता प्प्र॑तिग्ग्रही॒ता कामै॒तत्। प्र॒ति॒ग्ग्र॒ही॒तेति॑ प्प्रति ग्रही॒ता। कामै॒तदे॒तत्काम॒ कामै॒तत्ते॑ तऽ ए॒तत्काम॒ कामै॒तत्ते॑। ए॒तत्ते॑ तऽ ए॒तदे॒तत्ते॑। त॒ऽ इति॑ ते॥४४॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे सप्तमोध्यायः॥

॥अष्टमोध्यायः॥

हरि॑÷ ॐ॥ आ॒दि॒त्येभ्य॑स्त्वा त्वादि॒त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्येभ्य॑स्त्वा। त्वेति॑ त्वा॥ व्विष्ण॑ऽ उरुगायोरुगाय॒ व्विष्ण॑णो॒ व्विष्ण॑ऽ उरुगाय। व्विष्ण॑णो॒ऽ इति॒ विष्णो[1]। उ॒रु॒गा॒येत्यु॑रु गाय॥१॥

कु॒दा चु॒न चु॒न कु॒दा कु॒दा चु॒न प्प्र प्प्र चु॒न कु॒दा कु॒दा चु॒न प्प्र[2]। चु॒न प्प्र प्प्र चु॒न चु॒न प्प्र यु॑च्छसि युच्छसि॒ प्प्र चु॒न चु॒न प्प्र यु॑च्छसि। प्र यु॑च्छसि युच्छसि॒ प्प्र प्प्र यु॑च्छस्यु॒भेऽ उ॒भे यु॑च्छसि॒ प्प्र प्प्र यु॑च्छस्यु॒भे। यु॒च्छ॒स्यु॒भेऽ उ॒भे यु॑च्छसि युच्छस्यु॒भे नि न्न्यु॒भे यु॑च्छसि युच्छस्यु॒भे नि। उ॒भे नि न्न्यु॒भेऽ उ॒भे नि पा॑सि पासि॒ न्न्यु॒भेऽ उ॒भे नि पा॑सि। उ॒भेऽ इत्त्यु॒भे। नि पा॑सि पासि॒ नि नि पा॑सि॒ जन्म॑नी॒ जन्म॑नी पासि॒ नि नि पा॑सि॒ जन्म॑नी। पा॒सि॒ जन्म॑नी॒ जन्म॑नी पासि पासि॒ जन्म॑नी। जन्म॑नी॒ऽ इति॒ जन्म॑नी॥ तु॒री॑यादित्त्यादित्त्य॒ तु॒री॑य॒ तु॒री॑यादित्त्य॒ सव॑नु॒ꣳ सव॑नमादित्त्य॒ तु॒री॑य॒ तु॒री॑यादित्त्य॒ सव॑नम्। आ॒दि॒त्त्य॒ सव॑नु॒ꣳ सव॑नमादित्त्यादित्त्य॒ सव॑नन्ते ते॒ सव॑नमादित्त्यादित्त्य॒ सव॑नन्ते। सव॑नन्ते ते॒ सव॑नु॒ꣳ सव॑नन्तऽ इन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्ते॒ सव॑नु॒ꣳ सव॑नन्तऽ इन्द्रि॒यम्। त॒ऽ इ॒न्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यन्ते॑ तऽ इन्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ तस्त्था॒वेन्द्रि॒यन्ते॑ तऽ इन्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ। इ॒न्द्रि॒यमा त॑स्त्थौ तस्त्था॒वेन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमा त॑स्त्थाव॒मृत॑म॒मृत॑न्तस्त्था॒वेन्द्रि॒यमि॑न्द्रि॒यमा त॑स्त्थाव॒मृत॑म्। आ त॑स्त्थौ। त॒स्त्था॒व॒मृत॑म॒मृत॑न्तस्त्थौ तस्त्थाव॒मृत॑न्दि॒वि दि॒व्व्य॒मृत॑न्तस्त्थौ तस्त्थाव॒मृत॑न्दि॒वि। अ॒मृत॑न्दि॒वि दि॒व्व्य॒मृत॑म॒मृत॑न्दि॒व्व्या॒दि॒त्त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्त्येभ्यो॑ दि॒व्व्य॒मृत॑म॒मृत॑न्दि॒व्व्या॒दि॒त्त्येभ्य॑÷। दि॒व्व्या॒दि॒त्त्येभ्य॑ऽ आदि॒त्त्ये-

---

1. वा.प्रा.१.९४. के अनुसार यहाँ विष्णो पद का ओकार प्रगृह्य है।

2. कदा नरिष्येम पूर्वम् (वा. प्रा. २.२३) इस सूत्र के अनुसार कदा पद न रिष्येम से पूर्व में आद्युदात्त होता है, यहाँ कदा पद न रिष्येम से पूर्ववर्ती नहीं है, अतः आद्युदात्त नहीं होगा।

भ्यो दिवि दिष्यादित्येभ्यस्त्वा त्वादित्येभ्यो दिवि दिष्यादित्येभ्यस्त्वा[1]। आदित्येभ्यस्त्वा त्वादित्येभ्यऽ आदित्येभ्यस्त्वा। त्वेति त्वा॥२॥

यज्ञो देवानान्देवानाँऽयज्ञो यज्ञो देवानाम्प्रति प्प्रति देवानाँऽयज्ञो यज्ञो देवानाम्प्रति। देवानाम्प्रति प्प्रति देवानान्देवानाम्प्रत्यैत्येति प्प्रति देवानान्देवानाम्प्रत्यैति। प्रत्यैत्येति प्प्रति प्प्रत्यैति सुम्नꣳ सुम्नमेति प्प्रति प्प्रत्यैति सुम्नम्। एति सुम्नꣳ सुम्नमैत्येति सुम्नमादित्यासऽ आदित्यासः सुम्नमैत्येति सुम्नमादित्यासः। सुम्नमादित्यासऽ आदित्यासः सुम्नꣳ सुम्नमादित्यासो भवत भवतादित्यासः सुम्नꣳ सुम्नमादित्यासो भवत। आदित्यासो भवत भवतादित्यासऽ आदित्यासो भवता मृडयन्तो मृडयन्तो भवतादित्यासऽ आदित्यासो भवता[2] मृडयन्तः। भवता मृडयन्तो मृडयन्तो भवत भवता मृडयन्तः। मृडयन्तऽ इति मृडयन्तः॥ आ वो वऽ आ वोर्वाच्यर्वाची वऽ आ वोर्वाची[3]। व्वोर्वाच्यर्वाची वो वोर्वाची सुमतिः सुमतिरर्वाची वो वोर्वाची सुमतिः। अर्वाची सुमतिः सुमतिरर्वाच्यर्वाची सुमतिर्वृत्याद्ववृत्यात्सुमतिरर्वाच्यर्वाची सुमतिर्वृत्यात्। सुमतिर्वृत्याद्ववृत्यात्सुमतिः सुमतिर्वृत्यादꣳहोरꣳहोर्वृत्यात्सुमतिः सुमतिर्वृत्यादꣳहोः। सुमतिरिति सु मतिः। व्ववृत्यादꣳहोरꣳहोर्वृत्याद्ववृत्यादꣳहोश्चिचिदꣳहोर्वृत्याद्ववृत्यादꣳहोश्चित्। अꣳहोश्चिचिदꣳहोरꣳहोश्चिद्या या चिदꣳहोरꣳहोश्चिद्या। चिद्या या चिच्चिद्या व्वरिवोवित्तरा व्वरिवोवित्तरा या चिच्चिद्या व्वरिवोवित्तरा। या व्वरिवोवित्तरा व्वरिवोवित्तरा या या व्वरिवोवित्तरासदसद्वरिवोवित्तरा या या व्वरिवोवित्तरासत्। व्वरिवोवित्तरासदसद्वरिवोवित्तरा

---

1. त्वा च(वा.प्रा.२.६) इस सूत्र के अनुसार मध्यम पुरुष के अर्थ में विद्यमान त्वा पद अनुदात्त होता है।

2. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार वाद में मकार होने पर भवत के अन्तिम स्वर का दीर्घ होता है।

3. वोर्वाची यहाँ वा. प्रा. ४.६६. के अनुसार अर्वाची के अकार का अभिनिधान होता है।

व्वरिवोवित्तरासंदादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्योसंद्वरिवोवित्तरा व्वरिवोवित्तरासंदादित्येब्भ्यंः । व्वरिवोवित्तरेतिं वरिवोवित् तंरा[1] । असंदादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्योसदसंदादित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्योसदसंदादित्येब्भ्यंस्त्वा। आदित्येब्भ्यंस्त्वा त्वादित्येब्भ्यंऽ आदित्येब्भ्यंस्त्वा। त्वेतिं त्वा॥३॥

व्विवंस्वन्नादित्यादित्य व्विवंस्वन्विवंस्वन्नादित्यैषऽ एषऽ आंदित्य व्विवंस्वन्विवंस्वन्नादित्यैषः। आदित्यैषऽ एषऽ आंदित्यादित्यैष तें तऽ एषऽ आंदित्यादित्यैष तें। एष तें तऽ एषऽ एष तें सोमपीथः सोंमपीथस्तंऽ एषऽ एष तें सोमपीथः। ते सोमपीथः सोंमपीथस्तें ते सोमपीथस्तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्त्सोमपीथस्तें ते सोमपीथस्तस्म्मिंन्। सोमपीथस्तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्त्सोमपीथः सोंमपीथस्तस्म्मिंन्नमत्स्व मत्स्व तस्म्मिंन्त्सोमपीथः सोंमपीथस्तस्म्मिंन्नमत्स्व। सोमपीथऽ इतिं सोम पीथः। तस्म्मिंन्नमत्स्व मत्स्व तस्म्मिँस्तस्म्मिंन्नमत्स्व। मत्स्वेतिं मत्स्व॥ श्रदंस्म्माऽ अस्म्मै श्श्रच्छ्रदंस्म्मै नरो नरोस्म्मै श्श्रच्छ्रदंस्म्मै नरः। अस्म्मै नरो नरोस्म्माऽ अस्म्मै नरो व्वर्चसे व्वर्चसे नरोस्म्माऽ अस्म्मै नरो व्वर्चसे। नरो व्वर्चसे व्वर्चसे नरो नरो व्वर्चसे दधातन दधातन व्वर्चसे नरो नरो व्वर्चसे दधातन। व्वर्चसे दधातन दधातन व्वर्चसे व्वर्चसे दधातन यद्यदंधातन व्वर्चसे व्वर्चसे दधातन यत्। दधातन यद्यदंधातन दधातन यदांशीर्द्दाशीर्द्दा यदंधातन दधातन यदांशीर्द्दा[2]। यदांशीर्द्दाशीर्द्दा यद्यदांशीर्द्दा दम्पंती दम्पंतीऽ आशीर्द्दा यद्यदांशीर्द्दा दम्पंती। आशीर्द्दा दम्पंती दम्पंतीऽ आशीर्द्दाशीर्द्दा दम्पंती व्वामँव्वामन्दम्पंतीऽ आशीर्द्दाशीर्द्दा दम्पंती व्वामम्। आशीर्द्देत्यांशीः दा। दम्पंती व्वामँव्वामन्दम्पंती

---

1. तरतमयोश्चातिशयेऽदक्षिणप्रत्यासङ्गे(वा.प्रा.५.२) इस सूत्र के अनुसार वरिवोवित्तरा इस पद को तरा इस अतिशय के वाचक पदावयव से पृथक् किया जाता है।

2. हविर्दम्पत्योः साध्या दा (वा. प्रा. ४.३३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ आशीर्दा पद स्वरान्त है।

दम्प॑ती ब्रा॒मम॑श्नुतो॒श्नुतो ब्रा॒मन्दम्प॑ती॒ दम्प॑ती ब्रा॒मम॑श्नुतः। दम्प॑ती॒ऽ इति॒ दम्प॑ती। ब्रा॒मम॑श्नुतो॒श्नुतो ब्रा॒मँब्रा॒मम॑श्नुतः। अ॒श्नुतऽ इत्य॑श्नुतः॥ पुमा॑न्पु॒त्रः पु॒त्रः पुमा॒न्पुमा॑न्पु॒त्रो जा॑यते जायते पु॒त्रः पुमा॒न्पुमा॑न्पु॒त्रो जा॑यते। पु॒त्रो जा॑यते जायते पु॒त्रः पु॒त्रो जा॑यते ब्वि॒न्दते॑ ब्वि॒न्दते॑ जायते पु॒त्रः पु॒त्रो जा॑यते ब्वि॒न्दते॑। जा॒य॒ते॒ ब्वि॒न्दते॑ ब्वि॒न्दते॑ जायते जायते ब्वि॒न्दते॒ ब्वसु॒ ब्वसु॑ ब्वि॒न्दते॑ जायते जायते ब्वि॒न्दते॒ ब्वसु॑। ब्वि॒न्दते॒ ब्वसु॒ ब्वसु॑ ब्वि॒न्दते॑ ब्वि॒न्दते॒ ब्वस्वधाध॒ ब्वसु॑ ब्वि॒न्दते॑ ब्वि॒न्दते॒ ब्वस्वध॑। ब्वस्वधाध॒ ब्वसु॒ ब्वस्वधा॑ ब्वि॒श्वाहा॑ ब्वि॒श्वाहाध॒ ब्वसु॒ ब्वस्वधा॑[1] ब्वि॒श्वाहा॑। अधा॑ ब्वि॒श्वाहा॑ ब्वि॒श्वाहाधाधा॑ ब्वि॒श्वाहा॑र॒पो॒र॒पो ब्वि॒श्वाहाधाधा॑ ब्वि॒श्वाहा॑र॒पः। ब्वि॒श्वाहा॑र॒पो॒र॒पो ब्वि॒श्वाहा॑ ब्वि॒श्वाहा॑र॒पऽ एध॑तऽ एधतेर॒पो ब्वि॒श्वाहा॑ ब्वि॒श्वाहा॑र॒पऽ एध॑ते। अ॒र॒पऽ एध॑तऽ एधतेर॒पो॒र॒पऽ एध॑ते गृ॒हे गृ॒हऽ एध॑तेर॒पो॒र॒पऽ एध॑ते गृ॒हे। ए॒ध॒ते॒ गृ॒हे गृ॒हऽ एध॑तऽ एधते गृ॒हे। गृ॒हऽ इति॑ गृ॒हे॥४॥

ब्रा॒मम॒द्याद्य ब्रा॒मँब्रा॒मम॒द्य स॑वितः सवितर॒द्य ब्रा॒मँब्रा॒मम॒द्य स॑वितः। अ॒द्य स॑वितः सवितर॒द्याद्य स॑वितर्ब्रा॒मँब्रा॒मꣳ स॑वितर॒द्याद्य स॑वितर्ब्रा॒मम्। स॒वि॒त॒र्ब्रा॒मँब्रा॒मꣳ स॑वितः सवितर्ब्रा॒ममु श्वः श्वऽ उ॑ ब्रा॒मꣳ स॑वितः सवितर्ब्रा॒ममु श्वः। ब्रा॒ममु॒ श्वः श्वऽ उ॑ ब्रा॒मँब्रा॒ममु॒ श्वो दि॒वेदि॑वे दि॒वेदि॑वे॒ श्वऽ उ॑ ब्रा॒मँब्रा॒ममु॒ श्वो दि॒वेदि॑वे। ऊँ॒ऽ इत्यूँ॑। श्वो दि॒वेदि॑वे दि॒वेदि॑वे॒ श्वः श्वो दि॒वेदि॑वे ब्रा॒मँब्रा॒मन्दि॒वेदि॑वे॒ श्वः श्वो दि॒वेदि॑वे ब्रा॒मम्। दि॒वेदि॑वे ब्रा॒मँब्रा॒मन्दि॒वेदि॑वे दि॒वेदि॑वे ब्रा॒मम॒स्म्मभ्य॑म॒स्म्मभ्यँ॑-ब्रा॒मन्दि॒वेदि॑वे दि॒वेदि॑वे ब्रा॒मम॒स्म्मभ्य॑म्। दि॒वेदि॑व॒ऽ इति॑ दि॒वे दि॑वे। ब्रा॒मम॒स्म्म-भ्य॑म॒स्म्मभ्यँ॑ब्रा॒मँब्रा॒मम॒स्म्मभ्य॑ꣳ सावीः सावीर॒स्म्मभ्यँ॑ब्रा॒मँब्रा॒मम॒स्म्म-भ्य॑ꣳ सावीः। अ॒स्म्मभ्य॑ꣳ सावीः सावीर॒स्म्मभ्य॑म॒स्म्मभ्य॑ꣳ सावीः। सा॒वी॒रिति॑ सावीः॥ ब्रा॒मस्य॒ हि हि ब्रा॒मस्य॑ ब्रा॒मस्य॒ हि क्षय॑स्य॒ क्षय॑स्य॒ हि

[1]. अधायत्स्मग्नावायुषु(वा.प्रा.३.१२६) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अध का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

व्वा॒मस्य॑ व्वा॒मस्य॒ हि क्षय॑स्य। हि क्षय॑स्य॒ क्षय॑स्य॒ हि हि क्षय॑स्य देव दे॒व क्षय॑स्य॒ हि हि क्षय॑स्य देव। क्षय॑स्य देव दे॒व क्षय॑स्य॒ क्षय॑स्य दे॒व भू॒रे॒र्भूरे॑र्द्देव॒ क्षय॑स्य॒ क्षय॑स्य दे॒व भूरे॑ः[1]। दे॒व॒ भू॒रे॒र्भूरे॑र्द्देव दे॒व भूरे॑र॒याया भूरे॑र्द्देव दे॒व भूरे॑र॒या। भूरे॑र॒याया भू॒रे॒र्भूरे॑र॒या धि॒या धि॒याया भू॒रे॒र्भूरे॑र॒या धि॒या। अ॒या धि॒या धि॒यायाया धि॒या व्वा॑म॒भाजो॑ व्वाम॒भाजो॑ धि॒यायाया धि॒या व्वा॑म॒भाज॑÷। धि॒या व्वा॑म॒भाजो॑ व्वाम॒भाजो॑ धि॒या धि॒या व्वा॑म॒भाज॑÷ स्याम स्याम व्वाम॒भाजो॑ धि॒या धि॒या व्वा॑म॒भाज॑÷ स्याम। व्वा॒म॒भाज॑÷ स्याम स्याम व्वाम॒भाजो॑ व्वाम॒भाज॑÷ स्याम। व्वा॒म॒भाज॒ऽ इति॑ वाम॒ भाज॑÷। स्या॒मेति॑ स्याम॥५॥

सा॒वि॒त्रोस्यसि सावि॒त्रः सा॑वि॒त्रोसि चनो॒धाश्चनो॒धाऽ अ॑सि सावि॒त्रः सा॑वि॒त्रोसि चनो॒धाः[2]। अ॒सि॒ च॒नो॒धाश्चनो॒धाऽ अ॑स्यसि चनो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒-धाश्चनो॒धाऽ अ॑स्यसि चनो॒धाश्चनो॒धाः। च॒नो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒धा-श्चनो॒धाऽ अ॑स्यसि चनो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒धाश्चनो॒धाऽ अ॑सि। च॒नो॒धाऽ इति॑ चन॒ः धाः। च॒नो॒धाऽ अ॑स्यसि चनो॒धाश्चनो॒धाऽ अ॑सि॒ चन॒श्चनो॑सि चनो॒धाश्चनो॒धाऽ अ॑सि॒ चन॑÷। च॒नो॒धाऽ इति॑ चन॒ः धाः। अ॒सि॒ चन॒श्चनो॑स्यसि॒ चनो॒ मयि॒ मयि॒ चनो॑स्यसि॒ चनो॒ मयि॑। चनो॒ मयि॒ मयि॒ चन॒श्चनो॒ मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ चन॒श्चनो॒ मयि॑ धेहि। मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि। धे॒हीति॑ धेहि॥ जिन्व॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञञ्जिन्व॑। य॒ज्ञञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञञ्जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑ति॒ञ्जिन्व॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञ-ञ्जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिम्। जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑ति॒ञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य॒

---

1. एकार के साथ विसर्ग रहने पर हेकार सदृश उच्चारण करना चाहिये – ल. मा. शि. २०.

2. चनोधाः चनोधाः यहाँ विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र के अनुसार विसर्जनीय शकार होता है। तदुत्तरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से विहित है।

भगा॑य य॒ज्ञप॑ति॒ञ्जिन्व॒ जिन्व॑ य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य। य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य॒ भगा॑य य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ भगा॑य य॒ज्ञप॑तिँय्य॒ज्ञप॑ति॒म्भगा॑य दे॒वाय॑। य॒ज्ञप॑ति॒मिति॑ य॒ज्ञ प॑तिम्। भगा॑य दे॒वाय॑ दे॒वाय॒ भगा॑य॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा त्वा दे॒वाय॒ भगा॑य॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा। दे॒वाय॑ त्वा त्वा दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे त्वा॑ दे॒वाय॑ दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे। त्वा॒ स॒वि॒त्रे स॑वि॒त्रे त्वा॑ त्वा सवि॒त्रे। स॒वि॒त्रऽ इति॑ सवि॒त्रे॥६॥

सु॒शर्म्मा॑स्यसि सु॒शर्म्मा॑ सु॒शर्म्मा॑सि सुप्प्रतिष्ठा॒नः॑ सु॑प्प्रतिस्त्स्था॒नो॒सि सु॒शर्म्मा॑ सु॒शर्म्मा॑सि सुप्प्रतिष्ठा॒नः॑। सु॒शर्म्मेति॑ सु॒ शर्म्मा॑। अ॒सि॒ सु॒प्प्र॒ति॒ष्ठा॒नः॑ सु॑प्प्रतिस्त्स्था॒नो॒स्यसि सुप्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्स्था॒नो॒स्य-सि सुप्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय। सु॒प्प्र॒ति॒ष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्स्था॒-नः॑ सु॑प्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नमो॒ नमो॑ बृ॒हदु॑क्क्षाय सुप्प्रतिस्त्स्था॒नः॑ सु॑प्प्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नम॑ः। सु॒प्प्र॒ति॒स्त्स्था॒नऽ इति॑ सु प्रतिस्त्स्था॒नः॑[1]। बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नमो॒ नमो॑ बृ॒हदु॑क्क्षाय बृ॒हदु॑क्क्षाय॒ नम॑ः। बृ॒हदु॑क्क्षा॒येति॑ बृ॒हत् उ॑क्क्षाय। नम॒ऽ इति॒ नम॑ः॥७॥

बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव दे॒व बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव सोम सोम दे॒व बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑सुतस्य देव सोम[2]। बृ॒ह॒स्प्पति॑सु॒त॒स्येति॒ बृ॒ह॒स्प्पति॑ सुतस्य। दे॒व॒ सो॒म॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ ते॒ ते॒ सो॒म॒ दे॒व॒ दे॒व॒ सो॒म॒ ते॒। सो॒म॒ ते॒ ते॒ सो॒म॒ सो॒म॒ त॒ऽ इन्दो॒रिन्दो॑स्त्ते सोम सोम त॒ऽ इन्दो॑ः। त॒ऽ इन्दो॒रिन्दो॑-स्त्ते त॒ऽ इन्दो॑रिन्द्रि॒यावं॑तऽ इन्द्रि॒यावं॑त॒ऽ इन्दो॑स्त्ते त॒ऽ इन्दो॑रिन्द्रि॒यावं॑तः[3]।

---

[1]. विनामे(वा.प्रा.४.१९३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ स्थितोपस्थित पाठ होता है।

[2]. वा. प्रा. ३.८१. के अनुसार बृहस्पतिसुतस्य इस पद में सकार प्रकृतिभाव से रहता है। भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र से सु का सकार षकार होता है, जिसका अपवादभूत उक्त सूत्र है।

[3]. वा.प्रा.३.९७. के अनुसार वकार बाद में होने पर इन्द्रिय का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है।

इन्दोरिन्द्रियावतऽ इन्द्रियवतऽ इन्दोरिन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतः पत्नीवतऽ इन्द्रियवतऽ इन्दोरिन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतः। इन्द्रियावतः पत्नीवतः पत्नीवतऽ इन्द्रियवतऽ इन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्ग्रहान्ग्रहान्पत्नीवतऽ इन्द्रियवतऽ इन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्ग्रहान्। इन्द्रियवतऽ इतीन्द्रिय ब्वतः। पत्नीवतो ग्ग्रहान्ग्रहान्पत्नीवतः पत्नीवतो ग्ग्रहाँ२॥ऽ ऋद्ध्यासमृद्ध्यासङ्ग्रहान्पत्नीवतः पत्नीवतो ग्ग्रहाँ२॥ऽ ऋद्ध्यासम्। पत्नीवतऽ इति पत्नी ब्वतः। ग्रहाँ२॥ऽ ऋद्ध्यासमृद्ध्यासङ्ग्रहान्ग्रहाँ२॥ऽ ऋद्ध्यासम्। ऋद्ध्यासमित्यृद्ध्यासम्॥ अहम्परस्तात्परस्तादहमहम्परस्तादहमहम्परस्तादहमहम्परस्तादहम्। परस्तादहमहम्परस्तात्परस्तादहमवस्तादवस्तादहम्परस्तात्परस्तादहमवस्तात्। अहमवस्तादवस्तादहमहमवस्ताद्यद्यदवस्तादहमहमवस्ताद्यत्। अवस्ताद्यद्यदवस्तादवस्ताद्यदन्तरिक्षमन्तरिक्षँय्यदवस्तादवस्ताद्यदन्तरिक्षम्। यदन्तरिक्षमन्तरिक्षँय्यद्यदन्तरिक्षन्तत्तदन्तरिक्षँय्यद्यदन्तरिक्षन्तत्। अन्तरिक्षन्तत्तदन्तरिक्षमन्तरिक्षन्तदु मे मऽ उ तदन्तरिक्षमन्तरिक्षन्तदु मे। तदु मे मऽ उ तत्तदु मे पिता पिता मऽ उ तत्तदु मे पिता। उँऽ इत्यूँ। मे पिता पिता मे मे पिताभूदभूत्पिता मे मे पिताभूत्। पिताभूदभूत्पिता पिताभूत्। अभूदित्यभूत्॥ अहꣳ सूर्य्यꣳ सूर्य्यमहमहꣳ सूर्य्यमुभयतऽ उभयतः सूर्य्यमहमहꣳ सूर्य्यमुभयतः। सूर्य्यमुभयतऽ उभयतः सूर्य्यꣳ सूर्य्यमुभयतो ददर्श ददर्शोभयतः सूर्य्यꣳ सूर्य्यमुभयतो ददर्श। उभयतो ददर्श ददर्शोभयतऽ उभयतो ददर्शाहमहन्ददर्शोभयतऽ उभयतो ददर्शाहम्। ददर्शाहमहन्ददर्श ददर्शाहन्देवानान्देवानामहन्ददर्श ददर्शाहन्देवानाम्। अहन्देवानान्देवानामहमहन्देवानाम्परमम्परमन्देवानामहमहन्देवानाम्परमम्। देवानाम्परमम्परमन्देवानान्देवानाम्परमङ्गुहा गुहा परमन्देवाना-

न्दे॒वाना॑म्पर॒मङ्गुहा॑। प॒र॒मङ्गुहा॒ गुहा॑ पर॒मम्प॑र॒मङ्गुहा॒ यद्यद् गुहा॑ पर॒मम्प॑र॒मङ्गुहा॒ यत्। गुहा॒ यद्यद् गुहा॒ गुहा॒ यत्। यदिति॒ यत्॥८॥

अग्ग्ना३॥ऽइ पत्नी॑व॒न्त्पत्नी॑व॒न्नग्ग्ना३॥ऽ अग्ग्ना३॥ऽइ पत्नी॑वन्त्स॒जूः॒ स॒जूः॒ पत्नी॑व॒न्नग्ग्ना३॥ऽ अग्ग्ना३॥ऽइ पत्नी॑वन्त्स॒जूः॒[1]। पत्नी॑वन्त्स॒जूः॒ स॒जूः॒ पत्नी॑व॒न्त्पत्नी॑वन्त्स॒जूर्द्दे॒वेन॑ दे॒वेन॑ स॒जूः॒ पत्नी॑व॒न्त्पत्नी॑वन्त्स॒जूर्द्दे॒वेन॑। पत्नी॑-व॒न्निति॒ पत्नी॑ व्वन्। स॒जूर्द्दे॒वेन॑ दे॒वेन॑ स॒जूः॒ स॒जूर्द्दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ दे॒वेन॑ स॒जूः॒ स॒जूर्द्दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॑। स॒जूरिति॑ स॒ जूः॒। दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ दे॒वेन॑ दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ सोम॒ꣳ सोम॒न्त्वष्ट्रा॑ दे॒वेन॑ दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ सोम॑म्। त्वष्ट्रा॒ सोम॒ꣳ सोम॒न्त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॒ सोम॑म्पिब पिब॒ सोम॒न्त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॒ सोम॑म्पिब। सोम॑म्पिब पिब॒ सोम॒ꣳ सोम॑म्पिब॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पिब॒ सोम॒ꣳ सोम॑म्पिब॒ स्वाहा॑। पि॒ब॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ पिब पिब॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ प्र॒जाप॑तिर्व्वृषा॒ व्वृषा॑ प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिर्व्वृषा॑स्यसि॒ व्वृषा॑ प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिर्व्वृषा॑सि। प्र॒जाप॑ति॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तिः। व्वृषा॑स्यसि॒ व्वृषा॒ व्वृषा॑सि रेतो॒धा रे॑तो॒धाऽ अ॑सि॒ व्वृषा॒ व्वृषा॑सि रेतो॒धाः। अ॒सि॒ रे॒तो॒धा रे॑तो॒धाऽ अ॑स्यसि रेतो॒धा रेतो॒ रेतो॑ रेतो॒धाऽ अ॑स्यसि रेतो॒धा रेतः॑। रे॒तो॒धा रेतो॒ रेतो॑ रेतो॒धा रे॑तो॒धा रेतो॒ मयि॒ मयि॒ रेतो॑ रेतो॒धा रे॑तो॒धा रेतो॒ मयि॑। रे॒तो॒धाऽ इति॑ रेतः॒ धाः। रेतो॒ मयि॒ मयि॒ रेतो॒ रेतो॒ मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ रेतो॒ रेतो॒ मयि॑ धेहि। मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेर्द्धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि प्प्र॒जाप॑तेः। धे॒हि॒ प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेर्द्धेहि धेहि प्प्र॒जाप॑तेस्ते ते प्प्र॒जाप॑तेर्द्धेहि धेहि प्प्र॒जाप॑ते-

[1]. वा. प्रा. २.५०. के अनुसार अग्ना३॥ऽइ पद सर्वोदात्त एवं तीन मात्रा का है। अग्ना३॥ऽ इ अग्ना३॥ऽ इ की द्विरुक्ति में प्रथम इ का यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः (वा. प्रा. ४.१२७) से लोप होने के कारण यण् सन्धि अप्राप्त है। अतः अग्ग्नाय्यग्ग्ना ऐसी सन्धि नहीं होगी। इकार का लोप होने के पश्चात् प्राप्त स्वरसन्धि का न परकालः पूर्वकाले पुनः (वा. प्रा. ३.४) इस सूत्र से निषेध होता है।

स्ते॑[1]। प्र॒जाप॑तेस्त्ते ते प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेस्त्ते॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेस्त्ते॒ ब्वृष्ण्ण॑ः। प्र॒जाप॑ते॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तेः[2]। ते॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते ते॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धसो॒ ब्वृष्ण्ण॑स्त्ते ते॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धस॑ः। ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒-धसो॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाꣳ रै॑तो॒धाꣳ रै॑तो॒धसो॒ ब्वृष्ण्णो॒ ब्वृष्ण्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम्। रे॒तो॒धसो॑ रेतो॒धाꣳ रै॑तो॒धाꣳ रै॑तो॒धसो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम॑शीयाशीय रेतो॒धाꣳ रै॑तो॒धसो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम॑शीय। रे॒तो॒धस॒ऽ इति॑ रेत॒ः धस॑ः। रे॒तो॒धाम॑शीयाशीय रेतो॒धाꣳ रै॑तो॒धाम॑शीय। रे॒तो॒धामिति॑ रेत॒ः धाम्। अ॒शी॒येत्त्यं॑शीय॥९॥

हरि॑रस्यसि॒ हरि॒र्हरि॑रसि हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो॒सि॒ हरि॒र्हरि॑रसि हारियो-ज॒नः। अ॒सि॒ हा॒रि॒यो॒ज॒नो हा॑रियोज॒नो॒स्यसि हारियोज॒नो हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो॒स्यसि हारियोज॒नो हरि॑ब्भ्याम्। हा॒रि॒यो॒ज॒नो हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो हरि॑ब्भ्यान्त्त्वा त्त्वा॒ हरि॑ब्भ्याꣳ हारियोज॒नो हा॑रियोज॒नो हरि॑ब्भ्यान्त्त्वा। हा॒रि॒यो॒ज॒नऽ इति॑ हारि योज॒नः। हरि॑ब्भ्यान्त्त्वा त्त्वा॒ हरि॑ब्भ्या॒ꣳ हरि॑ब्भ्यान्त्त्वा। हरि॑ब्भ्या॒मिति॒ हरि॑ भ्याम्। त्त्वेति॑ त्त्वा॥ हर्व्वो॑र्द्धा॒ना धा॒ना हर्व्वो॒र्हर्व्वो॑र्द्धा॒ना स्त्थ॑ स्त्थ धा॒ना हर्व्वो॒र्हर्व्वो॑र्द्धा॒ना स्त्थ॑। धा॒ना स्त्थ॑ स्त्थ धा॒ना धा॒ना स्त्थ॑ स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा स्त्थ धा॒ना धा॒ना स्त्थ॑ स॒हसो॑माः। स्त्थ॒ स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा स्त्थ स्त्थ स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य स॒हसो॑मा स्त्थ स्त्थ स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॑य। स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य स॒हसो॑माः स॒हसो॑मा॒ऽ इन्द्रा॑य। स॒हसो॑मा॒ऽ इति॑ स॒ह सो॑माः। इन्द्रा॒येतीन्द्रा॑य॥१०॥

---

1. तथयोः सम् (वा. प्रा. ३.८) तकार एवं थकार परे रहते विसर्जनीय सकार हो जाता है।

2. बहुप्रकृतावागन्तुना पर्वणा(वा.प्रा.५.७) इस सूत्र के अनुसार प्रजापतेः इस पद में समास के नियमानुसार समास रचना के समय बाद में जोड़े गये पद पतेः को पृथक् किया गया है।

यस्तें ते यो यस्तेंऽ अश्वसनिंरश्वसनिंस्ते यो यस्तेंऽ अश्वसनिंः। तेऽ अश्वसनिंरश्वसनिंस्ते तेऽ अश्वसनिंर्भक्षो भक्षोश्वसनिंस्ते तेऽ अश्वसनिंर्भक्षः। अश्वसनिंर्भक्षो भक्षोश्वसनिंरश्वसनिंर्भक्षो यो यो भक्षोश्वसनिंरश्वसनिंर्भक्षो यः। अश्वसनिरित्यंश्व सनिंः। भक्षो यो यो भक्षो भक्षो यो गोसनिंर्गोसनिर्यो भक्षो भक्षो यो गोसनिंः। यो गोसनिंर्गोसनिर्यो यो गोसनिस्तस्य तस्यं गोसनिर्यो यो गोसनिस्तस्यं। गोसनिस्तस्य तस्यं गोसनिंर्गोसनिस्तस्यं ते ते तस्यं गोसनिंर्गोसनिस्तस्यं ते। गोसनिरितिं गो सनिंः। तस्यं ते ते तस्य तस्यं तऽ इष्टयंजुषऽ इष्टयंजुषस्ते तस्य तस्यं तऽ इष्टयंजुषः[1]। तेऽ इष्टयंजुषऽ इष्टयंजुषस्ते तऽ इष्टयंजुष स्तुतस्तोंमस्य स्तुतस्तोंमस्येष्टयंजुषस्ते तऽ इष्टयंजुष स्तुतस्तोंमस्य। इष्टयंजुष स्तुतस्तोंमस्य स्तुतस्तोंमस्येष्टयंजुषऽ इष्टयंजुष स्तुतस्तोंमस्य शस्तोक्थंस्य शस्तोक्थंस्य स्तुतस्तोंमस्येष्टयंजुषऽ इष्टयंजुष स्तुतस्तोंमस्य शस्तोक्थंस्य। इष्टयंजुषऽ इतीष्ट यंजुषः। स्तुतस्तोंमस्य शस्तोक्थंस्य शस्तोक्थंस्य स्तुतस्तोंमस्य स्तुतस्तोंमस्य शस्तोक्थस्योपंहूतस्योपंहूतस्य शस्तोक्थंस्य स्तुतस्तोंमस्य स्तुतस्तोंमस्य शस्तोक्थस्योपंहूतस्य। स्तुतस्तोंमस्येतिं स्तुत स्तोंमस्य। शस्तोक्थस्योपंहूतस्योपंहूतस्य शस्तोक्थंस्य शस्तोक्थस्योपंहूतस्योपंहूतऽ उपंहूतऽ उपंहूतस्य शस्तोक्थंस्य शस्तोक्थस्योपंहूतस्योपंहूतः। शस्तोक्थस्येतिं शस्त उंक्थस्य। उपंहूतस्योपंहूतऽ उपंहूतऽ उपंहूतस्योपंहूतस्योपंहूतो भक्षयामि भक्षयाम्म्युपंहूतऽ उपंहूतस्योपंहूतस्योपंहूतो भक्षयामि। उपंहूतस्येत्युपं हूतस्य। उपंहूतो भक्षयामि

[1]. इष्टयजुषः यहाँ समस्तपद के मध्य में होने से यकार यकार नहीं होगा। स्थितोपस्थित पद में उत्तर पद का आदि होने से यकार होगा।

भक्षया॒म्म्युप॑हूत॒ऽ उप॑हूतो भक्षयामि। उप॑हूत॒ऽ इत्युप॑ हूतः। भ॒क्ष॒या॒मीति॑ भक्षयामि॥११॥

दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑स॒ऽ एन॑सो दे॒वकृ॑तस्य दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑सोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑सो दे॒वकृ॑तस्य दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑सोव॒यज॑नम्[1]। दे॒वकृ॑त॒स्येति॑ दे॒व कृ॑तस्य। एन॑सोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑स॒ऽ एन॑सोव॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑न॒मेन॑स॒ऽ एन॑सोव॒यज॑नमसि[2]। अ॒व॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्यास्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि मनु॒ष्य॒कृतस्य। अ॒व॒यज॑न॒मित्य॑व॒ यज॑नम्। अ॒सि॒ म॒नु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्यास्यसि मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्यास्यसि मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य। म॒नु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य मनु॒ष्य॒कृतस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य। म॒नु॒ष्य॒कृत॒स्येति॑ मनु॒ष्य॒ कृतस्य। पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्य पि॒तृकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसः। पि॒तृकृ॑त॒स्येति॑ पि॒तृ कृ॑तस्य। आ॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑सऽएनसऽ आ॒त्मकृ॑तस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सऽएनसोव॒यज॑नम्। आ॒त्मकृ॑त॒स्येत्या॒त्म कृ॑तस्य। एन॑सऽएनसोव॒यज॑नमव॒यज॑न॒मेन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसोव॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑न॒मेन॑सऽएनस॒ऽ एन॑सऽएनसोव॒यज॑नमसि। एन॑सऽएनस॒ऽ इत्येन॑सः एनसः। अ॒व॒यज॑नमस्यस्यव॒यज॑नमव॒यज॑नमसि। अ॒व॒यज-

---

1. एनोऽपापो (वा. प्रा. २.१३) पाप का वाचक न होने पर एनः पद अनुदात्त होता है। यहाँ पाप का वाचक होने के कारण आद्युदात्त है।

2. असि(वा.प्रा.२.८) असि पद अनुदात्त होता है।

नु॒मित्त्य॑व॒ यजनम्। अ॒सीत्त्य॑सि॥ यच्च॑ च॒ यद्यच्चा॒हम॒हञ्च॒ यद्यच्चा॒हम्। चा॒हम॒हञ्च॑ चा॒हमेन॒ऽ एनो॒हञ्च॑ चा॒हमेन॑ः। अ॒हमेन॒ऽ एनो॒हम॒हमेनो॑ ब्रि॒द्वान्त्वि॒द्वानेनो॒हम॒ह-मेनो॑ ब्रि॒द्वान्। एनो॑ ब्रि॒द्वान्त्वि॒द्वानेन॒ऽ एनो॑ ब्रि॒द्वाँश्च॒कार॑ च॒कार॑ ब्रि॒द्वानेन॒ऽ एनो॑ ब्रि॒द्वाँश्च॒कार॑। ब्रि॒द्वाँश्च॒कार॑ च॒कार॑ ब्रि॒द्वान्त्वि॒द्वाँश्च॒कार॒ यद्यच्च॒कार॑ ब्रि॒द्वान्त्वि॒द्वाँश्च॒कार॒ यत्। च॒कार॒ यद्यच्च॒कार॑ च॒कार॒ यच्च॑ च॒ यच्च॒कार॑ च॒कार॒ यच्च॑। यच्च॑ च॒ यद्यच्चावि॑द्वा॒नवि॑द्वाँश्च॒ यद्यच्चावि॑द्वान्। चावि॑द्वा॒नवि॑द्वाँश्च॒ चावि॑द्वाँ॒स्तस्य॒ तस्यावि॑द्वाँश्च॒ चावि॑द्वाँ॒स्तस्य॑[1]। अवि॑द्वाँ॒स्तस्य॒ तस्यावि॑द्वा॒नवि॑द्वाँ॒स्तस्य॒ सर्ब्व॑स्य॒ सर्ब्व॑स्य॒ तस्या-वि॑द्वा॒नवि॑द्वाँ॒स्तस्य॒ सर्ब्व॑स्य। तस्य॒ सर्ब्व॑स्य॒ सर्ब्व॑स्य॒ तस्य॒ तस्य॒ सर्ब्व॑स्य। सर्ब्व॒स्येति॒ सर्ब्व॑स्य॥१२॥

समि॑न्द्रेन्द्र॒ सꣳ समि॑न्द्र णो न॒ऽ इन्द्र॒ सꣳ समि॑न्द्र णः[2]। इ॒न्द्र॒ णो॒ न॒ऽ इ॒न्द्रेन्द्र॒ णो॒ मन॑सा॒ मन॑सा न॒ऽ इन्द्रेन्द्र णो॒ मन॑सा। नो॒ मन॑सा॒ मन॑सा नो नो॒ मन॑सा नेषि नेषि॒ मन॑सा नो नो॒ मन॑सा नेषि। मन॑सा नेषि नेषि॒ मन॑सा॒ मन॑सा नेषि॒ गोभि॒र्ग्गोभि॑र्न्नेषि॒ मन॑सा॒ मन॑सा नेषि॒ गोभि॑ः। ने॒षि॒ गोभि॒र्ग्गोभि॑र्न्नेषि नेषि॒ गोभि॑ः सू॒रिभि॑ः सू॒रिभि॒र्ग्गोभि॑र्न्नेषि नेषि॒ गोभि॑ः सू॒रिभि॑ः। गोभि॑ः सू॒रिभि॑ः सू॒रिभि॒र्ग्गोभि॒र्ग्गोभि॑ः सू॒रिभि॑र्म्मघवन्मघवन्त्सू॒रिभि॒र्ग्गोभि॒र्ग्गोभि॑ः सू॒रिभि॑र्म्म-घवन्। सू॒रिभि॑र्म्मघवन्मघवन्त्सू॒रिभि॑ः सू॒रिभि॑र्म्मघवन्त्स्व॒स्त्या स्व॒स्त्या म॑घ-वन्त्सू॒रिभि॑ः सू॒रिभि॑र्म्मघवन्त्स्व॒स्त्या। सू॒रिभि॒रिति॑ सू॒रि भि॑ः। म॒घ॒व॒न्त्स्व॒स्त्या स्व॒स्त्या म॑घवन्मघवन्त्स्व॒स्त्या। म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ ब्रन्। स्व॒स्त्येति॑ स्व॒स्त्या॥ ब्रह्म॑णा दे॒वकृ॑तन्दे॒वकृ॑त॒म्ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा दे॒वकृ॑त॒ꣳ्यद्यद्दे॒वकृ॑त॒म्ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा

1. अविद्वाँस्तस्य यहाँ अनुनासिकत्व पृथग् वर्ण न होकर आकार का धर्म है, अतः वा.प्रा.३.१०३. के अनुसार तकार का द्वित्व होने में कुछ बाधा न होगी।

2. वा. प्रा. ३.८६. के अनुसार समिन्द्र णः यहाँ नकार निपातन से णकार होता है। ज्यो. वृ. पृ.२२ में कहा है- अन्यथाप्राप्तस्य अन्यथोच्चारणं निपातनम्।

देवकृतँय्यत्। देवकृतँय्यद्यद्देवकृतन्देवकृतँय्यदस्त्यस्ति यद्देवकृतन्देवकृतँय्यद-स्ति। देवकृतमिति देव कृतम्। यदस्त्यस्ति यद्यदस्ति देवानान्देवानामस्ति यद्यदस्ति देवानाम्। अस्ति देवानान्देवानामस्त्यस्ति देवानाꣳ सुमतौ सुमतौ देवानामस्त्यस्ति देवानाꣳ सुमतौ। देवानाꣳ सुमतौ सुमतौ देवानान्देवानाꣳ सुमतौ यज्ञियानाँय्यज्ञियानाꣳ सुमतौ देवानान्देवानाꣳ सुमतौ यज्ञियानाम् । सुमतौ यज्ञियानाँय्यज्ञियानाꣳ सुमतौ सुमतौ यज्ञियानाꣳ स्वाहा स्वाहा यज्ञियानाꣳ सुमतौ सुमतौ यज्ञियानाꣳ स्वाहा। सुमताविति सु मतौ। यज्ञियानाꣳ स्वाहा स्वाहा यज्ञियानाँय्यज्ञियानाꣳ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१३॥

धाता राती रातिर्द्धाता धाता रातिः सविता सविता रातिर्द्धाता धाता रातिः सविता[1]। रातिः सविता सविता राती रातिः सवितेदमिदꣳ सविता राती रातिः सवितेदम्[2]। सवितेदमिदꣳ सविता सवितेदञ्जुषन्ताञ्जुषन्तामिदꣳ सविता सवितेदञ्जुषन्ताम्। इदञ्जुषन्ताञ्जुषन्तामिदमिदञ्जुषन्ताम्प्रजापतिः प्प्रजापति-र्ज्जुषन्तामिदमिदञ्जुषन्ताम्प्रजापतिः। जुषन्ताम्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्ज्जुषन्ता-ञ्जुषन्ताम्प्रजापतिर्न्निधिपा निधिपाः प्प्रजापतिर्ज्जुषन्ताञ्जुषन्ताम्प्रजापतिर्न्निधि-पाः। प्रजापतिर्न्निधिपा निधिपाः प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्न्निधिपा देवो देवो निधिपाः प्प्रजापतिः प्प्रजापतिर्न्निधिपा देवः। प्रजापतिरिति प्प्रजा पतिः। निधिपा देवो देवो निधिपा निधिपा देवोऽअग्निरग्निर्द्देवो निधिपा निधिपा देवोऽअग्निः। निधिपाऽइति निधि पाः। देवोऽअग्निरग्निर्द्देवो देवोऽअग्निः।

1. रातिः रातिः यहाँ सन्धि की दशा में रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा (वा. प्रा. ४.३६) इस सूत्र से रेफ परे रहने के कारण विसर्ग का लोप एवं उपधा का दीर्घ होता है।

2. सविता इदम् यहाँ अथैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इसके अधिकार में पठित सूत्र कण्ठ्यादिवर्ण एकारम्(वा.प्रा.४.५४) से आ से परवर्ती इ आ के साथ एकार होता है।

अ॒ग्निरित्य॒ग्निः॥ त्वष्टा॑ व्विष्णुर्व्विष्णुस्त्वष्टा॑ त्वष्टा॑ व्विष्णुं॑ प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ व्विष्णुस्त्वष्टा॑ त्वष्टा॑ व्विष्णुं॑ प्प्र॒जया॑। व्विष्णुं॑ प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ व्विष्णुर्व्वि-ष्णुं॑ प्प्र॒जया॑ सꣳर॒राणाः॑ संꣳर॒राणाः॑ प्प्र॒जया॑ व्विष्णुर्व्विष्णुं॑ प्प्र॒जया॑ सꣳर-रा॒णाः॑। प्र॒जया॑ सꣳर॒राणाः॑ संꣳर॒राणाः॑ प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ सꣳर॒राणा यज॑मानाय॒ यज॑मानाय सꣳर॒राणाः॑ प्प्र॒जया॑ प्प्र॒जया॑ सꣳर॒राणा यज॑मानाय। प्र॒जयेति॑ प्प्र॒ जया॑। स॒ꣳर॒राणा यज॑मानाय॒ यज॑मानाय सꣳर॒राणाः॑ संꣳर॒राणा यज॑मानाय॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँꣳय्यज॑मानाय सꣳर॒राणाः॑ संꣳर॒राणा यज॑मानाय॒ द्रवि॑णम्। स॒ꣳर॒राणाऽ इति॑ सम् र॒राणाः॑। यज॑मानाय॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँꣳय्यज॑मानाय॒ यज॑मानाय॒ द्रवि॑णन्दधात दधात॒ द्रवि॑णँꣳय्यज॑मानाय॒ यज॑मानाय॒ द्रवि॑णन्दधात। द्रवि॑णन्दधात दधात॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णन्दधात॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ दधात॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण-न्दधात॒ स्वाहा॑। द॒धा॒त॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ दधात दधात॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१४॥

सु॒गा वो॑ वः सु॒गा सु॒गा वो॑ देवा देवा वः सु॒गा सु॒गा वो॑ देवाः। सु॒गेति॑ सु॒ गा। व्वो॒ दे॒वा॒ दे॒वा॒ वो॒ वो॒ दे॒वा॒ः सद॑ना॒ सद॑ना देवा वो वो देवा॒ः सद॑ना। दे॒वा॒ः सद॑ना॒ सद॑ना देवा देवा॒ः सद॑नाऽ अकर्म्मा॑कर्म्म॒ सद॑ना देवा देवा॒ः सद॑नाऽ अकर्म्म[1]। सद॑नाऽ अकर्म्मा॑कर्म्म॒ सद॑ना॒ सद॑नाऽ अकर्म्म॒ ये येऽकर्म्म॒ सद॑ना॒ सद॑नाऽ अकर्म्म॒ ये। अ॒कु॒र्म्म॒ ये येऽकर्म्मा॑कर्म्म॒ यऽ आ॑ज॒ग्ग्माज॒ग्ग्म येऽकर्म्मा॑क-र्म्म॒ यऽ आ॑ज॒ग्ग्म। यऽ आ॑ज॒ग्ग्माज॒ग्ग्म ये यऽ आ॑ज॒ग्ग्मेदमि॒दमा॑ज॒ग्ग्म ये यऽ आ॑ज॒ग्ग्मेदम्। आ॒ज॒ग्ग्मेदमि॒दमा॑ज॒ग्ग्माज॒ग्ग्मेदꣳ सव॑न॒ꣳ सव॑नमि॒दमा॑ज॒ग्ग्मा-ज॒ग्ग्मेदꣳ सव॑नम्। आ॒ज॒ग्ग्मेत्या॑ ज॒ग्ग्म। इ॒दꣳ सव॑न॒ꣳ सव॑नमि॒दमि॒दꣳ सव॑नञ्जुषा॒णा जुं॑षा॒णाः॑ सव॑नमि॒दमि॒दꣳ सव॑नञ्जुषा॒णाः॑। सव॑नञ्जुषा॒णा जुं॑षा॒णाः॑

[1]. वा. प्रा. ४.८७. के अनुसार सदना अकर्म यहाँ सदना यह पद प्रकृतिभाव से रहता है। अतः सूत्र ४.५२. से दीर्घ की प्राप्ति नहीं होगी।

सर्वनऽ सर्वनञ्जुषाणाः। जुषाणाऽ इतिं जुषाणाः॥ भरंमाणा ब्रहंमाना ब्रहंमाना भरंमाणा भरंमाणा ब्रहंमाना हुवीꣳषिं हुवीꣳषि ब्रहंमाना भरंमाणा भरंमाणा ब्रहंमाना हुवीꣳषिं। ब्रहंमाना हुवीꣳषिं हुवीꣳषि ब्रहंमाना ब्रहंमाना हुवीꣳष्यु-स्म्मेऽ अुस्म्मे हुवीꣳषि ब्रहंमाना ब्रहंमाना हुवीꣳष्युस्म्मे। हुवीꣳष्युस्म्मेऽ अुस्म्मे हुवीꣳषिं हुवीꣳष्युस्म्मे धंत्त धत्तास्म्मे हुवीꣳषिं हुवीꣳष्युस्म्मे धंत्त। अुस्म्मे धंत्त धत्तास्म्मेऽ अुस्म्मे धंत्त ब्रसवो ब्रसवो धत्तास्म्मेऽ अुस्म्मे धंत्त ब्रसवः। अुस्म्मेऽ इत्त्युस्म्मे। धत्त ब्रुसवो ब्रुसवो धत्त धत्त ब्रुसवो ब्रसूंनि ब्रसूंनि ब्रसवो धत्त धत्त ब्रसवो ब्रसूंनि। ब्रुसवो ब्रसूंनि ब्रसूंनि ब्रसवो ब्रसवो ब्रसूंनि स्वाहा स्वाहा ब्रसूंनि ब्रसवो ब्रसवो ब्रसूंनि स्वाहां। ब्रसूंनि स्वाहा स्वाहा ब्रसूंनि ब्रसूंनि स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥१५॥

याँ२॥ऽ आवुहोवंहऽ आ यान्याँ२॥ऽ आवंहऽ उशतऽ उंशतोवंहऽ आ यान्याँ२॥ऽ आवंहऽ उशतः[1]। आवंहः। अवंहऽ उशतऽ उंशतोवुहोवंहऽ उशतो देंव देवोशतोवुहोवंहऽ उशतो देंव। उुशतो देंव देवोशतऽ उंशतो देंव देुवान्देवा-न्देंवोशतऽ उंशतो देंव देुवान्। देुव देुवान्देुवान्देंव देव देुवाँस्ताँस्तान्देुवान्देंव देव देुवाँस्तान्। देुवाँस्ताँस्तान्देुवान्देुवाँस्तान्प्र प्प्र तान्देुवान्देुवाँस्तान्प्र। तान्प्र प्प्र ताँस्तान्प्रेरंयेरयु प्प्र ताँस्तान्प्रेरंय। प्रेरंयेरयु प्प्र प्प्रेरंयु स्वे स्वऽ ईरंयु प्प्र प्प्रेरंयु स्वे। ईरयु स्वे स्वऽ ईरंयेरयु स्वेऽ अंग्ग्नेग्ग्ने स्वऽ ईरंयेरयु स्वेऽ अंग्ग्ने। स्वेऽ अंग्ग्नेग्ग्ने स्वे स्वेऽ अंग्ग्ने सुधस्त्थें सुधस्त्थेंग्ग्ने स्वे स्वेऽ अंग्ग्ने सुधस्त्थें। अुग्ग्ने सुधस्त्थें सुधस्त्थेंग्ग्नेग्ग्ने सुधस्त्थें। सुधस्त्थुऽ इतिं सुध स्थें॥ जुक्क्षिवाꣳसंः पपिवाꣳसंः

[1]. यान् आ यहाँ आकारोपधो यकारम्(वा.प्रा.३.१४२) इस सूत्र से नकार यकार तथा उपधा अनुनासिक होता है। यवयोः पदान्तयोः स्वरमध्ये लोपः(वा.प्रा.४.१२७) से यकार का लोप होने पर न परकालः पूर्वकाले पुनः(वा.प्रा.३.४) से पूर्वकाल की सन्धि का निषेध होने से याँ आ रूप होता है।

पपि॒वाꣳसो॑ जक्षि॒वाꣳसो॑ जक्षि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च च पपि॒वाꣳसो॑ जक्षि॒वाꣳसो॑ जक्षि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च[1]। ज॒क्षि॒वाꣳस॒ऽ इति॑ जक्षि॒ व्वाꣳसः॑। प॒पि॒वाꣳस॑श्च च पपि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ च पपि॒वाꣳ-सः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च॒ व्विश्वे॑। प॒पि॒वाꣳस॒ऽ इति॑ पपि॒ व्वाꣳसः॑। च॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ च च॒ व्विश्वे॑सु॒मसुँ॒व्विश्वे॑ च च॒ व्विश्वे॑सु॑म्[2]। व्विश्वे॑सु॒मसुँ॒व्विश्वे॒ व्विश्वे॑सु॑ङ्घ॒र्म्मङ्घ॒र्म्ममसुँ॒व्विश्वे॒ व्विश्वे॑सु॑ङ्घ॒र्म्मम्। असु॑ङ्घ॒र्म्मङ्घ॒र्म्ममसु॒मसु॑ङ्घ॒र्म्मꣳ स्व॒ᳫं स्व॒र्ग्घ॒र्म्ममसु॒मसु॑ङ्घ॒र्म्मꣳ स्वः॑। घ॒र्म्मꣳ स्व॒ᳫं स्व॒र्ग्घ॒र्म्मङ्घ॒र्म्मꣳ स्व॒रा तिं॑ष्ठत तिष्ठ॒ता स्व॑र्ग्घ॒र्म्मङ्घ॒र्म्मꣳ स्व॒रा तिं॑ष्ठत। स्व॒रा तिं॑ष्ठत तिष्ठ॒ता स्व॒ᳫं स्व॒रा तिं॑ष्ठ॒तान्वनु॑ तिष्ठ॒ता स्व॒ᳫं स्व॒रा तिं॑ष्ठ॒तानु॑। आ तिं॑ष्ठत। ति॒ष्ठ॒तान्वनु॑ तिष्ठत तिष्ठ॒तानु॒ स्वाहा॒ स्वाहानु॑ तिष्ठत तिष्ठ॒तानु॒ स्वाहा॑। अनु॒ स्वाहा॒ स्वाहान्वनु॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१६॥

व्व॒यꣳ हि हि व्व॒यँव्व॒यꣳ हि त्वा॑ त्वा॒ हि व्व॒यँव्व॒यꣳ हि त्वा॑। हि त्वा॑ त्वा॒ हि हि त्वा॑ प्प्रयु॒ति प्प्र॑यु॒ति त्वा॒ हि हि त्वा॑ प्प्रयु॒ति। त्वा॒ प्प्र॒यु॒ति प्प्र॑यु॒ति त्वा॑ त्वा प्प्रयु॒ति य॒ज्ञे य॒ज्ञे प्प्र॑यु॒ति त्वा॑ त्वा प्प्रयु॒ति य॒ज्ञे। प्र॒यु॒ति य॒ज्ञे य॒ज्ञे प्प्र॑यु॒ति प्प्र॑यु॒ति य॒ज्ञेऽ अ॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्य॒ज्ञे प्प्र॑यु॒ति प्प्र॑यु॒ति य॒ज्ञेऽ अ॒स्म्मिन्। प्र॒यु॒ती-ति॑ प्प्र यु॒ति। य॒ज्ञेऽ अ॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न्य॒ज्ञे य॒ज्ञेऽ अ॒स्म्मिन्न॒ग्ग्नेग्ग्ने॒स्म्मिन्न्य॒ज्ञे य॒ज्ञेऽ अ॒स्म्मिन्न॒ग्ग्ने॑। अ॒स्म्मिन्न॒ग्ग्नेग्ग्ने॒स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न॒ग्ग्ने॒ होता॑र॒ꣳ होता॑र॒मग्ग्ने॒-स्म्मिन्न॒स्म्मिन्न॒ग्ग्ने॒ होता॑रम्। अग्ग्ने॒ होता॑र॒ꣳ होता॑र॒मग्ग्नेग्ग्ने॒ होता॑र॒मवृ॑णीम॒ह्य॒व-वृ॑णीमहि॒ होता॑र॒मग्ग्नेग्ग्ने॒ होता॑र॒मवृ॑णीमहि। होता॑र॒मवृ॑णीम॒ह्य॒वृ॑णीमहि॒ होता॑र॒ꣳ होता॑र॒मवृ॑णीमही॒हेहावृ॑णीमहि॒ होता॑र॒ꣳ होता॑र॒मवृ॑णीमही॒ह। अवृ॑णीमही॒हेहावृ॒-

---

[1]. नुश्चान्तः पदेऽरेफे (वा. प्रा. ४.२) इस सूत्र के अनुसार जक्षिवान् सः एवं पपिवान् सः में नकार अनुस्वार हो जाता है।

[2]. वा.प्रा.४.७१. के अनुसार विश्वे असुम् यहाँ विश्वे से परवर्ती अकार अभिनिधान को प्राप्त करता है। वा.प्रा.५.१४. के अनुसार मूर्धन्य न बना सु यह विभक्तिप्रत्यय बाद में होने पर पृथक्करण होता है। असुम् पद में सु विभक्तिप्रत्यय नहीं है। अतः इस पद का पृथक्करण नहीं होगा।

णीमह्यवृणीमहीह। इहेतीह॥ ऋधगया ऽ अयाऽ ऋधगृधगयाऽ ऋधगृधगयाऽ ऋधगृधगयाऽ ऋधक्। अयाऽ ऋधगृधगयाऽ अयाऽ ऋधगुतोतऽ ऋधगयाऽ अयाऽ ऋधगुत। ऋधगुतोतऽ ऋधगृधगुताशमिष्ठाऽ अशमिष्ठाऽ उतऽ ऋधगृध-गुताशमिष्ठाः[1]। उताशमिष्ठाऽ अशमिष्ठाऽ उतोताशमिष्ठाः प्रजानन्प्रजानन्न-शमिष्ठाऽ उतोताशमिष्ठाः प्रजानन्। अशमिष्ठाः प्रजानन्प्रजानन्नशमिष्ठाऽ अशमिष्ठाः प्रजानन्यज्ञँय्यज्ञम्प्रजानन्नशमिष्ठाऽ अशमिष्ठाः प्रजानन्यज्ञम् । प्रजानन्यज्ञँय्यज्ञम्प्रजानन्प्रजानन्यज्ञमुपोप यज्ञम्प्रजानन्प्रजानन्य-ज्ञमुप। प्रजानन्निति प्र जानन्। यज्ञमुपोप यज्ञँय्यज्ञमुप याहि याह्युप यज्ञँय्यज्ञमुप याहि। उप याहि याह्युपोप याहि विद्वान्विद्वान्याह्युपोप याहि विद्वान्। याहि विद्वान्विद्वान्याहि याहि विद्वान्त्स्वाहा स्वाहा विद्वान्याहि याहि विद्वान्त्स्वाहा।[2] विद्वान्त्स्वाहा स्वाहा विद्वान्विद्वान्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥ १७॥ शतम्॥३००॥

यज्ञं यज्ञँय्यज्ञँय्यज्ञ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ गच्छ यज्ञँय्यज्ञ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ। यज्ञङ्गच्छ गच्छ यज्ञँय्यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिँय्यज्ञपतिङ्गच्छ यज्ञँय्यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिम्। गच्छ यज्ञपतिँय्यज्ञपतिङ्गच्छ गच्छ यज्ञपतिꣳ स्वाꣳ स्वाँय्यज्ञपतिङ्गच्छ गच्छ यज्ञपतिꣳ स्वाम्। यज्ञपतिꣳ स्वाꣳ स्वाँय्यज्ञपतिँय्यज्ञपतिꣳ स्वाँय्योनिँय्योनिꣳ स्वाँय्यज्ञपतिँय्यज्ञ-पतिꣳ स्वाँय्योनिम्। यज्ञपतिमिति यज्ञ पतिम्। स्वाँय्योनिँय्योनिꣳ स्वाꣳ स्वाँय्योनिम्। योनिमिति योनिम्॥ एष ते तऽ एषऽ एष ते यज्ञो यज्ञस्तेऽ

---

[1]. उत एवं अशमिष्ठाः यहाँ सन्धि की स्थिति में सिं सवर्णे दीर्घम् (वा. प्रा. ४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होगा।

[2]. विद्वान् स्वाहा यहाँ ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र के अनुसार सकार बाद में होने से नकार तकार से व्यवहित होता है।

एषऽ एष ते यज्ञः। ते यज्ञो यज्ञस्ते ते यज्ञो यज्ञपते यज्ञपते यज्ञस्ते ते यज्ञो यज्ञपते। यज्ञो यज्ञपते यज्ञपते यज्ञो यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञो यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः। यज्ञपते सहसूक्तवाकः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ब्ववीरः सर्ब्ववीरः सहसूक्तवाको यज्ञपते यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ब्ववीरः[1]। यज्ञपतऽ इति यज्ञ पते। सहसूक्तवाकः सर्ब्ववीरः सर्ब्ववीरः सहसूक्तवाकः सहसूक्तवाकः सर्ब्ववीरस्तन्तः सर्ब्ववीरः सहसूक्तवाकः सहसूक्तवाकः सर्ब्ववीरस्तम्। सहसूक्तवाकऽ इति सह सूक्तवाकः। सर्ब्ववीरस्तन्तः सर्ब्ववीरः सर्ब्ववीरस्तञ्जुषस्व जुषस्व तः सर्ब्ववीरः सर्ब्ववीरस्तञ्जुषस्व। सर्ब्ववीरऽ इति सर्ब्व व्वीरः। तञ्जुषस्व जुषस्व तन्तञ्जुषस्व स्वाहा स्वाहा जुषस्व तन्तञ्जुषस्व स्वाहा। जुषस्व स्वाहा स्वाहा जुषस्व जुषस्व स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१८॥

उरुः हि ह्युरुमुरुः हि राजा राजा ह्युरुमुरुः हि राजा। हि राजा राजा हि हि राजा व्वरुणो व्वरुणो राजा हि हि राजा व्वरुणः। राजा व्वरुणो व्वरुणो राजा राजा व्वरुणश्चकार चकार व्वरुणो राजा राजा व्वरुणश्चकार। व्वरुणश्चकार चकार व्वरुणो व्वरुणश्चकार सूर्य्याय सूर्य्याय चकार व्वरुणो व्वरुणश्चकार सूर्य्याय। चकार सूर्य्याय सूर्य्याय चकार चकार सूर्य्याय पन्थाम्पन्थाꣳ सूर्य्याय चकार चकार सूर्य्याय पन्थाम्। सूर्य्याय पन्थाम्पन्थाꣳ सूर्य्याय सूर्य्याय पन्थामन्वेतवाऽ अन्वेतवै पन्थाꣳ सूर्य्याय सूर्य्याय पन्थामन्वेतवै[2]। पन्थामन्वेतवाऽ अन्वेतवै पन्थाम्पन्थामन्वेतवाऽ उऽ उऽ अन्वेतवै पन्थाम्पन्थामन्वेतवाऽ उ। अन्वेतवाऽ

1. सहसूक्तवाकः सर्ववीरः यहाँ अविकारं शाकल्यः शषसेषु(वा.प्रा.३.१०) इस सूत्र से शाकल्याचार्य के मत में विसर्ग का विकार नहीं होता, यह मत माध्यन्दिन शाखा में ग्राह्य है।

2. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार अन्वेतवै पद में दो अक्षर उदात्त हैं।

उऽ उऽ अन्वेतवाऽ अन्वेतवाऽ उ। अन्वेतवाऽ इत्यनु एतवै। ऊँऽ इत्यूँ॥ अपदे पादा पादापदेपदे पादा प्प्रतिधातवे प्प्रतिधातवे पादापदेपदे पादा प्प्रतिधातवे। पादा प्प्रतिधातवे प्प्रतिधातवे पादा पादा प्प्रतिधातवेकरकः प्रतिधातवे पादा पादा प्प्रतिधातवेकः। प्रतिधातवेकरकः प्प्रतिधातवे प्प्रतिधातवेकरुतोताकः प्प्रतिधातवे प्प्रतिधातवेकरुत[1]। प्रतिधातवऽ इति प्प्रति धातवे। अकरुतोता करकरुतापवक्रापवक्रोताकरकरुतापवक्रा। उतापवक्रापवक्रोतोतापापवक्रा हृदयाविधो हृदयविधोपवक्रोतोतापवक्रा हृदयाविधः। अपवक्रा हृदयाविधो हृदयविधोपवक्रापवक्रा हृदयाविधश्चिचिद्धृदयविधोपवक्रापवक्रा हृदयाविधश्चित्। अपवक्रेत्यप ब्वक्रा। हृदयाविधश्चिचिद्धृदयविधो हृदयाविधश्चित्। हृदयविधऽ इति हृदय ब्विधः। चिदिति चित्॥ नमो ब्वरुणाय ब्वरुणाय नमो नमो ब्वरुणायाभिष्टि-तोभिस्थितो ब्वरुणाय नमो नमो ब्वरुणायाभिष्टितः। ब्वरुणायाभिष्टितोभिस्थितो ब्वरुणाय ब्वरुणायाभिष्टितो ब्वरुणस्य ब्वरुणस्याभिस्थितो ब्वरुणाय ब्वरुणायाभि-ष्टितो ब्वरुणस्य। अभिष्टितो ब्वरुणस्य ब्वरुणस्याभिस्थितोभिष्टितो ब्वरुणस्य पाशः पाशो ब्वरुणस्याभिस्थितोभिष्टितो ब्वरुणस्य पाशः। अभिस्थितऽ इत्यभि स्थितः। ब्वरुणस्य पाशः पाशो ब्वरुणस्य ब्वरुणस्य पाशः[2]। पाशऽ इति पाशः॥१९॥

अग्ग्नेरनीकमनीकमग्ग्नेरग्ग्नेरनीकमपोपोनीकमग्ग्नेरग्ग्नेरनीकमपः। अ-नीकमपोपोनीकमनीकमपऽ आ विवेश ब्विवेशापोनीकमनीकमपऽ आ विवेश। अपऽ आ विवेश ब्विवेशापोपऽ आ विवेशापामपाँब्विवेशापोपऽ आ विवेशापाम्। आ विवेश। ब्विवेशापामपाँब्विवेश ब्विवेशापान्नपान्नपादपाँब्विवेश ब्विवेशापान्नपात्।

---

[1]. अकः उत यहाँ रेफं स्वरघौ(वा.प्रा.४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

[2]. प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च (वा. प्रा. ३.११) ककार, खकार तथा पकार, फकार परे रहने पर विसर्जनीय अविकृत रहता है।

अ॒पान्नपा॒न्नपा॑दु॒पाम॒पान्नपा॑त्प्रति॒रक्ष॑न्प्रति॒रक्ष॒न्नपा॑दु॒पाम॒पान्नपा॑त्प्रति॒रक्ष॑न्।
नपा॑त्प्रति॒रक्ष॑न्प्रति॒रक्ष॒न्नपा॒न्नपा॑त्प्रति॒रक्ष॑न्नसु॒र्य्य॒मसु॒र्य्य॒म्प्रति॒रक्ष॒न्नपा॒न्नपा॑-
त्प्रति॒रक्ष॑न्नसु॒र्य्य॒म्। प्र॒ति॒रक्ष॑न्नसु॒र्य्य॒मसु॒र्य्य॒म्प्रति॒रक्ष॑न्प्रति॒रक्ष॑न्नसु॒र्य्य॒म्।
प्र॒ति॒रक्ष॒न्निति॑ प्प्रति॒ रक्ष॑न्। अ॒सु॒र्य्य॒मित्य॑सु॒र्य्य॒म्॥ दमे॑दमे स॒मिधꣳ॑ स॒मिध॒-
न्दमे॑दमे॒ दमे॑दमे स॒मिधँ॑ऽयक्षि यक्षि स॒मिध॒न्दमे॑दमे॒ दमे॑दमे स॒मिधँ॑ऽयक्षि।
दमे॑दम॒ऽ इति॒ दमे॑ दमे। स॒मिधँ॑ऽयक्षि यक्षि स॒मिधꣳ॑ स॒मिधँ॑ऽयक्ष्यग्ग्नेग्ग्ने
यक्षि स॒मिधꣳ॑ स॒मिधँ॑ऽयक्ष्यग्ग्ने। स॒मिध॒मिति॑ स॒म् इध॑म्। य॒क्ष्य॒ग्ग्ने॒ग्ग्ने॒
य॒क्षि॒ य॒क्ष्य॒ग्ग्ने॒ प्प्रति॒ प्प्रत्य॑ग्ग्ने यक्षि यक्ष्यग्ग्ने॒ प्प्रति॑। अ॒ग्ग्ने॒ प्प्रति॒ प्प्रत्य॑-
ग्ग्नेग्ग्ने॒ प्प्रति॑ ते ते॒ प्प्रत्य॑ग्ग्नेग्ग्ने॒ प्प्रति॑ ते। प्रति॑ ते ते॒ प्प्रति॒ प्प्रति॑ ते जि॒ह्वा जि॒ह्वा ते॒
प्प्रति॒ प्प्रति॑ ते जि॒ह्वा। ते॒ जि॒ह्वा जि॒ह्वा ते॑ ते जि॒ह्वा घृ॒तङ्घृ॒तञ्जि॒ह्वा ते॑ ते जि॒ह्वा घृ॒तम्
। जि॒ह्वा घृ॒तङ्घृ॒तञ्जि॒ह्वा जि॒ह्वा घृ॒तमुदुद्द् घृ॒तञ्जि॒ह्वा जि॒ह्वा घृ॒तमुत्। घृ॒तमुदुद्द् घृ॒तङ्घृ॒-
तमुच्च॑रण्ण्यच्चरण्ण्य॒दुद्द् घृ॒तङ्घृ॒तमुच्च॑रण्ण्यत्[1]। उच्च॑रण्ण्यच्चरण्ण्य॒दुदुच्च॑रण्ण्य॒त्स्वा-
हा॒ स्वाहा॑ चरण्ण्य॒दुदुच्च॑रण्ण्य॒त्स्वाहा॑। च॒र॒ण्ण्य॒त्स्वाहा॒ स्वाहा॑ चरण्ण्यच्चरण्ण्य॒-
त्स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२०॥

स॒मु॒द्रे ते॑ ते समु॒द्रे स॑मु॒द्रे ते॒ हृद॑य॒ꣳ हृद॑यन्ते समु॒द्रे स॑मु॒द्रे ते॒ हृद॑यम्। ते॒
हृद॑य॒ꣳ हृद॑यन्ते ते॒ हृद॑यम॒प्प्स्व॒प्प्सु हृद॑यन्ते ते॒ हृद॑यम॒प्प्सु। हृद॑यम॒प्प्स्व॒प्प्सु
हृद॑य॒ꣳ हृद॑यम॒प्प्स्व॒न्तर॒न्तर॒प्प्सु हृद॑य॒ꣳ हृद॑यम॒प्प्स्व॒न्तः। अ॒प्प्स्व॒न्तर॒न्तर॒-
प्प्स्व॒प्प्स्व॒न्तः सꣳ सम॒न्तर॒प्प्स्व॒प्प्स्व॒न्तः सम्। अ॒प्प्स्विवत्य॒प् सु[2]। अ॒न्तः सꣳ
सम॒न्तर॒न्तः सन्त्वा॑ त्वा॒ सम॒न्तर॒न्तः सन्त्वा॑। अ॒न्तरित्य॒न्तः। सन्त्वा॑ त्वा॒
सꣳ सन्त्वा॑ व्विशन्तु व्विशन्तु त्वा॒ सꣳ सन्त्वा॑ व्विशन्तु। त्वा॒ व्वि॒श॒न्तु॒ व्वि॒श॒न्तु॒ त्वा॒

[1]. उत् चरण्यत् यहाँ वा.प्रा.४.९६. के अनुसार तकार चकार होता है।

[2]. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

त्वा विशन्त्वोषधीरोषधीर्विशन्तु त्वा त्वा विशन्त्वोषधीः। विशन्त्वोषधीरोषधीर्विशन्तु विशन्त्वोषधीरुतोतौषधीर्विशन्तु विशन्त्वोषधीरुत। ओषधीरुतोतौषधीरोषधीरुतापऽ आपऽ उतौषधीरोषधीरुतापः। उतापऽ आपऽ उतोतापः। आपऽ इत्यापः॥ यज्ञस्य त्वा त्वा यज्ञस्य यज्ञस्य त्वा यज्ञपते यज्ञपते त्वा यज्ञस्य यज्ञस्य त्वा यज्ञपते। त्वा यज्ञपते यज्ञपते त्वा त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ यज्ञपते त्वा त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ। यज्ञपते सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ यज्ञपते यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके नमोवाके सूक्तोक्तौ यज्ञपते यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके। यज्ञपतऽ इति यज्ञ पते। सूक्तोक्तौ नमोवाके नमोवाके सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम विधेम नमोवाके सूक्तोक्तौ सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम। सूक्तोक्ताविति सूक्त उक्तौ। नमोवाके विधेम विधेम नमोवाके नमोवाके विधेम यद्यद्विधेम नमोवाके नमोवाके विधेम यत्। नमोवाकऽ इति नमः वाके। विधेम यद्यद्विधेम विधेम यत्स्वाहा स्वाहा यद्विधेम विधेम यत्स्वाहा। यत्स्वाहा स्वाहा यद्यत्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२१॥

देवीरापऽ आपो देवीर्देवीरापऽ एषऽ एषऽ आपो देवीर्देवीरापऽ एषः। आपऽ एषऽ एषऽ आपऽ आपऽ एष वो वऽ एषऽ आपऽ आपऽ एष वः[1]। एष वो वऽ एषऽ एष वो गर्भो गर्भो वऽ एषऽ एष वो गर्भः। वो गर्भो गर्भो वो वो गर्भस्तन्तङ्गर्भो वो वो गर्भस्तम्। गर्भस्तन्तङ्गर्भो गर्भस्तꣳ सुप्रीतꣳ सुप्रीतन्तङ्गर्भो गर्भस्तꣳ सुप्रीतम्। तꣳ सुप्रीतꣳ सुप्रीतन्तन्तꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतꣳ सुभृतꣳ सुप्रीतन्तन्तꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतम्। सुप्रीतꣳ सुभृतꣳ सुभृतꣳ सुप्रीतꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतम्बिभृत बिभृत सुभृतꣳ सुप्रीतꣳ सुप्रीतꣳ सुभृतम्बिभृत। सुप्रीतमिति सु प्रीतम्। सुभृतम्बिभृत बिभृत सुभृतꣳ सुभृतम्बिभृत।

[1]. स्य एष च (वा. प्रा. ३.१७) व्यञ्जन परे रहने पर स्यः एवं एषः का विसर्जनीय लुप्त हो जाता है।

सुभृ॑त॒मिति॒ सु भृ॑तम्। बि॒भृ॒तेति॑ बिभृत॥ दे॑व सोम सोम॒ दे॒व दे॑व सोमै॒षऽ ए॒ष सो॑म॒ दे॒व दे॑व सोमै॒षः। सो॒मै॒षऽ ए॒ष सो॑म सोमै॒ष ते॑ तऽ ए॒ष सो॑म सोमै॒ष ते॑। ए॒ष ते॑ तऽ ए॒षऽ ए॒ष ते॑ लो॒को लो॒कस्ते॑ऽ ए॒षऽ ए॒ष ते॑ लो॒कः। ते॒ लो॒को लो॒कस्ते॑ ते लो॒कस्तस्म्मि॑ँस्तस्म्मिँल्लो॒कस्ते॑ ते लो॒कस्तस्म्मि॑न्[1]। लो॒कस्तस्म्मि॑ँस्तस्म्मिँ-ल्लो॒को लो॒कस्तस्म्मि॒ञ्छꣳ शन्तस्म्मिँल्लो॒को लो॒कस्तस्म्मि॒ञ्छम्। तस्म्मि॒-ञ्छꣳ शन्तस्म्मि॑ँस्तस्म्मि॒ञ्छञ्च॑ च॒ शन्तस्म्मि॑ँस्तस्म्मि॒ञ्छञ्च॑। शञ्च॑ च॒ शꣳ शञ्च॒ व्वक्ष्व॒ व्वक्ष्व॑ च॒ शꣳ शञ्च॒ व्वक्ष्व॑। च॒ व्वक्ष्व॒ व्वक्ष्व॑ च च॒ व्वक्ष्व॒ परि॒ परि॒ वक्ष्व॑ च च॒ व्वक्ष्व॒ परि॑। व्वक्ष्व॒ परि॒ परि॒ वक्ष्व॒ व्वक्ष्व॒ परि॑ च च॒ परि॒ वक्ष्व॒ व्वक्ष्व॒ परि॑ च। परि॑ च च॒ परि॒ परि॑ च व्वक्ष्व व्वक्ष्व च॒ परि॒ परि॑ च व्वक्ष्व[2]। च॒ व्व॒क्ष्व॒ व्व॒क्ष्व॒ च॒ च॒ व्व॒क्ष्व॒। व्व॒क्ष्वेति॑ वक्ष्व॥ दे॒वाना॑ꣳ स॒मित्स॒मिद्दे॒वाना॑न्दे॒-वाना॑ꣳ स॒मिद॑स्यसि स॒मिद्दे॒वाना॑न्दे॒वाना॑ꣳ स॒मिद॑सि। स॒मिद॑स्यसि स॒मित्स॒मि-द॑सि। स॒मिदिति॑ स॒म् इत्। अ॒सीत्य॑सि॥२२॥

एज॑तु दश॑मास्यो॒ दश॑मास्य॒ऽ एज॒त्वेज॑तु दश॑मास्यो॒ गर्ब्भो॒ गर्ब्भो॒ दश॑मास्य॒ऽ एज॒त्वेज॑तु दश॑मास्यो॒ गर्ब्भः॑। दश॑मास्यो॒ गर्ब्भो॒ गर्ब्भो॒ दश॑मास्यो॒ दश॑मास्यो॒ गर्ब्भो॑ ज॒रायु॑णा ज॒रायु॑णा॒ गर्ब्भो॒ दश॑मास्यो॒ दश॑मास्यो॒ गर्ब्भो॑ ज॒रा-यु॑णा। दश॑मास्य॒ऽ इति॒ दश॑ मास्यः। गर्ब्भो॑ ज॒रायु॑णा ज॒रायु॑णा॒ गर्ब्भो॒ गर्ब्भो॑ ज॒रायु॑णा स॒ह स॒ह ज॒रायु॑णा॒ गर्ब्भो॒ गर्ब्भो॑ ज॒रायु॑णा स॒ह। ज॒रायु॑णा स॒ह स॒ह ज॒रायु॑णा ज॒रायु॑णा स॒ह। स॒हेति॑ स॒ह॥ य्यथा॒यम॒यँय्यथा॒ य्यथा॒यँव्वा॒युर्व्वा॒युर॒यँय्यथा॒ य्यथा॒यँव्वा॒युः। अ॒यँव्वा॒युर्व्वा॒युर॒यम॒यँव्वा॒युरेज॒त्येज॑ति व्वा॒युर॒यम॒यँव्वा॒युरेज॑ति। व्वा॒युरे-

1. तस्मिन् तस्मिन् यहाँ तथयोः सम्(वा.प्रा.३.१३५) इस सूत्र से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक होता है।

2. द्वयोः पूर्वं समुच्चये (वा. प्रा. ६.१९) दो क्रियापदों के समुच्चय अर्थ में होने पर प्रथम क्रिया पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है। जैसे यहाँ वक्ष्वं पद।

जत्येजति वायुर्वायुरेजति यथा यथैजति वायुर्वायुरेजति यथा[1]। एजति यथा यथैजत्येजति यथा समुद्रः समुद्रो यथैजत्येजति यथा समुद्रः। यथा समुद्रः समुद्रो यथा यथा समुद्रऽ एजत्येजति समुद्रो यथा यथा समुद्रऽ एजति। समुद्रऽ एजत्येजति समुद्रः समुद्रऽ एजति। एजतीत्येजति॥ एवायमयमेवैवायन्दशमास्यो दशमास्योयमेवैवायन्दशमास्यः। अयन्दशमास्यो दशमास्योयमयन्दशमास्योऽ अस्रदस्रद्दशमास्योयमयन्दशमास्योऽ अस्रत्[2]। दशमास्योऽ अस्रदस्रद्दशमास्यो दशमास्योऽ अस्रज्जरायुणा जरायुणास्रद्दशमास्यो दशमास्योऽ अस्रज्जरायुणा। दशमास्यऽ इति दश मास्यः। अस्रज्जरायुणा जरायुणास्रदस्रज्जरायुणा सह सह जरायुणास्रदस्रज्जरायुणा सह। जरायुणा सह सह जरायुणा जरायुणा सह। सहेति सह॥२३॥

यस्यै ते ते यस्यै यस्यै ते यज्ञियो यज्ञियस्ते यस्यै यस्यै ते यज्ञियः। ते यज्ञियो यज्ञियस्ते ते यज्ञियो गर्भो गर्भो यज्ञियस्ते ते यज्ञियो गर्भः। यज्ञियो गर्भो गर्भो यज्ञियो यज्ञियो गर्भो यस्यै यस्यै गर्भो यज्ञियो यज्ञियो गर्भो यस्यै। गर्भो यस्यै यस्यै गर्भो गर्भो यस्यै योनिर्योनिर्यस्यै गर्भो गर्भो यस्यै योनिः। यस्यै योनिर्योनिर्यस्यै यस्यै योनिर्हिरण्ययी हिरण्ययी योनिर्यस्यै यस्यै योनिर्हिरण्ययी। योनिर्हिरण्ययी हिरण्ययी योनिर्योनिर्हिरण्ययी। हिरण्ययीति हिरण्ययी॥ अङ्गान्यहुताहुताङ्गान्यङ्गान्यहुता यस्य यस्याहुताङ्गान्यङ्गान्यहुता यस्य[3]। अहुता यस्य यस्याहुताहुता यस्य तन्तँयस्याहुताहुता यस्य तम्। यस्य तन्तँयस्य

[1]. यथा एजति यहाँ सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ(वा.प्रा.४.५८) इस सूत्र से सन्ध्यक्षर बाद में होने पर आकार परवर्ती एकार के सहित ऐकार होता है।

[2]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार दशमास्यो का ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. अहुता इस पद में अर्हुता ऐसा उच्चारण करने पर स्वरभक्ति अपरिहार्य होगी, जो कि अविवक्षित है।

ष॒स्य॒ तम्मा॒त्रा मा॒त्रा तँष्षस्य॒ षस्य॒ तम्मा॒त्रा। तम्मा॒त्रा मा॒त्रा तन्तम्मा॒त्रा सꣳ
सम्मा॒त्रा तन्तम्मा॒त्रा सम्। मा॒त्रा सꣳ सम्मा॒त्रा मा॒त्रा सम॑जीगममजीगम॒ꣳ
सम्मा॒त्रा मा॒त्रा सम॑जीगमम्। सम॑जीगममजीगम॒ꣳ सꣳ सम॑जीगम॒ꣳ स्वाहा॒
स्वाहा॑जीगम॒ꣳ सꣳ सम॑जीगम॒ꣳ स्वाहा॑। अ॒जी॒ग॒म॒ꣳ स्वाहा॒
स्वाहा॑जीगममजीगम॒ꣳ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२४॥

पु॒रु॒द॒स्म्मो ब्विषु॑रूपो॒ ब्विषु॑रूपः पुरुद॒स्म्मः पु॑रुद॒स्म्मो ब्विषु॑रूप॒ऽ इन्दु॒रि-
न्दु॒र्ब्विषु॑रूपः पुरुद॒स्म्मः पु॑रुद॒स्म्मो ब्विषु॑रूप॒ऽ इन्दु॑ः। पु॒रु॒द॒स्म्मऽ इति॑ पुरु
द॒स्म्मः। ब्विषु॑रूप॒ऽ इन्दु॒रिन्दु॒र्ब्विषु॑रूपो॒ ब्विषु॑रूप॒ऽ इन्दु॑र॒न्तर॒न्तरिन्दु॒र्ब्विषु॑रूपो॒ ब्विषु॑-
रूप॒ऽ इन्दु॑र॒न्तः। ब्विषु॑रूप॒ऽ इति॒ विषु॑ रूपः। इन्दु॑र॒न्तर॒न्तरिन्दु॒रिन्दु॑र॒न्तम्मँहि॒-
मान॑म्महि॒मान॑म॒न्तरिन्दु॒रिन्दु॑र॒न्तम्मँहि॒मान॑म्। अ॒न्तम्मँहि॒मान॑म्महि॒मान॑म॒न्त-
र॒न्तम्मँहि॒मान॑मानञ्ञानञ्ज महि॒मान॑म॒न्तर॒न्तम्मँहि॒मान॑मानञ्ज। म॒हि॒मान॑मान-
ञ्ञानञ्ज महि॒मान॑म्महि॒मान॑मानञ्ज॒ धीरो॒ धीर॑ऽ आनञ्ज महि॒मान॑म्महि॒मान॑मानञ्ज॒
धीर॑ः। आ॒न॒ञ्ज॒ धीरो॒ धीर॑ऽ आनञ्ञानञ्ज॒ धीर॑ः। धीर॒ऽ इति॒ धीर॑ः॥
एक॑पदीन्द्वि॒पदी॑न्द्वि॒पदी॒मेक॑पदी॒मेक॑पदीन्द्वि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॑न्द्वि॒पदी॒मेक॑पदी॒मेक॑
पदीन्द्वि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॑म्। एक॑पदी॒मित्येक॑ पदीम्। द्वि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॑न्द्वि॒पदी॑-
न्द्वि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदी॒ञ्चतु॑ः पदीन्त्रि॒पदी॑न्द्वि॒पदी॑न्द्वि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदीम्।
द्वि॒पदी॒मिति॑ द्वि॒ पदी॑म् । त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदी॒ञ्चतु॑ः पदीन्त्रि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदी-
म॒ष्टाप॑दीम॒ष्टाप॑दी॒ञ्चतु॑ः पदीन्त्रि॒पदी॑न्त्रि॒पदी॒ञ्चतु॑ष्पदीम॒ष्टाप॑दीम्। त्रि॒पदी॒मिति॑ त्रि॒
पदी॑म्। चतु॑ष्पदीम॒ष्टाप॑दीम॒ष्टाप॑दी॒ञ्चतु॑ः पदी॒ञ्चतु॑ष्पदीम॒ष्टाप॑दी॒म्भुव॑ना॒ भुव॑ना॒-
ष्टाप॑दी॒ञ्चतु॑ः पदी॒ञ्चतु॑ष्पदीम॒ष्टाप॑दी॒म्भुव॑ना। चतु॑ः पदी॒मिति॒ चतु॑ः पदीम्।
अ॒ष्टाप॑दी॒म्भुव॑ना॒ भुव॑ना॒ष्टाप॑दीम॒ष्टाप॑दी॒म्भुव॒नान्वनु॒ भुव॑ना॒ष्टाप॑दीम॒ष्टाप॑दी॒-

म्भुव॒नानु॑। अ॒ष्टाप॑दी॒मित्य॒ष्टा प॑दीम्। भु॒व॒नान्न्वनु॒ भुव॑ना॒ भुव॒नानु॑ प्प्रथन्ताम्प्रथन्ता॒मनु॒ भुव॑ना॒ भुव॒नानु॑ प्प्रथन्ताम्। अनु॑ प्प्रथन्ताम्प्रथन्ता॒मन्न्वनु॑ प्प्रथन्ता॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रथन्ता॒मन्न्वनु॑ प्प्रथन्ता॒ꣳ स्वाहा॑। प्र॒थ॒न्ता॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रथन्ताम्प्रथन्ता॒ꣳ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥२५॥

मरु॑तो॒ यस्य॒ यस्य॒ मरु॑तो॒ मरु॑तो॒ यस्य॒ हि हि यस्य॒ मरु॑तो॒ मरु॑तो॒ यस्य॒ हि[1]। यस्य॒ हि हि यस्य॒ यस्य॒ हि क्षये॒ क्षये॒ हि यस्य॒ यस्य॒ हि क्षये॑। हि क्षये॒ क्षये॒ हि हि क्षये॑ पा॒थ पा॒थ क्षये॒ हि हि क्षये॑ पा॒थ। क्षये॑ पा॒थ पा॒थ क्षये॒ क्षये॑ पा॒था दि॒वो दि॒वः पा॒थ क्षये॒ क्षये॑ पा॒था दि॒वः। पा॒था दि॒वो दि॒वः पा॒थ पा॒था दि॒वो व्वि॑महसो व्विमहसो दि॒वः पा॒थ पा॒था दि॒वो व्वि॑महसः। दि॒वो व्वि॑महसो व्विमहसो दि॒वो दि॒वो व्वि॑महसः। व्वि॒म॒ह॒सऽ इति॑ वि महसः॥ स सु॑गो॒पात॑मः सुगो॒पात॑म॒ः स स सु॑गो॒पात॑मो॒ जनो॒ जन॑ः सुगो॒पात॑म॒ः स स सु॑गो॒पात॑मो॒ जन॑ः। सु॒गो॒पात॑मो॒ जनो॒ जन॑ः सुगो॒पात॑मः सुगो॒पात॑मो॒ जन॑ः। सु॒गो॒पात॑मऽ इति॑ सु गो॒पात॑मः[2]। जन॒ऽ इति॒ जन॑ः॥२६॥

म॒ही द्यौर्द्यौर्म्म॒ही म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी द्यौर्म्म॒ही म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी। द्यौः पृ॑थि॒वी पृ॑थि॒वी द्यौर्द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ च पृथि॒वी द्यौर्द्यौः पृ॑थि॒वी च॑। पृ॒थि॒वी च॑ च पृथि॒वी पृ॑थि॒वी च॑ नो नश्च पृथि॒वी पृ॑थि॒वी च॑ नः। च॒ नो॒ न॒श्च॒ च॒ न॒ऽ इ॒मम्मि॒मन्नश्च च नऽ इ॒मम्। न॒ऽ इ॒मम्मि॒मन्नो॑ नऽ इ॒मँय्य॒ज्ञँय्य॒ज्ञमि॒मन्नो॑ नऽ इ॒मँय्य॒ज्ञम्। इ॒मँय्य॒ज्ञँय्य॒ज्ञमि॒ममि॒मँय्य॒ज्ञम्मि॑मिक्षताम्मिमिक्षताँय्य॒ज्ञमि॒ममि॒मँय्य॒ज्ञम्मि॑मिक्षताम्। य॒ज्ञम्मि॑मिक्षताम्मिमिक्षताँय्य॒ज्ञँय्य॒ज्ञम्मि॑-

---

1. वा.प्रा.४.१५७. के अनुसार यस्य पद में सकार के बाद एक यकार है।

2. वीतमद्भूतमसूतमगोपातमरत्नधातमवसुधातमाः पूर्वेण (वा. प्रा. ५.३) इस सूत्र के अनुसार यह पद पूर्ववर्ती पद के सहित अवगृहीत होता है।

मिक्क्षताम्। मि॒मि॒क्क्ष॒ता॒मिति॑ मिमिक्क्षताम्॥ पि॒पृ॒तान्नो॑ नः पि॒पृ॒ताम्पि॑पृ॒तान्नो॒ भरी॑मभि॒र्भरी॑मभिर्न्नः पि॒पृ॒ताम्पि॑पृ॒तान्नो॒ भरी॑मभिः। नो॒ भरी॑मभि॒र्भरी॑मभिर्न्नो॑ नो॒ भरी॑मभिः। भरी॑मभि॒रिति॒ भरी॑म भिः॥२७॥

आ ति॑ष्ठ ति॒ष्ठा ति॑ष्ठ वृ॒त्रह॒न्वृ॒त्रहँ॑स्ति॒ष्ठा ति॑ष्ठ वृ॒त्रहन्[1]। ति॒ष्ठ॒ वृ॒त्र॒ह॒न्वृ॒त्र॒-हँ॑स्ति॒ष्ठ॒ ति॒ष्ठ॒ वृ॒त्र॒ह॒न्रथ॒ꣳ रथँ॑वृत्रहँ॑स्तिष्ठ तिष्ठ वृत्रह॒न्रथ॑म्। वृ॒त्र॒ह॒न्रथ॒ꣳ रथँ॑वृत्रह-न्वृत्रह॒न्रथँ॑ग्युक्ता यु॒क्ता रथँ॑वृत्रहन्वृत्रह॒न्रथँ॑ग्युक्ता। वृ॒त्र॒ह॒न्निति॑ वृत्र हन्। रथँ॑ग्यु॒क्ता यु॒क्ता रथ॒ꣳ रथँ॑ग्युक्ता ते॑ ते यु॒क्ता रथ॒ꣳ रथँ॑ग्युक्ता ते॑। यु॒क्ता ते॑ ते यु॒क्ता यु॒क्ता ते॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा ते यु॒क्ता यु॒क्ता ते॒ ब्रह्म॑णा। ते॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा ते ते॒ ब्रह्म॑णा॒ ह॒री ह॒री ब्रह्म॑णा ते ते॒ ब्रह्म॑णा॒ हरी॑। ब्रह्म॑णा॒ ह॒री ह॒री ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा॒ हरी॑। ह॒रीऽ इति॒ हरी॑॥ अ॒र्वा॒चीन॒ꣳ सु स्व॑र्वा॒चीन॑मर्वा॒चीन॒ꣳ सु ते॑ ते॒ स्व॒र्वा॒चीन॑मर्वा॒चीन॒ꣳ सु ते॑। सु ते॑ ते॒ सु सु ते॒ मनो॒ मन॑स्ते॒ सु सु ते॒ मन॑ः। ते॒ मनो॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॒ मन॑स्ते ते॒ मनो॒ ग्ग्रावा॑। मनो॒ ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॒ मनो॒ मनो॒ ग्ग्रावा॑ कृणोतु कृणोतु ग्ग्रावा॒ मनो॒ मनो॒ ग्ग्रावा॑ कृणोतु। ग्रावा॑ कृणोतु कृणोतु॒ ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑ कृणोतु व॒ग्ग्नुना॑ व॒ग्ग्नुना॑ कृणोतु ग्ग्रावा॒ ग्ग्रावा॑ कृणोतु व॒ग्ग्नुना॑। कृ॒णो॒तु॒ व॒ग्ग्नुना॑ व॒ग्ग्नुना॑ कृणोतु कृणोतु व॒ग्ग्नुना॑। व॒ग्ग्नुनेति॑ व॒ग्ग्नुना॑॥ इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिने॑ षोड॒शिने॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिने॑। त्वा॒ षो॒ड॒शिने॑ षोड॒शिने॑ त्वा त्वा षोड॒शिने॑। षो॒ड॒शिन॒ऽ इति॑ षोड॒शिने॑॥२८॥

यु॒क्ष्वा हि हि यु॒क्ष्व यु॒क्ष्वा हि के॒शिना॑ के॒शिना॒ हि यु॒क्ष्व यु॒क्ष्वा हि के॒शिना॑[2]। हि के॒शिना॑ के॒शिना॒ हि हि के॒शिना॒ ह॒री हरी॑ के॒शिना॒ हि हि के॒शिना॒ हरी॑। के॒शिना॒ ह॒री हरी॑ के॒शिना॑ के॒शिना॒ ह॒री वृष॑णा॒ वृष॑णा॒ हरी॑ के॒शिना॑ के॒शिना॒

---

1. । वा. मा. ३.१०३. के अनुसार आद्युदात्त तिष्ठ पद का अकार दीर्घ होता है। यहाँ आद्युदात्त न होने से दीर्घ नहीं होगा।

2. वा.मा.३.१२९. के अनुसार युक्ष्व हि यहाँ युक्ष्व के अकार का दीर्घ हो गया है।

हरी॒ वृष॑णा। हरी॒ वृष॑णा॒ वृष॑णा॒ हरी॒ हरी॒ वृष॑णा कक्ष्य॒प्रा क॑क्ष्य॒प्रा वृष॑णा॒ हरी॒ हरी॒ वृष॑णा कक्ष्य॒प्रा। हरी॒ऽ इति॒ हरी॑। वृष॑णा कक्ष्य॒प्रा क॑क्ष्य॒प्रा वृष॑णा॒ वृष॑णा कक्ष्य॒प्रा। क॒क्ष्य॒प्रेति॑ कक्ष्य॒ प्रा॥ अथा॑ नो॒ नोथाथा॑ नऽ इन्द्रेन्द्र॒ नोथाथा॑ नऽ इन्द्र। न॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ नो॒ न॒ऽ इ॒न्द्र॒ सो॒म॒पा॒ः सो॒म॒पा॒ऽ इ॒न्द्र॒ नो॒ न॒ऽ इ॒न्द्र॒ सो॒म॒पा॒ः। इ॒न्द्र॒ सो॒म॒पा॒ः सो॒म॒पा॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ सो॒म॒पा॒ गि॒राङ्गि॒रा॑ꣳ सोम॑पाऽ इन्द्रेन्द्र सोमपा गि॒राम्। सो॒म॒पा॒ गि॒राङ्गि॒रा॑ꣳ सोम॑पाः सोमपा गि॒रामुप॑श्रुति॒मुप॑श्रुतिङ्गि॒रा॑ꣳ सोम॑पाः सोमपा गि॒रामुप॑श्रुतिम्। सो॒म॒पा॒ऽ इति॑ सोम पाः। गि॒रामुप॑श्रुति॒मुप॑श्रुतिङ्गि॒राङ्गि॒रामुप॑श्रुतिञ्चर च॒रोप॑श्रुतिङ्गि॒राङ्गि॒रामुप॑श्रुतिञ्चर। उप॑श्रुतिञ्चर च॒रोप॑श्रुति॒मुप॑श्रुतिञ्चर। उप॑श्रुति॒मित्युप॑ श्रुतिम्। च॒रेति॑ चर॥२९॥

इन्द्र॒मिदिदिन्द्र॒मिन्द्र॒मिद्धरी॒ हरी॒ऽ इदिन्द्र॒मिन्द्र॒मिद्धरी॑। इद्धरी॒ हरी॒ऽ इदिद्धरी॑ बृहतो बृहतो॒ हरी॒ऽ इदिद्धरी॑ बृहतः। हरी॑ बृहतो बृहतो॒ हरी॒ हरी॑ बृ॒हतोप्र॑तिधृष्टशवस॒मप्र॑तिधृष्टशवसँबृहतो॒ हरी॒ हरी॑ बृ॒हतोप्र॑तिधृष्टशवसम्। हरी॒ऽ इति॒ हरी॑। बृ॒ह॒तोप्र॑तिधृष्टशवस॒मप्र॑तिधृष्टशवसँबृहतो बृ॒ह॒तोप्र॑तिधृष्टशवसम्। अप्र॑तिधृष्टशवस॒मित्यप्र॑तिधृष्ट शवसम्॥ ऋषी॑णाञ्च च॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णाञ्च स्तु॒ती स्तु॒तीश्च॒ऽ ऋषी॑णा॒मृषी॑णाञ्च स्तु॒तीः। च॒ स्तु॒ती स्तु॒तीश्च॑ च स्तु॒तीरुपोप॑ स्तु॒तीश्च॑ च स्तु॒तीरुप॑। स्तु॒तीरुपोप॑ स्तु॒ती स्तु॒तीरुप॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञमुप॑ स्तु॒ती स्तु॒तीरुप॑ य॒ज्ञम्[1]। उप॑ य॒ज्ञँय्य॒ज्ञमुपोप॑ य॒ज्ञञ्च॑ च य॒ज्ञमुपोप॑ य॒ज्ञञ्च॑। य॒ज्ञञ्च॑ च य॒ज्ञँय्य॒ज्ञञ्च॒ मानु॑षाणा॒म्मानु॑षाणाञ्च य॒ज्ञँय्य॒ज्ञञ्च॒ मानु॑षाणाम्। च॒ मानु॑षाणा॒म्मानु॑षाणाञ्च च॒ मानु॑षाणाम्। मानु॑षाणा॒मिति॒ मानु॑षाणाम्॥३०॥

---

[1]. पादादौ च पदादौ च सँय्योगावग्रहेषु च। जः शब्द इति विज्ञेयो योऽन्यः स य इति स्मृतः॥ -या. शि. १५०.
उप यज्ञम् यहाँ पादादि होने के कारण यकार का जकार के सदृश उच्चारण होगा।

यस्म्मान्न न यस्म्माद्यस्म्मान्न जातो जातो न यस्म्माद्यस्म्मान्न जातः। न जातो जातो न न जातः परः परो जातो न न जातः परः। जातः परः परो जातो जातः परोऽ अन्न्योन्न्यः परो जातो जातः परोऽ अन्न्यः। परोऽ अन्न्योन्न्यः परः परोऽ अन्न्योऽ अस्त्त्यस्त्त्यन्न्यः परः परोऽ अन्न्योऽ अस्त्ति। अन्न्योऽ अस्त्त्यस्त्त्यन्न्योन्न्योऽ अस्त्ति यो योस्त्त्यन्न्योन्न्योऽ अस्त्ति यः। अस्त्ति यो योस्त्त्यस्त्ति यऽ आविवेशाविवेश योस्त्त्यस्त्ति यऽ आविवेश। यऽ आविवेशाविवेश यो यऽ आविवेश भुवनानि भुवनान्न्याविवेश यो यऽ आविवेश भुवनानि। आवि-वेश भुवनानि भुवनान्न्याविवेशाविवेश भुवनानि व्विश्श्वा व्विश्श्वा भुवनान्न्याविवेशा-विवेश भुवनानि व्विश्श्वा। आविवेशेत्त्या व्विवेश। भुवनानि व्विश्श्वा व्विश्श्वा भुवनानि भुवनानि व्विश्श्वा। व्विश्श्वेति विश्श्वा॥ प्रजापतिः प्प्रजया प्प्रजया प्प्रजापतिः प्प्रजापतिः प्प्रजया सꣳरराणः सꣳरराणः प्प्रजया प्प्रजापतिः प्प्रजापतिः प्प्रजया सꣳरराणः। प्रजापतिरिति प्प्रजा पतिः[1]। प्रजया सꣳरराणः सꣳररा-णः प्प्रजया प्प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि त्रीणि सꣳरराणः प्प्रजया प्प्रजया सꣳर-राणस्त्रीणि। प्रजयेति प्प्र जया। सꣳरराणस्त्रीणि त्रीणि सꣳरराणः सꣳरराण-स्त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि ज्ज्योतीꣳषि त्रीणि सꣳरराणः सꣳरराणस्त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि । सꣳरराणऽ इति सम् रराणः। त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि ज्ज्योतीꣳषि त्रीणि त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि सचते सचते ज्ज्योतीꣳषि त्रीणि त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि सचते। ज्ज्योतीꣳषि सचते सचते ज्ज्योतीꣳषि ज्ज्योतीꣳषि सचते स स सचते ज्ज्योतीꣳषि ज्ज्योतीꣳषि सचते सः[2]। सचते स स सचते सचते स षोडशी

[1]. जिस पद में समास की बहुलता होती है, उस पद में उत्तरकालिक समास के साथ अवग्रह का विधान होता है- बहुमकृतावागन्तुना पर्वणा(वा.प्रा.५.७)।

[2]. व्यञ्जने च (वा. प्रा. ३.१६) व्यञ्जन परे रहने पर सः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

षोडशी स सचते सचते स षोडशी। स षोडशी षोडशी स स षोडशी। षोडशीति षोडशी॥३१॥

इन्द्रश्च चेन्द्र इन्द्रश्च सम्राट् सम्राट् चेन्द्र इन्द्रश्च सम्राट्। च सम्राट् सम्राट् च च सम्राड्वरुणो वरुणः सम्राट् च च सम्राड्वरुणः। सम्राड्वरुणो वरुणः सम्राट् सम्राड्वरुणश्च च वरुणः सम्राट् सम्राड्वरुणश्च। सम्राडिति सम् राट्। वरुणश्च च वरुणो वरुणश्च राजा राजा च वरुणो वरुणश्च राजा। च राजा राजा च च राजा तौ तौ राजा च च राजा तौ। राजा तौ तौ राजा राजा तौ ते ते तौ राजा राजा तौ ते[1]। तौ ते ते तौ तौ ते भक्षम्भक्षन्ते तौ तौ ते भक्षम्। ते भक्षम्भक्षन्ते ते भक्षञ्चक्रतुश्चक्रतुर्भक्षन्ते ते भक्षञ्चक्रतुः। भक्षञ्चक्रतुश्चक्रतुर्भक्षम्भक्षञ्चक्रतुरग्रेग्रे चक्रतुर्भक्षम्भक्षञ्चक्रतुरग्रे। चक्रतुरग्रेग्रे चक्रतुश्चक्रतुरग्रऽ एतमेतमग्रे चक्रतुश्चक्रतुरग्रऽ एतम्। अग्रऽ एतमेतमग्रेग्रऽ एतम्। एतमित्येतम्॥ तयोरहमहन्तयोस्तयोरहमन्वन्वहन्तयोस्तयोरहमनु। अहमन्वन्वहमहमनु भक्षम्भक्षमन्वहमहमनु भक्षम्। अनु भक्षम्भक्षमन्वनु भक्षम्भक्षयामि भक्षयामि भक्षमन्वनु भक्षम्भक्षयामि। भक्षम्भक्षयामि भक्षयामि भक्षम्भक्षम्भक्षयामि वाग्वाग्भक्षयामि भक्षम्भक्षम्भक्षयामि वाक्। भक्षयामि वाग्वाग्भक्षयामि भक्षयामि वाग्देवी देवी वाग्भक्षयामि भक्षयामि वाग्देवी। वाग्देवी देवी वाग्वाग्देवी जुषाणा जुषाणा देवी वाग्वाग्देवी जुषाणा। देवी जुषाणा जुषाणा देवी देवी जुषाणा सोमस्य सोमस्य जुषाणा देवी देवी जुषाणा सोमस्य। जुषाणा सोमस्य सोमस्य जुषाणा जुषाणा सोमस्य तृप्यतु तृप्यतु सोमस्य जुषाणा जुषाणा सोमस्य तृप्यतु। सोमस्य तृप्यतु

[1]. वा.प्रा.२.५. के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात्त है।

तृप्प्यतु सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तृप्प्यतु स॒ह स॒ह तृ॑प्प्यतु॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तृप्प्यतु स॒ह। तृप्प्यु॒तु स॒ह स॒ह तृ॑प्प्यतु तृप्प्यतु स॒ह प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह तृ॑प्प्यतु तृप्प्यतु स॒ह प्प्रा॒णेन॑। स॒ह प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह स॒ह प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रा॒णेन॑ स॒ह स॒ह प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॑। प्रा॒णेन॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ प्प्रा॒णेन॑ प्प्रा॒णेन॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥३२॥

अग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ पव॒स्वाग्ग्नेग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॒ः स्वपा॒ः पव॒स्वाग्ग्नेग्ग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ः[1] । पव॑स्व॒ स्वपा॒ः स्वपा॒ः पव॑स्व॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वपा॒ः पव॑स्व॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे। स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वपा॒ः स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒स्म्मे स्वपा॒ः स्वपा॑ऽ अ॒स्म्मे ब्वर्चः॑। स्वपा॒ऽ इति॑ सु॒ अपा॑ः। अ॒स्म्मे ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ब्वर्चः॑ सु॒वीर्य्य॑ᳪ सु॒वीर्य्य॑म्ब्वर्चो॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे ब्वर्चः॑ सु॒वीर्य्य॑म्। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। ब्वर्चः॑ सु॒वीर्य्य॑ᳪ सु॒वीर्य्य॑म्ब्वर्चो॒ ब्वर्चः॑ सु॒वीर्य्य॑म्। सु॒वीर्य्य॒मिति॑ सु॒ ब्वीर्य्य॑म्॥ दध॑द्द्र॒यिᳪ र॒यिन्दध॒द्दध॑द्द्र॒यिम्मयि॒ मयि॑ र॒यिन्दध॒द्दध॑द्द्र॒यिम्मयि॑। र॒यिम्मयि॒ मयि॑ र॒यिᳪ र॒यिम्मयि॒ पोष॒म्पोष॒म्मयि॑ र॒यिᳪ र॒यिम्मयि॒ पोष॑म्। मयि॒ पोष॒म्पोष॒म्मयि॒ मयि॒ पोष॑म्। पोष॒मिति॒ पोष॑म्॥ अ॒ग्ग्नये॑ त्वा त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ ब्वर्च॑से॒ ब्वर्च॑से त्वा॒ग्ग्नये॒ग्ग्नये॑ त्वा॒ ब्वर्च॑से। त्वा॒ ब्वर्च॑से॒ ब्वर्च॑से त्वा त्वा॒ ब्वर्च॑से। ब्वर्च॑स॒ऽ इति॒ वर्च॑से॥ अग्ग्ने॑ ब्वर्चस्विन्न्वर्चस्वि॒न्नग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वर्चस्वि॒न्न्वर्च॑स्वा॒न्न्वर्च॑स्वान्न्वर्चस्वि॒न्नग्ग्नेग्ग्ने॑ ब्वर्चस्वि॒न्न्वर्च॑स्वान्। ब्व॒र्च॒स्वि॒न्न्वर्च॑स्वा॒न्न्वर्च॑स्वान्न्वर्चस्विन्न्वर्चस्वि॒न्न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्त्वन्त्वँब्वर्च॑स्वान्न्वर्चस्विन्न्वर्चस्वि॒न्न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्त्वम्। ब्वर्च॑स्वाँ॒स्त्त्वन्त्वँब्वर्च॑स्वा॒न्न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्त्वन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ त्वँब्वर्च॑स्वा॒न्न्वर्च॑स्वाँ॒स्त्त्वन्दे॒वेषु॑।

[1]. उदात्ताचामन्त्रितादनन्तरम् (वा. प्रा. ६.१२) उदात्त-सम्बोधन-पद से परवर्ती क्रिया-पद अपने प्रकृति स्वर से युक्त होता है, जैसे यहाँ अग्ने॑ से परवर्ती पव॑स्व।

त्वन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ त्वन्त्वन्दे॒वेष्ष्वस्यसि॑ दे॒वेषु॒ त्वन्त्वन्दे॒वेष्ष्वसि॑[1]। दे॒वेष्ष्वस्यसि॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेष्ष्वसि॒ ब्वर्चस्वा॒न्व्वर्चस्वा॒नसि॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेष्ष्वसि॒ ब्वर्चस्वान्। असि॒ ब्वर्चस्वा॒-न्व्वर्चस्वा॒नस्यसि॒ ब्वर्चस्वान॒हम॒हँब्वर्चस्वा॒नस्यसि॒ ब्वर्चस्वान॒हम्[2]। ब्वर्चस्वान॒हम॒-हँब्वर्चस्वा॒न्व्वर्चस्वान॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्वहँब्वर्चस्वा॒न्व्वर्चस्वान॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु। अ॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्व॒हम॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्भूयासम्मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्व॒हम॒ह-म्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्। म॒नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्भूयासम्मनु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्। भू॒या॒स॒मिति॑ भूयासम्॥३३॥

उ॒त्ति॒ष्ठ॒न्नोज॒सौज॑सो॒त्तिष्ठ॑न्नु॒त्तिष्ठ॒न्नोज॑सा स॒ह स॒हौज॑सो॒त्तिष्ठ॑न्नु॒त्तिष्ठ॒न्नोज॑सा स॒ह। उ॒त्ति॒ष्ठ॒न्नित्यु॒त् तिष्ठ॑न्। ओज॑सा स॒ह स॒हौज॒सौज॑सा स॒ह पी॒त्वी पी॒त्वी स॒हौज॒सौज॑सा स॒ह पी॒त्वी। स॒ह पी॒त्वी पी॒त्वी स॒ह स॒ह पी॒त्वी शिप्प्रे॒ शिप्प्रे॑ पी॒त्वी स॒ह स॒ह पी॒त्वी शिप्प्रे॑। पी॒त्वी शिप्प्रे॒ शिप्प्रे॑ पी॒त्वी पी॒त्वी शिप्प्रे॑ऽ अवेपयोवेपय॒ः शिप्प्रे॑ पी॒त्वी पी॒त्वी शिप्प्रे॑ऽ अवेपयः। शिप्प्रे॑ऽ अवेपयोवेपय॒ः शिप्प्रे॒ शिप्प्रे॑ऽ अवेपयः। शिप्प्रे॒ऽ इति॒ शिप्प्रे॑। अ॒वे॒प॒य॒ऽ इत्य॑वेपयः॥ सोम॑मिन्द्रेन्द्र॒ सोम॒ꣳ सोम॑मिन्द्र च॒मू च॒मूऽ इन्द्र॒ सोम॒ꣳ सोम॑मिन्द्र च॒मू। इ॒न्द्र॒ च॒मू च॒मूऽ इन्द्रेन्द्र च॒मू सु॒तꣳ सु॒तञ्च॒मूऽ इन्द्रेन्द्र च॒मू सु॒तम्। च॒मू सु॒तꣳ सु॒तञ्च॒मू च॒मू सु॒तम्। च॒मूऽ इति॑ च॒मू[3]। सु॒तमिति॑ सु॒तम्॥ इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ त्वौज॑स॒ऽ ओज॑से॒ त्वेन्द्रा॒-येन्द्रा॑य॒ त्वौज॑से। त्वौज॑स॒ऽ ओज॑से त्वा॒ त्वौज॑से। ओज॑स॒ऽ इत्योज॑से॥ इन्द्रौ॑-जिष्ठौजि॒ष्ठेन्द्रेन्द्रौ॑जि॒ष्ठौजि॑ष्ठ॒ऽ ओजि॑ष्ठऽ ओजि॒ष्ठेन्द्रेन्द्रौ॑जि॒ष्ठौजि॑ष्ठः। ओ॒जि॒ष्ठौ-जि॑ष्ठ॒ऽ ओजि॑ष्ठऽ ओजिष्ठौजि॒ष्ठौजि॑ष्ठ॒स्त्वन्त्वमोजि॑ष्ठऽ ओजिष्ठौजि॒ष्ठौजि॑ष्ठ॒स्त्व-

[1]. वा. प्रा. २.४०. के अनुसार यहाँ असि॑ पद आद्युदात्त है।

[2]. वर्चस्वान् अहम् यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.३.१५०. के अनुसार नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

[3]. चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) ये पद प्रगृह्य होते हैं। प्रगृह्य होने के कारण स्थितोपस्थित पाठ होता है।

म्। ओजिंष्ठस्त्वन्त्वमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठस्त्वन्देवेषुं देवेषु त्वमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठस्त्व-न्देवेषुं। त्वन्देवेषुं देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वस्यसिं देवेषु त्वन्त्वन्देवेष्ष्वसिं। देवेष्ष्व-स्यसिं देवेषुं देवेष्ष्वस्योजिंष्ठऽ ओजिष्ठोसिं देवेषुं देवेष्ष्वस्योजिंष्ठः। अस्योजिंष्ठऽ ओजिष्ठोस्यस्योजिंष्ठोहमहमोजिष्ठोस्यस्योजिंष्ठोहम्। ओजिंष्ठोहमहमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहमोजिंष्ठऽ ओजिंष्ठोहम्मंनुष्ष्येषु। अहम्मंनु-ष्ष्येषु मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येष्ष्वहमहम्मंनुष्ष्येषु भूयासम्। मनुष्ष्येषु भूयासम्भूयासम्मनुष्ष्येषु मनुष्ष्येषु भूयासम्। भूयासमितिं भूयासम्॥३४॥

अदृंश्रमस्यास्यादृंश्रमदृंश्रमस्य केतवंः केतवोस्यादृंश्रमदृंश्रमस्य केत-वंः[1]। अस्य केतवंः केतवोंस्यास्य केतवो व्वि वि केतवोंस्यास्य केतवो व्वि। केतवो व्वि वि केतवंः केतवो व्वि रश्म्मयों रश्म्मयो व्वि केतवंः केतवो व्वि रश्म्मयंः। व्वि रश्म्मयों रश्म्मयो व्वि वि रश्म्मयो जनाञ्जनान्व्रश्म्मयो व्वि वि रश्म्मयो जनान्। रश्म्मयो जनाञ्जनान्व्रश्म्मयों रश्म्मयो जनारँ॥ऽ अन्त्वनु जनान्व्रश्म्मयों रश्म्मयो जनारँ॥ऽ अनुं। जनारँ॥ऽ अन्त्वनु जनाञ्जनारँ॥ऽ अनुं। अन्वित्त्यनुं॥ भ्राजंन्तोऽ अग्ग्नयोग्ग्नयो ब्भ्राजंन्तो ब्भ्राजंन्तोऽ अग्ग्नयों यथा यथाग्ग्नयो ब्भ्राजंन्तो ब्भ्राजंन्तोऽ अग्ग्नयों यथा[2]। अग्ग्नयों यथा यथाग्ग्नयोग्ग्नयों यथा। यथेतिं यथा॥ सूर्य्यांय त्वा त्वा सूर्य्यांय सूर्य्यांय त्वा ब्भ्राजाय ब्भ्राजाय त्वा सूर्य्यांय सूर्य्यांय त्वा ब्भ्राजाय। त्वा ब्भ्राजाय ब्भ्राजाय त्वा त्वा ब्भ्राजाय। भ्राजायेतिं ब्भ्राजाय ॥ सूर्य्यं ब्भ्राजिष्ट ब्भ्राजिष्ट सूर्य्य सूर्य्यं

---

[1]. व्यञ्जनपराश्च न(वा.प्रा.४.१५९) इस सूत्र के अनुसार अदृश्श्रम् इस पद में शकार के बाद यकार नहीं है।

[2]. यथागृभोभुवोऽग्निभ्यः (वा. प्रा. २.९) गृभः, भुवः एवं अग्नि से बाद में स्थित यथा पद अनुदात्त होता है।

ब्भ्राजि॑ष्ठ॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो ब्भ्राजिष्ठ॒ सूर्य्य॒ सूर्य्य॑ ब्भ्राजिष्ठ॒ ब्भ्राजि॑ष्ठः[1]।
भ्रा॒जि॒ष्ठ॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजि॑ष्ठस्त्वन्त्वम्भ्राजि॑ष्ठो ब्भ्राजिष्ठ ब्भ्राजिष्ठ॒ ब्भ्राजि॑ष्ठ॒स्त्वम्। भ्राजि॑ष्ठस्त्वन्त्वम्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठ॒स्त्वन्दे॒-वेषु॑ दे॒वेषु॒ त्वम्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठ॒स्त्वन्दे॒वेषु॑। त्वन्दे॒वेषु॑ दे॒वेषु॒ त्वन्त्वन्दे॒वेष्ष्वस्यसि॑ दे॒वेषु॒ त्वन्त्वन्दे॒वेष्ष्वसि॑[2]। दे॒वेष्ष्वस्यसि॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेष्ष्वसि॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॒ष्ठोसि॑ दे॒वेषु॑ दे॒वेष्ष्वसि॒ ब्भ्राजि॑ष्ठः। असि॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॒ष्ठोस्यसि॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒हम॒-हम्भ्राजि॒ष्ठोस्यसि॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒हम्। भ्राजि॑ष्ठो॒हम॒हम्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्व॒हम्भ्राजि॑ष्ठो॒ ब्भ्राजि॑ष्ठो॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु। अ॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्व॒हम॒-हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्भूयासम्मनु॒ष्ष्ये॒ष्ष्व॒हम॒हम्म॑नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्। म॒नु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्भूयासम्मनु॒ष्ष्ये॒षु मनु॒ष्ष्ये॒षु भूयासम्। भू॒या॒स॒मिति॑ भूयासम्॥३५॥

आ जि॑ग्घ्र जि॒ग्घ्रा जि॑ग्घ्र कु॒लशं॑ङ्कु॒लशं॑ञ्जिग्घ्रा जि॑ग्घ्र कु॒लशं॑म्। जि॒ग्घ्र॒ कु॒लशं॑ङ्कु॒लशं॑ञ्जिग्घ्र जिग्घ्र कु॒लशं॑म्महि महि कु॒लशं॑ञ्जिग्घ्र जिग्घ्र कु॒लशं॑म्महि। कु॒लशं॑म्महि महि कु॒लशं॑ङ्कु॒लशं॑म्म॒ह्या त्वा॒ त्वा म॑हि कु॒लशं॑ङ्कु॒लशं॑म्म॒ह्या त्वा॑। म॒ह्या त्वा॒ त्वा म॑हि म॒ह्या त्वा॑ ब्विशन्तु ब्विशन्तु॒ त्वा म॑हि म॒ह्या त्वा॑ ब्विशन्तु। आ त्वा॑। त्वा॒ ब्वि॒श॒न्तु॒ ब्वि॒श॒न्तु॒ त्वा॒ त्वा॒ ब्वि॒श॒न्त्विन्द॑व॒ऽ इन्द॑वो ब्विशन्तु त्वा त्वा ब्विश॒न्त्विन्द॑वः। ब्वि॒श॒न्त्विन्द॑व॒ऽ इन्द॑वो ब्विशन्तु ब्विश॒न्त्विन्द॑वः। इन्द॑व॒ऽ इती-न्द॑वः॥ पुन॑रू॒र्ज्जोर्ज्जा पुन॒ः पुन॑रू॒र्ज्जा नि न्न्यू॒र्ज्जा पुन॒ः पुन॑रू॒र्ज्जा नि। ऊ॒र्ज्जा नि न्न्यू॒र्ज्जोर्ज्जा नि व॑र्त्तस्व ब्वर्त्तस्व॒ न्न्यू॒र्ज्जोर्ज्जा नि व॑र्त्तस्व। नि व॑र्त्तस्व ब्वर्त्तस्व॒ नि नि व॑र्त्तस्व॒ सा सा ब्व॑र्त्तस्व॒ नि नि व॑र्त्तस्व॒ सा। ब्व॒र्त्त॒स्व॒ सा सा ब्व॑र्त्तस्व ब्वर्त्तस्व॒ सा नो॑ न॒ः

[1]. इस अर्धरी में प्रथम आमन्त्रित सूर्य पद पादादि होने से अनुदात्त नहीं है, दूसरा आमन्त्रित पद भ्राजिष्ठ पद किसी पद(सूर्य) के बाद में होने से अनुदात्त है। तृतीय पद भ्राजिष्ठः आमन्त्रित नहीं है, अतः अनुदात्त नहीं है, पदपूर्वमामन्त्रितमनानार्थेऽपादादौ(वा.प्रा.२.१७)।

[2]. वा. प्रा. २.४०. के अनुसार यहाँ असि॑ पद आद्युदात्त है।

सा व्व॑र्त्तस्व व्वर्त्तस्व॒ सा न॑ः । सा नो॑ न॒ः सा सा न॑ः स॒हस्र॑ᳪ स॒हस्र॑न्न॒ः सा सा न॑ः स॒हस्र॑म् । न॒ः स॒हस्र॑ᳪ स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑न्धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व स॒हस्र॑न्नो नः स॒हस्र॑-न्धुक्क्ष्व । स॒हस्र॑न्धुक्क्ष्व धुक्क्ष्व स॒हस्र॑ᳪ स॒हस्र॑न्धुक्क्ष्वो॒रुधा॑रो॒रुधा॑रा धुक्क्ष्व स॒हस्र॑ᳪ स॒हस्र॑न्धुक्क्ष्वो॒रुधा॑रा । धु॒क्क्ष्वो॒रुधा॑रो॒रुधा॑रा धुक्क्ष्व धुक्क्ष्वो॒रुधा॑रा॒ पय॑स्वती॒ पय॑स्वत्यु॒रुधा॑रा धुक्क्ष्व धुक्क्ष्वो॒रुधा॑रा॒ पय॑स्वती । उ॒रुधा॑रा॒ पय॑स्वती॒ पय॑स्वत्यु॒रुधा॑रो॒रुधा॑रा॒ पय॑स्वती॒ पुन॒ः पुन॒ः पय॑स्वत्यु॒रुधा॑रो॒रुधा॑रा॒ पय॑स्वती॒ पुन॑ः । उ॒रुधा॒रेत्यु॒रु धा॑रा । पय॑स्वती॒ पुन॒ः पुन॒ः पय॑स्वती॒ पय॑स्वती॒ पुन॑र्म्मा मा॒ पुन॒ः पय॑स्वती॒ पय॑स्वती॒ पुन॑र्म्मा[1] । पुन॑र्म्मा मा॒ पुन॒ः पुन॒र्म्मा विंशताद्विंशता॒दा मा॒ पुन॒ः पुन॒र्म्मा विंशतात् । मा विंशताद्विंशता॒दा मा॒ मा विंशताद्र॒यी र॒यिर्व्विंशता॒-दा मा॒ मा विंशताद्र॒यिः । आ विंशतात् । व्वि॒श॒ता॒द्र॒यी र॒यिर्व्विंशताद्विंशताद्र॒यिः । र॒यिरिति॑ र॒यिः ॥३६॥

इडे॒ रन्ते॒ रन्त॒ऽ इड॒ऽ इडे॒ रन्ते॒ हव्ये॒ हव्ये॒ रन्त॒ऽ इड॒ऽ इडे॒ रन्ते॒ हव्ये॑[2] । रन्ते॒ हव्ये॒ हव्ये॒ रन्ते॒ रन्ते॒ हव्ये॒ काम्म्ये॒ काम्म्ये॒ हव्ये॒ रन्ते॒ रन्ते॒ हव्ये॒ काम्म्ये॑ । हव्ये॒ काम्म्ये॒ काम्म्ये॒ हव्ये॒ हव्ये॒ काम्म्ये॒ चन्द्रे॒ चन्द्रे॒ काम्म्ये॒ हव्ये॒ हव्ये॒ काम्म्ये॒ चन्द्रे॑ । काम्म्ये॒ चन्द्रे॒ चन्द्रे॒ काम्म्ये॒ काम्म्ये॒ चन्द्रे॒ ज्ज्योते॒ ज्ज्योते॒ चन्द्रे॒ काम्म्ये॒ काम्म्ये॒ चन्द्रे॒ ज्ज्योते॑ । चन्द्रे॒ ज्ज्योते॒ ज्ज्योते॒ चन्द्रे॒ चन्द्रे॒ ज्ज्योतेदि॒त्यदि॑ति॒ ज्ज्योते॒ चन्द्रे॒ चन्द्रे॒ ज्ज्योतेदि॑ति । ज्ज्योतेदि॒त्यदि॑ति॒ ज्ज्योते॒ ज्ज्योतेदि॑ति॒ सर॑स्वति॒ सर॑स्व॒-त्यदि॑ति॒ ज्ज्योते॒ ज्ज्योतेदि॑ति॒ सर॑स्वति[3] । अदि॑ति॒ सर॑स्वति॒ सर॑स्व॒त्यदि॒त्यदि॑ति॒ सर॑स्वति॒ महि॒ महि॒ सर॑स्व॒त्यदि॒त्यदि॑ति॒ सर॑स्वति॒ महि॑ । सर॑स्वति॒ महि॒ महि॒

---

[1]. पुनः मा यहाँ सन्धि की दशा में रेफं स्वरधौ (वा. प्रा. ४.३७) इस सूत्र से विसर्जनीय रेफ होता है।

[2]. वा.प्रा.२.२१. के अनुसार इस कण्डिका के प्रारम्भ के नो पद आद्युदात हैं।

[3]. इडे रन्तेश्विनकृतस्य ते पातन्नो यस्ते युवᳪ सुराममिडऽ एहि।
पदकाले तु वाक्ये च ह्रस्वाः पञ्च सरस्वति ॥-अ.शि.५२.

सर॑स्वति॒ सर॑स्वति॒ महि॒ व्विश्रु॑ति॒ व्विश्रु॑ति॒ महि॒ सर॑स्वति॒ सर॑स्वति॒ महि॒ व्विश्रु॑ति। महि॒ व्विश्रु॑ति॒ व्विश्रु॑ति॒ महि॒ महि॒ व्विश्रु॑ति। व्विश्रु॒तीति॒ वि श्रु॑ति॥ ए॒ता ते॑ तऽ ए॒तैता ते॑ऽ अग्घ्येग्घ्ये तऽ ए॒तैता ते॑ऽ अग्घ्ये। ते॒ऽ अ॒ग्घ्ये॒ग्घ्ये॒ ते॒ ते॒ऽ अ॒ग्घ्ये॒ नामा॑नि॒ नामा॑न्यग्घ्ये ते तेऽ अग्घ्ये॒ नामा॑नि[1]। अ॒ग्घ्ये॒ नामा॑नि॒ नामा॑न्यग्घ्येग्घ्ये॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑न्यग्घ्येग्घ्ये॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्य॑÷। नामा॑नि दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑नि॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यो॑ मा मा दे॒वेब्भ्यो॒ नामा॑नि॒ नामा॑नि दे॒वेब्भ्यो॑ मा। दे॒वेब्भ्यो॑ मा मा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ मा सु॒कृत॑ꣳ सु॒कृत॑म्मा दे॒वेब्भ्यो॑ दे॒वेब्भ्यो॑ मा सु॒कृत॑म्। मा॒ सु॒कृत॑ꣳ सु॒कृत॑म्मा मा सु॒कृत॑म्ब्रूताद् ब्रूतात्सु॒कृत॑म्मा मा सु॒कृत॑म्ब्रूतात्। सु॒कृत॑म्ब्रूताद् ब्रूतात्सु॒कृत॑ꣳ सु॒कृत॑म्ब्रूतात्। सु॒कृ॒तमिति॑ सु कृत॑म्। ब्रू॒ता॒दिति॑ ब्रूतात्॥३७॥

व्वि नो॑ नो॒ व्वि वि न॑ऽ इन्द्रेन्द्र नो॒ व्वि वि न॑ऽ इन्द्र। न॒ऽ इ॒न्द्रे॒न्द्र॒ नो॒ न॒ऽ इ॒न्द्र॒ मृधो॒ मृध॑ऽ इन्द्र नो नऽ इन्द्र॒ मृध॑÷। इ॒न्द्र॒ मृधो॒ मृध॑ऽ इन्द्रेन्द्र॒ मृधो॑ जहि जहि॒ मृध॑ऽ इन्द्रेन्द्र॒ मृधो॑ जहि। मृधो॑ जहि जहि॒ मृधो॒ मृधो॑ जहि नी॒चा नी॒चा ज॑हि॒ मृधो॒ मृधो॑ जहि नी॒चा। ज॒हि॒ नी॒चा नी॒चा ज॑हि जहि नी॒चा य॑च्छ यच्छ नी॒चा ज॑हि जहि नी॒चा य॑च्छ। नी॒चा य॑च्छ यच्छ नी॒चा नी॒चा य॑च्छ पृतन्न्य॒तः॒ पृ॑तन्न्य॒तो य॑च्छ नी॒चा नी॒चा य॑च्छ पृतन्न्य॒तः॒। य॒च्छ॒ पृ॒त॒न्न्य॒तः॒ पृ॑तन्न्य॒तो य॑च्छ यच्छ पृतन्न्य॒तः॒। पृ॒त॒न्न्य॒तऽ इति॑ पृतन्न्य॒तः॒॥ यो॒ऽ अ॒स्म्मा॒न॒स्म्मान्न्यो यो॒ऽ अ॒स्म्मा२ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑त्त्यभि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान्न्यो यो॒ऽ अ॒स्म्मा२ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑ति। अ॒स्म्मा२ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॑त्त्यभि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान॒स्म्मा२ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॒त्त्यध॑र॒मध॑रम-भि॒दास॑त्त्य॒स्म्मान॒स्म्मा२ँ॥ऽ अ॑भि॒दास॒त्त्यध॑रम्। अ॒भि॒दास॒त्त्यध॑र॒मध॑रमभि॒दास॑-

[1]. निशब्दो बहुलम् (वा. प्रा. ३.१८) पदान्त में स्थित नि पद अधिकांशतः लुप्त हो जाता है। कहीं लुप्त नहीं होता है। जैसे नामानि में लुप्त नहीं हुआ है।

त्यभिदासत्त्यधरङ्गमय गमयाधरमभिदासंत्यभिदासत्त्यधंरङ्गमय। अभिदासती-त्यभि दासति। अधरङ्गमय गमयाधरमधरङ्गमया तमस्तमो गमयाधरमधरङ्गमया तमः। गमया तमस्तमो गमय गमया तमः। तमऽ इति तमः॥ इन्द्राय त्वा त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा विमृधे विमृधे त्वेन्द्रायेन्द्राय त्वा विमृधे। त्वा विमृधे विमृधे त्वा त्वा विमृधे। विमृधऽ इति वि मृधे॥३८॥

वाचस्प्पतिम्पतिँवाचो वाचस्प्पतिँविश्वकर्म्माणँविश्वकर्म्माणम्पतिँवाचो वाचस्प्पतिँविश्वकर्म्माणम्[1]। पतिँविश्वकर्म्माणँविश्वकर्म्माणम्पतिम्पतिँविश्व-कर्म्माणमूतयऽ ऊतये विश्वकर्म्माणम्पतिम्पतिँविश्वकर्म्माणमूतये। विश्वकर्-म्माणमूतयऽ ऊतये विश्वकर्म्माणँविश्वकर्म्माणमूतये मनोजुवम्मनोजुवमूतये विश्वकर्म्माणँविश्वकर्म्माणमूतये मनोजुवम्। विश्वकर्म्माणमिति विश्व कर्म्माणम्। ऊतये मनोजुवम्मनोजुवमूतयऽ ऊतये मनोजुवँवाजे वाजे मनोजु-वमूतयऽ ऊतये मनोजुवँवाजे। मनोजुवँवाजे वाजे मनोजुवम्मनोजुवँवाजेऽ अद्याद्य वाजे मनोजुवम्मनोजुवँवाजेऽ अद्य। मनोजुवमिति मनः जुवम्। वाजेऽ अद्याद्य वाजे वाजेऽ अद्या हुवेम हुवेमाद्य वाजे वाजेऽ अद्या हुवेम। अद्या हुवेम हुवेमाद्याद्या हुवेम। हुवेमेति हुवेम॥ स नो नः स स नो विश्वानि विश्वानि नः स स नो विश्वानि। नो विश्वानि विश्वानि नो नो विश्वानि हवनानि हवनानि विश्वानि नो नो विश्वानि हवनानि। विश्वानि हवनानि हवनानि विश्वानि विश्वानि हवनानि जोषज्जोषद्धवनानि विश्वानि विश्वानि हवनानि जोषत्[2]। हवनानि जोषज्जोषद्धवनानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूर्विश्वशम्भूर्ज्जोषद्धवनानि

---

[1]. पत्यौ तालव्यस्वरोदये (वा. प्रा. ३.३५) तथा पदे च(वा.प्रा.३.३६) इन सूत्रों के अनुसार यहाँ वाचः पद का विसर्जनीय सकार होता है।

[2]. जोषत् हवनानि यहाँ वा.प्रा.४.१२०. के अनुसार तकार दकार तथा वा.प्रा.४.१२४. के अनुसार हकार धकार होता है।

ह॒र्वनानि जोषद्विश्वशंम्भूः। जो॒षद्वि॒श्वशंम्भूर्ब्वि॒श्वशंम्भूर्ज्जोषज्जोषद्वि॒श्वशंम्भू॒रव॒से-र्वसे ब्वि॒श्वशंम्भूर्ज्जोषज्जोषद्वि॒श्वशंम्भू॒रर्वसे। ब्वि॒श्वशंम्भू॒रव॒सेर्वसे ब्वि॒श्वशंम्भूर्ब्वि॒श्व-शंम्भू॒रर्वसे सा॒धुर्कम्र्मा सा॒धुकु॒म्र्मार्वसे ब्वि॒श्वशंम्भूर्ब्वि॒श्वशंम्भू॒रर्वसे सा॒धुर्कम्र्मा। ब्वि॒श्वशंम्भू॒रितिं वि॒श्व शंम्भूः। अर्वसे सा॒धुर्कम्र्मा सा॒धुकु॒म्र्मार्व॒सेर्वसे सा॒धुर्कम्र्मा। सा॒धुकु॒र्म्मेतिं सा॒धु र्कम्र्मा॥ इन्द्रांय त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रांय त्वा ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रांय त्वा ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे। त्वा॒ ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे त्वा त्वा ब्वि॒श्वर्कम्र्मणे। ब्वि॒श्वर्कम्र्मण॒ऽ इतिं वि॒श्व र्कम्र्मणे॥३९॥

ब्विश्वंकम्र्मन्न्ह॒विषां ह॒विषा॒ ब्विश्वंकम्र्म॒न्न्विश्वंकम्र्मन्न्ह॒विषा॒ ब्वर्द्धनेन॒ ब्वर्द्धनेन ह॒विषा॒ ब्विश्वंकम्र्म॒न्न्विश्वंकम्र्मन्न्ह॒विषा॒ ब्वर्द्धनेन। ब्विश्वंकम्र्म॒न्निति॒ विश्वं कम्र्मन्। ह॒विषा॒ ब्वर्द्धनेन॒ ब्वर्द्धनेन ह॒विषां ह॒विषा॒ ब्वर्द्धनेन त्रा॒तार॑न्त्रा॒तारँ॒ब्वर्द्धनेन ह॒विषां ह॒विषा॒ ब्वर्द्धनेन त्रा॒तार॑म्। ब्वर्द्धनेन त्रा॒तार॑न्त्रा॒तारँ॒ब्वर्द्धनेन॒ ब्वर्द्धनेन त्रा॒ता॒रमिन्द्र॒मिन्द्र॑न्त्रा॒ता-रँ॒ब्वर्द्धनेन॒ ब्वर्द्धनेन त्रा॒ता॒रमिन्द्र॑म्। त्रा॒ता॒रमिन्द्र॒मिन्द्र॑न्त्रा॒तार॑न्त्रा॒ता॒रमिन्द्र॑म-कृणोरकृणो॒रिन्द्र॑न्त्रा॒तार॑न्त्रा॒ता॒रमिन्द्र॑मकृणोः। इन्द्र॑मकृणोरकृणो॒रिन्द्र॒मिन्द्र॑म-कृणोरव॒द्ध्यम॑व॒द्ध्यम॑कृणो॒रिन्द्र॒मिन्द्र॑मकृणोरव॒द्ध्यम्। अ॒कृ॒णो॒र॒व॒द्ध्यम॑व॒द्ध्यम॑-कृणोरकृणोरव॒द्ध्यम्। अ॒व॒द्ध्यमित्त्य॑व॒द्ध्यम्॥ तस्म्मै॒ ब्विशो॒ ब्विश॒स्तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ ब्विश॒ः सः सँब्विश॒स्तस्म्मै॒ तस्म्मै॒ ब्विश॒ः सम्। ब्विश॒ः सः सँब्विशो॒ ब्विश॒ः सम॑नमन्तानमन्त॒ सँब्विशो॒ ब्विश॒ः सम॑नमन्त। सम॑नमन्तानमन्त॒ सः सम॑नमन्त पू॒र्व्वीः पू॒र्व्वीर॑नमन्त॒ सः सम॑नमन्त पू॒र्व्वीः। अ॒न॒म॒न्त॒ पू॒र्व्वीः पू॒र्व्वीर॑नमन्तानमन्त पू॒र्व्वीर॒यम॒यम्पू॒र्व्वीर॑नमन्तानमन्त पू॒र्व्वीर॒यम्। पू॒र्व्वीर॒यम॒य-म्पू॒र्व्वीः पू॒र्व्वीर॒यमु॒ग्ग्रऽ उ॒ग्ग्रो॒यम्पू॒र्व्वीः पू॒र्व्वीर॒यमु॒ग्ग्रः। अ॒यमु॒ग्ग्रऽ उ॒ग्ग्रो॒यम॒यमु॒ग्ग्रो ब्वि॒हव्यो॑ ब्वि॒हव्य॑ऽ उ॒ग्ग्रो॒यम॒यमु॒ग्ग्रो ब्वि॒हव्य॑ः। उ॒ग्ग्रो ब्वि॒हव्यो॑ ब्वि॒हव्य॑ऽ उ॒ग्ग्रऽ

उग्ग्रो ब्विहव्यो यथा यथा ब्विहव्यऽ उग्ग्रऽ उग्ग्रो ब्विहव्यो यथा। ब्विहव्यो यथा यथा ब्विहव्यो ब्विहव्यो यथासदसद्यथा ब्विहव्यो ब्विहव्यो यथासत्। ब्विहव्यऽ इति वि हव्यः। यथासदसद्यथा यथासत्। असदित्यसत्॥४०॥

अग्ग्नयै त्वा त्वाग्ग्नयेग्ग्नयै त्वा गायत्रच्छन्दसङ्गायत्रच्छन्दसन्त्वाग्ग्नयेग्ग्नयै त्वा गायत्रच्छन्दसम्[1]। त्वा गायत्रच्छन्दसङ्गायत्रच्छन्दसन्त्वा त्वा गायत्रच्छन्दसङ्गृह्णामि गृह्णामि गायत्रच्छन्दसन्त्वा त्वा गायत्रच्छन्दसङ्गृह्णामि। गायत्रच्छन्दसङ्गृह्णामि गृह्णामि गायत्रच्छन्दसङ्गायत्रच्छन्दसङ्गृह्णामीन्द्रायेन्द्राय गृह्णामि गायत्रच्छन्दसङ्गायत्रच्छन्दसङ्गृह्णामीन्द्राय[2]। गायत्रच्छन्दसमिति गायत्र छन्दसम्। गृह्णामीन्द्रायेन्द्राय गृह्णामि गृह्णामीन्द्राय त्रिष्टुप्प्छन्दसन्त्रिस्तुप्प्छन्दसमिन्द्राय गृह्णामि गृह्णामीन्द्राय त्रिष्टुप्प्छन्दसम्। इन्द्राय त्रिष्टुप्प्छन्दसन्त्रिस्तुप्प्छन्दसमिन्द्रायेन्द्राय त्रिष्टुप्प्छन्दसँव्विश्श्वेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यस्त्रिस्तुप्प्छन्दसमिन्द्रायेन्द्राय त्रिष्टुप्प्छन्दसँव्विश्श्वेब्भ्यः। त्रिष्टुप्प्छन्दसँव्विश्श्वेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यस्त्रिस्तुप्प्छन्दसन्त्रिष्टुप्प्छन्दसँव्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यस्त्रिस्तुप्प्छन्दसन्त्रिष्टुप्प्छन्दसँव्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यः। त्रिस्तुप्प्छन्दसमिति त्रिस्तुप् छन्दसम्। व्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसन्देवेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यो व्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसम्। देवेब्भ्यो जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसमनुष्टुबनुस्तुञ्जगच्छन्दसन्देवेब्भ्यो देवेब्भ्यो जगच्छन्दसमनुष्टुप्। जगच्छन्दसमनुष्टुबनुस्तुञ्जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसमनुष्टुप्से तेनुस्तुञ्जगच्छन्दसञ्जगच्छन्दसमनुष्टुप्से।

---

1. स्वरश्छकारे चकारेण सर्वत्र (वा. प्रा. ४.२५) छकार बाद में होने पर स्वर सर्वत्र चकार से व्यवहित होता है।

2. अथैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पढ़े गये सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र के अनुसार गृह्णामि इन्द्राय यहाँ दीर्घ ईकार होता है। सिमादितोऽष्टौ स्वराणाम्(वा.प्रा.१.४४) के अनुसार इ स्वर सिं संज्ञक है।

जगच्छन्दसमिति जगत् छन्दसम्। अनुष्टुप्सें तेनुस्तुबनुष्टुप्सैभिगरोभिगरस्तेनु-स्तुबनुष्टुप्सैभिगरः[1]। अनुस्तुबित्यनु स्तुप्। तेभिगरोभिगरस्तें तेभिगरः। अभिगरऽ इत्यभि गरः ॥४१॥

व्रेशीनान्त्वा त्वा व्रेशीनाँव्रेशीनान्त्वा पत्मन्नपत्मँस्त्वा व्रेशीनाँव्रेशीनान्त्वा पत्मन् । त्वा पत्मन्नपत्मँस्त्वा त्वा पत्मन्ना धूनोमि धूनोम्म्या पत्मँस्त्वा त्वा पत्मन्ना धूनोमि। पत्मन्ना धूनोमि धूनोम्म्या पत्मन्नपत्मन्ना धूनोमि कुकूननानाङ्कुकूननानान्धूनोम्म्या पत्मन्नपत्मन्ना धूनोमि कुकूननानाम्। आ धूनोमि। धूनोमि कुकूननानाङ्कुकूननानान्धूनोमि धूनोमि कुकूननानाम्भन्दनानाम्भन्दनानाङ्कुकूननानान्धूनोमि धूनोमि कुकूननानाम्भन्दनानाम्। कुकूननानाम्भन्दनानाम्भन्दनानाङ्कुकूननानाङ्कुकूननानाम्भन्दनानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्भन्दनानाङ्कुकूननानाङ्कुकूननानाम्भन्दनानाम्मदिन्तमानाम्। भन्दनानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्भन्दनानाम्भन्दनानाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्भन्दनानाम्भन्दनानाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाम्[2]। मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाꣳ शुक्रꣳ शुक्रम्मधुन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मदिन्तमानाम्मधुन्तमानाꣳ शुक्रम्। मदिन्तमानामिति मदिन् तमानाम्। मधुन्तमानाꣳ शुक्रꣳ शुक्रम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाꣳ शुक्रन्त्वा त्वा शुक्रम्मधुन्तमानाम्मधुन्तमानाꣳ शुक्रन्त्वा। मधुन्तमानामिति मधुन् तमानाम्। शुक्रन्त्वा त्वा शुक्रꣳ शुक्रन्त्वा शुक्रे शुक्रे त्वा शुक्रꣳ शुक्रन्त्वा शुक्रे। त्वा शुक्रे शुक्रे त्वा त्वा शुक्रऽ आ धूनोमि धूनोम्म्या शुक्रे त्वा त्वा शुक्रऽ आ धूनोमि। शुक्रऽ आ धूनोमि

[1]. ते अभिगरः यहाँ यजुष्षु च(वा.प्रा.४.८०) के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. न तमे (वा. प्रा. ३.१४३) तम परे रहने पर नकार विकार को नहीं प्राप्त करता है।

धूनोम्म्या शुक्रे शुक्रऽ आ धूंनोम्म्यह्वोह्वौ धूनोम्म्या शुक्रे शुक्रऽ आ धूंनोम्म्यह्वं ÷ । आ धूंनोमि। धूनोम्म्यह्वोह्वौ धूनोमि धूनोम्म्यह्वौ रूपे रूपेह्वौ धूनोमि धूनोम्म्यह्वौ रूपे। अह्वौ रूपे रूपेह्वोह्वौ रूपे सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रूपेह्वोह्वौ रूपे सूर्य्यस्य। रूपे सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रूपे रूपे सूर्य्यस्य रश्मिमषु रश्मिमषु सूर्य्यस्य रूपे रूपे सूर्य्यस्य रश्मिमषु। सूर्य्यस्य रश्मिमषु रश्मिमषु सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रश्मिमषु। रश्मिमष्ष्विति रश्मिमषु॥४२॥

ककुभङ्ः रूपङ्ः रूपङ्कुभङ्कुभङ्ः रूपँवृषभस्यं वृषभस्यं रूपङ्कुभङ्कुभङ्ः रूपँवृषभस्यं[1]। रूपँवृषभस्यं वृषभस्यं रूपङ्ः रूपँवृषभस्यं रोचते रोचते वृषभस्यं रूपङ्ः रूपँवृषभस्यं रोचते। वृषभस्यं रोचते रोचते वृषभस्यं वृषभस्यं रोचते बृहद् बृहद्रोचते वृषभस्यं वृषभस्यं रोचते बृहत्। रोचते बृहद् बृहद्रोचते रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रो बृहद्रोचते रोचते बृहच्छुक्रः। बृहच्छुक्रः शुक्रो बृहद् बृहच्छुक्रः शुक्रस्यं शुक्रस्यं शुक्रो बृहद् बृहच्छुक्रः शुक्रस्यं। शुक्रः शुक्रस्यं शुक्रस्यं शुक्रः शुक्रः शुक्रस्यं पुरोगाः पुंरोगाः शुक्रस्यं शुक्रः शुक्रः शुक्रस्यं पुरोगाः। शुक्रस्यं पुरोगाः पुंरोगाः शुक्रस्यं शुक्रस्यं पुरोगाः सोमः सोमं÷ पुरोगाः शुक्रस्यं शुक्रस्यं पुरोगाः सोमं÷। पुरोगाः सोमः सोमं÷ पुरोगाः पुंरोगाः सोमः सोमस्य सोमस्य सोमं÷ पुरोगाः पुंरोगाः सोमः सोमस्य। पुरोगाऽ इति पुरः गाः। सोमः सोमस्य सोमस्य सोमः सोमः सोमस्य पुरोगाः पुंरोगाः सोमस्य सोमः सोमः सोमस्य पुरोगाः। सोमस्य पुरोगाः पुंरोगाः सोमस्य सोमस्य पुरोगाः। पुरोगाऽ इति पुरः गाः॥ त्वा गृह्णामि गृह्णामि त्वा त्वा गृह्णामि। गृह्णामीति गृह्णामि॥४३॥

---

1. अनुस्वारं रोष्मसु मकारः (वा. प्रा. ४.१) रेफ एवं ऊष्म वर्ण बाद में होने पर मकार अनुस्वार होता है। प्रतिज्ञा सूत्र ३. में अनुस्वार का ङ् आदेश कहा है। इसके तीन भेद कहे गये हैं। ह्रस्व, दीर्घ एवं गुरु।

उ॒शि॒गि॑ही॒ह्यु॒शि॒गु॒शि॒गि॑हि व्र॒शी व्र॒शीह्यु॒शि॒गु॒शि॒गि॑हि व्र॒शी[1]। इ॒हि॒ व्र॒शी व्र॒शीही॑हि व्र॒शीन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य व्र॒शीही॑हि व्र॒शीन्द्र॑स्य। व्र॒शीन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य व्र॒शी व्र॒शी-न्द्र॑स्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒स्म्मत्स॒खेन्द्र॑स्य व्र॒शी व्र॒शीन्द्र॑स्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या। इन्द्र॑स्या॒स्म्म-त्त्स॑ख्या॒स्म्मत्स॒खेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒ व्विश्वे॑षाँ॒व्विश्वे॑षामु॒स्म्मत्स॒खेन्द्र॒स्येन्द्र॑-स्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒ व्विश्वे॑षाम्। अ॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒ व्विश्वे॑षाँ॒व्विश्वे॑षामु॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒ व्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑न्दे॒वानाँ॒व्विश्वे॑षामु॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒स्म्मत्त्स॑ख्या॒ व्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑म्। अ॒स्म्मत्स॒खेत्य॒स्म्मत् स॑ख्या। व्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑न्दे॒वानाँ॒व्विश्वे॑षाँ॒व्विश्वे॑षान्दे॒वाना॑म्। दे॒वाना॒मिति॑ दे॒वाना॑म्॥४४॥

इ॒ह र॒ती र॒ति॑रि॒हेह र॒ती॑ रम॒द्ध्वꣳ रम॒द्ध्वꣳ र॒ति॑रि॒हेह र॒ती॑ रम॒द्ध्वम्। र॒ती॑ रम॒द्ध्वꣳ रम॒द्ध्वꣳ र॒ती र॒ती॑ रम॒द्ध्वन्धृति॒र्धृती॑ रम॒द्ध्वꣳ र॒ती र॒ती॑ रम॒द्ध्वन्धृति॑ः। र॒म॒द्ध्वन्धृति॒र्धृती॑ रम॒द्ध्वꣳ रम॒द्ध्वन्धृति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒र्धृती॑ रम॒द्ध्वꣳ रम॒द्ध्वन्धृति॒ꣳ स्वधृ॑तिꣳ[2]। धृति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒र्धृति॒र्धृति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वधृ॑ति॒र्धृति॒र्धृति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वाहा॑। स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॒ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वधृ॑ति॒ꣳ स्वाहा॑। स्वधृ॑ति॒रिति॒ स्व धृ॑तिꣳ। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ उ॒प॒सृ॒जन्ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑मुपसृ॒-जन्नु॑पसृ॒जन्ध॒रुण॑म्मा॒त्रे मा॒त्रे ध॒रुण॑मुपसृ॒जन्नु॑पसृ॒जन्ध॒रुण॑म्मा॒त्रे। उ॒प॒सृ॒जन्नि-त्यु॑प सृ॒जन्। ध॒रुण॑म्मा॒त्रे मा॒त्रे ध॒रुण॑न्ध॒रुण॑म्मा॒त्रे ध॒रुणो॑ ध॒रुणो॑ मा॒त्रे ध॒रुण॑-न्ध॒रुण॑म्मा॒त्रे ध॒रुण॑ः। मा॒त्रे ध॒रुणो॑ ध॒रुणो॑ मा॒त्रे मा॒त्रे ध॒रुणो॑ मा॒तर॑म्मा॒तर॑न्ध॒रु-णो॑ मा॒त्रे मा॒त्रे ध॒रुणो॑ मा॒तर॑म्। ध॒रुणो॑ मा॒तर॑म्मा॒तर॑न्ध॒रुणो॑ ध॒रुणो॑ मा॒त॒रन्धय॒-न्धय॑न्न्मा॒तर॑न्ध॒रुणो॑ ध॒रुणो॑ मा॒त॒रन्धय॑न्। मा॒त॒रन्धय॒न्धय॑न्न्मा॒तर॑म्मा॒त॒रन्धय॑न्। धय॒न्निति॒ धय॑न्॥ रा॒यस्प्पोष॒म्पोष॑ꣳ रा॒यो रा॒यस्प्पोष॑मु॒स्म्मास्व॒स्म्मासु॒ पोष॑ꣳ

[1]. व्रशी इहि यहाँ वा.प्रा.४.५२. के अनुसार दीर्घ होता है।

[2]. धृतिर्धृतिः तथा स्वधृतिर्धृतिः इन स्थलों में ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) इस सूत्र से रेफ से परवर्ती धकार का द्वित्व नहीं होगा।

रायो रायस्प्पोषमस्म्मासु[1]। पोषमस्म्मास्वस्म्मासु पोषम्पोषमस्म्मासु दीधर-द्दीधरदस्म्मासु पोषम्पोषमस्म्मासु दीधरत्। अस्म्मासु दीधरद्दीधरदस्म्मास्व-स्म्मासु दीधरत्त्स्वाहा स्वाहा दीधरदस्म्मास्वस्म्मासु दीधरत्त्स्वाहा। दीधरत्त्स्वाहा स्वाहा दीधरद्दीधरत्त्स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥४५॥

सत्रस्यऽ ऋद्धिर्ऋद्धिः सत्रस्य सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यस्यृद्धिः सत्रस्य सत्र-स्यऽ ऋद्धिरसि[2]। ऋद्धिरस्यस्यृद्धिर्ऋद्धिरस्यगन्मागन्मास्यृद्धिर्ऋद्धिरस्यगन्म। अस्यगन्मागन्मास्यस्यगन्म ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरगन्मास्यस्यगन्म ज्ज्योतिः। अगन्म ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरगन्मागन्म ज्ज्योतिरमृताऽ अमृता ज्ज्योतिरगन्मागन्म ज्ज्योतिरमृताः। ज्ज्योतिरमृताऽ अमृता ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरमृताऽ अभूमाभूमामृता ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरमृताऽ अभूम। अमृताऽ अभूमाभूमामृताऽ अमृताऽ अभूम। अभूमेत्त्यभूम॥ दिवम्पृथिव्याः पृथिव्या दिवन्दिवम्पृथिव्याऽ अद्ध्यधि पृथिव्या दिवन्दिवम्पृथिव्याऽ अधि। पृथिव्याऽ अद्ध्यधि पृथिव्याः पृथिव्याऽ अद्ध्यारुहा-मारुहामाधि पृथिव्याः पृथिव्याऽ अद्ध्यारुहाम। अद्ध्यारुहामारुहामाद्ध्यद्ध्यारु-हामाविदामाविदामारुहामाद्ध्यद्ध्यारुहामाविदाम। अरुहामाविदामाविदामारुहा-मारुहामाविदाम देवान्देवानविदामारुहामारुहामाविदाम देवान्। अविदाम देवा-न्देवानविदामाविदाम देवान्त्स्वः स्वर्द्देवानविदामाविदाम देवान्त्स्वः। देवान्त्स्वः स्वर्द्देवान्देवान्त्स्वर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः स्वर्द्देवान्देवान्त्स्वर्ज्ज्योतिः। स्वर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः स्वः स्वर्ज्ज्योतिः। ज्ज्योतिरिति ज्ज्योतिः॥४६॥

[1]. रायः सहसः पोषपुत्रययोः (वा. प्रा. ३.२५) इस सूत्र के अनुसार पोष परे रहने पर रायः का विसर्जनीय सकार होता है।

[2]. वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र ६.२६. के अनुसार ऋद्धिः इस पद में दो स्पर्श (दकार, धकार) होते हैं।

यु॒वन्त॒न्तँ॑ऽयुवँ॑ऽयुवन्त॒मिन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता तँ॑ऽयुवँ॑ऽयुवन्त॒मिन्द्रापर्व्वता[1] । तमिन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता॒ तन्त॒मिन्द्रापर्व्वता पु॒रो॒यु॒धा॑ पु॒रो॒यु॒धेन्द्रापर्व्वता॒ तन्त॒मिन्द्रापर्व्वता पु॒रो॒यु॒धा॑। इ॒न्द्रा॒प॒र्व्व॒ता॒ पु॒रो॒यु॒धा॑ पु॒रो॒यु॒धेन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता पु॒रो॒यु॒धा॒ यो यः॒ पुरो॒यु॒धेन्द्रापर्व्वतेन्द्रापर्व्वता पु॒रो॒यु॒धा॒ यः॒। पु॒रो॒यु॒धा॒ यो यः॒ पुरो॒यु॒धा॑ पु॒रो॒यु॒धा॒ यो नो॑ नो॒ यः॒ पुरो॒यु॒धा॑ पु॒रो॒यु॒धा॒ यो नः॑। पु॒रो॒यु॒धेति॑ पु॒रः॒ऽयु॒धा॑। यो नो॑ नो॒ यो यो नः॑ पृत॒न्न्यात्पृत॒न्न्यान्नो॒ यो यो नः॑ पृत॒न्न्यात्। नः॒ पृत॒न्न्यात्पृत॒न्न्यान्नो॑ नः॒ पृत॒न्न्यादपाप॑ पृत॒न्न्यान्नो॑ नः॒ पृत॒न्न्यादप॑। पृत॒न्न्यादपाप॑ पृत॒न्न्यात्पृत॒न्न्यादप॒ तन्त॒न्तन्त॒मप॑ पृत॒न्न्यात्पृत॒न्न्यादप॒ तन्त॑म्। अप॒ तन्त॒न्तन्त॒मपाप॒ तन्त॒मिदित॒न्त॒मपाप॒ तन्त॒मित्। तन्त॒मिदित॒न्त॒न्तन्त॒मिद्धतः॒ हत॒मित॒न्त॒न्तन्त॒मिद्धतम्। तन्त॒मिति॒ तम् त॑म्। इ॒द्धतः॒ हत॒मिदिद्धतँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ व्वज्ज्रे॑ण हत॒मिदिद्धतँ॑व्वज्ज्रे॑ण। ह॒तँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ व्वज्ज्रे॑ण हतः॒ ह॒तँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ तन्त॒न्तन्तँ॑व्वज्ज्रे॑ण हतः॒ ह॒तँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ तन्त॑म्। व्वज्ज्रे॑ण॒ तन्त॒न्तन्तँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ व्वज्ज्रे॑ण॒ तन्त॒मिदित॒न्तँ॑व्वज्ज्रे॑ण॒ व्वज्ज्रे॑ण॒ तन्त॒मित्। तन्त॒मिदित॒न्त॒न्तन्त॒मिद्धतः॒ हत॒मित॒न्त॒न्तन्त॒मिद्धतम्। तन्त॒मिति॒ तम् त॑म्। इ॒द्धतः॒ हत॒मिदिद्धतम्। ह॒तमिति॑ हतम्॥ दू॒रे च॒त्ताय॑ च॒त्ताय॑ दू॒रे दू॒रे च॒त्ताय॑ च्छन्त्सच्छन्त्सच॒त्ताय॑ दू॒रे दू॒रे च॒त्ताय॑ च्छन्त्सत्। च॒त्ताय॑ च्छन्त्सच्छन्त्सच॒त्ताय॑ च॒त्ताय॑ च्छन्त्स॒द् गह॑न॒ङ्गह॑नञ्छन्त्सच॒त्ताय॑ च॒त्ताय॑ च्छन्त्स॒द् गह॑नम् । छ॒न्त्स॒द् गह॑न॒ङ्गह॑नञ्छन्त्सच्छन्त्स॒द् गह॑न॒ँय्यद्यद् गह॑नञ्छन्त्सच्छन्त्स॒द् गह॑न॒ँय्यत्[2]। गह॑न॒ँय्यद्यद् गह॑न॒ङ्गह॑न॒ँय्यदिन॑क्ष॒दिन॑क्ष॒द्यद् गह॑न॒ङ्गह॑न॒ँय्यदिन॑क्षत्। यदिन॑क्ष॒दिन॑क्ष॒द्यद्यदिन॑क्षत्। इन॑क्ष॒दितीन॑क्षत्॥ अ॒स्म्माकः॒

---

[1]. पूर्वो द्वन्द्वेष्ववायुषु (वा. प्रा. ३.१२७) वायुरहित द्वन्द्व समासों में पूर्वपद का अन्तिम स्वर दीर्घ हो जाता है।

[2]. गहनम् यत् यहाँ वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक अन्तस्थ यँ हो जाता है। याज्ञवल्क्य शिक्षा १५०. के अनुसार यकार का यकारोच्चारण होता है।

शत्रू॒ञ्छत्रू॑नु॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॒ꣳ शत्रू॒न्परि॒ परि॒ शत्रू॑नु॒स्म्माक॑म॒स्म्माक॒ꣳ शत्रू॒न्प-
रि॑। शत्रू॒न्परि॒ परि॒ शत्रू॒ञ्छत्रू॒न्परि॑ शूर शू॒र परि॒ शत्रू॒ञ्छत्रू॒न्परि॑ शूर। परि॑ शूर शू॒र
परि॒ परि॑ शूर ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वत॑ः शू॒र परि॒ परि॑ शूर ब्वि॒श्श्वत॑ः। शू॒र ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वत॑ः
शूर शूर ब्वि॒श्श्वतो॑ दु॒र्म्मा दु॒र्म्मा ब्वि॒श्श्वत॑ः शूर शूर ब्वि॒श्श्वतो॑ दु॒र्म्मा। ब्वि॒श्श्वतो॑ दु॒र्म्मा
दु॒र्म्मा ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑ दु॒र्म्मा द॑र्षीष्ट दर्षीष्ट दु॒र्म्मा ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑ दु॒र्म्मा द॑र्षीष्ट।
दु॒र्म्मा द॑र्षीष्ट दर्षीष्ट दु॒र्म्मा दु॒र्म्मा द॑र्षीष्ट ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑ दर्षीष्ट दु॒र्म्मा दु॒र्म्मा द॑र्षीष्ट
ब्वि॒श्श्वत॑ः। द॒र्षी॒ष्ट ब्वि॒श्श्वतो॑ ब्वि॒श्श्वतो॑ दर्षीष्ट दर्षीष्ट ब्वि॒श्श्वत॑ः। ब्वि॒श्श्वत॒ऽ इति॑ वि॒श्श्वत॑ः
॥ स्या॒म॒ सु॒वीरा॑ः सु॒वीरा॑ः स्याम स्याम सु॒वीरा॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒वीरा॑ः स्याम स्याम
सु॒वीरा॑ ब्वी॒रैः[1]। सु॒वीरा॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒वीरा॑ः सु॒वीरा॑ ब्वी॒रैः सु॒पोषा॑ः सु॒पोषा॑ ब्वी॒रैः
सु॒वीरा॑ः सु॒वीरा॑ ब्वी॒रैः सु॒पोषा॑ः। सु॒वीरा॒ऽ इति॑ सु॒ ब्वीरा॑ः। ब्वी॒रैः सु॒पोषा॑ः सु॒पोषा॑
ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒पोषा॒ः पोषै॒ः पोषै॑ः सु॒पोषा॑ ब्वी॒रैर्ब्वी॒रैः सु॒पोषा॒ः पोषै॑ः। सु॒पोषा॒ः पोषै॒ः
पोषै॑ः सु॒पोषा॑ः सु॒पोषा॒ः पोषै॑ः। सु॒पोषा॒ऽ इति॑ सु॒ पोषा॑ः। पोषै॒रिति॒ पोषै॑ः॥
४७॥

प॒र॒मे॒ष्ठ्य॒भिधी॑तो॒भिधी॑तः परमे॒स्त्थी प॑र॒मे॒ष्ठ्य॒भिधी॑तः प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जा-
प॑तिर॒भिधी॑तः परमे॒स्त्थी प॑र॒मे॒ष्ठ्य॒भिधी॑तः प्प्र॒जाप॑तिः[2]। प॒र॒मे॒स्त्थीति॑ परमे॒
स्थी। अ॒भिधी॑तः प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिर॒भिधी॑तो॒भिधी॑तः प्प्र॒जाप॑तिर्ब्वा॒चि ब्वा॒चि
प्प्र॒जाप॑तिर॒भिधी॑तो॒भिधी॑तः प्प्र॒जाप॑तिर्ब्वा॒चि। अ॒भिधी॑त॒ऽ इत्य॒भि धी॑तः। प्र॒जा-
प॑तिर्ब्वा॒चि ब्वा॒चि प्प्र॒जाप॑तिः प्प्र॒जाप॑तिर्ब्वा॒चि ध्याहृ॑ताया॒ँध्याहृ॑ताया॒ँब्वा॒चि प्प्र॒जा-
प॑तिः प्प्र॒जाप॑तिर्ब्वा॒चि ध्याहृ॑तायाम्। प्र॒जाप॑ति॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तिः। ब्वा॒चि ध्याहृ॑-

1. ऐकारान्त विसर्ग में हिकारसदृश उच्चारण होता है। अथ स्वैर्द (द?) क्षैरित्यादौ हिकारसदृशो भवेत्।- ल.मा.शि.२१.

2. भाविभ्यः सः षं समानपदे (वा. प्रा. ३.५६) इस सूत्र के अनुसार एक पद में भावी से परे स्थित सकार षकार होता है। अकण्ठ्यो भावी (वा. प्रा. १.४६) इस सूत्र के अनुसार अकण्ठ्यस्वर भावी कहलाते हैं।

तायाँध्यार्हतायाँव्वाचि व्वाचि ध्यार्हतायामन्धोन्धो ध्यार्हतायाँव्वाचि व्वाचि ध्यार्हतायामन्धः। ध्यार्हतायामन्धोन्धो ध्यार्हतायाँध्यार्हतायामन्धोऽ अच्छेतोच्छेतोन्धो ध्यार्हतायाँध्यार्हतायामन्धोऽ अच्छैतः। ध्यार्हतायामिति वि आर्हतायाम्। अन्धोऽ अच्छेतोच्छेतोन्धोन्धोऽ अच्छैतः सविता संविताच्छेतोन्धोन्धोऽ अच्छैतः सविता। अच्छैतः सविता संविताच्छेतोच्छैतः सविता सन्न्याᳫँ सन्न्याᳫँ संविताच्छेतोच्छैतः सविता सन्न्याम्। अच्छैतऽ इत्यच्छं इतः। सविता सन्न्याᳫँ सन्न्याᳫँ संविता संविता सन्न्याँव्विश्श्वकर्म्मा व्विश्श्वकर्म्मा सन्न्याᳫँ संविता संविता सन्न्याँव्विश्श्वकर्म्मा। सन्न्याँव्विश्श्वकर्म्मा व्विश्श्वकर्म्मा सन्न्याᳫँ सन्न्याँव्विश्श्वकर्म्मा दीक्षायान्दीक्षायाँव्विश्श्वकर्म्मा सन्न्याᳫँ सन्न्याँव्विश्श्वकर्म्मा दीक्षायाम्। व्विश्श्वकर्म्मा दीक्षायान्दीक्षायाँव्विश्श्वकर्म्मा व्विश्श्वकर्म्मा दीक्षायाम्पूषा पूषा दीक्षायाँव्विश्श्वकर्म्मा व्विश्श्वकर्म्मा दीक्षायाम्पूषा। व्विश्श्वकर्म्मेति विश्श्व कर्म्मा। दीक्षायाम्पूषा पूषा दीक्षायान्दीक्षायाम्पूषा सोमक्क्रयण्ण्याᳫँ सोमक्क्रयण्ण्याम्पूषा दीक्षायान्दीक्षायाम्पूषा सोमक्क्रयण्ण्याम्। पूषा सोमक्क्रयण्ण्याᳫँ सोमक्क्रयण्ण्याम्पूषा पूषा सोमक्क्रयण्ण्यामिन्द्रऽ इन्द्रः सोमक्क्रयण्ण्याम्पूषा पूषा सोमक्क्रयण्ण्यामिन्द्रः। सोमक्क्रयण्ण्यामिन्द्रऽ इन्द्रः सोमक्क्रयण्ण्याᳫँ सोमक्क्रयण्ण्यामिन्द्रश्च चेन्द्रः सोमक्क्रयण्ण्याᳫँ सोमक्क्रयण्ण्यामिन्द्रश्च[1]। सोमक्क्रयण्ण्यामिति सोम क्रयण्ण्याम्॥४८॥

इन्द्रश्च चेन्द्रऽ इन्द्रश्च मरुतो मरुतश्चेन्द्रऽ इन्द्रश्च मरुतः। च मरुतो मरुतश्च च मरुतश्च च मरुतश्च च मरुतश्च। मरुतश्च च मरुतो मरुतश्च क्क्रयाय क्क्रयाय च मरुतो मरुतश्च क्क्रयाय। च क्क्रयाय क्क्रयाय च च क्क्रयायोपोत्थितऽ

[1]. वा.प्रा.२.१६. के अनुसार यहाँ च पद अनुदात है।

उपोत्स्थितः क्रयाय च च क्रयायोपोत्स्थितः[1]। क्रयायोपोत्स्थितऽ उपोत्स्थितः क्रयाय क्रयायोपोत्स्थितोसुरोसुरऽ उपोत्स्थितः क्रयाय क्रयायोपोत्स्थितोसुरः। उपोत्स्थितोसुरोसुरऽ उपोत्स्थितऽ उपोत्स्थितोसुरः पण्ण्यमानः पण्ण्यमानोसुरऽ उपोत्स्थितऽ उपोत्स्थितोसुरः पण्ण्यमानः[2]। उपोत्स्थितऽ इत्युप उत्स्थितः। असुरः पण्ण्यमानः पण्ण्यमानोसुरोसुरः पण्ण्यमानो मित्रो मित्रः पण्ण्यमानो-सुरोसुरः पण्ण्यमानो मित्रः। पण्ण्यमानो मित्रो मित्रः पण्ण्यमानः पण्ण्यमानो मित्रः क्रीतः क्रीतो मित्रः पण्ण्यमानः पण्ण्यमानो मित्रः क्रीतः। मित्रः क्रीतः क्रीतो मित्रो मित्रः क्रीतो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुः क्रीतो मित्रो मित्रः क्रीतो व्विष्ण्णुः। क्रीतो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुः क्रीतः क्रीतो व्विष्ण्णुः शिपिविष्टः शिपिविष्टो व्विष्ण्णुः क्रीतः क्रीतो व्विष्ण्णुः शिपिविष्टः। व्विष्ण्णुः शिपिविष्टः शिपिविष्टो व्विष्ण्णु-र्व्विष्ण्णुः शिपिविष्टऽ ऊराऽ ऊरौ शिपिविष्टो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुः शिपिविष्टऽ ऊरौ। शिपिविष्टऽ ऊराऽ ऊरौ शिपिविष्टः शिपिविष्टऽ ऊरावासन्नऽ आसन्नऽ ऊरौ शिपिविष्टः शिपिविष्टऽ ऊरावासन्नः[3]। शिपिविष्टऽ इति शिपि व्विष्टः। ऊरावा-सन्नऽ आसन्नऽ ऊराऽ ऊरावासन्नो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुरासन्नऽ ऊराऽ ऊरावासन्नो व्विष्ण्णुः। आसन्नो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुरासन्नऽ आसन्नो व्विष्ण्णुर्न्नरन्धिषो नरन्धिषो व्विष्ण्णुरासन्नऽ आसन्नो व्विष्ण्णुर्न्नरन्धिषः। आसन्नऽ इत्या सन्नः। व्विष्ण्णुर्न्नर-न्धिषो नरन्धिषो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुर्न्नरन्धिषः प्प्रोह्यमाणः प्प्रोह्यमानो नरन्धिषो व्विष्ण्णुर्व्विष्ण्णुर्न्नरन्धिषः प्प्रोह्यमाणः। नरन्धिषः प्प्रोह्यमाणः प्प्रोह्यमानो

---

[1]. उपोत्स्थित उत्तम्भनमुत्तभानोत्स्यायोत्स्थितायेति त्रीणि (वा. प्रा. ६.२९) इस सूत्र के अनुसार उपोत्स्थितः पद में तीन स्पर्शों का संयोग है।

[2]. वा. प्रा. ४.१५७. के अनुसार पण्यमानः में एक यकार है।

[3]. न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र के अनुसार ऊरौ ऊरौ यहां वकार का लोप होता है, ऊरौ आसन्नः यहां वकार का लोप नहीं होता है।

न॒रन्धि॑षो न॒रन्धि॑षः प्प्रो॒ह्यमा॑ण॒ः सोम॒ः सोम॑ः प्प्रो॒ह्यमा॑नो न॒रन्धि॑षो न॒रन्धि॑षः प्प्रो॒ह्यमा॑ण॒ः सोम॑ः ॥४९॥

प्रो॒ह्यमा॑ण॒ः सोम॒ः सोम॑ः प्प्रो॒ह्यमा॑नः प्प्रो॒ह्यमा॑ण॒ः सोम॒ऽ आग॑त॒ऽ आग॑त॒ः सोम॑ः प्प्रो॒ह्यमा॑नः प्प्रो॒ह्यमा॑ण॒ः सोम॒ऽ आग॑तः। प्रो॒ह्यमा॑न॒ऽ इति॑ प्प्र उ॒ह्यमा॑नः। सोम॒ऽ आग॑त॒ऽ आग॑त॒ः सोम॒ः सोम॒ऽ आग॑तो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑ण॒ऽ आग॑त॒ः सोम॒ः सोम॒ऽ आग॑तो॒ व्वरु॑णः। आग॑तो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑ण॒ऽ आग॑त॒ऽ आग॑तो॒ व्वरु॑णऽ आस॒न्द्यामा॑स॒न्द्याँव्वरु॑ण॒ऽ आग॑त॒ऽ आग॑तो॒ व्वरु॑णऽ आस॒न्द्याम्। आग॑त॒ऽ इत्या ग॑तः। व्वरु॑णऽ आस॒न्द्यामा॑स॒न्द्याँव्वरु॑णो॒ व्वरु॑णऽ आस॒न्द्यामास॑न्न॒ऽ आस॑न्नऽ आस॒न्द्याँव्वरु॑णो॒ व्वरु॑णऽ आस॒न्द्यामास॑न्नः। आ॒स॒न्द्यामास॑न्न॒ऽ आस॑न्नऽ आस॒न्द्या-मा॑स॒न्द्यामास॑न्नो॒ग्निर॒ग्निरास॑न्नऽ आस॒न्द्यामा॑स॒न्द्यामास॑न्नो॒ग्निः[1]। आ॒स॒न्द्या-मित्या॑ स॒न्द्याम्। आस॑न्नो॒ग्निर॒ग्निरास॑न्न॒ऽ आस॑न्नो॒ग्निराग्ग्नी॑ध्रे॒ऽ आग्ग्नी॑ध्रे॒ग्ग्नि-रास॑न्न॒ऽ आस॑न्नो॒ग्निराग्ग्नी॑ध्रे। आस॑न्न॒ऽ इत्या स॑न्नः। अ॒ग्निराग्ग्नी॑ध्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्रे-ग्ग्निर॒ग्निराग्ग्नी॑ध्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्रे॒ग्ग्निर॒ग्निराग्ग्नी॑ध्र॒ऽ इन्द्र॑ः। आग्ग्नी॑ध्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्र॒ऽ इन्द्रो॑ हवि॒र्द्धाने॑ हवि॒र्द्धान॒ऽ इन्द्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्र॒ऽ आग्ग्नी॑ध्र॒ऽ इन्द्रो॑ हवि॒र्द्धाने॑। इन्द्रो॑ हवि॒र्द्धाने॑ हवि॒र्द्धान॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ हवि॒र्द्धाने॑थ॒र्व्वा-थ॑र्व्वा हवि॒र्द्धान॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ हवि॒र्द्धाने॑थ॑र्व्वा। ह॒वि॒र्द्धाने॑थ॒र्व्वाथ॑र्व्वा हवि॒र्द्धाने॑ हवि॒र्द्धाने-थ॑र्व्वोपावह्रि॒यमा॑णऽ उपावह्रि॒यमा॒णोथ॑र्व्वा हवि॒र्द्धाने॑ हवि॒र्द्धाने॑थ॑र्व्वोपावह्रि॒यमा॑णः। ह॒वि॒र्द्धान॒ऽ इति॑ हवि॒ः धाने॑। अथ॑र्व्वोपावह्रि॒यमा॑णऽ उपावह्रि॒यमा॒णोथ॒र्व्वाथ॑र्व्वोपाव-ह्रि॒यमा॑णो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ऽ उपावह्रि॒यमा॒णोथ॒र्व्वाथ॑र्व्वोपावह्रि॒यमा॑णो॒ व्विश्वे॑। उ॒पा॒व॒ह्रि॒य-मा॑णो॒ व्विश्वे॒ व्विश्वे॑ऽ उपावह्रि॒यमा॑णऽ उपावह्रि॒यमा॑णो॒ व्विश्वे॑ दे॒वा दे॒वा व्विश्वे॑ऽ

[1]. आसन्नः अग्निः यहाँ वा.प्रा.४.८०. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है। वा.प्रा.४.४३. तथा वा.प्रा.४.४४. से विसर्जनीय का ओकार विहित है।

उपावह्रियमाणऽ उपावह्रियमाणो व्विश्वे देवाः[1]। उपावह्रियमाणऽ इत्युप अवह्रियमाणः ॥५०॥

व्विश्वे देवा देवा व्विश्वे व्विश्वे देवाऽ अꣳशुष्ष्वꣳशुषु देवा व्विश्वे व्विश्वे देवाऽ अꣳशुषु। देवाऽ अꣳशुष्ष्वꣳशुषु देवा देवाऽ अꣳशुषु न्युप्तो न्युप्तोꣳशुषु देवा देवाऽ अꣳशुषु न्युप्तः। अꣳशुषु न्युप्तो न्युप्तोꣳशुष्ष्वꣳशुषु न्युप्तो व्विष्णुर्व्विष्णुर्न्युप्तोꣳशुष्ष्वꣳशुषु न्युप्तो व्विष्णुः। न्युप्तो व्विष्णुर्व्विष्णुर्न्युप्तो न्युप्तो व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्न्युप्तो न्युप्तो व्विष्णुराप्प्रीतपाः। न्युप्तऽ इति नि उप्तः। व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपा व्विष्णुर्व्विष्णुराप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानः[2]। आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानो यमो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्रीतपाऽ आप्प्याय्यमानो यमः। आप्प्रीतपाऽ इत्याप्प्रीत पाः। आप्प्याय्यमानो यमो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानो यमः सूयमानः सूयमानो यमऽ आप्प्याय्यमानऽ आप्प्याय्यमानो यमः सूयमानः। आप्प्याय्यमानऽ इत्या प्याय्यमानः। यमः सूयमानः सूयमानो यमो यमः सूयमानो व्विष्णुर्व्विष्णुः सूयमानो यमो यमः सूयमानो व्विष्णुः। सूयमानो व्विष्णुर्व्विष्णुः सूयमानः सूयमानो व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुः सूयमानः सूयमानो व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः। व्विष्णुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुर्व्विष्णुः सम्भ्रियमाणो व्वायुर्व्वायुः सम्भ्रियमाणो व्विष्णुर्व्विष्णुः सम्भ्रियमाणो व्वायुः। सम्भ्रियमाणो व्वायुर्व्वायुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो व्वायुः पूयमानः

[1]. देवाः देवाः तथा देवाः विश्वे यहाँ लोपं धौ(वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र से विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. वा. प्रा. ४.१५३. के अनुसार आप्याय्यमानः इस पद में दो यकार हैं।

पूयमानो वायुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः। सम्भ्रियमाणऽ इति सम् भ्रियमाणः। वायुः पूयमानः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः[1]। पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमा-नः पूयमानः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः पूयमानः पूयमानः शुक्रः पूतः। शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः। पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः। शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी। क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः। क्षीरश्रीरिति क्षीर श्रीः। मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्विश्वे विश्वे सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्विश्वे। सक्तुश्रीर्विश्वे विश्वꣳ सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्विश्वे देवा देवा विश्वे सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्विश्वे देवाः। सक्तुश्रीरिति सक्तु श्रीः ॥५१॥

विश्वे देवा देवा विश्वे विश्वे देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा विश्वे विश्वे देवा-श्चमसेषु[2]। देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतः। चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु चमसेषून्नीतोसुरसुरुन्नीतश्च-मसेषु चमसेषून्नीतोसुः। उन्नीतोसुरसुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय होमायासुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय। उन्नीतऽ इत्युत् नीतः। असुर्होमाय होमायासुरसुर्होमायोद्यतऽ उद्यतो होमायासुरसुर्होमायोद्यतः। होमायोद्यतऽ उद्यतो होमाय होमायोद्यतो

---

1. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार वायुः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

2. देवाः चमसेषु यहाँ चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र से विसर्ग शकार होता है। तदुत्तरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से होता है।

पूयमानो वायुः सम्भ्रियमाणः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः। सम्भ्रियमाणऽ इति सम् भ्रियमाणः। वायुः पूयमानः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमानो वायुर्वायुः पूयमानः शुक्रः[1]। पूयमानः शुक्रः शुक्रः पूयमा-नः पूयमानः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः पूयमानः पूयमानः शुक्रः पूतः। शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः शुक्रः। पूतः शुक्रः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः पूतः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः। शुक्रः क्षीरश्रीः क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः शुक्रः शुक्रः क्षीरश्रीर्म्मन्थी। क्षीरश्रीर्म्मन्थी मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी क्षीरश्रीः क्षीरश्रीर्म्मन्थी सक्तुश्रीः। क्षीरश्रीरिति क्षीर श्रीः। मन्थी सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्व्विश्वे व्विश्वे सक्तुश्रीर्म्मन्थी मन्थी सक्तुश्रीर्व्विश्वे। सक्तुश्रीर्व्विश्वे व्विश्वे सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्व्विश्वे देवा देवा व्विश्वे सक्तुश्रीः सक्तुश्रीर्व्विश्वे देवाः। सक्तुश्रीरिति सक्तु श्रीः ॥५१॥

व्विश्वे देवा देवा व्विश्वे व्विश्वे देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा व्विश्वे व्विश्वे देवा-श्चमसेषु[2]। देवाश्चमसेषु चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु देवा देवाश्चमसेषून्नीतः। चमसेषून्नीतऽ उन्नीतश्चमसेषु चमसेषून्नीतोसुरसुरुन्नीतश्च-मसेषु चमसेषून्नीतोसुः। उन्नीतोसुरसुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय होमायासुरुन्नीतऽ उन्नीतोसुर्होमाय। उन्नीतऽ इत्युत् नीतः। असुर्होमाय होमायासुरसुर्होमायोद्यतऽ उद्यतो होमायासुरसुर्होमायोद्यतः। होमायोद्यतऽ उद्यतो होमाय होमायोद्यतो

---

[1]. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार वायुः पद पृथक् नहीं किया जाता है।

[2]. देवाः चमसेषु यहाँ चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) इस सूत्र से विसर्ग शकार होता है। तदुतरवर्ती चकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०२) से होता है।

रु॒द्रो रु॒द्रऽ उद्य॑तो॒ होमा॑य॒ होमा॒योद्य॑तो रु॒द्रः। उद्य॑तो रु॒द्रो रु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो रु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तो रु॒द्रो हू॒यमा॑नः। उद्य॑त॒ऽ इत्यु॑त् य॑तः। रु॒द्रो हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो रु॒द्रो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो॒ वातो॒ वातो॑ हू॒यमा॑नो रु॒द्रो रु॒द्रो हू॒यमा॑नो॒ वात॑ः। हू॒यमा॑नो॒ वातो॒ वातो॑ हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो॒ वातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्या-वृ॑त्तो॒ वातो॑ हू॒यमा॑नो हू॒यमा॑नो॒ वातो॒ऽभ्यावृ॑त्तः। वातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो॒ वातो॒ वातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ वातो॒ वातो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ः। अ॒भ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॒ः प्प्रति॑क्ख्यात॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो नृ॒चक्षा॑ऽ अ॒भ्यावृ॑त्तो॒ऽभ्यावृ॑त्तो नृ॒चक्षा॒ः प्प्रति॑क्ख्यातः। अ॒भ्यावृ॑त्त॒ऽ इत्य॑भि॒ आवृ॑त्तः। नृ॒चक्षा॒ः प्प्रति॑क्ख्यात॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्षः प्प्रति॑क्ख्यातो नृ॒चक्षा॑ नृ॒चक्षा॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो भ॒क्षः। नृ॒चक्षा॒ऽ इति॑ नृ॒ चक्षा॑ः[1]। प्रति॑क्ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्षः प्प्रति॑क्ख्यात॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षः प्प्रति॑क्ख्यात॒ः प्प्रति॑क्ख्यातो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः[2]। प्रति॑क्ख्यात॒ऽ इति॒ प्रति॑ ख्यातः। भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्षो भ॒क्षो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः। भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसा ना॑राश॒ꣳसाः पि॒तरो॑ भ॒क्ष्यमा॑णो भ॒क्ष्यमा॑णः पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसाः। पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसा ना॑राश॒ꣳसाः पि॒तर॑ः पि॒तरो॑ नाराश॒ꣳसाः सु॒न्नः सु॒न्नो ना॑राश॒ꣳसाः

---

1. णकारर्कारावग्रहे(वा.प्रा.१.८८) इस सूत्र के अनुसार इस सावग्रह पद में ऋकार पूर्वपद(अवग्रह के अन्त) में ही आता है।

2. अग्नेरनीकं य्युक्ष्वा हि, विश्वेदेवा, द्वितीयकम्। उदग्ने चायमुत्तरा, त्रमी (मो ?) ब्रन्याय हीत्ययम्॥
देवम्बर्हि, र्व्यदापोऽस्ति त्वामद्य, स्वस्ति नस्तथा। मानो मित्रो हि ब्रक्ष्यन्ती क्षकारा ययुतास्तथा॥ - अमो. शि. १२९-१३०.
इन श्लोकों में जिन कण्डिकाओं में क्ष्य आता है, उनकी गणना है, विश्वेदेवा द्वितीयकम् से प्रकृत कण्डिका निर्दिष्ट है।

पि॒तर॑ः पि॒तरौ॑ नाराश॒ꣳसाः स॒न्नः[1]। ना॒रा॒श॒ꣳसाः स॒न्नः स॒न्नो ना॑राश॒ꣳसा ना॑राश॒ꣳसाः स॒न्नः सिन्धु॒ः सिन्धु॑ः स॒न्नो ना॑राश॒ꣳसा ना॑राश॒ꣳसाः स॒न्नः सिन्धु॑ः ॥५२॥

स॒न्नः सिन्धु॒ः सिन्धु॑ः स॒न्नः स॒न्नः सिन्धु॑रवभृ॒थाया॑वभृ॒थाय॒ सिन्धु॑ः स॒न्नः स॒न्नः सिन्धु॑रवभृ॒थाय॑। सिन्धु॑रवभृ॒थाया॑वभृ॒थाय॒ सिन्धु॒ः सिन्धु॑रवभृ॒थायो-द्य॑त॒ऽ उद्य॑तोवृभृ॒थाय॒ सिन्धु॒ः सिन्धु॑रवभृ॒थायोद्य॑तः। अ॒व॒भृ॒थायोद्य॑त॒ऽ उद्य॑तोव-भृ॒थाया॑वभृ॒थायोद्य॑तः समु॒द्रः स॑मु॒द्रऽ उद्य॑तोवभृ॒थाया॑वभृ॒थायोद्य॑तः समु॒द्रः। अ॒व॒भृ॒थायेत्य॑व भृ॒थाय॑। उद्य॑तः समु॒द्रः स॑मु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तः समु॒द्रो॒ऽभ्यवह्रि॒य-मा॑णोऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः समु॒द्रऽ उद्य॑त॒ऽ उद्य॑तः समु॒द्रो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः। उद्य॑त॒ऽ इत्युत् य॑तः। स॒मु॒द्रो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णोऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः समु॒द्रः स॑मु॒द्रो॒ऽभ्यवह्रि॒य-मा॑णः सलि॒लः स॑लि॒लो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः समु॒द्रः स॑मु॒द्रो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः सलि॒-लः। अ॒भ्य॒व॒ह्रि॒यमा॑णः सलि॒लः स॑लि॒लो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णोऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः सलि॒लः प्रप्लु॑त॒ः प्रप्लु॑तः सलि॒लो॒ऽभ्यवह्रि॒यमा॑णोऽभ्यवह्रि॒यमा॑णः सलि॒लः प्रप्लु॑तः। अ॒भ्य॒व॒ह्रि॒यमा॑ण॒ऽ इत्य॑भि अवह्रि॒यमा॑णः। स॒लि॒लः प्रप्लु॑त॒ः प्रप्लु-तः सलि॒लः स॑लि॒लः प्रप्लु॑तो॒ षयो॒र्ष्वयो॒ः प्रप्लु॑तः सलि॒लः स॑लि॒लः प्रप्लु॑तो॒ षयो॑ः। प्रप्लु॑तो॒ षयो॒र्ष्वयो॒ः प्रप्लु॑त॒ः प्रप्लु॑तो॒ षयो॒रोज॒सौज॑सा॒ षयो॒ः प्रप्लु॑त॒ः प्रप्लु॑तो॒ षयो॒रोज॑सा। प्रप्लु॑त॒ऽ इति॒ प्र प्लु॑तः। षयो॒रोज॒सौज॑सा॒ षयो॒र्ष्वयो॒रोज॑सा स्कभि॒ता स्क॑भि॒तौज॑सा॒ षयो॒र्ष्वयो॒रोज॑सा स्कभि॒ता। ओज॑सा स्कभि॒ता स्क॑भि॒तौज॒सौज॑सा स्कभि॒ता रजा॑ꣳसि॒ रजा॑ꣳसि स्कभि॒तौज॒सौज॑सा स्कभि॒ता रजा॑ꣳसि। स्क॒भि॒ता रजा॑ꣳसि॒ रजा॑ꣳसि स्कभि॒ता स्क॑भि॒ता

[1]. वा.प्रा.६.२५. के अधिकार में पढ़े गये सूत्र वा.प्रा.६.२६. के अनुसार सन्नः पद में दो स्पर्श हैं।

रजाꣳसि वीर्य्येभिर्वीर्य्येभी रजाꣳसि स्कभिता स्कभिता रजाꣳसि वीर्य्येभिः[1]। रजाꣳसि वीर्य्येभिर्वीर्य्येभी रजाꣳसि रजाꣳसि वीर्य्येभिर्वीरतमा वीरतमा वीर्य्येभी रजाꣳसि रजाꣳसि वीर्य्येभिर्वीरतमा। वीर्य्येभिर्वीरतमा वीरतमा वीर्य्येभिर्वीर्य्येभिर्वीरतमा शविष्ठा शविष्ठा वीरतमा वीर्य्येभिर्वीर्य्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। वीरतमा शविष्ठा शविष्ठा वीरतमा वीरतमा शविष्ठा। वीरतमेति वीर तमा। शविष्ठेति शविष्ठा॥ या पत्यैते पत्यैते या या पत्यैतेऽ अप्प्रतीताप्प्रतीता पत्यैते या या पत्यैतेऽ अप्प्रतीता। पत्यैतेऽ अप्प्रतीताप्प्रतीता पत्यैते पत्यैतेऽ अप्प्रतीता सहोभिः सहोभिरप्प्रतीता पत्यैते पत्यैतेऽ अप्प्रतीता सहोभिः। पत्यैतेऽ इति पत्यैते। अप्प्रतीता सहोभिः सहोभिरप्प्रतीताप्प्रतीता सहोभिर्विष्णू विष्णू सहोभिरप्प्रतीताप्प्रतीता सहोभिर्विष्णू। अप्प्रतीते-त्यप्प्रति इता। सहोभिर्विष्णू विष्णू सहोभिः सहोभिर्विष्णूऽ अगन्न-गन्विष्णू सहोभिः सहोभिर्विष्णूऽ अगन्। सहोभिरिति सहः भिः। विष्णूऽ अगन्नगन्विष्णू विष्णूऽ अगन्वरुणा वरुणागन्विष्णू विष्णूऽ अगन्वरुणा। विष्णूऽ इति विष्णू। अगन्वरुणा वरुणागन्नगन्वरुणा पूर्व्वहूतौ पूर्व्वहूतौ वरुणागन्नगन्वरुणा पूर्व्वहूतौ। वरुणा पूर्व्वहूतौ पूर्व्वहूतौ वरुणा वरुणा पूर्व्वहूतौ। पूर्व्वहूताविति पूर्व्व हूतौ॥५३॥

देवान्दिवन्दिवन्देवान्देवान्दिवमगन्नगन्दिवन्देवान्देवान्दिवमगन्। दिवमगन्नगन्दिवन्दिवमगन्न्यज्ञो यज्ञोगन्दिवन्दिवमगन्न्यज्ञः। अगन्न्यज्ञो यज्ञोगन्नगन्न्यज्ञस्ततस्ततो यज्ञोगन्नगन्न्यज्ञस्ततः। यज्ञस्ततस्ततो

---

[1]. नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा. प्रा. ४.१०६) प्रस्तुत सन्धि प्रारम्भ करते समय प्रथम स्कभिता पद में अस्वरपूर्व होने के कारण ककार का द्वित्व नहीं होगा। वीर्येभिः रजाꣳसि यहाँ रेफे लुप्यते दीर्घं चोपधा(वा.प्रा.४.३६) इस सूत्र से रेफ बाद में होने से भावी विसर्जनीय का लोप होता है तथा उपधा का दीर्घ। र का निर्देश एफ से होता है- र एफेन च(वा.प्रा.१.३९)।

यज्ञो यज्ञस्ततो मा मा ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मा[1]। ततो मा मा ततस्ततो मा द्रविणन्द्रविणम्मा ततस्ततो मा द्रविणम्। मा द्रविणन्द्रविणम्मा मा द्रविणमष्टद्वष्टु द्रविणम्मा मा द्रविणमष्टु। द्रविणमष्टद्वष्टु द्रविणन्द्रविणमष्टु मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानष्टु द्रविणन्द्रविणमष्टु मनुष्ष्यान्। अष्टु मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानष्टद्वष्टु मनुष्ष्याननन्तरिक्षमन्तरिक्षम्मनुष्ष्यानष्टद्वष्टु मनुष्ष्याननन्तरिक्षम्। मनुष्ष्याननन्तरिक्षमन्तरिक्षम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्याननन्तरिक्षम्पितॄन्पितॄननन्तरिक्षम्मनुष्ष्यान्मनुष्ष्याननन्तरिक्षम्पितॄन्। अन्तरिक्षम्पितॄन्पितॄनन्तरिक्षमन्तरिक्षम्पितॄन्पृथिवीम्पृथिवीम्पितॄनन्तरिक्षमन्तरिक्षम्पितॄन्पृथिवीम्। पितॄन्पृथिवीम्पृथिवीम्पितॄन्पितॄन्पृथिवीँऽयँऽयम्पृथिवीम्पितॄन्पितॄन्पृथिवीँऽयम्। पृथिवीँऽयँऽयम्पृथिवीम्पृथिवीँऽयङ्कङ्कँऽयम्पृथिवीम्पृथिवीँऽयङ्कम्। यङ्कङ्कँऽयँऽयङ्कञ्च च कँऽयँऽयङ्कञ्च। कञ्च च कङ्कञ्च लोकँल्लोकञ्च कङ्कञ्च लोकम्। च लोकँल्लोकञ्च च लोकमगन्नगँल्लोकञ्च च लोकमगन्[2]। लोकमगन्नगँल्लोकँल्लोकमगन्त्यज्ञो यज्ञोगँल्लोकँल्लोकमगन्त्यज्ञः। अगन्त्यज्ञो यज्ञोगन्नगन्त्यज्ञस्ततस्ततो यज्ञोगन्नगन्त्यज्ञस्ततः। यज्ञस्ततस्ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मे मे ततो यज्ञो यज्ञस्ततो मे। ततो मे मे ततस्ततो मे भद्रम्भद्रम्मे ततस्ततो मे भद्रम्। मे भद्रम्भद्रम्मे मे भद्रमभूदभूद् भद्रम्मे मे भद्रमभूत्। भद्रमभूदभूद् भद्रम्भद्रमभूत्। अभूदित्यभूत्॥५४॥

चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवस्तन्तवश्चतुस्त्रिꣳशच्चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये ये तन्तवश्चतुस्त्रिꣳशच्चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये। चतुस्त्रिꣳशदिति चतुः त्रिꣳशत्। तन्तवो ये ये तन्तवस्तन्तवो ये वितत्निरे वितत्निरे ये तन्तवस्तन्तवो ये वितत्निरे। ये

[1]. स्वरितात् परमनुदात्तमुदात्तमयम् (वा. प्रा. ४.१४१) स्वरित अक्षर से परवर्ती अनुदात्त अक्षर प्रचय हो जाता है जैसे ततः मा = ततो मा।

[2]. अगन् लोकम् यहाँ नुश्चानुनासिकम्(वा.प्रा.४.१४) इस सूत्र से नकार अनुनासिक लकार होता है।

ब्वितत्न्रिरे ब्वितत्न्रिरे ये ये ब्वितत्न्रिरे ये ये ब्वितत्न्रिरे ये ये ब्वितत्न्रिरे ये। ब्वितत्न्रिरे ये ये ब्वितत्न्रिरे ब्वितत्न्रिरे यऽ इममिमँय्ये ब्वितत्न्रिरे ब्वितत्न्रिरे यऽ इमम्। ब्वितत्न्रिरऽ इति वि तत्न्रिरे। यऽ इममिमँय्ये यऽ इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिमँय्ये यऽ इमँय्यज्ञम्। इमँय्यज्ञँय्यज्ञमिममिमँय्यज्ञँ स्वधया स्वधया यज्ञमिममिमँय्यज्ञँ स्वधया। यज्ञँ स्वधया स्वधया यज्ञँय्यज्ञँ स्वधया ददन्ते ददन्ते स्वधया यज्ञँय्यज्ञँ स्वधया ददन्ते। स्वधया ददन्ते ददन्ते स्वधया स्वधया ददन्ते। ददन्तऽ इति ददन्ते॥ तेषाञ्छिन्नञ्छिन्नन्तेषान्तेषाञ्छिन्नꣳ सꣳ सञ्छिन्नन्तेषान्तेषाञ्छिन्नꣳ सम्। छिन्नꣳ सꣳ सञ्छिन्नञ्छिन्नꣳ सम्म्वेतदेतदु सञ्छिन्नञ्छिन्नꣳ सम्म्वेतत्[1]। सम्म्वेतदेतदु सꣳ सम्म्वेतद्दधामि दधाम्म्येतदु सꣳ सम्म्वेतद्दधामि। उँऽ इत्यूँ[2]। एतद्दधामि दधाम्म्येतदेतद्दधामि स्वाहा स्वाहा दधाम्म्येतदेतद्दधामि स्वाहा। दधामि स्वाहा स्वाहा दधामि दधामि स्वाहा घर्म्मो घर्म्मः स्वाहा दधामि दधामि स्वाहा घर्म्मः। स्वाहा घर्म्मो घर्म्मः स्वाहा स्वाहा घर्म्मोऽ अप्प्यपि घर्म्मः स्वाहा स्वाहा घर्म्मोऽ अपि। घर्म्मोऽ अप्प्यपि घर्म्मो घर्म्मोऽ अप्प्यैत्त्वेत्त्वपि घर्म्मो घर्म्मोऽ अप्प्यैतु। अप्प्यैत्त्वेत्त्वप्प्यप्प्यैतु देवान्देवानेत्त्वप्प्यप्प्यैतु देवान्। एतु देवान्देवानैत्त्वेतु देवान्। देवानिति देवान्॥५५॥

यज्ञस्य दोहो दोहो यज्ञस्य यज्ञस्य दोहो ब्वितत्तो ब्वितत्तो दोहो यज्ञस्य यज्ञस्य दोहो ब्वितत्तः। दोहो ब्वितत्तो ब्वितत्तो दोहो दोहो ब्वितत्तः पुरुत्रा पुरु-

---

[1]. वा. प्रा. ४.९१. के अनुसार स्पर्श से बाद में न होने पर अपृक्त उकार प्रकृतिभाव से रहता है। सम् उ एतत् यहाँ स्पर्श से परे होने के कारण समुऽ एतत् ऐसा पाठ नहीं होगा।

[2]. प्रगृह्यं चर्चायामितिना पदेषु(वा.प्रा.४.१८) इस सूत्र के अनुसार चर्चा (इतिकरण के बाद पुनः पाठ) होने पर प्रगृह्य संज्ञक पद इति शब्द से व्यवहित होता है। उकारोऽपृक्तः(वा.प्रा.१.९५) इस सूत्र के अनुसार यहाँ अपृक्त उकार प्रगृह्य है। वा.प्रा.१.१५१. के अनुसार यहाँ उकार अपृक्तसंज्ञक है।

त्रा ब्वित॑तो॒ दोहो॒ दोहो॒ ब्वित॑तः पुरु॒त्रा। ब्वित॑तः पुरु॒त्रा पु॑रु॒त्रा ब्वित॑तो॒ ब्वित॑तः पुरु॒त्रा स स पु॑रु॒त्रा ब्वित॑तो॒ ब्वित॑तः पुरु॒त्रा सः। ब्वित॑त॒ऽ इति॒ वि त॑तः। पुरु॒त्रा स स पु॑रु॒त्रा पु॑रु॒त्रा सोऽ अ॑ष्ट॒धाष्ट॒धा स पु॑रु॒त्रा पु॑रु॒त्रा सोऽ अ॑ष्ट॒धा। पुरु॒त्रेति॑ पुरु॒ त्रा[1]। सोऽ अ॑ष्ट॒धाष्ट॒धा स सोऽ अ॑ष्ट॒धा दिव॒न्दिव॑मष्ट॒धा स सोऽ अ॑ष्ट॒धा दिव॑म्। अ॒ष्ट॒धा दिव॒न्दिव॑मष्ट॒धाष्ट॒धा दिव॑म॒न्वात॑ताना॒न्वात॑तान॒ दिव॑मष्ट॒धाष्ट॒धा दिव॑म॒न्वात॑तान[2]। दिव॑म॒न्वात॑ताना॒न्वात॑तान॒ दिव॒न्दिव॑म॒न्वात॑तान। अ॒न्वात॑ता॒नेत्य॑नु आत॑तान॥ स य॒ज्ञ य॒ज्ञ॒ स स य॒ज्ञ धुक्ष्व धुक्ष्व य॒ज्ञ॒ स स य॒ज्ञ धुक्ष्व। य॒ज्ञ॒ धु॒क्ष्व॒ धु॒क्ष्व॒ य॒ज्ञ॒ य॒ज्ञ॒ धु॒क्ष्व॒ महि॒ महि॑ धुक्ष्व यज्ञ यज्ञ धुक्ष्व॒ महि॑। धुक्ष्व॒ महि॒ महि॑ धुक्ष्व धुक्ष्व॒ महि॑ मे मे॒ महि॑ धुक्ष्व धुक्ष्व॒ महि॑ मे। महि॑ मे मे॒ महि॒ महि॑ मे प्प्र॒जाया॑म्प्र॒जाया॑म्मे॒ महि॒ महि॑ मे प्प्र॒जाया॑म्। मे॒ प्प्र॒जाया॑म्प्र॒जाया॑म्मे मे प्प्र॒जाया॑ᳩ रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जाया॑म्मे मे प्प्र॒जाया॑ᳩ रा॒यः। प्र॒जाया॑ᳩ रा॒यो रा॒यः प्प्र॒जाया॑म्प्र॒जाया॑ᳩ रा॒यस्प्पोष॒म्पोष॑ᳪ रा॒यः प्प्र॒जाया॑म्प्र॒जाया॑ᳩ रा॒यस्प्पोष॑म्। प्र॒जाया॒मिति॑ प्प्र॒ जाया॑म्। रा॒यस्प्पोष॒म्पोष॑ᳪ रा॒यो रा॒यस्प्पोष॒ँव्विश्वँ॒व्विश्व॒म्पोष॑ᳪ रा॒यो रा॒यस्प्पोष॒ँव्विश्व॑म्। पोष॒ँव्विश्वँ॒व्विश्व॒म्पोष॒म्पोष॒ँव्विश्व॒मायु॒रायु॒र्व्विश्व॒म्पोष॒म्पोष॒ँव्विश्व॒मायु॑ः। व्विश्व॒मायु॒रायु॒र्व्विश्वँ॒व्विश्व॒मायु॑रशीयाशी॒यायु॒र्व्विश्वँ॒व्विश्व॒मायु॑रशीय। आयु॑रशीयाशी॒यायु॒रायु॑रशीय॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑शीयायु॒रायु॑रशीय॒ स्वाहा॑। अ॒शी॒य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑शीयाशीय॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥५६॥

आ प॑वस्व पव॒स्वा प॑वस्व॒ हिर॑ण्ण्यव॒द्धिर॑ण्ण्यवत्पव॒स्वा प॑वस्व॒ हिर॑ण्ण्यवत्। प॒व॒स्व॒ हिर॑ण्ण्यव॒द्धिर॑ण्ण्यवत्पवस्व पवस्व॒ हिर॑ण्ण्यव॒दश्श्व॑व॒दश्श्व॑व॒द्धिर॑ण्ण्यव-

---

1. शस्त्वत्रातातिषु(वा.प्रा.५.९) इस सूत्र के अनुसार पुरुत्रा पद में त्रा तद्धित प्रत्यय बाद में होने से पृथक्करण होता है।

2. सङ्ख्यापूर्वश्च धा (वा. प्रा. ५.२७) इस सूत्र के अनुसार अष्टधा पद का पृथक्करण नहीं होगा।

त्पवस्व पवस्व॒ हिर॑ण्ण्यव॒दश्श्व॑वत्[1]। हिर॑ण्ण्यव॒दश्श्व॑व॒दश्श्व॑व॒द्धिर॑ण्ण्यव॒द्धिर॑ण्ण्यव॒-दश्श्व॑वत्सोम सो॒माश्श्व॑व॒द्धिर॑ण्ण्यव॒द्धिर॑ण्ण्यव॒दश्श्व॑वत्सोम। हिर॑ण्ण्यव॒दिति॒ हिर॑ण्ण्य व्वत्। अश्श्व॑वत्सोम सो॒माश्श्व॑व॒दश्श्व॑वत्सोम व्वी॒रव॑द्वी॒रव॑त्सो॒माश्श्व॑व॒दश्श्व॑वत्सोम व्वी॒रव॑त् । अश्श्व॑व॒दित्त्यश्श्व॑ व्वत्। सो॒म॒ व्वी॒रव॑द्वी॒रव॑त्सोम सोम व्वी॒रव॑त्। व्वी॒रव॒दिति॑ वी॒र व्व॑त्॥ व्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्त॒ँव्वाज॒ँव्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र भ॒रा गोम॑न्त॒ँव्वा-ज॒ँव्वाज॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र। गोम॑न्त॒मा भ॑र भ॒रा गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ भ॒रा गोम॑न्त॒ङ्गोम॑न्त॒मा भ॑र॒ स्वाहा॑। गोम॑न्त॒मिति॒ गो म॑न्तम्[2]। आ भ॑र। भ॒र॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ भर भर॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥५७॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठेष्टमोध्यायः॥

1. नाश्ववद्धिरण्यात् (वा. प्रा. ३.९८) इस सूत्र के अनुसार अश्ववत् पद में दीर्घ नहीं होता है अर्थात् अश्वावत् नहीं होता है।

2. वा. प्रा. ५.८. के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

॥नवमोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ देव॑ सवितः सवितुर्द्देव देव॑ सवितः प्प्र प्प्र स॑वितुर्द्देव देव॑ सवितः प्प्र। सवितः प्प्र प्प्र स॑वितः सवितः प्प्र सुव॑ सुव प्प्र स॑वितः सवितः प्प्र सुव॑। सवितुरिति॑ सवितः। प्र सुव॑ सुव प्प्र प्प्र सुव॑ यज्ञँ॑य्यज्ञꣳ सुव प्प्र प्प्र सुव॑ यज्ञम्। सुव यज्ञँ॑य्यज्ञꣳ सुव॑ सुव यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञꣳ सुव॑ सुव यज्ञम्प्र। यज्ञम्प्र प्प्र यज्ञँ॑य्यज्ञम्प्र सुव॑ सुव प्प्र यज्ञँ॑य्यज्ञम्प्र सुव॑। प्र सुव॑ सुव प्प्र प्प्र सुव॑ यज्ञप॑तिँ॑य्यज्ञप॑तिꣳ सुव प्प्र प्प्र सुव॑ यज्ञप॑तिम्। सुव यज्ञप॑तिँ॑य्यज्ञप॑तिꣳ सुव सुव यज्ञप॑तिम्भगा॑य भगा॑य यज्ञप॑तिꣳ सुव सुव यज्ञप॑तिम्भगा॑य। यज्ञप॑तिम्भगा॑य भगा॑य यज्ञप॑तिँ॑य्यज्ञप॑तिम्भगा॑य। यज्ञप॑तिमिति॑ यज्ञ प॑तिम्। भगायेति भगा॑य॥ दिव्यो ग॑न्धर्व्वो ग॑न्धर्व्वो दिव्यो दिव्यो ग॑न्धर्व्वः कें॑तपूः कें॑तपूर्ग्गं॑न्धर्व्वो दिव्यो दिव्यो ग॑न्धर्व्वः कें॑तपूः। गन्धर्व्वः कें॑तपूः कें॑तपूर्ग्गं॑न्धर्व्वो ग॑न्धर्व्वः कें॑तपूः केतङ्केत॑ङ्केतपूर्ग्गं॑न्धर्व्वो ग॑न्धर्व्वः कें॑तपूः केत॑म्। केतपूः केतङ्केत॑ङ्केतपूः कें॑तपूः केत॑न्नो नः केत॑ङ्केतपूः कें॑तपूः केत॑न्नः। केतपूरिति॑ केत पूः। केत॑न्नो नः केतङ्केत॑न्नः पुनातु पुनातु नः केतङ्केत॑न्नः पुनातु। नः पुनातु पुनातु नो नः पुनातु व्वाचो व्वाचः पु॑नातु नो नः पुनातु व्वाचः। पुनातु व्वाचो व्वाचः पु॑नातु पुनातु व्वाचस्प्पतिः पति॑र्व्वाचः पु॑नातु पुनातु व्वाचस्प्पति॑ः[1]। व्वाचस्प्पतिः पति॑र्व्वाचो व्वाचस्प्पतिर्व्वाजँ॑व्वाजम्पति॑र्व्वाचो व्वाचस्प्पतिर्व्वाज॑म्। पतिर्व्वाजँ॑व्वाजम्पतिः पतिर्व्वाज॑न्नो नो व्वाजम्पतिः पतिर्व्वाज॑न्नः। व्वाज॑न्नो नो व्वाजँ॑व्वाज॑न्नः स्वदतु स्वदतु नो व्वाजँ॑व्वाज॑न्नः स्वदतु।

[1]. वाचः पतिः यहाँ वा.प्रा.३.३५. तथा वा.प्रा.३.३६. के अनुसार विसर्जनीय सकार होता है तथा वा.प्रा.४.१०२. के अनुसार पकार का द्वित्व होता है।

न॒ः स्व॒द॒तु॒ स्व॒द॒तु॒ नो॒ न॒ः स्व॒द॒तु॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ स्वदतु नो नः स्वद॒तु॒ स्वाहा॑। स्व॒द॒तु॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ स्वदतु स्वद॒तु॒ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१॥

ध्रु॒व॒सद॑न्त्वा त्वा ध्रु॒व॒सद॑न्ध्रु॒व॒सद॑न्त्वा नृ॒षद॑न्नृ॒सद॑न्त्वा ध्रु॒व॒सद॑न्ध्रु॒व॒सद॑न्त्वा नृ॒षद॑म्[1]। ध्रु॒व॒सद॒मिति॑ ध्रु॒व॒ सद॑म्। त्वा॒ नृ॒षद॑न्नृ॒सद॑न्त्वा त्वा नृ॒षद॑म्मन॒ःसद॑म्मन॒ःसद॑न्नृ॒सद॑न्त्वा त्वा नृ॒षद॑म्मन॒ःसद॑म्। नृ॒षद॑म्मन॒ःसद॑म्मन॒ःसद॑न्नृ॒सद॑न्नृ॒षद॑म्मन॒ःसद॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य मन॒ःसद॑न्नृ॒सद॑न्नृ॒षद॑म्मन॒ःसद॒मिन्द्रा॑य। नृ॒सद॒मिति॑ नृ॒ सद॑म्। म॒न॒ःसद॒मिन्द्रा॒येन्द्रा॑य मन॒ःसद॑म्मन॒ःसद॒मिन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॑य मन॒ःसद॑म्मन॒ःसद॒मिन्द्रा॑य त्वा। म॒न॒ःसद॒मिति॑ मन॒ः सद॑म्। इन्द्रा॑य त्वा॒ त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॒न्त्वेन्द्रा॒येन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑म्। त्वा॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑न्त्वा त्वा॒ जुष्ट॑ङ्गृह्णामि गृह्णामि॒ जुष्ट॑न्त्वा त्वा॒ जुष्ट॑ङ्गृह्णामि। जुष्ट॑ङ्गृह्णामि गृह्णामि॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑ङ्गृह्णामि॒ जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमङ्गृह्णामि॒ जुष्ट॒ञ्जुष्ट॑ङ्गृह्णामि॒ जुष्ट॑तमम्। गृ॒ह्णा॒मि॒ जुष्ट॑तम॒ञ्जुष्ट॑तमङ्गृह्णामि गृह्णामि॒ जुष्ट॑तमम्। जुष्ट॑तम॒मिति॒ जुष्ट॑ तमम्॥ अ॒प्प्सु॒षद॑ङ्घृ॒त॒सद॑ङ्घृ॒त॒सद॑मप्प्सु॒सद॑मप्प्सु॒षद॑ङ्घृ॒त॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑ङ्घृ॒त॒सद॑मप्प्सु॒सद॑मप्प्सु॒षद॑ङ्घृ॒त॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑म्। अ॒प्प्सु॒सद॒मित्त्य॑प्प्सु सद॑म्। घृ॒त॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑ङ्घृ॒त॒सद॑ङ्घृ॒त॒सद॑ँव्व्यो॒म॒सद॑म्। घृ॒त॒सद॒मिति॑ घृ॒त॒ सद॑म्। व्व्यो॒म॒सद॒मिति॑ व्व्योम॒ सद॑म्॥ पृ॒थि॒वि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑म्पृथिवि॒सद॑म्पृथिवि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्दिवि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑म्पृथिवि॒सद॑म्पृथिवि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑न्दिवि॒सद॑म्[2]। पृ॒थि॒वि॒सद॒मिति॑ पृथिवि॒ सद॑म्। अ॒न्त॒रि॒क्ष॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्दिवि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑न्दिवि॒सद॑न्देव॒सद॑न्देव॒सद॑न्दिवि॒सद॑मन्तरिक्ष॒सद॑मन्तरि-

---

1. वा.प्रा.३.५६. के अनुसार ध्रुवसदम् पद में सकार षकार नहीं होगा।

2. पृथिविदिव्युपरिचर्षणिशकुनियासिभ्यः (वा. प्रा. ३.८३) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथिवि एवं दिवि से परे स्थित सकार अविकृत रहता है।

क्ष॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्देव॒सद॑म्। अ॒न्त॒रि॒क्ष॒सद॒मित्य॑न्तरिक्ष॒ सद॑म्। दि॒वि॒सद॑न्देव॒सद॑न्देव॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑न्नाक॒सद॑न्देव॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्दि॒वि॒सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑म्। दि॒वि॒सद॒मिति॑ दि॒वि॒ सद॑म्। दे॒व॒सद॑न्नाक॒सद॑न्नाक॒सद॑न्देव॒सद॑न्देव॒सद॑न्नाक॒सद॑म्। दे॒व॒सद॒मिति॑ दे॒व॒ सद॑म्। ना॒क॒सद॒मिति॑ ना॒क॒ सद॑म्॥ २॥

अ॒पाꣳ रस॒ꣳ रस॑म॒पाम॒पाꣳ रस॒मुद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ रस॑म॒पाम॒पाꣳ रस॒मुद्व॑यसम्[1]। रस॒मुद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ रस॒ꣳ रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒ꣳ रस॒ꣳ रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॑। उद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सन्त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सूर्य्य॒ऽ उद्व॑यस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य्ये॒ सन्त॑म्। उद्व॑यस॒मित्युत् व्व॑यसम्। सूर्य्ये॒ सन्त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तꣳ स॒माहि॑त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सूर्य्ये॒ सूर्य्ये॒ सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तम्। सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तꣳ स॒माहि॑त॒ꣳ सन्त॒ꣳ सन्त॑ꣳ स॒माहि॑तम्। स॒माहि॑त॒मिति॑ स॒म् आहि॑तम्॥ अ॒पाꣳ रस॑स्य॒ रस॑स्या॒पाम॒पाꣳ रस॑स्य॒ यो यो रस॑स्या॒पाम॒पाꣳ रस॑स्य॒ यः। रस॑स्य॒ यो यो रस॑स्य॒ रस॑स्य॒ यो रसो॒ रसो॒ यो रस॑स्य॒ रस॑स्य॒ यो रस॑ः। यो रसो॒ रसो॒ यो यो रस॒स्तन्त॒ꣳ रसो॒ यो यो रस॒स्तम्। रस॒स्तन्त॒ꣳ रसो॒ रस॒स्तँव्वो॑ व॒स्तꣳ रसो॒ रस॒स्तँव्व॑ः। तँव्वो॑ व॒स्तन्तँव्वो॑ गृह्णामि गृह्णामि व॒स्तन्तँव्वो॑ गृह्णामि। व्वो॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ गृ॒ह्णा॒मि॒ वो॒ वो॒ गृ॒ह्णाम्म्यु॒त्त॒मम॑ु॒त्त॒मङ्गृ॑ह्णामि वो वो गृह्णाम्म्यु॒त्त॒मम्। गृ॒ह्णाम्म्यु॒त्त॒मम॑ु॒त्त॒मङ्गृ॑ह्णामि गृह्णाम्म्यु॒त्त॒मम्। उ॒त्त॒ममित्यु॑त् त॒मम्[2]॥३॥

ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतय॒ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ग्ग्रहा॒ ग्ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ व्यन्तो॒ व्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ ग्ग्रहा॒ ग्ग्रहा॑ऽ ऊर्ज्जाहुतयो॒ व्यन्त॑ः। ऊ॒र्ज्जा॒हु॒त॒यो॒ व्यन्तो॒

---

1. अङ्गुष्ठाकुञ्चनं लघावनुस्वारे त्वपाꣳरसम्।- या.शि.६२.

2. उत्कृष्ट का वाचक तम बाद में होने से उत्तमम् इस पद में उत् शब्द को तमम् से पृथक् किया जाता है।

द्ध्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जा॑हुतय॒ऽ ऊर्ज्जा॑हुतयो॒ द्ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य॒ द्ध्यन्त॑ऽ ऊर्ज्जा॑हुतय॒ऽ ऊर्ज्जा॑हुतयो॒ द्ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य। ऊ॒र्ज्जा॒हु॒त॒य॒ऽ इत्यू॑र्ज्जा आहुतयः॑। द्ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य॒ द्ध्यन्तो॒ द्ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्म॒तिँव्विप्प्रा॑य॒ द्ध्यन्तो॒ द्ध्यन्तो॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्। व्विप्प्रा॑य म॒तिम्म॒तिँव्विप्प्रा॑य॒ व्विप्प्रा॑य म॒तिम्। म॒तिमिति॑ म॒तिम्॥ तेषा॒ँ-व्विशि॑ंप्प्रियाणा॒ँव्विशि॑ंप्प्रियाणा॒न्तेषा॒न्तेषा॒ँव्विशि॑ंप्प्रियाणाँ॑व्वो वो॒ व्विशि॑ंप्प्रियाणा॒न्ते-षा॒न्तेषा॒ँव्विशि॑ंप्प्रियाणाँ॑व्वः। व्विशि॑ंप्प्रियाणाँ॑व्वो वो॒ व्विशि॑ंप्प्रियाणा॒ँव्विशि॑ंप्प्रियाणाँ॑व्वो॒-हम॒हँ॑व्वो॒ व्विशि॑ंप्प्रियाणा॒ँव्विशि॑ंप्प्रियाणाँ॑व्वो॒हम्[1]। व्विशि॑ंप्प्रियाणा॒मिति॒ वि शि॑ंप्प्रि-याणाम्। व्वो॒हम॒हँ॑व्वो॑ वो॒हमिष॒मिष॑म॒हँ॑व्वो॑ वो॒हमिष॑म्। अ॒हमिष॒मिष॑म॒हम॒हमिष॒मू-र्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॑म॒हम॒हमिष॒मूर्ज्ज॑म्। इष॒मूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒मिष॒मिष॒मूर्ज्ज॒ꣳ सꣳ समूर्ज्ज॒मिष॒-मिष॒मूर्ज्ज॒ꣳ सम्। ऊर्ज्ज॒ꣳ सꣳ समूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒ꣳ सम॑ग्ग्रभमग्ग्रभ॒ꣳ समूर्ज्ज॒मूर्ज्ज॒ꣳ सम॑ग्ग्रभम्। सम॑ग्ग्रभमग्ग्रभ॒ꣳ सꣳ सम॑ग्ग्रभम्। अ॒ग्ग्र॒भ॒मित्त्य॑ग्ग्रभम्॥ स॒म्पृचौ॑ स्त्थ स्त्थः॑ स॒म्पृचौ॑ स॒म्पृचौ॑ स्त्थ॒ः सꣳ स꣡ स्थ॑ꣳ स॒म्पृचौ॑ स॒म्पृचौ॑ स्त्थ॒ः सम्। स॒म्पृचा॒विति॑ स॒म् पृचौ॑। स्थ॒ः सꣳ स꣡ स्थ॑ स्त्थ॒ः सम्मा॑ मा॒ स꣡ स्थ॑ स्त्थ॒ः सम्मा॑। सम्मा॑ मा॒ सꣳ सम्मा॑ भ॒द्द्रेण॑ भ॒द्द्रेण॑ मा॒ सꣳ सम्मा॑ भ॒द्द्रेण॑। मा॒ भ॒द्द्रेण॑ भ॒द्द्रेण॑ मा मा भ॒द्द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्म्भ॒द्द्रेण॑ मा मा भ॒द्द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्। भ॒द्द्रेण॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्म्भ॒द्द्रेण॑ भ॒द्द्रेण॑ पृङ्क्ष्ँ॑व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्भ॒द्द्रेण॑ भ॒द्द्रेण॑ पृङ्क्ष्ँ॑व्वि॒पृचौ॑। पृ॒ङ्क्ष्ँ॑व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्ँ॑व्वि॒पृचौ॑ स्त्थ स्त्थो व्वि॒पृचौ॑ पृङ्क्ष्म्पृङ्क्ष्ँ॑व्वि॒पृ-चौ॑ स्त्थः॑। व्वि॒पृचौ॑ स्त्थ स्त्थो व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ स्त्थो॒ व्वि वि स्त्थो॑ व्वि॒पृचौ॑ व्वि॒पृचौ॑ स्त्थो॒ व्वि। व्वि॒पृचा॒विति॑ वि॒ पृचौ॑। स्थो॒ व्वि वि स्त्थ॑ स्त्थो॒ व्वि मा॑ मा॒ व्वि स्त्थ॑ स्त्थो॒ व्वि मा॑। व्वि मा॑ मा॒ व्वि वि मा॑ पा॒प्प्मना॑ पा॒प्प्मना॑ मा॒ व्वि वि मा॑ पा॒प्प्मना॑। मा॒

---

[1]. वोऽहं सोऽहं सोऽस्मार्क तेऽभिगरो वोऽर्वाची (वा. प्रा. ४.६६) इस सूत्र के अनुसार वोहम् में अकार का अभिनिधान होता है।

पाप्मना पाप्मना मा मा पाप्मना पृङ्क्तम्पृङ्क्तम्पाप्मना मा मा पाप्मना पृङ्क्तम्[1]। पाप्मना पृङ्क्तम्पृङ्क्तम्पाप्मना पाप्मना पृङ्क्तम्। पृङ्क्तमिति पृङ्क्तम्॥४॥

इन्द्रस्य ब्वज्ज्रो ब्वज्ज्रऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य ब्वज्ज्रोस्यसि ब्वज्ज्रऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य ब्वज्ज्रोसि[2]। ब्वज्ज्रोस्यसि ब्वज्ज्रो ब्वज्ज्रोसि ब्वाजसा ब्वाजसाऽ असि ब्वज्ज्रो ब्वज्ज्रोसि ब्वाजसा३। असि ब्वाजसा ब्वाजसाऽ अस्यसि ब्वाजसास्त्वया त्वया ब्वाजसाऽ अस्यसि ब्वाजसास्त्वया। ब्वाजसास्त्वया त्वया ब्वाजसा ब्वाजसास्त्वया-यमयन्त्वया ब्वाजसा ब्वाजसास्त्वयायम्। ब्वाजसाऽ इति वाज साः। त्वयायम-यन्त्वया त्वयायँब्वाजँब्वाजमयन्त्वया त्वयायँब्वाजम्। अयँब्वाजँब्वाजमयमयँब्वाजꣳ सेत्त्सेद्वाजमयमयँब्वाजꣳ सेत्। ब्वाजꣳ सेत्त्सेद्वाजँब्वाजꣳ सेत्। सेदिति सेत्॥ ब्वाजस्य नु नु ब्वाजस्य ब्वाजस्य नु प्प्रसवे प्प्रसवे नु ब्वाजस्य ब्वाजस्य नु प्प्रसवे। नु प्प्रसवे प्प्रसवे नु नु प्प्रसवे मातरम्मातरम्प्रसवे नु नु प्प्रसवे मातरम्। प्रसवे मातरम्मातरम्प्रसवे प्प्रसवे मातरम्महीम्महीम्मातरम्प्रसवे प्प्रसवे मातरम्महीम्। प्रसवऽ इति प्प्र सवे। मातरम्महीम्महीम्मातरम्मातरम्महीमदितिमदितिम्मही-म्मातरम्मातरम्महीमदितिम्। महीमदितिमदितिम्महीम्महीमदितिन्नाम नामा-दितिम्महीम्महीमदितिन्नाम। अदितिन्नाम नामादितिमदितिन्नाम ब्वचसा ब्वचसा नामादितिमदितिन्नाम ब्वचसा। नाम ब्वचसा ब्वचसा नाम नाम ब्वचसा करामहे करामहे ब्वचसा नाम नाम ब्वचसा करामहे। ब्वचसा करामहे करामहे ब्वचसा ब्वचसा करामहे। करामहऽ इति करामहे॥ यस्यामिदमिदँय्यस्याँय्य-स्यामिदँब्विश्श्वँब्विश्श्वमिदँय्यस्याँय्यस्यामिदँब्विश्श्वम्। इदँब्विश्श्वँब्विश्श्वमिदमिदँब्विश्श्वम्भु-

[1]. बर्हिरङ्ङ्काम्भद्रेण पृङ्ङ्क ....च (वा. प्रा. ६.३०) इस सूत्र के अनुसार भद्रेण पृङ्ङ्क्म् यहाँ दो अनुनासिक होंगे। सूत्रोक्त चकार से तज्जातीयक भद्रेण पृङ्ङ्क मा. सं. १९.११., मा. प. १९.९. का ग्रहण किया जा सकता है। पाप्मना पृङ्क्तम् का ग्रहण प्रतीत नहीं होता।

[2]. असि(वा.प्रा.२.८) यह आख्यात पद अनुदात्त होता है।

वंनम्भुवंनँविश्वंमिदमिदँविश्वम्भुवंनम्। विश्वम्भुवंनम्भुवंनँविश्वँविश्वम्भुवंनमा-
विवेशाविवेश भुवंनँविश्वँविश्वम्भुवंनमाविवेशं। भुवंनमाविवेशाविवेश भुवंनम्भु-
वंनमाविवेश तस्यान्तस्यामाविवेश भुवंनम्भुवंनमाविवेश तस्याम्[1]। आविवेश
तस्यान्तस्यामाविवेशाविवेश तस्यान्नो नस्तस्यामाविवेशाविवेश तस्यान्नः।
आविवेशेत्त्या विवेशं। तस्यान्नो नस्तस्यान्तस्यान्नो देवो देवो नस्तस्यान्तस्यान्नो
देवः। नो देवो देवो नो नो देवः संविता संविता देवो नो नो देवः संविता। देवः
संविता संविता देवो देवः संविता धर्म्म धर्म्म सविता देवो देवः संविता धर्म्म।
सविता धर्म्म धर्म्म सविता संविता धर्म्म साविषत्साविषद्धर्म्म सविता संविता
धर्म्म साविषत्। धर्म्म साविषत्साविषद्धर्म्म धर्म्म साविषत्। साविषदिति
साविषत्॥५॥

अप्स्वन्तरन्तरप्स्वप्स्वन्तरमृतंममृतंमन्तरप्स्वप्स्वन्तरमृतंम्[2]।
अप्स्वित्यप् सु। अन्तरमृतंममृतंमन्तरन्तरमृतंमप्स्वप्स्वमृतंमन्तरन्तरमृतंम-
प्सु। अमृतंमप्स्वप्स्वमृतंममृतंमप्सु भेषजम्भेषजमप्स्वमृतंममृतंमप्सु
भेषजम्। अप्सु भेषजम्भेषजमप्स्वप्सु भेषजमपामपाम्भेषजमप्स्वप्सु
भेषजमपाम्। अप्स्वित्यप् सु। भेषजमपामपाम्भेषजम्भेषजमपामुतोतापाम्भे-
षजम्भेषजमपामुत। अपामुतोतापामपामुत प्रशंस्तिषु प्रशंस्तिषूतापामपामुत
प्रशंस्तिषु। उत प्रशंस्तिषु प्रशंस्तिषूतोत प्रशंस्तिष्ष्वश्वाऽ अश्वाः प्रशंस्ति-
षूतोत प्रशंस्तिष्ष्वश्वाः। प्रशंस्तिष्ष्वश्वाऽ अश्वाः प्रशंस्तिषु प्रशंस्तिष्ष्वश्वा
भवंत भवताश्वाः प्रशंस्तिषु प्रशंस्तिष्ष्वश्वा भवंत। प्रशंस्तिष्ष्विति प्र शंस्तिषु
। अश्वा भवंत भवताश्वाऽ अश्वा भवंत वाजिनो वाजिनो भवताश्वाऽ अश्वा भवंत

---

[1]. वा.प्रा.४.१५७. के अनुसार तस्याम् पद में एक यकार होगा।

[2]. अन्तरनाद्युदात्तम् (वा. प्रा. १.१६२) आद्युदात न होने पर अन्तः पद रिफितसंज्ञक होता है।

ब्वाजिनः[1]। भवत ब्वाजिनो ब्वाजिनो भवत भवत ब्वाजिनः। ब्वाजिनऽ इति वाजिनः॥ देवीरापऽ आपो देवीर्देवीरापो यो यऽ आपो देवीर्देवीरापो यः। आपो यो यऽ आपऽ आपो यो वो वो यऽ आपऽ आपो यो वः। यो वो वो यो यो वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो यो यो वऽ ऊर्म्मिः। ब्वऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिः प्प्रतूर्तिः प्प्रतूर्तिरूर्म्मिर्व्वो वऽ ऊर्म्मिः प्प्रतूर्तिः। ऊर्म्मिः प्प्रतूर्तिः प्प्रतूर्तिरूर्म्मिरूर्म्मिः प्प्रतूर्तिः कुकुन्मान्कुकुन्मान्प्रतूर्तिरूर्म्मिरूर्म्मिः प्प्रतूर्तिः कुकुन्मान्। प्रतूर्तिः कुकुन्मान्कुकुन्मान्प्रतूर्तिः प्प्रतूर्तिः कुकुन्मान्वाजसा ब्वाजसाः कुकुन्मान्प्र-तूर्तिः प्प्रतूर्तिः कुकुन्मान्वाजसाः। प्रतूर्तिरिति प्प्र तूर्तिः। कुकुन्मान्वाजसा ब्वाजसाः कुकुन्मान्कुकुन्मान्वाजसास्तेन तेन ब्वाजसाः कुकुन्मान्कुकुन्मा-न्वाजसास्तेन। कुकुन्मानिति कुकुत् मान्। ब्वाजसास्तेन तेन ब्वाजसा ब्वाजसा-स्तेनायमयन्तेन ब्वाजसा ब्वाजसास्तेनायम्। ब्वाजसाऽ इति वाज साः। तेनाय-मयन्तेन तेनायँब्वाजँब्वाजमयन्तेन तेनायँब्वाजम् । अयँब्वाजँब्वाजमयमयँब्वाजꣳ सेत्सेद्वाजमयमयँब्वाजꣳ सेत्। ब्वाजꣳ सेत्सेद्वाजँब्वाजꣳ सेत्। सेदिति सेत्॥६॥

ब्वातो वा वा ब्वातो ब्वातो वा मनो मनो वा ब्वातो ब्वातो वा मनः। ब्वा मनो मनो वा वा मनो वा वा मनो वा वा मनो वा। मनो वा वा मनो मनो वा गन्धर्व्वा गन्धर्व्वा वा मनो मनो वा गन्धर्व्वाः। ब्वा गन्धर्व्वा गन्धर्व्वा वा वा गन्धर्व्वाः सप्त-विꣳशतिः सप्तविꣳशतिर्ग्गन्धर्व्वा वा वा गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः। गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः सप्तविꣳशतिर्ग्गन्धर्व्वा गन्धर्व्वाः सप्तविꣳशतिः। सप्तविꣳश-तिरिति सप्त बिꣳशतिः॥ तेऽ अग्ग्रेग्ग्रे ते तेऽ अग्ग्रेश्वमश्वमग्ग्रे ते तेऽ अग्ग्रेश्व-

[1]. वा.प्रा.३.११६. के अनुसार मकार बाद में होने पर भवत का अन्तिम स्वर दीर्घ होता है, यहाँ मकार बाद में न होने से दीर्घ नहीं होगा।

म्[1]। अग्ग्रेश्श्वमश्श्वमग्ग्रेग्ग्रेश्श्वमयुञ्जन्नयुञ्जन्नश्श्वमग्ग्रेग्ग्रेश्श्वमयुञ्जन्। अश्श्वमयुञ्जन्नयुञ्जन्नश्श्वमश्श्वमयुञ्जँस्ते तेयुञ्जन्नश्श्वमश्श्वमयुञ्जँस्ते। अयुञ्जँस्ते तेयुञ्जन्नयुञ्जँस्तेऽ अस्म्मिन्नस्म्मिँस्तेयुञ्जन्नयुञ्जँस्तेऽ अस्म्मिन्। तेऽ अस्म्मिन्नस्म्मिँस्ते तेऽ अस्म्मिञ्जवञ्जवमस्म्मिँस्ते तेऽ अस्म्मिञ्जवम्[2]। अस्म्मिञ्जवञ्जवमस्म्मिन्नस्म्मिञ्जवमादधुरदधुरा जवमस्म्मिन्नस्म्मिञ्जवमादधुः। जवमादधुरदधुरा जवञ्जवमादधुः। आदधुः। अदधुरित्त्यदधुः॥७॥

व्वातरꣳहा भव भव व्वातरꣳहा व्वातरꣳहा भव व्वाजिन्न्वाजिन्भव व्वातरꣳहा व्वातरꣳहा भव व्वाजिन्। व्वातरꣳहाऽ इति वातꣳ रꣳहाः। भव व्वाजिन्न्वाजिन्भव भव व्वाजिन्न्युज्ज्यमानो युज्ज्यमानो व्वाजिन्भव भव व्वाजिन्न्युज्ज्यमानः। व्वाजिन्न्युज्ज्यमानो युज्ज्यमानो व्वाजिन्न्वाजिन्न्युज्ज्यमानऽ इन्द्रस्स्येवेन्द्रस्स्येव युज्ज्यमानो व्वाजिन्न्वाजिन्न्युज्ज्यमानऽ इन्द्रस्स्येव। युज्ज्यमानऽ इन्द्रस्स्येवेन्द्रस्स्येव युज्ज्यमानो युज्ज्यमानऽ इन्द्रस्स्येव दक्क्षिणो दक्क्षिणऽ इन्द्रस्स्येव युज्ज्यमानो युज्ज्यमानऽ इन्द्रस्स्येव दक्क्षिणः। इन्द्रस्स्येव दक्क्षिणो दक्क्षिणऽ इन्द्रस्स्येवेन्द्रस्स्येव दक्क्षिणः श्रिया श्रिया दक्क्षिणऽ इन्द्रस्स्येवेन्द्रस्स्येव दक्क्षिणः श्रिया[3]। इन्द्रस्स्येवेतीन्द्रस्स्य इव। दक्क्षिणः श्रिया श्रिया दक्क्षिणो दक्क्षिणः श्रियैद्ध्येधि श्रिया दक्क्षिणो दक्क्षिणः श्रियैधि। श्रियैद्ध्येधि श्रिया श्रियैधि। एधीत्त्येधि॥ युञ्जन्तु त्त्वा त्त्वा युञ्जन्तु युञ्जन्तु त्त्वा मरुतो मरुतस्त्त्वा युञ्जन्तु युञ्जन्तु त्त्वा मरुतः। त्त्वा मरुतो मरुतस्त्त्वा त्त्वा मरुतो व्विश्श्ववेदसो व्विश्श्ववेदसो मरुतस्त्त्वा त्त्वा मरुतो व्विश्श्ववेदसः। मरुतो व्विश्श्ववेदसो व्विश्श्ववेदसो मरुतो मरुतो व्विश्श्ववेदसऽ आ ते तऽ

1. विश्वेऽग्ग्रे विशो रायोऽनग्नौ (वा. प्रा. ४.७१) इस सूत्र के अनुसार अग्ग्रेश्वम् यहाँ अश्वम् के अकार का अभिनिधान होता है।

2. अस्मिन् जवम् यहाँ तकारवर्गश्चकारवर्गे चकारवर्गम्(वा.प्रा.४.९६) इस सूत्र से तवर्ग (नकार) चवर्ग (ञकार) होता है।

3. दक्क्षिणः श्रिया यहाँ विसर्जनीय से परवर्ती शकार का द्वित्व नहीं होगा, विसर्जनीयाद्व्यञ्जनपरः(वा.प्रा.४.१०७)।

आ वि॒श्ववे॑दसो म॒रुतो॑ म॒रुतो॑ वि॒श्ववे॑दस॒ऽ आ ते॑। वि॒श्ववे॑दस॒ऽ आ ते॑ त॒ऽ आ वि॒श्ववे॑दसो वि॒श्ववे॑दस॒ऽ आ ते॒ त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ त॒ऽ आ वि॒श्ववे॑दसो वि॒श्ववे॑दस॒ऽ आ ते॒ त्वष्टा॑। वि॒श्ववे॑दस॒ऽ इति॑ वि॒श्व वे॑दसः। आ ते॑। ते॒ त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ ते ते॒ त्वष्टा॑ प॒त्सु प॒त्सु त्वष्टा॑ ते ते॒ त्वष्टा॑ प॒त्सु। त्वष्टा॑ प॒त्सु प॒त्सु त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ प॒त्सु ज॒वञ्ज॒वम्प॒त्सु त्वष्टा॒ त्वष्टा॑ प॒त्सु ज॒वम्। प॒त्सु ज॒वञ्ज॒वम्प॒त्सु प॒त्सु ज॒वन्द॑धातु दधातु ज॒वम्प॒त्सु प॒त्सु ज॒वन्द॑धातु। प॒त्स्विति॑ प॒त् सु।[1] ज॒वन्द॑धातु दधातु ज॒वञ्ज॒वन्द॑धातु। द॒धा॒त्विति॑ दधातु॥८॥

ज॒वो यो यो ज॒वो ज॒वो यस्ते॑ ते॒ यो ज॒वो ज॒वो यस्ते॑। यस्ते॑ ते॒ यो यस्ते॑ वाजिन्वाजिँ॑स्ते॒ यो यस्ते॑ वाजिन्। ते॒ वा॒जि॒न्वा॒जिँ॑स्ते॒ ते॒ वा॒जि॒न्निहि॑तो॒ निहि॑तो वाजिँ॑स्ते ते वा॒जि॒न्निहि॑तः। वा॒जि॒न्निहि॑तो॒ निहि॑तो वाजिन्वाजि॒न्निहि॑तो॒ गुहा॒ गुहा॒ निहि॑तो वाजिन्वाजि॒न्निहि॑तो॒ गुहा॑। निहि॑तो॒ गुहा॒ गुहा॒ निहि॑तो॒ निहि॑तो॒ गुहा॒ यो यो गुहा॒ निहि॑तो॒ निहि॑तो॒ गुहा॒ यः। निहि॑त॒ऽ इति॒ नि हि॑तः। गुहा॒ यो यो गुहा॒ गुहा॒ यः श्ये॒ने श्श्ये॒ने यो गुहा॒ गुहा॒ यः श्ये॒ने। यः श्ये॒ने श्श्ये॒ने यो यः श्ये॒ने परी॑त्तः परी॑त्तः श्ये॒ने यो यः श्ये॒ने परी॑त्तः। श्ये॒ने परी॑त्तः परी॑त्तः श्ये॒ने श्श्ये॒ने परी॑त्तो॒ऽ अच॑र॒दच॑र॒त्परी॑त्तः श्ये॒ने श्श्ये॒ने परी॑त्तो॒ऽ अच॑रत्। परी॑त्तो॒ऽ अच॑र॒दच॑र॒त्परी॑त्तः परी॑त्तो॒ऽ अच॑रच्च॒ चाच॑र॒त्परी॑त्तः परी॑त्तो॒ऽ अच॑रच्च[2]। अच॑रच्च॒ चाच॑र॒दच॑रच्च॒ वाते॒ वाते॒ चाच॑र॒दच॑रच्च॒ वाते॑। च॒ वाते॒ वाते॑ च च॒ वाते॑। वात॒ऽ इति॒ वाते॑॥ तेन॑ नो न॒स्तेन॒ तेन॑ नो वाजिन्वाजिन्न॒स्तेन॒ तेन॑ नो वाजिन्। नो॒ वा॒जि॒न्वा॒जि॒न्नो॒ नो॒ वा॒जि॒न्बल॑वा॒न्बल॑वान्वाजिन्नो नो वा॒जि॒न्बल॑वान्।

---

1. स्विति चानतौ(वा.प्रा.५.१४) नति न होने से सु प्रत्यय बाद में रहने वाले इस पद का पृथक्करण होता है। दन्त्य-वर्ण का मूर्धन्य होना नति है, दन्त्यस्य मूर्धन्यापत्तिर्नतिः(वा.प्रा.१.४२)।

2. परीत्तोऽवत्तानां सुविताय सग्धिरिति (वा. प्रा. ५. ४५) इस सूत्र के अनुसार परीत्तः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

व्वा॒जि॒न्बल॑वा॒न्बल॑वान्वाजिन्वाजि॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न॒ बलै॑न॒ बल॑वान्वाजिन्वाजि॒-न्बल॑वा॒न्बलै॑न। बल॑वा॒न्बलै॑न॒ बलै॑न॒ बल॑वा॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न व्वाज॒जिद्वा॑ज॒जिद् बलै॑न॒ बल॑वा॒न्बल॑वा॒न्बलै॑न व्वाज॒जित्। बल॑वा॒निति॒ बल॑ व्वान्। बलै॑न व्वाज॒जिद्वा॑ज॒जिद् बलै॑न॒ बलै॑न व्वाज॒जिच्च॑ च व्वाज॒जिद् बलै॑न॒ बलै॑न व्वाज॒जिच्च॑। व्वा॒ज॒जिच्च॑ च व्वाज॒जिद्वा॑ज॒जिच्च॒ भव॒ भव॑ च व्वाज॒जिद्वा॑ज॒जिच्च॒ भव॑। व्वा॒ज॒जिदिति॑ वाज॒ जित्। च॒ भव॒ भव॑ च च॒ भव॒ सम॑ने॒ सम॑ने॒ भव॑ च च॒ भव॒ सम॑ने। भव॒ सम॑ने॒ सम॑ने॒ भव॒ भव॒ सम॑ने च च॒ सम॑ने॒ भव॒ भव॒ सम॑ने च। सम॑ने च च॒ सम॑ने॒ सम॑ने च पारयि॒ष्णुः पा॑रयि॒ष्णुश्च॒ सम॑ने॒ सम॑ने च पारयि॒ष्णुः। च॒ पा॒र॒यि॒ष्णुः पा॑रयि॒ष्णुश्च॑ च पारयि॒ष्णुः। पा॒र॒यि॒ष्णुरिति॑ पारयि॒ष्णुः॥ व्वाजि॑नो व्वाजजितो व्वाजजितो॒ व्वाजि॑नो॒ व्वाजि॑नो व्वाजजितो॒ व्वाज॒ँव्वाजँव्वाजजितो॒ व्वाजि॑नो॒ व्वाजि॑नो व्वाजजितो॒ व्वाज॑म्। व्वा॒ज॒जि॒तो॒ व्वाज॒ँव्वाजँव्वाजजितो व्वाजजितो॒ व्वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ व्वाजँव्वाजजितो व्वाजजितो॒ व्वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः। व्वा॒ज॒जि॒त॒ऽ इति॑ वाज जितः। व्वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ व्वाज॒ँव्वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पतेः॑ सरि॒ष्यन्तो॒ व्वाज॒ँव्वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्प्पतेः॑[1]। स॒रि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पतेः॑ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्प्पते॑र्भा॒गम्भा॒गम्बृह॒स्प्पतेः॑ सरि॒ष्यन्त॑ः सरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्प्पते॑र्भा॒गम्। बृह॒स्प्पते॑र्भा॒गम्भा॒गम्बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पते॑र्भा॒गमवाव॑

भा॒गम्बृह॒स्प्पते॒र्बृह॒स्प्पते॑र्भा॒गमव॑[2]। भा॒गमवाव॑ भा॒गम्भा॒गमव॑ जिग्घ्रत जिग्घ्र॒ताव॑ भा॒गम्भा॒गमव॑ जिग्घ्रत। अव॑ जिग्घ्रत जिग्घ्र॒तावाव॑ जिग्घ्रत। जि॒ग्घ्र॒तेति॑ जिग्घ्रत॥९॥

---

[1]. वा. प्रा. २.४७. के अनुसार बृहस्पतिः पद द्विरुदात्त है।

[2]. उपसर्ग अव॑ पद आद्युदात्त होता है जबकि आख्यात अ॒व॒ सर्वानुदात्त होता है।

देवस्याहमहन्देवस्यं देवस्याहꣳ सवितुः सवितुरहन्देवस्यं देवस्याहꣳ सवितुः। अहꣳ सवितुः सवितुरहमहꣳ सवितुः सुवे सुवे सवितुरहमहꣳ सवितुः सुवे। सवितुः सुवे सुवे सवितुः सवितुः सुवे सत्यसंवसः सत्यसंवसः सुवे सवितुः सवितुः सुवे सत्यसंवसः। सुवे सत्यसंवसः सत्यसंवसः सुवे सुवे सत्यसंवसो बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेः सत्यसंवसः सुवे सुवे सत्यसंवसो बृहस्प्पतेः। सत्यसंवसो बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेः सत्यसंवसः सत्यसंवसो बृहस्प्पतेरुत्तममुत्तमम्बृहस्प्पतेः सत्यसंवसः सत्यसंवसो बृहस्प्पतेरुत्तमम्। सत्यसंवसऽ इति सत्य संवसः। बृहस्प्पतेरुत्तममुत्तमम्बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेरुत्तमन्नाकन्नाकमुत्तमम्बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेरुत्तमन्नाकम्। उत्तमन्नाकन्नाकमुत्तममुत्तमन्नाकꣳ रुहेयꣳ रुहेयन्नाकमुत्तममुत्तमन्नाकꣳ रुहेयम्। उत्तममित्युत् तमम्। नाकꣳ रुहेयꣳ रुहेयन्नाकन्नाकꣳ रुहेयम्। रुहेयमिति रुहेयम्॥ इन्द्रस्य सत्यप्प्रसवसः सत्यप्प्रसवसऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य सत्यप्प्रसवसोरुहमरुहꣳ सत्यप्प्रसवसऽ इन्द्रस्येन्द्रस्य सत्यप्प्रसवसोरुहम्॥ सत्यप्प्रसवसोरुहमरुहꣳ सत्यप्प्रसवसः सत्यप्प्रसवसोरुहम्[1]। सत्यप्प्रसवसऽ इति सत्य प्रसवसः। अरुहमित्यरुहम्॥१०॥

बृहस्प्पते व्वाजँव्वाजम्बृहस्प्पते बृहस्प्पते व्वाजञ्जय जय व्वाजम्बृहस्प्पते बृहस्प्पते व्वाजञ्जय[2]। व्वाजञ्जय जय व्वाजँव्वाजञ्जय बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये जय व्वाजँव्वाजञ्जय बृहस्प्पतये। जय बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये जय जय बृहस्प्पतये व्वाचँव्वाचम्बृहस्प्पतये जय जय बृहस्प्पतये व्वाचम्। बृहस्प्पतये व्वाचँव्वाचम्बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये व्वाचँव्वदत व्वदत व्वाचम्बृहस्प्पतये बृहस्प्पतये व्वाचँव्वदत। व्वाचँव्वदत व्वदत व्वाचँव्वाचँव्वदत बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँव्वदत व्वाचँव्वाचँव्वदत बृहस्प्प-

[1]. सत्यप्रसवसः अरुहम् यहाँ सङ्क्रमे च सर्वत्र(वा.प्रा.४.८१) इस सूत्र से अकार का अभिनिधान होता है।

[2]. वा. प्रा. २.२४. के अनुसार यहाँ बृहस्पते पद आद्युदात्त है।

तिंम्। व्वदत बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिंव्वदत व्वदत बृहस्प्पतिंव्वाजँव्वाजम्बृहस्प्पतिंव्वदत व्वदत बृहस्प्पतिंव्वाजम्। बृहस्प्पतिंव्वाजँव्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिंव्वाजञ्जापयत जापयत व्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिंव्वाजञ्जापयत। व्वाजञ्जापयत जापयत व्वाजँ-व्वाजञ्जापयत। जापयतेति जापयत॥ इन्द्रेन्द्रायेन्द्रायेन्द्रेन्द्रेन्द्रायेन्द्रमिन्द्रमिन्द्रा-येन्द्रेन्द्रेन्द्रायेन्द्रम्। इन्द्रायेन्द्रमिन्द्रमिन्द्रायेन्द्रायेन्द्रम् । इन्द्रमितीन्द्रम्॥११॥

एषा वो वऽ एषैषा वः सा सा वऽ एषैषा वः सा। व्वः सा सा वो वः सा सत्या सत्या सा वो वः सा सत्या। सा सत्या सत्या सा सा सत्या सँव्वाक्सँव्वा-क्सत्या सा सा सत्या सँव्वाक्। सत्या सँव्वाक्क सँव्वाक्क सत्या सत्या सँव्वाग्भूदभू-त्सँव्वाक्क सत्या सत्या सँव्वाग्भूत्। सँव्वाग्भूदभूत्सँव्वाक्क सँव्वाग्भूद्यया य्ययाभूत्सँ-व्वाक्सँव्वाग्भूद्यया। सँव्वागिति सम् व्वाक्। अभूद्यया य्ययाभूदभूद्यया बृहस्प्पति-म्बृहस्प्पतिँय्ययाभूदभूद्यया बृहस्प्पतिम्। यया बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँय्यया यया बृहस्प्पतिंव्वाजँव्वाजम्बृहस्प्पतिँय्यया यया बृहस्प्पतिंव्वाजम्। बृहस्प्पतिंव्वाजँव्वा-जम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिंव्वाजमजीजपताजीजपत व्वाजम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिँ-व्वाजमजीजपत। व्वाजमजीजपताजीजपत व्वाजँव्वाजमजीजपताजीजपताजी-जपताजीजपत व्वाजँव्वाजमजीजपताजीजपत। अजीजपताजीजपताजीजप-ताजीजपताजीजपताजीजपत व्वाजँव्वाजमजीजपताजीपताजीजपताजीजपत व्वाजम्। अजीजपत व्वाजँव्वाजमजीजपताजीजपत व्वाजँव्वनस्प्पतयो व्वनस्प्पतयो व्वाजमजीजपताजीजपत व्वाजँव्वनस्प्पतयः[1]। व्वाजँव्वनस्प्पतयो व्वनस्प्पतयो व्वाजँव्वाजँव्वनस्प्पतयो व्वि वि वनस्प्पतयो व्वाजँव्वाजँव्वनस्प्पतयो व्वि। व्वनस्प्पतयो व्वि वि वनस्प्पतयो व्वनस्प्पतयो व्वि मुच्यध्वम्मुच्यध्वँव्वि वनस्प्पतयो व्वनस्प्पतयो

[1]. वा.प्रा.२.४६. तथा वा.प्रा.२.४७. के अनुसार वनस्पति पद द्विरुदात होता है, यहाँ आमन्त्रित पद होने से वनस्पति पद द्विरुदात नहीं है। वा.प्रा.३.५०. के अनुसार पति शब्द बाद में होने पर वन शब्द सकार से व्यवहित होता है।

व्वि मुञ्चयद्ध्वम्। व्वि मुञ्चयद्ध्वम्मुञ्चयद्ध्वँव्वि वि मुञ्चयद्ध्वम्। मुञ्चयद्ध्वमितिं मुञ्चयद्ध्वम्॥ इन्द्रँव्वाजजितो व्वाजजितऽ इन्द्रमिन्द्रँव्वाजजितो व्वाजँव्वाजँव्वाजजितऽ इन्द्रमिन्द्रँव्वाजजितो व्वाजम्॥ व्वाजजितो व्वाजँव्वाजँव्वाजजितो व्वाजजितो व्वाजञ्जेषञ्जेषँव्वाजँव्वाजजितो व्वाजजितो व्वाजञ्जेषम्। व्वाजजितऽ इतिं वाज जितः। व्वाजञ्जेषञ्जेषँव्वाजँव्वाजञ्जेषम्। जेषमितिं जेषम्॥ व्वाजिनो व्वाजजितो व्वाजजितो व्वाजिनो व्वाजिनो व्वाजजितोद्ध्वनोद्ध्वनो व्वाजजितो व्वाजिनो व्वाजिनो व्वाजजितोद्ध्वनः। व्वाजजितोद्ध्वनोद्ध्वनो व्वाजजितो व्वाजजितोद्ध्वन स्कब्भुवन्त स्कब्भुवन्तोद्ध्वनो व्वाजजितो व्वाजजितोद्ध्वन स्कब्भुवन्तः[1]। व्वाजजितऽ इतिं वाज जितः। अद्ध्वन स्कब्भुवन्त स्कब्भुवन्तोद्ध्वनोद्ध्वन स्कब्भुवन्तो योजना योजना स्कब्भुवन्तोद्ध्वनोद्ध्वन स्कब्भुवन्तो योजना। स्कब्भुवन्तो योजना योजना स्कब्भुवन्त स्कब्भुवन्तो योजना मिमाना मिमाना योजना स्कब्भुवन्त स्कब्भुवन्तो योजना मिमानाः। योजना मिमाना मिमाना योजना योजना मिमानाः काष्ठाङ्काष्ठाम्मिमाना योजना योजना मिमानाः काष्ठाम्। मिमानाः काष्ठाङ्काष्ठाम्मिमाना मिमानाः काष्ठाङ्गच्छत गच्छत काष्ठाम्मिमाना मिमानाः काष्ठाङ्गच्छत। काष्ठाङ्गच्छत गच्छत काष्ठाङ्काष्ठाङ्गच्छत। गच्छतेतिं गच्छत॥१२॥

एष स्य स्यऽ एषऽ एष स्य व्वाजी व्वाजी स्यऽ एषऽ एष स्य व्वाजी[2]। स्य व्वाजी व्वाजी स्य स्य व्वाजी क्षिप्रणिङ्क्षिपणिँव्वाजी स्य स्य व्वाजी क्षिपणिम्। व्वाजी क्षिपणिङ्क्षिपणिँव्वाजी व्वाजी क्षिपणिन्तुरण्यति तुरण्यति क्षिपणिँव्वाजी व्वाजी क्षिपणिन्तुरण्यति। क्षिपणिन्तुरण्यति तुरण्यति क्षिपणिङ्क्षिपणिन्तुरण्यति ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायान्तुरण्यति क्षिपणिङ्क्षिपणिन्तुरण्यति ग्ग्रीवा-

---

[1]. अध्वनः स्कभ्भुवन्तः यहाँ सन्धि की दशा में लुङ् मुदि जित्परे (वा. प्रा. ३.१३) के अनुसार विसर्जनीय का लोप होता है।

[2]. स्य एष च(वा.प्रा.३.१७) के अनुसार व्यञ्जन बाद में होने पर स्यः तथा एषः का विसर्जनीय लुप्त होता है।

याम्। तुरण्यति ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायान्तुरण्यति तुरण्यति ग्ग्रीवायाम्बद्धो बद्धो ग्ग्रीवायान्तुरण्यति तुरण्यति ग्ग्रीवायाम्बद्धः। ग्रीवायाम्बद्धो बद्धो ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायाम्बद्धोऽ अपिकक्क्षेपिकक्क्षे बद्धो ग्ग्रीवायाङ्ग्रीवायाम्बद्धोऽ अपिकक्क्षे[1]। बद्धोऽ अपिकक्क्षेपिकक्क्षे बद्धो बद्धोऽ अपिकक्क्षऽ आसन्न्यासन्न्यपिकक्क्षे बद्धो बद्धोऽ अपिकक्क्षऽ आसनि। अपिकक्क्षऽ आसन्न्यासन्न्यपिकक्क्षेपिकक्क्षऽ आसनि। अपिकक्क्षऽ इत्त्यपि कक्क्षे। आसनीत्त्यासनि॥ क्रतुन्दधिक्रा दधिक्राः क्रतुङ्क्रतुन्दधिक्राऽ अन्न्वनु दधिक्राः क्रतुङ्क्रतुन्दधिक्राऽ अनु। दधिक्राऽ अन्न्वनु दधिक्रा दधिक्राऽ अनु सꣳसनिष्ष्यदत्सꣳसनिस्यददनु दधिक्रा दधिक्राऽ अनु सꣳसनिष्ष्यदत्। दधिक्राऽ इति दधि क्राः। अनु सꣳसनिष्ष्यदत्सꣳसनिस्यददन्न्वनु सꣳसनिष्ष्यदत्पथाम्पथाꣳ सꣳसनिस्यददन्न्वनु सꣳसनिष्ष्यदत्पथाम्। सꣳसनिष्ष्यदत्पथाम्पथाꣳ सꣳसनिस्यदत्सꣳसनिष्ष्यदत्पथामङ्काꣳस्यङ्काꣳसि पथाꣳ सꣳसनिस्यदत्सꣳसनिष्ष्यदत्पथामङ्काꣳसि। सꣳसनिस्यददिति सम् सनिस्यदत्। पथामङ्काꣳस्यङ्काꣳसि पथाम्पथामङ्काꣳस्यन्न्वन्न्वङ्काꣳसि पथाम्पथामङ्काꣳस्यनु। अङ्काꣳस्यन्न्वन्न्वङ्काꣳस्यङ्काꣳस्यन्न्वापनीफणदापनीफणदन्न्वङ्काꣳस्यङ्काꣳस्यन्न्वापनीफणत्[2]। अन्न्वापनीफणदापनीफणदन्न्वन्न्वापनीफणत्स्वाहा स्वाहापनीफणदन्न्वन्न्वापनीफणत्स्वाहा। आपनीफणत्स्वाहा स्वाहापनीफणदापनीफणत्स्वाहा। आपनीफणदित्त्या पनीफणत्। स्वाहेति स्वाहा॥ १३॥

---

[1]. अपिकक्षे अपिकक्षे यहाँ एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) से एकार से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है। तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) इस सूत्र से एकार स्वरित होता है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) से अभिनिहित स्वरित की प्राप्ति होती है।

[2]. वा. प्रा. ६.८. के अनुसार इस कण्डिका में अनु संसनिष्यदत् एवं अनु आपनीफणत् दोनों स्थानों में अनु अनुदात्त नहीं होता है।

उ॒त स्म्मं स्म्मो॒तोत स्म्मास्याास्य स्म्मो॒तोत स्म्मास्य[1]। स्मा॒स्या॒स्य॒ स्म्म॒ स्म्मा॒स्य॒ द्र॒वंतो॒ द्र॒वंतोस्य स्म्म स्म्मा॒स्य॒ द्र॒वंतः। अ॒स्य॒ द्र॒वंतो॒ द्र॒वंतोस्यास्य॒ द्र॒वंतस्तु॒रण्यु॒तस्तु॑रण्यु॒तो द्र॒वंतोस्यास्य॒ द्र॒वंतस्तु॒रण्यु॒तः। द्र॒वंतस्तु॒रण्यु॒त-स्तु॑रण्यु॒तो द्र॒वंतो॒ द्र॒वंतस्तु॒रण्यु॒तः पु॒र्णर्म्पु॒र्णर्न्तु॑रण्यु॒तो द्र॒वंतो॒ द्र॒वंतस्तुर-ण्यु॒तः पु॒र्णर्म्। तु॒र॒ण्यु॒तः पु॒र्णर्म्पु॒र्णर्न्तु॑रण्यु॒तस्तु॑रण्यु॒तः पु॒र्णर्न्न न पु॒-र्णर्न्तु॑रण्यु॒तस्तु॑रण्यु॒तः पु॒र्णर्न्न। पु॒र्णर्न्न न पु॒र्णर्म्पु॒र्णर्न्न वेर्व्वेर्न्न पु॒र्णर्म्पु॒र्णर्न्न वेः[2]। न वेर्व्वेर्न्न न वेरन्त्वनु॒ वेर्न्न न वेरनु॑। व्वेरन्त्वनु॒ वेर्व्वेरनु॑ वाति व्वा॒त्यनु॒ वेर्व्वेरनु॑ वाति। अनु॑ वाति व्वा॒त्यन्त्वनु॑ वाति प्प्रग॒र्द्धिनं॑ः प्प्रग॒र्द्धिनो॑ व्वा॒त्यन्त्वनु॑ वाति प्प्रग॒-र्द्धिनं॑ः। व्वा॒ति॒ प्प्र॒ग॒र्द्धिनं॑ः प्प्रग॒र्द्धिनो॑ व्वाति व्वाति प्प्रग॒र्द्धिनं॑ः। प्र॒ग॒र्द्धिन॒ऽ इति॑ प्प्र ग॒र्द्धिनं॑ः॥ श्ये॒नस्यै॑व॒ द्ध्रजं॑तो॒ द्ध्रजं॑तः श्ये॒नस्यै॑व श्श्ये॒नस्यै॑व॒ द्ध्रजं॑तोऽ अङ्क॒सम॑ङ्क॒-सन्ध्रजं॑तः श्ये॒नस्यै॑व श्श्ये॒नस्यै॑व॒ द्ध्रजं॑तोऽ अङ्क॒सम्। श्ये॒नस्ये॒वेति॑ श्श्ये॒नस्यं॑ इव। ध्रजं॑तोऽ अङ्क॒सम॑ङ्क॒सन्ध्रजं॑तो॒ द्ध्रजं॑तोऽ अङ्क॒सम्परि॒ पर्व्व्यङ्क॒सन्ध्रजं॑तो॒ द्ध्रजं॑-तोऽ अङ्क॒सम्परि॑। अ॒ङ्क॒सम्परि॒ पर्व्व्यङ्क॒सम॑ङ्क॒सम्परि॑ दधि॒क्राव्ण्णो॑ दधि॒क्राव्ण्ण॒ः पर्व्व्यङ्क॒सम॑ङ्क॒सम्परि॑ दधि॒क्राव्ण्णं॑ः। परि॑ दधि॒क्राव्ण्णो॑ दधि॒क्राव्ण्ण॒ः परि॒ परि॑ दधि॒क्राव्ण्णं॑ः स॒ह स॒ह द॑धि॒क्राव्ण्ण॒ः परि॒ परि॑ दधि॒क्राव्ण्णं॑ः स॒ह। द॒धि॒क्राव्ण्णं॑ः स॒ह स॒ह द॑धि॒क्राव्ण्णो॑ दधि॒क्राव्ण्णं॑ः स॒होर्ज्जोर्ज्जा स॒ह द॑धि॒क्राव्ण्णो॑ द॑धि॒क्रा-व्ण्णं॑ः स॒होर्ज्जा। द॒धि॒क्राव्ण्ण॒ऽ इति॑ दधि॒ क्राव्ण्णं॑ः। स॒होर्ज्जोर्ज्जा स॒ह स॒होर्ज्जा तरि॑त्र॒तस्त्तरि॑त्रतऽ ऊ॒र्ज्जा स॒ह स॒होर्ज्जा तरि॑त्रतः। ऊ॒र्ज्जा तरि॑त्र॒त॒स्त्तरि॑त्रतऽ ऊ॒र्ज्जोर्ज्जा तरि॑त्र॒तः स्वाहा॒ स्वाहा॒ तरि॑त्रतऽ ऊ॒र्ज्जोर्ज्जा तरि॑त्र॒तः स्वाहा॑। तरि॑त्र॒तः स्वाहा॒ स्वाहा॒ तरि॑त्र॒त॒स्त्तरि॑त्र॒तः स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥१४॥

---

[1]. वा.प्रा.२.१६. के अनुसार यहाँ स्म पद अनुदात है।

[2]. अथ मा –स –न –शब्देभ्यो विभाषाम्रेडिते यवौ – या. शि. १५७.

शन्नो॑ न॒ः शꣳ शन्नो॑ भवन्तु भवन्तु न॒ः शꣳ शन्नो॑ भवन्तु। नो॒ भ॒व॒न्तु॒ भ॒व॒न्तु॒ नो॒ नो॒ भ॒व॒न्तु॒ वा॒जिनो॑ वा॒जिनो॑ भवन्तु नो नो भवन्तु वा॒जिन॑ः। भ॒व॒न्तु॒ वा॒जिनो॑ वा॒जिनो॑ भवन्तु भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु हवे॑षु वा॒जिनो॑ भवन्तु भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु। वा॒जिनो॒ हवे॑षु॒ हवे॑षु वा॒जिनो॑ वा॒जिनो॒ हवे॑षु दे॒वता॑ता दे॒वता॑ता॒ हवे॑षु वा॒जिनो॑ वा॒जिनो॒ हवे॑षु दे॒वता॑ता। हवे॑षु दे॒वता॑ता दे॒वता॑ता॒ हवे॑षु॒ हवे॑षु दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वो मि॒तद्र॑वो दे॒वता॑ता॒ हवे॑षु॒ हवे॑षु दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वः। दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वो मि॒तद्र॑वो दे॒वता॑ता दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वः स्व॒र्का॒ः स्व॒र्का मि॒तद्र॑वो दे॒वता॑ता दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वः स्व॒र्काः। दे॒वता॒तेति॑ दे॒व ता॑ता[1]। मि॒तद्र॑वः स्व॒र्का॒ः स्व॒र्का मि॒तद्र॑वो मि॒तद्र॑वः स्व॒र्काः। मि॒तद्र॑व॒ऽ इति॑ मि॒त द्र॑वः। स्व॒र्काऽ इति॑ सु अ॒र्काः॥ ज॒म्भय॒न्तोहि॒महि॑ञ्जम्भय॑न्तो ज॒म्भय॒न्तोहि॑वृ॒कँ॒वृ॒कमहि॑ञ्जम्भय॑न्तो ज॒म्भय॒न्तोहि॑वृ॒कम्[2]। अहि॑वृ॒कँ॒वृ॒कमहि॒महि॑वृ॒कꣳ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ वृ॒कमहि॒महि॑वृ॒कꣳ रक्षा॑ꣳसि। वृ॒कꣳ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ वृ॒कँ॒वृ॒कꣳ रक्षा॑ꣳसि॒ सने॑मि॒ सने॑मि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ वृ॒कँ॒वृ॒कꣳ रक्षा॑ꣳसि॒ सने॑मि। रक्षा॑ꣳसि॒ सने॑मि॒ सने॑मि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ सने॑म्म्य॒स्म्मद॒स्म्मत्सने॑मि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ रक्षा॑ꣳसि॒ सने॑म्म्य॒स्म्मत्। सने॑म्म्य॒स्म्मद॒स्म्मत्सने॑मि॒ सने॑म्म्य॒स्म्मद्यु॑यवन्न्यु॒यवन्न॒स्म्मत्सने॑मि॒ सने॑म्म्य॒स्म्मद्यु॑यवन्। अ॒स्म्मद्यु॑यवन्न्युयवन्न॒स्म्मद॒स्म्मद्यु॑यव॒न्नमी॑वा॒ऽ अमी॑वा सुयवन्न॒स्म्मद॒स्म्मद्यु॑यव॒न्नमी॑वाः। सु॒यु॒व॒न्नमी॑वा॒ऽ अमी॑वा सुयवन्न्युयव॒न्नमी॑वाः। अमी॑वा॒ऽ इत्यमी॑वाः॥१५॥

[1]. शस्त्वन्नातातिषु च(वा.प्रा.५.९) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण विहित है।

[2]. वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार यहाँ जम्भ्यन्तः से परवर्ती अकार पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

ते नो॑ नु॒स्त्ते ते नो॒ऽ अर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो नु॒स्त्ते ते नो॒ऽ अर्व्व॑न्तः[1]। नो॒ऽ अर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो नो नो॒ऽ अर्व्व॑न्तो हवनु॒श्श्रुतो॑ हवनु॒श्श्रुतोर्व्व॑न्तो नो नो॒ऽ अर्व्व॑न्तो हवनु॒श्श्रुत॑ः। अर्व्व॑न्तो हवनु॒श्श्रुतो॑ हवनु॒श्श्रुतोर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो हवनु॒श्श्रुतो॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ हवनु॒श्श्रुतोर्व्व॒न्तोर्व्व॑न्तो हवनु॒श्श्रुतो॒ हव॑म्। हु॒व॒नु॒श्श्रुतो॒ हव॒ꣳ हव॑ꣳ हवनु॒श्श्रुतो॑ हवनु॒श्श्रुतो॒ हवँ॒व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒ हव॑ꣳ हवनु॒श्श्रुतो॑ हवनु॒श्श्रुतो॒ हवँ॒व्विश्श्वे॑। हु॒व॒नु॒श्श्रु॒त॒ऽ इति॑ हवनु॒ श्रुत॑ः। हवँ॒व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॒ हव॒ꣳ हवँ॒व्विश्श्वे॑ श्रृण्ण्वन्तु श्रृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ हव॒ꣳ हवँ॒व्विश्श्वे॑ श्रृण्ण्वन्तु। व्विश्श्वे॑ श्रृण्ण्वन्तु श्रृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ श्रृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिन॑ः श्रृण्ण्वन्तु॒ व्विश्श्वे॒ व्विश्श्वे॑ श्रृण्ण्वन्तु व्वा॒जिन॑ः। शृ॒ण्ण्व॒न्तु॒ व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिन॑ः श्रृण्ण्वन्तु श्रृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वो मि॒तद्द्र॑वो व्वा॒जिन॑ः श्रृण्ण्वन्तु श्रृण्ण्वन्तु व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वः। व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वो मि॒तद्द्र॑वो व्वा॒जिनो॑ व्वा॒जिनो॑ मि॒तद्द्र॑वः। मि॒तद्द्र॑व॒ऽ इति॑ मि॒त द्र॑वः॥ स॒ह॒स्त्र॒सा मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सहस्त्र॒साः सꣳहस्त्र॒सा मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता सहस्त्र॒साः सꣳहस्त्र॒सा मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः। स॒ह॒स्त्र॒सा॒ऽ इति॑ सहस्त्र॒ साः। मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो म॒हः सꣳनि॒ष्ष्यवो॑ मे॒धसा॑ता मे॒धसा॑ता सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हः। मे॒धसा॒तेति॑ मे॒ध सा॑ता। स॒नि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो म॒हः सꣳनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो ये ये म॒हः सꣳनि॒ष्ष्यव॑ः सनि॒ष्ष्यवो॑ म॒हो ये। म॒हो ये ये म॒हो म॒हो ये धन॒न्धनँ॒य्ये म॒हो म॒हो ये धन॑म्। ये धन॒न्धनँ॒य्ये ये धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ समि॒थेषु धनँ॒य्ये ये धन॑ꣳ समि॒थेषु॑। धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ समि॒थेषु॒ धन॒न्धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे जꣳब्भ्रि॒रे सꣳमि॒थेषु॒ धन॒न्धन॑ꣳ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे। स॒मि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे जꣳब्भ्रि॒रे सꣳमि॒थेषु॑ समि॒थेषु॑ जब्भ्रि॒रे। स॒मि॒थेष्ष्विति॑ सम् इ॒थेषु॑। ज॒ब्भ्रि॒र॒ऽ इति॑ जब्भ्रि॒रे॥ १६॥

[1]. नो अर्वन्तः यहाँ वा.प्रा.४.८२. के अनुसार ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

व्वाजेँवाजेवतावत॒ व्वाजेँवाजे॒ व्वाजेँवाजेवत व्वाजिनो व्वाजिनोवत॒ व्वाजेँवाजे॒ व्वाजेँवाजेवत व्वाजिनः। व्वाजेँवाज॒ऽ इति॒ वाजेँ व्वाजे। अ॒व॒त॒ व्वा॒जि॒नो॒ व्वा॒जि॒नो॒-व॒ता॒व॒त॒ व्वा॒जि॒नो॒ नो॒ नो॒ व्वा॒जि॒नो॒व॒ता॒व॒त॒ व्वा॒जि॒नो॒ न॒ः। व्वा॒जि॒नो॒ नो॒ नो॒ व्वा॒जि॒नो॒ व्वा॒जि॒नो॒ नो॒ धनेँषु॒ धनेँषु नो व्वाजिनो व्वाजिनो नो॒ धनेँषु। नो॒ धनेँषु॒ धनेँषु॒ नो नो॒ धनेँषु व्विप्प्रा व्विप्प्रा॒ धनेँषु नो नो॒ धनेँषु॒ व्विप्प्राः। धनेँषु व्विप्प्रा व्विप्प्रा॒ धनेँषु॒ धनेँषु व्विप्प्राऽ अमृताऽ अमृता व्विप्प्रा॒ धनेँषु॒ धनेँषु॒ व्विप्प्राऽ अमृताः। व्वि॒प्प्रा॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ व्वि॒प्प्रा॒ व्वि॒प्प्रा॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ व्वि॒प्प्रा॒ व्वि॒प्प्रा॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ः। अ॒मृ॒ता॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ऽ अ॒मृ॒ता॒ऽ ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ः। ऋ॒त॒ज्ज्ञा॒ऽ इत्यृ॒त ज्ञाः॥ अ॒स्य मद्ध्वो॒ मद्ध्वो॒स्यास्य मद्ध्वः पिबत पिबत॒ मद्ध्वो॒-स्यास्य मद्ध्वः पिबत[1]। मद्ध्वः पिबत पिबत॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वः पिबत मा॒दयँद्ध्वम्मा॒दयँद्ध्वम्पिबत॒ मद्ध्वो॒ मद्ध्वः पिबत मा॒दयँद्ध्वम्। पि॒ब॒त॒ मा॒दयँद्ध्वम्मा॒दयँद्ध्वम्पिबत पिबत मा॒दयँद्ध्वन्तृ॒प्प्तास्तृ॒प्प्ता मा॒दयँद्ध्वम्पिबत पिबत मा॒दयँद्ध्वन्तृ॒प्प्ताः[2]। मा॒दयँ-द्ध्वन्तृ॒प्प्तास्तृ॒प्प्ता मा॒दयँद्ध्वम्मा॒दयँद्ध्वन्तृ॒प्प्ता यांत यात तृ॒प्प्ता मा॒दयँद्ध्वम्मा॒दयँद्ध्वन्तृ॒-प्प्ता यांत। तृ॒प्प्ता यांत यात तृ॒प्प्तास्तृ॒प्प्ता यांत प॒थिभिंः प॒थिभिंर्य्यात तृ॒प्प्तास्तृ॒प्प्ता यांत प॒थिभिंः। या॒त॒ प॒थिभिंः प॒थिभिंर्य्यात यात प॒थिभिंर्देव॒यानैंर्देव॒यानैंः प॒थि-भिंर्य्यात यात प॒थिभिंर्देव॒यानैंः। प॒थिभिंर्देव॒यानैंर्देव॒यानैंः प॒थिभिंः प॒थिभिंर्देव॒-यानैंः। प॒थिभि॒रितिँ प॒थि भिंः। दे॒व॒याने॒रितिँ देव॒ यानैंः॥१७॥

आ मा॒ मा मा॒ व्वाजँस्य॒ व्वाजँस्य॒ मा मा॒ व्वाजँस्य[3]। मा॒ व्वाजँस्य॒ व्वाजँस्य मा मा॒ व्वाजँस्य प्प्रसु॒वः प्प्रँसु॒वो व्वाजँस्य मा मा॒ व्वाजँस्य प्प्रसु॒वः। व्वाजँस्य

---

[1]. वा. प्रा. २.६२. के अनुसार यहाँ मध्वः परे रहने के कारण अ॒स्य पद अन्तोदात्त है।

[2]. तृप्तास्तृप्ताः यहाँ ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र से तकार का द्वित्व प्राप्त है, परन्तु ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) से निषेध है। वा.प्रा. में इस सूत्र का उदाहरण अनिष्कृतः है, जबकि ज्यो. वृ. में अनिष्टृतः दिया गया है।

[3]. मा॒ आ यहाँ उदात्तवानुदात्तः(वा.प्रा.४.१३४) के अनुसार आ उदात्त एकीभाव में मा भी उदात्त होता है।

प्प्रस॒वः॒ प्प्र॑स॒वो ब्वाज॑स्य॒ ब्वाज॑स्य प्प्रस॒वो ज॑गम्म्याज्जगम्म्यात्प्रस॒वो ब्वाज॑स्य॒ ब्वाज॑स्य प्प्रस॒वो ज॑गम्म्यात्। प्र॒स॒वो ज॑गम्म्याज्जगम्म्यात्प्रस॒वः॒ प्प्र॑स॒वो ज॑गम्म्या॒देमेऽ इ॒मेऽ आ ज॑गम्म्यात्प्रस॒वः॒ प्प्र॑स॒वो ज॑गम्म्या॒देमे। प्र॒स॒वऽ इति॑ प्प्र स॒वः॒। ज॒ग॒म्म्या॒देमेऽ इ॒मेऽ आ ज॑गम्म्याज्जगम्म्या॒देमे द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒-वीऽ इ॒मेऽ आ ज॑गम्म्याज्जगम्म्या॒देमे द्यावा॑पृथि॒वी। एमे। इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वीऽ इ॒मेऽ इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ब्वि॒श्वरू॑पे ब्वि॒श्वरू॑पे॒ द्यावा॑पृथि॒वीऽ इ॒मेऽ इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ब्वि॒श्वरू॑पे। इ॒मेऽ इती॒मे। द्यावा॑पृथि॒वी ब्वि॒श्वरू॑पे ब्वि॒श्वरू॑पे॒ द्यावा॑पृथि॒वी द्यावा॑पृथि॒वी ब्वि॒श्वरू॑पे। द्यावा॑पृथि॒वीऽ इति॒ द्यावा॑पृथि॒वी। ब्वि॒श्वरू॑पे॒ऽ इति॑ वि॒श्व रू॑पे॥ आ मा॒ मा मा॑ गन्ताङ्गन्ता॒म्मा मा॑ गन्ताम्। मा॒ ग॒न्ता॒ङ्ग॒न्ता॒म्मा॒ मा॒ ग॒न्ता॒म्पि॒तरा॑ पि॒तरा॑ गन्ताम्मा मा गन्ताम्पि॒तरा॑। ग॒न्ता॒म्पि॒तरा॑ पि॒तरा॑ गन्ताङ्गन्ताम्पि॒तरा॑ मा॒तरा॑ मा॒तरा॑ पि॒तरा॑ गन्ताङ्गन्ताम्पि॒तरा॑ मा॒तरा॑। पि॒तरा॑ मा॒तरा॑ मा॒तरा॑ पि॒तरा॑ पि॒तरा॑ मा॒तरा॑ च च मा॒तरा॑ पि॒तरा॑ पि॒तरा॑ मा॒तरा॑ च। मा॒तरा॑ च च मा॒तरा॑ मा॒तरा॒ चा मा॒ मा च॑ मा॒तरा॑ मा॒तरा॒ चा मा॑। चा मा॒ मा च॒ चा मा॒ सोम॒ꣳ सोमो॒ मा च॒ चा मा॒ सोम॑÷। आ मा॑। मा॒ सोम॒ꣳ सोमो॑ मा मा॒ सोमो॑ऽ अमृत॒त्त्वेना॑मृत॒त्त्वेन॒ सोमो॑ मा मा॒ सोमो॑ऽ अमृत॒त्त्वेन॑। सोमो॑ऽ अमृत॒त्त्वेना॑मृत॒त्त्वेन॒ सोम॒ꣳ सोमो॑ऽ अमृत॒त्त्वेन॑ गम्म्याद् गम्म्यादमृत॒त्त्वेन॒ सोम॒ꣳ सोमो॑ऽ अमृत॒त्त्वेन॑ गम्म्यात्। अ॒मृ॒त॒त्त्वेन॑ गम्म्याद् गम्म्यादमृत॒त्त्वेना॑मृत॒त्त्वेन॑ गम्म्यात्। अ॒मृ॒त॒त्त्वेनेत्त्य॑मृत॒ त्वेन॑। ग॒म्म्या॒दिति॑ गम्म्यात्॥ स॒सू॒वाꣳसो॑ निमृजा॒ना निमृ॑जा॒नाः॒ स॑सू॒वाꣳस॑÷ ससू॒वाꣳसो॑ निमृजा॒नाः॒। स॒सू॒वाꣳस॒ऽ इति॑ सस॒ ब्वाꣳस॑÷[1]। नि॒मृ॒जा॒नाऽ इति॑ नि मृजा॒नाः॒॥१८॥

---

[1]. वांसौ च भूतकाले स्वरेण ह्रस्वादनुषि (वा. प्रा. ५.११) इस सूत्र के अनुसार यहाँ पृथक्करण होता है।

आ॒पये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒पये॑ऽ आ॒पये॒ स्वाहा॑ स्वा॒पये॑ स्वा॒पये॒ स्वाहा॒पये॑ऽ आ॒पये॒ स्वाहा॑ स्वा॒पये॑। स्वाहा॑ स्वा॒पये॑ स्वा॒पये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ स्वा॒पये॑ऽपि॒जाया॑पि॒-जाय॑ स्वा॒पये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ स्वा॒पये॑ऽपि॒जाय॑। स्वा॒पये॑ऽपि॒जाया॑पि॒जाय॑ स्वा॒पये॑ स्वा॒पये॑ऽपि॒जाय॒ क्क्रत॑वे॒ क्क्रत॑वेऽपि॒जाय॑ स्वा॒पये॑ स्वा॒पये॑ऽपि॒जाय॒ क्क्रत॑वे। स्वा॒पय॒ऽ इति॑ सु आ॒पये॑। अ॒पि॒जाय॒ क्क्रत॑वे॒ क्क्रत॑वेऽपि॒जाया॑पि॒जाय॒ क्क्रत॑वे॒ व्वस॑वे॒ व्वस॑वे॒ क्क्रत॑वेऽपि॒-जाया॑पि॒जाय॒ क्क्रत॑वे॒ व्वस॑वे। अ॒पि॒जायेत्य॑पि॒ जाय॑। क्रत॑वे॒ व्वस॑वे॒ व्वस॑वे॒ क्क्रत॑वे॒ क्क्रत॑वे॒ व्वस॑वेऽह॒र्प्पत॑येऽह॒ꣳपत॑ये॒ व्वस॑वे॒ क्क्रत॑वे॒ क्क्रत॑वे॒ व्वस॑वेऽह॒र्प्पत॑ये[1]। व्वस॑वेऽह॒र्प्पत॑ये-ऽह॒ꣳपत॑ये॒ व्वस॑वे॒ व्वस॑वेऽह॒र्प्पत॒येऽह्नेऽह्ने॑ऽह॒ꣳपत॑ये॒ व्वस॑वे॒ व्वस॑वेऽह॒र्प्पत॒येऽह्ने॑। अ॒ह॒र्प्पत॒येऽह्ने-ऽह्ने॑ऽह॒ꣳपत॑येऽह॒र्प्पत॒येऽह्ने॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाया॒ह्ने॑ऽह॒ꣳपत॑येऽह॒र्प्पत॒येऽह्ने॑ मु॒ग्ग्धाय॑। अ॒ह॒ꣳपत॑-य॒ऽ इत्य॑ह॒ꣳ पत॑ये। अह्ने॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाया॒ह्नेऽह्ने॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाया॒ह्नेऽह्ने॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑। मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ व्वैनꣳ-शि॒नाय॑। मु॒ग्ग्धाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ मु॒ग्ग्धाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्विन॒ꣳशि-ने॑। व्वै॒न॒ꣳशि॒नाय॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्विन॒ꣳशि-ने॑ऽ आन्त्याय॒नाया॑न्त्याय॒नाय॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्वैनꣳशि॒नाय॑ व्विन॒ꣳ-शिने॑ऽ आन्त्याय॒नाय॑। व्वि॒न॒ꣳशिने॑ऽ आन्त्याय॒नाया॑न्त्याय॒नाय॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्विन॒ꣳशिने॑ऽ आन्त्याय॒नायान्त्या॒यान्त्या॑यान्त्याय॒नाय॑ व्विन॒ꣳशिने॑ व्विन॒ꣳशिने॑ऽ आन्त्याय॒नायान्त्या॑य। व्वि॒न॒ꣳशिन॒ऽ इति॑ वि न॒ꣳशिने॑। आ॒न्त्या॒य॒नायान्त्या॒-यान्त्या॑यान्त्याय॒नाया॑न्त्याय॒नायान्त्या॑य भौव॒नाय॑ भौव॒नायान्त्या॑यान्त्याय॒ना-यान्त्याय॒नायान्त्या॑य भौव॒नाय॑। आ॒न्त्या॒य॒नायेत्या॑न्त्य आय॒नाय॑। अन्त्या॑य

---

[1]. अह: पतौ रेफम् (वा. प्रा. ३.३९) पति परे रहने पर अह: का विसर्जनीय रेफ होता है।

भौव॒नाय॑ भौव॒नायान्त्या॒यान्त्या॑य भौव॒नाय॒ भुव॑नस्य॒ भुव॑नस्य भौव॒नायान्त्या॒-यान्त्या॑य भौव॒नाय॒ भुव॑नस्य। भौ॒व॒नाय॒ भुव॑नस्य॒ भुव॑नस्य भौव॒नाय॑ भौव॒नाय॒ भुव॑नस्य॒ पत॑ये॒ पत॑ये॒ भुव॑नस्य भौव॒नाय॑ भौव॒नाय॒ भुव॑नस्य॒ पत॑ये। भुव॑नस्य॒ पत॑ये॒ पत॑ये॒ भुव॑नस्य॒ भुव॑नस्य॒ पत॒येधि॑पत॒येधि॑पतये॒ पत॑ये॒ भुव॑नस्य॒ भुव॑नस्य॒ पत॒येधि॑पतये। पत॒येधि॑पत॒येधि॑पतये॒ पत॑ये॒ पत॒येधि॑पतये। अधि॑पतय॒ऽ इत्यधि॑पतये॥१९॥

आयु॑र्य्य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेनायु॒रायु॑र्य्य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताङ्कल्प्पताँ॒य्य॒ज्ज्ञेनायु॒रायु॑-र्य्य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताम्[1]। य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताङ्कल्प्पताँ॒य्य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पता-म्प्रा॒णः प्प्रा॒णः कल्प्पताँ॒य्य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताम्प्रा॒णः। क॒ल्प्प॒ता॒म्प्रा॒णः प्प्रा॒णः कल्प्पताङ्कल्प्पताम्प्रा॒णश्च॒क्षु॒श्च॒क्षुः प्प्रा॒णः कल्प्पताङ्कल्प्पताम्प्रा॒ण-श्च॒क्षुः[2]। प्रा॒णश्च॒क्षु॒श्च॒क्षुः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णश्च॒क्षुः श्श्रोत्र॒ꣳ श्श्रोत्र॒ञ्च॒क्षुः प्प्रा॒णः प्प्रा॒णश्च॒क्षुः श्श्रोत्र॑म्[3]। चक्षु॒ः श्श्रोत्र॒ꣳ श्श्रोत्र॒ञ्च॒क्षु॒श्च॒क्षुः श्श्रोत्र॑म्पृ॒ष्ठम्पृ॒ष्ठꣳ श्श्रोत्र॒ञ्च॒क्षु॒श्च॒क्षुः श्श्रोत्र॑म्पृ॒ष्ठम्। श्श्रोत्र॑म्पृ॒ष्ठम्पृ॒ष्ठꣳ श्श्रोत्र॒ꣳ श्श्रोत्र॑म्पृ॒ष्ठँ॒य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञः पृ॒ष्ठꣳ श्श्रोत्र॒ꣳ श्श्रोत्र॑म्पृ॒ष्ठँ॒य्य॒ज्ज्ञः। पृ॒ष्ठँ॒य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञः पृ॒ष्ठम्पृ॒ष्ठँ॒य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञः पृ॒ष्ठम्पृ॒ष्ठँ॒य्य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञेन॑। य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताङ्कल्प्पताँ॒य्य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञो य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताम्। य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताङ्कल्प्पताँ॒य्य॒ज्ज्ञेन॑ य॒ज्ज्ञेन॑ कल्प्पताम्। क॒ल्प्प॒ता॒मिति॑ कल्प्पताम्॥ प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाः प्प्र॒जाः प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाऽ अ॑भूमा-भूम प्प्र॒जाः प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाप॑तेः प्प्र॒जाऽ अ॑भूम। प्र॒जाप॑ते॒रिति॑ प्प्र॒जा प॑तेः।

---

[1]. कल्प्पताम् यहाँ वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार पकार का द्वित्व होता है।

[2]. असमाने (वा. प्रा. ४.१७४) भिन्न पदार्थ से संबद्ध पुनरुक्त पद में संक्रम होता है।

[3]. प्राग्निभ्यामनिन्धौ प्रक्षेपे(वा.प्रा.५.३३) इस सूत्र के अनुसार प्राणः इस पद का पृथक्करण विहित नहीं है।

प्रजाऽ अंभूमाभूम प्प्रजाः प्प्रजाऽ अंभूम स्वः स्वंरभूम प्प्रजाः प्प्रजाऽ अंभूम स्वः। प्रजाऽ इतिं प्प्र जाः। अभूम स्वः स्वंरभूमाभूम स्वंर्द्देवा देवाः स्वरभूमा-भूम स्वंर्द्देवाः। स्वंर्द्देवा देवाः स्वः स्वंर्द्देवाऽ अगन्म्मागन्म देवाः स्वः स्वंर्द्देवाऽ अगन्म। देवाऽ अगन्म्मागन्म देवा देवाऽ अगन्म्मामृताऽ अमृताऽ अगन्म देवा देवाऽ अगन्म्मामृताः। अगन्म्मामृताऽ अमृताऽ अगन्म्मागन्म्मामृताऽ अभूमाभूमा-मृताऽ अगन्म्मागन्म्मामृताऽ अभूम। अमृताऽ अभूमाभूमामृताऽ अमृताऽ अभूम। अभूमेत्यंभूम॥२०॥

अस्म्मे वों वोस्म्मेऽ अस्म्मे वोंऽ अस्त्वस्तु वोस्म्मेऽ अस्म्मे वोंऽ अस्तु[1]। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। व्वोऽ अस्त्वस्तु वो वोऽ अस्त्विन्द्रियमिंन्द्रियमंस्तु वो वोऽ अस्त्विन्द्रियम्। अस्त्विन्द्रियमिंन्द्रियमंस्त्वस्त्विन्द्रियमस्म्मेऽ अस्म्मेऽ इंन्द्रिय-मंस्त्वस्त्विन्द्रियमस्म्मे। इन्द्रियमस्म्मेऽ अस्म्मेऽ इंन्द्रियमिंन्द्रियमस्म्मे नृ-म्म्णन्नृम्म्णमस्म्मेऽ इंन्द्रियमिंन्द्रियमस्म्मे नृम्म्णम्। अस्म्मे नृम्म्णन्नृम्म्णम-स्म्मेऽ अस्म्मे नृम्म्णमुतोत नृम्म्णमस्म्मेऽ अस्म्मे नृम्म्णमुत। अस्म्मेऽ इत्य-स्म्मे। नृम्म्णमुतोत नृम्म्णन्नृम्म्णमुत क्क्रतुः क्क्रतुंरुत नृम्म्णन्नृम्म्णमुत क्क्रतुंः। उत क्क्रतुः क्क्रतुंरुतोत क्क्रतुंरस्म्मेऽ अस्म्मे क्क्रतुंरुतोत क्क्रतुंरस्म्मे। क्क्रतुंरस्म्मेऽ अस्म्मे क्क्रतुः क्क्रतुंरस्म्मे व्वर्चौंᳪसि व्वर्चौंᳪस्यस्म्मे क्क्रतुः क्क्रतुंरस्म्मे व्वर्चौंᳪसि। अस्म्मे व्वर्चौंᳪसि व्वर्चौंᳪस्यस्म्मेऽ अस्म्मे व्वर्चौंᳪसि सन्तु सन्तु व्वर्चौंᳪस्यस्म्मेऽ अस्म्मे व्वर्चौंᳪसि सन्तु। अस्म्मेऽ इत्यस्म्मे। व्वर्चौंᳪसि सन्तु सन्तु व्वर्चौंᳪसि व्वर्चौंᳪसि सन्तु वो वः सन्तु व्वर्चौंᳪसि व्वर्चौंᳪसि सन्तु वः। सन्तु वो वः सन्तु सन्तु वः। व्वऽ इतिं वः॥ नमों मात्त्रे मात्त्रे नमो नमों मात्त्रे पृथिव्व्यै पृथिव्व्यै मात्त्रे

[1]. वा.प्रा.४.८८. के अनुसार स्वर बाद में होने पर प्रगृह्य पद प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.१.९६. के अनुसार अस्मे पद प्रगृह्यसंज्ञक है।

नमो नमों मात्रे पृथिव्यै। मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्यै नमो नमः पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमो नमः पृथिव्यै पृथिव्यै नमो मात्रे मात्रे नमः पृथिव्यै पृथिव्यै नमो मात्रे। नमो मात्रे मात्रे नमो नमो मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे नमो नमो मात्रे पृथिव्यै। मात्रे पृथिव्यै पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्याऽ इयमियम्पृथिव्यै मात्रे मात्रे पृथिव्याऽ इयम्। पृथिव्याऽ इयमियम्पृथिव्यै पृथिव्याऽ इयन्तें तऽ इयम्पृथिव्यै पृथिव्याऽ इयन्तें। इयन्तें तऽ इयमियन्ते राड्राट्ट् तेऽ इयमियन्ते राट्। ते राड्राट्ट् तें ते राड्डयन्ता यन्ता राट्ट् तें ते राड्डयन्ता। राड्डयन्ता यन्ता राड्राड्डयन्तास्यसि यन्ता राड्राड्डयन्तासि। यन्तास्यसि यन्ता यन्तासि यमनो यमनोसि यन्ता यन्तासि यमनः। असि यमनो यमनोस्यसि यमनो ध्रुवो ध्रुवो यमनोस्यसि यमनो ध्रुवः। यमनो ध्रुवो ध्रुवो यमनो यमनो ध्रुवो धरुणो धरुणो ध्रुवो यमनो यमनो ध्रुवो धरुणः। ध्रुवो धरुणो धरुणो ध्रुवो ध्रुवो धरुणः। धरुणऽ इति धरुणः॥ कृष्यै त्वा त्वा कृष्यै कृष्यै त्वा क्षेमाय क्षेमाय त्वा कृष्यै कृष्यै त्वा क्षेमाय। त्वा क्षेमाय क्षेमाय त्वा त्वा क्षेमाय रय्यै रय्यै क्षेमाय त्वा त्वा क्षेमाय रय्यै[1]। क्षेमाय रय्यै रय्यै क्षेमाय क्षेमाय रय्यै पोषाय पोषाय रय्यै क्षेमाय क्षेमाय रय्यै पोषाय। रय्यै पोषाय पोषाय रय्यै रय्यै पोषाय। पोषायेति पोषाय॥२१॥

वाजस्येममिमँवाजस्य वाजस्येमम्प्रसवः प्प्रसवऽ इमँवाजस्य वाजस्येमम्प्रसवः। इमम्प्रसवः प्प्रसवऽ इममिमम्प्रसवः सुषुवे सुसुवे प्प्रसवऽ इममिमम्प्रसवः सुषुवे। प्रसवः सुषुवे सुसुवे प्प्रसवः प्प्रसवः सुषुवेग्ग्रेग्ग्रे सुसुवे प्प्रसवः प्प्रसवः सुषुवेग्ग्रे। प्रसवऽ इति प्प्र सवः। सुषुवेग्ग्रेग्ग्रे सुसुवे सुषुवेग्ग्रे सोमः

[1]. वा. प्रा. ४.१५३. के अनुसार रय्यै पद दो यकार वाला है।

सोमुमग्ग्रें सुसुवे सुषुवेग्ग्रे सोर्मम्[2]। सुसुवुऽ इतिं सुसुवे। अग्ग्रे सोमुꣳ सोमुम-ग्ग्रेग्ग्रे सोमुꣳ राजानुꣳ राजानुꣳ सोमुमग्ग्रेग्ग्रे सोमुꣳ राजानम्। सोमुꣳ राजा-नुꣳ राजानुꣳ सोमुꣳ सोमुꣳ राजानुमोषधीष्ष्वोषधीषु राजानुꣳ सोमुꣳ सोमुꣳ राजानुमोषधीषु। राजानुमोषधीष्ष्वोषधीषु राजानुꣳ राजानुमोषधीष्ष्वुप्प्स्वु-प्प्स्वोषधीषु राजानुꣳ राजानुमोषधीष्ष्वुप्प्सु । ओषधीष्ष्वुस्वुप्प्स्वोषधीष्ष्वोष-धीष्ष्वुप्प्सु। अुप्प्स्वित्त्युप् सु॥ ताऽ अुस्म्मब्भ्यंमुस्म्मब्भ्युन्तास्ताऽ अुस्म्म-ब्भ्युम्मधुंमतीर्म्मधुंमतीरुस्म्मब्भ्युन्तास्ताऽ अुस्म्मब्भ्युम्मधुंमतीः। अुस्म्म-ब्भ्युम्मधुंमतीर्म्मधुंमतीरुस्म्मब्भ्यंमुस्म्मब्भ्युम्मधुंमतीर्ब्भवन्तु भवन्तु मधुंमती-रुस्म्मब्भ्यंमुस्म्मब्भ्युम्मधुंमतीर्ब्भवन्तु। मधुंमतीर्ब्भवन्तु भवन्तु मधुंमतीर्म्मधुं-मतीर्ब्भवन्तु व्वयँव्वयम्भंवन्तु मधुंमतीर्म्मधुंमतीर्ब्भवन्तु व्वयम्। मधुंमतीरिति मधुं मतीः। भवन्तु व्वयँव्वयम्भंवन्तु भवन्तु व्वयꣳ राष्ट्रे राष्ट्रे व्वयम्भंवन्तु भवन्तु व्वयꣳ राष्ट्रे। व्वयꣳ राष्ट्रे राष्ट्रे व्वयँव्वयꣳ राष्ट्रे जागृयाम जागृयाम राष्ट्रे व्वयँव्वयꣳ राष्ट्रे जागृयाम। राष्ट्रे जागृयाम जागृयाम राष्ट्रे राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिंताः पुरोहिंता जागृयाम राष्ट्रे राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिंताः। जागृयाम् पुरोहिंताः पुरोहिंता जागृयाम जागृयाम पुरोहिंताः स्वाहा स्वाहा पुरोहिंता जागृयाम जागृयाम पुरोहिंताः स्वाहा। पुरोहिंताः स्वाहा स्वाहा पुरोहिंताः पुरोहिंताः स्वाहा। पुरोहिंताऽ इतिं पुरः हिंताः। स्वाहेति स्वाहा॥२२॥

व्वाजंस्येमामिमाँव्वाजंस्य व्वाजंस्येमाम्प्रंसवः प्प्रंसवऽ इमाँव्वाजंस्य व्वाजं-स्येमाम्प्रंसवः। इमाम्प्रंसवः प्प्रंसवऽ इमामिमाम्प्रंसवः शिंश्रिये शिश्रिये प्प्रसु-वऽ इमामिमाम्प्रंसवः शिंश्रिये। प्रसवः शिंश्रिये शिश्रिये प्प्रसवः प्प्रंसवः शिंश्रिये दिवुन्दिवंꣳ शिश्रिये प्प्रसवः प्प्रंसवः शिंश्रिये दिवंम्। प्रसवऽ इतिं प्प्र

[2]. सुषुवे अग्रे यहां वा. प्रा. ४.६५. के अनुसार अकार का अभिनिधान होता है।

सुवः। शिश्रिये दिवन्दिवंꣳ शिश्रिये शिश्रिये दिवंमिमेमा दिवंꣳ शिश्रिये शिश्रिये दिवंमिमा[1]। दिवंमिमेमा दिवन्दिवंमिमा चं चेमा दिवन्दिवंमिमा चं। इमा चं चेमेमा च विश्श्वा विश्श्वां चेमेमा च विश्श्वां।[2] च विश्श्वा विश्श्वां च च विश्श्वा भुवंनानि भुवंनानि विश्श्वां च च विश्श्वा भुवंनानि। विश्श्वा भुवंनानि भुवंनानि विश्श्वा विश्श्वा भुवंनानि सुम्म्राट्ट् सुम्म्राड्ड् भुवंनानि विश्श्वा विश्श्वा भुवंनानि सुम्म्राट् । भुवंनानि सुम्म्राट्ट् सुम्म्राड्ड् भुवंनानि भुवंनानि सुम्म्राट्। सुम्म्राडितिं सुम् राट्॥ अदिंत्त्सन्तन्दापयति दापयुत्त्यदिंत्त्सन्तुमदिंत्त्सन्तन्दापयति प्प्रजानन्न्प्रं-जानन्दांपयुत्त्यदिंत्त्सन्तुमदिंत्त्सन्तन्दापयति प्प्रजानन्। दापयति प्प्रजानन्न्प्रंजा-नन्दांपयति दापयति प्प्रजानन्त्स स प्प्रंजानन्दांपयति दापयति प्प्रजानन्त्सः। प्रजानन्त्स स प्प्रंजानन्न्प्रंजानन्त्स नों नः स प्प्रंजानन्न्प्रंजानन्त्स नंः। प्रजानन्निति प्प्र जानन्। स नों नः स स नों रुयिꣳ रुयिन्न्नः स स नों रुयिम्। नो रुयिꣳ रुयिन्न्नों नो रुयिꣳ सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरꣳ रुयिन्न्नों नो रुयिꣳ सर्व्ववीरम्। रुयिꣳ सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरꣳ रुयिꣳ रुयिꣳ सर्व्ववीरन्नि नि सर्व्ववीरꣳ रुयिꣳ रुयिꣳ सर्व्ववीरन्नि । सर्व्ववीरन्नि नि सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरन्नि यंच्छतु यच्छतु नि सर्व्ववीरꣳ सर्व्ववीरन्नि यंच्छतु। सर्व्ववीरमिति सर्व्व व्वीरम्। नि यंच्छतु यच्छतु नि नि यंच्छतु स्वाहा स्वाहां यच्छतु नि नि यंच्छतु स्वाहां। यच्छतु स्वाहा स्वाहां यच्छतु यच्छतु स्वाहां। स्वाहेति स्वाहां॥२३॥

व्वाजंस्य नु नु व्वाजंस्य व्वाजंस्य नु प्प्रंसुवः प्प्रंसुवो नु व्वाजंस्य व्वाजंस्य नु प्प्रंसुवः। नु प्प्रंसुवः प्प्रंसुवो नु नु प्प्रंसुवऽ आ बंभूव बभूवा प्प्रंसुवो नु नु प्प्रंसुवऽ आ बंभूव। प्रसुवऽ आ बंभूव बभूवा प्प्रंसुवः प्प्रंसुवऽ आ बंभूवेमेमा बंभूवा प्प्रंसु-

[1]. वा.प्रा.४.२९. के अनुसार यहाँ इमा पद स्वरान्त है।

[2]. वा.प्रा.४.२७. में उल्लिखित न होने से यहाँ विश्वा पद स्वरान्त है।

व॒ꣳ प्प्र॑स॒वऽ आ ब॑भूवे॒मा। प्र॒स॒वऽ इति॑ प्प्र स॒वꣳ। आ ब॑भूव। ब॒भू॒वे॒मेमा ब॑भूव
बभूवे॒मा च॑ चे॒मा ब॑भूव बभूवे॒मा च॑। इ॒मा च॑ चे॒मेमा च॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॑ चे॒मेमा च॒
व्विश्श्वा॑[1]। च॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॑ च च॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्विश्श्वा॑ च च॒ व्विश्श्वा॒
भुव॑नानि। व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि॒ भुव॑नानि॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ꣳ स॒र्व्वतो॒ भुव॑-
नानि॒ व्विश्श्वा॒ व्विश्श्वा॒ भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ꣳ। भुव॑नानि स॒र्व्वत॑ꣳ स॒र्व्वतो॒ भुव॑नानि॒ भुव॑ना-
नि स॒र्व्वत॑ꣳ। स॒र्व्वत॒ऽ इति॑ स॒र्व्वत॑ꣳ॥ सनै॑मि॒ राजा॒ राजा॒ सनै॑मि॒ सनै॑मि॒ राजा॒ परि॒
परि॒ राजा॒ सनै॑मि॒ सनै॑मि॒ राजा॒ परि॑। राजा॒ परि॒ परि॒ राजा॒ राजा॒ परि॑ याति याति॒
परि॒ राजा॒ राजा॒ परि॑ याति। परि॑ याति याति॒ परि॒ परि॑ याति व्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्या॑ति॒
परि॒ परि॑ याति व्वि॒द्वान्। या॒ति॒ व्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्न्या॑ति याति व्वि॒द्वान्प्र॒जाम्प्र॒जाँ-
व्वि॒द्वान्न्या॑ति याति व्वि॒द्वान्प्र॒जाम्। व्वि॒द्वान्प्र॒जाम्प्र॒जाँव्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्प्र॒जाम्पुष्टि॒-
म्पुष्टि॑म्प्र॒जाँव्वि॒द्वान्व्वि॒द्वान्प्र॒जाम्पुष्टि॑म्। प्र॒जाम्पुष्टि॒म्पुष्टि॑म्प्र॒जाम्प्र॒जाम्पुष्टिँ॑व्व॒र्द्धय॑-
मानो व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ पुष्टि॑म्प्र॒जाम्प्र॒जाम्पुष्टिँ॑व्व॒र्द्धय॑मानꣳ। प्र॒जामिति॑ प्प्र॒ जाम्।
पुष्टिँ॑व्व॒र्द्धय॑मानो व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ पुष्टि॒म्पुष्टिँ॑व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मान॒ꣳ
पुष्टि॒म्पुष्टिँ॑व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे[2]। व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मानो
व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॒ स्वाहा॒स्म्मे व्व॒र्द्धय॑मानो व्व॒र्द्धय॑मानोऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॑।
अ॒स्म्मे स्वाहा॒ स्वाहा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे स्वाहा॑। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। स्वाहेति॒
स्वाहा॑॥२४॥

सोम॒ꣳ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒ꣳ सोम॒ꣳ सोम॒ꣳ राजा॑न॒मव॒सेव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ
सोम॒ꣳ सोम॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से। राजा॑न॒मव॒सेव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से॒ग्ग्निम॒ग्ग्नि-
मव॑से॒ राजा॑न॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से॒ग्ग्निम्। अव॑से॒ग्ग्निम॒ग्ग्निमव॒सेव॑से॒ग्ग्निम॒न्न्वार॑भामहे॒-

[1]. वा. प्रा. ४.२९. के अनुसार यहाँ इमा पद स्वरान्त है।

[2]. चमू अस्मे त्वे (वा. प्रा. १.९६) सूत्रोक्त पद प्रगृह्य होते हैं। प्रगृह्य पद स्वर परे रहते प्रकृतिभाव से रहते हैं।

न्वारंभामहेग्ग्निमवसेवंसेग्ग्निमन्वारंभामहे[3]। अग्निमन्वारंभामहेन्वारंभामहेग्ग्निमग्निमन्वारंभामहे। अन्वारंभामहऽ इत्यनु आरंभामहे॥ आदित्यान्विष्णुँविष्णुंमादित्यानादित्यान्विष्णुꣳ सूर्य्यꣳ सूर्य्यंविष्णुमादित्यानादित्यान्विष्णुꣳ सूर्य्यम्। विष्णुꣳ सूर्य्यꣳ सूर्य्यंविष्णुँविष्णुꣳ सूर्य्यम्ब्रह्माणम्ब्रह्माणꣳ सूर्य्यंविष्णुँविष्णुꣳ सूर्य्यम्ब्रह्माणम्। सूर्य्यम्ब्रह्माणम्ब्रह्माणꣳ सूर्य्यꣳ सूर्य्यम्ब्रह्माणञ्च च ब्रह्माणꣳ सूर्य्यꣳ सूर्य्यम्ब्रह्माणञ्च। ब्रह्माणञ्च च ब्रह्माणम्ब्रह्माणञ्च बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिञ्च ब्रह्माणम्ब्रह्माणञ्च बृहस्प्पतिम्। च बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिञ्च च बृहस्प्पतिꣳ स्वाहा स्वाहा बृहस्प्पतिञ्च च बृहस्प्पतिꣳ स्वाहा। बृहस्प्पतिꣳ स्वाहा स्वाहा बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिꣳ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२५॥

अर्य्यमणम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिमर्य्यमणमर्य्यमणम्बृहस्प्पतिमिन्द्रमिन्द्रम्बृहस्प्पतिमर्य्यमणमर्य्यमणम्बृहस्प्पतिमिन्द्रम्। बृहस्प्पतिमिन्द्रमिन्द्रम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिमिन्द्रन्दानाय दानायेन्द्रम्बृहस्प्पतिम्बृहस्प्पतिमिन्द्रन्दानाय। इन्द्रन्दानाय दानायेन्द्रमिन्द्रन्दानाय चोदय चोदय दानायेन्द्रमिन्द्रन्दानाय चोदय। दानाय चोदय चोदय दानाय दानाय चोदय। चोदयेति चोदय॥ वाचँविष्णुँविष्णुँवाचँवाचँविष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सरस्वतींविष्णुँवाचँवाचँविष्णुꣳ सरस्वतीम्। विष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सरस्वतींविष्णुँविष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सवितारꣳ सवितारꣳ सरस्वतींविष्णुँविष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सवितारम्। सरस्वतीꣳ सवितारꣳ सवितारꣳ सरस्वतीꣳ सरस्वतीꣳ सवितारञ्च च सवितारꣳ सरस्वतीꣳ सरस्वतीꣳ सवितारञ्च। सवितारञ्च च सवितारꣳ सवितारञ्च वाजिनँवाजिनञ्च सवितारꣳ सवितारञ्च वाजिनम्। च वाजिनँवाजिनञ्च च वाजिनꣳ स्वाहा

[3]. अवसे अग्निम् यहाँ वा.प्रा.४.६५. के अनुसार अवसे से परवर्ती अकार का अभिनिधान होता है।

स्वाहा ब्वाजिनंञ्च च ब्वाजिनऀ स्वाहा। ब्वाजिनऀ स्वाहा स्वाहा ब्वाजिनँब्वाजिनऀ स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२६॥

अग्ग्ने॒ऽ अच्छाच्छाग्ग्नेग्ग्ने॒ऽ अच्छा ब्वद ब्वदाच्छाग्ग्नेग्ग्नेऽ अच्छा ब्वद[1]। अच्छा ब्वद ब्वदाच्छाच्छा ब्वदेहेह ब्वदाच्छाच्छा ब्वदेह। ब्वदेहेह ब्वंद ब्वदेह नो नऽ इह ब्वंद ब्वदेह नः। इह नो नऽ इहेह नः प्प्रति प्प्रति नऽ इहेह नः प्प्रति। नः प्प्रति प्प्रति नो नः प्प्रति नो नः प्प्रति नो नः प्प्रति नः। प्रति नो नः प्प्रति प्प्रति नः सुमनाः सुमना नः प्प्रति प्प्रति नः सुमनाः। नः सुमनाः सुमना नो नः सुमना भव भव सुमना नो नः सुमना भव। सुमना भव भव सुमनाः सुमना भव। सुमनाऽ इति सु मनाः। भवेति भव॥ प्र नो नः प्प्र प्प्र नो यच्छ यच्छ नः प्प्र प्प्र नो यच्छ। नो यच्छ यच्छ नो नो यच्छ सहस्रजित्सहस्रजिद्यच्छ नो नो यच्छ सहस्रजित्। यच्छ सहस्रजित्सहस्रजिद्यच्छ यच्छ सहस्रजित्त्वन्त्वꣳ सहस्रजिद्यच्छ यच्छ सहस्रजित्त्वम्। सहस्रजित्त्वन्त्वꣳ सहस्रजित्सहस्रजित्त्वꣳ हि हि त्वꣳ सहस्रजित्सहस्रजित्त्वꣳ हि। सहस्रजिदिति सहस्र जित्। त्वꣳ हि हि त्वन्त्वꣳ हि धनदा धनदा हि त्वन्त्वꣳ हि धनदाः। हि धनदा धनदा हि हि धनदाऽ अस्यसि धनदा हि हि धनदाऽ असि[2]। धनदाऽ अस्यसि धनदा धनदाऽ असि स्वाहा स्वाहासि धनदा धनदाऽ असि स्वाहा। धनदाऽ इति धन दाः। असि स्वाहा स्वाहास्यसि स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२७॥

प्र नो नः प्प्र प्प्र नो यच्छतु यच्छतु नः प्प्र प्प्र नो यच्छतु। नो यच्छतु यच्छतु नो नो यच्छत्त्वर्य्यमार्य्यमा यच्छतु नो नो यच्छत्त्वर्य्यमा[3]। यच्छत्त्व-

---

[1]. एवाच्छचकृमाथ (वा. प्रा. ३.१२४) एव, अच्छ, चकृम एवं अथ का अन्तिम स्वर व्यञ्जन बाद में रहने पर दीर्घ हो जाता है।

[2]. वा. प्रा. २.४१. के अनुसार यहाँ असि पद आद्युदात्त होता है।

[3]. यच्छतु अर्य्यमा यहाँ स्वरे भाव्यन्तस्थाम्(वा.प्रा.४.४७) इस सूत्र से उकार अन्तस्थ होता है। विकारी यथासन्नम्(वा.प्रा.१.१४२) इस सूत्र से विकार को प्राप्त होने वाला वर्ण समीपता के अनुसार विकार को प्राप्त होता है। तस्मिन्निति

र्य्यमार्य्यमा यच्छतु यच्छत्त्वर्य्यमा पूषा पूषार्य्यमा यच्छतु यच्छत्त्वर्य्यमा पूषा। अर्य्यमा पूषा पूषार्य्यमार्य्यमा पूषा बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिः पूषार्य्यमार्य्यमा पूषा बृहस्प्पतिः। पूषा बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिः पूषा पूषा बृहस्प्पतिः। बृहस्प्पतिरिति बृहस्प्पतिः॥ व्वाग्ग्देवी देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी ददातु ददातु देवी व्वाग्ग्वाग्ग्देवी ददातु। देवी ददातु ददातु देवी देवी ददातु नो नो ददातु देवी देवी ददातु नः। ददातु नो नो ददातु ददातु नः स्वाहा स्वाहा नो ददातु ददातु नः स्वाहा। नः स्वाहा स्वाहा नो नः स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥२८॥

सरस्वत्यै व्वाचो व्वाचः सरस्वत्यै सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्य्यन्तुर्व्वाचः सर-स्वत्यै सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुः। व्वाचो यन्तुर्य्यन्तुर्व्वाचो व्वाचो यन्तुर्य्यन्त्रियै यन्त्रियै यन्तुर्व्वाचो व्वाचो यन्तुर्य्यन्त्रियै। यन्तुर्य्यन्त्रियै यन्त्रियै यन्तुर्य्यन्तुर्य्यन्त्रियै दधामि दधामि यन्त्रियै यन्तुर्य्यन्तुर्य्यन्त्रियै दधामि। यन्त्रियै दधामि दधामि यन्त्रियै यन्त्रियै दधामि बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेर्द्दधामि यन्त्रियै यन्त्रियै दधामि बृहस्प्पतेः। दधामि बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेर्द्दधामि दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा त्वा बृहस्प्पतेर्द्दधामि दधामि बृह-स्प्पतेष्ट्वा[1]। बृहस्प्पतेष्ट्वा त्वा बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येन त्वा बृहस्प्पतेर्बृहस्प्पतेष्ट्वा साम्म्राज्ज्येन[2]। त्वा साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येन त्वा त्वा साम्म्राज्ज्येनाब्भ्युभि साम्म्राज्ज्येन त्वा त्वा साम्म्राज्ज्येनाभि। साम्म्रा-ज्ज्येनाब्भ्युभि साम्म्राज्ज्येन साम्म्राज्ज्येनाभि षिञ्चामि सिञ्चाम्म्यभि साम्म्रा-ज्ज्येन साम्म्राज्ज्येनाभि षिञ्चामि[3]। साम्म्राज्ज्येनेति साम् राज्ज्येन। अभि

निर्दिष्टे पूर्वस्य(वा.प्रा.१.१३४) इस सूत्र से सप्तमी के द्वारा निर्दिष्ट होने पर अव्यवहित पूर्ववर्ती के कार्य का विधान होता है।

1. सकारपरे च (वा. प्रा. ३.७७) के अनुसार यहाँ सकार परे रहने वाले एकाक्षर पद बाद में रहने के कारण विसर्जनीय षकार हो जाता है।

2. वा.प्रा.४.६. के अनुसार साम्राज्येन पद में मकार(अनुस्वार न होकर) प्रकृतिभाव से रहता है।

3. अभेश्च (वा. प्रा. ३.६३) के अनुसार अभि से परे सकार षकार हो जाता है।

षिञ्चामि सिञ्चाम्म्यभ्भ्युभि षिञ्चाम्म्यसावसौ सिञ्चाम्म्यभ्भ्युभि षिञ्चाम्म्यसौ। सिञ्चाम्म्यसावसौ सिञ्चामि सिञ्चाम्म्यसौ। असावित्त्यसौ॥२९॥

अग्निरेकाक्षरेणैकाक्षरेणाग्निरग्निरेकाक्षरेण प्प्राणम्प्राणमेकाक्षरेणाग्निरग्निरेकाक्षरेण प्प्राणम्। एकाक्षरेण प्प्राणम्प्राणमेकाक्षरेणैकाक्षरेण प्प्राणमुदुत्प्राणमेकाक्षरेणैकाक्षरेण प्प्राणमुत्। एकाक्षरेणेत्त्येकं अक्षरेण। प्राणमुदुत्प्राणम्प्राणमुदंजयदजयदुत्प्राणम्प्राणमुदंजयत्। उदंजयदजयदुदुदंजयत्तन्तमंजयदुदुदंजयत्तम्। अजयत्तन्तमंजयदजयत्तमुदुत्तमंजयदजयत्तमुत्। तमुदुत्तन्तमुज्जेंषज्जेषमुत्तन्तमुज्जेंषम्। उज्जेंषज्जेषमुदुज्जेंषमश्श्विनावश्श्विनौं जेषमुदुज्जेंषमश्श्विनौं। जेषमश्श्विनावश्श्विनौं जेषज्जेषमश्श्विनौ द्व्यक्षरेण द्व्यक्षरेणाश्श्विनौं जेषज्जेषमश्श्विनौ द्व्यक्षरेण। अश्श्विनौ द्व्यक्षरेण द्व्यक्षरेणाश्श्विनावश्श्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदौं द्विपदो द्व्यक्षरेणाश्श्विनावश्श्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदंः। द्व्यंक्षरेण द्विपदौं द्विपदो द्व्यक्षरेण द्व्यक्षरेण द्विपदौं मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्द्विपदो द्व्यक्षरेण द्व्यक्षरेण द्विपदौं मनुष्ष्यान्। द्व्यंक्षरेणेति द्वि अंक्षरेण। द्विपदौं मनुष्ष्यान्मनुष्ष्यान्द्विपदौं द्विपदौं मनुष्ष्यानुदुन्मंनुष्ष्यान्द्विपदौं द्विपदौं मनुष्ष्यानुत्[1]। द्विपदऽ इतिं द्वि पदंः। मनुष्ष्यानुदुन्मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानुदंजयतामजयतामुन्मंनुष्ष्यान्मनुष्ष्यानुदंजयताम्। उदंजयतामजयतामुदुदंजयतान्ताँस्तानंजयतामुदुदंजयतान्तान्। अजयतान्ताँस्तानंजयतामजयतान्तान्विष्णुर्व्विष्णुस्तानंजयतामजयतान्तान्विष्णुंः। तान्विष्णुर्व्विष्णुस्ताँस्तान्विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्र्यक्षरेण व्विष्णुस्ताँस्तान्विष्णुस्त्र्यक्षरेण। व्विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्र्यक्षरेण व्विष्णुर्व्विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींस्त्रींस्त्र्यंक्षरेण

[1]. वा. प्रा. ३.१४७. के अनुसार यहाँ उत् परे होने से मनुष्यान् का नकार प्रकृतिभाव से रहता है। वा.प्रा.३.३. के अनुसार सन्धि पदान्त तथा पदादि में होती है अतः यहाँ भाष्यकार के कथनानुसार नकार से तात्पर्य पदान्त नकार से है।

विष्णु॒र्विष्णु॒स्त्र्य॒क्षरे॒ण॒ त्रीन्। त्र्य॑क्षरेण॒ त्रीँस्त्रीँस्त्र्य॑क्षरेण॒ त्र्य॒क्षरे॒ण॒ त्रीँल्लो॒काँल्लो॒काँस्त्रीँस्त्र्य॑क्षरेण॒ त्र्य॒क्षरे॒ण॒ त्रीँल्लो॒कान्। त्र्य॑क्षरे॒णेति॒ त्रि अ॑क्षरेण। त्रीँल्लो॒काँल्लो॒काँस्त्रीँस्त्रीँल्लो॒कान्त्सोम॒ः सोमो॑ लो॒काँस्त्रीँस्त्रीँल्लो॒का-न्त्सोम॑ः। लो॒कान्त्सोम॒ः सोमो॑ लो॒काँल्लो॒कान्त्सोम॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑रक्षरेण॒ सोमो॑ लो॒काँल्लो॒कान्त्सोम॒श्चतु॑रक्षरेण। सोम॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑रक्षरेण॒ सोम॒ः सोम॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पद॒श्चतु॑ःपद॒श्चतु॑रक्षरेण॒ सोम॒ः सोम॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पदः[1]। चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पद॒श्चतु॑ःपद॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पदः प॒शून्प॒शूँश्चतु॑ःपद॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पदः प॒शून्। चतु॑रक्षरे॒णेति॒ चतु॑ः अक्षरेण। चतु॑ष्पदः प॒शून्प॒शूँश्चतु॑ःपद॒श्चतु॑ष्पदः प॒शून्पू॒षा पू॒षा प॒शूँश्चतु॑ःपद॒श्चतु॑ष्पदः प॒शून्पू॒षा। चतु॑ःपद॒ऽ इति॒ चतु॑ः पदः। प॒शून्पू॒षा पू॒षा प॒शून्प॒शून्पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्चा॑क्षरेण पू॒षा प॒शून्प॒शून्पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॥३०॥

पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्चा॑क्षरेण पू॒षा पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॒ पञ्च॒ पञ्चा॑क्षरेण पू॒षा पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॑। पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॒ पञ्च॒ पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॒ पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॒ दिश॑ः। पञ्चा॑क्षरे॒णेति॒ पञ्च॑ अक्षरेण। पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॒स्तास्ता दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॒स्ताः। दिश॒स्तास्ता दिशो॒ दिश॒स्ताः स॑वि॒ता स॑वि॒ता ता दिशो॒ दिश॒स्ताः स॑वि॒ता। ताः स॑वि॒ता स॑वि॒ता तास्ताः स॑वि॒ता षड॑क्षरेण॒ षड॑क्षरेण सवि॒ता तास्ताः स॑वि॒ता षड॑क्षरेण। स॒वि॒ता षड॑क्षरेण॒ षड॑क्षरेण सवि॒ता स॑वि॒ता षड॑क्षरेण॒ षट् षट् षड॑क्षरेण सवि॒ता स॑वि॒ता षड॑क्षरेण॒ षट्। षड॑क्षरेण॒ षट् षट् षड॑क्षरेण॒ षड॑क्षरेण॒ षडृ॒तूनृ॒तून्षट् षड॑क्षरेण॒ षड॑क्षरेण॒ षडृ॒तून्। षड॑क्षरे॒णेति॒ षट् अ॑क्षरेण। षडृ॒तूनृ॒तून्षट् षडृ॒तून्म॒रुतो॑ म॒रुत॑ऽ ऋ॒तून्षट् षडृ॒तून्म॒रुत॑ः। ऋ॒तू-

1. समानपदे च(वा.प्रा.३.३०) इस सूत्र के अनुसार चतुःपदः इस पद में विसर्जनीय षकार होता है।

न्मरुतो मरुतऽ ऋतूनृतून्मरुतः सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण मरुतऽ ऋतूनृतून्म-रुतः सप्ताक्षरेण। मरुतः सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण मरुतो मरुतः सप्ता-क्षरेण सप्त सप्त सप्ताक्षरेण मरुतो मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त। सप्ताक्षरेण सप्त सप्त सप्ताक्षरेण सप्ताक्षरेण सप्त ग्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्ताक्ष-रेण सप्ताक्षरेण सप्त ग्ग्राम्म्यान्। सप्ताक्षरेणेति सप्त अक्षरेण। सप्त ग्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्त ग्ग्राम्म्यानजयन्नजयन्ग्राम्म्यान्त्सप्त सप्त ग्ग्राम्म्यानजयन्। ग्राम्म्यानजयन्नजयन्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यानजयन्बृहस्प्पतिर्बृ-हस्प्पतिरजयन्ग्राम्म्यान्ग्राम्म्यानजयन्बृहस्प्पतिः[1]। अजयन्बृहस्प्पतिर्बृह-स्प्पतिरजयन्नजयन्बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिरजयन्नजयन्बृह-स्प्पतिरष्टाक्षरेण। बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिरष्टा-क्षरेण गायत्रीङ्गायत्रीमष्टाक्षरेण बृहस्प्पतिर्बृहस्प्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीम्[2]। अष्टाक्षरेण गायत्रीङ्गायत्रीमष्टाक्षरेणाष्टाक्षरेण गायत्रीन्तान्ताङ्गायत्रीमष्टा-क्षरेणा-ष्टाक्षरेण गायत्रीन्ताम्। अष्टाक्षरेणेत्यष्ट अक्षरेण। गायत्रीन्तान्ता-ङ्गायत्रीङ्गायत्रीन्ताम्मित्रो मित्रस्ताङ्गायत्रीङ्गायत्रीन्ताम्मित्रः। ताम्मित्रो मित्र-स्तान्ताम्मित्रो नवाक्षरेण नवाक्षरेण मित्रस्तान्ताम्मित्रो नवाक्षरेण॥३१॥

मित्रो नवाक्षरेण नवाक्षरेण मित्रो मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतन्त्रिवृतन्नवा-क्षरेण मित्रो मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतम्। नवाक्षरेण त्रिवृतन्त्रिवृतन्नवाक्षरेण

---

1. बृहस्पतिर्बृहस्पतिः यहाँ ऋवर्ण बाद में होने से बृ के बकार का द्वित्व नहीं होगा। ऋवर्णे (वा. प्रा. ४.११२) इस सूत्र के भाष्यकारों द्वारा ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः (वा. प्रा. ४.१०३) के अपवाद के रूप में प्रस्तुत सूत्र को कहना विचारणीय है।

2. स्वरात् संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से संयोगादि वर्ण का द्विरुच्चारण प्राप्त है, जिसके अपवाद के रूप में न क्षवृचिश्विसतयेभ्यस्त्रैकम्(वा.प्रा.६.२७) सूत्र है। इस सूत्र में क्ष, वृ, चि, श्वि, स, त, य इन वर्णों के बाद त्र में द्विरुच्चारण का निषेध है। इस सूत्र के अनुसार यत्र पद में एक ही त रहेगा। चूँकि प्रातिशाख्य की प्रवृत्ति पदों को आधार मानकर होती है, अतः गायत्री, गायत्र, (वोचासि+अत्र) वोचास्यत्र, (अभि+अत्र) अभ्यत्र, यमस्य त्रयोदशी इत्यादि स्थलों में तकार के द्विरुच्चारण में कुछ आपत्ति नहीं है। भाष्यकारों के अनुसार ज्योत्स्नावृति में भी गायत्रादि पद उदाहृत नहीं है।

नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ स्तोमꣳ स्तोमन्त्रिवृतन्नवाक्षरेण नवाक्षरेण त्रिवृतꣳ स्तोमम्[1]। नवाक्षरेणेति नव अक्षरेण। त्रिवृतꣳ स्तोमꣳ स्तोमन्त्रिवृतन्त्रिवृतꣳ स्तोमँव्वरुणो व्वरुण स्तोमन्त्रिवृतन्त्रिवृतꣳ स्तोमँव्वरुणः। त्रिवृतमिति त्रि वृतम्। स्तोमँव्वरुणो व्वरुण स्तोमꣳ स्तोमँव्वरुणो दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्वरुण स्तोमꣳ स्तोमँव्वरुणो दशाक्षरेण। व्वरुणो दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्वरुणो व्वरुणो दशाक्षरेण व्विराजँव्विराजन्दशाक्षरेण व्वरुणो व्वरुणो दशाक्षरेण व्विराजम्। दशाक्षरेण व्विराजँव्विराजन्दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्विराजमिन्द्रऽ इन्द्रो व्विराजन्दशाक्षरेण दशाक्षरेण व्विराजमिन्द्रः। दशाक्षरेणेति दश अक्षरेण। व्विराजमिन्द्रऽ इन्द्रो व्विराजँव्विराजमिन्द्रऽ एकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेणेन्द्रो व्विराजँव्विराजमिन्द्रऽ एकादशाक्षरेण। व्विराजमिति वि राजम्। इन्द्रऽ एकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेणेन्द्रऽ इन्द्रऽ एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभन्त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणेन्द्रऽ इन्द्रऽ एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभम्। एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभन्त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेण त्रिष्टुभँव्विश्श्वे व्विश्श्वे त्रिस्तुभमेकादशाक्षरेणैकादशाक्षरेण त्रिष्टुभँव्विश्श्वे। एकादशाक्षरेणेत्येकादश अक्षरेण। त्रिष्टुभँव्विश्श्वे व्विश्श्वे त्रिस्तुभन्त्रिष्टुभँव्विश्श्वे देवा देवा व्विश्श्वे त्रिस्तुभन्त्रिष्टुभँव्विश्श्वे देवाः। त्रिस्तुभमिति त्रि स्तुभम्। व्विश्श्वे देवा देवा व्विश्श्वे व्विश्श्वे देवा द्वादशाक्षरेण द्वादशाक्षरेण देवा व्विश्श्वे व्विश्श्वे देवा द्वादशाक्षरेण। देवा द्वादशाक्षरेण द्वादशाक्षरेण देवा देवा द्वादशाक्षरेण जगतीञ्जगतीन्द्वादशाक्षरेण देवा देवा द्वादशाक्षरेण जगतीम्। द्वादशाक्षरेण जगतीञ्जगतीन्द्वादशाक्षरेण द्वादशा-

1. त्रिवृतꣳ स्तोमम् यहाँ अनुस्वार से परवर्ती सकार तदुत्तरवर्ती तकार का द्वित्व नहीं करेगा, नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा. प्रा. ४.१०६)।

अनुस्वार की गणना व्यञ्जनों में की गयी है (वा. प्रा. ८.२१)।

क्षरे॒ण॒ जग॑तीँव्व॒स॑वो॒ व्व॒स॑वो॒ जग॑ती॒न्द्वाद॑शाक्षरेण॒ द्वाद॑शाक्षरेण॒ जग॑ती॒ँव्व॒स॑वः[1]।
द्वाद॑शाक्षरे॒णेति॒ द्वाद॑श अक्षरेण। जग॑तीँव्व॒स॑वो॒ व्व॒स॑वो॒ जग॑ती॒ञ्जग॑तीँव्व॒स॑व॒स्त्र-
यो॑दशाक्षरेण॒ त्रयो॑दशाक्षरेण॒ व्व॒स॑वो॒ जग॑ती॒ञ्जग॑तीँव्व॒स॑व॒स्त्रयो॑दशाक्षरेण॥३२॥

व्व॒स॑व॒स्त्रयो॑दशाक्षरेण॒ त्रयो॑दशाक्षरेण॒ व्व॒स॑वो॒ व्व॒स॑व॒स्त्रयो॑दशाक्षरेण
त्रयोद॒शन्त्रयोद॒शन्त्रयो॑दशाक्षरेण॒ व्व॒स॑वो॒ व्व॒स॑व॒स्त्रयो॑दशाक्षरेण त्रयोद॒शम्। त्रयो॑-
दशाक्षरेण त्रयोद॒शन्त्रयोद॒शन्त्रयो॑दशाक्षरेण॒ त्रयो॑दशाक्षरेण त्रयोद॒शꣳ रु॒द्रा
रु॒द्रास्त्रयोद॒शन्त्रयो॑दशाक्षरेण॒ त्रयो॑दशाक्षरेण त्रयोद॒शꣳ रु॒द्राः। त्रयो॑दशाक्षरे॒-
णेति॒ त्रयो॑दश अक्षरेण। त्र॒यो॒द॒शꣳ रु॒द्रा रु॒द्रास्त्रयोद॒शन्त्रयोद॒शꣳ रु॒द्राश्चतु॑र्दशा-
क्षरेण॒ चतु॑र्दशाक्षरेण रु॒द्रास्त्रयोद॒शन्त्रयोद॒शꣳ रु॒द्राश्चतु॑र्दशाक्षरेण। त्र॒यो॒द॒श-
मिति॑ त्रयः॑ द॒शम्। रु॒द्राश्चतु॑र्दशाक्षरेण॒ चतु॑र्दशाक्षरेण रु॒द्रा रु॒द्राश्चतु॑र्दशाक्षरेण
चतुर्द॒शञ्चतुर्द॒शञ्चतु॑र्दशाक्षरेण रु॒द्रा रु॒द्राश्चतु॑र्दशाक्षरेण चतुर्द॒शम्। चतु॑र्दशाक्ष-
रेण चतुर्द॒शञ्चतुर्द॒शञ्चतु॑र्दशाक्षरेण॒ चतु॑र्दशाक्षरेण चतुर्द॒शमा॑दि॒त्याऽ आ॑दि॒त्या-
श्चतुर्द॒शञ्चतु॑र्दशाक्षरेण॒ चतु॑र्दशाक्षरेण चतुर्द॒शमा॑दि॒त्याः। चतु॑र्दशाक्षरे॒णेति॒
चतु॑र्दश अक्षरेण। च॒तु॒र्द॒शमा॑दि॒त्याऽ आ॑दि॒त्याश्चतुर्द॒शञ्चतुर्द॒शमा॑दि॒त्याः पञ्च॑द-
शाक्षरेण॒ पञ्च॑दशाक्षरेणादि॒त्याश्चतुर्द॒शञ्चतुर्द॒शमा॑दि॒त्याः पञ्च॑दशाक्षरेण।
च॒तु॒र्द॒शमिति॑ चतुः॑ द॒शम्। आ॒दि॒त्याः पञ्च॑दशाक्षरेण॒ पञ्च॑दशाक्षरेणादि॒त्याऽ
आ॑दि॒त्याः पञ्च॑दशाक्षरेण पञ्चद॒शम्पञ्चद॒शम्पञ्च॑दशाक्षरेणादि॒त्याऽ आ॑दि॒त्याः
पञ्च॑दशाक्षरेण पञ्चद॒शम्। पञ्च॑दशाक्षरेण पञ्चद॒शम्पञ्चद॒शम्पञ्च॑दशाक्षरेण॒
पञ्च॑दशाक्षरेण पञ्चद॒शमदि॑ति॒रदि॑तिः पञ्चद॒शम्पञ्च॑दशाक्षरेण॒ पञ्च॑दशाक्षरेण
पञ्चद॒शमदि॑तिः। पञ्च॑दशाक्षरे॒णेति॒ पञ्च॑दश अक्षरेण। प॒ञ्च॒द॒शमदि॑ति॒रदि॑तिः

[1]. जगतीम् वसवः यहाँ वा.प्रा.४.१०. के अनुसार मकार अनुनासिक वकार होता है। सवर्णे(वा.प्रा.४.११२) इस सूत्र से यहाँ द्वित्व का निषेध है(भाष्यकार अनन्त ने तृतीय वकार का निषेध माना है)।

पञ्चदशम्पंञ्चदशमदिंतिः षोडंशाक्षरेण षोडंशाक्षरेणादिंतिः पञ्चदशम्पंञ्चदश-मदिंतिः षोडंशाक्षरेण[1]। पञ्चदशमितिं पञ्च दशम्। अदिंतिः षोडंशाक्षरेण षोडंशाक्षरेणादिंतिरदिंतिः षोडंशाक्षरेण षोडशꣳ षोंडशꣳ षोडंशाक्षरेणा-दिंतिरदिंतिः षोडंशाक्षरेण षोडशम्[2]। षोडंशाक्षरेण षोडशꣳ षोंडशꣳ षोडंशाक्षरेण षोडंशाक्षरेण षोडशम्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिः षोडशꣳ षोडंशाक्षरेण षोडंशाक्षरेण षोडशम्प्रजापंतिः। षोडंशाक्षरेणेति षोडंश अक्षरेण। षोडशम्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिः षोडशꣳ षोंडशम्प्रजापंतिः सप्तदंशाक्षरेण सप्तदंशाक्षरेण प्प्रजापंतिः षोडशꣳ षोंडशम्प्रजापंतिः सप्तदंशाक्षरेण। प्रजापंतिः सप्तदंशाक्षरेण सप्तदंशाक्षरेण प्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिः सप्तदंशाक्षरेण सप्तदशꣳ संप्तदशꣳ सप्तदंशाक्षरेण प्प्रजापंतिः प्प्रजापंतिः सप्तदंशाक्षरेण सप्तदशम्। प्रजापंतिरितिं प्प्रजा पंतिः[3]। सप्त-दंशाक्षरेण सप्तदशꣳ संप्तदशꣳ सप्तदंशाक्षरेण सप्तदंशाक्षरेण सप्तदशम्। सप्तदंशाक्षरेणेतिं सप्तदंश अक्षरेण। सप्तदशमितिं सप्त दशम्॥३२॥

एष तें तऽ एषऽ एष तें निर्ऋते निर्ऋते तऽ एषऽ एष तें निर्ऋते। ते निर्ऋते निर्ऋते ते ते निर्ऋते भागो भागो निंर्ऋते ते ते निर्ऋते भागः। निर्ऋते भागो भागो निंर्ऋते निर्ऋते भागस्तन्तम्भागो निंर्ऋते निर्ऋतें भागस्तम्। निर्ऋतऽ इतिं निः ऋते। भागस्तन्तम्भागो भागस्तञ्जुंषस्व जुषस्व तम्भागो भागस्तञ्जुं-षस्व। तञ्जुंषस्व जुषस्व तन्तञ्जुंषस्व स्वाहा स्वाहां जुषस्व तन्तञ्जुंषस्व स्वाहां। जुषस्व स्वाहा स्वाहां जुषस्व जुषस्व स्वाहाग्निनैंर्ऋतेभ्योग्निनैंर्ऋतेभ्यः स्वाहां

1. षट् दश यहाँ षड् दशदन्तयोः संख्यावयोऽर्थयोश्च (वा. प्रा. ३.४७) के अनुसार षट् शब्द का अन्तिम वर्ण उपधा के सहित ओकार हो जाता है।

2. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार षोडश पद का पृथक्करण नहीं होता है।

3. वा.प्रा.५.७. के अनुसार यह बहुप्रकृति पद समास के नियमानुसार पश्चात्कालिक पद पतिः से पृथक् होता है।

जुषस्व जुषस्व॒ स्वाहा॒ग्निने॑त्रेभ्यः। स्वाहा॒ग्निने॑त्रेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्निने॑त्रेभ्यो दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्निने॑त्रेभ्यो दे॒वेभ्य॑ः। अ॒ग्निने॑त्रेभ्यो दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्यो दे॒वेभ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॑ः पु॒रःसद्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्यो॒ग्निने॑त्रेभ्यो दे॒वेभ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॑ः। अ॒ग्निने॑त्रेभ्य॒ऽ इत्य॒ग्नि ने॑त्रेभ्यः। दे॒वेभ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॑ः पु॒रःसद्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ पु॒रःसद्भ्यो॑ दे॒वेभ्यो॑ दे॒वेभ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॒ः स्वाहा॑। पु॒रःसद्भ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ पु॒रःसद्भ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॒ः स्वाहा॑ य॒मने॑त्रेभ्यो य॒मने॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॑ पु॒रःसद्भ्य॑ः पु॒रःसद्भ्य॒ः स्वाहा॑ य॒मने॑त्रेभ्यः। पु॒रःसद्भ्य॒ऽ इति॑ पु॒रःसत् भ्य॑ः[1]। स्वाहा॑ य॒मने॑त्रेभ्यो य॒मने॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒मने॑त्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ य॒मने॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ य॒मने॑त्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्य॑ः[2]। य॒मने॑त्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ य॒मने॑त्रेभ्यो य॒मने॑त्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ य॒मने॑त्रेभ्यो य॒मने॑त्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः। य॒मने॑त्रेभ्य॒ऽ इति॑ य॒म ने॑त्रेभ्यः। द॒क्षि॒णा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒त्सद्भ्य॑ः पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ दक्षिणा॒सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒सद्भ्य॑ः। द॒क्षि॒णा॒सद्भ्य॒ऽ इति॑ दक्षिणा॒सत् भ्य॑ः। वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒त्सद्भ्य॑ः पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेभ्यः पश्चा॒सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेभ्यो मि॒त्रावरु-

[1]. ह्रस्व स्वर तथा व्यञ्जन के बाद में भकार(भ्यः) से प्रारम्भ होने वाला विभक्ति-प्रत्यय होने से यहाँ अवग्रह है ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३)

[2]. न दशविश्वकर्मानिषद्येन्द्रस्यपातुसदःसक्र्येषु (वा. प्रा. २.३०) इस सूत्र के अनुसार यहाँ दक्षिणा शब्द आद्युदात नहीं है।

णनेत्रेब्भ्यः पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ वि॒श्वदे॑वनेत्रेब्भ्यो वि॒श्वदे॑वनेत्रेब्भ्यः पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यः। वि॒श्वदे॑वनेत्रेब्भ्य॒ऽ इति॑ वि॒श्वदे॑व नेत्रेब्भ्यः। प॒श्चा॒त्सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यः पश्चा॒त्सद्भ्य॑÷ पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो वा वा मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यः पश्चा॒त्सद्भ्य॑÷ पश्चा॒त्सद्भ्यो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो वा। प॒श्चा॒त्सद्भ्य॒ऽ इति॑ पश्चा॒त्सत् भ्य॑÷। मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो वा वा मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्यो वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यः। मि॒त्रावरु॑णनेत्रेब्भ्य॒ऽ इति॑ मि॒त्रावरु॑ण नेत्रेब्भ्यः। वा॒ म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा। म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वा वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वोत्तरा॒सद्भ्य॑ऽ उत्तरा॒सद्भ्यो॑ वा म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्यो वोत्तरा॒सद्भ्य॑÷। म॒रुन्ने॑त्रेब्भ्य॒ऽ इति॑ म॒रुत् ने॑त्रेब्भ्यः। वो॒त्त॒रा॒सद्भ्य॑ऽ उत्तरा॒सद्भ्यो॑ वा वोत्तरा॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उत्तरा॒सद्भ्यो॑ वा वोत्तरा॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यः। उ॒त्त॒रा॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उत्तरा॒सद्भ्य॑ऽ उत्तरा॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्य॑ऽ उपरि॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उत्तरा॒सद्भ्य॑ऽ उत्तरा॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्य॑÷। उ॒त्त॒रा॒सद्भ्य॒ऽ इत्यु॑त्तरा॒सत् भ्य॑÷। सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्य॑ऽ उपरि॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्य॒ः सोम॑नेत्रेब्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यः। सोम॑नेत्रेब्भ्य॒ऽ इति॒ सोम॑ नेत्रेब्भ्यः। उ॒प॒रि॒सद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यऽ उपरि॒सद्भ्य॑ऽ उपरि॒सद्भ्यो॒ दुव॑स्वद्भ्यः। उ॒प॒रि॒सद्भ्य॒ऽ इत्यु॑परि॒सत् भ्य॑÷। दुव॑स्वद्भ्य॒ऽ इति॒ दुव॑स्वत् भ्यः॥३४॥

ये देवा देवा ये ये देवाऽ अग्निनेत्राऽ अग्निनेत्रा देवा ये ये देवाऽ अग्निने-त्राः। देवाऽ अग्निनेत्राऽ अग्निनेत्रा देवा देवाऽ अग्निनेत्राः पुरःसदः पुरःसदो-ग्निनेत्रा देवा देवाऽ अग्निनेत्राः पुरःसदः[1]। अग्निनेत्राः पुरःसदः पुरःसदो-ग्निनेत्राऽ अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यस्तेभ्यः पुरःसदोग्निनेत्राऽ अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः। अग्निनेत्राऽ इत्यग्नि नेत्राः। पुरःसदस्तेभ्यस्तेभ्यः पुरःसदः पुरःसदस्तेभ्यो यमनेत्रा यमनेत्रास्तेभ्यः पुरःसदः पुरःसदस्तेभ्यो यमनेत्राः[2]। पुरःसदऽ इति पुरः सदः। तेभ्यो यमनेत्रा यमनेत्रास्तेभ्यस्तेभ्यो यमनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो यमनेत्रास्ते-भ्यस्तेभ्यो यमनेत्रा दक्षिणासदः[3]। यमनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो यमनेत्रा यमनेत्रा दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो यमनेत्रा यमनेत्रा दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः। यमनेत्राऽ इति यम नेत्राः। दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा दक्षिणासदो दक्षिणासदो विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः। दक्षिणासदऽ इति दक्षिणा सदः। विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्राः पश्चात्सदो विश्वदेवनेत्रा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्राः। विश्वदेवनेत्राऽ इति विश्वदेव नेत्राः। पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मित्रावरुणनेत्राः पश्चात्सदः पश्चात्सदो मित्रावरुणनेत्रा मरुन्नेत्रा मरुन्नेत्रा मित्रावरुणनेत्राः

1. भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र में एक पद में अकण्ठ्य स्वर से भिन्न स्वर से बाद में स्थित सकार का षकार होना कहा है। अतः पुरःसदः में सकार षकार नहीं होगा।

2. तेभ्यः यमनेत्राः यहाँ संहिता में इन दोनों पदों के मध्य आने वाले स्वाहा ये देवाः इन तीन पदों को छोड़ दिया गया है, इस प्रकार के सन्धि के स्थलों को सङ्क्रम कहते हैं-

गलत्पदान्यनुच्चार्य तदाद्यन्ते पदद्वये। यः सन्धिः क्रमपाठेऽस्ति सङ्क्रमः प्रोच्यते तु सा॥ स.प्र.शि.१३२.

3. वा. प्रा. २.३०. के अनुसार यहाँ दक्षिणा शब्द आद्युदात्त नहीं होता है।

प॒श्चात्सद॑ः प॒श्चात्सदो॑ मि॒त्रावरु॑णनेत्रा म॒रुन्ने॑त्राः। प॒श्चा॒त्सद॒ऽ इति॑ प॒श्चा॒त् सद॑ः। मि॒त्रावरु॑णनेत्रा म॒रुन्ने॑त्रा म॒रुन्ने॑त्रा मि॒त्रावरु॑णनेत्रा मि॒त्रावरु॑णनेत्रा म॒रुन्ने॑त्राऽ उत्तरा॒सद॑ऽ उत्तरा॒सदो॑ म॒रुन्ने॑त्रा मि॒त्रावरु॑णनेत्रा मि॒त्रावरु॑णनेत्रा म॒रुन्ने॑त्राऽ उत्तरा॒सद॑ः। मि॒त्रावरु॑णनेत्रा॒ऽ इति॑ मि॒त्रावरु॑ण नेत्राः। म॒रुन्ने॑त्राऽ उत्तरा॒सद॑ऽ उत्तरा॒सदो॑ म॒रुन्ने॑त्रा म॒रुन्ने॑त्राऽ उत्तरा॒सद॒ः सोम॑नेत्रा॒ः सोम॑नेत्राऽ उत्तरा॒सदो॑ म॒रुन्ने॑त्रा म॒रुन्ने॑त्राऽ उत्तरा॒सद॒ः सोम॑नेत्राः। म॒रुन्ने॑त्रा॒ऽ इति॑ म॒रुत् ने॑त्राः। उ॒त्त॒रा॒सद॒ः सोम॑नेत्रा॒ः सोम॑नेत्राऽ उत्तरा॒सद॑ऽ उत्तरा॒सद॒ः सोम॑नेत्राऽ उपरि॒सद॑ऽ उपरि॒सद॒ः सोम॑नेत्राऽ उत्तरा॒सद॑ऽ उत्तरा॒सद॒ः सोम॑नेत्राऽ उपरि॒सद॑ः। उ॒त्त॒रा॒सद॒ऽ इत्यु॑त्तरा॒ सद॑ः। सोम॑नेत्राऽ उपरि॒सद॑ऽ उपरि॒सद॒ः सोम॑नेत्रा॒ः सोम॑नेत्राऽ उपरि॒सदो॒ दुव॑स्वन्तो॒ दुव॑स्वन्तऽ उपरि॒सद॒ः सोम॑नेत्रा॒ः सोम॑नेत्राऽ उपरि॒सदो॒ दुव॑स्वन्तः। सोम॑नेत्रा॒ऽ इति॒ सोम॑ नेत्राः। उ॒प॒रि॒सदो॒ दुव॑स्वन्तो॒ दुव॑स्वन्तऽ उपरि॒सद॑ऽ उपरि॒सदो॒ दुव॑स्वन्तः। उ॒प॒रि॒सद॒ऽ इत्यु॑परि॒ सद॑ः। दुव॑स्वन्त॒ऽ इति॒ दुव॑स्वन्तः॥३५॥

अग्ने॒ सह॑स्व॒ सह॒स्वाग्नेग्ने॒ सह॑स्व॒ पृत॑ना॒ः पृत॑ना॒ः सह॒स्वाग्नेग्ने॒ सह॑स्व॒ पृत॑नाः[1]। सह॑स्व॒ पृत॑ना॒ः पृत॑ना॒ः सह॑स्व॒ सह॑स्व॒ पृत॑नाऽ अ॒भिमा॑तीर॒भिमा॑ती॒ः पृत॑ना॒ः सह॑स्व॒ सह॑स्व॒ पृत॑नाऽ अ॒भिमा॑तीः। पृत॑नाऽ अ॒भिमा॑तीर॒भिमा॑ती॒ः पृत॑ना॒ः पृत॑नाऽ अ॒भिमा॑ती॒रपापा॒भिमा॑ती॒ः पृत॑ना॒ः पृत॑नाऽ अ॒भिमा॑ती॒रप॑। अ॒भिमा॑ती॒रपापा॒भिमा॑तीर॒भिमा॑ती॒रपा॑स्या॒स्यापा॒भिमा॑तीर॒भिमा॑ती॒रपा॑स्य। अ॒भिमा॑ती॒रित्य॒ भि मा॑तीः। अपा॑स्या॒स्यापापा॑स्य। अ॒स्येत्य॑स्य॥ दु॒ष्टरस्त॒रँस्तर॑न्दु॒स्तरो॑

1. उदात्ताच्चामन्त्रितादनन्तरम्(वा.प्रा.६.१२) इस सूत्र के अनुसार उदात्त युक्त सम्बोधन से युक्त पद (अग्ने॑) से अव्यवहित परवर्ती क्रियापद (सह॑स्व) यहाँ अपने प्रकृति स्वर से युक्त (अनुदात्त नहीं) है।

दुष्टरस्तरन्नरातीररातीस्तरन्दुस्तरो दुष्टरस्तरन्नरातीः। दुस्तरऽ इति दुस्तरः[1]। तरन्नरातीररातीस्तरँस्तरन्नरातीर्व्वर्चो व्वर्चोरातीस्तरँस्तरन्नरातीर्व्वर्चः। अरातीर्व्वर्चो व्वर्चोरातीररातीर्व्वर्चो धा धा व्वर्चोरातीररातीर्व्वर्चो धाः। व्वर्चो धा धा व्वर्चो व्वर्चो धा यज्ञवाहसि यज्ञवाहसि धा व्वर्चो व्वर्चो धा यज्ञवाहसि। धा यज्ञवाहसि यज्ञवाहसि धा धा यज्ञवाहसि। यज्ञवाहसीति यज्ञ व्वाहसि॥३६॥

उपाᳪशोर्व्वीर्य्येण व्वीर्य्येणोपाᳪशोरुपाᳪशोर्व्वीर्य्येण जुहोमि जुहोमि व्वीर्य्येणोपाᳪशोरुपाᳪशोर्व्वीर्य्येण जुहोमि। उपाᳪशोरित्युप अᳪशोः। व्वीर्य्येण जुहोमि जुहोमि व्वीर्य्येण व्वीर्य्येण जुहोमि हतᳪ हतञ्जुहोमि व्वीर्य्येण व्वीर्य्येण जुहोमि हतम्। जुहोमि हतᳪ हतञ्जुहोमि जुहोमि हतᳪ रक्षो रक्षो हतञ्जुहोमि जुहोमि हतᳪ रक्षः। हतᳪ रक्षो रक्षो हतᳪ हतᳪ रक्षः स्वाहा स्वाहा रक्षो हतᳪ हतᳪ रक्षः स्वाहा। रक्षः स्वाहा स्वाहा रक्षो रक्षः स्वाहा रक्षसाᳪ रक्षसाᳪ स्वाहा रक्षो रक्षः स्वाहा रक्षसाम्। स्वाहा रक्षसाᳪ रक्षसाᳪ स्वाहा स्वाहा रक्षसान्त्वा त्वा रक्षसाᳪ स्वाहा स्वाहा रक्षसा-न्त्वा[2]। रक्षसान्त्वा त्वा रक्षसाᳪ रक्षसान्त्वा व्वधाय व्वधाय त्वा रक्षसाᳪ रक्षसान्त्वा व्वधाय। त्वा व्वधाय व्वधाय त्वा त्वा व्वधायावधिष्म्मावधिष्म्म व्वधाय त्वा त्वा व्वधायावधिष्म्म। व्वधायावधिष्म्मावधिष्म्म व्वधाय व्वधायावधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्म व्वधाय व्वधायावधिष्म्म रक्षः। अवधिष्म्म रक्षो रक्षो-वधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षोवधि-ष्म्म। रक्षोवधिष्म्मावधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्मामुममुमवधिष्म्म रक्षो रक्षोवधिष्म्मामुम्। अवधिष्म्मामुममुमवधिष्म्मावधिष्म्मामुमसावसावमुमव-

[1]. दुष्टरो विष्टरो विष्टपो विष्टम्भो विष्टम्भनीम् (वा. प्रा. ५.४१) इस सूत्र के अनुसार इस पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[2].वा.प्रा.२.६. के अनुसार यहाँ त्वा पद अनुदात्त है।

धि॒ष्म्मावंधिष्म्मा॒मु॒मसौ[1]। अ॒मु॒म॒सावु॒सावु॒मु॒म॒मु॒म॒सौ हु॒तो हु॒तो॒सावु॒मु॒म॒मु॒म॒सौ हु॒तः॒। अ॒सौ हु॒तो हु॒तो॒सावु॒सौ हु॒तः॒। हु॒तऽ इतिं हु॒तः॒॥३७॥

स॒वि॒ता त्वा॑ त्वा सवि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ स॒वानां॑ॅ स॒वाना॑न्त्वा सवि॒ता स॑वि॒ता त्वा॑ स॒वाना॑म्। त्वा॒ स॒वानां॑ॅ स॒वाना॑न्त्वा त्वा स॒वानां॑ॅ सुवताॅ सुवताॅ स॒वाना॑न्त्वा त्वा स॒वानां॑ॅ सुवताम्। स॒वानां॑ॅ सुवताॅ सुवताॅ स॒वानां॑ॅ स॒वानां॑ॅ सुवताम॒ग्नि॒र॒ग्निः॒ सुंवताॅ स॒वानां॑ॅ स॒वानां॑ॅ सुवताम॒ग्निः॒। सु॒व॒ता॒म॒ग्नि॒र॒ग्निः॒ सुंवताॅ सुवताम॒ग्निर्गृ॒हप॑तीनाङ्गृ॒हप॑तीनाम॒ग्निः॒ सुंवताॅ सुवताम॒ग्निर्गृ॒हप॑तीनाम्। अ॒ग्निर्गृ॒हप॑तीनाङ्गृ॒हप॑तीनाम॒ग्नि॒र॒ग्निर्गृ॒हप॑तीना॒ॅ सोम॒ः सोमो॑ गृ॒हप॑तीनाम॒ग्नि॒र॒ग्निर्गृ॒हप॑तीना॒ॅ सोम॑ः[2]। गृ॒हप॑तीना॒ॅ सोम॒ः सोमो॑ गृ॒हप॑तीनाङ्गृ॒हप॑तीना॒ॅ सोमो॒ ब्व॒न॒स्प्पती॑नाँ॒ब्व॒न॒स्प्पती॑ना॒ॅ सोमो॑ गृ॒हप॑तीनाङ्गृ॒हप॑तीना॒ॅ सोमो॒ ब्व॒न॒स्प्पती॑नाम्। गृ॒हप॑तीना॒मितिं गृ॒ह प॑तीनाम्। सोमो॒ ब्व॒न॒स्प्पती॑नाँ॒ब्व॒न॒स्प्पती॑ना॒ॅ सोम॒ः सोमो॒ ब्व॒न॒स्प्पती॑नाम्। ब्व॒न॒स्प्पती॑ना॒मिति॒ वन॒स्प्पती॑नाम्॥ बृ॒ह॒स्प्पति॑र्ब्वा॒चे ब्वा॒चे बृ॒ह॒स्प्पति॒र्बृ॒ह॒स्प्पति॑र्ब्वा॒चऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ ब्वा॒चे बृ॒ह॒स्प्पति॒र्बृ॒ह॒स्प्पति॑र्ब्वा॒चऽ इन्द्रः॑। ब्वा॒चऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॑ ब्वा॒चे ब्वा॒चऽ इन्द्रो॒ ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्यैष्ठ्या॒येन्द्रो॑ ब्वा॒चे ब्वा॒चऽ इन्द्रो॒ ज्यैष्ठ्या॑य। इन्द्रो॒ ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्यैष्ठ्या॒येन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रो रु॒द्रो ज्यैष्ठ्या॒येन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रः॒। ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रो रु॒द्रो ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रः॒ प॒शुभ्य॑ः प॒शुभ्यो॑ रु॒द्रो ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्यैष्ठ्या॑य रु॒द्रः॒ प॒शुभ्य॑ः। रु॒द्रः॒ प॒शुभ्य॑ः प॒शुभ्यो॑ रु॒द्रो रु॒द्रः॒ प॒शुभ्यो॑ मि॒त्रो मि॒त्रः॒ प॒शुभ्यो॑ रु॒द्रो रु॒द्रः॒ प॒शुभ्यो॑ मि॒त्रः॒। प॒शुभ्यो॑ मि॒त्रो मि॒त्रः॒ प॒शुभ्य॑ः प॒शुभ्यो॑

---

[1]. यहाँ असौ यह सर्वनाम पूर्ववर्ती प्रज्ञापित अर्थ का निर्देश न करने के कारण अनुदात नहीं है पूर्वबानुदेशः(वा.प्रा.२.७)।

[2]. वा. प्रा. ४.१५१. के अनुसार दीर्घ स्वर से परवर्ती अनुस्वार आधी मात्राकाल वाला एवं पूर्ववर्ती दीर्घस्वर डेढ़ मात्रा काल वाला होता है।

मि॒त्रः स॒त्यः स॒त्यो मि॒त्रः प॒शुभ्य॑ः प॒शुभ्यो॑ मि॒त्रः स॒त्यः। प॒शुभ्य॒ऽ इति॑ प॒शु भ्य॑ः। मि॒त्रः स॒त्यः स॒त्यो मि॒त्रो मि॒त्रः स॒त्यो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यो मि॒त्रो मि॒त्रः स॒त्यो व्वरु॑णः। स॒त्यो व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यः स॒त्यो व्वरु॑णो॒ धर्म्म॑पतीना॒-न्धर्म्म॑पतीना॒ँव्वरु॑णः स॒त्यः स॒त्यो व्वरु॑णो॒ धर्म्म॑पतीनाम्। व्वरु॑णो॒ धर्म्म॑पतीना॒-न्धर्म्म॑पतीना॒ँव्वरु॑णो॒ व्वरु॑णो॒ धर्म्म॑पतीनाम्। धर्म्म॑पतीना॒मिति॒ धर्म्म॑ पतीनाम्॥ ३८॥

इ॒मन्दे॑वा देवाऽ इ॒ममि॒मन्दे॑वाऽ असप॒त्नम॑सप॒त्नन्दे॑वाऽ इ॒ममि॒मन्दे॑वाऽ असप॒त्नम्[1]। दे॒वा॒ऽ अ॒स॒प॒त्नम॑सप॒त्नन्दे॑वा देवाऽ असप॒त्नꣳ सु॑वद्धꣳ सुवद्ध-मसप॒त्नन्दे॑वा देवाऽ असप॒त्नꣳ सु॑वद्धम्। अ॒स॒प॒त्नꣳ सु॑वद्धꣳ सुवद्धमसप॒त्नम॑-सप॒त्नꣳ सु॑वद्धम्महते म॑ह॒ते सु॑वद्धमसप॒त्नम॑सप॒त्नꣳ सु॑वद्धम्मह॒ते। सु॒व॒द्धम्म॒-ह॒ते म॑ह॒ते सु॑वद्धꣳ सुवद्धम्मह॒ते क्क्ष॒त्राय॑ क्क्ष॒त्राय॑ मह॒ते सु॑वद्धꣳ सुवद्धम्मह॒ते क्क्ष॒त्राय॑। म॒ह॒ते क्क्ष॒त्राय॑ क्क्ष॒त्राय॑ मह॒ते म॑ह॒ते क्क्ष॒त्राय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य क्क्ष॒त्राय॑ मह॒ते म॑ह॒ते क्क्ष॒त्राय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य। क्ष॒त्राय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य क्क्ष॒त्राय॑ क्क्ष॒त्राय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ जान॑राज्याय॒ जान॑राज्याय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य क्क्ष॒त्राय॑ क्क्ष॒त्राय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ जान॑राज्याय। ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ जान॑राज्याय॒ जान॑राज्याय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ जान॑राज्या॒येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ जान॑राज्याय॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ ज्ज्यैष्ठ्या॑य॒ जान॑-राज्या॒येन्द्र॑स्य। जान॑राज्या॒येन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ जान॑राज्याय॒ जान॑राज्या॒येन्द्र॑स्ये-न्द्रि॒याये॑न्द्रि॒यायेन्द्र॑स्य॒ जान॑राज्याय॒ जान॑राज्या॒येन्द्र॑स्येन्द्रि॒याय॑। जान॑रा-ज्या॒येति॒ जान॑ राज्याय। इन्द्र॑स्येन्द्रि॒याये॑न्द्रि॒यायेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येन्द्रि॒याय॑। इ॒न्द्रि॒यायेती॑न्द्रि॒याय॑॥ इ॒मम॒मुष्ष्या॒मुष्ष्ये॒ममि॒मम॒मुष्ष्य॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मुष्ष्ये॒ममि॒म-म॒मुष्ष्य॑ पु॒त्रम्। अ॒मुष्ष्य॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मुष्ष्या॒मुष्ष्य॑ पु॒त्रम॒मुष्ष्याऽ अ॒मुष्ष्यै

[1]. वा.प्रा.२.१७. के अनुसार यहाँ देवाः यह आमन्त्रित पद अनुदात्त है।

पु॒त्रम॒मु॒ष्य्या॒मु॒ष्य्यं॑ पु॒त्रम॒मु॒ष्य्यै॑। पु॒त्रम॒मु॒ष्य्या॑ऽ अ॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम्। अ॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒मु॒ष्य्या॑ऽ अ॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम॒स्या॑ऽ अ॒स्यै॑ पु॒त्रम॒मु॒ष्य्या॑ऽ अ॒मु॒ष्य्यै॑ पु॒त्रम॒स्यै॑। पु॒त्रम॒स्या॑ऽ अ॒स्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒स्यै॑ व्वि॒शे व्वि॒शो॒स्यै॑ पु॒त्रम्पु॒त्रम॒स्यै॑ व्वि॒शे॑[1]। अ॒स्यै॑ व्वि॒शे व्वि॒शो॒स्या॑ऽ अ॒स्यै॑ व्वि॒श॑ऽ ए॒ष॑ऽ ए॒ष व्वि॒शो॒स्या॑ऽ अ॒स्यै॑ व्वि॒श॑ऽ ए॒षः। व्वि॒श॑ऽ ए॒ष॑ऽ ए॒ष व्वि॒शे व्वि॒श॑ऽ ए॒ष वो॑ वऽ ए॒ष व्वि॒शे व्वि॒श॑ऽ ए॒ष वः॑। ए॒ष वो॑ वऽ ए॒ष॑ऽ ए॒ष वो॒मी॑ऽ अमी वऽ ए॒ष॑ऽ ए॒ष वो॒मी॑[2]। व्वो॒मी॒ऽ अ॒मी॒ वो॒ वो॒मी॒ राजा॒ राजा॑मी वो वो॒मी॒ राजा॑। अ॒मी॒ राजा॒ राजा॑मीऽ अमी॒ राजा॒ सोम॒ः सोमो॒ राजा॑मीऽ अमी॒ राजा॒ सोमः॑। अ॒मी॒ऽ इत्य॒मी। राजा॒ सोम॒ः सोमो॒ राजा॒ राजा॒ सोमो॒ऽस्माक॑म॒स्माक॒ꣳ सोमो॒ राजा॒ राजा॒ सोमो॒ऽस्माक॑म्। सोमो॒ऽस्माक॑म॒स्माक॒ꣳ सोम॒ः सोमो॒ऽस्माक॑म्ब्राह्म॒णा-ना॑म्ब्राह्म॒णाना॑म॒स्माक॒ꣳ सोम॒ः सोमो॒ऽस्माक॑म्ब्राह्म॒णाना॑म्। अ॒स्माक॑-म्ब्राह्म॒णाना॑म्ब्राह्म॒णाना॑म॒स्माक॑म॒स्माक॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॒ राजा॑ ब्राह्म॒णा-ना॑म॒स्माक॑म॒स्माक॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॑। ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॒ राजा॑ ब्राह्म॒णा-ना॑म्ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॑। राजेति॒ राजा॑॥३९॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे नवमोध्यायः॥

---

[1]. अयैकमुत्तरश्च(वा.प्रा.४.५१) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र एदोद्भ्यां पूर्वमकारः(वा.प्रा.४.६२) के अनुसार वि॒शे अ॒स्यै यहाँ एकार से परवर्ती अकार एकार के सहित एकार को प्राप्त करता है। ज्यो. के अनुसार 'कारग्रहणे तत्कालग्रहणम्' -पृ.२३ तौ चेदुदात्तावनुदात्ते स्वरितौ(वा.प्रा.४.६३) से स्वरित स्वर का विधान किया गया है। एदोद्भ्यामकारो लुगभिनिहितः(वा.प्रा.१.११४) से अभिनिहित स्वरित कहा है।

[2]. अमी पदम् (वा. प्रा. १.९८) अमी यदि पदावयव न होते हुये स्वतन्त्र पद हो तो प्रगृह्य होता है।

॥दशमोध्यायः॥

हरिः॑ ॐ॥ अ॒पो दे॒वा दे॒वाऽ अ॒पो॒पो दे॒वा मधु॑मती॒र्म्मधु॑मती॑र्द्दे॒वाऽ अ॒पो॒पो दे॒वा मधु॑मतीः। दे॒वा मधु॑मती॒र्म्मधु॑मती॑र्द्दे॒वा दे॒वा मधु॑मतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्मधु॑मती॑र्द्दे॒वा दे॒वा मधु॑मतीरगृभ्णन्। मधु॑मतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीरगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्ण॒न्मधु॑मती॒र्म्मधु॑मतीरगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वतीः। मधु॑मती॒रिति॒ मधु॑ मतीः। अ॒गृ॒भ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वतीरगृभ्णन्नगृभ्ण॒न्नूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्वः॑। ऊर्ज्ज॑स्वती राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्व॒श्चिता॑ना॒श्चिता॑ना राज॒स्व॒ऽ ऊर्ज्ज॑स्वती॒रूर्ज्ज॑स्वती राज॒स्व॒श्चिता॑नाः। रा॒ज॒स्व॒श्चिता॑ना॒श्चिता॑ना राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒श्चिता॑नाः। रा॒ज॒स्व॒ऽ इति॑ राज॒ स्वः॑। चिता॑ना॒ऽ इति॒ चिता॑नाः॥ याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णौ॒ याभि॒र्य्याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्य॒भि मि॒त्रावरु॑णौ॒ याभि॒र्य्याभि॑र्म्मि॒त्रावरु॑णाव॒भि[1]। मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्य॒भि मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यषि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्न॒भि मि॒त्रावरु॑णौ मि॒त्रावरु॑णाव॒भ्यषि॑ञ्चन्[2]। अ॒भ्यषि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्न॒भ्य॒भ्यषि॑ञ्च॒न्याभि॒र्य्याभि॒रसि॑ञ्च॒न्न॒भ्य॒भ्यषि॑ञ्च॒न्याभिः॑। असि॑ञ्च॒न्याभि॒र्य्याभि॒रसि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्याभि॒रिन्द्र॒मिन्द्रँ॒य्याभि॒रसि॑ञ्च॒न्नसि॑ञ्च॒न्याभि॒रिन्द्र॑म्। याभि॒रिन्द्र॒मिन्द्रँ॒य्याभि॒र्य्याभि॒रिन्द्र॒मन॑य॒न्नन॑य॒न्निन्द्रँ॒य्याभि॒र्य्याभि॒रिन्द्र॒मन॑यन्। इन्द्र॒मन॑य॒न्नन॑य॒न्निन्द्र॒मिन्द्र॒मन॑य॒न्नत्त्यत्त्यन॑य॒न्निन्द्र॒मिन्द्र॒मन॑य॒न्नति॑। अन॑य॒न्नत्त्यत्त्यन॑य॒न्नन॑य॒न्नत्त्यरा॑ती॒ररा॑ती॒रत्त्यन॑य॒न्नन॑य॒न्नत्त्यरा॑तीः। अत्त्यरा॑ती॒ररा॑ती॒रत्त्यत्त्यरा॑तीः। अरा॑ती॒रित्त्यरा॑तीः॥१॥

---

1. देवताद्वन्द्वानि चानामन्त्रितानि(वा.प्रा.२.४८) इस सूत्र के अनुसार यहाँ मि॒त्रावरुणौ पद सम्बोधन न होने से द्विरुदात है।
2. अन्यवहितोऽपि (वा. प्रा. ३.६५) अकार से व्यवहित होने पर भी अभि से परवर्ती सिञ्च का सकार षकार हो जाता है।

ब्रूष्ण्णंऽ ऊर्म्मिरूर्म्मिर्ब्रूष्ण्णो ब्रूष्ण्णंऽ ऊर्म्मिरंस्यस्यूर्म्मिर्ब्रूष्ण्णो ब्रूष्ण्णंऽ ऊर्म्मिरंसि। ऊर्म्मिरंस्यस्यूर्म्मिरूर्म्मिरंसि राष्ट्रदा राष्ट्रदाऽ अंस्यूर्म्मिरूर्म्मिरंसि राष्ट्रदाः। असि राष्ट्रदा राष्ट्रदाऽ अंस्यसि राष्ट्रदा राष्ट्रꣳ राष्ट्रꣳ राष्ट्रदाऽ अंस्यसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्[1]। राष्ट्रदा राष्ट्रꣳ राष्ट्रꣳ राष्ट्रदा राष्ट्रदा राष्ट्रम्मैं मे राष्ट्रꣳ राष्ट्रदा राष्ट्रदा राष्ट्रम्मैं। राष्ट्रदाऽ इतिं राष्ट्र दाः। राष्ट्रम्मैं मे राष्ट्रꣳ राष्ट्रम्मैं देहि देहि मे राष्ट्रꣳ राष्ट्रम्मैं देहि। मे देहि देहि मे मे देहि स्वाहा स्वाहां देहि मे मे देहि स्वाहां। देहि स्वाहा स्वाहां देहि देहि स्वाहामुष्म्मांऽ अमुष्म्मै स्वाहां देहि देहि स्वाहामुष्म्मैं। स्वाहामुष्म्मांऽ अमुष्म्मै स्वाहा स्वाहामुष्म्मैं ब्रूषसेनो ब्रूंषसेनोमुष्म्मै स्वाहा स्वाहामुष्म्मैं ब्रूषसेनः। अमुष्म्मैं ब्रूषसेनो ब्रूंषसेनोमुष्म्मांऽ अमुष्म्मैं ब्रूषसेनोर्त्थेतोर्त्थेतों ब्रूषसेनोमुष्म्मांऽ अमुष्म्मैं ब्रूषसेनोर्त्थेतं÷। ब्रूषसेनोर्त्थेतोर्त्थेतों ब्रूषसेनो ब्रूंषसेनोर्त्थेतं स्त्थ स्त्थार्त्थेतों ब्रूषसेनो ब्रूंषसेनोर्त्थेतं स्त्थ। ब्रूषसेनऽ इतिं वृष सेनः॥२॥

अर्त्थेतं स्त्थ स्त्थार्त्थेतोर्त्थेतं स्त्थ दत्त दत्त स्त्थार्त्थेतोर्त्थेतं स्त्थ दत्त। अर्त्थेतऽ इत्यंर्त्थ इतंः। स्त्थ दत्त दत्त स्त्थ स्त्थ दत्तौजंस्वतीरोजंस्वतीर्दत्त स्त्थ स्त्थ दत्तौजंस्वतीः[2]। दत्तौजंस्वतीरोजंस्वतीर्दत्त दत्तौजंस्वतीरापऽ आपऽ ओजंस्वतीर्दत्त दत्तौजंस्वतीरापं÷। ओजंस्वतीरापऽ आपऽ ओजंस्वतीरोजंस्वतीरापं÷ परिवाहिणींः परिवाहिनीरापऽ ओजंस्वतीरोजंस्वतीरापं÷ परिवाहिणींः। आपं÷ परिवाहिणींः परिवाहिनीरापऽ आपं÷ परिवाहिणींरपामपाम्पंरिवाहिनीरापऽ आपं÷ परिवाहिणींरपाम्। परिवाहिणींरपामपाम्पंरिवाहिनींः परिवा-

---

1. राष्ट्रदाः राष्ट्रदाः तथा राष्ट्रदाः राष्ट्रम् यहाँ लोपं घौ(वा.प्रा.४.३९) इस सूत्र से घि संज्ञक व्यञ्जन र बाद में रहने से अरिफित कण्ठ्यपूर्व विसर्ग का लोप होता है।

2. दत्त ओजस्वतीः यहाँ सन्धि की दशा में –सन्ध्यक्षर ऐकारौकारौ (वा. प्रा. ४.५८) यह सूत्र सन्ध्यक्षर परे रहने पर अ को सन्ध्यक्षर के सहित औकार करता है।

हिणींरुपा-म्पतिः पतिंरुपाम्परिवाहिनीः परिवाहिणींरुपाम्पतिः। परिवाहिनी-रिति परि वाहिनीः। अपाम्पतिः पतिंरुपामुपाम्पतिंरुपामुपाम्पतिंरुपाम्-पाम्पतिंरुपाम्। पतिंरुपामुपाम्पतिः पतिंरुपाङ्गर्भो गर्भोपाम्पतिः पतिंरुपा-ङ्गर्भः। अपाङ्गर्भो गर्भोपामुपाङ्गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसो गर्भोपामुपाङ्गर्भः सूर्य्यत्वचसः। गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसो गर्भो गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसो गर्भो गर्भः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः॥३॥

सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यत्वचसः सूर्य्यवर्चसो मान्दाः। सूर्य्यत्वचसऽ इति सूर्य्य त्वचसः। सूर्य्यवर्चसो मान्दा मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा व्रजक्षितौ व्रजक्षितो मान्दाः सूर्य्यवर्चसः सूर्य्यवर्चसो मान्दा व्रजक्षितः। सूर्य्यवर्चसऽ इति सूर्य्य वर्चसः। मान्दा व्रजक्षितौ व्रजक्षितो मान्दा मान्दा व्रजक्षितो वाशा वाशा व्रजक्षितो मान्दा मान्दा व्रजक्षितो वाशाः। व्रजक्षितो वाशा वाशा व्रजक्षितौ व्रजक्षितो वाशाः शविंष्ठाः शविंष्ठा वाशा व्रजक्षितौ व्रजक्षितो वाशाः शविंष्ठाः[1]। व्रजक्षितऽ इतिं व्रज क्षितः। वाशाः शविंष्ठाः शविंष्ठा वाशा वाशाः शविंष्ठाः शक्वरीः शक्वरीः शविंष्ठा वाशा वाशाः शविंष्ठाः[2] शक्वरीः। शविंष्ठाः शक्वरीः शक्वरीः शविंष्ठाः शविंष्ठाः शक्वरीर्ज्जनभृतौ जनभृतः शक्वरीः शविंष्ठाः शविंष्ठाः शक्वरीर्ज्जनभृतः। शक्वरीर्ज्जनभृतौ जनभृतः शक्वरीः शक्वरीर्ज्जनभृतौ विश्वभृतौ विश्वभृतौ जनभृतः शक्वरीः शक्वरीर्ज्जनभृतौ

---

1. शविष्ठाः यहाँ वा.प्रा.४.१०३. के अनुसार ठकार का द्वित्व प्राप्त है, वह वा.प्रा.४.११०. के अनुसार ट के साथ होता है।

2. वार्शाः शविंष्ठाः यहाँ सन्धि होने पर निहितमुदात्तस्वरितपरम् (वा. प्रा. ४.१३८) इस सूत्र से वार्शाः का स्वरित अनुदात होता है।

व्वि॒श्व॒भृत॑÷ । ज॒न॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृतो॑ जन॒भृतो॑ जन॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ व्वि॒श्व॒भृतो॑ जन॒भृतो॑ जन॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ आप॑÷ । ज॒न॒भृत॒ऽ इति॑ जन॒ भृत॑÷ । व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ आप॒ऽ आपो॑ व्वि॒श्व॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ आप॑÷ स्व॒राज॑÷ स्व॒राज॒ऽ आपो॑ व्वि॒श्व॒भृतो॑ व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ आप॑÷ स्व॒राज॑÷ । व्वि॒श्व॒भृत॒ऽ इति॑ विश्व॒ भृत॑÷ । आप॑÷ स्व॒राज॑÷ स्व॒राज॒ऽ आप॒ऽ आप॑÷ स्व॒राज॑÷ । स्व॒राज॒ऽ इति॑ स्व॒ राज॑÷ ॥

महि॑ क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रम्महि॒ महि॑ क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रम्महि॒ महि॑ क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रिया॑य[1] । क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रिया॑य व्वन्वा॒ना व्व॑न्वा॒नाः क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रिया॑य व्वन्वा॒नाः । क्ष॒त्रिया॑य व्वन्वा॒ना व्व॑न्वा॒नाः क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रिया॑य व्वन्वा॒ना अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टा व्वन्वा॒नाः क्ष॒त्रिया॑य क्ष॒त्रिया॑य व्वन्वा॒नाऽ अना॑धृष्टाः । व्व॒न्वा॒नाऽ अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टा व्वन्वा॒ना व्व॑न्वा॒नाऽ अना॑धृष्टाः सीदत सीद॒ताना॑धृष्टा व्वन्वा॒ना व्व॑न्वा॒नाऽ अना॑धृष्टाः सीदत । अना॑धृष्टाः सीदत सीद॒ताना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाः सीदत स॒हौज॑सः स॒हौज॑सः सीद॒ताना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाः सीदत स॒हौज॑सः । सी॒द॒त॒ स॒हौज॑सः स॒हौज॑सः सीदत सीदत स॒हौज॑सो॒ दध॑ती॒र्दध॑तीः स॒हौज॑सः सीदत सीदत स॒हौज॑सो॒ दध॑तीः । स॒हौज॑सो॒ दध॑ती॒र्दध॑तीः स॒हौज॑सः स॒हौज॑सो॒ दध॑तीः । स॒हौज॑स॒ऽ इति॑ स॒ह ओ॑जसः । दध॑ती॒रिति॒ दध॑तीः ॥४ ॥

सोम॑स्य॒ त्विषि॒स्त्विषि॒ः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य॒ त्विषि॑रस्यसि॒ त्विषि॒ः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य॒ त्विषि॑रसि । त्विषि॑रस्यसि॒ त्विषि॒स्त्विषि॑रसि॒ तवे॑व॒ तवे॑वासि॒ त्विषि॒स्त्विषि॑रसि॒ तवे॑व । अ॒सि॒ तवे॑व॒ तवे॑वास्यसि॒ तवे॑व मे मे॒ तवे॑वास्यसि॒ तवे॑व मे । तवे॑व मे मे॒ तवे॑व॒ तवे॑व मे॒ त्विषि॒स्त्विषि॑र्म्मे॒ तवे॑व॒ तवे॑व मे॒ त्विषि॑÷ । तवे॒वेति॒ तव॑

---

1. वा.प्रा.६.२७. के अनुसार क्ष से उत्तरवर्ती त्र आने पर तकार के द्वित्व का निषेध है। यह निषेध क्षत्रिय पद में मानना उचित नहीं है, क्योंकि प्रातिशाख्य की प्रवृत्ति पदों के आधार मानकर है। क्षत्र पद से क्षत्रिय पद पृथक् है।

इव। मे॒ त्विषि॒स्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भूयात्। त्विषि॑र्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॒स्त्विषि॑र्भूयात्। भूया॒दिति॑ भूयात्॥ अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्नये॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ग्नये॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य। स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे । सोमा॑य सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै। स॒वि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे[1]। सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्ण्णे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्ण्णे बृह॒स्प्पत॑ये। पू॒ष्ण्णे बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्ण्णे पू॒ष्ण्णे बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य। बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य[2]। इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य[3]। घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य। श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य। अꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑याऽर्य्य॒म्म्णे॒ऽर्य्य॒म्म्णे भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑या-

---

1. ऋषरेफेभ्यो नकारो णकारं समानपदे(वा.प्रा.३.८४) इस सूत्र के अनुसार पूष्णे पद में षकार से उत्तरवर्ती नकार णकार हो गया है।

2. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

3. घोषाय श्लोकाय यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.१०१. से शकार का द्विरुच्चारण होगा। वा.प्रा.४.१०३. में ऊष्म वर्णों के बाद स्पर्श के ही द्वित्व का विधान है, अतः लकार का द्वित्व नहीं होगा।

इव। मे॒ त्विषि॒स्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॑र्म्मे मे॒ त्विषि॑र्भूयात्। त्विषि॑र्भूयाद् भूया॒त्त्विषि॒स्त्विषि॑र्भूयात्। भू॒या॒दिति॑ भूयात्॥ अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ग्नये॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ग्नये॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य। स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य सवि॒त्रे । सोमा॑य सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्व-त्यै सवि॒त्रे सोमा॑य॒ सोमा॑य सवि॒त्रे सर॑स्वत्यै। स॒वि॒त्रे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्णणे पू॒ष्णणे सर॑स्वत्यै सवि॒त्रे स॑वि॒त्रे सर॑स्वत्यै पू॒ष्णणे[1]। सर॑स्वत्यै पू॒ष्णणे पू॒ष्णणे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णणे बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्णणे सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णणे बृह॒स्प्पत॑ये। पू॒ष्णणे बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्णणे पू॒ष्णणे बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये पू॒ष्णणे पू॒ष्णणे बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य। बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॑य॒ बृह॒स्प्पत॑ये॒ बृह॒स्प्पत॑य॒ऽ इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य[2]। इन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॒येन्द्रा॒येन्द्रा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य[3]। घोषा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ घोषा॑य॒ घोषा॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य। श्लोका॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॑य॒ श्श्लोका॑य॒ श्श्लोका॒याꣳशा॑य॒ भगा॑य। अꣳशा॑य॒ भगा॑य॒ भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑याऽर्य्य॒म्म्णे॒ऽर्य्य॒म्म्णे भगा॒याꣳशा॒याꣳशा॑य॒ भगा॑या-

---

1. ऋपरेफेभ्यो नकारो णकारं समानपदे(वा.प्रा.३.८४) इस सूत्र के अनुसार पूष्णे पद में षकार से उत्तरवर्ती नकार णकार हो गया है।

2. वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

3. घोषाय श्लोकाय यहाँ सन्धि की स्थिति में वा.प्रा.४.१०१. से शकार का द्विरुच्चारण होगा। वा.प्रा.४.१०३. में ऊष्म वर्णों के बाद स्पर्श के ही द्वित्व का विधान है, अतः लकार का द्वित्व नहीं होगा।

ऽर्व्व॒म्म्णे। भगा॑याऽर्व्व॒म्म्णे॒ऽर्व्व॒म्म्णे भगा॑य॒ भगा॑याऽर्व्व॒म्म्णे। अ॒र्व्व॒म्म्णऽ इत्य॑र्व्व॒-म्म्णे॥५॥

अनि॑भृष्टमस्य॒स्यनि॑भृष्ट॒मनि॑भृष्टमसि व्वा॒चो व्वा॒चो॒स्यनि॑भृष्ट॒मनि॑भृष्टमसि व्वा॒चः। अनि॑भृष्ट॒मित्यनि॑ भृष्टम्। अ॒सि॒ व्वा॒चो व्वा॒चो॒स्यसि व्वा॒चो बन्धु॒र्ब्बन्धु॑र्व्वा॒चो॒-स्यसि व्वा॒चो बन्धु॑ः। व्वा॒चो बन्धु॒र्ब्बन्धु॑र्व्वा॒चो व्वा॒चो बन्धु॑स्तपो॒जास्त॑पो॒जा बन्धु॑-र्व्वा॒चो व्वा॒चो बन्धु॑स्तपो॒जाः। बन्धु॑स्तपो॒जास्त॑पो॒जा बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्तपो॒जाः सोम॑-स्य॒ सोम॑स्य तपो॒जा बन्धु॒र्ब्बन्धु॑स्तपो॒जाः सोम॑स्य। त॒पो॒जाः सोम॑स्य॒ सोम॑स्य तपो॒जास्त॑पो॒जाः सोम॑स्य दा॒त्रन्दा॒त्रꣳ सोम॑स्य तपो॒जास्त॑पो॒जाः सोम॑स्य दा॒त्रम्[1]। त॒पो॒जाऽ इति॑ तप॒ः जाः। सोम॑स्य दा॒त्रन्दा॒त्रꣳ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य दा॒त्रम॑स्यसि दा॒त्रꣳ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य दा॒त्रम॑सि। दा॒त्रम॑स्यसि दा॒त्रन्दा॒त्रम॑सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑सि दा॒त्रन्दा॒त्रम॑सि॒ स्वाहा॑। अ॒सि॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑ राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ः स्वाहा॑स्यसि॒ स्वाहा॑ राज॒स्व॒ः। स्वाहा॑ राज॒स्वो॒ राज॒स्व॒ः स्वाहा॒ स्वाहा॑ राज॒स्व॒ः। रा॒ज॒स्व॒ऽ इति॑ राज॒ स्व॒ः॥६॥

स॒ध॒मादो॑ द्युम्म्निनी॑र्द्युम्म्निनी॑ः सध॒माद॑ः सध॒मादो॑ द्युम्म्निनी॒राप॒ऽ आपो॑ द्युम्म्निनी॑ः सध॒माद॑ः सध॒मादो॑ द्युम्म्निनी॒राप॑ः। स॒ध॒मा॒द॒ऽ इति॑ सध॒ माद॑ः। द्युम्म्निनी॒राप॒ऽ आपो॑ द्युम्म्निनी॑र्द्युम्म्निनी॒राप॑ऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ आपो॑ द्युम्म्निनी॑र्द्युम्म्नि-नी॒राप॑ऽ ए॒ताः। आप॑ऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ आप॒ऽ आप॑ऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ आप॒ऽ आप॑ऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाः। ए॒ताऽ अना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒प॒स्योना॑धृष्टाऽ ए॒ताऽ ए॒ताऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्य॒ः। अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒प॒स्योना॑धृष्टा॒ऽ अना॑धृष्टाऽ अप॒स्यो॒ व्वसा॑ना॒ व्वसा॑नाऽ अप॒स्योना॑धृष्टा॒ऽ

[1]. वा. प्रा. ६.२६. के अनुसार दात्रम् पद में दो स्पर्शों का संयोग है।

अनाधृष्टाऽ[1] अपस्यो व्वसानाः। अपस्यो व्वसाना व्वसानाऽ अपस्योपस्यो व्वसानाः। व्वसानाऽ इति वसानाः॥ पस्त्यासु चक्रे चक्रे पस्त्यासु पस्त्यासु चक्रे व्वरुणो व्वरुणश्चक्रे पस्त्यासु पस्त्यासु चक्रे व्वरुणः। चक्रे व्वरुणो व्वरुणश्चक्रे चक्रे व्वरुणः सधस्त्थꣳ सधस्त्थँव्वरुणश्चक्रे चक्रे व्वरुणः सधस्त्थम्। व्वरुणः सधस्त्थꣳ सधस्त्थँव्वरुणो व्वरुणः सधस्त्थमपामपाꣳ सधस्त्थँव्वरुणो व्वरुणः सधस्त्थमपाम्। सधस्त्थमपामपाꣳ सधस्त्थꣳ सधस्त्थमपाꣳ शिशुः शिशुरपाꣳ सधस्त्थꣳ सधस्त्थमपाꣳ शिशुः। सधस्त्थमिति सध स्थम्। अपाꣳ शिशुः शिशुरपामपाꣳ शिशुर्म्मातृतमासु मातृतमासु शिशुरपामपाꣳ शिशुर्म्मातृतमासु। शिशुर्म्मातृतमासु मातृतमासु शिशुः शिशुर्म्मातृतमास्वन्तरन्तर्म्मातृतमासु शिशुः शिशुर्म्मातृतमास्वन्तः। मातृतमास्वन्तरन्तर्म्मातृतमासु मातृतमास्वन्तः। मातृतमास्विति मातृ तमासु। अन्तरित्यन्तः॥७॥

क्षत्रस्योल्बमुल्बङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्योल्बमस्यस्युल्बङ्क्षत्रस्य क्षत्रस्योल्बमसि[2]। उल्बमस्यस्युल्बमुल्बमसि जरायु जराय्ववस्युल्बमुल्बमसि जरायु। असि जरायु जराय्वस्यसि जरायु योनिर्योनिर्जराय्वस्यसि जरायु योनिः। जरायु योनिर्योनिर्जरायु जरायु योनिर्न्नाभिर्न्नाभिर्योनिर्जरायु जरायु योनिर्न्नाभिः। योनिर्न्नाभिर्न्नाभिर्योनिर्योनिर्न्नाभिरिन्द्रस्येन्द्रस्य नाभिर्योनिर्योनिर्न्नाभिरिन्द्रस्य। नाभिरिन्द्रस्येन्द्रस्य नाभिर्न्नाभिरिन्द्रस्य व्वार्त्रघ्नँव्वार्त्रघ्नमिन्द्रस्य नाभिर्न्नाभिरिन्द्रस्य व्वार्त्रघ्नम्[3]। इन्द्रस्य व्वार्त्रघ्नँव्वार्त्रघ्नमिन्द्रस्येन्द्रस्य

---

1. वा.प्रा.५.२४. के अनुसार अनाधृष्टाः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

2. उल्बम् यहाँ स्वरात्संयोगादिर्द्विरुच्यते सर्वत्र(वा.प्रा.४.१०१) इस सूत्र से लकार के द्विरुच्चारण की प्राप्ति है परन्तु ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) इस सूत्र के अनुसार लकारोत्तरवर्ती बकार का द्विरुच्चारण प्राप्त है। वा.प्रा.१.१५९. के अनुसार यहाँ परवर्ती सूत्र प्रबल होगा।

3. वा. प्रा. ३.९२. के अनुसार वार्त्रघ्नम् का नकार प्रकृतिभाव से रहता है।

व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्न॒मिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑। व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नँ॒व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॒ व्वार्त्रँग्घ्नँ॒व्वार्त्रँग्घ्नम्मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य। व्वार्त्रँग्घ्न॒मिति॒ वार्त्रँ घ्नम्। मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ त्वया॒ त्वया॒ व्वरु॑णस्य मि॒त्रस्य॑ मि॒त्रस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ त्वया॑। व्वरु॑णस्य॒ त्वया॒ त्वया॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ त्वया॒यम॒यन्त्वया॒ व्वरु॑णस्य॒ व्वरु॑णस्य॒ त्वया॒यम्। त्वया॒यम॒यन्त्वया॒ त्वया॒यँव्वृ॒त्रँव्वृ॒त्रम॒यन्त्वया॒ त्वया॒यँव्वृ॒त्रम्। अ॒यँव्वृ॒त्रँव्वृ॒त्रम॒यम॒यँव्वृ॒त्रँव्व॑धेद्व्वधेद्वृ॒त्रम॒यम॒यँव्वृ॒त्रँव्व॑धेत्। व्वृ॒त्रँव्व॑धेद्व्वधेद्वृ॒त्रँ-व्वृ॒त्रँव्व॑धेत्। व्व॒धे॒दिति॑ वधेत्॥ द्रू॒बा रु॒जा रु॒जा द्रू॒बा द्रू॒बा रु॒जा क्क्षु॒मा क्क्षु॒मा रु॒जा द्रू॒बा द्रू॒बा रु॒जा क्क्षु॒मा। रु॒जा क्क्षु॒मा क्क्षु॒मा रु॒जा रु॒जा क्क्षु॒मा। क्षु॒मेति॑ क्क्षु॒मा॥ पा॒तैनँ॑मेनम्पा॒त पा॒तैन॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑मेनम्पा॒त पा॒तैन॒म्प्राञ्च॑म्। ए॒न॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑मे-नमेन॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॒म्प्राञ्च॑मेनमेन॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्। प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒-त्यञ्च॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॒म्प्राञ्च॒म्प्राञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्। प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒-र्य्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑म्प्र॒त्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः। ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒र्य्य-ञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त पात दि॒ग्ग्भ्यस्ति॒र्य्यञ्च॑न्ति॒र्य्यञ्च॑न्दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त। दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त पात दि॒ग्ग्भ्यो दि॒ग्ग्भ्यः पा॑त। दि॒ग्ग्भ्यऽ इति॑ दि॒क् भ्यः। पा॒तेति॑ पात॥८॥

आ॒विर्म्मँर्य्या मर्य्याऽ आ॒विरा॒विर्म्मँर्य्या॒ऽ आवि॑त्त॒ऽ आवि॑त्तो मर्य्याऽ आ॒विरा॒विर्म्मँर्य्या॒ऽ आवि॑त्तः[1]। म॒र्य्या॒ऽ आवि॑त्त॒ऽ आवि॑त्तो मर्य्या मर्य्या॒ऽ आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निर॒ग्निरावि॑त्तो मर्य्या मर्य्या॒ऽ आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निः[2]। आवि॑त्तोऽ अ॒ग्निर॒ग्निरा-

---

1. वा. प्रा. २.१६. के अनुसार यहाँ मर्याः पद अनुदात्त है।

2. आवित्तः अग्निः यहाँ वा.प्रा.४.८५. के अनुसार विसर्ग से सम्बन्धित ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

वित्तऽ आवित्तोऽ अग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरावित्तऽ आवित्तोऽ अग्निर्गृहपतिः।
आवित्तऽ इत्या वित्तः। अग्निर्गृहपतिर्गृहपतिरग्निरग्निर्गृहपतिरावित्तऽ आवित्तो
गृहपतिरग्निरग्निर्गृहपतिरावित्तः। गृहपतिरावित्तऽ आवित्तो गृहपतिर्गृहपतिरा-
वित्तऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आवित्तो गृहपतिर्गृहपतिरावित्तऽ इन्द्रः। गृहपतिरिति गृह
पतिः। आवित्तऽ इन्द्रऽ इन्द्रऽ आवित्तऽ आवित्तऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ
आवित्तऽ आवित्तऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः। आवित्तऽ इत्या वित्तः। इन्द्रो वृद्धश्रवा
वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाऽ आवित्तावावित्तौ वृद्धश्रवाऽ इन्द्रऽ इन्द्रो वृद्ध-
श्रवाऽ आवित्तौ। वृद्धश्रवाऽ आवित्तावावित्तौ वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ आवित्तौ मित्रा-
वरुणौ मित्रावरुणावावित्तौ वृद्धश्रवा वृद्धश्रवाऽ आवित्तौ मित्रावरुणौ। वृद्धश्रवाऽ
इति वृद्ध श्रवाः। आवित्तौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणावावित्तावावित्तौ मित्रावरुणौ
धृतव्रतौ धृतव्रतौ मित्रावरुणावावित्तावावित्तौ मित्रावरुणौ धृतव्रतौ। आवित्तावि-
त्या वित्तौ। मित्रावरुणौ धृतव्रतौ धृतव्रतौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ धृतव्रतावावि-
त्तऽ आवित्तो धृतव्रतौ मित्रावरुणौ मित्रावरुणौ धृतव्रतावावित्तः। धृतव्रतावावित्तऽ
आवित्तो धृतव्रतौ धृतव्रतावावित्तः पूषा पूषावित्तो धृतव्रतौ धृतव्रतावावित्तः पूषा।
धृतव्रतावितिं धृत व्रतौ। आवित्तः पूषा पूषावित्तऽ आवित्तः पूषा विश्ववेदा विश्व-
वेदाः पूषावित्तऽ आवित्तः पूषा विश्ववेदाः। आवित्तऽ इत्या वित्तः। पूषा विश्ववेदा
विश्ववेदाः पूषा पूषा विश्ववेदाऽ आवित्तेऽ आवित्ते विश्ववेदाः पूषा पूषा विश्ववेदाऽ
आवित्ते। विश्ववेदाऽ आवित्तेऽ आवित्ते विश्ववेदा विश्ववेदाऽ आवित्ते द्यावापृथिवी
द्यावापृथिवीऽ आवित्ते विश्ववेदा विश्ववेदाऽ आवित्ते द्यावापृथिवी। विश्ववेदाऽ इति
विश्व वेदाः। आवित्ते द्यावापृथिवी द्यावापृथिवीऽ आवित्तेऽ आवित्ते द्यावापृथिवी
विश्वशम्भुवौ विश्वशम्भुवौ द्यावापृथिवीऽ आवित्तेऽ आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वश-

म्भुवौ। आवित्तेऽ इत्या वित्ते[1]। द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवौ विश्वशम्भुवौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावावित्तावित्ता विश्वशम्भुवौ द्यावापृथिवी द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावावित्ता[2]। द्यावापृथिवीऽ इति द्यावापृथिवी। विश्वशम्भुवावावित्तावित्ता विश्वशम्भुवौ विश्वशम्भुवावावित्तादितिरदितिरावित्ता विश्वशम्भुवौ विश्वशम्भुवावावित्तादितिः। विश्वशम्भुवाविति विश्व शम्भुवौ। आवित्तादितिरदितिरावित्तावित्तादितिरुरुशर्म्मोरुशर्म्मादितिरावित्तावित्तादितिरुरुशर्म्मा। आवित्तेत्या वित्ता। अदितिरुरुशर्म्मोरुशर्म्मादितिरदितिरुरुशर्म्मा। उरुशर्म्मेत्युरु शर्म्मा॥९॥

अवेष्टा दन्दशूका दन्दशूकाऽ अवेष्टाऽ अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीम्प्राचीन्दन्दशूकाऽ अवेष्टाऽ अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीम्। अवेष्टाऽ इत्यव इष्टाः। दन्दशूकाः प्राचीम्प्राचीन्दन्दशूका दन्दशूकाः प्राचीमा रोह रोहा प्राचीन्दन्दशूका दन्दशूकाः प्राचीमा रोह। प्राचीमा रोह रोहा प्राचीम्प्राचीमा रोह गायत्री गायत्री रोहा प्राचीम्प्राचीमा रोह गायत्री। आ रोह। रोह गायत्री गायत्री रोह रोह गायत्री त्वा त्वा गायत्री रोह रोह गायत्री त्वा। गायत्री त्वा त्वा गायत्री गायत्री त्वावत्ववतु त्वा गायत्री गायत्री त्वावतु। त्वावत्ववतु त्वा त्वावतु रथन्तरꣳ रथन्तरमवतु त्वा त्वावतु रथन्तरम्। अवतु रथन्तरꣳ रथन्तरमवत्ववतु रथन्तरꣳ साम साम रथन्तरमवत्ववतु रथन्तरꣳ साम। रथन्तरꣳ साम साम रथन्तरꣳ रथन्तरꣳ साम त्रिवृत्त्रिवृत्साम रथन्तरꣳ रथन्तरꣳ साम त्रिवृत्। रथन्तरमिति रथम् तरम्। साम त्रिवृत्त्रिवृत्साम साम त्रिवृत्स्तोम स्तोमस्त्रिवृत्साम साम त्रिवृ-

1. एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) एकार, ईकार एवं ऊकार द्विवचनान्त होने पर प्रगृह्य होते हैं।

2. आवित्ता आवित्ता यहाँ सिं सवर्णे दीर्घम्(वा.प्रा.४.५२) इस सूत्र से दीर्घ होता है।

त्स्तोम॑ः[1]। त्रि॒वृत्स्तोम॒ स्तोम॑स्त्रि॒वृत्त्रि॒वृत्स्तोमो॑ व॒सन्तो॑ व॒सन्त॒ स्तोम॑स्त्रि॒वृ-
त्त्रि॒वृत्स्तोमो॑ व॒सन्तः॑[2]। त्रि॒वृदिति॑ त्रि॒ वृत्। स्तोमो॑ व॒सन्तो॑ व॒सन्त॒ स्तोम॒ स्तोमो॑
व॒सन्त॑ऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्व॑स॒न्त स्तोम॒ स्तोमो॑ व॒सन्त॑ऽ ऋ॒तुः॑। व॒स॒न्त॑ऽ ऋ॒तुर्ऋ॒-
तुर्व॑स॒न्तो व॑स॒न्त॑ऽ ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ऽ ऋ॒तुर्व॑स॒न्तो व॑स॒न्त॑ऽ ऋ॒तुर्ब्रह्म॑। ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ ब्रह्म॑ऽ
ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॑ऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ब्रह्म॒ द्रवि॑णम्। ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॒
ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒म्ब्रह्म॒ ब्रह्म॒ द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णाम्। द्रवि॑ण॒न्द-
क्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह रो॒हा दक्षि॑णा॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒-
न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह॥१०॥

दक्षि॑णा॒मा रो॑ह रो॒हा दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह त्रि॒ष्टुप्त्रि॒स्तुब्रो॒हा
दक्षि॑णा॒न्दक्षि॑णा॒मा रो॑ह त्रि॒ष्टुप्[3]। आ रो॑ह। रो॒ह॒ त्रि॒ष्टुप्त्रि॒स्तुब्रो॑ह रोह त्रि॒ष्टु-
प्प्त्वा॑ त्वा त्रि॒स्तुब्रो॑ह रोह त्रि॒ष्टुप्प्त्वा॑। त्रि॒ष्टुप्प्त्वा॑ त्वा त्रि॒स्तुप्त्रि॒ष्टुप्प्त्वा॑वत्त्ववतु
त्वा त्रि॒स्तुप्त्रि॒ष्टुप्प्त्वा॑वतु। त्रि॒स्तुबिति॑ त्रि॒ स्तुप्। त्वा॒व॒त्त्व॒व॒तु॒ त्वा॒ त्वा॒व॒तु॒ बृ॒हद्
बृ॒हद॑वतु त्वा त्वावतु बृ॒हत्। अ॒व॒तु॒ बृ॒हद् बृ॒हद॑वत्त्ववतु बृ॒हत्साम॒ साम॑ बृ॒हद॑वत्त्व-
वतु बृ॒हत्साम॑। बृ॒हत्साम॒ साम॑ बृ॒हद् बृ॒हत्साम॑ पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒शः साम॑ बृ॒हद्
बृ॒हत्साम॑ पञ्चद॒शः। साम॑ पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒शः साम॒ साम॑ पञ्चद॒श स्तोम॒ स्तोम॑ः
पञ्चद॒शः साम॒ साम॑ पञ्चद॒श स्तोम॑ः। प॒ञ्च॒द॒श स्तोम॒ स्तोम॑ः पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒श
स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्म स्तोम॑ः पञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒श स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मः।
प॒ञ्च॒द॒शऽ इति॑ पञ्च॒ द॒शः। स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्म स्तोम॒ स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मऽ

---

[1]. त्रिवृत्स्तोमः यहाँ पर येस्तु परं तैर्न पूर्वम् (वा. प्रा. ४.१०५) के अनुसार सकार के पूर्व का तकार द्वित्व नहीं होगा।

[2].वसन्तः स्तोमः तथा स्तोमः स्तोमः यहाँ लुङ् मुदि जित्परे(वा.प्रा.३.१३) इस सूत्र से विसर्ग का लोप होता है।

[3].भाविभ्यः सः षं समानपदे(वा.प्रा.३.५६) इस सूत्र के अनुसार त्रिस्तुप् इस पद का सकार षकार होता है, षात्तथौ मूर्धन्यम्(वा.प्रा.३.७९) से षकारोत्तरवर्ती तकार का टकार तथा टकार का द्वित्व ऊष्मान्तस्थाभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) से होता है।

ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ग्ग्री॒ष्म्म स्तोम॒ स्तोमो॑ ग्ग्री॒ष्म्मऽ ऋ॒तुः। ग्री॒ष्म्मऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्मऽ ऋ॒तुः क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रमृ॒तुर्ग्ग्री॒ष्म्मो ग्ग्री॒ष्म्मऽ ऋ॒तुः क्ष॒त्रम्। ऋ॒तुः क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रमृ॒तुर्ऋ॒तुः क्ष॒त्रन्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णङ्क्ष॒त्रमृ॒तुर्ऋ॒तुः क्ष॒त्रन्द्रवि॑णम्। क्ष॒त्रन्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णङ्क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रन्द्रवि॑णम्प्र॒तीची॑म्प्र॒तीची॒न्द्रवि॑णङ्क्ष॒त्रङ्क्ष॒त्रन्द्रवि॑णम्प्र॒तीची॑म्। द्रवि॑णम्प्र॒तीची॑म्प्र॒तीची॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णम्प्र॒तीची॒मा रो॑ह रो॒हा प्प्र॒तीची॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णम्प्र॒तीची॒मा रो॑ह॥११॥

प्र॒तीची॒मा रो॑ह रो॒हा प्प्र॒तीची॑म्प्र॒तीची॒मा रो॑ह॒ जग॑ती॒ जग॑ती रो॒हा प्प्र॒तीची॑म्प्र॒तीची॒मा रो॑ह॒ जग॑ती। आ रो॑ह। रो॒ह॒ जग॑ती॒ जग॑ती रोह रोह॒ जग॑ती त्वा त्वा॒ जग॑ती रोह रोह॒ जग॑ती त्वा। जग॑ती त्वा त्वा॒ जग॑ती॒ जग॑ती त्वावत्त्ववतु त्वा॒ जग॑ती॒ जग॑ती त्वावतु। त्वा॒व॒त्त्व॒व॒तु त्वा॒ त्वा॒व॒तु व्वै॒रू॒पँव्वै॑रू॒पम॑वतु त्वा त्वावतु व्वैरू॒पम्[1]। अ॒व॒तु॒ व्वै॒रू॒पँव्वै॑रू॒पम॑वत्त्ववतु व्वैरू॒पꣳ साम॒ साम॑ व्वैरू॒पम॑वत्त्ववतु व्वैरू॒पꣳ साम॑। व्वै॒रू॒पꣳ साम॒ साम॑ व्वैरू॒पँव्वैरू॒पꣳ साम॑ सप्तद॒शः स॑प्तद॒शः साम॑ व्वैरू॒पँव्वैरू॒पꣳ साम॑ सप्तद॒शः। साम॑ सप्तद॒शः स॑प्तद॒शः साम॒ साम॑ सप्तद॒श स्तोम॒ स्तोम॑÷ सप्तद॒शः साम॒ साम॑ सप्तद॒श स्तोम॑÷। स॒प्त॒द॒श स्तोम॒ स्तोम॑÷ सप्तद॒शः स॑प्तद॒श स्तोमो॑ व्व॒र्षा व्व॒र्षा स्तोम॑÷ सप्तद॒शः स॑प्तद॒श स्तोमो॑ व्व॒र्षाः। स॒प्त॒द॒शऽ इति॑ सप्त द॒शः। स्तोमो॑ व्व॒र्षा व्व॒र्षा स्तोम॒ स्तोमो॑ व्व॒र्षाऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्व्व॒र्षा स्तोम॒ स्तोमो॑ व्व॒र्षाऽ ऋ॒तुः। व्व॒र्षाऽ ऋ॒तुर्ऋ॒तुर्व्व॒र्षा व्व॒र्षाऽ ऋ॒तुर्व्विड्व्वि॒डृ॒तुर्व्व॒र्षा व्व॒र्षाऽ ऋ॒तुर्व्विट्। ऋ॒तुर्व्विड्व्वि॒डृ॒तुर्ऋ॒तुर्व्विड्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँ॒व्विडृ॒तुर्ऋ॒तुर्व्विड्द्रवि॑णम्। व्विड्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँ॒व्विड्व्विड्द्रवि॑ण॒मुदी॑ची॒मुदी॑ची॒न्द्रवि॑णँ॒व्विड्व्विड्द्रवि॑ण॒मुदी॑चीम्। द्रवि॑ण॒मुदी॑ची॒मुदी॑ची॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒मुदी॑ची॒मा रो॑ह रो॒होदी॑ची॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒मुदी॑चीमा रो॑ह॥१२॥

---

[1]. ऐकारौकारौ च (वा. प्रा. ४.१४५) ऐकार एवं औकार एक वर्ण की भाँति उच्चारित होते हैं।

उदीचीमा रोह रोहोदीचीमुदीचीमा रोहानुष्टुबनुस्तुब्रोहोदीचीमुदीचीमा[1] रोहानुष्टुप्। आ रोह। रोहानुष्टुबनुस्तुब्रोह रोहानुष्टुप्त्वा त्वानुस्तुब्रोह रोहानुष्टुप्त्वा। अनुष्टुप्त्वा त्वानुस्तुबनुष्टुप्त्वावत्ववतु त्वानुस्तुबनुष्टुप्त्वावतु। अनुस्तुबित्यनु स्तुप्। त्वावत्ववतु त्वा त्वावतु वैराजँवैराजमवतु त्वा त्वावतु वैराजम्। अवतु वैराजँवैराजमवत्ववतु वैराजꣳ साम साम वैराजमवत्ववतु वैराजꣳ साम। वैराजꣳ साम साम वैराजँवैराजꣳ सामैकविꣳशऽ एकविꣳशः साम वैराजँवैराजꣳ सामैकविꣳशः। सामैकविꣳशऽ एकविꣳशः साम सामैकविꣳश स्तोम स्तोमऽ एकविꣳशः साम सामैकविꣳश स्तोमः। एकविꣳश स्तोम स्तोमऽ एकविꣳशऽ एकविꣳश स्तोमः शरच्छरत्स्तोमऽ एकविꣳशऽ एकविꣳश स्तोमः शरत्[2]। एकविꣳशऽ इत्येक विꣳशः। स्तोमः शरच्छरत्स्तोम स्तोमः शरदृतुर्ऋतुः शरत्स्तोम स्तोमः शरदृतुः। शरदृतुर्ऋतुः शरच्छरदृतुः फलम्फलमृतुः शरच्छरदृतुः फलम्[3]। ऋतुः फलम्फलमृतुर्ऋतुः फलन्द्रविणन्द्रविणम्फलमृतुर्ऋतुः फलन्द्रविणम्। फलन्द्रविणन्द्रविणम्फलम्फलन्द्रविणमूर्द्धामूर्द्धान्द्रविणम्फलम्फलन्द्रविणमूर्द्धाम्। द्रविणमूर्द्धामूर्द्धान्द्रविणन्द्रविणमूर्द्धामा रोह रोहोर्द्धान्द्रविणन्द्रविणमूर्द्धा मा रोह॥१३॥

ऊर्द्धामा रोह रोहोर्द्धामूर्द्धामा रोह पङ्क्तिः पङ्क्ती रोहोर्द्धामूर्द्धामा रोह पङ्क्तिः। आ रोह। रोह पङ्क्तिः पङ्क्ती रोह रोह पङ्क्तिस्त्वा त्वा पङ्क्ती रोह रोह पङ्क्तिस्त्वा। पङ्क्तिस्त्वा त्वा पङ्क्तिः पङ्क्तिस्त्वावत्ववतु त्वा पङ्क्तिः

[1]. रोह आ उदीचीम् यहाँ रोह के साथ सन्धि न करके आ की सन्धि उ के साथ करने पर ओदीचाम् होगा, फिर रोह के साथ ओदीचीम् की सन्धि होने पर रोहौदीचीम् ऐसा स्वरूप हो सकता है परन्तु ऋ.प्रा. के नियम आनुपूर्व्येण सन्धीन् के अनुसार हमें सर्वप्रथम रोह की सन्धि आ के साथ करनी होगी तदनन्तर रोहा की सन्धि उ के साथ।

[2]. शरत्स्तोमः यहाँ सकार के पहले तथा बाद के तकार का द्वित्व नहीं होगा, येस्तु परं तैर्न पूर्वम्(वा.प्रा.४.१०५), तथा नास्वरपूर्वा ऊष्मान्तस्थाः (वा.प्रा. ४.१०६)

[3]. प्रकृत्या कखयोः पफयोश्च (वा. प्रा. ३.११) इस सूत्र के अनुसार यहाँ फकार परे रहते विसर्ग अविकृत रहता है।

प॒ङ्क्तिस्त्वा॑वतु । त्वा॒व॒त्व॒व॒तु॒ त्वा॒ त्वा॒व॒तु॒ शा॒क्व॒र॒रै॒व॒ते शा॑क्वररैव॒तेऽ॑वतु त्वा त्वावतु शाक्वररैव॒ते। अ॒व॒तु॒ शा॒क्व॒र॒रै॒व॒ते शा॑क्वररैव॒तेऽ॑वत्ववतु शाक्वररैव॒ते साम॑नी॒ साम॑नी शाक्वररैव॒तेऽ॑वत्ववतु शाक्वररैव॒ते साम॑नी। शा॒क्व॒र॒रै॒व॒ते साम॑नी॒ साम॑नी शाक्वररैव॒ते शा॑क्वररैव॒ते साम॑नी त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ त्रि॑नवत्रय-स्त्रि॒ꣳशौ साम॑नी शाक्वररैव॒ते शा॑क्वररैव॒ते साम॑नी त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ। शा॒क्व॒-र॒रै॒व॒तेऽ इति॑ शाक्वररैव॒ते। साम॑नी त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ त्रि॑नवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ साम॑-नी॒ साम॑नी त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॒ स्तोमौ॑ त्रिनवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ साम॑नी॒ साम॑-नी त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॑। साम॑नी॒ऽ इति॒ साम॑नी। त्रि॒ण॒व॒त्र॒य॒स्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॒ स्तोमौ॑ त्रिनवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ त्रि॑णवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॑ हेमन्तशिशि॒रौ हे॑मन्तशिशि॒रौ स्तोमौ॑ त्रिनवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ त्रि॑णवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॑ हेमन्तशि-शि॒रौ। त्रि॒न॒व॒त्र॒य॒स्त्रि॒ꣳशावि॒ति॑ त्रिनवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ। स्तोमौ॑ हेमन्तशिशि॒रौ हे॑म-न्तशिशि॒रौ स्तोमौ॒ स्तोमौ॑ हेमन्तशिशि॒रावृ॒तूऽ ऋ॒तू हे॑मन्तशिशि॒रौ स्तोमौ॒ स्तोमौ॑ हेमन्तशिशि॒रावृ॒तू। हे॒म॒न्त॒शि॒शि॒रावृ॒तूऽ ऋ॒तू हे॑मन्तशिशि॒रौ हे॑मन्तशि-शि॒रावृ॒तू ब्वर्चो॒ ब्वर्चँऽ ऋ॒तू हे॑मन्तशिशि॒रौ हे॑मन्तशिशि॒रावृ॒तू ब्वर्चः॑। ऋ॒तू ब्वर्चो॒ ब्वर्चँऽ ऋ॒तूऽ ऋ॒तू ब्वर्चो॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँ॒ब्वर्चँऽ ऋ॒तूऽ ऋ॒तू ब्वर्चो॒ द्रवि॑णम्। ऋ॒तूऽ इत्यृ॒तू। ब्वर्चो॒ द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑णँ॒ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒ द्रवि॑ण॒म्प्रत्य॑स्त॒म्प्रत्य॑स्त॒न्द्रवि॑णँ॒ब्वर्चो॒ ब्वर्चो॒ द्रवि॑ण॒म्प्रत्य॑स्तम्। द्रवि॑ण॒म्प्रत्य॑स्त॒म्प्रत्य॑स्त॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्प्रत्य॑स्त॒न्नमु॑चे॒-र्न्नमु॑चे॒ः प्रत्य॑स्त॒न्द्रवि॑ण॒न्द्रवि॑ण॒म्प्रत्य॑स्त॒न्नमु॑चेः। प्रत्य॑स्त॒न्नमु॑चे॒र्न्नमु॑चे॒ः प्प्रत्य॑-स्त॒म्प्रत्य॑स्त॒न्नमु॑चे॒ः शिर॒ः शिरो॒ नमु॑चे॒ः प्प्रत्य॑स्त॒म्प्रत्य॑स्त॒न्नमु॑चे॒ः शिरः॑। प्रत्य॑स्त॒मिति॒ प्प्रति॑ अस्तम्। नमु॑चे॒ः शिर॒ः शिरो॒ नमु॑चे॒र्न्नमु॑चे॒ः शिरः॑। शिर॒ऽ इति॒ शिरः॑॥ मृत्यो॑ः पा॑हि पाहि मृत्यो॑र्मृत्यो॑ः पा॒ह्योज॒ऽ ओजः॑ पाहि मृ॒त्यो-

मृत्योः[1] पाह्योजः। पाह्योजऽ ओजः पाहि पाह्योजोस्यस्योजः पाहि पाह्योजोसि। ओजोस्यस्योजऽ ओजोसि सहः सहोस्योजऽ ओजोसि सहः। असि सहः सहोस्यसि सहोमृतममृतꣳ सहोस्यसि सहोमृतम्[2]। सहोमृतम-मृतꣳ सहः सहोमृतम्। अमृतमित्यमृतम्॥१४॥

हिरण्यरूपाऽ उषसऽ उषसो हिरण्यरूपौ हिरण्यरूपाऽ उषसो व्विरोके व्विरोकऽ उषसो हिरण्यरूपौ हिरण्यरूपाऽ उषसो व्विरोके। हिरण्यरूपाविति हिरण्य रूपौ। उषसो व्विरोके व्विरोकऽ उषसऽ उषसो व्विरोकऽ उभाऽ उभौ व्विरोकऽ उषसऽ उषसो व्विरोकऽ उभौ। व्विरोकऽ उभाऽ उभौ व्विरोके व्विरोकऽ उभाविन्द्राविन्द्राऽ उभौ व्विरोके व्विरोकऽ उभाविन्द्रौ। व्विरोकऽ इति वि रोके। उभाविन्द्राविन्द्राऽ उभाऽ उभाविन्द्राऽ उदुदिन्द्राऽ उभाऽ उभाविन्द्राऽ[3] उत्। इन्द्राऽ उदुदिन्द्राविन्द्राऽ उदिथऽ इथऽ उदिन्द्राविन्द्राऽ उदिथः। उदिथऽ इथऽ उदुदिथः सूर्य्यः सूर्य्यऽ इथऽ उदुदिथः सूर्य्यः। इथः सूर्य्यः सूर्य्यऽ इथऽ इथः सूर्य्यश्च च सूर्य्यऽ इथऽ इथः सूर्य्यश्च। सूर्य्यश्च च सूर्य्यः सूर्य्यश्च। चेति च॥ आ रोहतꣳ रोहतमा रोहतँव्वरुण व्वरुण रोहतमा रोहतँव्वरुण। रोहतँव्वरुण व्वरुण रोहतꣳ रोहतँव्वरुण मित्र मित्र व्वरुण रोहतꣳ रोहतँव्वरुण मित्र। व्वरुण मित्र मित्र व्वरुण व्वरुण मित्र गर्त्तङ्गर्त्तम्मित्र व्वरुण व्वरुण मित्र गर्त्तम्। मित्र गर्त्तङ्गर्त्तम्मित्र मित्र गर्त्तन्ततस्ततो गर्त्तम्मित्र मित्र गर्त्तन्ततः। गर्त्तन्ततस्ततो गर्त्तङ्गर्त्तन्ततश्च-

1.ऋवर्णे(वा.प्रा.४.११३) इस सूत्र के अनुसार मृत्योर्मृत्योः यहाँ रेफ से परवर्ती मकार का द्वित्व नहीं होगा। भाष्यकारों के अनुसार ऊष्मान्तस्याभ्यश्च स्पर्शः(वा.प्रा.४.१०३) के द्वारा प्राप्त द्वित्व का ही उपर्युक्त सूत्र के द्वारा प्रतिषेध अथवा अपवाद मानना विचारणीय है।

2. सङ्क्रमे च सर्वत्र (वा. प्रा. ४.८१) सङ्क्रम में सर्वत्र अकार का अभिनिधान होता है। यहाँ सहः से परे असि पद पुनरुक्त (गलत्) होने के कारण सहः का अमृतम् के साथ सन्धि करना सङ्क्रम कहलाता है। गलत् पद को गणान्त भी कहा जाता है।

3. उभौ इन्द्रौ यहाँ सन्ध्यक्षरमयवायावम्(वा.प्रा.४.४८) से आव् होता है। न वकारस्यासस्थान एकेषाम्(वा.प्रा.४.१२८) इस सूत्र से उभाविन्द्रौ यहाँ वकार का लोप नहीं होता है। उभाऽ उभौ यहां लोप विहित है।

क्षाथाञ्चक्षाथा॒न्तते॒ गर्त्त॒ङ्गर्त्त॒न्तत॑ञ्चक्षाथाम्। तत॑ञ्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒न्तत॒स्तत॑ञ्चक्षाथा॒मदि॑ति॒मदि॑तिञ्चक्षाथा॒न्तत॒स्तत॑ञ्चक्षाथा॒मदि॑तिम्। च॒क्षा॒था॒मदि॑ति॒मदि॑तिञ्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒मदि॑ति॒न्दिति॒न्दिति॒मदि॑तिञ्चक्षाथाञ्चक्षाथा॒मदि॑ति॒न्दिति॑म्। अदि॑ति॒न्दिति॒न्दिति॒मदि॑ति॒मदि॑ति॒न्दिति॑ञ्च च॒ दिति॒मदि॑ति॒मदि॑ति॒न्दिति॑ञ्च। दिति॑ञ्च च॒ दिति॒न्दिति॑ञ्च मि॒त्रो मि॒त्रश्च॒ दिति॒न्दिति॑ञ्च मि॒त्रः। च॒ मि॒त्रो मि॒त्रश्च॑ च मि॒त्रो॑स्यसि मि॒त्रश्च॑ च मि॒त्रो॑सि। मि॒त्रो॑स्यसि मि॒त्रो मि॒त्रो॑सि॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णोसि मि॒त्रो मि॒त्रो॑सि॒ व्वरु॑णः। अ॒सि॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णोसि। व्वरु॑णोस्यसि॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णोसि। अ॒सीत्य॑सि॥१५॥

सोम॑स्य त्वा त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा द्यु॒म्नेन॑ द्यु॒म्नेन॑ त्वा॒ सोम॑स्य॒ सोम॑स्य त्वा द्यु॒म्नेन॑। त्वा॒ द्यु॒म्नेन॑ द्यु॒म्नेन॑ त्वा त्वा द्यु॒म्नेना॒भ्यु॒भि द्यु॒म्नेन॑ त्वा त्वा द्यु॒म्नेना॒भि। द्यु॒म्नेना॒भ्यु॒भि द्यु॒म्नेन॑ द्यु॒म्नेना॒भि षि॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्यु॒भि द्यु॒म्नेन॑ द्यु॒म्नेना॒भि षि॑ञ्चामि[1]। अ॒भि षि॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्यु॒भ्यु॒भि षि॑ञ्चाम्म्यु॒ग्ने॒रग्नेः सि॑ञ्चाम्म्यु॒भ्यु॒भि षि॑ञ्चाम्म्यु॒ग्नेः। सि॒ञ्चा॒म्म्यु॒ग्ने॒र॒ग्नेः सि॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्यु॒ग्नेर्भ्राज॑सा॒ भ्राज॑सा॒ग्नेः सि॑ञ्चामि सिञ्चाम्म्यु॒ग्नेर्भ्राज॑सा। अ॒ग्नेर्भ्राज॑सा॒ भ्राज॑सा॒ग्ने॒र॒ग्नेर्भ्राज॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ भ्राज॑सा॒ग्ने॒र॒ग्नेर्भ्राज॑सा॒ सूर्य॑स्य। भ्राज॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ भ्राज॑सा॒ भ्राज॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ भ्राज॑सा॒ भ्राज॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा। सूर्य॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ व्वर्च॒सेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ सूर्य॑स्य॒ व्वर्च॒सेन्द्र॑स्य। व्वर्च॒सेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॒सेन्द्र॑स्येन्द्रि॒येणे॑न्द्रि॒येणेन्द्र॑स्य॒ व्वर्च॑सा॒ व्वर्च॒सेन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॑। इन्द्र॑स्येन्द्रि॒येणे॑न्द्रि॒येणेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॑। इ॒न्द्रि॒येणेती॑न्द्रि॒येण॑॥ क्ष॒त्राणा॑ङ्क्ष॒त्रप॑तिः

[1]. अभेश्च (वा. प्रा. ३.६३) अभि से परवर्ती सकार षकार हो जाता है। अतः अभि के पश्चात् सिञ्चामि की सन्धि करने पर षकार होगा। अन्यथा सिञ्चामि ही रहेगा।

क्ष॒त्रप॑तिः क्ष॒त्राणा॑ङ्क्ष॒त्राणा॑ङ्क्ष॒त्रप॑तिरेद्ध्येधि क्ष॒त्रप॑तिः क्ष॒त्राणा॑ङ्क्ष॒त्राणा॑ङ्क्ष॒त्रप॑तिरेधि। क्ष॒त्रप॑तिरेद्ध्येधि क्ष॒त्रप॑तिः क्ष॒त्रप॑तिरे॒द्ध्यत्त्यत्त्ये॑धि क्ष॒त्रप॑तिः क्ष॒त्रप॑तिरे॒द्ध्यति॑। क्ष॒त्रप॑ति॒रिति॑ क्ष॒त्र प॑तिः। ए॒द्ध्यत्त्यत्त्ये॑द्ध्ये॒द्ध्यति॑ दि॒द्यून्दि॒द्यूनत्त्ये॑द्ध्ये॒द्ध्यति॑ दि॒द्यून्। अति॑ दि॒द्यून्दि॒द्यूनत्त्यति॑ दि॒द्यून्पा॑हि पाहि दि॒द्यूनत्त्यति॑ दि॒द्यून्पा॑हि। दि॒द्यून्पा॑हि पाहि दि॒द्यून्दि॒द्यून्पा॑हि। पा॒हीति॑ पाहि॥१६॥

प्र पर्व्व॑तस्य॒ पर्व्व॑तस्य॒ प्प्र प्प्र पर्व्व॑तस्य वृ॒ष॒भस्य॑ वृ॒ष॒भस्य॒ पर्व्व॑तस्य॒ प्प्र प्प्र पर्व्व॑तस्य वृ॒ष॒भस्य॑। पर्व्व॑तस्य वृ॒ष॒भस्य॑ वृ॒ष॒भस्य॒ पर्व्व॑तस्य॒ पर्व्व॑तस्य वृ॒ष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठात्पृ॒ष्ठाद्वृ॒ष॒भस्य॒ पर्व्व॑तस्य॒ पर्व्व॑तस्य वृ॒ष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठात्। वृ॒ष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठात्पृ॒ष्ठाद्वृ॒ष॒भस्य॑ वृ॒ष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठान्नावो॒ नाव॑ः पृ॒ष्ठाद्वृ॒ष॒भस्य॑ वृ॒ष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठान्नाव॑ः। पृ॒ष्ठान्नावो॒ नाव॑ः पृ॒ष्ठात्पृ॒ष्ठान्नाव॑श्चरन्ति चरन्ति॒ नाव॑ः पृ॒ष्ठात्पृ॒ष्ठान्नाव॑श्चरन्ति[1]। नाव॑श्चरन्ति चरन्ति॒ नावो॒ नाव॑श्चरन्ति स्व॒सिच॑ः स्व॒सिच॑श्चरन्ति॒ नावो॒ नाव॑श्चरन्ति स्व॒सिच॑ः। च॒र॒न्ति॒ स्व॒सिच॑ः स्व॒सिच॑श्चरन्ति चरन्ति स्व॒सिच॑ऽ इया॒नाऽ ई॑या॒नाः स्व॒सिच॑श्चरन्ति चरन्ति स्व॒सिच॑ऽ इया॒नाः। स्व॒सिच॑ऽ इया॒नाऽ ई॑या॒नाः स्व॒सिच॑ः स्व॒सिच॑ऽ इया॒नाः। स्व॒सिच॒ऽ इति॑ स्व॒ सिच॑ः। इ॒या॒नाऽ इती॑या॒नाः॥ ताऽ आव॑वृत्रन्नववृ॒त्र॒न्ना तास्ताऽ आव॑वृत्रन्नध॒राग॑ध॒राग॑ववृ॒त्र॒न्ना तास्ताऽ आव॑वृत्रन्नध॒राक्। आव॑वृत्रन्[2]। अ॒व॒वृ॒त्र॒न्न॒ध॒राग॑ध॒राग॑ववृत्रन्नववृत्रन्नध॒रागुद॑क्ता॒ऽ उद॑क्ताऽ अध॒राग॑ववृत्रन्नववृत्रन्नध॒रागुद॑क्ताः। अ॒ध॒रागुद॑क्ता॒ऽ उद॑क्ताऽ अध॒राग॑ध॒रागुद॑क्ता॒ऽ अहि॒मह॒िमुद॑क्ताऽ अध॒राग॑ध॒रागुद॑क्ता॒ऽ अहि॑म्। उद॑क्ता॒ऽ अहि॒मह॒िमुद॑क्ता॒ऽ उद॑क्ता॒ऽ अहि॑म्बु॒ध्न्य॒म्बु॒ध्न्य॒मह॒िमुद॑क्ता॒ऽ उद॑क्ता॒ऽ अहि॑म्बु॒ध्न्य॒म्। उद॑क्ता॒ऽ इत्युत्

---

[1]. नावः चरन्ति यहाँ विसर्जनीयः(वा.प्रा.३.६) इसके अधिकार में पठित सूत्र चछयोः शम्(वा.प्रा.३.७) से विसर्ग शकार होता है।

[2]. प्रकृत्या पदान्तीयः (वा. प्रा. ३.८९) पद के अन्त में स्थित नकार अविकृत रहता है।

अंक्काः। अहिम्बुद्ध्यम्बुद्ध्यमहिमहिम्बुद्ध्यमन्वनु बुद्ध्यमहिमहिम्बुद्ध्यमनु। बुद्ध्यमन्वनु बुद्ध्यम्बुद्ध्यमनु रीयमाणा रीयमाणाऽ अनु बुद्ध्यम्बुद्ध्यमनु रीयमाणाः। अनु रीयमाणा रीयमाणाऽ अन्वनु रीयमाणाः। रीयमाणाऽ इति रीयमाणाः॥ ब्विष्णोर्ब्विक्रमणँब्विक्रमणँब्विष्णोर्ब्विष्णोर्ब्विक्रमणमस्यसि ब्विक्रमणँब्विष्णोर्ब्विष्णोर्ब्विक्रमणमसि। ब्विक्रमणमस्यसि ब्विक्रमणँब्विक्रमणमसि ब्विक्रान्तँब्विक्रान्तमसि ब्विक्रमणँब्विक्रमणमसि ब्विक्रान्तम्। ब्विक्रमणमिति वि क्रमणम्। असि ब्विक्रान्तँब्विक्रान्तमस्यसि ब्विक्रान्तङ्क्रान्तङ्क्रान्तँब्विक्रान्तमस्यसि ब्विक्रान्तङ्क्रान्तम्। ब्विक्रान्तङ्क्रान्तङ्क्रान्तँब्विक्रान्तँब्विक्रान्तङ्क्रान्तम् । ब्विक्रान्तमिति वि क्रान्तम्। क्रान्तमिति क्रान्तम्॥१७॥

प्रजापते न न प्प्रजापते प्प्रजापते न त्वत्त्वन्न प्प्रजापते प्प्रजापते न त्वत् । प्रजापतऽ इति प्प्रजा पते। न त्वत्त्वन्न न त्वदेतान्न्येतानि त्वन्न न त्वदेतानि। त्वदेतान्न्येतानि त्वत्त्वदेतान्न्यन्न्योन्न्यऽ एतानि त्वत्त्वदेतान्न्यन्न्यः। एतान्न्यन्न्योन्न्यऽ एतान्न्येतान्न्यन्न्यो ब्विश्श्वा ब्विश्श्वान्न्यऽ एतान्न्येतान्न्यन्न्यो ब्विश्श्वा। अन्न्यो ब्विश्श्वा ब्विश्श्वान्न्योन्न्यो ब्विश्श्वा रूपाणि रूपाणि ब्विश्श्वान्न्योन्न्यो ब्विश्श्वा रूपाणि। ब्विश्श्वा रूपाणि रूपाणि ब्विश्श्वा ब्विश्श्वा रूपाणि परि परि रूपाणि ब्विश्श्वा ब्विश्श्वा रूपाणि परि। रूपाणि परि परि रूपाणि रूपाणि परि ता ता परि रूपाणि रूपाणि परि ता[1]। परि ता ता परि परि ता बभूव बभूव ता परि परि ता बभूव। ता बभूव बभूव ता ता बभूव। बभूवेति बभूव॥ यत्कामास्त्ते ते यत्कामा यत्कामास्त्ते जुहुमो जुहुमस्त्ते यत्कामा यत्कामास्त्ते जुहुमः[2]। यत्कामाऽ इति यत् कामाः। ते जुहुमो जुहुमस्त्ते ते जुहुमस्ततज्जुहुमस्त्ते ते जुहुमस्तत्। जुहुमस्ततज्जुहुमो जुहुमस्तन्नो

---

1. वा.प्रा.४.३१. के अनुसार यहाँ ता पद स्वरान्त है।

2. वो वां ते त्वदर्थे(वा.प्रा.२.५) के अनुसार यहाँ ते पद अनुदात है।

न॒स्तज्जु॑हु॒मो जु॑हु॒मस्तन्न॑ः। तन्नो॑ न॒स्तत्तन्नो॑ऽ अस्त्वस्तु न॒स्तत्तन्नो॑ऽ अस्तु। नो॒ऽ अ॒स्त्व॒स्तु नो॒ नो॒ऽ अ॒स्त्व॒यम॒यम॑स्तु नो नोऽ अस्त्व॒यम्। अ॒स्त्व॒यम॒यम॑स्त्व-स्त्व॒यम॒मुष्ष्या॒मुष्ष्या॒यम॑स्त्वस्त्व॒यम॒मुष्ष्य॑। अ॒यम॒मुष्ष्या॒मुष्ष्या॒यम॒यम॒मुष्ष्य॑ पि॒ता पि॒तामुष्ष्या॒यम॒यम॒मुष्ष्य॑ पि॒ता। अ॒मुष्ष्य॑ पि॒ता पि॒तामुष्ष्या॒मुष्ष्य॑ पि॒तासाव॒सौ पि॒तामुष्ष्या॒मुष्ष्य॑ पि॒तासौ। पि॒तासाव॒सौ पि॒ता पि॒तासाव॒स्यास्यासौ पि॒ता पि॒तासाव॒स्य[1]। अ॒साव॒स्यास्यासाव॒साव॒स्य पि॒ता पि॒तास्यासाव॒साव॒स्य पि॒ता। अ॒स्य पि॒ता पि॒तास्यास्य पि॒ता व्व॒यँव्व॒यम्पि॒तास्यास्य पि॒ता व्व॒यम्। पि॒ता व्व॒यँव्व॒यम्पि॒ता पि॒ता व्व॒यꣳ स्या॑म स्याम व्व॒यम्पि॒ता पि॒ता व्व॒यꣳ स्या॑म। व्व॒यꣳ स्या॑म स्याम व्व॒यँव्व॒यꣳ स्या॑म॒ पत॑य॒ः पत॑यः स्याम व्व॒यँव्व॒यꣳ स्या॑म॒ पत॑यः। स्या॒म॒ पत॑य॒ः पत॑यः स्याम स्याम॒ पत॑यो र॒यी॒णाꣳ र॑यी॒णाम्पत॑यः स्याम स्याम॒ पत॑यो र॒यी॒णाम्। पत॑यो र॒यी॒णाꣳ र॑यी॒णाम्पत॑य॒ः पत॑यो र॒यी॒णाꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ र॒यी॒णाम्पत॑य॒ः पत॑यो र॒यी॒णाꣳ स्वाहा॑। र॒यी॒णाꣳ स्वाहा॒ स्वाहा॑ र॒यी॒णाꣳ र॑यी॒णाꣳ स्वाहा॑। स्वाहेति॒ स्वाहा॑॥ रुद्र॒ यद्यद्रु॑द्र॒ रुद्र॒ यत्तेँ॑ ते॒ यद्रु॑द्र॒ रुद्र॒ यत्ते॑। यत्ते॑ ते॒ यद्यत्ते॒ क्रिवि॒ क्रिवि॑ ते॒ यद्यत्ते॒ क्रिवि॑। ते॒ क्रिवि॒ क्रिवि॑ ते ते॒ क्रिवि॒ प॒रम्प॒रङ्क्रिवि॑ ते ते॒ क्रिवि॒ पर॑म्। क्रिवि॒ प॒रम्प॒रङ्क्रिवि॒ क्रिवि॒ प॒रन्नाम॒ नाम॒ प॒रङ्क्रिवि॒ क्रिवि॒ प॒रन्नाम॑। प॒रन्नाम॒ नाम॒ प॒रम्प॒रन्नाम॒ तस्मि॒म्मँ॒स्तस्मि॒न्नाम॒ प॒रम्प॒रन्नाम॒ तस्मि॑न्[2]। नाम॒ तस्मि॒म्मँ॒स्तस्मि॒न्नाम॒ नाम॒ तस्मि॑न्हु॒तꣳ हु॒तन्तस्मि॒न्नाम॒ नाम॒ तस्मि॑न्हु॒तम्। तस्मि॑न्हु॒तꣳ हु॒तन्तस्मि॒म्मँ॒स्तस्मि॑न्हु॒तम॑स्यसि हु॒तन्तस्मि॒म्मँ॒स्तस्मि॑न्हु॒तम॑सि। हु॒तम॑स्यसि हु॒तꣳ हु॒तम॑स्यमे॒ष्टम॑मे॒ष्टम॑सि हु॒तꣳ हु॒तम॑स्यमे॒ष्टम्। अ॒स्य॒मे॒ष्टम॑मे॒ष्ट-

---

[1]. वा. प्रा. २.६१. के अनुसार यहाँ अ॒स्य पद अन्तोदात है।

[2]. तस्मिन् तस्मिन् यहाँ नुः(वा.प्रा.३.१३३) इस अधिकार सूत्र के अन्तर्गत पठित सूत्र तथयोः सम्(वा.प्रा.३.१३५) से नकार सकार होता है तथा उपधा अनुनासिक।

मस्यस्यमेष्टमस्यस्यमेष्टमस्यस्यमेष्टमसि। अमेष्टमस्यस्यमेष्टममेष्टमसि स्वाहा स्वाहास्यमेष्टममेष्टमसि स्वाहा। अमेष्टमित्यमा इष्टम्। असि स्वाहा स्वाहास्यसि स्वाहा। स्वाहेति स्वाहा॥१८॥

मित्रावरुणयोस्त्वा त्वा मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोस्त्वा मित्रावरुणयोर्म्मित्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः। त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोस्त्वा त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोस्त्वा त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा। प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि युनज्मि प्प्रशिषा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि। प्रशास्त्रोरिति प्प्र शास्त्रोः। प्रशिषा युनज्मि युनज्मि प्प्रशिषा प्प्रशिषा युनज्मि। प्रशिषेति प्प्र शिषा। युनज्मीति युनज्मि॥ अध्ध्वरथायै त्वा त्वाध्ध्वरथाया ऽ अध्ध्वरथायै त्वा स्वधायै स्वधायै त्वाध्ध्वरथाया ऽ अध्ध्वरथायै त्वा स्वधायै। त्वा स्वधायै स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै त्वा। स्वधायै त्वा त्वा स्वधायै स्वधायै त्वारिष्टोरिष्टस्त्वा स्वधायै स्वधायै त्वारिष्टः। त्वारिष्टोरिष्टस्त्वा त्वारिष्टो ऽ अर्ज्जुनोर्ज्जुनोरिष्टस्त्वा त्वारिष्टो ऽ अर्ज्जुनः[1]। अरिष्टो ऽ अर्ज्जुनोर्ज्जुनोरिष्टोरिष्टो ऽ अर्ज्जुनो मरुताम्मरुतामर्ज्जुनोरिष्टोरिष्टो ऽ अर्ज्जुनो मरुताम्। अर्ज्जुनो मरुताम्मरुतामर्ज्जुनोर्ज्जुनो मरुताम्प्रसवेन प्प्रसवेन मरुतामर्ज्जुनोर्ज्जुनो मरुताम्प्रसवेन। मरुताम्प्रसवेन प्प्रसवेन मरुताम्मरुताम्प्रसवेन जय जय प्प्रसवेन मरुताम्मरुताम्प्रसवेन जय। प्रसवेन जय जय प्प्रसवेन प्प्रसवेन जयापामापाम जय प्प्रसवेन प्प्रसवेन जयापाम। प्रसवेनेति प्प्र सवेन। जयापामापाम जय जयापाम् मनसा मनसापाम जय जयापाम् मनसा। आपाम्

[1]. वा. प्रा. ४.८५. के अनुसार अरिष्टो अर्जुनः यहाँ ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

मनसा मनसापामापाम मनसा सꣳ सम्मनसापामापाम मनसा[1] सम्। मनसा सꣳ सम्मनसा मनसा समिन्द्रियेणेन्द्रियेण सम्मनसा मनसा समिन्द्रियेण। समिन्द्रियेणेन्द्रियेण सꣳ समिन्द्रियेण। इन्द्रियेणेतीन्द्रियेण॥१९॥

मा ते ते मा मा तऽ इन्द्रेन्द्र ते मा मा तऽ इन्द्र। तऽ इन्द्रेन्द्र ते तऽ इन्द्र ते तऽ इन्द्र ते तऽ इन्द्र ते। इन्द्र ते तऽ इन्द्रेन्द्र ते व्वयँव्वयन्तऽ इन्द्रेन्द्र ते व्वयम्। ते व्वयँव्वयन्ते ते व्वयन्तुराषाट्ट् तुराषाड्व्वयन्ते ते व्वयन्तुराषाट्। व्वयन्तुराषाट्ट् तुराषा-ड्व्वयँव्वयन्तुराषाडयुक्तासोयुक्तासस्तुराषाड्व्वयँव्वयन्तुराषाडयुक्तासः। तुराषाडयुक्ता-सोयुक्तासस्तुराषाट्ट् तुराषाडयुक्तासोऽ अब्रह्मताब्रह्मतायुक्तासस्तुराषाट्ट् तुराषाड-युक्तासोऽ अब्रह्मता। अयुक्तासोऽ अब्रह्मताब्रह्मतायुक्तासोयुक्तासोऽ अब्रह्मता व्वि ध्यब्रह्मतायुक्तासोयुक्तासोऽ अब्रह्मता व्वि। अब्रह्मता व्वि ध्यब्रह्मताब्रह्मता व्वि दसाम दसाम ध्यब्रह्मताब्रह्मता व्वि दसाम। व्वि दसाम दसाम व्वि वि दसाम। दसामेति दसाम॥ तिष्ठा रथꣳ रथन्तिष्ठ तिष्ठा रथमध्यधि रथन्तिष्ठ तिष्ठा[2] रथमधि। रथमध्यधि रथꣳ रथमधि यँय्यमधि रथꣳ रथमधि यम्। अधि यँय्यमध्यधि यँव्वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्त यमध्यधि यँव्वज्ज्रहस्त। यँव्वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्त यँय्यँ-व्वज्ज्रहस्ता रश्म्मीन्न्रश्म्मीना वज्ज्रहस्त यँय्यँव्वज्ज्रहस्ता रश्म्मीन्। व्वज्ज्रहस्ता रश्म्मीन्न्रश्म्मीना वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्ता रश्म्मीन्देव देव रश्म्मीना वज्ज्रहस्त व्वज्ज्रहस्ता रश्म्मीन्देव। व्वज्ज्रहस्तेति वज्ज्र हस्त। आ रश्म्मीन्। रश्म्मीन्देव देव रश्म्मीन्न्रश्म्मीन्देव यमसे यमसे देव रश्म्मीन्न्रश्म्मीन्देव यमसे। देव यमसे

1. भाष्यकार उव्वट तथा महीधर ने अपाम पद माना है। अथ मध्ये गवामुद्यच्छति। आपाम मनसेति।- श.ब्रा.५.४.३.९. यहाँ आपाम पद है।

2. तिष्ठाद्युदात्तम् (वा. प्रा. ३.१०३) आद्युदात्त तिष्ठ पद का अकार दीर्घ हो जाता है।

य॒म॒से दे॒व दे॒व य॒म॒से स्वश्वा॒न्त्स्वश्वा॑न्यमसे देव देव यमसे॒ स्वश्वा॑न्। य॒म॒से स्वश्वा॒न्त्स्वश्वा॑न्यमसे यमसे॒ स्वश्वा॑न्। स्वश्वा॒निति॑ सु अश्वा॑न्॥२०॥

अ॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये गृ॒हप॑तये॒ग्नये॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ गृ॒हप॑तये॒ग्न-ये॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॑। गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ स्वाहा॑ गृ॒हप॑तये गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॑ गृ॒हप॑तये गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य। गृ॒हप॑तय॒ऽ इति॑ गृ॒ह प॑तये। स्वाहा॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये। सोमा॑य॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये म॒रुता॑म्म॒रुताँ॒व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ सोमा॑य॒ सोमा॑य॒ व्व॒न॒स्प्पत-ये म॒रुता॑म्। व्व॒न॒स्प्पत॑ये म॒रुता॑म्म॒रुताँ॒व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये म॒रुता॒मोज॑स॒ऽ ओज॑से म॒रुताँ॒व्व॒न॒स्प्पत॑ये॒ व्व॒न॒स्प्पत॑ये[1] म॒रुता॒मोज॑से। म॒रुता॒मोज॑स॒ऽ ओज॑से म॒रुता॑म्म॒रुता॒मोज॑स॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॒स्यौज॑से म॒रुता॑म्म॒रुता॒मोज॑स॒ऽ इन्द्र॑स्य। ओज॑स॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॒स्यौज॑स॒ऽ ओज॑स॒ऽ इन्द्र॑स्येन्द्रि॒याये॑न्द्रि॒यायेन्द्र॒स्यौज॑स॒ऽ ओज॑स॒ऽ इन्द्र॑स्येन्द्रि॒याय॑। इन्द्र॑स्येन्द्रि॒याये॑न्द्रि॒यायेन्द्र॒स्येन्द्र॑स्येन्द्रि॒याय॑। इ॒न्द्रि॒-यायेती॑न्द्रि॒याय॑॥ पृथि॑वि मातर्म्मा॑त॒ः पृथि॑वि॒ पृथि॑वि मात॒र्म्मा मा मा॑त॒ः पृथि॑वि॒ पृथि॑वि मात॒र्म्मा[2]। मा॒त॒र्म्मा मा मा॑तर्म्मा॒त॒र्म्मा मा॑ मा॒ मा मा॑तर्म्मा॒त॒र्म्मा मा॑। मा मा॑ मा॒ मा मा मा॑ हिꣳसीर्हिꣳसीर्म्मा॒ मा मा मा॑ हिꣳसीः। मा॒ हि॒ꣳसी॒र्हि॒ꣳ-सी॒र्म्मा॒ मा॒ हि॒ꣳसी॒र्म्मो मो हिꣳसीर्म्मा मा हिꣳसी॒र्म्मो॑। हि॒ꣳसी॒र्म्मो मो हिꣳ-सीर्हिꣳसी॒र्म्मो॑ऽ अ॒हम॒हम्मो हिꣳसीर्हिꣳसी॒र्म्मो॑ऽ अ॒हम्। मो॑ऽ अ॒हम॒हम्मो मो॑ऽ

[1]. वा.प्रा.६.३७. के अनुसार वनस्पतिः पद पृथक्करण नहीं होता है।

[2]. वा. प्रा. १.१६८. के अनुसार मातः पद का विसर्जनीय रिफित संज्ञक है।

अ॒हन्त्वान्त्वाम॒हम्मो मोऽ अ॒हन्त्वाम्। मोऽ[3] इति॒ मो। अ॒हन्त्वान्त्वाम॒हम॒ह-न्त्वाम्। त्वामिति॒ त्वाम्॥२१॥शतम्॥ ४००॥

ह॒ꣳसः॑ शु॑चि॒षच्छु॑चि॒सद्धꣳसो ह॒ꣳसः॑ शु॑चि॒षद्व॒सुर्व्व॑सुः॑ शुचि॒सद्धꣳसो ह॒ꣳसः॑ शु॑चि॒षद्व॒सुः॑। शुचि॒षद्व॒सुर्व्व॑सुः॑ शुचि॒सच्छु॑चि॒षद्व॒सुर॑न्तरिक्ष॒-सद॑न्तरिक्ष॒सद्व॒सुः॑ शुचि॒सच्छु॑चि॒षद्व॒सुर॑न्तरिक्ष॒सत्। शु॒चि॒सदिति॑ शुचि॒ सत्। व्व॒सुर॑न्तरि-क्ष॒सद॑न्तरिक्ष॒सद्व॒सुर्व्व॑सुर॑न्तरिक्ष॒सद्धोता॒ होता॑न्तरिक्ष॒सद्व॒सुर्व्व॑सुर-न्तरिक्ष॒सद्धोता॑। अ॒न्त॒रि॒क्ष॒सद्धोता॒ होता॑न्तरिक्ष॒सद॑न्तरिक्ष॒सद्धोता॑ व्वेदि॒षद्वे॑-दि॒सद्धोता॑न्तरिक्ष॒सद॑न्तरिक्ष॒सद्धोता॑ व्वेदि॒षत्। अ॒न्त॒रि॒क्ष॒सदित्य॑न्तरिक्ष॒ सत्। होता॑ व्वेदि॒षद्वे॑दि॒सद्धोता॒ होता॑ व्वेदि॒षदति॑थि॒रति॑थिर्व्वेदि॒सद्धोता॒ होता॑ व्वेदि॒षदति॑थिः। व्वे॒दि॒षदति॑थि॒रति॑थिर्व्वेदि॒सद्वे॑दि॒षदति॑थिर्दुरोण॒सद्दु॑रोण॒सदति॑थिर्व्वे-दि॒सद्वे॑दि॒षदति॑थिर्दुरोण॒सत्। व्वे॒दि॒सदिति॑ वेदि॒ सत्। अति॑थिर्दुरोण॒सद्दु॑रोण॒सद-ति॑थि॒रति॑थिर्दुरोण॒सत्। दु॒रो॒ण॒सदिति॑ दुरोण॒ सत्॥ नृ॒षद्व॑र॒सद्व॑र॒सन्नृ॒सन्नृ॒षद्व॑-र॒सदृ॑त॒सदृ॑त॒सद्व॑र॒सन्नृ॒सन्नृ॒षद्व॑र॒सदृ॑त॒सत्। नृ॒सदिति॑ नृ॒ सत्। व्व॒र॒सदृ॑त॒सदृ॑त॒सद्व॑-र॒सद्व॑र॒सदृ॑त॒सद्व्यो॑म॒सद्व्यो॑म॒सदृ॑त॒सद्व॑र॒सद्व॑र॒सदृ॑त॒सद्व्यो॑म॒सत्। व्व॒र॒सदिति॑ वर॒ सत्। ऋ॒त॒सद्व्यो॑म॒सद्व्यो॑म॒सदृ॑त॒सदृ॑त॒सद्व्यो॑म॒सद॒ब्जाऽ अ॒ब्जा व्यो॑म॒सदृ॑त॒सदृ॑त॒स-द्व्यो॑म॒सद॒ब्जाः॑। ऋ॒त॒सदित्यृ॑त॒ सत्। व्यो॒म॒सद॒ब्जाऽ अ॒ब्जा व्यो॑म॒सद्व्यो॑म॒सद॒ब्जा गो॒जा गो॒जाऽ अ॒ब्जा व्यो॑म॒सद्व्यो॑म॒सद॒ब्जा गो॒जाः॑। व्यो॒म॒सदिति॑ व्योम॒ सत्। अ॒ब्जा गो॒जा गो॒जाऽ अ॒ब्जाऽ अ॒ब्जा गो॒जाऽ ऋ॑त॒जाऽ ऋ॑त॒जा गो॒जाऽ अ॒ब्जाऽ अ॒ब्जा गो॒जाऽ ऋ॑त॒जाः॑। अ॒ब्जाऽ इत्य॒प् जाः॑। गो॒जाऽ ऋ॑त॒जाऽ ऋ॑त॒जा गो॒जा गो॒जाऽ ऋ॑त॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॑त॒जा गो॒जा गो॒जाऽ ऋ॑त॒जाऽ अ॑द्रि॒जाः॑। गो॒जाऽ इति॑ गो॒ जाः॑। ऋ॒त॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॑त॒जाऽ

[3]. ओकारश्च(वा.प्रा.४.९३) इस सूत्र के अनुसार इति शब्द बाद में रहने पर पदान्त ओकार प्रकृतिभाव से रहता है।

ऋ॑तु॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॒तमृ॒तम॑द्रि॒जाऽ ऋ॑तु॒जाऽ ऋ॑तु॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॒तम्। ऋ॒तु॒जाऽ इत्त्यृ॑तु॒ जाः। अ॒द्रि॒जाऽ ऋ॒तमृ॒तम॑द्रि॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॒तम्बृ॒हद् बृ॒ह॒दृ॒तम॑द्रि॒जाऽ अ॑द्रि॒जाऽ ऋ॒तम्बृ॒हत्। अ॒द्रि॒जाऽ इत्त्य॑द्रि॒ जाः। ऋ॒तम्बृ॒हद् बृ॒ह॒दृ॒तमृ॒तम्बृ॒हत्। बृ॒हदिति॑ बृ॒हत्॥२२॥

इय॑दस्यु॒सीयु॒दिय॑द॒स्यायु॒रायु॑र॒सीयु॒दिय॑द॒स्यायुः॑। अ॒स्यायु॒रायु॑रस्यु॒स्यायु॑-रस्यु॒स्यायु॑रस्यु॒स्यायु॑रसि। आयु॑रस्यु॒स्यायु॒रायु॑र॒स्यायु॒रायु॑र॒स्यायु॒रायु॑र॒स्यायुः॑। अ॒स्यायु॒रायु॑रस्यु॒स्यायु॒र्म्मयि॒ मय्यायु॑रस्यु॒स्यायु॒र्म्मयि॑[1]। आयु॒र्म्मयि॒ मय्यायु॒रा-यु॒र्म्मयि॑ धेहि धेहि॒ मय्यायु॒रायु॒र्म्मयि॑ धेहि। मयि॑ धेहि धेहि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि॒ यु-ङ्ङ्युङ्ङ् धे॑हि॒ मयि॒ मयि॑ धेहि॒ युङ्ङ्। धे॒हि॒ युङ्ङ्युङ्ङ् धे॑हि धेहि॒ युङ्ङ्वर्चो॒ व्वर्चो॒ युङ्ङ् धे॑हि धेहि॒ युङ्ङ्वर्चः॑। युङ्ङ्वर्चो॒ व्वर्चो॒ युङ्ङ्युङ्ङ्वर्च॒ऽ ऊर्ग्गूर्ग्वर्चो॒ युङ्ङ्युङ्ङ्वर्च॒ऽ ऊर्क्[2]। व्वर्च॒ऽ ऊर्ग्गूर्ग्वर्चो॒ व्वर्च॒ऽ ऊर्ग्गूर्ज॒मूर्ज॒मूर्ग्वर्चो॒ व्वर्च॒ऽ ऊर्ग्गूर्ज॑म्। ऊर्ग्गूर्ज॒मूर्ज॒-मूर्ग्गूर्ग्गूर्ज॑म्। ऊर्ज॒मित्त्यूर्ज॑म्॥ इन्द्र॑स्य वाँव्वा॒मिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य वाँव्वीर्य्य॒कृतौ॑ व्वी-र्य्य॒कृतौ॑ वा॒मिन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य वाँव्वीर्य्य॒कृत॑ः। व्वाँ॒व्वी॒र्य्य॒कृतौ॑ व्वीर्य्य॒कृतौ॑ वाँव्वाँव्वीर्य्य॒-कृतौ॑ बा॒हू बा॒हू व्वी॑र्य्य॒कृतौ॑ वाँव्वाँव्वीर्य्य॒कृतौ॑ बा॒हू। व्वी॒र्य्य॒कृतौ॑ बा॒हू बा॒हू व्वी॑र्य्य॒कृतौ॑ व्वीर्य्य॒कृतौ॑ बा॒हूऽ अ॑ब्भ्यु॒पाव॑हराम्म्यब्भ्यु॒पाव॑हरामि बा॒हू व्वी॑र्य्य॒कृतौ॑ व्वीर्य्य॒कृतौ॑ बा॒हूऽ अ॑ब्भ्यु॒पाव॑हरामि। व्वी॒र्य्य॒कृत॒ऽ इति॑ वीर्य्य॒ कृत॑ः। बा॒हूऽ अ॑ब्भ्यु॒पाव॑हरा-म्म्यब्भ्यु॒पाव॑हरामि बा॒हू बा॒हूऽ अ॑ब्भ्यु॒पाव॑हरामि। बा॒हूऽ इति॑ बा॒हू[3]। अ॒ब्भ्यु॒पाव॑हरा॒मीत्त्य॑भि उ॒पाव॑हरामि॥२३॥

---

1. मयि आयुः यहाँ या.शि.१५०. के अनुसार सन्धि के अनन्तर संयोग में यकार होगा।

2. ऊर्क् यहाँ अवसितं च(वा.प्रा.४.११८) से ककार के द्वित्व का निषेध है। द्वित्व की प्राप्ति परं तु रेफहकाराभ्याम्(वा.प्रा.४.१०२) से है।

3. प्रगृह्ये (वा. प्रा. ४.१९४) प्रगृह्य-संज्ञक पद में स्थितोपस्थित पाठ करना चाहिये। बाहू पद की एकारेकारोकारा द्विवचनान्ताः (वा. प्रा. १.९३) इस सूत्र से प्रगृह्य संज्ञा होती है।

स्यो॒नास्य॑सि स्यो॒ना स्यो॒नासि॑ सु॒षदा॑ सु॒सदा॑सि स्यो॒ना स्यो॒नासि॑ सु॒षदा॑। अ॒सि॒ सु॒षदा॑ सु॒सदा॑स्यसि सु॒षदा॑ क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑स्यसि सु॒षदा॑ क्ष॒त्रस्य॑। सु॒षदा॑ क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑ सु॒षदा॑ क्ष॒त्रस्य॒ योनि॒र्योनि॑ः क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑ सु॒षदा॑ क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑ः। सु॒सदेति॑ सु॒ सदा॑। क्ष॒त्रस्य॒ योनि॒र्योनि॑ः क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑ः। योनि॒रिति॒ योनि॑ः॥ स्यो॒नामा सी॑द सी॒दा स्यो॒नाꣳ स्यो॒नामा सी॑द सु॒षदा॑ꣳ सु॒सदा॑ꣳ सी॒दा स्यो॒नाꣳ स्यो॒नामा सी॑द सु॒षदा॑म्। आ सी॑द। सी॒द॒ सु॒षदा॑ꣳ सु॒सदा॑ꣳ सीद सीद सु॒षदा॑ङ्क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑ꣳ सीद सीद सु॒षदा॑ङ्क्ष॒त्रस्य॑। सु॒षदा॑ङ्क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑ꣳ सु॒षदा॑ङ्क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑ꣳ॒ योनि॑ङ्क्ष॒त्रस्य॑ सु॒सदा॑ꣳ सु॒षदा॑ङ्क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑म्। सु॒सदा॒मिति॑ सु॒ सदा॑म्। क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑ꣳ॒ योनि॑ङ्क्ष॒त्रस्य॑ क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑म्। योनि॒मिति॒ योनि॑म्॥२४॥

नि ष॑साद ससाद॒ नि नि ष॑साद धृ॒तव्र॑तो धृ॒तव्र॑तः ससाद॒ नि नि ष॑साद[1] धृ॒तव्र॑तः। स॒सा॒द॒ धृ॒तव्र॑तो धृ॒तव्र॑तः ससाद ससाद धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णो॒ वरु॑णो धृ॒तव्र॑तः ससाद ससाद धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः[2]। धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णो॒ वरु॑णो धृ॒तव्र॑तो धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स्त्या॒सु प॒स्त्या॒सु वरु॑णो धृ॒तव्र॑तो धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स्त्या॒सु। धृ॒तव्र॑त॒ऽ इति॑ धृ॒त व्र॑तः। वरु॑णः प॒स्त्या॒सु प॒स्त्या॒सु वरु॑णो॒ वरु॑णः प॒स्त्या॒स्वा प॒स्त्या॒सु वरु॑णो॒ वरु॑णः प॒स्त्या॒स्वा। प॒स्त्या॒स्वा प॒स्त्या॒सु प॒स्त्या॒स्वा। एत्या॥ साम्म्रा॑ज्याय सु॒क्रतु॑ः सु॒क्रतु॑ः साम्म्रा॑ज्याय॒ साम्म्रा॑ज्याय सु॒क्रतु॑ः। साम्म्रा॑ज्या॒येति॒ साम् रा॑ज्याय। सु॒क्रतु॒रिति॑ सु॒ क्रतु॑ः॥२५॥

अ॒भि॒भूर॑स्यस्यभि॒भूर॑भि॒भूर॑स्ये॒ताऽ ए॒ताऽ अ॑स्यभि॒भूर॑भि॒भूर॑स्ये॒ताः। अ॒भि॒भूरित्य॑भि॒ भूः। अ॒स्ये॒ताऽ ए॒ताऽ अ॑स्यस्ये॒तास्ते॑ तऽ ए॒ताऽ अ॑स्यस्ये॒तास्ते॑।

---

[1]. ससाद च (वा. प्रा. ३.६०) इस सूत्र से नि से परे ससाद का प्रथम सकार षकार हो जाता है।

[2]. या.शि.११३. के अनुसार वरुणः पद में र स्वरित है।

ए॒तास्तें तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्ते॒ पञ्च॒ पञ्चं तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्ते॒ पञ्चं। ते॒ पञ्च॒ पञ्चं ते ते॒ पञ्च॒ दिशो॒ दिशः॒ पञ्चं ते ते॒ पञ्च॒ दिशः॑। पञ्च॒ दिशो॒ दिशः॒ पञ्च॒ पञ्च॒ दिशः॑ कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒न्दिशः॒ पञ्च॒ पञ्च॒ दिशः॑ कल्प्पन्ताम्। दिशः॑ कल्प्पन्ता-ङ्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिशः॑ कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॒न्ब्रह्मं॒न्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिशः॑ कल्प्प-न्ता॒म्ब्रह्मंन् । क॒ल्प्प॒न्ता॒म्ब्रह्म॒न्ब्रह्मं॒न्कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्मँ॒स्त्वन्त्वम्ब्रह्मं॒न्क-ल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्मँ॒स्त्वम्। ब्रह्मँ॒स्त्वन्त्वम्ब्रह्म॒न्ब्रह्मँ॒स्त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वम्ब्रह्म॒-न्ब्रह्मँ॒स्त्वम्ब्र॒ह्मा। त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मासिं। ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासिं सवि॒ता सं॑वि॒तासिं ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासिं सवि॒ता। अ॒सि॒ स॒वि॒ता सं॑वि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः। स॒वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता सं॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता सं॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः। स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः। स॒त्यप्प्र॑सव॒ऽ इति॑ स॒त्य प्र॑सवः। व्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॒ व्वरु॑णो॒ व्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॑ः। स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जाः। स॒त्यौजा॒ऽ इति॑ स॒त्य ओ॑जाः। इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रः। व्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा रु॒द्रः सु॒शेव॑ः सु॒शेवो॑ रु॒द्रो व्विशौ॑जा॒ व्विशौ॑जा[1] रु॒द्रः सु॒शेव॑ः। रु॒द्रः सु॒शेव॑ः सु॒शेवो॑ रु॒द्रो रु॒द्रः सु॒शेव॑ः। सु॒शेव॒ऽ इति॑ सु शेव॑ः॥

---

[1]. विशौजा इत्यन्यायसमासात् (वा. प्रा. ५.३९) व्याकरण के नियमानुसार समास न होने के कारण विशौजाः पद का पृथक्करण नहीं होता है।

ए॒तास्ते॑ तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्ते॒ पञ्च॒ पञ्च॑ तऽ ए॒ताऽ ए॒तास्ते॒ पञ्च॑। ते॒ पञ्च॒ पञ्च॑ ते ते॒ पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॑ ते ते॒ पञ्च॒ दिश॑ः। पञ्च॒ दिशो॒ दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॑ः कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒न्दिश॒ः पञ्च॒ पञ्च॒ दिश॑ः कल्प्पन्ताम्। दिश॑ः कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिश॑ः कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॒न्त्ब्रह्म॑न्त्कल्प्पन्ता॒न्दिशो॒ दिश॑ः कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॑न्। क॒ल्प्प॒न्ता॒म्ब्रह्म॒न्त्ब्रह्म॑न्त्कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॒ꣳस्त्वन्त्वम्ब्रह्म॑न्त्कल्प्पन्ताङ्कल्प्पन्ता॒म्ब्रह्म॒ꣳस्त्वम्। ब्रह्म॒ꣳस्त्वन्त्वम्ब्रह्म॒न्त्ब्रह्म॒ꣳस्त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वम्ब्रह्म॒न्त्ब्रह्म॒ꣳस्त्वम्ब्र॒ह्मा। त्वम्ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा त्वन्त्वम्ब्र॒ह्मासि॑। ब्र॒ह्मास्य॑सि ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासि॑ सवि॒ता स॑वि॒तासि॑ ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मासि॑ सवि॒ता। अ॒सि॒ स॒वि॒ता स॑वि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒तास्य॑सि सवि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः। स॒वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता स॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ ब्वरु॑णो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः सवि॒ता स॑वि॒ता स॒त्यप्प्र॑सवो॒ ब्वरु॑णः। स॒त्यप्प्र॑सवो॒ ब्वरु॑णो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ ब्वरु॑णः स॒त्यप्प्र॑सवः स॒त्यप्प्र॑सवो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः। स॒त्यप्प्र॑सव॒ऽ इति॑ स॒त्य प्र॑सवः। ब्वरु॑णः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ ब्वरु॑णो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॒ ब्वरु॑णो॒ ब्वरु॑णः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॑ः। स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ ब्विशौ॑जा॒ ब्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॑ः स॒त्यौजा॑ः स॒त्यौजा॒ऽ इन्द्रो॒ ब्विशौ॑जाः। स॒त्यौजा॒ऽ इति॑ स॒त्य ओ॑जाः। इन्द्रो॒ ब्विशौ॑जा॒ ब्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ ब्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो ब्विशौ॑जा॒ऽ इन्द्र॒ऽ इन्द्रो॒ ब्विशौ॑जा रु॒द्रः। ब्विशौ॑जा रु॒द्रो रु॒द्रो ब्विशौ॑जा॒ ब्विशौ॑जा रु॒द्रः सु॒शेव॑ः सु॒शेवो॑ रु॒द्रो ब्विशौ॑जा॒ ब्विशौ॑जा[1] रु॒द्रः सु॒शेव॑ः। रु॒द्रः सु॒शेव॑ः सु॒शेवो॑ रु॒द्रो रु॒द्रः सु॒शेव॑ः। सु॒शेव॒ऽ इति॑ सु शेव॑ः॥

---

1. विशौजा इत्यन्यायसमासात् (वा. प्रा. ५.३९) व्याकरण के नियमानुसार समास न होने के कारण विशौजाः पद का पृथकरण नहीं होता है।

बहुकार श्रेयस्कर श्रेयःकर बहुकार बहुकार श्रेयस्कर भूयस्कर भूयःकर श्रेयःकर बहुकार बहुकार श्रेयस्कर भूयस्कर[1]। बहुकारेति बहु कार। श्रेयस्कर भूयस्कर भूयःकर श्रेयःकर श्रेयस्कर भूयस्कर तेन तेन भूयःकर श्रेयःकर श्रेयस्कर भूयस्कर तेन। श्रेयःकरेति श्रेयः कर। भूयस्कर तेन तेन भूयःकर भूयस्कर तेन मे मे तेन भूयःकर भूयस्कर तेन मे। भूयःकरेति भूयः कर। तेन मे मे तेन तेन मे रद्ध्य रद्ध्य मे तेन तेन मे रद्ध्य। मे रद्ध्य रद्ध्य मे मे रद्ध्य। रद्ध्येति रद्ध्य॥२६॥

अग्निः पृथुः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणः। पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः[2]। धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिर्ज्जुषाणो जुषाणः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिर्ज्जुषाणः। पतिर्ज्जुषाणो जुषाणः पतिः पतिर्ज्जुषाणोऽ अग्निरग्निर्ज्जुषाणः पतिः पतिर्ज्जुषाणोऽ अग्निः। जुषाणोऽ अग्निरग्निर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अग्निः पृथुः पृथुरग्निर्ज्जुषाणो जुषाणोऽ अग्निः पृथुः। अग्निः पृथुः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुरग्निरग्निः पृथुर्द्धर्म्मणः। पृथुर्द्धर्म्मणो धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणः पृथुः पृथुर्द्धर्म्मणस्प्पतिः। धर्म्मणस्प्पतिः पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिराज्ज्यस्याज्ज्यस्य पतिर्द्धर्म्मणो धर्म्मणस्प्पतिराज्ज्यस्य। पतिराज्ज्यस्याज्ज्यस्य पतिः पतिराज्ज्यस्य व्वेतु व्वेत्त्वाज्ज्यस्य पतिः पतिराज्ज्यस्य व्वेतु। आज्ज्यस्य व्वेतु व्वेत्त्वाज्ज्यस्याज्ज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेत्त्वाज्ज्यस्याज्ज्यस्य व्वेतु स्वाहा। व्वेतु स्वाहा स्वाहा व्वेतु व्वेतु

1. समानपदे च (वा. प्रा. ३.३०) इस सूत्र से श्रेयः एवं भूयः से परवर्ती विसर्ग का सकार विहित है।

2. धर्म्मणः पतिः यहाँ वा.प्रा.३.३५. तथा ३.३६. से विसर्जनीय सकार होता है। सकारोत्तरवर्ती पकार का द्वित्व वा.प्रा.४.१०३. से होता है।

स्वाहा स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः स्वाहा व्वेतु व्वेतु स्वाहा स्वाहाकृताः। स्वाहा स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः स्वाहा स्वाहा स्वाहाकृताः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य स्वाहाकृताः स्वाहा स्वाहा स्वाहाकृताः सूर्य्यस्य। स्वाहाकृताः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः सूर्य्यस्य रश्म्मिभी रश्म्मिभिः सूर्य्यस्य स्वाहाकृताः स्वाहाकृताः सूर्य्यस्य रश्म्मिभिः। स्वाहाकृताऽ इति स्वाहा कृताः। सूर्य्यस्य रश्म्मिभी रश्म्मिभिः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रश्म्मिभिर्य्यतद्धँय्यतद्ध्वꣳ रश्म्मिभिः सूर्य्यस्य सूर्य्यस्य रश्म्मिभिर्य्यतद्ध्वम्[1]। रश्म्मिभिर्य्यतद्धँय्यतद्ध्वꣳ रश्म्मिभी रश्म्मिभिर्य्यतद्ध्वꣳ सजातानाꣳ सजातानाँय्यतद्ध्वꣳ रश्म्मिभी रश्म्मिभिर्य्यतद्ध्वꣳ सजातानाम्। रश्म्मिभिरिति रश्म्मि भिः। य्यतद्ध्वꣳ सजातानाꣳ सजातानाँय्यतद्धँय्यतद्ध्वꣳ सजातानाम्मद्ध्यमेष्ठ्याय मद्ध्यमेस्त्थ्याय सजातानाँय्यतद्धँय्यतद्ध्वꣳ सजातानाम्मद्ध्यमेष्ठ्याय। सजातानाम्मद्ध्यमेष्ठ्याय मद्ध्यमेस्त्थ्याय सजातानाꣳ सजातानाम्मद्ध्यमेष्ठ्याय। सजातानामिति स जातानाम्। मद्ध्यमेस्त्थ्यायेति मद्ध्यमे स्थ्याय॥२७॥

सवित्रा प्प्रसवित्रा प्प्रसवित्रा संवित्रा संवित्रा प्प्रसवित्रा सरस्वत्या सरस्वत्या प्प्रसवित्रा संवित्रा संवित्रा प्प्रसवित्रा सरस्वत्या। प्रसवित्रा सरस्वत्या सरस्वत्या प्प्रसवित्रा प्प्रसवित्रा सरस्वत्या व्वाचा व्वाचा सरस्वत्या प्प्रसवित्रा प्प्रसवित्रा सरस्वत्या व्वाचा। प्रसवित्रेति प्प्र सवित्रा। सरस्वत्या व्वाचा व्वाचा सरस्वत्या सरस्वत्या व्वाचा त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा व्वाचा सरस्वत्या सरस्वत्या व्वाचा त्वष्ट्रा। व्वाचा त्वष्ट्रा त्वष्ट्रा व्वाचा व्वाचा त्वष्ट्रा रूपै रूपैस्त्वष्ट्रा व्वाचा व्वाचा त्वष्ट्रा रूपैः।

---

[1]. यतध्वम् यतध्वम् यहाँ सन्धि की स्थिति में प्रथम यतध्वम् का मकार अन्तस्थामन्तस्थास्वनुनासिकां परसस्थानाम् (वा. प्रा. ४.१०) इस सूत्र से अनुनासिक यकार होता है। सवर्णे (वा. प्रा. ४.११२) इस सूत्र से भाष्यकार अनन्त के अनुसार तृतीय यकार का निषेध है।

त्वष्ट्रा॑ रू॒पै रू॒पैस्त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ रू॒पैः पू॒ष्ण्णा पू॒ष्ण्णा रू॒पैस्त्वष्ट्रा॒ त्वष्ट्रा॑ रू॒पैः पू॒ष्ण्णा। रू॒पैः पू॒ष्ण्णा पू॒ष्ण्णा रू॒पै रू॒पैः पू॒ष्ण्णा प॒शुभि॑ः प॒शुभि॑ः पू॒ष्ण्णा रू॒पै रू॒पैः पू॒ष्ण्णा प॒शुभि॑ः। पू॒ष्ण्णा प॒शुभि॑ः प॒शुभि॑ः पू॒ष्ण्णा पू॒ष्ण्णा प॒शुभि॒रिन्द्रे॒णेन्द्रे॑ण प॒शुभि॑ः पू॒ष्ण्णा पू॒ष्ण्णा प॒शुभि॒रिन्द्रे॑ण। प॒शुभि॒रिन्द्रे॒णेन्द्रे॑ण प॒शुभि॑ः प॒शुभि॒रिन्द्रे॑णा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मेऽ इन्द्रे॑ण प॒शुभि॑ः प॒शुभि॒रिन्द्रे॑णा॒स्म्मे[1]। प॒शुभि॒रिति॑ प॒शु भि॑ः। इन्द्रे॑णा॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मेऽ इन्द्रे॒णेन्द्रे॑णा॒स्म्मे बृह॒स्प्पति॑ना॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒स्म्मेऽ इन्द्रे॒णेन्द्रे॑णा॒स्म्मे बृह॒स्प्पति॑ना। अ॒स्म्मे बृह॒स्प्पति॑ना॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे बृह॒स्प्पति॑ना॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒स्म्मेऽ अ॒स्म्मे बृह॒स्प्पति॑ना॒ ब्रह्म॑णा। अ॒स्म्मेऽ इत्य॒स्म्मे। बृह॒स्प्पति॑ना॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒ ब्रह्म॑णा॒ व्वरु॑णेन॒ व्वरु॑णेन॒ ब्रह्म॑णा॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒ बृह॒स्प्पति॑ना॒[2] ब्रह्म॑णा॒ व्वरु॑णेन।ब्रह्म॑णा॒ व्वरु॑णेन॒ व्वरु॑णेन॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा॒ व्वरु॑णे॒नौज॒सौज॑सा॒ व्वरु॑णेन॒ ब्रह्म॑णा॒ ब्रह्म॑णा॒ व्वरु॑णे॒नौज॑सा। व्वरु॑णे॒नौज॒सौज॑सा॒ व्वरु॑णेन॒ व्वरु॑णे॒नौज॑सा॒ग्ग्निना॒ग्ग्निनौज॑सा॒ व्वरु॑णेन॒ व्वरु॑णे॒नौज॑सा॒ग्ग्निना॑। ओज॑सा॒ग्ग्निना॒ग्ग्निनौज॒सौज॑सा॒ग्ग्निना॒ तेज॑सा॒ तेज॑सा॒ग्ग्निनौज॒सौज॑सा॒ग्ग्निना॒ तेज॑सा। अ॒ग्ग्निना॒ तेज॑सा॒ तेज॑सा॒ग्ग्निना॒ग्ग्निना॒ तेज॑सा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न॒ तेज॑सा॒ग्ग्निना॒ग्ग्निना॒ तेज॑सा॒ सोमे॑न। तेज॑सा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न॒ तेज॑सा॒ तेज॑सा॒ सोमे॑न॒ राज्ञा॒ राज्ञा॒ सोमे॑न॒ तेज॑सा॒ तेज॑सा॒ सोमे॑न॒ राज्ञा॑। सोमे॑न॒ राज्ञा॒ राज्ञा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न॒ राज्ञा॒ व्विष्ण्णु॑ना॒ व्विष्ण्णु॑ना॒ राज्ञा॒ सोमे॑न॒ सोमे॑न॒ राज्ञा॒ व्विष्ण्णु॑ना। राज्ञा॒ व्विष्ण्णु॑ना॒ व्विष्ण्णु॑ना॒ राज्ञा॒ राज्ञा॒ व्विष्ण्णु॑ना द॒शम्म्या द॑श॒म्म्या व्विष्ण्णु॑ना॒ राज्ञा॒ राज्ञा॒ व्विष्ण्णु॑ना द॒शम्म्या। व्विष्ण्णु॑ना द॒शम्म्या

---

[1]. अस्मे पद वा. प्रा. १.९६. के अनुसार प्रगृह्य है। वा. प्रा. ४.८८ के अनुसार स्वर परे रहते प्रगृह्य स्वर प्रकृतिभाव से रहता है।

[2]. वा.प्रा.५.३७. के अनुसार बृहस्पतिः पद का पृथकरण नहीं होता है।

दशम्म्या व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना दशम्म्या देवतया देवतया दशम्म्या व्विष्ण्णुना व्विष्ण्णुना दशम्म्या देवतया। दशम्म्या देवतया देवतया दशम्म्या दशम्म्या देवतया प्प्रसूतः प्प्रसूतो देवतया दशम्म्या दशम्म्या देवतया प्प्रसूतः। देवतया प्प्रसूतः प्प्रसूतो देवतया देवतया प्प्रसूतः प्प्र प्प्र प्प्रसूतो देवतया देवतया प्प्रसूतः प्प्र। प्रसूतः प्प्र प्प्र प्प्रसूतः प्प्रसूतः प्प्र सर्प्पामि सर्प्पामि प्प्र प्प्रसूतः प्प्रसूतः प्प्र सर्प्पामि। प्रसूतऽ इति प्प्र सूतः। प्र सर्प्पामि सर्प्पामि प्प्र प्प्र सर्प्पामि। सर्प्पामीति सर्प्पामि॥२८॥

अश्श्विब्भ्याम्पच्च्यस्व पच्च्यस्वाश्श्विब्भ्यामश्श्विब्भ्याम्पच्च्यस्व सरस्वत्त्यै सरस्वत्त्यै पच्च्यस्वाश्श्विब्भ्यामश्श्विब्भ्याम्पच्च्यस्व सरस्वत्त्यै। अश्श्विब्भ्यामित्त्यश्श्वि भ्याम्। पच्च्यस्व सरस्वत्त्यै सरस्वत्त्यै पच्च्यस्व पच्च्यस्व सरस्वत्त्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्त्यै पच्च्यस्व पच्च्यस्व सरस्वत्त्याऽ इन्द्राय। सरस्वत्त्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्त्यै सरस्वत्त्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्राय सरस्वत्त्यै सरस्वत्त्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे। इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्रायेन्द्राय सुत्राम्म्णे। सुत्राम्म्णऽ इति सु त्राम्म्णे॥ व्वायुः पूतः पूतो व्वायुर्व्वायुः पूतः पवित्त्रेण पवित्त्रेण पूतो व्वायुर्व्वायुः पूतः पवित्त्रेण। पूतः पवित्त्रेण पवित्त्रेण पूतः पूतः पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्क् प्रत्त्यङ्क् पवित्त्रेण पूतः पूतः पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्। पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्क् प्रत्त्यङ्क् पवित्त्रेण पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्क् सोमः सोमः प्प्रत्त्यङ्क् पवित्त्रेण पवित्त्रेण प्प्रत्त्यङ्क् सोमः। प्रत्त्यङ्क् सोमः सोमः प्प्रत्त्यङ्क् प्प्रत्त्यङ्क् सोमोऽ अतिस्स्रुतोतिस्स्रुतः सोमः प्प्रत्त्यङ्क् प्रत्त्यङ्क्[1] सोमोऽ अतिस्स्रुतः। सोमोऽ अतिस्स्रुतोतिस्स्रुतः सोमः सोमोऽ अतिस्स्रुतः। अतिस्स्रुतऽ इत्त्यति स्स्रुतः॥ इन्द्रस्य युज्ज्यो युज्ज्यऽ

1. वा. प्रा. ५.३०. के अनुसार यहां प्रत्यङ् पद का पृथक्करण विहित नहीं है। प्रत्यङ् सोमः यहां ङ्णौ क्ताभ्यां सकारे(वा.प्रा.४.१५) इस सूत्र से ये दोनों पद ककार से व्यवहित होते हैं। स्ववर्गीये चानुत्तमे(वा.प्रा.४.११७) इस सूत्र से ङकार के द्वित्व का निषेध है।

इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्य॒ऽ इन्द्र॒स्येन्द्र॑स्य॒ युज्य॒ः सखा॑। युज्य॒ः सखा॒ सखा॒ युज्यो॒ युज्य॒ः सखा॑। सखेति॒ सखा॑॥२९॥

कु॒वि॒द॒ङ्गाङ्ग कु॒वित्कु॒वि॒द॒ङ्ग यव॑मन्तो॒ यव॑मन्तो॒ऽङ्ग कु॒वित्कु॒वि॒द॒ङ्ग यव॑मन्तः। अ॒ङ्ग यव॑मन्तो॒ यव॑मन्तो॒ऽङ्गाङ्ग यव॑मन्तो॒ यवँ॒ꣳयवँ॒ꣳयव॑मन्तो॒ऽङ्गाङ्ग यव॑मन्तो॒ यव॑म्। यव॑मन्तो॒ यवँ॒ꣳयवँ॒ꣳयव॑मन्तो॒ यव॑मन्तो॒ यव॑ञ्चिच्चि॒द्यवँ॒ꣳयव॑मन्तो॒ यव॑मन्तो॒ यव॑ञ्चित्। यव॑मन्त॒ऽ इति॒ यव॑ मन्तः। यव॑ञ्चिच्चि॒द्यवँ॒ꣳयव॑ञ्चि॒द्यथा॒ यथा॑ चि॒द्यवँ॒ꣳयव॑ञ्चि॒द्यथा॑। चि॒द्यथा॒ यथा॑ चिच्चि॒द्यथा॒ दान्ति॒ दान्ति॒ यथा॑ चिच्चि॒द्यथा॒ दान्ति॑। यथा॒ दान्ति॒ दान्ति॒ यथा॒ यथा॒ दान्त्य॑नुपू॒र्वम॑नुपू॒र्वन्दान्ति॒ यथा॒ यथा॒ दान्त्य॑नुपू॒र्वम्। दान्त्य॑नुपू॒र्वम॑नुपू॒र्वन्दान्ति॒ दान्त्य॑नुपू॒र्वंवि॒यूय॑ वि॒यूया॑नुपू॒र्वन्दान्ति॒ दान्त्य॑नुपू॒र्वंवि॒यूय॑। अ॒नु॒पू॒र्वंवि॒यूय॑ वि॒यूया॑नुपू॒र्वम॑नुपू॒र्वंवि॒यूय॑। अ॒नु॒पू॒र्वमित्य॑नु पू॒र्वम्। वि॒यूयेति॑ वि॒ यूय॑॥ इ॒हेहैषा॑मेषामि॒हे॒हे॒हैषा॑ङ्कृणुहि कृणुह्येषामि॒हे॒हे॒हैषा॑ङ्कृणुहि[1]। इ॒हेहेती॒ह इ॑ह। ए॒षा॒ङ्कृ॒णु॒हि॒ कृ॒णु॒ह्ये॒षा॒मे॒षा॒ङ्कृ॒णु॒हि॒ भोज॑नानि॒ भोज॑नानि कृणुह्येषामेषाङ्कृणुहि॒ भोज॑नानि। कृ॒णु॒हि॒ भोज॑नानि॒ भोज॑नानि कृणुहि कृणुहि॒ भोज॑नानि॒ ये ये भोज॑नानि कृणुहि कृणुहि॒ भोज॑नानि॒ ये। भोज॑नानि॒ ये ये भोज॑नानि॒ भोज॑नानि॒ ये ब॒र्हिषो॑ ब॒र्हिषो॒ ये भोज॑नानि॒ भोज॑नानि॒ ये ब॒र्हिष॑ः। ये ब॒र्हिषो॑ ब॒र्हिषो॒ ये ये ब॒र्हिषो॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिम्ब॒र्हिषो॒ ये ये ब॒र्हिषो॒ नम॑ऽउक्तिम्। ब॒र्हिषो॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिम्ब॒र्हिषो॑ ब॒र्हिषो॒ नम॑ऽउक्तिँ॒ꣳयज॑न्ति॒ यज॑न्ति॒ नम॑ऽउक्तिम्ब॒र्हिषो॑ ब॒र्हिषो॒ नम॑ऽउक्तिँ॒ꣳयज॑न्ति। नम॑ऽउक्तिँ॒ꣳयज॑न्ति॒ यज॑न्ति॒ नम॑ऽउक्ति॒न्नम॑ऽउक्तिँ॒ꣳयज॑न्ति। नम॑ऽउक्ति॒मिति॒ नम॑ः उक्तिम्। यज॒न्तीति॒ यज॑न्ति॥ अ॒श्विभ्या॑न्त्वा त्वा॒श्विभ्या॑म॒श्विभ्या॑न्त्वा॒ सर॑स्वत्यै॒ सर॑स्वत्यै त्वा॒श्विभ्या॑म॒-

---

[1]. वा. प्रा. २.७. के अनुसार यहां एषाम् यह सर्वनाम पद अनुदात्त है।

श्विभ्यान्त्वा सरस्वत्यै। अश्विभ्यामित्यश्वि भ्याम्[1]। त्वा सरस्वत्यै सरस्वत्यै त्वा त्वा सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै त्वा त्वा सरस्वत्याऽ इन्द्राय। सरस्वत्याऽ इन्द्रायेन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्राय सरस्वत्यै सरस्वत्याऽ इन्द्राय सुत्राम्म्णे। इन्द्राय सुत्राम्म्णे सुत्राम्म्णऽ इन्द्रायेन्द्राय सुत्राम्म्णे। सुत्राम्म्णऽ इति सु त्राम्म्णे॥३०॥

युवꣳ सुरामꣳ सुरामँ्युवँ्युवꣳ सुराममश्विनाश्विना सुरामँ्युवँ्युवꣳ सुराममश्विना। सुराममश्विनाश्विना सुरामꣳ सुराममश्विना नमुचौ नमुचावश्विना सुरामꣳ सुराममश्विना नमुचौ। अश्विना नमुचौ नमुचावश्विनाश्विना नमुचावासुरऽ आसुरे नमुचावश्विनाश्विना नमुचावासुरे। नमुचावासुरऽ आसुरे नमुचौ नमुचावासुरे सचा सचासुरे नमुचौ नमुचावासुरे सचा। आसुरे सचा सचासुरऽ आसुरे सचा। सचेति सचा॥ विपिपाना शुभꣳ शुभो विपिपाना विपिपाना शुभस्पती पती शुभो विपिपाना विपिपाना शुभस्पती[2]। विपिपानेति वि पिपाना। शुभस्पती पती शुभꣳ शुभस्पतीऽ इन्द्रमिन्द्रम्पती शुभꣳ शुभस्पतीऽ इन्द्रम्। पतीऽ इन्द्रमिन्द्रम्पती पतीऽ इन्द्रङ्कर्म्मसु कर्म्मस्विन्द्रम्पती पतीऽ इन्द्रङ्कर्म्मसु। पतीऽ इति पती। इन्द्रङ्कर्म्मसु कर्म्मस्विन्द्रमिन्द्रङ्कर्म्मस्वावतमावतङ्कर्म्मस्विन्द्रमिन्द्रङ्कर्म्मस्वावतम्। कर्म्मस्वावतमावतङ्कर्म्मसु कर्म्मस्वावतम्। कर्म्मस्विति कर्म्म सु। आवतमित्यावतम्॥३१॥

पुत्रमिव पितरौ पितरौ पुत्रमिव पुत्रमिव पितरावश्विनाश्विना पितरौ पुत्रमिव पुत्रमिव पितरावश्विना। पुत्रमिवेति पुत्रम् इव। पितरावश्विनाश्विना पितरौ पितरावश्विनोभोभाश्विना पितरौ पितरावश्विनोभा। अश्विनोभोभाश्विनाश्विनो-

[1]. ह्रस्वव्यञ्जनाभ्यां भकारादौ विभक्तिप्रत्यये(वा.प्रा.५.१३) इस सूत्र के अनुसार इस पद में ह्रस्व(स्वर) तथा व्यञ्जन के बाद में भकार से प्रारम्भ होने वाला विभक्ति-प्रत्यय होने से पृथक्करण होता है।

[2].वा.प्रा.३.३५. तथा ३.३६. के अनुसार शुभः पती यहाँ विसर्जनीय सकार होता है।

भेन्द्रेन्द्रो॒भाश्विना॒श्विनो॒भेन्द्रं। उ॒भेन्द्रेन्द्रो॒भोभेन्द्रा॒वथुं॑रा॒वथु॒रिन्द्रो॒भोभेन्द्रा॒वथुं॑÷। इन्द्रा॒वथुं॑रा॒वथु॒रिन्द्रेन्द्रा॒वथु॒ः काव्यै॒ः काव्यै॑रा॒वथु॒रिन्द्रेन्द्रा॒वथु॒ः काव्यै॑÷। आ॒वथु॒ः काव्यै॒ः काव्यै॑रा॒वथुं॑रा॒वथु॒ः काव्यै॑र्द्दु॒ढ॑सना॑भिर्द्दु॒ढ॑सना॑भि॒ः काव्यै॑रा॒वथुं॑रा॒वथु॒ः काव्यै॑र्द्दु॒ढ॑सना॑भिः। काव्यै॑र्द्दु॒ढ॑सना॑भिर्द्दु॒ढ॑सना॑भि॒ः काव्यै॒ः काव्यै॑र्द्दु॒ढ॑सना॑भिः। दु॒ढ॑सना॑भि॒रिति॑ दु॒ढ॑सना॑भिः॥ यत्सु॒राम॑ढ॑ सु॒रामँ॒व्यद्यत्सु॒रामँ॒व्वि वि सु॒रामँ॒व्य-द्यत्सु॒रामँ॒व्वि। सु॒रामँ॒व्वि वि सु॒राम॑ढ॑ सु॒रामँ॒व्यपि॒बोपिं॑बो॒ व्वि सु॒राम॑ढ॑ सु॒रामँ॒व्यपिं॑बः[1]। व्यपि॒बोपिं॑बो॒ व्वि व्यपिं॑ब॒ः शची॑भि॒ः शची॑भि॒रपिं॑बो॒ व्वि व्यपिं॑ब॒ः शची॑भिः। अपिं॑ब॒ः शची॑भि॒ः शची॑भि॒रपि॒बोपिं॑ब॒ः शची॑भि॒ः सर॑स्वती॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒रपि॒बोपिं॑ब॒ः शची॑भि॒ः सर॑स्वती। शची॑भि॒ः सर॑स्वती॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒ः शची॑भि॒ः सर॑स्वती त्वा त्वा॒ सर॑स्वती॒ शची॑भि॒ः शची॑भि॒ः सर॑स्वती त्वा। सर॑स्वती त्वा त्वा॒ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती त्वा मघवन्मघवँ॑स्त्वा॒ सर॑स्वती॒ सर॑स्वती त्वा मघवन्। त्वा॒ म॒घ॒व॒न्म॒घ॒वँ॑स्त्वा॒ त्वा॒ म॒घ॒व॒न्नभि॒ष्णग॒भि॒ष्ण॒ङ्म॒घ॒वँ॑स्त्वा॒ त्वा॒ म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्णक्[2]। म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्णग॒भि॒ष्ण॒ङ्म॒घ॒व॒न्म॒घ॒व॒न्न॒भि॒ष्णक्। म॒घ॒व॒न्निति॑ मघ व्वन्। अ॒भि॒ष्ण॒गित्य॑भिष्णक्॥३२॥

॥इति माध्यन्दिनीयघनपाठे दशमोध्यायः॥

॥इति प्रथमो दशकः॥

---

[1].वा. प्रा. ५.३७. के अनुसार सुरामम् पद का पृथक्करण नहीं होता है।

[2].अभिष्णक् अभिष्णक् यहाँ स्पर्शोऽपञ्चमः स्वरधौ तृतीयम्(वा.प्रा.४.१२०) इस सूत्र से अपञ्चम-स्पर्श(क) स्वर(अ) बाद में होने से तृतीय-स्पर्श(ग) होता है।